प्रकाशकका निवेदन

दीन और दलित वर्गोके सेवक प्रात स्मरणीय श्री ठक्करवापाके अवमानके पश्चात् अुनके स्मारककी व्यवस्था करनेके लिअे श्री दादासाहव मावलकरकी अध्यक्षतामे अेक समिति नियुक्त की गअी थी। अिस समितिने सारे भारतके प्रजाजनोसे अिस स्मारक-फण्डमे अपना हिस्सा देनेकी अपील की। अिसमे डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, पडित जवाहरलालजी आदि नेताओका सहयोग हमे प्राप्त था।

गरीबोके वेली श्री ठक्करवापाके स्मारक-फण्डमे कितनी रकम जमा होती है, अिसकी अपेक्षा कितने भाअी-वहन स्वेच्छासे अपना हिस्सा देते है, यह चीज स्मारक-समितिको अधिक महत्त्वकी मालूम हुअी। अिसलिअे अुसने पहलेसे ही यह ध्येय रखा था कि कुछ लोगोमे वडी-वडी रकमे प्राप्त करके फण्डको समृद्ध वनानेकी अपेक्षा विशाल जनसमुदायके पास पहुचकर सामान्य लोगोसे छोटी-छोटी रकमे फण्डमे अिकट्ठी की जाय।

रणसे पहले-पहल निश्चित की हुअी तारीख तक १,७०,००० जमा हुअे और अुसके वाद आनेवाली रकमे भी स्वीकार की जाता है। अिस वीच श्री ठक्करवापा जैसे प्रखर लोकसेवकका जीवन-चरित्र [illegible] जाय तो भावी पीढियोके लिअे अेक अुच्च कोटिके समाज-सेवकके सादे सेवामय जीवन और कार्यका अितिहास सुरक्षित रहेगा, अिस हेतुसे स्मारक-समितिने वापाका जीवन-चरित्र तैयार करानेका काम हाथमें लेनेका निर्णय किया।

जीवनके अन्तिम दिनोमे मित्रो और प्रशसको द्वारा पूज्य ठक्कर-वापा पर अिस वातके लिअे वहुत ज्यादा दवाव डाला गया कि वे अपनी आत्मकथा लिखे। श्री वलवन्तराय मेहता, श्री रामनारायण पाठक आदि प्रशसक ओर मित्र अिस कामके लिअे वापाके पास रहनेको भी तैयार थे। परन्तु वापाने आत्मकथाके विषयमे कोअी अुत्साह नही दिखाया। गरीबोंके अिस वेलीको अपनी प्रसिद्धि करनेकी वात पसन्द नही थी। अेक अग्रेज

कविकी निम्नलिखित अुक्तिके अनुसार अपना नाम बनाये रखनेकी अुन्हें कोअी अभिलाषा नही थी

> " Thus let me live unseen, unknown,
> And unlamented let me die,
> Steal from the world and not a stone
> Tell where I lie "
>
> — A Pope

अैसी परिस्थितिमे जो कुछ जानकारी मिल सकी अुसीके आधार पर यह जीवन-चरित्र लिखा गया है। बापाके जीवन-कालमे बबअी, पूना, दाहोद, और दिल्लीमे अुनके कार्यक्षेत्र बदलते रहे, और जिन डायरियोके लिअे बापा बडा आग्रह और ममता रखते थे, अुनका भी पूरा अुपयोग नही हो सका।

अिस पुस्तकमे जितनी जानकारी प्राप्त हुअी है, अुससे अधिक जानकारी भी बापाके कुछ अनन्य भक्तो और साथियोसे मिल सकती थी। परतु बापाके अवसानके बाद चार वर्षका लबा अर्सा बीत जानेके कारण जितनी कुछ जानकारी मिल सकी अुसीका अुपयोग करके यह पुस्तक पूरी कर देनी पडी है।

स्मारक-समितिने यह काम राजकोटके श्री कान्तिलाल शाहको सौपा था। अुन्होने बापाके जीवन-कालमे भी अकाल, बाढ वगैराके मौको पर अुनके किये हुअे कार्य देखे थे और अुनमे से कुछका वर्णन अलग अलग समय पर किया था। अिसलिअे समितिकी अिच्छाका स्वागत करके अिस कार्यमे अुन्होने अपना समय और शक्ति लगाअी। अिस सबधमे अुन्होने लबे लबे प्रवास भी किये और कडा परिश्रम अुठाकर यह पुस्तक लिखी है। अिसके लिअे हम अुनका आभार मानते है। श्री ठक्करबापाके कुटुबीजन श्री कपिलभाअी ठक्कर यह पुस्तक देख गये है, जिसके लिअे हम अुनके भी आभारी है।

हमने सोचा है कि अिस पुस्तकके प्रसिद्ध होनेके बाद मित्रो और प्रशसकोकी ओरसे जो जो सूचनाअे और अधिक जानकारी मिलेगी, अुनका दूसरी आवृत्ति छापनेका अवसर आने पर अुपयोग किया जायगा। अिसलिअे समिति सबसे बिनती करती है कि वे अिस सबधमे बिना किसी सकोचके जानकारी और सुधार सूचित करे।

अिस पुस्तकमे जितनी बाते आअी है, अुनके अलावा बापाकी डायरीके महत्त्वपूर्ण भाग, अुनके कुछ नोट और बापाके ८० वर्ष पूरे होने पर प्रसिद्ध

किये गये स्मारक-ग्रन्थमे से कुछ महत्त्वकी जानकारी देनेका हमारा विचार था। परतु पुस्तकका आकार वढ जानेसे वह खरीदनेवालोको महगी पडेगी, अिस भयसे यह साहित्य छापनेका विचार अभी छोड दिया है। योग्य समय पर अनुकूलताके अनुसार यह साहित्य भी प्रकाशित करनेका प्रयत्न किया जायगा। अिन सयोगोमे अिस पुस्तकमे रही कमियोके लिअ पाठक हमे क्षमा कर देगे अैसी आशा है।

यह पुस्तक तैयार करनेमे साथियोने जो सहयोग दिया, अुसके लिअे समिति अुनकी ऋणी है। अिस पुस्तकमे जो चित्र दिये गये हे, अुनके चुनावका प्रश्न वडा कठिन था। वापाके प्रवासोमे अलग अलग समय पर लिये गये और अुनके स्मारक-ग्रन्थमे छपे हुअे फोटोके ब्लॉक हमे हरिजन-सेवक-सघ, दिल्लीकी ओरसे मिले है। अिसके लिअे हम सघके वडे आभारी है। पुस्तककी कीमत वढ न जाय, अिस विचारसे फोटोके चुनावमे मर्यादा रखनी पडी हे।

गुजरात द्वारा भारतको अर्पित अिस अनन्य और मूक सेवकका जीवन-चरित्र जनताके सामने रखते हुअे हमे सतोपका अनुभव होता हे।

हरिजन आश्रम,   **श्री ठक्करवापा स्मारक समिति**
सावरमती
१०–२–’५५

लेखकका निवेदन

चार-अेक वर्ष पहले पूज्य श्री नरहरिभाअी परीख राजकोट आये थे, तब मै अुनसे मिलने गया था। थोडी वातचीतके वाद अुन्होने मुझसे कहा, 'ठक्करवापाका विस्तृत जीवन-चरित्र तैयार करना है। आप यह काम करेगे?' अुस समय थोडा विचार करके मैने 'हा' कहा था। 'हा' कहा अुस समय मुझे अिसकी कल्पना तो थी ही कि यह काम कितना वडा और कितना कठिन है। लेकिन् जव तीन माह वाद यह काम मुझे सौपा गया और मै वापाके जीवन-चरित्रके सम्वन्धमे सारे भारतमे फैली हुअी सामग्री अेकत्र करने और जीवन-चरित्रकी रूपरेखा तैयार करने लगा, तव मुझे अिस कार्यकी भगीरथता और अपनी शक्तिकी मर्यादाका भान होने लगा। दूसरी तरफ, पूज्य श्री किशोरलालभाअी मशरूवाला जैसेकी आगाही श्री परीक्षितलाल मजमुदारको लिखे अुनके पत्र द्वारा मिली कि 'वापा जैसे आजन्म सेवकके चरित्र-लेखनमे अुनके जीवन और कार्यको शोभा देनेवाला गाभीर्य और तटस्थता रखी जानी चाहिये। लिखते समय अिस वातका ध्यान रखा जाना चाहिये कि निश्चितता और तथ्योकी प्रामाणिकताको कोअी क्षति न पहुचे। अिसके सिवाय, अुनके चरित्रको कल्पनाका वाना नही पहनाया जा सकता, न अुसे गहरे रगोसे रगा जा सकता है।' श्री किशोरलालभाअीका वह पत्र तो मेरे पास नही है, लेकिन अितना मुझे याद है कि अुसके साररूपमे अूपरके मुद्दे फलित हो सकते है। अिस पत्रसे मै अपने काममे अधिक सावधान हो गया। अितना ही नही, अिस पत्र द्वारा ठक्करवापाके जीवन-चरित्रके आलेखनके लिअे मुझे निश्चित मार्ग-दर्शन मिल गया, और अपने मनमे मैने अुसकी जो कच्ची-पक्की रूपरेखा बना रखी थी अुसे पुष्टि मिल गअी। अुसी समय मैने अुन्हे अेक पत्र लिखा था, अैसा मुझे याद आता है। अुसमे अुनका आभार मानकर लिखा था कि आपने वापाका जीवन-चरित्र लिखनेमे जिन भयस्थानोका निर्देश किया है, अुनके विषयमे मै सावधान तो था ही, अव अधिक सावधान रहूगा। और वह अतिरजित न हो जाय, अिसका पूरा-पूरा खयाल रखूगा। साथ ही मैने अपने मनमे यह निश्चय कर लिया था कि सपूर्ण पुस्तक तैयार हो जाने पर श्री किशोरलालभाअीसे पढवा लूगा। सारी पुस्तक वे देख जाय, अुसके वाद ही प्रेसमे दूगा। परन्तु दुर्भाग्यसे यह पुस्तक पूरी हो, अुसके पहले ही अुनका अवसान हो गया और मेरे मनकी वात मनमे ही रह गअी। लेकिन मुझे अितना आश्वासन और सतोष है कि श्री नरहरिभाअी

सपूर्ण चरित्र पढ गये है। अुसमे जो थोडेसे दोष अुन्होने दिखाये, अुन्हे यथामति सुधार लिया गया है। अुनका स्वास्थ्य यदि अच्छा होता, तो अिस पुस्तकके लिअे अेक अध्ययनपूर्ण भूमिका अुनसे प्राप्त करनेकी आशा थी। लेकिन अुनकी अत्यत विगडी हुअी तवीयतको देखते हुअे अव लाचारीसे यह आशा मुझे छोडनी पड रही है।

लेकिन अिस पुस्तकके सम्वधमे अितना कह सकता हू कि अिसके कुछ प्रकरण मैने श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त, पडित हृदयनाथ कुजरू और श्री डाह्याभाअी नायकसे तथा आरभके अेक दो प्रकरण श्री दादासाहव मावलकर, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू वगैरा लोगोसे प्रेसमे देनेसे पहले पढवा लिये थे, और अुतने भागके लिअे अुनकी समति प्राप्त करनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है।

अव अिस जीवन-चरित्रकी तैयारीके विषयमे दो शव्द कह दू। वापाका जीवन-कार्य और जीवन-क्षेत्र अितना विस्तृत और व्यापक है कि अुसकी यथार्थ कल्पना पानेके लिअे और अुसके लिअे आवश्यक सामग्री अेकत्र करनेके लिअे सारे भारतमे घूमना और अुनके साथ काम करनेवाले साथियोको मिलना जरूरी था। निवेदनके अन्तमे मैने जो नामावली दी है, अुन सव महानुभावोसे मै रूवरू मिला हू और वापाके जीवन-प्रसगो और जीवन-सस्मरणो तथा कार्यप्रणालीके विषयमे अुनसे विस्तृत वाते की और सुनी है। अुनसे प्रश्न पूछे है, व्यौरोकी खातिरी की है तथा प्रसगो और सस्मरणोकी नोधे ली है। अिसके अलावा, भावनगरकी अुनकी जन्मभूमि तथा वम्वअी, पूना, दाहोद और दिल्लीकी अुनकी कर्म-भूमिकी मैने मुलाकात ली है। अिनमे से हर जगह जरूरतके मुताविक अेक हफ्तेसे लेकर महीने महीने तक मै ठहरा हू। अुनके सह-कार्यकरोसे वापाके सस्मरण सुने है। शहरो और गावोमे घूमकर अुनकी सस्थाओका सचालन और कार्य अपनी आखो देखा है। अुनका विस्तृत पत्रव्यवहार और फाअिले भी मै आद्योपान्त देख गया हू। और जिन सैकडो-हजारो लोगोके वीच वापाने काम किया, अुनके जीवन पर वापाके कार्यका क्या असर हुआ, यह अुन्हीके मुहसे सुननेके लिअे अुन लोगोके साथ मैने वातचीत भी की है। अिन सवमे से वापाकी विराट् मूर्तिकी कल्पनाको साकार रूपमे देखनेका मैने प्रयत्न किया है। अुसमे से मुझे वापाके जीवनका जो दर्शन हुआ, अुसे अिस पुस्तकमे शव्दरूप दिया है।

अिस कार्यमे जिन जिन सस्थाओ, महानुभावो, वापाके सहकार्यकर्ताओ, सेवको, भक्तो तथा अुनके पासके सगे-सम्वन्धियो और स्नेही जनोने मुझे

हृदयसे सहायता और सहयोग दिया, अुन सवका मैं अत्यत आभारी हू और हृदयसे अुनका अुपकार मानता हू।

बापाके जीवन-चरित्रकी सामग्रीके लिअे जिनसे मिलना अनिवार्य माना जा सकता है, अैसे कुछ लोगोसे मिलना अभी भी वाकी रह गया है। अुनमे से अेक है श्री श्यामलालजी और दूसरे है श्री भडारीजी। अिन दोनोसे मिलनेका मैंने खूब प्रयत्न किया, लेकिन विशेप परिस्थितियोके कारण मै अन्त तक अुनसे मिल नही पाया। अिस हद तक अिस चरित्रमे अधूरापन रह गया है। यह अपूर्णता मुझे बहुत खटकती है। अिसके अलावा, दक्षिण और अुत्तरके दूसरे अनेक भाअी-वहनोसे कुछ सामग्री मिलनेवाली थी जो नही मिल सकी। लेकिन यह क्षतिपूर्ति मैंने वहुत हद तक वापाके अभ्यासपूर्ण और विस्तृत व्यौरेवाले स्मारक-ग्रन्थसे करनेका प्रयत्न किया है। अिस पुस्तकके लिअे जानकारी प्राप्त करनेमें तथा तथ्योकी खातिरी करनेमे यह स्मारक-ग्रन्थ मेरे लिअे अत्यत अुपयोगी सावित हुआ है। अुसके भीतरकी सामग्रीका मैंने कुछ स्थानो पर छूटसे अुपयोग किया है।

अिस सवके बाद भी चरित्र लिखनेमे मैंने अेक कठिनाअी अनुभव की है। वह यह कि वापा स्वय मूक थे, अुनका कार्य मूक था और अुनका स्वभाव भी मूक था। अिसलिअे अुनका व्यक्तित्व अुनके कार्यके साथ मिलकर अेकरूप हो गया था। अिस कारणसे अुनके जीवनका, अुसके विविध प्रसगोका स्थूल रूपसे जो दर्शन होना चाहिये, वह वापाके विराट् कार्योकी तुलनामे वहुत कम हुआ है। दूसरे, भील-सेवा, अकाल कष्ट-निवारण-कार्य, आदिम जातियो तथा हरिजनोकी सेवा वगैरा सब अैसे काम थे, जिनका वर्णन करने लगे तो वर्णनमे अेकसापन आये विना न रहे और अुनका वर्णन न करे तो वापाके जीवन-कार्यकी पूरी कल्पना नही आ सकती। अिसलिअे पुनरुक्ति दोपका खतरा मोल लेकर भी, कुछ स्थानो पर पढते-पढते पाठकोके अूव अुठनेका भय अुठाकर भी वापाकी अकाल-सेवा और दूसरे सेवा-कार्योके विस्तृत वर्णन देनेमे मैंने सकोच नही रखा। वापाके विशाल कार्यसे सम्वध रखनेवाले आकडे और हिसाव-किताव भी मैंने छूटसे दिये है। अिस कारणसे कुछ स्थानो पर वाचनके प्रवाहमे शायद रुकावट आती होगी, लेकिन वापाके कार्योका प्रामाणिक रूपमे जनताको दर्शन करानेके लिअे यह अनिवार्य है, अैसा समझकर मैंने यह गलती की है। अिसके लिअे पाठक मुझे क्षमा करे।

अिस सवके बावजूद यह मानकर कि बापाका जीवन-चरित्र अुन करोडो लोगोके पास जानेवाला है जिनकी अुन्होने जीवनभर सेवा की है

तथा अैसे असख्य भाअी-वहनोके प्रतिनिधि सेवको, कार्यकर्ताओ, शिक्षको और वहनोमे भी वह पढा जायगा, मैंने भापाका स्तर अिन सवके अनुरूप वनाये रखनेके लिअे अिस चरित्रको यथासभव सीधा-सादा, सरल और आडवर-रहित वनानेका प्रयत्न किया हे। अिसमे मुझे कितनी सफलता मिली हे, यह मै नही जानता। अिसका अतिम निर्णय तो अिस चरित्रको पढनेवाले ही करेगे।

अेक विशेप वात और कह दू। अिस जीवन-चरित्रके सम्वधमे मैंने कुछ भाअी-वहनोसे वापाके सस्मरण प्राप्त किये थे। कितने ही सस्मरण अलग अलग क्षेत्रसे अेकत्रित किये थे। और कितने ही सस्मरणोका वापाके स्मारक-ग्रन्थसे अनुवाद तैयार रखा था। ये सस्मरण, कुछ पत्र और अुनकी डायरीका अमुक भाग अिस पुस्तकमे ही देनेका अिरादा था। लेकिन वैसा करनेमे सभवत दो-अेक सौ पृष्ठ और वढ जाते। स्मारक-समितिने वापाके जीवन-चरित्रकी जो योजना वनाअी थी, पृष्ठोकी यह सख्या अुसकी मर्यादासे वाहर जाती थी। अिसलिअे फिलहाल यह हिस्सा अलग कर लेना पडा है। यह वाकीका भाग 'ठक्करवापा — २ सस्मरण और श्रद्धाजलिया' शीर्षकसे अलग प्रकाशित करनेका विचार है। अिसमे साहित्यिक खूवी न हो तो भी भविष्यमे वापाके जीवन-कार्य सम्वन्धी प्रामाणिक तथ्य देनेवाली पुस्तकके रूपमे अिसका अुपयोग हो सकेगा।

अिस कार्यके अन्तमे मुझे वैसा ही आनन्द अनुभव हुआ हे, जैसा श्रद्धावान मनुष्यको पवित्र तीर्थस्थानोकी यात्रा करके वापस अपने घर लौटते समय होता हे। मुझे अिस वातका सतोप है कि अनेक लोगोकी सहायता और सहयोगसे मै यह कार्य पूरा कर सका हू। वापाका जीवन-चरित्र तैयार करनेमे मुझे भी स्थूल और सूक्ष्म तीर्थक्षेत्रोकी यात्रा करनेका तथा अनेक सेवाभावी महापुरुषो और विदुषी सन्नारियोके सत्सगका जो अमूल्य लाभ मिला, अुसके लिअे मै धन्यता अनुभव करता हू।

अेक वार फिर मै यह जीवन-चरित्र लिखनेकी प्रेरणा देनेवाले पूज्य श्री नरहरिभाअी तथा अिसे तैयार करनेमे साथ और सहकार देनेवाले सव लोगोका हार्दिक आभार मानता हू। अीश्वरसे मेरी प्रार्थना है कि वापा जैसे महान मानव-सेवक और पवित्र विभूतिकी, अुनके कार्य और सेवाकी यशोगाथा गानेवाला तथा अुनके पवित्र चरित्रका निरूपण करनेवाला यह ग्रन्थ हमारी नअी पीढीको सेवाकी प्रेरणा और कर्मका सदेश देने-वाला सिद्ध हो।

ऋण-स्वीकार

अिस चरित्र-ग्रन्थकी सामग्री प्राप्त करनेके लिअे जिन जिन गुरुजनो और पूज्य पुरुषोसे मैं मिला, अुनके नाम नीचे देकर अुनके प्रति अपना ऋण स्वीकार करता हू —

१ श्री दादासाहव मावलकर, दिल्ली, २ श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, दिल्ली, ३ श्री गुलाव वहन पडित, दिल्ली, ४ श्री वियोगी हरि, दिल्ली, ५ श्री शिवम्, दिल्ली, ६ श्री रगय्या, दिल्ली, ७ प० हृदयनाथ कुजरू, दिल्ली, ८ श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त, दिल्ली, ९ श्री सुखदेवकाका, दाहोद, १० श्री डाह्याभाअी नायक, दाहोद, ११ श्री मगनलाल महेता, अहमदावाद, १२ श्री रूपाजीभाअी परमार, दाहोद, १३ श्री लालचदभाअी धुळावा, दाहोद, १४ श्री पाडुरग वर्णीकर, दिल्ली, १५ श्री अवालाल व्यास, दिल्ली, १६ श्री वझे साहव, पूना, १७ श्री वझे साहव आवेकर, पूना, १८ श्री स्व० प्रो० व० क० ठाकोर, वम्वअी, १९ श्री करसनदास चितलिया, वम्वअी, २० श्री भगीरथ कनोडिया, कलकत्ता, २१ श्री सीताराम सेक्सरिया, कलकत्ता, २२ श्री सतीशचद्र दासगुप्त, सोदपुर आश्रम, २३ श्री सुन्दरलाल सेठ, कटक, २४ श्री लक्ष्मीनारायण साहू, कटक, २५ श्री मालतीदेवी चौवरी, अनुगुल आश्रम (अुडीसा), २६ श्री परीक्षितलाल मजमुदार, अहमदावाद, २७ श्री सामन्त नानजी मारवाडी, अहमदावाद, २८ श्री कपिलभाअी ठक्कर, भावनगर, २९ डॉ० केशवलाल ठक्कर, भावनगर, ३० श्री ग० स्व० त्रिवेणीवहन ठक्कर, भावनगर, ३१ श्री गिरीश भट्ट, भावनगर, ३२ श्री मानशकर भट्ट, भावनगर, ३३ श्री हरखचदभाअी, चोरवाड, ३४ श्री रसिकलाल शुक्ल, राजकोट, ३५ श्री छगनलाल जोशी, राजकोट, ३६ श्री आभावहन गाधी, राजकोट, ३७ श्री स्व० दरवारश्री वाजसूरवाला, वडिया, ३८ श्री लालचदभाअी वहोरा, वगसरा, ३९ श्री वलवन्तराय महेता, दिल्ली, ४० श्री अमृतलाल सेठ, वम्वअी, ४१ श्री छगनलाल पारेख, हरद्वार, ४२ श्री जालजीभाअी कोयाभाअी डीडोड, मीराखेडी, ४३ श्री वीरसिंहभाअी, झालोद, ४४ श्री रामजी हसराज कामाणी, वम्वअी, ४५ श्री विचित्रानद दास, ४६ श्री नदुभाअी पटेल, खेडब्रह्मा (अहमदावाद जिला), ४७ श्री अरुणाशु दे, कलकत्ता, ४८ श्रीमती अशुरानी, ४९ श्री अवधबिहारीलालजी, ५० श्री कनु गाधी।

कां०

प्रस्तावना

श्री ठक्करबापाका जीवन हमारे लिअे अेक आदर्श अुपस्थित करता है। जब अुन्होंने अेक बार निश्चय कर लिया कि वे आरामकी जिन्दगीको, जो पैसा कमानेवालेको मिल सकती है, छोडकर गरीबकी जिन्दगी बितायेंगे, तबसे अन्तिम दिन तक अुनके जीवनका अेक-अेक क्षण गरीबो, पीडितो और हर तरहसे पिछडे हुअे लोगोकी सेवामे ही बीता। अुनका अपना रहन-सहन भी ठीक वैसा ही रहा, जैसा कि अेक मामूली गरीब आदमीका हुआ करता है। भारतवर्षमे जहा कही अकाल, बाढ या भूकम्पके कारण लोग सकटग्रस्त होते, वहा ठक्करबापा अपने कुछ अनुयायियोके साथ अुनको सहायता देनेके लिअे पहुच जाते थे। अुन्होने अपना सार्वजनिक जीवन अेक प्रकारसे अिसी तरहके कामसे आरभ किया था और धीरे-धीरे गरीबोकी सेवाके लिअे वे अेक-अेक सस्था कायम करते गये। भारतमे पिछडे हुअे लोगोमे अधिकाश हरिजन और आदिम जातियोके लोग है, अिसलिअे ठक्करबापाकी दिलचस्पी अुन लोगोकी सेवा और अुनकी अुन्नतिमे प्राय आरभसे ही रही।

भील-सेवा-मडलकी स्थापना द्वारा आदिवासियोकी सेवा करनेकी भावना दूसरोमे जागृत करके जो काम अुन्होने आरभ किया, वह समय और सुविधा पाकर आज भारतवर्षके लगभग सभी स्थानोमे, जहा-जहा कि वे लोग बसते है, अेक महत्त्वपूर्ण और वृहत् आकार धारण कर चुका है। अिस काममे आज न केवल आदिम-जाति-सेवक-सघ या अिस प्रकारकी दूसरी सस्थाअे ही शरीक है, बल्कि करीब-करीब सभी राज्य-सरकारे और भारतकी केन्द्रीय सरकार भी अिसमे काफी योग दे रही है। अिसी तरह जब हरिजनोकी सेवाका प्रश्न आया और अुनके लिअे सगठित रूपमे काम करनेके निमित्त हरिजन-सेवक-सघकी स्थापना की गअी, तब अुसमे भी अग्रगण्य ठक्करबापा ही रहे। यह काम भी आज केवल गैरसरकारी सघका ही न रहकर देशके शासकोका भी हो गया है।

जिस समय महात्मा गाधी सन् १९३२ के सितम्बर मासमे यरवदा-जेलके अन्दर हरिजन-प्रश्नको लेकर अुपवास कर रहे थे और चिताकी अुन घडियोमे यह प्रयत्न चल रहा था कि किसी तरह कोअी अैसा रास्ता निकाला जाये जिससे कि हरिजनोकी भलाअी हो और अुनके स्वत्वोकी रक्षा हो और साथ ही महात्माजी अपने अुपवासको समाप्त करे, अुस समय ठक्करबापाने

जो काम हरिजनोके हकमे किया वह चिरस्मरणीय रहेगा। हरिजन-सेवक-सघकी स्थापना हुअी तो अुसका भी काम अुन्होने निष्ठापूर्वक चलाया।

जब भारतका सविधान बन रहा था, तब ठक्करबापाने बीहडसे बीहड स्थानोमे जाकर आदिवासियोकी हालत देखी और अुनके तथा हरिजनोके हकोकी रक्षाके लिअे सविधानमे आवश्यक धाराअे रखवाअी।

अिस प्रकारके कामोसे ठक्करबापा कभी थकते ही नही थे। देशके अेक-अेक कोनेका अुन्होने चक्कर लगाया। आदिवासियोका जो काम अुन्होने भील-सेवा-मडलकी स्थापना करके आरभ किया, अुसको बढानेके लिअे आदिम-जाति-सेवक-सघकी स्थापना की। अिस विषयका जितना व्यापक ज्ञान अुनको था, अुतना शायद ही और किसीको हो, क्योकि शायद ही कोअी दूसरा हो, जो आदिवासियो और हरिजनोके अिलाकोमे अितना अधिक घूमा और अुनसे मिला हो। जीवन भी अितना सादा कि जिसके लिअे अितने कम खर्चकी जरूरत होती थी कि अुन पर मानो खर्च कुछ होता ही नही था। वृद्धावस्थामे, और बीमारीकी हालतमे भी, अुन्होने तीसरे दर्जेको छोडकर रेल्वेके किसी अूपरके दर्जेमे शायद ही कभी मुसाफिरी की थी। जब हम यह सोचते है कि वे बराबर सफर करते ही रहते थे, तब समझमे आ जाता है कि वे अिस तरह कितने पैसे बचा लेते होगे, पर साथ ही कितना कष्ट भी अुन्होने सहन किया होगा। अेक तरफ तो अुनका हृदय अितना कोमल था कि दुखियोका दु ख देखकर पिघल जाता था, दूसरी ओर अपने साथियोमे काम लेनेमे वे अितने कडे थे कि कभी-कभी कुछ लोग अिस सबधमे अुनकी कुछ टीका-टिप्पणी भी करने लगते थे। पर बात यह थी कि जितनी सख्ती वे दूसरोके साथ करते, अुससे कही अधिक सख्ती अपने साथ करते थे। अिसलिअे अुनकी सख्तीमे भी मिठास आ जाती थी और अुनके साथी हसते-हसते अुसे सह लेते थे। मरते दिन तक ठक्करबापा जन-सेवा-कार्यमे ही लगे रहे, और हमारे लिअे वे अेक अैसा आदर्श छोड गये है, जिसे अुन सब लोगोको अपने सामने रखना चाहिये जो देश अथवा जनताकी सेवाको अपने जीवनका ध्येय बनाना चाहते है।

राष्ट्रपति भवन,
नअी दिल्ली,
१७ जनवरी, १९५५

ठक्कर कुटुम्बकी वंशावली

- वाघजी गगाजी (कुटुम्बके बडे पुरुष)
  - नरसिंहभाओी
    - रणछोडभाओी
      - लालजीभाओी
        - ओधवजी
        - विट्ठलदास
          - परमानन्द
            - कपिलभाओी
            - रामुभाओी
            - अनन्तराय
          - अमृतलाल (ठक्करबापा)
          - मगनलाल
          - मणिलाल
          - डॉ० केशवलाल ठक्कर (जो जीवित है)
          - नारायणजी
            - बाबुराव

अनुक्रमणिका

ठक्करबापा

१
प्रास्ताविक

भारतवर्षके कअी लोगोने अूचे, मजबूत और कद्दावर शरीरवाले किन्तु फूल जैसे सुकोमल हृदयवाले अिस भव्य पुरुषको आसामके जगलोमे, बगाल और अुडीसाके अकाल-पीडित गावोमे, गुजरातके भीलो और सौराष्ट्रके हरिजनोमे, महाराष्ट्रके महारो और मद्रासके अछूतोमे, छोटा नागपुरकी पर्वतमाला और थरपारकरके रेगिस्तानमे, हिमालयकी तलहटी और त्रावणकोरके समुद्र-तटके गावोमे पैदल घूमते देखा होगा। भारतवर्षका अेक भी प्रान्त अैसा नही होगा, जहा अिस दयामूर्ति पुरुषके पैर अेकसे अधिक बार न पडे हो। पिछले पैंतीस वर्षसे भारतके अनेक भागोमे वे कअी बार लगातार घूमे थे। द्वारकासे जगन्नाथपुरी तक, अटकसे कटक तक और हिमालयसे रामेश्वर तक भारत देशका कोना कोना अुन्होने छान डाला था। भारतकी दसो दिशाओमे अुन्होने यात्रा की थी। परतु ये यात्राअे अुन्होने केवल देवदर्शनके लिअे नही, तीर्थस्थानोमे भ्रमण करके पापपुज धोनेके लिअे नही, विविध स्थानोका देशाटन करके वहाकी नअी चीजे देखकर कुतूहल मिटानेके लिअे नही, परतु अीश्वरकी बनाअी हुअी अिस सृष्टिके सबसे अधिक दीन-हीन-कगालो, पीडितो, समाज द्वारा कुचले हुओ, कुदरती आफतोमे फसे हुओ, विधवाओ, बालको और दु खी निराधारोकी सेवा करनेके लिअे, अुनकी आखोके आसू पोछनेके लिअे, अुनके दु खित हृदयोको सात्वना देनेके लिअे, अुनके अुजडे हुअे घरबारमे अन्न-वस्त्रकी सहायता पहुचानेके लिअे, अुनके टूटे हुअे दिलो और पैरोको स्वस्थ और मजबूत बनाकर अिस धरती पर फिरसे चलता-फिरता करनेके लिअे अेक बार नही, परतु अनेक बार की थी।

सौराष्ट्रके अेक कोनेमे लोहाणा जातिमे जन्म लेकर और प्रान्तकी दृष्टिसे गुजराती होते हुअे भी वे जातिके बाडो और प्रान्तवादके सकुचित घेरोसे हमेशा परे रहे। अुनके निर्व्याज प्रेम, समदृष्टि और ममत्वपूर्ण जीवनके कारण बगाली और आसामी, बिहारी और उत्कलवासी, महाराष्ट्री और कन्नड, गुजराती और मारवाडी, भील-कोडा जैसे आदिवासी और हरिजन आदि सारे प्रान्तोके और हर तरहके लोग अुन्हे अपना ही आदमी मानते थे, क्योकि सबके बीच वे जीवनके अतिम

दिनो तक स्वजन बनकर रहे। अुनकी अच्छी-बुरी छाछ-काजी पी। अुनकी झोपडियोमे जमीन पर सोकर राते गुजारी। आम लोगोकी तरह ही सरदी, गरमी और बरसात सही। भूख, प्यास, थकान और जागरणकी परवाह किये बिना प्रसगवश जो भी काम सामने आया, अुसे कर्तव्य-बुद्धिसे हाथमे लेकर पार लगाया। रेलवेके तीसरे दर्जेकी मुसीबतोवाली सैकडो मीलकी लम्बी यात्राअे की। धूलके बगूले अुडानेवाले और अूपर अुछालकर नीचे पटकनेवाले गाडोकी थकानेवाली और हड्डिया ढीली कर देनेवाली मुसाफिरी भी की। जलमे, थलमे, रेलमार्गसे, गाडीके रास्ते, तग रास्ते, खच्चर पर और अूट पर बैठकर, नावमे बैठकर, पैदल चलकर — अिस प्रकार विविध ढगसे ओर विविध वाहनोमे बैठकर अुन्होने हजारो मीलके सफर किये और अीश्वरीय दूतकी भाति कगालो और निराधारोकी झोपडियोमे ठीक समय पर पहुचकर अुन्हे मुसीबतमे मदद पहुचाअी। दु ख और आफतकी पुकार कान पर पडते ही देशके दूर दूरके स्थानो पर भी वे सबसे पहले पहुच जाते और दु खमे फसे हुअे मनुष्योको मदद देकर अुनके सुख-दु खके साथी बनते। अुन्होने हजारो गरीबो और निराधारो, अछूतो और आदिवासियोके अधकारमय जीवनमे आशाका प्रकाश पहुचाया है।

अैसे प्रथम श्रेणीके मानव-सेवकको कौन नही पहचानेगा? सबसे पहले अिजीनियर ठक्कर, बादमे समाजसेवक ठक्करसाहब, अिस प्रकार आगे बढते हुअे हरिजनो और भीलोकी सेवा करते-करते अुन्होने गाधीजीके हाथो 'ढेडोके गुरु' का अुपनाम पाया। और फिर देशके विविध प्रान्तोमे अकाल-कष्टनिवारण और दूसरे मानवसेवाके काम करते-करते अन्तमे 'बापा' की प्यारभरी पदवी प्राप्त कर ली। हरिजन और आदिवासी अुन्हे बापा कहकर पुकारे यह तो ठीक, परतु अूचे वर्गोके लोग भी अुन्हे 'बापा' नामसे ही जानते और अिसी तरह सम्बोधन करते। जैसे राष्ट्रपिता गाधीजीका 'बापू' नाम भारत भरमे प्रचलित हो गया, वैसे ही ठक्करबापाका 'बापा' नाम भी सारे भारतमे चल पडा। खुद गाधीजीने भी अुन्हे 'बापा' कहकर लोगोकी दी हुअी अिस पदवी पर अपनी आखिरी मुहर लगा दी।

मोटी खादीकी धोती, वैसा ही सादा खादीका कुर्ता, अूपर मोटे गरम पट्टूकी बडी, सिर पर अूची दीवालकी चौतारी टोपी और पैरोमे सादे और मजबूत चप्पल पहने हुअे कठिनाअियोका वीरतासे सामना करनेवाले अुस पुरुषको देखते ही अैसा लगता, मानो मूर्तिमान सादगी मनुष्यदेह धारण करके आअी हो। अुनका सादा आहार-विहार और निरभिमानी रहन-सहन, गरीबसे गरीबके साथ तन्मय हो जानेकी तीव्र अभिलाषा और अुसे पूरा

करनेकी शक्ति — अिन सब गुणोने अुन्हे मानव-सेवकोकी पक्तिमे अग्रस्थान दिलाया है। अुनके लबे-चौडे ओर मजबूत सीनेमे ओर गर्जना करनेवाली आवाजमे पौरुषकी झलक मिलती, मगर अुनके भव्य कपालके नीचे सुदर चेहरेमे चमकती हुअी आखोके भीतर राजपूतोकी शौर्यभरी अुद्दण्डता नही, रोमन योद्धाओकी आग बरसानेवाली तेजस्विता नही, परतु अीसा मसीहकी आखोमे भरी अनुकपाकी झाकी देखनेको मिलती। बुद्धके चक्षुओमे जो करुणा थी अुस करुणाका अश अुनकी आखोमे नजर आता था। गाधीजीकी आखोमे जो प्रेम झरता था, वही प्रेम ठक्करबापाके नेत्रोसे झरता हुआ दिखाअी देता था। अिसी प्रेम ओर करुणाके बल पर अुन्होने अपने जीवनके पैंतीस वर्ष तक गरीबोके आसू पोछे ओर अुनकी अथक सेवा करके अुनके दिल जीत लिये।

अितना होते हुअे भी ठक्करबापा सब भूलोसे परे ओर सर्व रागद्वेषसे रहित मानवेतर देवता नही थे। वे मानव थे ओर मानव-सहज गुणदोष अुनमे भी थे। फिर भी विरासतमे मिले हुअे दोषोको दबानेका पुरुषार्थ करके और गुणोका विकास करके वे अुच्चसे अुच्च कोटिके मानव-सेवक बन सके। ओर यह अुनकी तपश्चर्याका ही पुण्य प्रभाव था कि छोटे-बडे सेवको तथा कार्य-कर्ताओको प्रेरणा देकर वे सेवाकार्यमे लगा सके।

अेक प्रकारसे देखे तो कुछ घटनाओको छोडकर अुनके जीवनमे कोअी खास अद्भुत बात नही हुअी। कोअी बडी चमत्कारी घटना नही हुअी। पिछले सौ सालके अर्सेमे जो भी राजनैतिक, सामाजिक ओर धार्मिक नेता हुअे है, अुनकी बुद्धिशक्ति, अुनकी प्रतिभा, अुनके जैसा अद्भुत व्यक्तित्व वगैरा ठक्करबापाके जीवनमे नही पाया जाता। स्वामी विवेकानद ओर दयानद सरस्वती, दादाभाअी नौरोजी ओर सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी, लोकमान्य तिलक और गोपालकृष्ण गोखले, देशबधु चित्तरजनदास और मोतीलाल नेहरू, विठ्ठलभाअी पटेल और वल्लभभाअी पटेल — अिनमे से किसीकी बुद्धि, किसीकी प्रतिभा, किसीकी प्रखर राजनीतिज्ञता या किसीकी वाक्पटुता ठक्कर-बापाको नही मिली। सुभाषचद्र बोस ओर जवाहरलाल नेहरूके जीवनमे जैसे अद्भुत ओर रोमाचकारी प्रसग अुपस्थित हुअे, वैसे प्रसग ठक्करबापाके जीवनमे दिखाअी नही देते। अिसके विपरीत अुनके जीवनका प्रवाह बिलकुल शात, सरल, सीधा-सादा, मदानमे बहनेवाली नदी जैसा रहा है। सूर्य आकाशमे अुगता है, अूचा चढता है, साझ पडने पर परछाअिया फैलाता हुआ ढलता जाता है और अिस तरह अपना कर्तव्य पूरा करके अन्तमे अस्त हो जाता है — अुसी तरहकी सीधी रेखा बापाने अपने जीवनमार्गमे खीची

दिनो तक स्वजन बनकर रहे। अनकी अच्छी-बुरी छाछ-काजी पी। अनकी झोपडियोमे जमीन पर सोकर राते गुजारी। आम लोगोकी तरह ही सरदी, गरमी और बरसात सही। भूख, प्यास, थकान और जागरणकी परवाह किये बिना प्रसगवश जो भी काम सामने आया, असे कर्तव्य-बुद्धिसे हाथमे लेकर पार लगाया। रेलवेके तीसरे दर्जेकी मुसीबतोवाली सैकडो मीलकी लम्बी यात्राअे की। धूलके बगूले अुडानेवाले और अूपर अुछालकर नीचे पटकनेवाले गाडोकी थकानेवाली और हड्डिया ढीली कर देनेवाली मुसाफिरी भी की। जलमे, थलमे, रेलमार्गसे, गाडीके रास्ते, तग रास्ते, खच्चर पर और अूट पर बैठकर, नावमे बैठकर, पैदल चलकर — अिस प्रकार विविध ढगसे और विविध वाहनोमे बैठकर अुन्होने हजारो मीलके सफर किये और अीश्वरीय दूतकी भाति कगालो और निराधारोकी झोपडियोमे ठीक समय पर पहुचकर अुन्हे मुसीबतमे मदद पहुचाअी। दु ख और आफतकी पुकार कान पर पडते ही देशके दूर दूरके स्थानो पर भी वे सबसे पहले पहुच जाते और दु खमे फसे हुअे मनुष्योको मदद देकर अुनके सुख-दु खके साथी बनते। अुन्होने हजारो गरीबो और निराधारो, अछूतो और आदिवासियोके अधकारमय जीवनमे आशाका प्रकाश पहुचाया है।

अैसे प्रथम श्रेणीके मानव-सेवकको कौन नही पहचानेगा? सबसे पहले अिजीनियर ठक्कर, बादमे समाजसेवक ठक्करसाहब, अिस प्रकार आगे बढते हुअे हरिजनो और भीलोकी सेवा करते-करते अुन्होने गाधीजीके हाथो 'ढेडोके गुरु' का अुपनाम पाया। और फिर देशके विविध प्रान्तोमे अकाल-कष्टनिवारण और दूसरे मानवसेवाके काम करते-करते अन्तमे 'बापा' की प्यारभरी पदवी प्राप्त कर ली। हरिजन और आदिवासी अुन्हे बापा कहकर पुकारे यह तो ठीक, परतु अूचे वर्गोके लोग भी अुन्हे 'बापा' नामसे ही जानते और अिसी तरह सम्बोधन करते। जैसे राष्ट्रपिता गाधीजीका 'बापू' नाम भारत भरमे प्रचलित हो गया, वैसे ही ठक्करबापाका 'बापा' नाम भी सारे भारतमे चल पडा। खुद गाधीजीने भी अुन्हे 'बापा' कहकर लोगोकी दी हुअी अिस पदवी पर अपनी आखिरी मुहर लगा दी।

मोटी खादीकी धोती, वैसा ही सादा खादीका कुर्ता, अूपर मोटे गरम पट्टूकी बडी, सिर पर अूची दीवालकी चौतारी टोपी और पैरोमे सादे और मजबूत चप्पल पहने हुअे कठिनाअियोका वीरतासे सामना करनेवाले अुस पुरुषको देखते ही अैसा लगता, मानो मूर्तिमान सादगी मनुष्यदेह धारण करके आअी हो। अुनका सादा आहार-विहार और निरभिमानी रहन-सहन, गरीबमे गरीबके साथ तन्मय हो जानेकी तीव्र अभिलाषा और अुसे पूरा

करनेकी शक्ति — अिन सब गुणोने अुन्हे मानव-सेवकोकी पक्तिमे अग्रस्थान दिलाया है। अुनके लबे-चौडे और मजबूत सीनेमे और गर्जना करनेवाली आवाजमे पौरुषकी झलक मिलती, मगर अुनके भव्य कपालके नीचे सुदर चेहरेमे चमकती हुअी आखोके भीतर राजपूतोकी शौर्यभरी अुद्दण्डता नही, रोमन योद्धाओकी आग बरसानेवाली तेजस्विता नही, परतु औसा मसीहकी आखोमे भरी अनुकपाकी झाकी देखनेको मिलती। बुद्धके चक्षुओमे जो करुणा थी अुस करुणाका अश अुनकी आखोमे नजर आता था। गाधीजीकी आखोसे जो प्रेम झरता था, वही प्रेम ठक्करबापाके नेत्रोसे झरता हुआ दिखाअी देता था। अिसी प्रेम और करुणाके बल पर अुन्होने अपने जीवनके पैंतीस वर्ष तक गरीबोके आसू पोछे और अुनकी अथक सेवा करके अुनके दिल जीत लिये।

अितना होते हुअे भी ठक्करबापा सब भूलोसे परे और सर्व रागद्वेषसे रहित मानवेतर देवता नही थे। वे मानव थे और मानव-सहज गुणदोष अुनमे भी थे। फिर भी विरासतमे मिले हुअे दोषोको दबानेका पुरुषार्थ करके और गुणोका विकास करके वे अुच्चसे अुच्च कोटिके मानव-सेवक बन सके। और यह अुनकी तपश्चर्याका ही पुण्य प्रभाव था कि छोटे-बडे सेवको तथा कार्य-कर्ताओको प्रेरणा देकर वे सेवाकार्यमे लगा सके।

अेक प्रकारसे देखे तो कुछ घटनाओको छोडकर अुनके जीवनमे कोअी खास अद्भुत बात नही हुअी। कोअी बडी चमत्कारी घटना नही हुअी। पिछले सौ सालके अर्सेमे जो भी राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक नेता हुअे है, अुनकी बुद्धिशक्ति, अुनकी प्रतिभा, अुनके जैसा अद्भुत व्यक्तित्व वगैरा ठक्करबापाके जीवनमे नही पाया जाता। स्वामी विवेकानद और दयानद सरस्वती, दादाभाअी नौरोजी और सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी, लोकमान्य तिलक और गोपालकृष्ण गोखले, देशबधु चित्तरजनदास और मोतीलाल नेहरू, विट्ठलभाअी पटेल और वल्लभभाअी पटेल — अिनमे से किसीकी बुद्धि, किसीकी प्रतिभा, किसीकी प्रखर राजनीतिज्ञता या किसीकी वाक्पटुता ठक्कर-बापाको नही मिली। सुभाषचद्र बोस और जवाहरलाल नेहरूके जीवनमे जैसे अद्भुत और रोमाचकारी प्रसग अुपस्थित हुअे, वैसे प्रसग ठक्करबापाके जीवनमे दिखाअी नही देते। अिसके विपरीत अुनके जीवनका प्रवाह बिलकुल शात, सरल, सीधा-सादा, मदानमे बहनेवाली नदी जैसा रहा है। सूर्य आकाशमे अुगता है, अूचा चढता है, साझ पडने पर परछाअिया फैलाता हुआ ढलता जाता है और अिस तरह अपना कर्तव्य पूरा करके अन्तमे अस्त हो जाता है — अुसी तरहकी सीधी रेखा बापाने अपने जीवनमार्गमे खीची

है। फिर भी अस्थिरताके अिस युगमे अुन्होने अनेकको छोडकर अेककी भक्ति की, जीवनके अैतिहासिक क्षणमे जो काम हाथमे लिया अुसमे जीवनके अत तक निरन्तर वफादारीके साथ जुटे रहे और जरा भी पीछे हटे वगैर अत्यत धीरज, लगन और अुत्साहसे आखिर तक काम जारी रखकर अन्तमे अुसे पार लगाया। क्या यही अपने-आपमे अेक वडा चमत्कार नही?

पैतीस वर्षका सतत सेवामय जीवन — और वह भी अैसे क्षेत्रमे जहा कीर्तिकी, यशकी, अूचे माने जानेवाले स्थानकी कमसे कम, नही, जरा भी गुजाअिश न हो — ठक्करवापा जैसे कोअी विरले ही मानव-सेवक जी सकते है। और पैतीस वर्पके निष्काम कर्म ओर सेवाके अतमे जव विन मागी कीर्ति अुनके सिर आ पडी तव अुस कीर्तिके वोझके नीचे वापा कैसे दव गये थे? अुस अवसर पर वे अितने घवरा गये थे कि वहासे भाग निकलनेका अुनका जी हो गया। अस्सी वर्प पूरे करके जव अुन्होने अिक्कासिवे वर्षमे प्रवेश किया, तव समस्त राष्ट्रने अुनकी जयती मनानेका निश्चय किया। और अुस दिन जव अुन्हे अभिनदन देनेका समारोह दिल्लीमे मनाया गया, तव वे कितने परेशान हो गये थे, यह तो अुस महान अवसर पर प्रत्यक्ष अुपस्थित रहनेवाले ही जानते है। अुन्होने अुस समय कहा था, "मेरा शरीर यहा है, परतु हृदय तो दूर दूरके गावोमे है। यहा योगीराज और अैसे ही दूसरे वडे वडे विशेपण मेरे नामके साथ जोडे गये है। मगर मै तो योगीराज भी नही ओर महापुरुप भी नही हू। मै अेक पामर प्राणी हू और दूसरे सव मनुष्योकी तरह मानव-सहज दोषोसे भरा हुआ हू।"

अपने जीवनमे कीर्ति और सम्मानके शिखर पर पहुचे हुअे वापा जव समस्त देश अुन पर अभिनदनकी वर्षा करता है और अुनके सेवामय जीवनके कार्य पर फूल वरसाता है, तव न मनमे खुश होते है और न गर्वसे फूल जाते है, परतु अतर्निरीक्षण करके अपनेको 'पामर प्राणी' वताते है ओर 'मोसम कौन कुटिल खल कामी" भजनकी यह लकीर अुद्धृत करके अपने हिमालय जैसे गुणोको अेक तरफ रखकर तिल जैसे दोपोको सामने रखते है। अैसे महान प्रसग पर हर्षावेशमे आकर जीवनकी कृतकृत्यता अनुभव करनेके वजाय अपने दोप सामने रखकर विनम्रताकी अुपासना करनेवाले पुरुप ठक्करवापा जैसे विरले ही हो सकते है।

हमारे युगमे गाधीजी ओर टैगोर, सर जगदीशचद्र और सी० वी० रमण, सरदार वल्लभभाअी और जवाहरलालजी जैसे अपने-अपने क्षेत्रमे चोटी पर पहुचे हुअे है, वैसे ठक्करवापा भी अपने मानवसेवाके और विशेपत

आदिवासियो और हरिजनोकी सेवाके क्षेत्रमे चोटी पर पहुचे हुअे है। पैंतीस वर्षकी अवधिमे लगातार सेवा करनेवाला अिनके जैसा दरिद्रनारायणका सेवक गाधीजीको छोडकर दूसरा कोअी नही निकला। अिनके सेवामय जीवनके लम्बे अर्सेमे अिनके मार्गमे अनेक बार स्तुति और कभी कभी निन्दा भी आअी। लेकिन निन्दासे वे कभी घबराये नही और स्तुतिमे फूले नही, बल्कि अुससे दूर ही रहे।

राजनैतिक आधीके अिस जमानेमे अनेक प्रकारके चमकदार, आकर्षक और धाधली भरे कार्य अुनके सामने आ खडे हुअे, और तरह तरहके आकर्षण अुपस्थित करके अुन्हे अिस दिशामे खीचनेके प्रयत्न होने लगे। लेकिन अेक बार निश्चित किये हुअे कार्यक्रमसे वे कभी विचलित नही हुअे। सत्याग्रहकी लडाअियोमे कुछ मौके अैसे आ गये, जब भील-सेवाके मूक कार्यको छोडकर अुनके अनेक साथी रणभेरी सुनते ही लडाअीमे शरीक हो गये। जेल गये। अुन पर बापाको पुत्रवत् प्रेम था और वे लोग बीस-बीस वर्ष तक भीलोकी सेवा करनेकी प्रतिज्ञा ले चुके थे। लेकिन अैसे साथियोका प्रेम और ममत्व भी अुन्हे लडाअीकी तरफ नही खीच सका, और अपने लिअे अकित की हुअी परिधिसे अुन्हे विचलित नही कर सका। फिर भी जब विदेशी सरकारके अधिकारियोने अपने पैदा किये हुअे तूफानमे अिन्हे फसानेकी कोशिश की, तब अुससे बचनेका प्रयास न करके अुन्होने साहसपूर्वक अुसका सामना किया और आये हुअे परिणामका निःस्पृहतासे स्वागत करके जेल भी बर्दाश्त की।

बापाने किसी भी तरहकी धूमधाम किये बिना लगभग मूक रहकर ही काम किया। अुन्होने अेक रातमे आम खडा करनेकी कोशिश न करके धीरे-धीरे परतु व्यवस्थित रीतिसे काम किया और बूद-बूद सरोवर भरकर ककर-ककर पाड बाधनेका पुरुषार्थ कर बताया।

पैंतीस वर्ष पहले अुनके बोये हुअे सेवाके बीज आज वटवृक्षके रूपमे खूब फूल-फल रहे है। दाहोद और दिल्लीके अुनके सेवामय जीवनकी पराग-रेणु अुडकर भारतभरमे फैल गअी है। जिस प्रान्तमे जाअिये अुसीमे वह नव-प्रफुल्लित पुष्पवृक्षकी तरह खिल अुठी है। सारे भारतमे छोटी बडी सेवा-सस्थाओकी अनेक पुष्पवाटिकाअे अुनके सेवारूपी फूलोकी सुगधसे महक अुठी है और भारतके अढाअी करोड आदवासी, पाच करोड हरिजन तथा देशकी अन्य पददलित और पिछडी हुअी जातियोके जीवनमे सुगध फैला रही है। दरिद्रनारायणकी सेवा करनेमे बापाने अपनी काया चदनकी तरह घिस डाली। दूसरोके जीवनमे ज्योति जगानेके लिअे स्वय अपने जीवनका तेल वे खतम कर

चुके। और कौन जाने अब अिस जर्जरित देहसे मनचाही तीव्रतासे भारतके दीन-दुखियोकी सेवा नही हो सकती, अिस खयालसे नअी देह धारण करके फिर अिस भूमि पर अवतार लेनेके लिअे ही वे भवसागरके अुस पार गये हो।

भावनगरके अधेरे कोनेमे आजसे अिक्कासी वर्ष पहले अुनका जन्म हुआ, तब कोअी यह बात नही जानता था। परतु अिक्कासी वर्षकी आयु पूरी करके जब वे गये, तब भारतके लाखो मनुष्योने अुनकी मृत्यु पर आसू बहाये और सैकडो शहरो और हजारो गावोने अुनकी आत्माको श्रद्धाजलि अर्पित की। यह अुनकी राष्ट्रव्यापी लोकप्रियताका प्रमाण है।

सौराष्ट्रकी भूमि बहुरत्ना कहलाती है। अितिहासके आदिकालसे लेकर अब तक अुसने अनेक मानव-रत्नोको अपनी कोखसे जन्म दिया है। अनेक विभूतियोने यहा अपनी कार्यलीलाका विस्तार करके अिस भूमिको पावन किया है। श्रीकृष्ण भगवान्‌ने अपने पुनीत चरणोसे अिस धरतीको पवित्र बनाया है। गाधीजी जैसे युगपुरुष अिसी भूमिमे पैदा हुअे। दयानद सरस्वती जैसे प्रखर धर्म-सुधारक और नरसिह महेता जैसे भक्त-कवि भी अिसी मिट्टीमे पैदा हुअे। अनेक सत-महतो और अैसे शूरवीर पुरुषोको, जिनकी ख्याति चारो युगमे बनी रहेगी, जन्म देनेवाली सौराष्ट्रकी भूमिने ही ठक्करबापा जैसे बिरले मानव-सेवकको जन्म दिया। यह सौराष्ट्रके लिअे ही नही, परतु गुजरातके लिअे और जिस भारतभूमिमे अुन्होने काम किया अुसके लिअे भी गौरवकी बात है। अुनके जीवनसे श्री किशोरलाल मशरूवाला और दादा-साहब मावलकरसे लेकर रूपाजी भाअी परमार और लालचदभाअी मीनामा जैसे अनेक नेताओ, कार्यकर्ताओ और सेवकोको प्रेरणा मिली है। पैंतीस वर्ष तक अखड सेवाका यज्ञ चलानेवाले अिस महापुरुषकी जीवनगाथा अिस पीढीको ही नही, परतु आगे आनेवाली पीढियोको भी सेवाकी ज्योति जलती रखने और दूसरोके लिअे अपनेको मिटाकर काम करनेकी प्रेरणा देती रहेगी।

ठक्करबापाके जीवनका आलेखन करनेसे पहले अुनके जीवनका मर्म समझनेकी मैंने कोशिश की, तो अचानक मुझे कबीर साहबकी नीचेकी साखी याद आ गअी

> कहत कबीर कमालको दो बाता सीख ले,
> कर साहबकी वन्दगी भूखेको अन्न दे।

सौराष्ट्रकी धरतीसे, अुसकी सत-परपरासे और साथ ही वैष्णव पितासे अुत्तराधिकारमे मिली हुअी ये दो बाते — साहबकी वन्दगी करना और

भूखोको अन्न देना —— बापाने बहुत अच्छी तरह सीखी ही नही, बल्कि अपने जीवनमे आत्मसात् कर ली थी। बापाकी जीवन-पुस्तकके पन्ने-पन्ने पर अिन दो बातोका बार-बार आलेखन हुआ दिखाअी देता है।

अिसलिअे कबीर साहबकी अिस साखीको सतत आखोके सामने रख कर, अिन पक्तियोको ही ध्रुव तारा मानकर, ठक्करबापाके सेवामय जीवनको शब्ददेह देनेका यहा नम्र प्रयास किया गया है।

२

जन्म और बचपन

सौराष्ट्रके प्रथम श्रेणीके माने जानेवाले शहर भावनगरमे खार दरवाजेमे होकर आगे जाने पर नानभा गली आती है। अुस सकडी गलीसे गुजरकर सौ सवा सौ कदम आगे चले तो वसाणी मुहल्ला आता है। अिस वसाणी मुहल्लेमे अुत्तर-दक्षिण द्वारवाला अेक तिमजिला मकान खडा है। आज-कल अुसकी पहली मजिलमे खली और बिनौलेकी दुकान लगती है। परतु आजसे अिक्कासी वर्ष पहले अैसा नही था। आज जो तिमजिला मकान खडा है, अुसकी अुस समय दो ही मजिले थी। तीसरी मजिल पर छत और छत पर अेक तरफ अेक छोटीसी बगली थी। और खली और बिनौलेकी दुकानकी जगह कुटुम्बकी स्त्रियोके रहने-बैठनेकी जगह और भोजनालय था।

अिस मकानमे विट्ठलदास लालजी ठक्कर नामके अेक साधारण स्थितिके किन्तु प्रतिष्ठित सज्जन रहते थे। अुनके यहा अिसी घरमे २९ नवम्बर, १८६९ को अमृतलाल ठक्कर —— ठक्करबापा —— का जन्म हुआ था। अस्सी-पचासी वर्ष बाद भी यह मकान अुसी स्थान पर खडा है। अब अुसमे बहुतसे फेरबदल अवश्य हो गये है, फिर भी अस्सी-पचासी वर्ष पहले यह मकान कैसा होगा, अुसकी कुछ कल्पना देने लायक अुसका पुराना स्वरूप अभी तक कायम है।

लोहाणा जातिके पुरखे मूलमे तो पजाबकी तरफसे आये, अैसा कहा जाता है। और लोहाणा लोग अपनेको भगवान् रामचद्रजीके पुत्र लवके वशज बताते है। अुनके कथनानुसार सैकडो वर्ष पहले अुनके बापदादा क्षत्रिय कुलमे पैदा हुअे थे। परन्तु समय पाकर परिस्थितिवश अुन्होने क्षत्रियका धधा छोडकर व्यापार-वाणिज्यमे प्रवेश किया। तबसे लोहाणा जाति व्यापारी जातिके रूपमे ही प्रसिद्ध है। सारी जाति अधिकतर व्यापार-रोजगारमे ही

लगी हुअी और खास तौर पर बम्बअी प्रान्तमे ही बसी हुअी है। वह मुख्यत तीन शाखाओमे बटी हुअी पाअी जाती है। कच्छी, हालारी और घोघारी। पजाबसे आकर जो पहले-पहल कच्छमे बसे और वही स्थिर हो गये, वे कच्छी लोहाणा कहलाये। अिससे आगे बढकर जो हालारमे बसे वे हालारी कहलाये और जो धोलेरा, घोघा, भावनगर वगैरा बन्दरगाहो तक पहुचकर आसपासके विस्तारमे फैल गये वे घोघारी लोहाणा कहलाये।

ठक्करबापाने जिस कुटुम्बमे जन्म लिया वह घोघारी शाखाका कुटुम्ब था। भावनगरमे अिस शाखाका अड्डा था। अब भी अकेले भावनगरमे ही पाच साढे पाच सौ घोघारी लोहाणा परिवार रहते हैं।

लोहाणा जातिने शुरूसे ही प्रवासी, साहसी, व्यापारके लिअे समुद्रकी यात्रा करनेवाले और होशियार व्यापारी पैदा किये है। अिस जातिके सपूत व्यापारके लिअे सीलोन, ब्रह्मदेश, मलाया, सिगापुर, चीन, अफ्रीका और युरोप वगैरा नौखड धरतीमे पहुचे है। और अनेक प्रकारके साहस करके छोटे बडे व्यापार-रोजगार वहा अुन्होने जमाये है। अिस जातिमे जिसे शिक्षा कहा जा सकता है, अुस प्रकारका ज्ञान भले ही कम हो, पर अैसा लगता है कि हिसाब-किताबका काम अुसने पहलेसे ही पक्का कर रखा है। बहुत ही पुरानी किस्मकी पाठशालामे दो चार किताबे पढकर, साधारण लिखना-पढना सीखकर, तथा बहीखाते और हिसाबका ज्ञान प्राप्त करके वे सीधे व्यापारमे कूद पडते है। और ज्ञानकी अितनी सी पूजी पर लाखोका व्यापार जमाकर विपुल धन कमाते है। अूपर बताअी हुअी मामूली विद्या पढकर, हाथमे लोटा-डोर लेकर विदेश जाने और खूब धन कमानेवाले लोगोके अुदाहरण लोहाणा जातिमे अनेक मिलेगे।

अितने पर भी लोहाणा जातिके अधिकाश लोगोकी स्थिति साधारण ही रही है। फुटकर व्यापार, नौकरी या मुनीमी ही अुनका धधा रहा है। ठक्करबापाके पिता विट्ठलभाअी लालजी भी कुछ वर्षो तक भावनगरमे लखपति माने जानेवाले लोहाणा जातिके ही अेक सेठ रघुभाअी डाह्याभाअीकी दुकान पर पच्चीस रुपये मासिक वेतन पर मुनीम थे। बीच बीचमे कभी सट्टेका कामकाज भी करते। फिर भी अैसा नही मालूम होता कि लक्ष्मीदेवीकी अुन पर कोअी खास कृपा रही हो। अन्त तक अुनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही सामान्य रही। अिस प्रकार रुपयेकी दृष्टिसे अपने कुछ दूसरे जाति-भाअियोमे वे बहुत पीछे थे, लेकिन प्रतिष्ठामे वे सबसे आगे थे। भावनगरकी घोघारी लोहाणा जातिके वे सर्वप्रथम नेता थे और नेताके रूपमे बडे सेठ भी अुनका आदर करते थे। अुनके जैसा जातिसेवक और जातिका नेता

लोहाणा जातिमे दूसरा नही था। अुनके वनाये हुअे जातिके नियम और रीति-रिवाज आज भी थोडे-वहुत परिवर्तनके साथ प्रचलित है।

विट्ठलदास ठक्करके ही अेक भाअी ओधवजी लालजी ठक्करकी गणना भावनगरके धनवानोमे होती थी। अमरीकामे अुस समय जो गृहयुद्ध हुआ, अुसमे अुन्होने रुअीके व्यापारमे खूव पैसा कमाया था। और तवसे वे जातिमे श्रीमन्तके रूपमे आगे आ गये थे। अुसके वाद अपनी प्रतिष्ठाके अनुरूप वडे ठाटवाटवाले महल वनवाकर पूरे ठाटसे वे भावनगरमे रहते थे। अुस जमानेमे अपना मकान होना अेक सामाजिक भूषण माना जाता था। भले साधारण स्थितिका हो, परतु अपना मकान सामाजिक प्रतिष्ठा और हैसियतका मापदड माना जाता था। मा-वाप अपनी कन्याकी सगाअी करनेके लिअे वरकी तलाश करते, तव पहले अिस वातकी जाच करते कि कुल प्रतिष्ठित है या नही और अुसका अपना मकान है या नही, वरकी योग्यता और गुण-अवगुण वादमे देखे जाते थे।

कुटुम्वके अेक भाअीके पास वडे वडे महल हो और दूसरे भाअीके पास कुछ न हो, यह अनुचित माना जायगा, अैसा ओधवजीको अुस समय महसूस हुआ होगा। अिसलिअे अुन्होने हजार पद्रह सो रुपया खर्च करके वसाणी मुहल्लेमे स्थित यह मकान खरीदकर भाअीको दिया था। तवसे विट्ठलदास ठक्कर अिस मकानमे अपने कुटुम्वके साथ रहते और सुख और सतोषपूर्वक अपना जीवन विताते थे। अिसी मकानमे जडीवहन, परमानद, अमृतलाल, मगनलाल, मणिलाल, केशवलाल और नारायणजी वगैरा वालकोका जन्म हुआ था। विट्ठलदास ठक्करके यहा अिस प्रकार अेक लडकी और छ लडके मिलकर कुल सात सन्ताने हुअी थी, और सभी अिस घरमे जन्म लेकर वडे हुअे थे। यहा रहकर वे पढे-लिखे थे। अिसलिअे अिस मकानके प्रति सभी भाअी-वहनोको और खास तौर पर अमृतलाल ठक्करको विशेष अनुराग था। वसाणी मुहल्लेके अिस मकान, अुसके पडोसके लोगो और वातावरणके प्रति वे खूव ममता रखते थे। अपने जीवनकी अुत्तरावस्थामे ठक्करवापा जव कभी भावनगर जाते तव अिस मकान और वसाणी मुहल्लेको देखनेकी अिच्छा अवश्य प्रदर्शित करते। और अुस समयके अपने वचपनके स्नेहियो, साथियों, सवधियो और पडोसियोको प्रेमसे याद करते और अुनमे कोअी जीवित होता तो अुससे मिलकर सतोष और प्रसन्नता अनुभव करते।

अपनी मृत्युके लगभग अेक दो वर्ष पहले अर्थात् सन् १९४८ मे वे अेक वार भावनगर आये थे, तव अपने भतीजे श्री कपिलराय ठक्करको साथ लेकर अिस वसाणी मुहल्लेमे गये थे। अपना वचपन जहा वीता था वह

जूना-पुराना मकान और अुसके आसपासका वातावरण देखकर अुनकी आखोमे हर्षाश्रु छलक आये थे। जीवनकी सध्याके किनारे पहुचे हुअे ठक्करबापा अुस दिन अपने अेकके बाद अेक साथियो, सम्बन्धियो, भाअी-भतीजो और अडोसी-पडोसियोको नाम लेकर अिस तरह याद करते थे, मानो अपने बचपनके दिन फिरसे ताजा कर रहे हो। और अत्यन्त प्रेम और ममतासे अुनके समाचार पूछते थे। अुस समय सत्तर-अस्सी वर्ष पहलेका जमाना अुनकी आखोके आगे खडा हो रहा था और अैसा मालूम होता था मानो अुस समयके आदमी जीते-जागते बनकर अुनके कल्पना-चक्षुके सामने चल-फिर रहे हो।

चादनीके अुजालेमे बसाणी मुहल्लेमे बैठकर चरखा कातनेवाली बेचारी अधी पानी काकी, शुक्रवारके दिन भुने हुअे चने और मूगफली बेचनेवाला गीगा चनेवाला, मुहल्लेके नुक्कड पर जहा गलीके बच्चे शौचके लिअे बैठते वहा गदगीमे बैठकर ठण्ड मिटानेवाला वह ढेडोका गुरु, सबेरेके समय अुठकर बहुत जल्दी भजन गानेवाले और बाहर चबूतरे पर बैठकर मशीनकी घरघराहट मचानेवाले मेराअी करसन भगत वगैरा अनेक पात्रोने अमृतलालके बाल और किशोर-मानस पर चिरस्थायी असर किया था। और अिसीलिअे अस्सी-अस्सी बरस बीत जाने पर भी वह जमाना और वे दिन अुनके मनमे कल जैसे ही ताजा थे। अुनकी याद आते ही आज भी ठक्करबापाका हृदय भावनासे भरपूर हो जाता और आखे छलछला आती थी।

अस्सी वर्ष पहलेका जमाना और अस्सी वर्ष पहलेका जीवन! कैसा था वह जमाना और कैसे थे वे दिन?

सबेरे तडके ही जब बालक अमृतलाल और अुनके भाअी-बहन अूपरकी मजिलमे सोते रहते, सामनेके घरसे भगत करसन मेराअी प्रभाती गाना शुरू करता और फिर शौचादिसे निपटकर और दातुन-कुल्ला करके काममे लगता। अुस समय घरके बडे लोग अुठते। विट्ठल बापा अुठकर प्रभाती गाते। मूली मा भी अुठकर हाथ-मुह धोती और प्रात कर्मसे निवृत्त होकर रातके बरतन माजती, आटा पीसती, कचरा बुहारती, पानी भरकर लाती और प्रात कालके दूसरे कामोसे फारिग होकर हवेली पर दर्शन करने जाती। अितने समयमे बच्चे भी जाग अुठते और दातुन-कुल्ला करके पाठशाला जानेको तैयार हो जाते।

सुबहका अुजाला होने पर दर्जी भगत करसन मेराअी घरके बाहर मशीन निकालकर चबूतरे पर जमाता और अुसका सिलाअीका काम शुरू होता। सुबहसे लेकर शामको देर तक अुसकी मशीनकी घरघराहट जारी रहती।

विट्ठल बापा यों तो धर्मप्रेमी और श्रद्धालु जीव थे। भगवान्‌के दर्शन करने नित्य हवेली जाते। घर पर भी ठाकुरजीकी मूर्ति थी। फिर भी धर्मके बारेमे अुनकी कल्पनाअे दूसरी ही थी। कअी बार बहुत ही तडके करसन भगत भजनका राग आलापकर सारी गलीको जगा देता, तब अुसे धमका कर वे अुसकी खबर ले डालते। अुनकी यह मान्यता थी कि धर्मका आचरण भी अिस प्रकार होना चाहिये कि दूसरे लोगोको असुविधा न हो, अुनके जीवनमे खलल न पहुचे। अिस मान्यताके कारण वे कअी बार दर्जी करसन भगतको डाटकर कहते कि 'अितनी जल्दी सवेरे, जब सब जीव सोये हुअे हो, जोरसे भजन गाकर अुनकी नीदमे खलल डालनेसे पाप लगता है। अिसलिअे तुम या तो कुछ देरसे अुठा करो अथवा प्रभाती धीरे धीरे गाओ। धीरे गानेमे क्या अीश्वर तुम्हारा भजन नही सुनेगा?"

दर्जी करसन भगतके बाद अिस मुहल्लेमे सबसे ज्यादा ध्यान खीचनेवाली पानी काकी थी। वह बेचारी छोटी अुम्रमे विधवा हो गअी थी। अुसके अिकलौता बेटा था। लडकेको पाल-पोसकर बडा करके ब्याह दिया था, और घरमे बहू लाकर अुसने आरामकी सास ली थी। भगवान्‌ने अितने समय बाद फिर सुखके दिन दिखाये, यह मानकर वह मनमे बहुत खुश होती थी। परतु अुसका सुख बहुत दिन नही टिका। लडका क्षयकी बीमारीमे फस गया और थोडे समयमे चल बसा। बहू घर छोडकर दूसरेके यहा बैठ गअी और पानी काकी बेचारी अकेली रह गअी। दुर्भाग्यवश पिछली अवस्थामें वह अधी हो गयी। बेचारी अधी बुढिया चरखा कातती। कोअी अुसे टोकरी भरके पूणिया दे जाता, तो फुरसतमे बैठी बैठी बेचारी काता करती। और अुसमे जो दो-अढाअी आने रोज मिलते, अुनसे अपना गुजर चलाती।

पानी बुढिया अधी हुअी तब घरमे कोअी दूसरा सहायक नही था। अधी होने पर भी खाना पकाना और बर्तन-भाडे माजना वगैरा घरकाम अुसे खुद ही करने पडते थे। सवेरे अुठकर बासी कामकाज निपटाकर, चूल्हा जलाकर मिट्टीकी हडियामे खिचडी-कढी या अैसी ही दूसरी कोअी चीज पका लेती। कअी बार रात पड जाती और सब सो जाते तब भी चद्रमाके अुजालेमे बाहर मुहल्लेमे बैठकर वह आरामसे कातती ही रहती। बालक अमृतलालको अिस पानी काकीके प्रति विशेष अनुराग था। और अुसके दु खी जीवनके प्रति अुसके बालहृदयमे सहानुभूति और दयाकी भावना थी। अेक जगह ठक्करबापा अिस पानी काकीको याद करके लिखते है कि "मेरी माता बहुत बार अिस अधी बुढियाकी मदद करती और अुसका सूत भी कात देती। अिससे मुझे हृदयमे बहुत आनद होता और बेचारी पानी काकीके

लिअे दिलमे सहानुभूतिकी भावना प्रगट होती। पानी काकीकी मदद करनेके आशयसे अुसे अेक तरफ हटाकर अुसका चरखा कातती हुअी मेरी माताका चित्र आज भी मेरी आखोके सामने खडा हो जाता है।"

और सवेरे मुहल्लेको बुहारने आनेवाला वह म्युनिसिपैलिटीका भगी, और रोज मागने आनेवाला ढेडोका गुरु? वे बेचारे अस्पृश्य थे। और अुन्हे अेक खास हदसे आगे आनेकी मनाही थी। ढेडोका गुरु रोज रोटी मागने आता और बेचारा वसाणी मुहल्लेके बच्चे जहा टट्टीके लिअे बैठते वहा गदगीमे जाकर बैठता और बीडीके ठूठ पीकर ठड अुडाता। अुसे देखकर बालक अमृतलालके हृदयमे अनुकपा होती। खयाल आता कि अिस बेचारेको अैसी गदी जमीन पर कैसे बैठना पडता है। अिसके बजाय वह साफ जगहमें बैठे तो बेचारेको ठीक लगे। अिसलिअे अेक दिन माताके पास जाकर अुससे सिफारिश करते हुअे कहा, "अिस बेचारे गुरुको टट्टी जानेकी जगह बैठना पडता है। अुसे हमारे पत्थरके चबूतरे पर बिठाये तो कैसा रहे? अिससे पत्थर तो अपवित्र हो नही जायगा?"

परतु माता अैसी छुट्टी कैसे देती? तुम नही समझ सकते। वह वहा नही बैठ सकता। यह कहकर माता बालक अमृतलालको चुप कर देती। परतु अुनके हृदयमे तो यह सवाल पैदा हो ही गया था। अितने पर भी छुआछूतका सस्कार अुनके मन पर भी पूरे जोरके साथ पड गया था। अिस सिलसिलेमे ठक्करबापा लिखते हैं

"ढेड और अुनके गुरु तो अस्पृश्य ही हो सकते है। अुन्हे किसी भी तरह जानबूझकर छुआ नही जा सकता। भूलसे भी छू जाय तो नहाना पडता है और नहाना कभी न हो सके तो छीटे तो लेने ही पडते है। यह छाप मेरे मन पर अितने जोरसे डाली गअी कि बात न पूछिये।"

अिस भगी और ढेडोके गुरुके अलावा शुक्रवारके दिन सिर पर टोकरी रखकर भुने हुअे चने बेचने आनेवाला गीगा चनेवाला भी वसाणी मुहल्लेके बच्चोके जीवनमे आप्तजन-सा बन गया था। अुसका बाप हिन्दू न रहकर खोजा बन गया होगा। वह बेचारा छोटी सफेद दाढी रखता। सिर पर लटकते हुअे चिथडोका अस्त-व्यस्त फेटा बाधता। कमरके नीचे बडे घेरवाला पाजामा पहनता और बदन पर फटा हुआ कुर्ता या कधे पर खेस — अिस पोशाकमे चने, मुरमुरे और गुड-पपडीकी टोकरी सिर पर रखकर रोज मुहल्लेमे आता। अुसके आने पर गलीके बच्चे अिकट्ठे हो जाते और घरमे

से पैसा-धेला जो कुछ मिल जाता सो लेकर अुससे चने, मुरमुरे, और गुड-धपडी वगैरा खानेकी चीजे लेते। वह काफी वूढा और शरीरसे कमजोर हो गया था। अिसलिअे गलीके शरीर वच्चे अुसे अकमर सताते। कोअी अुसका फेटा खीचते, कोअी फटे हुअे कुर्तेमे से चिन्दी खीचते, कोअी दाढीके वाल नोचकर चले जाते। अिस प्रकार कअी तरह अुसे तग करते। अैसा होता तव वालक अमृतलालकी माके पास वह शिकायत करता और कहता, "मूली मा, देखिये तो ये आपके लडके सताते है।" अिस पर मूली मा लडकोको डाटती और अूधम करनेसे रोकती। यह प्रसग अुद्धृत करके ठक्करबापा लिखते है कि कहा अुस समयके गरीव खोजे और कहा आजकलके मालदार, अहकारी और हमसे अलग हुअे खोजे।

अिस प्रकार वालक अमृतलालको वचपनमे ही गरीव और दु खी लोगोका जीवन देखने, अुनके सुख-दु खका साक्षी वनने और अुनके दु खोमे हिस्सा वटाकर मदद करनेमे तत्पर रहनेवाली माताके सुकृत्य आखो देखनेके अवसर प्राप्त हुअे। और सहज रूपमे सेवाभावकी तरफ मोडनेवाले सस्कार-वीज अुनके मनमे पडते गये। अिसका अुस समय तो अुन्हे पता भी नही होगा।

विट्ठलदास ठक्कर खुद गरीव थे, परतु अुनके आसपासका समाज तो अुनसे भी अधिक गरीव था। अुन सव अडोसी-पडोसियोकी स्थितिके मुकावलेमे तो अुनकी स्थिति वहुत अच्छी मानी जायगी। अितने पर भी थोडी सी आयमे घरका काम चलाना पडता था। अिसलिअे घरमे नाकर-चाकरकी तो वात ही नही थी। खाने-पीने और रहन-सहनमे अत्यत सादगी थी। घरमे दूध देनेवाला कोअी ढोर नही था। अुन दिनोमे विजलीके दिये नही थे और लालटेने भी कही कही दाखिल हुअी थी। घरमे सव तेलके दिये जलाते। विट्ठलदासके यहा वच्चोको वही खुराक खानेको मिलती थी, जो साधारण स्थितिके लोगोको खानेको मिलती थी। और कपडे भी खास व्याह-शादी और वार-त्यौहारके सिवाय सादे ही पहने जाते। अितने पर भी कुटुवकी व्यवस्था अैसी सुन्दर थी कि सवके मुख पर अेक प्रकारकी सतोपकी भावना दिखाअी देती थी। अभावका दु ख शायद ही दिखाअी देता। कुटुम्बमे अेक प्रकारका सुख और मेलका वातावरण वना रहता।

३

माता-पिता

ठक्करबापाने अपने जीवनमे जिन चार महानुभावोको गुरुपद पर स्थापित किया, अुनमे वे पिताको प्रथम गुरुके रूपमे मानते थे। यह अेक ही हकीकत अिस बातकी कल्पना अच्छी तरह दे देती है कि ठक्करबापाकी जीवन-रचना और जीवन-विकासमे अुनके पिता विट्ठलदास ठक्करका कितना बडा हिस्सा था। ठक्करबापामे जो भी अच्छाअी-बुराअी थी, अुसमे अधिकाश अच्छाअीका ही था और दोप तो नहीके बराबर थे। फिर भी जो कुछ था वह मुख्यत पिताके गुण-अवगुणोका अुत्तराधिकार था। पिताके गुण-दोषोकी दृढ छाप दूसरे भाअियोकी अपेक्षा ठक्करबापा पर सबसे ज्यादा पडी थी।

ठक्करबापा स्वय ही अिस सम्बन्धमे कहते है

"मेरे पिता परोपकारी, सत्यवर्तनशील, स्पष्टभाषी और व्यवस्थाप्रिय होने पर भी कुछ हद तक अुग्र थे। अुनके स्वभावकी अुग्रता और कडाअी मुझे विरासतमे मिली है। थोडीसी अुत्तेजनासे गुस्सा हो जाने और भडक अुठनेकी आदत मुझमे भी आ गअी है। अिस आदत पर काबू पानेका मैने काफी प्रयत्न किया है, फिर भी अभी तक पूरी तरह काबू नही पा सका हू। किसी भी मनुष्यके लिअे अपना स्वभाव बदलना कितना कठिन होता है, अिसका मुझे निजी अनुभव है। अितने पर भी सत्य व्यवहार, स्पष्ट वक्तृत्व और व्यवस्थापूर्वक काम करनेकी आदत — पिताके ये तमाम सद्गुण मुझमे भी आये और अिससे मुझे खूब ही लाभ हुआ है।"

विट्ठलबापा कुटुम्बके शिरछत्र बुजुर्ग थे। सारे परिवार पर अुनकी गहरी छाप थी। स्वभावसे अुग्र होने पर भी वे अनुशासनप्रिय थे। कुटुम्बमे अुनकी धाक थी। अुनसे सभी डरते थे। और कुटुम्बमे किसीकी अैसा कोअी काम करनेकी हिम्मत नही होती थी जिससे वे बिगडे या नाराज हो। नहा-धोकर साफ रहने, कपडे साफ और सुघड रखने, और घरमे हरअेक चीज अपनी-अपनी जगह रखनेका अुनका आग्रह था। ये सारे नियम वे स्वय कडाअीके साथ पालते और घरके दूसरे सब आदमियोसे पलवाते।

बादमे लडके बडे हो गये, अुनकी शादिया हो गअी और आबादी बढ गअी तब भी घरमें तगी होनेके बावजूद स्वच्छता, सुघडपन और

व्यवस्था ज्योकी त्यो बनी रही, यह पिता द्वारा बचपनमे आग्रहपूर्वक डाले हुअे सस्कारोका ही नतीजा था।

मकान छोटा हो या बडा, जूते अुनकी जगह पर ही रखे जाने चाहिये, कपडे अलगनी पर समेटकर या तह करके ही रखे जाने चाहिये, पुस्तके और कागज सब सभालकर रखे जाय, रुपये-पैसेका हिसाब ठीक ठीक रखा जाय, आमदनी और खर्च दोनो पाअी-पाअी तक लिखे जाय, वगैरा बाते विट्ठलदास ठक्करके पुत्रोने अुन्हीसे सीखी और छुटपनमे ही अिन सबकी पक्की आदते अुनमे पड गअी।

विट्ठलदास ठक्कर अूपरसे कडे दीखते थे, लेकिन भीतरसे अुनका हृदय बहुत ही कोमल और दयासे भरा हुआ था। वे बडे ममतालु थे। फिर भी अपनी सतानोको अुन्होने कभी गलत लाड नही लडाये। वे पढ-लिखकर जीवनमे आगे बढे, रुपये-पैसेसे सुखी हो, समाजमे अुनका मान-मरतबा बढे, यह अुनकी महत्त्वाकाक्षा थी। वे खुद अग्रेजी नही पढे थे, फिर भी अग्रेजीकी पढाअीका सामाजिक महत्त्व और आर्थिक लाभ वे अच्छी तरह समझते थे। अुनकी तमन्ना थी कि अुनके बच्चे अग्रेजी पढे, मैट्रिक पास करके कालेजमे जाय और वहा अूची पढाअी करके विश्वविद्यालयकी अूची पदविया प्राप्त करे। अिसलिअे अपनी गरीबीकी परवाह न करके, पेट पर पट्टी बाधकर, घरमे अनेक कठिनाअिया सहकर, पत्नीके गहने गिरवी रखकर और सिर पर कर्ज करके भी पुत्रोको अुच्च अग्रेजी शिक्षा देनेका सकल्प अुन्होने किया और अन्तमे अपूर्व दृढतासे अुस सकल्पको पूरा किया।

अुनकी अिस तमन्ना और दृढ आग्रहके कारण अुनकी सतानोमें से अेक अिंजीनियर, अेक डॉक्टर, अेक बी० अे० और अुनके पौत्रोमे से दो अेम० अे० और अेक अेम० बी० बी० अेस० हुअे। जिस जमानेमे सौराष्ट्रमे लोहाणा जातिमे अग्रेजी शिक्षामे बहुत कम लोग रस लेते थे और घोघारी लोहाणोमे केवल दो ही आदमी मैट्रिक तक पहुचे थे, अुस जमानेमे अग्रेजी शिक्षाकी अुपयोगिताके विषयमे विट्ठलदास ठक्कर यह खयाल रखते थे। अिसीलिअे पेट पर पट्टी बाधकर अथवा कर्ज करके भी पुत्रोको अग्रेजी पढानेका अुन्होने सकल्प किया था। और वह सकल्प आगे चलकर पूरा भी किया। साथ ही अुन्होने यह सकुचित और स्वार्थी दृष्टि भी नही रखी कि अग्रेजी शिक्षाका लाभ केवल अुनके पुत्रोको ही मिले अथवा कुटुम्बके गिने-गिने आदमियोको ही मिले। अुस जमानेमे सेवाके क्षेत्रकी जो परम्परा चली आ रही थी, अुसकी सीमामे रहकर अुन्होने अपने जातिभाअियोके बच्चोके लिअे पढनेकी सुविधा पैदा करनेका प्रयत्न किया था। अिसके लिअे जीवनकी अुत्तरावस्थामे

भावनगरमे लोहाणा जातिके विद्यार्थियोके लिअे लोहाणा छात्रालय शुरू किया और अुसके सचालन और देखरेखका काम अपने हाथमे रखा। अिस प्रकार जातिके सैकडो विद्यार्थियोकी पढाअी जारी रखनेमे वे सहायक हुअे थे। पर छात्रालयकी स्थापना और विकासमे अुन्होने जो महत्त्वपूर्ण योग दिया, अुसकी तफसीलमे जानेसे पहले अुनके हृदयके मुख्य गुणो — दयाभाव और मानव-प्रेमको प्रगट करनेवाले अेक दूसरे प्रसगका यहा अुल्लेख कर दे।

सन् १९०० मे भयकर अकाल पडा। गुजरातके अनेक भागोमें अुसका असर हुआ। घासके अभावमे हजारो पशु मर गये और अन्नके विना मनुष्य भी वहुत मरे। कुछ गरीव और निराधार लोगोको तो पेडोके पत्तो और थूहरके डोडो पर गुजर करनेकी नौबत आअी। भावनगर और अुसके आसपासके प्रदेशमें भी छप्पनके अिस अकालका भयकर असर पडा। देहातके लोग अनाज और कामकी तलाशमे सैकडोकी सख्यामे आकर भावनगरमे अिकट्ठे होने लगे। अिन लोगोमे लोहाणा जातिके आदमियोकी सख्या भी काफी थी। विट्ठलदास ठक्कर जातिके नेताके रूपमे अिन सबकी सहायता करते। परन्तु अैसी सहायता छोटे पैमाने पर कारगर साबित नही हो सकती, यह वात थोडे ही समयमे अुनकी समझमे आ जानेसे अुन्होने अकाल-पीडित ज्ञातिबधुओके लिअे अेक कोष कायम किया और घर-घर घूमकर धनवान और समर्थ मनुष्योसे चदा अिकट्ठा किया। कोषसे जातिके बाडेमे अकाल-पीडित गरीब लोहाणोके लिअे अुन्होने अेक भोजनालय शुरु कराया। अिस भोजनालयमे छ सात सौ गरीब लोहाणोको अेक वार खिचडी और रोटीका भरपेट भोजन मिलता था।

अिन दिनो विट्ठलवापा सदाके नियमसे भी जल्दी अुठते और नित्यकर्मसे निपटकर पूजापाठ करके सीधे भोजनशालामे पहुच जाते। वहा नियत किये हुअे कार्यक्रमके अनुसार रसोअी शुरू करा देते। सीधा-सामान तो पहले दिन तौलकर तैयार रखा होता था, अिसलिअे वहा पहुचते ही रसोअियोको सव सौप देते और खुद अुनके सिर पर खडे रहकर सारी देखरेख रखते। दस-ग्यारह बजे रसोअी तैयार हो जाती। तव तुरन्त ही अकाल-पीडित लोगोको खिलानेका काम शुरू हो जाता। सवको रोटी और खिचडी परोसी जाती। विट्ठलवापा अिस सवकी व्यवस्था करते थे। वे स्वय परोसते और परोसते समय देखरेख रखते। अकाल-पीडितोमे से हरअेकको अच्छी तरह भोजन मिला है या नही, अिसकी जाच कर लेते। और आखिरी पगत खा चुकती और वाडा झाड-बुहार कर साफ हो जाता, अुसके बाद ताला-कुजी लगा कर खुद खानेको घर लौटते।

वसाणी मुहल्लेमे पैर रखते ही वहा भी भिखारियोकी भीड खडी मिलती। अुन लोगोको विट्ठलबापा घरमे अुबले हुअे चने और रोटीके टुकडे बाटते। अितना कर चुकनेके बाद अेक डेढ बजे खुद खानेको बैठते। अकाल जारी रहा तब तक विट्ठलबापाने यह क्रम जारी रखा था।

अुन दिनो पच्चीस-तीस रुपये वेतन पानेवाला आदमी अिस प्रकार हजारो रुपयेका प्रबन्ध करे, रोज छ सात सौ जातिभाअियोको जातीय कोषसे भोजन दे, जातिके धनवान लोग अुसके हाथमे विश्वाससे रुपया सौंपे, यह विट्ठलबापाकी सचाअी, सेवाभावना, प्रामाणिकता और जातिके लोगोमे अुनके स्थान और सम्मानको बताता है। फिर, जी तोड परिश्रम करके अितनी सेवा करनेके बाद अुनकी परोपकार-वृत्ति वही खतम नही हो जाती थी। परन्तु अपनी अितनी कम आमदनीमे भी वे गरीबोके लिअे हिस्सा रखते थे। अकालके दिनोमे घर आये हुअे गरीबो और भिखारियोको वे अुबाले हुअे चने और पाव-पाव रोटी देते थे। यह अुनकी तन, मन ओर धनसे परोपकार करनेकी वृत्तिका ज्वलत प्रमाण हे। गरीब जातिभाअियोके लिअे जैसे अुन्होने अन्नदानकी व्यवस्था की थी, अुसी प्रकार गावोसे आये हुअे गरीब लोहाणोके लिअे वस्त्रदानका भी प्रबन्ध किया था। वे मिलोमे से ओढनेके कम्बल और खेस जुटाकर देहातसे आनेवाले जिन लोगोके पास ओढने-बिछानेके साधन न होते अुन्हे कम्बल और खेस देते।

अिस अरसेमे कुछ समय तक अमृतलाल ठक्कर पोरबदर राज्यमे अिजीनियर थे और फिर थोडे ही समयमे वे अफ्रीकाकी युगाडा रेलवेमे तीन वर्षके करार पर काम करनेके लिअे चले गये थे। विट्ठलबापा हर पखवाडे अुन्हे नियमित पत्र लिखते। अुसमे कुटुम्बके समाचारोके सिवाय सौराष्ट्रके अकाल-पीडित लोगोकी हालतका करुण चित्र देते और भावनगरमे अकाल-ग्रस्त गरीब जातिबन्धुओको मदद देनेके लिअे वे स्वय क्या-क्या काम कर रहे है, अिस सबका ब्यौरेवार वर्णन लिखते।

अिन पत्रोका युवक अमृतलाल ठक्कर पर खूब असर हुआ। अपने पिता दुर्भिक्ष-पीडित लोगोकी अितनी मदद कर रहे है और जातिभाअियोकी नि स्वार्थ भावसे सेवा कर रहे है, यह देख कर अमृतलाल ठक्कर मनमे अेक प्रकारका आनन्द और गर्व अनुभव करने लगे और अुनके हृदयमे सेवा करनेकी प्रेरणा अुत्पन्न हुअी। लेकिन पिताकी अेक बात अुस समय भी अमृतलाल ठक्करकी समझमे नही आती थी। अुनके मनमे सवाल अुठता . पिता अपना सेवाकार्य केवल जातिभाअियो तक ही क्यो मर्यादित रखते है? क्या अन्य लोगोको अकालकी पीडा नही सताती होगी? ओर यदि दूसरोको

भी दुःखका अनुभव करना पडता हो, तो अुनके प्रति भी अुन्हे अपना कर्तव्य पालन करना चाहिये या नही? यह और अिस प्रकारके अनेक विचार अुनके मनमे अुठते और वे सकल्प करते कि भविष्यमे यदि कभी अिस प्रकारका कार्य करना मेरे हिस्सेमे आयेगा, तो मै न केवल विना किसी जात-पातके भेदके सब जातियोकी ही सेवा करूगा, परन्तु देश-विदेशकी मर्यादाको लाघकर चीन जैसे दूरके स्थान पर भी सेवाकार्यकी जरूरत होगी तो वहा जाअूगा और गरीबोकी सेवा करूगा।

परन्तु हम विट्ठलबापाकी बात पर लौट आये। १९०० का साल गया और अुसके साथ छप्पनका अकाल भी चला गया। पर विट्ठलबापाने जाति-सेवाका कार्य तो अेक या दूसरे प्रकारसे जारी ही रखा। जातिके मकानोकी मरम्मत कराना, बाडेमे हुअी टूट-फूट ठीक कराना, जाति-भोज कराना, मकानोका किराया अुगाहना वगैरा कार्य तो वे करते ही थे।

अिस बीच भारत भरमे अग्रेजी शिक्षाकी नीव पड चुकी थी। विट्ठल-दास ठक्कर पहलेसे ही शिक्षाके हिमायती थे, अिसलिअे जातिके बालकोकी शिक्षामे सहायक होनेके लिअे वे सदा प्रयत्नशील रहते थे। जातिके अेक सेठसे अुन्होने अच्छी रकम जुटाकर 'सेठ गाडा-लाधा विद्योत्तेजक फड' शुरू किया। अिस फडसे जातिके बच्चोको पढनेके लिअे स्लेट-पेसिल तथा मुफ्त पुस्तके मिलनेका अुन्होने प्रबन्ध कर दिया।

अिस अरसेमे राजकोटमे लोहाणा बोर्डिगकी स्थापना हो चुकी थी। भावनगरमे भी अन्य जातिका अेक बोर्डिग शुरू हो गया था। तबसे विट्ठलदास ठक्करको भी अिस दिशामे कार्य करनेकी प्रेरणा हुअी और भावनगरमे लोहाणा जातिके विद्यार्थियोके लिअे छात्रालय शुरू करनेका प्रयत्न अुन्होने आरम्भ किया। अिसके लिअे चदा किया गया। अुसमे बम्बअीके स्वर्गीय सेठ दामोदर हेमजीकी विधवा काशीबाअीने अपने पतिका नाम छात्रालयके साथ जोडनेकी शर्त पर छात्रालयकी स्थापनाके लिअे १०,००० रुपयेका दान दिया। अिसके अतिरिक्त पचायतोसे भी कुछ रकमे मिली। अिनसे लोहाणा छात्रालय स्थापित हुआ। सबसे पहले खार दरवाजेके आगे लोहाणा जातिकी पचायतकी मिल्कियतका जो मकान था, अुसमे सन् १९०६ मे 'ठक्कर दामोदरदास हेमजी मजीठिया लोहाणा विद्यार्थी-भवन' की स्थापना हुअी।

अिन दिनो विट्ठलबापाकी आर्थिक स्थिति पहलेसे सुधर गअी थी। बडे लडके परमानन्द वढवाणकी अग्रेजी पाठशालामे शिक्षक थे। साथ ही अमृत-लाल ठक्कर भी हर महीने अपनी कमाअीमे से अेक खासी रकम घरखर्चके लिअे भेजने लगे थे। अितने पर भी विट्ठलबापाने यदि रुपयेका ही लोभ

रखा होता, तो वे जरूर अपनी नौकरी जारी रखते अथवा द्रव्योपार्जनके लिअे कोअी दूसरे धंधे भी करते। परन्तु बोर्डिंगका काम सेवाभावसे स्वीकार करनेके बाद धन-प्राप्तिका काम अुन्होंने लगभग पूरी तरह छोड दिया और अपना सारा समय अीश्वर-भक्ति और जातिसेवामें ही बिताने लगे। जीवनके पिछले वर्ष अुन्होंने छात्रालयके प्रबन्ध और जातिसेवाके काम-काजके लिअे ही अर्पण कर दिये।

जातिके छात्रालयके लिअे रुपया अिकट्ठा करनेके लिअे वे भावनगरमें कुछ खास स्थानों पर और आसपासके गांवोंमें भी जाते और विवाह जैसे शुभ अवसरों पर जातिवालोंके घर पहुंचकर बोर्डिंगके लिअे चन्दा अिकट्ठा करते। अिस कामके लिअे वे बैलगाडीमें बैठकर कअी बार हफ्ते हफ्तेका प्रवास करते और वरतेज, कमलेज तथा दूसरे गांवोंमें भी — जहां लोहाणोंकी बस्ती काफी होती — चक्कर लगा आते। चन्दा अिकट्ठा करनेके कामके सिवाय ज्यादातर वे भावनगरमें ही रहते। और जब शहरमें होते तब छात्रालयका सारा काम देखते और विद्यार्थियोंकी सेवा करते।

विट्ठलबापाने जिस दिन यह बोर्डिंग शुरू किया, अुसी दिनसे छात्रालयके लिअे अेक रसोअिया रखा था। अुसका नाम है रणछोडजी महाराज। सौभाग्यसे वे अब तक जीवित हैं और अुसी बोर्डिंगमें पिछले सैंतालीस वर्षसे काम कर रहे हैं। बोर्डिंगके प्रारम्भिक दिनोंका और विट्ठलदास ठक्करकी सेवाओंका बयान अुन्हींके मुंहसे सुननेको मिला है। वह अुन्हींके शब्दोंमें यहां रखता हूं।

रणछोडजी महाराज कहते हैं

"जब मेरी मूछोंकी रेख भी नहीं निकली थी, तबसे मैं अिस बोर्डिंगमें रसोअियेका काम करता हूं — जो आज भी जारी है। अुस दिनसे मैं विट्ठलबापाको जानता हूं।

"संवत् १९६२ की आषाढ सुदी दूजको अिस बोर्डिंगकी शुरुआत हुअी। तबसे बोर्डिंगका तमाम अिंतजाम विट्ठलबापा ही करते। वे दयाके अवतार और बडे सेवाभावी थे। वे लडकोंके दयालु माता-पिताकी तरह थे। अपने बच्चों और बोर्डिंगके लडकोंमें अुन्होंने किसी भी प्रकारका भेदभाव नहीं रखा। बोर्डिंगके लडकोंको वे खुद नहलाते। कोअी फोडे-फुंसीवाले होते तो खुद अुनके फोडे-फुंसी धोते और अपने हाथसे मरहमपट्टी करते। किसीके फटे हुअे कपडे होते तो खुद सी देते। नौकरानी कभी देरीसे आती तो झाडू भी खुद लगा देते।

"बोर्डिगके लिअे सागभाजी स्वय ही ले आते। और दस-पद्रह सेर शाक होता तो भी मजदूरसे न अुठवाकर खुद ही बोर्डिग तक अुठा लाते। घर पर खाने और सोनेके लिअे जानेके अलावा दिन भर वे बोर्डिगमे ही रहते और सुवह-शाम विद्यार्थियोसे प्रार्थना कराते।

"लडके खाने बैठते तव बरामदेमे दोनो कतारोके बीच घूमते रहते और अगोछेसे हवा करते रहते। अुन्हे आलस्य तो छू भी नही गया था। बैठना अुन्हे पसन्द ही नही था। बोर्डिगके मकानमे कही जाले जमे हो तो झट हाथमे झाडू और बास लेकर अेक अेक जाला निकाल देते।"

रणछोडजी महाराजसे मैने पूछा "बापा कुछ वेतन भी लेते थे क्या?"

"अरे नही!" अुन्होने जवाव दिया। "सारी जिन्दगी अुन्होने वेतन नही लिया। अिस घरको सेवाभावका अुत्तराधिकार मिला है। अुन्होने तो क्या, कपिलभाअीने सोलह वर्ष बोर्डिगमे काम किया तो भी अेक दिनका वेतन नही लिया।"

मैने कहा "तो फिर बापा नौकरी तो करते होगे?"

अुन्होने अुत्तर दिया "लडके सब राजकुमारो जैसे, फिर नौकरी क्यो करते? नौकरी तो अुन्होने मुझे याद है अुस दिनसे की ही नही। प्रभुभजन ही करते थे। अुन्हे तो यह बोर्डिग भली और अिसके लडके भले। हवेली जाना शायद किसी दिन चूक जाय, परन्तु बोर्डिग आना कभी न चूकते। बोर्डिग तो अुनके दिलमे बस गअी थी। मूलमे देशी रूढिके आदमी और भक्तिका रग लगा हुआ था। अुनका सारा परिवार ही शराफत और सेवासे भरा हुआ है।"

"बोर्डिगकी व्यवस्था करनेके लिअे जातिकी तरफसे कमेटी जैसा कुछ था?"

"अरे भाअी, अुन दिनो कमेटी वमेटी कुछ नही थी। अुन दिनो निरीक्षक कहो तो वे, मन्त्री कहो तो वे, और कमेटी कहो तो भी वे ही। जो कहिये सो सब विट्ठलवापा ही थे। केवल हिसाब-किताब लिखनेको अेक मुशी रखा हुआ था। पर अुस पर भी अुनकी निगरानी रहती ही थी। अिस प्रकार अुनका सभी कामकाज पक्का था। कमेटी वगैरा तो सब अुनके गुजर जानेके वाद बनी।"

"बोर्डिगके विद्यार्थियोसे अुस समय क्या खर्च लेते थे?"

"कुछ नही। सब मुफ्त था। लडकोकी कोअी फीस नही थी। विट्ठल-बापा स्वय घर-घर जाकर घडा रख आते और आठवे दिन अनाज अुगाह

लाते। घडेमे घर-घरसे अन्न मिल जाता। रविवारको अुसका बोर्डिगमे ढेर लग जाता। अनाज गाडियो पर लदकर आता। अुससे बोर्डिगका खर्च निकलता। अिसके सिवाय बडे सेठोसे कपडा-लत्ता, गरम ओटना वगैरा जुटाते। किसीके यहा व्याह-शादी या कोअी मगल प्रसग होता तो तुरन्त वहा पहुच जाते और दो पुस्तके — अेक विद्योत्तेजक कोपकी और दूसरी बोर्डिगकी — अुनके सामने रखकर अुनमें चन्दा लिखवाते। अुन दिनो लोगोकी आय अच्छी थी। समय अच्छा था। कोअी अिन्कार नही करता था। शक्तिभर सभी देते थे। अनाज तो ढेरो आता था। वाकी फुटकर खर्च थोडा ही होता था।"

"मूली माको तो तुमने देखा होगा?" मैंने पूछा।

"हा, देखा था। मूली मा बडी भली महिला थी। अैसी जिनके पेटसे जन्म लेनेमे गर्व हो। अुनके जैसी अुदार दिलवाली स्त्रिया आजकल नही दीखती। अब तो खाली नखरेबाजीकी बाते रह गअी है। वह बडी भली थी। अुन्होने बोर्डिगका बहुत काम किया था। सोनबाअी नही आअी, तो लाओ झाड लगा दू — अिस तरह बोर्डिगका कअी बार काम कर देती थी। कभी कोअी काम पडा न रहने देती। अडोसी-पडोसी और गरीब-गुरबोको मदद देती और अुनका काम भी कर देती। बीमारीमे लोगोकी मदद करती और अुसका पता तक न चलने देती।"

"ठक्करबापा अिस बोर्डिगमे कभी आते थे?"

"हा, यहा दो-तीन बार आये थे। कभी-कभी कपिलभाअीके घर खाने आते, तब थोडी देरके लिअे यहा बैठ जाते। अेक दिन कपिलभाअीसे बाते करते हुअे अुन्हे पता चला कि बोर्डिगमे 'भट्ट' बापाके समयसे काम-काज करते है। तब कहने लगे कि मुझे अुन्हे देखना है। अुस समय मुझसे खास तोर पर मिलने आये थे।" थोडी देर ठहरकर अिस तरहसे कहा जैसे सारी बातका सार सुनाते हो "सारा कुटुम्ब ही सेवाभावी है। सारे परिवारको अिसकी विरासत मिली है। वैसे विट्ठलबापा तो विट्ठलबापा ही थे। अुनके जैसा वीर अिस बोर्डिगमे दूसरा नही हुआ।"

लगभग अेक सामान्य ज्ञान रखनेवाले किन्तु सहृदय मनुष्यने विट्ठल-बापाका जो चित्र अिसमे खीचा है वह कितना हूबहू है! सादगी, किफायतशारी, शरीरश्रम, दूसरेके लिअे कष्टसहन, बडप्पनका अभाव, सेवाकी मूर्ति, माता-पिता जैसे दयालु — अिन सब वर्णन किये हुअे गुणो और विशेषणोसे विभूषित विट्ठलबापाकी मूर्ति हमारी नजरके सामने सजीव हो अुठती है।

बोर्डिंगका निष्काम कर्म अेक पाअीका भी बदला लिये बिना केवल सेवाभावसे ही अुन्होने बोर्डिंगका काम किया था। विद्यार्थियोको अुन्होने अपना आराध्य देव बनाया था। जिसके दिलमे रुपयेकी, बडप्पनकी और अिसी प्रकारकी अन्य अतृप्त आकाक्षाअे हो वह शायद ही अैसा काम कर सके। जैसा रणछोडजी महाराजने कहा, अुन्हे सचमुच भक्तिका रग लगा हुआ था। यह रग अुन्हे कोअी अकस्मात् नही लगा था। बचपनसे ही वे भी अैसे सस्कारोमे पलकर बडे हुअे थे।

युवावस्थामे अुन्हे पढनेका शौक था। अुस समयका 'गुजराती' पत्र और धार्मिक ग्रथ वे नियमित पढते थे। अखबार और धार्मिक ग्रथोका अुनका वाचन वर्षो तक निरन्तर चालू रहा था। ओधवजी लालजीकी दुकान पर दोपहरको रामायण और महाभारत वगैरा ग्रथोका पारायण होता था। विट्ठलबापा ये दोनो ग्रथ अुच्च स्वरमे अैसी छटासे पढते और अुनके अर्थ समझाते कि सुननेवाले मुग्ध हो जाते थे। अुनमे भक्तिका यह रग अन्त तक बना रहा और दु खके समय अुनके हृदयको अेक प्रकारका बल प्रदान करता था।

अिसका भी अेक छोटासा प्रसग विट्ठलबापाके जीवनमे मिल आता है। विट्ठलबापाकी पत्नी मूली मा लगभग १९०८ मे भावनगरमे गुजर गअी। वह रातका वक्त था। अुनकी मृत्युसे विट्ठलबापाको गहरा आघात लगा था। हृदयमे भावनाकी बाढ आ रही थी, जो बाहर निकलनेको जोर लगा रही थी। मनमे बडी बेचैनी थी। अुस समय आधी रातको विट्ठलबापा घरसे बाहर चबूतरे पर जा बैठे और मन ही मन प्रभु-स्मरण करने लगे। थोडी देर बाद अुन्होने अपनी सबसे बडी पुत्री जडीबहनको बुलाकर कहा "जडीबहन, मेरी भजनोकी पुस्तक तो ले आ।" जडीबहन अुनकी गीतोकी — भजनोकी पुस्तक ले आअी। अुसमे से दो भजन अितने जोरकी आवाजसे गाये कि सारा मुहल्ला सुन ले और फिर वे जोरसे रो पडे। हृदयका भार हलका हो गया तो शातिसे बैठे और आधी रातसे सुबह तकका समय वही बैठकर पूरा किया। सारे समय नामस्मरण और अीश्वर-चिन्तन करते रहे।

जब तक अुनका शरीर चलता रहा, तब तक वे बोर्डिंगकी सेवा करते रहे। बीचमे कभी-कभी बम्बअी जाकर रहते थे। ठक्करबापा अुस समय बम्बअीमे म्युनिसिपल रोड सुपरिन्टेन्डेन्ट थे। अैसी ही अेक बम्बअीकी मुलाकातके दिनोमे विट्ठलबापा पर लकवेका हमला हुआ और वही अुन्होने बिस्तर पकड लिया।

ठक्करबापाने अिन दिनो विट्ठलबापाकी खूब सेवा की। अुनके खाने-पीने, दवा वगैराकी चिन्ता और व्यवस्था अुन्होने खुद ही की और अिस बातकी सतत चिन्ता और सावधानी रखी कि अुनके हृदयको दु ख या आघात न पहुचे । पिताके प्रति अिस अनुराग और भक्तिके कारण अुन्हे अेक दो अवसरो पर झूठ भी बोलना पडा। लेकिन अुनकी पितृभक्ति और पिताके प्रति सेवाबुद्धि और ममता अितनी अुत्कट थी कि अैसा करनेमे अुन्हे कोअी आपत्ति नही दिखाअी दी। अपनी शक्ति और मर्यादाको देखते हुअे अुस समय धर्मके तत्त्वसे व्यवहार-धर्मका आचरण करना ही अुन्हे अधिक हितावह लगा।

विट्ठलबापा सन् १९१३ मे गुजर गये । ठक्करबापा गरीबोकी और पीडितोकी अितनी सेवा कर सके, अिसकी जड हमे विट्ठलबापाके जीवनमे मिलती है । जिन-जिन मुख्य प्रवृत्तियोका ठक्करबापाने अपने जीवनमे विस्तार किया, वे सब हम बीज-रूपमे अथवा छोटे पैमाने पर विट्ठलबापाके जीवनमे हुअी देखते है । अकाल-पीडितोके कष्ट-निवारणका कार्य और पिछडे हुअे वर्गके दलितोकी शिक्षाका जो प्रबध ठक्करबापाने अपने जीवनमे किया, वह सब विट्ठलबापाने भी अपने जीवनमे छोटे पैमाने पर कर दिखाया था।

अितने पर भी पिता-पुत्रके सेवाकार्यो और तत्सम्बन्धी भावना और कार्यक्षेत्रके बीच दो युगोका अन्तर था । अेककी सेवा जातिभाअियो तक ही सीमित थी और अुसीमे वे आत्मसतोष पाते थे, जबकि दूसरेका हृदय जात-पात और देशकालसे परे रहकर जरूरत पडने पर ठेठ चीन जैसे दूरके देशमे जाकर सेवा करनेके सपने देखा करता था।

बम्बअीके अछूतोके दु ख देखकर तथा शिन्दे और देवधर वगैराके ससर्गमे आनेके बाद बहुत समयसे ठक्कर साहबकी यह अिच्छा थी कि नौकरी छोडकर पूरा समय सेवाकार्यमे दिया जाय । यह अिच्छा अुन्होने पिताके सामने प्रगट की, तब विट्ठलबापाने अुन्हे रोका था और कहा था कि मै जिन्दा हू तब तक तू अिस क्षेत्रमे न जा और जो नौकरी करता है अुसे चालू रख । मेरे जानेके बाद तेरे जीमे आये सो करना । और अब मै कितने दिन जीनेवाला हू ?

ठक्करबापाने पिताकी अिस अिच्छाका आदर किया । १९१३ मे विट्ठलबापा गुजर गये तब तक अुन्होने अपनी नौकरी जारी रखी। अुसके बाद ही अुन्होने महाभिनिष्क्रमण किया, और कुटुम्बकी आर्थिक जिम्मेदारीका तथा दूसरा भार हटाकर वे भारत सेवक समाजमे शरीक हुअे और सेवाकी दीक्षा ली।

४

स्कूलका जीवन

विट्ठलदास ठक्करको शिक्षासे कितना प्रेम था, अिस सम्बन्धमे पहले कहा जा चुका है। अुत्तर जीवनमे जातिके बालकोकी शिक्षाके लिअे जिन्होने अथक परिश्रम करके लोहाणा बोर्डिंगकी स्थापना और सचालनका भार वहन किया, वे अपने बच्चोकी शिक्षाके लिअे भला क्या नही करते? विट्ठलदास ठक्करकी यह दृढ मान्यता तो थी ही कि बच्चेको पाच बरसका होते ही पाठशाला जरूर भेज देना चाहिये। अिसलिअे अमृतलाल ठक्कर चार-पाच सालके हुअे कि अुन्हे पाठशाला भेजना शुरू कर दिया। परन्तु अुस समय या तो पाठशालाका वातावरण अच्छा न लगता हो या शिक्षकोका बरताव पसन्द न हो या पढनेसे घर पर रहनेमे अधिक आनन्द आता हो ——किसी भी कारणसे अुन्हे पाठशालामे पढने जाना पसन्द नही था। अिस-लिअे पिताजी अुन्हे जबरदस्ती पाठशाला भेजते। अमृतलाल पाठशाला जानेमे आनाकानी करते, तो अुन्हे पकडकर जबरन् कोट-टोपी पहनाये जाते। अमृतलालके कोटकी बाहे चढाते, तब वे मुट्ठिया बन्द कर लेते, आडे लेटकर सो जाते और बडा तूफान मचा देते। तब बलपूर्वक पकडकर और जबरन् कोट-टोपी पहनाकर ठेठ पाठशालाके दरवाजे तक पहुचा आते। कभी कभी वे रोना-पीटना मचा देते तो भी विट्ठलबापा अिस मामलेमे जरा ढीले नही पडते थे। थोडी मरम्मत करके भी अुन्हे पाठशाला भेजकर ही रहते।

कभी अुन्हे दूसरे गाव जाना होता तो बच्चोको पाठशाला भेजनेका काम किसी दूसरेको सुपुर्द कर जाते। परन्तु अिस मामलेमे जरा भी ढिलाअी न करते। अिस समयके अेक दो मजेदार प्रसग ठक्करबापाने अपने ही मुहसे कहे है। अुन्हे हम ज्योके त्यो यहा देते है

"हमारे पडोसमे पीताम्बर जोशी नामके अेक सारस्वत ब्राह्मण रहते थे। वे अेक पैरसे लगडे थे और लकडीके सहारे धीरे धीरे चलते थे। अुनकी अेक आख भी जाती रही थी। वे हुक्केके अितने शौकीन थे कि चलनेमे अुन्हे अडचन होने पर भी जहा जाते वहा हुक्का जरूर साथ ले जाते। अुसे घडी भर भी न छोडते।

"कभी-कभी मै पाठशाला जानेमे आनाकानी करता तो ये पीताम्बर जोशी मुझे पाठशाला छोड आते। अेक अैसे प्रसग पर मैने न जानेका

हठ पकडा, तब मेरी माताने पीताम्बर जोशीसे कहा, 'आप अमुको पाठशाला छोड आयेंगे?' अुन्होंने हा कहा और मैं अुनके पीछे पीछे घिसटता गया। परन्तु रास्तेमे हम अेक दूसरेसे अलग पड गये। मैं अुस वक्त मुश्किलसे आठ नौ वर्षका रहा होअूगा। मै अुन्हे ढूढू और वे मुझे ढूढे। परन्तु हमे अेक दूसरेका पता नही लगा। अन्तमे पीताम्बर भाअी थककर घर गये और मैं भी अेकाध घटेके बाद घर पहुचा। घर आनेके बाद पीताम्बर भाअीको देखकर मैंने पूछा, 'अरे, पीताम्बर भाअी, आप कहा चले गये थे? मैं तो आपको ढूढ रहा था!'

"मेरी यह बात सुनकर पीताम्बर भाअी ही नही, घरके सब लोग खिलखिलाकर हस पडे। मैं सच बोल रहा हू, अिस पर किसीको विश्वास ही नही आया और मैं झूठोमे शुमार कर लिया गया। अुस दिनसे मेरे कुटुम्ब और पडोसमे 'पीताम्बर भाअी, मैं तो आपको ढूढ रहा था', यह वाक्य झूठको छिपाने और शरारतके लिअे कहावत बन गया। और मुझे चिढानेके लिअे बहुत बार परिवारके लोग और पडोसी कहते, 'पीताम्बर भाअी, आप कहा गये थे? मैं तो आपको ढूढ रहा था।'

"सही बात यह है कि मैं अुस दिन दरअसल सच ही बोला था। फिर भी अुस दिन किसीको मेरे वचन पर विश्वास नही हुआ।"

यह बात ठीक है कि ठक्करबापा अुस समय सच बोले थे। परन्तु छुटपनमे वे सदा सच ही बोलते हो, सो बात नही थी। कभी-कभी मामूली बातोमे भी वे झूठ बोलते थे। वे जब चौथी गुजराती पढ रहे थे, तब अेक बार झूठ बोलने पर पकडे गये। अुस समय महाशकर नामक अुनके कडे स्वभावके परन्तु भले शिक्षकने अुन्हे मीठा अुलहना देकर अुपदेश दिया था

"झूठ बोलनेसे नरकमे जाना पडेगा। वहा यमराज सजा देंगे। लोहेके खभोसे बाध देंगे। अिसलिअे झूठ बोलनेकी आदत छोड देनी चाहिये। झूठ बोलनेसे किसीका कोअी लाभ नही होता।"

ठक्करबापा अिस सम्बन्धमे कहते है कि "महाशकर मास्टरका यह अुपदेश दिमागमे बहुत वर्षो तक बना रहा और झूठ बोलनेकी आदत कुछ कम हुअी। अिस प्रकार छुटपनमे मस्तिष्क पर जो असर होता है अुसका भला-बुरा प्रभाव बहुत समय तक रहता है, अिसमे शका नही।"

पाठशालामे पढने जानेके लिअे आनाकानी करने पर अुन्हे कअी बार सख्त मार खानी पडती थी, यह बात पहले आ चुकी है। अैसे अेक अवसर पर लल्लूभाअी नामक अेक पडोसीने अुन्हे अितना मारा था कि

जीवन भर अुन्हे यह घटना याद रही। अस्सी वर्षकी अुम्र हो जानेके बाद भी वे अिस प्रसगको भूले नही थे।

सारी घटना ठक्करबापाके शब्दोमे ही देखिये

"पाठशाला जानेमे मै कभी कभी हठ कर बैठता। अेक बार पिताजी कोअी दूसरे गाव गये थे। और मुझे पाठशाला तो भेजना ही था। अिसलिअे मुझे पाठशाला पहुचानेका काम मेरी माताने लल्लूभाअीको सौपा। लल्लूभाअी मेरी बुआके लडके होते थे। मुझसे वे दस-पद्रह वर्ष बडे थे। अेक दिन मैने पाठशाला जानेमे आनाकानी की तो गलीके नुक्कडके मोड पर अेक मकानके चबूतरे पर खडा रखकर अुन्होने मुझे अितना मारा कि क्या कहू। थप्पड, घूसे वगैरा तो लगाये ही, अिसके सिवाय अेक दो प्रहार जूतोके भी किये और अिस प्रकार मार-पीटकर वे मुझे पाठशाला छोड आये। यह बात अितने सालके बाद भी भूलती नही। बडा हो जानेके बाद यह और अैसी दूसरी घटनाअे याद करके मै लल्लूभाअीसे कहता 'लल्लूभाअी, बचपनमे आपने मुझे खूब मार मारी थी। फिर भी मै आपका अुपकार ही मानता हू, क्योकि अुस समय यदि पाठशाला जाना बन्द हो जाता तो पढाअी कैसे आगे बढती?'"

ठक्करबापाकी ननसाल धोलेरामे थी। अेक बार बचपनमे जब वे प्राथमिक शालामे पढते थे, तब माके साथ ननसाल गये थे। धोलेरा बन्दरगाहकी पहलेवाली शान-शौकत और खुशहाली अुस समय नही थी। बन्दरगाह तक पहुचनेकी खाडी भर जानेसे बन्दरगाहका कामकाज बिलकुल ठप हो गया था और लोगोकी आर्थिक शक्ति भी टूट गअी थी। वहा ननसालमे रहकर अमृतलाल पाठशालामे पढने जाते थे। अुस समयका अेक विचित्र अनुभव याद करते हुअे बापा लिखते है

"पाठशालाके पीछे अेक छोटासा तालाब था और तालाब पर ही पाठशालाका अेक दरवाजा पडता था। जब कभी वह दरवाजा खोला जाता तो न जाने क्यो मेरे मनमे यह डर लगता था कि मै अुडकर तालाबमे गिर जाअूगा।"

धोलेराके सस्मरण विशेष सुखद हो, अैसा नही लगता। अेक जगह वे लिखते है

"धोलेरा बन्दरगाह अब तो बिलकुल ही अुजाड हो गया है। मेरे बचपनमे भी वह अुजाड और वीरान जैसा तो था ही। दिन भर धूलके बगूले अुठते रहते थे। खारी जमीन थी और गदला पानी था। अिस

सम्बन्धमे वहाके लोगोमे जो कहावत प्रचलित थी, वह साठ सत्तर वर्षके बाद अब तो और भी सच्ची साबित हो रही है

धूळ गाव घोलेरा, अने बदर गाम बारा,
काठा घऊनी रोटली, ने पाणी पीवा खारा ”

(भावार्थ घोलेरा बन्दर अुजाड हो गया है, वहा धूल अुडती है, खराब गेहूकी रोटी और खारा पानी पीनेको मिलता है।)

थोडे मास अिस प्रकार ननसालमे घोलेरा रहनेके बाद माताके साथ ही अमृतलाल ठक्कर भावनगर लौट आये।

प्राथमिक शालाके अिन दिनोमे बालक अमृतलालके मानसको गढनेमे कुटुम्ब, मुहल्ले और पाठशालाके अन्य बलोके साथ बाहरी वाचनका भी हाथ था। अुस समय थोडे पढे हुअे लडकोमे गजरा मारू और गुल-बकावलीकी कहानिया खूब पढी जाती थी। बालक अमृतलालने भी ये पुस्तके पढी थी। अिसके सिवाय ‘राजकुमार और वणिक नगरसेठकी पुत्रीकी प्रेम-कथा’ भी अुन्होने पढी थी। परन्तु अिन कहानियोने मनोरजनके सिवाय कोअी खास चिरस्थायी असर नही किया।

पाठ्यपुस्तकोमे ‘काव्य-दोहन’ के कुछ गीत अुस समय बहुत ही लोकप्रिय बन गये थे। अमृतलाल ठक्करको भी यह पुस्तक बहुत ही प्रिय थी। अुसमे कुछ पुराने कवियोकी कविताअे अुन्हे अच्छी लगती थी। अुसमे सीताहरणका काव्य अमृतलालको विशेष प्रिय था। छुटपनमे अुन्होने यह काव्य समय-समय पर गाकर लगभग कठस्थ कर लिया था। अूची आवाजमे गाकर वे अिसे सबको सुनाते थे। अुसमे भी “रढ[1] लागी रे राणीने[2] . ” से शुरू होनेवाला और अतिम भाग तो अुन्होने कअी बार गाया था।

सन् १८७९ से १८८२ तकके तीन वर्षोमे विद्यार्थी अमृतलाल ठक्कर अेंग्लो-वर्नाक्युलर स्कूलमे अग्रेजीकी पढाअी कर रहे थे, तब वह स्कूल रूपा-परीके दरवाजे पर था। अिस वक्त बार्टन लाअिब्रेरीका जो मकान है, अुसमे वह स्कूल लगता था। शिक्षक ज्यादातर भावनगर राज्यके बाहरसे आते थे। अुस समय अेंग्लो-वर्नाक्युलर स्कूलके हेडमास्टर सूरतके श्री प्राणनारायण आचार्य थे। वे प्रौढ वयके प्रभावशाली और रुआबदार आदमी थे। हाथमे काली शीशमकी छडी लेकर चलते और अुनके पीछे पजाबी चपरासी भी अपनी रगीन चपरास लगाकर रुआबके साथ चलता था।

अुनके समयमे स्कूलमे अेक सबसे चौंकानेवाली घटना हो गअी। अूची मानी जानेवाली नागर जातिके कुछ विद्यार्थियोके मास खानेकी बात जाहिर

---

१ लगन। २ रानीको।

हुअी। ये विद्यार्थी सरकारी अफसरोके लडके थे। अुस वक्त भावनगरमें गगा ओझा दीवानके पद पर थे। अुन तक यह बात पहुची। स्कूलमे जाच हुअी। सारी नागर जातिमें खलबली मच गअी। हेडमास्टर श्री प्राणनारायण और दूसरे शिक्षकोने भी अिस सबधमे गहरी जाच की और आयदा अैसी घटनाअे न हो, अिसकी सावधानी रखी।

ये नागर अफसरोके लडके दूसरी तरह भी बिगडे हुअे थे। ठक्कर-बापा अुन दिनोके सस्मरण याद करते हुअे लिखते हैं कि 'ये लडके ढेढ मुहल्लेमे जाते और ढेढोकी जवान स्त्रियोसे छेडछाड करते। मुझे अुस समय बहुत समझ नही थी, अिसलिअे आश्चर्य होता और मनमे सवाल अुठता कि ये लोग अैसा क्यो करते हैं?'

अमृतलाल ठक्कर जब माध्यमिक शालाके अन्तिम वर्षोमे थे, तब अुन्होने पढते-पढते पुस्तक-विक्रेताकी दुकान लगायी थी। कलकत्तेसे रामनाथ पॉलके 'फ्रेजेज' वगैरा बेचनेको मगाये थे। अिसके सिवाय दूसरी किताबोकी बिक्री भी करते थे। अिस व्यापारमे अुन्हे नफा हुआ या नुकसान, अिस बारेमे ठक्करबापा मौन रहे हैं।

अग्रेजी शिक्षाके दिनोमे अुन पर प्रभाव डालनेवाले अध्यापकोमे आल्फ्रेड हाअीस्कूलके मुख्य अध्यापक श्री जमशेदजी अूनवाला, सस्कृतके अध्यापक श्री मणिलाल नभुभाअी द्विवेदी तथा कादबरीका गुजराती अनुवाद करनेवाले श्री छगनलाल हरिलाल पड्या वगैरा मुख्य थे।

अूनवालाका बखान करते ठक्करबापा थकते ही न थे। अुनके बारेमें वे कहते

"जमशेदजी अूनवाला अूचे, गोरे और प्रभावशाली व्यक्ति थे। अपने अूचे कद, रुआबदार चेहरे और असाधारण प्रतिभाके कारण वे सब आद-मियोसे अलग मालूम होते थे। विद्यार्थियोका अुनके प्रति जबरदस्त आकषण रहता। विद्यार्थियो पर वे प्रेम भी दिखाते और रुआब भी रखते। मैट्रिकमे अधिक विषय तो वे ही पढाते थे। दिन भरमे लगभग तीन चार घट अुन्हीके होते। अग्रेजीमे वे अेक ही थे। गणित-विद्या, अकगणित, बीजगणित और भूमिति वगैरा भी वे ही सिखाते। अिसके सिवाय खगोल-विद्या तथा प्रारभिक पदार्थ-विज्ञान और रसायन-विज्ञान भी अुनके विषय थे। अपने विषयोको वे अितने सरल और रसमय बना देते थे कि सबको अुनके वर्गमे मजा आता था। खगोल-विद्याका प्रत्यक्ष ज्ञान देनेके लिअे रातमे वे विद्यार्थियोको घर बुलाते और वहा घरकी छत पर या मुहल्लेमे दूरबीन लगाकर तारे, ग्रह और चन्द्र वगैरा बताते।

"खेलोका भी अुन्हे बहुत शौक था। अुस समय क्रिकेटका खेल ही मुख्यत खेला जाता था। खुद तो बहुत नही खेलते पर विद्यार्थियोको खेलाते और स्वय मौजूद रहकर अुत्साह दिलाते।"

हाअीस्कूलमे पढने जाते समय व्यापारी वर्गके लडके अुस जमानेमे धोती, कसोवाला लवा अगरखा, सिर पर भावनगरी पगडी और अगरखे पर दुपट्टा डालते थे। ठक्करबापा भी अैसी ही पोशाक पहनते थे। अुस समयके अेक चित्रमे अमृतलाल ठक्करको अिस पुराने ढगकी पोशाकमे देखा जा सकता है। पाठशालामे जानेके बाद पगडी और दुपट्टा खिडकीमे रख देते और पगडीके बजाय टोपी पहनकर गभीरतासे बैठते।

अिस समयके कुछ प्रसग याद करके ठक्करबापा कहते है

"भावनगर हाअीस्कूलमे पढते हुअे दो बडे व्यक्तियोका प्रभाव और सस्कारिताकी छाप मुझ पर पडी थी। अेक थे श्री छगनलाल पड्या। जब मै अग्रेजीकी चौथी कक्षामे पढता था, तब वे अुस वर्गके शिक्षक थे। अुन्होने हाल ही मे कादबरीका गुजराती अनुवाद करके प्रकाशित किया था। हमारे सहपाठियोमे यह अनुवाद चर्चाका विषय बन गया था। मेरे जैसे साधारण विद्यार्थीने तो वह कठिन पुस्तक पढनेकी हिम्मत ही नही की।"

छगनलाल पड्याके सबधमे अेक और महत्त्वकी घटना याद करते हुअे ठक्करबापा लिखते है

"शनिवारको सुबह आम तौर पर साप्ताहिक परीक्षा ली जाती थी। अेक बार सब विद्यार्थी परीक्षाके पर्चे लिख रहे थे। मेरे पासवाले विद्यार्थीको किसी अग्रेजी शब्दके हिज्जे नही आते थे। अिसलिअे अुसने मुझे बहुत ही धीमी आवाजसे पूछा। अिसका जवाब यदि मुहसे देता तो पकडा जाता। अिसलिअे जबानी न बताकर मैने अपनी परीक्षाके अुत्तर-पत्रके हाशिये पर अुस शब्दके हिज्जे लिख दिये और देख लेनेका अुस विद्यार्थीको अिशारा किया। अुसने लिख लिया तो हाशिये पर लिखे हुअे शब्दको मैने काट दिया। जब मेरा अुत्तर-पत्र छगनलाल पड्याने पढा, तब अुन्हे यह कटा हुआ शब्द देखकर शका हुअी। अिसलिअे अुन्होने मुझे बुलाकर कारण पूछा। जो सच बात थी वह मुझे कहनी पडी। यह सुनकर अुन्होने क्रोध न करके मुझे अैसी शरारत न करनेकी सीख देकर छोड दिया और अुस समय माफी दे दी। अुनकी अिस अुदारताको मै जीवनभर नही भूला।"

मैट्रिकमे बापा पढते थे अुस समयके अेक सस्मरणमे वे लिखते है

"जब मै मैट्रिकमे था तब स्व० मणिलाल नभुभाअी शामलदास कालेजमे सस्कृतके प्राध्यापक नियुक्त होकर आये थे। वे मेरे अेक मित्रके यहा किरायेदारके रूपमे रहते थे। मै अुस मित्रके घर पढने जाता था। मणिभाअी सस्कृतके बडे विद्वान माने जाते थे। परतु साथ साथ अुन्होने गुजरातीमे धार्मिक तत्त्वोसे भरी हुअी अनेक कविताअे लिखी थी। गुजरातके अुस समयके अेक अुच्च कोटिके मासिकमे समय-समय पर वे कविताअे छपती। बादमे अुन सब कविताओका सग्रह छोटी पुस्तिकाके रूपमे प्रकाशित हुआ था। ये कविताअे हम झूले पर बैठे-बैठे अूचे स्वरमे मित्रके अूपरके कमरेमे गाते और जानबूझकर मणिलाल नभुभाअी द्विवेदीको सुनाते। साठ वर्षके बाद आज भी अेक पद याद आता है। वह पद है:

पोथी विश्वनी भणी भूल तु,
पळिया छते बन बाळ तु,
खरी मस्ती अे सुखडु खरु,
पछी पाप पुण्य अडे नही
अूडी जा! तु गाफिल गाभरा!
तारे अतरे शी आटी रही?*

"आत्माको ध्यानमे रखकर अुन्होने यह काव्य लिखा था और अुसमे सादी भाषामे वेदान्तका सार पूरी तरह भर दिया था। अैसी बहुतसी कविताअे अुन्होने बनाअी थी। हमारी अुस समयकी कच्ची अुम्रमे अिन कविताओका पूरा अर्थ तो कैसे समझमे आता? परतु जितना समझ पाते अुतना समझकर भी हम अिन कविताओको समूहमे गाते और गाकर आनद लेते थे।"

शालाकी पढाअीके अलावा खेलकूदमे भी अुस समयके विद्यार्थी काफी दिलचस्पी लेते थे। अुस समय अग्रेजी स्कूलोमे सब खेलोमे क्रिकेटका स्थान सबसे आगे था। अमृतलाल ठक्कर भी कभी कभी क्रिकेट खेलते थे, परतु खेलनेकी अपेक्षा अुन्हे देखनेमे ही ज्यादा मजा आता था। विद्यार्थी-अवस्थामे अुनका स्वभाव गभीर था। अकेले घूमने जाना अुन्हे अच्छा लगता था।

* सारे विश्वके ग्रथ पढकर तू भूल जा। और बूढा होते हुअे भी बालक बन जा। यही सच्चा आनन्द है, सच्चा सुख है। फिर तुझे पाप-पुण्य नही छुअेगे। अै गाफिल घबराये हुअे, तू अूपर अुड जा! तेरे अतरमे क्या गाठ है?

और अुन्होने भीतरी पुकार सुनी और अिस अुलझने पर ध्यान दिया। कितनी ही मुश्किले और मुसीबते खुदको भोगनी पडे तो भी अमृतलालको तो कालेजकी अुच्च शिक्षा दिलाकर ग्रेज्युअेट बनाया ही जाय, अैसा अुन्होने मनमे दृढ सकल्प किया। अमृतलाल ठक्करको मैट्रिकमे भावनगर राज्यके स्कूलोमे पहला नबर आनेके कारण दस रुपये मासिककी जसवतसिहजी छात्रवृत्ति मिली थी। परतु अितनेसे कालेजका खर्च पूरा नही पड सकता था। फिर भी अुस वक्त अुतनी सी रकम भी यह सकल्प पूरा करनेमे काफी सहायक हो गअी। कुछ अपनी बचाअी हुअी पूजीमे से, कुछ कर्ज करके और अन्तमे अपनी पत्नीके गहने गिरवी रखकर भी विट्ठलदास ठक्करने पुत्रके लिअे पूनाके अिजीनियरिग कालेजमे तीन वर्ष पढनेके खर्चकी व्यवस्था की और अन्तमे अुन्हे पढा कर ही रहे।

पहले वर्षके खर्चके लायक सुविधा करके विट्ठलबापा स्वय ही लडकेको भावनगरसे पूना छोडने गये। वहा शुरूमे किरायेसे कमरा लेकर रहे ओर अमृतलालको पूनाके अिजीनियरिग कालेजमे भरती कराया। पुस्तके वगैरा खरीदवाअी। अिस प्रकार अुन्होने पुत्रके लिअे पढने और रहनेकी पर्याप्त सुविधा कर दी। और अुसे सतोष हो, अिस प्रकार सब प्रबध हो जानेके बाद भावनगर लौटे।

कमरेमे रहना और कालेजमे पढना, यह बादमे बहुत अनुकूल नही पडा। अिसलिअे वे क्लबमे शरीक हुअे। अुस समय पूनामे गुजराती और काठियावाडी दो अलग अलग क्लब थे। अुनमे से ठक्करबापा काठियावाडी क्लबमे शामिल हुअे। अिसके पीछे खास दृष्टि तो यह थी कि खर्चमे किफायत हो, क्योकि काठियावाडी क्लबका खर्च गुजराती क्लबसे कम आता था।

अमृतलाल ठक्करने कालेजके ये तीन बरस किस ढगसे बिताये, कैसे पढाअी की, वगैराके बारेमें ब्यौरेवार बहुत कुछ जाननेको नही मिलता। परतु अुन तीन वर्षोमें आर्थिक दृष्टिसे काफी दिक्कतो और मुसीबतोका अुन्हे सामना करना पडा होगा परतु अुन दिनो कालेजके विद्यार्थियोको गरीबी अुतनी तीव्र रूपमे नही खटकती थी, जितनी आजकलके विद्यार्थियोको खटकती हैं। गरीब होनेमे हीनता नही मानी जाती थी। बहुतसे गरीब विद्यार्थी केवल गरीब होनेके कारण ही पढाअीमे अधिक ध्यान देते थे, मेहनत करते थे और अिस प्रकार पुरुषार्थ करके आगे बढते थे। मिट्टीके तेलका दिया जलाने लायक पैसे पास नही हो, तो म्युनिसिपैलिटीके दियेकी रोशनीमे पढकर पढ़ाअी जारी रखनेवाले विद्यार्थी भी अुस जमानेमे मौजूद थे। गोखलेजी

और अुनके जैसे अन्य गरीब किन्तु परिश्रमी और होशियार विद्यार्थियोंके अुदाहरण तो अुनकी नजरके सामने थे ही। साथ ही न्यायमूर्ति रानडेके जीवनकी, अुनकी सादगी और स्वदेशाभिमानकी तथा दूसरे गुणोंकी अुस वक्तके अुच्च कोटिके कुछ विद्यार्थियों पर बड़ी प्रबल छाप थी। अमृतलाल ठक्कर भी अुनके असरमें आये थे। अुन्होंने अिन महान और पूज्य पुरुषका नाम और अुनके कामके बारेमें केवल सुना ही नहीं था, बल्कि जब पूनामें पढ़ रहे थे तब अेकाध बार अुनके दर्शन करनेका सुयोग भी अनायास अुन्हें मिल गया था। अैसे अेक प्रसंगका वर्णन करते हुअे ठक्करबापा लिखते हैं

"मैं विद्यार्थी था और पूनाके कालेजमें पढ़ता था, तब पूनामें रविवार पेठ मुहल्लेमें स्थित काठियावाड़ी क्लबमें रहता था। वहांसे रोज पैदल कालेज जाता था। अेक दिन लकड़ीके पुल परसे गुजर रहा था, तब मैंने न्यायमूर्ति रानडेके दर्शन किये। अिस पवित्र और प्रतिभासंपन्न पुरुषके बारेमें मैंने पहलेसे सुन रखा था। अिसके सिवाय मैंने यह भी सुना था कि वे गोखलेजी जैसे महान पुरुषके गुरु थे। गोखलेजीके प्रति मुझे पूज्यभाव था, अिसलिअे अुनके गुरुके प्रति भी पूज्यभाव होना कोअी आश्चर्यकी बात नहीं। मुझे अच्छी तरह याद है कि रानडेजीको देखकर मैंने अुन्हें नमस्कार किया था और मनमें धन्यता अनुभवकी थी।"

पूनामें जब वे प्रथम वर्षमें पढ़ते थे तब अिंजीनियरी विद्याके पाठ्यक्रममें सिद्धान्तके साथ साथ व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त करना पड़ता था। और अुसके लिअे हाथमें हथौड़ा भी लेना पड़ता था। अिस प्रकारका शारीरिक काम करनेमें — यान्त्रिक काम करनेमें वे अुकता जाते थे। हाथोंमें औजार लेकर काम करना अुन्हें अनुकूल ही नहीं पड़ता और अुनके हाथोंमें अुस समय औजार शोभा भी नहीं देते थे। अिसके सिवाय अिंजीनियरी विद्यामें अेक और चीज भी जरूरी होती है और वह है चित्र खींचने, आकृतियां बनानेका काम। अिस काममें भी अमृतलाल ठक्कर बहुत होशियार नहीं थे। और यह अुनकी पसन्दका विषय नहीं था। फिर भी परीक्षाके लिअे अिसे करना ही होगा, यह समझकर वे लगनपूर्वक करते जरूर थे। वैसे, गणित-विद्याका अुन्हें बड़ा शौक था और अिसमें वे चमक अुठते थे। फरदूनजी दस्तूर जैसे गणित-विद्याके प्रखर विद्वान अुनके प्राध्यापक थे। अुस समय प्राध्यापकोंमें अधिकांश युरोपियन ही थे और अध्यापक व सहायक सब भारतीय थे।

राजनैतिक क्षेत्रमें जो लोग यहां हाकिम बनकर आते, अुनसे ये गोरे प्राध्यापक कुछ दूसरी ही मिट्टीके बने होते थे। अुनमें घमंड और अभिमान लेशमात्र नहीं था। विद्यार्थियों पर वे प्रेम रखते, स्वयं विद्याव्यासंगी थे

और होशियार विद्यार्थियोका तेज परखकर अुन्हे आगे लाने और मदद देनेको सदा तैयार रहते थे। अुस समय पूना कालेजके प्रिंसिपाल डॉ० कुक थे। ठक्करबापाके शब्दोमे कहे तो वे बहुत ही 'प्रभावशाली' और प्रेमी सद्गृहस्थ थे और अपने विद्यार्थियोके लिअे सब कुछ करनेको तैयार रहते थे। ठक्करबापा लिखते है कि कुल मिलाकर मैने अपने कालेजके दिन खासे आनदमे गुजारे।

कालेजके दिनोमे अमृतलाल ठक्करके जो थोडे मित्र थे, अुनमे गुजरातके प्रखर साहित्यकार और कवि स्व० बलवतराय ठाकोर भी अेक थे। ठक्करका ठाकोरके साथ बहुत अच्छा सबध था। अिस सबधकी बातचीतके दौरानमे कालेजके अुन दिनोके सस्मरण याद करते हुअे श्री बलवतराय ठाकोरने कहा था

"हम दोनो बडे गाढ मित्र थे। दोनो अक्सर साथ खाते, साथ खेलते, साथ सोते और साथ रहकर ही अनेक घटे बिताते। वैसे अमृतलाल थे विज्ञानके विद्यार्थी और मै था कलाका विद्यार्थी। अिसलिअे हम अेक कालेजमे नही पढे। अिसी तरह हमारे प्रोफेसर वगैरा भी अेक नही रहे।"

कालेज-जीवनके ये दिन श्री ठक्करके लिअे सुखमय थे। पूनामे अुनका अधिकाश समय अध्ययन ही मे बीता था। पहलेसे ही गभीर प्रकृतिके मनुष्य थे, अिसलिअे खेलकूदमे बहुत थोडी दिलचस्पी लेते थे।

कालेजके प्रथम वर्षमे थोडे महीने बाद दस दिनकी छुट्टी हुअी तब वे भावनगर हो आये थे। अिसके सिवाय जब भी वैकेशनकी छुट्टिया होती, वे बिना चूके भावनगर जाते। तब कुटुम्ब तथा मोहल्लेके छोटे बडे लडके अुन्हे घेर लेते थे। कुटुम्बके कुछ लडके पढाअीमे अूची कक्षाओमे भी पहुच गये थे। अुन्हे वे गणित तथा यूक्लिडकी भूमिति पढाते।

कालेजकी पढाअीके दिनोमे अमृतलाल खूब किफायतसे रहते। अुस समय कालेजके खर्च और जीवनके खर्चका स्तर बहुत ही नीचा था। सस्ताअीका जमाना था। फिर भी तीस रुपये मासिक खर्च सहज ही हो जाता था। तीन वर्षकी कालेजकी शिक्षा पूरी करनेके लिअे पिताको कर्ज करना पडा था और माताके गहने रहन रखने पडे थे, यह घटना पुत्रको बहुत वर्ष तक याद रही थी। अिस घटनाको याद करके पिछली अुम्रमे ठक्करबापा अक्सर गद्गद हो जाते और मन ही मन हजारो बार माताको प्रणाम करते। माताकी वह अुदारता और पिताका वह शिक्षा-प्रेम वे कभी भूले नही। माता-पिताकी जिस अुदारता और जिस प्रेमके कारण वे अुच्च शिक्षा प्राप्त कर सके, अुसका मातृ-ऋण और पितृ-ऋण तथा पूनाके जिन धुरधर प्राध्यापकोसे

अुन्होंने अुच्च शिक्षा प्राप्त की अुनका गुरु-ऋण अुन्होंने बडे होनेके बाद गरीबों, हरिजनों, आदिवासियों और पिछडे हुअे वर्गोंकी शिक्षाके काममे रत रहकर, अुच्च शिक्षाके लिअे अुन्हे आर्थिक तथा अन्य सहायता देकर और जीवनभर अुसके लिअे तपश्चर्या करके चुकाया।

६
विवाहित जीवन और पारिवारिक जीवन

अमृतलाल ठक्करका विवाह अुस समयके सामाजिक रीतिरिवाजोंके अनुसार बहुत ही छोटी अुम्रमे हो गया था। अुस जमानेमे प्रतिष्ठित और अिज्जतदार कुटुम्बोंमे पुत्र पालनेमे झूलता हो तभी सगाअी हो जाती और दस बारह वर्षकी अुम्रमे विवाह भी हो जाता। अैसे बालविवाहोंमे किसी भी प्रकारका अनौचित्य अुस समय हिन्दू समाजमे किसीको नही लगता था। अलबत्ता राजा राममोहन राय, स्वामी दयानद सरस्वती, और अुनके जैसे कुछ अन्य समाज-सुधारकों और धर्मसुधारकोंने हिन्दू समाजमे प्रचलित अिन बुराअियोंके विरुद्ध आवाज अुठाअी थी और लोगोंको अुनसे बचानेके लिअे सामाजिक सुधारोंकी हलचल शुरू कर दी थी। फिर भी अधिकांश हिन्दूसमाज अिन सारे अुपदेशों और सुधार-आन्दोलनोंमे अस्पृश्य ही रहा था और अिन सुधारोंकी हलचल भावनगरकी लोहाणा जाति तक तो अभी पहुच ही नही सकी थी।

अुस समय विवाह व्यक्तिगत जीवनके सवालके बजाय कौटुम्बिक सुविधा-असुविधाका सवाल अधिक माना जाता था। लडके-लडकी कब विवाह करे, किसके साथ करे, किस तरह करे, यह सब विवाह करनेवाले व्यक्तियोंके बजाय अुनके मा-बाप तय करते और अुनसे भी बडा कोअी बुजुर्ग घरमे जीवित हो तो वह तय करता।

विट्ठलदास ठक्करने भी अपने बडे भाअीकी सलाहके अनुसार अपने दो पुत्रोंका विवाह बडे भाअीके दो पुत्रों और अेक बहनके लडकेके साथ अेक ही समय निपटाया था। हरअेक पुत्रका अलग अलग विवाह किया जाय तो अलग अलग और अधिक खर्च हो, जब कि अेक साथ विवाह हो जाय तो खर्च कम अुठाना पडे। अिस ढगसे विवाहकी समस्या हल करनेमे विवाह करने-वालेकी अुम्र, योग्यता और सुविधा-असुविधा वगैरा किसी भी बातका खयाल नही रखा जाता था। श्री अमृतलाल ठक्करके बापदादोंके समयसे अिसी

प्रकार चला आ रहा था। अिसलिये अिससे भिन्न विचार करनेकी सूझ विट्ठलबापाको भी अुस समय नही थी। और अिसकी आवश्यकता भी नही जान पडी थी।

अिस कारण जब वे दूसरी अग्रेजीमे पढ रहे थे, तब अुनकी सगाअी हो गअी और अुसके दो वर्ष बाद दूसरे भाअियोके साथ अुनका भी विवाह अेक ही मडपके नीचे हो गया।

बालक अमृतलालको अुस समय अपने विवाहकी जिम्मेदारी और गभीरताका खयाल होना तो दूर, विवाहित जीवनकी प्रारभिक और आवश्यक हकीकतोका भी कोअी खयाल नही था। वे अिस मामलेमे बिलकुल अबोध थे।

बापा अपने अिस विवाह-प्रसगके विषयमे लिखते है

"बहुत ही कच्ची अुम्रमे, जब मेरी आयु केवल ग्यारह-बारह बरसकी थी, मेरा विवाह हुआ था — मेरा विवाह हुआ था, अिसके बजाय यह कहना अधिक सच है कि मेरा विवाह कर दिया गया था। मेरे ताअूजी रुपयेवाले थे। और अुनके दो लडकोकी शादी बडी धूमधामसे हो रही थी। अुनके साथ मेरे बडे भाअीका, मेरा, तथा अेक बडी अुम्रके मेरी बुआके लडकेका — अिस प्रकार कुल पाच भाअियोका विवाह अेक साथ अेक ही मडपके नीचे हुआ था। अिस प्रकार अेक साथ शादी करनेका हेतु खर्च बचाना था।

"अिस अुम्रमे विवाह क्या है, स्त्रीके साथ सबध क्या है, पुरुष और स्त्रीका अेक दूसरेके प्रति फर्ज क्या है, अिसका मुझे कुछ भी खयाल नही था। शादीकी बरात घर आनेके बाद पहली रातको स्त्रीके साथ सोनेकी बात भी रखी गअी थी। पर स्त्री-सभोग जैसी वस्तु तो अुस समय मै जानता ही न था। और अुसके बाद भी चार-पाच बरस तक अिस विषयका मुझे कोअी ज्ञान न था।"

अुस समयके विवाह और आजकलके विवाहकी तुलना करते हुअे बापा लिखते है

"विवाहकी अुस समयकी आयु और आजकी आयुमे जमीन-आसमानका फर्क है। शारदा कानून बननेके बाद लोगोकी मनोवृत्तिमे बहुत अन्तर पड गया है। हा, अभी तक वह कानून पूरी तरह अमलमे नही आया। और बहुत लोग अुसमे बच निकलनेके रास्ते भी ढूढते है।

"आज तो युवक-युवती खुद विवाहकी बाते तय कर सकते है। घूमने-फिरनेकी काफी आजादी होनेसे अनेक स्थानो पर मिलजुल सकते है और यह विचार कर सकते है कि वे अेक दूसरेके अनुकूल हो सकेगे या

नही। छोटी अुम्रमें या वयस्क होने पर मा-बाप ही विवाहका प्रबंध कर दें या युवक-युवतिया अपने आप ही विवाहकी व्यवस्था कर लें,—जिन दो प्रथाओंमे से कौनसी अच्छी और कौनसी त्याज्य है, जिस बारेमें विपरीत मत हो सकते है, जिसकी मैं जिस समय चर्चा नही करना चाहता। परतु बालविवाह तो बन्द हो ही जाने चाहिये। लडकोंके बीस वर्षसे पहले और लडकियोंके सत्रह-अठारह वर्षसे पहले विवाह हरगिज न किये जाय, जिस बारेमे मेरे खयालमे दो मत है ही नही।"

जैसा अूपर बताया गया है, ठक्करबापाका विवाह यद्यपि ग्यारह-बारह वर्षकी अुम्रमे हुआ था, परन्तु सगाओ लगभग नवे वर्षमे हो गओ थी। सामनेवाला ससुराल पक्षका कुटुम्ब भी गरीब ही था। अुनके ससुर कालीकटमे किसी पेढी पर नौकरी करते थे, और जिन वर्षोमे बास-वल्लीकी खरीदका काम करते थे। कालीकट और भावनगरके बीच व्यापारियोंका खरीद-बिक्रीका सबध अच्छा रहता था। जिसलिअे अुनके ससुर पेटीके लिअे बास-वल्लीकी खरीद करने भावनगर आते थे। जिस प्रकार दोनो परिवारोंके बीच सम्पर्क बना रहता।

जैसा बापाने स्वय ही बताया है जब व्याह हुआ तब वे स्त्री-सबध क्या कहलाता है, दोनोका अेक दूसरेके प्रति क्या कर्तव्य होता है, वगैरा कुछ नही जानते थे। फिर अुनका विद्याध्ययन भी जारी था। और मैट्रिकके बाद तीन साल बाहर पूना जाना पडा था। जिसलिअे बाल-विवाहमे जो बुरे परिणाम निकलते हैं अुनसे वे अनायास बच गये। १८८६ में सोलह वर्षकी अुम्रमे मैट्रिक हुअे और अुसके बाद तीन बरस अिजीनियरी विद्याका अध्ययन करनेमे बिताये। तब तक वे विवाहित होते हुअे भी स्वभावत विद्यार्थी जीवन—ब्रह्मचारी जीवन—व्यतीत कर सके।

अिजीनियरीकी पढाओ पूरी होनेके बाद और अुसकी अुपाधि प्राप्त करनेके बाद वे नौकरी पर स्थिर हुअे। अिसके बाद ही अुनका विवाहित जीवन शुरू हुआ था। स० १९९२ मे अुनके यहा प्रथम बालकका जन्म हुआ। परन्तु ठक्करबापाको जीवनमे दाम्पत्यसुख बहुत मिला हो, अैसा नही लगता। और सन्तानसुख तो अुससे भी कम मिला, क्योंकि बालक पाच छ वर्षका होकर गुजर गया। अुसके बाद अुन्हे दूसरी सतान नही हुओ।

अमृतलाल ठक्करकी पत्नीका शरीर शुरूसे ही कुछ दुर्बल था। जिस पर भी प्रसूतिके बाद अितने बडे सम्मिलित परिवारमे जितनी चाहिये अुतनी देखभाल न हो सकनेके कारण या अन्य किसी कारणसे अुन्हे प्रदर रोग लग गया। अुसके कारण अुनका शरीर क्षीण होता चला

गया। सयुक्त कुटुम्ब, सास-ससुर, देवरानी-जेठानी वगैराकी मौजूदगी और पुराना जमाना, अिस वातावरणमे पत्नीकी बीमारीका अिलाज करना बडा कठिन काम था। अिस पर भी प्रदर जैसे अुस समय गुप्त माने जानेवाले रोगका अिलाज कराने जाना तो लगभग असभव ही था। शरमके मारे अैसे रोगकी जानकारी पतिके सिवाय अन्य किसीको कराअी नही जा सकती थी ओर जवान तथा अनुभवहीन पति भी अिस मामलेमे घरकी, कुटुम्बकी, मर्यादाको भग करके आर मा-बापकी अुपेक्षा करके दवाखाने जा नही सकता था। अैसी अुस समयकी स्थिति थी। अमृतलाल ठक्कर अिस सम्बन्धमे बहुत परेशान जरूर रहते थे, परन्तु अुस समयकी मानी हुअी कुटुम्ब-धर्मकी मर्यादा और विचारोके कारण वे भी मकोचवश, लज्जावश होकर बैठे ही रहे। समय पर अुपचार न होनेसे अुस रोगने घर कर लिया और जीवकोर बहनका स्वास्थ्य अधिकाधिक बिगडता गया। वे बार-बार बीमार पडने लगी। अिस कारण अुनसे जल्दी अुठा नही जाता, घरकी दूसरी स्त्रियोके साथ, देवरानी-जेठानीके साथ, समय पर काम नही होता। अिस सम्बन्धमे स्त्रीवर्गमे टीका-टिप्पणी ओर आलोचना होती ओर अिन सब बातोका अुन पर मानसिक भार भी रहा करता। अिन सब कारणोसे और दिन दिन बिगडती हुअी शारीरिक स्थितिके कारण आगे चलकर जीवकोर बहनको हिस्टीरियाकी बीमारी हो गअी। यह रोग शुरूमे मामूली था, परन्तु १९०६-७ के अरसेमे जब अमृतलाल ठक्कर बम्बअीमे चेम्बूरकी कचरापट्टीके निरीक्षक अधिकारीके रूपमे सौ रुपये मासिक वेतन पर आये, तब यह रोग बहुत बढ गया था। जीवकोर बहनको चाहे जब अचानक गश आ जाता और वे गिर जाती। ठक्करसाहबकी नोकरी शुरू ही हुअी थी, अिसलिअे समय पर फर्ज अदा करने जाना पडता। अुस समय बम्बअीके जी० आअी० पी० रेलवेके कुरला अुपनगरमे दोनो पति-पत्नी अकेले ही रहते थे। घरमे कोअी बुजुर्ग या अन्य सम्बन्धी नही थे। अिसलिअे ठक्करसाहब नोकरी पर जाते तब पत्नीको अकेले घर रहना पडता। अिस बीचमे अचानक हिस्टीरियाका हमला हो जाय और वे गिर जाय तो दरवाजेसे टकरा जाने या और किसी तरह चोट पहुचनेका भय रहता। अिसलिअे जब वे नौकरी पर जाते तब घरमे बिस्तर बिछाकर दरवाजा बन्द कर जाते। अिससे अुनकी अनुपस्थितिमे कभी हिस्टीरियाका हमला होता तो जीवकोरबाअीके घरके भीतर ही गिरनेसे चोट लगनेका डर कम रहता। अुस समय अुनके हाथोकी मुट्ठिया बध जाती, पैर टूट रहे हो अिस तरह अैठ जाते और आखे पथरा जाती। हमलेका जोर मामूली होता तो यह स्थिति थोडी देर रहती और अधिक होता तो लम्बे

समय तक रहती। अन्तमें जब वह जोर बिलकुल कम हो जाता तब वे फिर आंखें खोलती और थोड़ी देरमें हाथ-पैरोंमें चेतना आने पर अुठकर खड़ी हो जाती और कामकाजमें लग जाती।

कुरलाके निवासकालमें यह स्थिति काफी समय तक रही।

ठक्करसाहबके विवाहित जीवनका मुक्त और कुछ हद तक सुखद काल वह कहा जा सकता है, जब वे सांगली राज्यमें १९०३ से १९०५ के अरसेमें स्टेट अिंजीनियरके पद पर थे। तब पत्नीकी तबीयत भी पहलेसे अच्छी रहती थी। वहांका जलवायु अुन्हें काफी अनुकूल आ गया था। कुटुम्बका भार नहीं था, अिसलिअे अुन्हें अवकाश भी रहता था। जिससे नौकरीका काम पूरा करके ठक्करसाहब रोज शामको पत्नीके साथ देहातमें सैरको निकलते। अैसा अेक प्रिय स्थान सांगलीसे थोड़ी दूर हरिपुरा नामक गांव था। गांव बड़ा सुन्दर था। गांवके पास कृष्णा नदी बहती थी और नदीके किनारे मंदिर था। मंदिरमें जाकर दर्शन कर आनेके बाद अुसके घाटकी सीढ़ियों पर पति-पत्नी दोनों नदीके बहते पानीमें पैर डुबोकर बैठते और कितने ही समय तक बातें करते। जिस प्रसंगके सम्बन्धमें ठक्करबापा लिखते हैं

"मैं १९०३ से १९०५ तक सांगली राज्यमें स्टेट अिंजीनियरके रूपमें नौकरी करता था। वहां मेरे मित्र डॉ० हरिकृष्ण देव भी राज्यके बड़े डॉक्टर थे। अुनके साथ मेरी घनिष्ठ मैत्री थी। और जिसीलिअे मैं अुतनी दूरके महाराष्ट्रके देशी राज्यमें जा सका था। वहां मैं और मेरी पत्नी दोनों अकेले ही रहते थे। हमारे कोअी बच्चा नहीं था।

"आम तौर पर अिंजीनियरोंको सुबहके वक्तमें बाहर घूमकर कामोंकी देखरेख करनी पड़ती है और दोपहरको दोसे पांच बजे तक दफ्तरका काम होता है। मेरा कार्यक्रम भी यही रहता था। तीन वर्ष तक पूर्व अफ्रीकामें नौकरी करके और अकेलेपनकी जिन्दगी गुजार कर मैं लौटा था। और पत्नीके साथ रहनेका यह मौका मिला था। वह भी पराअी भाषावाले मराठी प्रदेशमें। मेरी पत्नीको मराठी नहीं आती थी और कोअी गुजराती पड़ोसी नहीं था, अिसलिअे जहां तक बनता अुनका अधिक समय मेरे साथ ही बीतता था।

"हम दोनोंके सैरको जानेका प्रिय स्थान सांगली शहरसे दो-तीन मील दूर हरिपुरा गांव था। अिस गांवमें कृष्णा नदीके किनारे घाटकी सीढ़ियों पर हम बैठते और परस्पर बातें करते। अिस प्रकार अेक घाट पर बैठकर कोअी पति-पत्नी बातें किया करें, यह अुस समयके महाराष्ट्रके दकियानूसी

विचारवाले भागके मराठी लोगोको अच्छा नही लगता था। अुन्हे लगता कि मै कोअी अनुचित काम कर रहा हू। परन्तु अुसकी परवाह किये विना हम तो बैठते और विवाहित जीवनका आनन्द अुठाते। साथ ही छुटपनमे अेक मराठी नाटकमे पढा था सो भी अुस समय याद आता

"गोदावरीच्या तीरी आपण केले फार विहार
सीते — आठवते तुज काय?"

ठक्करबापाको अपने विवाहित जीवनका यह पुनीत स्मरण विचित्र परिस्थितियोमे हुआ था। बापाके शब्दोमें ही अुसका वर्णन सुनिये

"गाधीजीको गुजरे हुअे या सच कहा जाय तो गोलीसे अुनकी हत्या हुअे डेढ मास हो गया था और सेवाग्राममे सैकडो रचनात्मक कार्यकर्ताओका सम्मेलन हुआ था। अैसे समय फुरसतके वक्त अेक महाराष्ट्री ब्राह्मण महिला मुझसे अपने जीवन और कार्यका अितिहास कह रही थी। अुसने बताया कि पिछले डेढ-अेक वर्षसे वह प्राकृतिक चिकित्साका अेक केन्द्र चला रही है और प्राकृतिक अुपचार द्वारा अनेक रोगियोको अच्छा कर सकी है। अुसकी अिच्छा कस्तूरबा ट्रस्टसे मदद लेनेकी थी। और अिसीलिअे वह ये सब बाते कर रही थी। मैंने अुससे गावका नाम पूछा तब अुसने 'हरिपुरा' कहा। 'हरिपुरा' नाम सुनते ही लगभग चवालीस वर्ष पहलेके अपने विवाहित जीवनकी स्मृतिया ताजी होने लगी। तुरन्त सस्मरणोकी अेक माला-सी बन गअी, मानो पूर्वजन्ममे हुअी बाते याद आ रही हो। वह मदिर, वह कृष्णा नदीका बहता पानी, वे घाटकी सीढिया, वह सुरम्य मार्ग, सब अेकके बाद अेक आखोके सामने खडे हो गये। अुस समय मैंने पास बैठे हुअे मित्रोसे कहा कि अिस महिलाकी बातोसे बहुत पुराने और मीठे सस्मरण याद आ रहे हैं। परन्तु यह मै तुम्हे बादमे कहूगा।"

अितना कहकर फिर बापा अपने काममे डूब गये। भगवान जाने अुसके बाद मित्रोको ये मीठे सस्मरण सुनानेका समय अुन्हे मिला होगा या नही।

विवाहित जीवनके मीठे सस्मरणोकी याद दिलानेवाला यह काल था। अिसके सिवाय तो, जैसा अूपर बताया जा चुका है, ठक्करबापाको लगभग सारा ही समय चिन्ता, अुद्वेग और कठिन परिस्थितियोमे ही पार करना पडा। फिर भी बापाने अिसका बहुत भार मनमे नही रखा। कर्तव्य-कर्ममे ही अुन्होने आनन्द माना।

सागलीके बाद जब बम्बअीमें म्युनिसिपैलिटीकी नौकरी करते थे, तब अुनकी पत्नीका स्वास्थ्य ज्यादा बिगड गया था। प्रदरसे हिस्टीरिया और अुससे अनेक प्रकारके रोग बढने लगे थे और आखिर आखिरमें अुन्हें क्षय रोग भी लग गया था। अिस समयमें ठक्करसाहबको म्युनिसिपैलिटीकी नौकरी करनी होती थी। अुससे जो समय बचता अुसमें वे पत्नीकी सेवा करते। पत्नीको बहुत लम्बे समय तक रोगशय्या पर पडा रहना पडा था। परन्तु जैसा ठक्करसाहब कहते हैं "वे दुःखके दिन भी बिता दिये। अन्तमें लगभग १९०७की अवधिमें अुसकी जिन्दगी पूरी हुअी और हम दोनों जुदा हो गये।"

पहली पत्नी गुजर गअी तब ठक्करसाहबकी अुम्र ३९ वर्षकी थी। हिन्दू-समाजमें पुरुषके लिअे अुस वक्त कोअी भी अुम्र शादीके लायक मानी जाती थी। अुनसे भी बडी अुम्रके सेठ दूसरी बार तो क्या तीसरी और चौथी बार भी ब्याह करते थे। ठक्करसाहब विधुर हो गये थे। साथ ही अुनके सन्तान नहीं थी। अिसलिअे अुनके पिता विट्ठलदास ठक्करने अुनसे फिर विवाह करनेका आग्रह किया। ठक्करसाहबकी भी भीतरसे थोडी अिच्छा तो थी, अिसलिअे अुन्होंने विशेष विरोध नहीं किया। अतः पिताने अिस दिशामें प्रयत्न किया और राजकोटमें अेक गणात्रा कुलकी कन्याके साथ अुनका विवाह कर दिया। जिस कन्याकी अवस्था बहुत ही छोटी थी। यह दूसरी बारका विवाह भी बहुत सफल या सुखी साबित हुआ हो, अैसा नहीं जान पडता। यह दिवालीबाअी भी बेचारी अेक दो वर्षकी घर-गृहस्थी भोगकर गुजर गअी। अिसके बाद ठक्करसाहबने विवाहका विचार छोड ही दिया। अिस दूसरे विवाहके सम्बन्धमें अुन्होंने जो कुछ कहा है अुसे देखिये :

"प्रथम पत्नीके देहावसानके अेक-दो वर्ष बाद मेरे पिताके आग्रह और अपने मनकी कमजोरीके कारण मैंने दुबारा शादी की और वह भी मुझसे कहीं छोटी अुम्रकी, लगभग सोलह वर्षकी तरुण कन्याके साथ। यह विवाह अनेक कारणोंसे, खास तौर पर पति-पत्नीकी अुम्रमें अन्तर होनेके कारण सुखी सिद्ध नहीं हुआ और यह दूसरी पत्नी भी विवाहके बाद अेक-दो वर्षमें चल बसी। सन् १९१२–१३ के बादसे मैं अेकाकी स्थितिमें ही रहा हूं। ... और रहनेमें आनन्द महसूस होता है। स्त्री और बच्चे न होनेकी कमी महसूस नहीं हुअी और अिसीलिअे गृहस्थी छोडकर देशसेवाके काममें लग जानेकी मनकी प्रवृत्ति हुअी। अिसमें मुझे अीश्वरकी प्रेरणाके सिवाय और कुछ दिखाअी नहीं देता। पैंतालीस वर्षकी

अुम्रमे गृहस्थी छोडकर समाज-सेवाके काममे लग गया, अिस बातको आज चौतीस साल हो गये। अीश्वर-कृपासे यह अवधि बडे सुख और सन्तोषमे बीती है।"

अिस प्रकार दोनो पत्नियोके अेकके बाद अेक देहान्तके बाद सासारिक जीवनसे अुन्होंने अपना मन हटा लिया और अपनी तमाम अिच्छा, अभिलाषा, आकाक्षा, सारी वृत्ति, शक्ति और भक्ति सार्वजनिक सेवाके देवमदिरमे अर्पण कर दी। अुन्होंने जैसे गृहस्थीको सुशोभित किया वैसे ही विधुरावस्थाको भी शोभायमान किया और वानप्रस्थावस्थामे करने योग्य सेवाके अनेक कार्य किये और अुन्हीमें जीवनरस भोगा।

ठक्करबापाका यह चौतीस वर्षका दीर्घ जीवन — जिसमे अुन्होंने अपने छोटेसे कुटुम्बका घेरा तोडकर वसुधाको कुटुम्ब बनाया और वसुधा पर बसनेवाले दीन, दुखी, दलित, पतित और पीडितोको अपना कुटुम्बीजन बनाया — अनेक लोकसेवको, विधुरो, निसन्तानोके लिअे सान्त्वना और प्रेरणा देनेवाला बन गया है। अैसे कितने ही लोकसेवक है जो बापाके जीवनको दृष्टिके सामने रखकर अपना सासारिक दुख भूल सके है और लोकसेवामे ओतप्रोत हो सके है। ठक्करबापाने स्वय भी अपने भाग्यको अीश्वरका निर्णय माना है। कुटुम्बके चार छ आदमी ही अुनकी देखभाल और प्रेम-प्रीति प्राप्त करे, अिसके बजाय करोडो लोगोको अुनका प्रेम, अुनकी सेवा मिले, यह कुदरतकी योजना होगी, अिसीलिअे अीश्वरने अुनके भाग्यमे अैसा अेकाकी जीवन बिताना लिखा होगा — अैसा ठक्करबापाने मनसे स्वीकार कर लिया और अीश्वरकी अिस अिच्छाके अधीन होकर अैसा कर्तव्य-कर्म भी कर दिखाया जिससे अीश्वर प्रसन्न हो।

परन्तु जिस प्रकार पैतीस वर्ष तक सेवाजीवनमे ओतप्रोत हो गये, अिसका यह अर्थ नही कि कुटुम्बीजनोके प्रति अुनका प्रेम कम हो गया अथवा कुटुम्बीजनोमे अुनकी दिलचस्पी अब घट गअी थी। अुलटे, वह प्रेम और रस अधिक अुत्कट और अधिक शुद्ध बन गया। जीवनके अतिम क्षण तक अपने भाअी-भाभियो, भतीजो, भतीजियो, बहन, भानजो वगैरा सबके जीवनमे वे बराबर दिलचस्पी लेते रहे। स्वय बगालमे हो या आसाममे, दक्षिणमे हो या अुत्तरमे, परन्तु अपने बडे भाअी परमानन्द और छोटे भाअी डॉ० केशवलाल ठक्करके साथ सतत पत्रव्यवहार रखते थे, और दूर रहते हुअे भी अुनसे सम्पर्क कायम रखते थे। अितना ही नही, परन्तु अपने भतीजे कपिलभाअी और रामूभाअीके साथ भी अुनका पत्रव्यवहार जारी रहता। भाअी और भाभी आनन्दमे है या नही, अुनकी तन्दुरुस्ती अच्छी है या

नही, कुटुम्बके अन्य लोग कहा है, क्या करते है, वगैराकी पूछताछ करते थे। सब बच्चोके नाम लिख-लिखकर अैसी बहुतसी छोटी-छोटी बातें ध्यानमे रखकर पत्रोमे पूछते कि वे क्या करते है, क्या पढते है, परीक्षामे बैठे है तो पास हुअे या नही। जिसके लिअे अेक खास अरसेके बाद समय निकालकर स्वय भावनगर आ जाते अथवा स्वजनोको दाहोद, दिल्ली या अहमदाबाद मिलने या थोडे दिन साथ रहनेको बुलवा लेते। और कुटुम्बके साथ अपना सम्बन्ध अधिक ताजा, अधिक दृढ बना लेते। हा, अुनके कुटुम्ब-प्रेमकी अेक मर्यादा थी, और वह अुनका सेवाव्रत था। अिस व्रतमे बाधक हो, अुसमे रुकावट डाले, अैसा कोअी कुटुम्ब-प्रेम अुन्होने नहीं रखा था। अिसकी स्पष्टता अुन्होने सेवाजीवनमे कदम रखा तभी कर दी थी। परन्तु अिसके सिवाय तो अुनका कुटुम्ब-प्रेम अुलटे अधिक विस्तृत और विशुद्ध बन गया था।

अपने छोटे भाअी केशवलाल ठक्करको वे समय समय पर पत्र लिखते थे। दिल्लीसे अिस ओर गुजरातमे आये हो और अुनका कार्यक्रम निश्चित हो गया हो तो वे लिखते "अहमदाबाद तारीखको पहुचूगा। वहासे कच्छके सफर पर जाअूगा। वहा आनेके लिअे समय नही है। तुम्हे मिलना हो तो अहमदाबाद आ जाना। हा, केवल रातभर ही साथ रह सकेगे। फिर दूसरे दिन नही ठहरा जा सकेगा। अितनेमे समयके लिअे ही भेंट हो सकेगी। अिसलिअे आना अुचित नही मालूम हो तो मत आना।" अितनी स्पष्टतासे वे पत्र लिखते थे।

दीवालीके समय या अैसे ही किसी त्योहार पर देशमे आये हो और अपने निजी खर्चमे गुजाअिश हो, तो बहन-बेटियो अथवा भानजियोको कभी कभी दस पाच रुपये खर्च करनेको दे देते। यह वृत्ति अुनमें अन्त तक कायम रही थी। अपनी अुत्तरावस्थामे जब वे अन्तमे भावनगर आराम लेने आये तब अैसे ही किसी पर्वके दिन अुनकी भानजी या निकट सम्बन्धवाली कोअी और बहन अुनसे मिलने आअी। पर्वका दिन था। बापाने पहले तो अुसके परिवारके हालचाल पूछे। बादमे पूछा "केशुभाअीने तुम्हे क्या दिया?" "पाच रुपये।" "पाच रुपये तो थोडे कहे जायगे!" फिर भाअीको बुलाकर कहा "केशुभाअी दो, दो। बहन-बेटिया और भानजिया हमारे यहा कब आती है? अैसे मौके बहुत कम आयेगे। अैसे पवित्र अवसर बार बार नही मिलते।" यो कहकर अुन्होने अपने छोटे भाअी डॉक्टर केशवलालको अुत्साह दिलाया और अुनसे और पाच रुपये दिलवाये और "मै तो ठहरा सेवक आदमी। मेरे पास देने जैसी ज्यादा

पूंजी नही" यो कहकर अपनी तरफसे भी लगभग अुतनी ही रकम जोड दी और अुस दिन अुस बहनको खूब खुश कर दिया।

खुश करनेकी, सगे-सम्बन्धियोको प्रसन्न रखनेकी कलाका बापामे अच्छा विकास हुआ था।

अुनके भतीजे श्री कपिलभाअी ठक्कर और रामूभाअी ठक्कर दोनो साहित्यके बडे रसिया है। गुजराती साहित्यके वाचनका तो अुन्हे शौक है ही, साथ ही अुर्दू शायरीका भी शौक है। बापा दिल्लीमे रहने लगे अुसके बाद वहा अिस प्रकारकी पुस्तकोकी तलाश करते और जोक, गालिब, जोश, चकबस्त, सागर निजामी वगैरा अुर्दू कवियोकी कविताओके नागरी लिपिमे छपे हुअे काव्यसग्रह जुटाकर रामूभाअी और कपिलभाअीको भेजते।

कुटुम्बके अन्य जनोके लिअे अिस प्रकार व्यक्तिगत और निजी दिलचस्पी लेकर अुनके सहायक होनेके अैसे अनेक प्रसग मिलते है।

अितने पर भी जैसे जैसे अुनके सेवाक्षेत्रका विकास होता गया, वैसे वैसे अुनका कुटुम्ब-विस्तार भी बढता गया और जिस प्रेमसे वे अपने कुटुम्बकी बहन, बेटी या भानजीकी मदद करते, अुतने ही प्रेमसे बल्कि अुससे भी अधिक प्रेमसे वे किसी भीलके, हरिजन युवकके या पिछडे हुअे वर्गकी कन्याके सहायक बनते और अुसके व्यक्तिगत जीवनमे रस लेकर अुसे आर्थिक रूपमे अथवा शिक्षा-सम्बन्धी मदद देकर अूचा अुठाते। अुनका विशाल पत्रव्यवहार अैसे अनेक युवको, युवतियो, भीलो, हरिजनो, कार्यकर्ताओ और विद्यार्थियोकी सहायता करनेकी चिन्ता और ध्यान रखनेवाली अुनकी मनोवृत्तिकी गवाही देता है। अिस प्रकार बापाका कुटुम्ब-प्रेम विस्तृत होकर समाज-प्रेममे मिल गया और समाज-प्रेमको शुद्ध बनाकर कुटुम्बके व्यक्तियो तक ओतप्रोत हो गया। अिस तरह अुन्होने वसुधाको कुटुम्ब बनाया और कुटुम्बको अुसकी छोटी परिधिसे बाहर निकालकर वसुधाके साथ जोड दिया।

७

नौकरीके दस वर्ष

१८९० मे अमृतलाल ठक्करने कालेजके तीन वर्प पूरे किये और अिजीनियरीकी परीक्षामे पास होकर अेल० सी० अी० (Licenciate of Civil Engineering) की अुपाधि हासिल की। अिसके वाद क्या करे, यह सवाल ही नही था। कुटुम्बकी आर्थिक स्थिति वहुत साधारण थी। फिर सिर पर कर्ज था और जिम्मेदारी भी वडी थी। पिताने ऋण करके और माताके गहने रहन रखकर अुनका कालेजके अतिम वर्पका खर्च पूरा किया था। यह वे जानते थे। अिसलिअे अुपाधि मिलनेके वाद तुरन्त ही काममे लग जाना जरूरी था। कामकी पसन्दके लिअे वाट देखनेको ठहरा नही जा सकता था। पहले ही अवसर पर जो भी नौकरी मिले अुसका हसकर स्वागत कर लेनेकी ही वात थी। अिसलिअे दक्षिणमे शोलापुर जिलेमे वारसी लाअिट रेलवे लाअिन डालनेका जो काम शुरू हुआ था, अुसमे वे ओवरसियरकी हैसियतसे ७५ रुपये मासिक वेतन पर लग गये। अिस तरह अुन्होने अिजीनियरीकी कारगुजारी शुरू की और अीट, मिट्टी और पत्थरोके साथ अपना जीवन जोड दिया। वहा थोडे ही मासमे अुन्होने अपनी शक्ति दिखाअी। और चार छ महीने वहा काम करनेके वाद तुरन्त ही वी० जी० जे० पी० (भावनगर-गोडल-जूनागढ-पोरवन्दर) रेलवेमे असिस्टेन्ट अिजीनियरके रूपमे पौने दो सौ रुपयेकी तनख्वाह पर अुनकी नियुक्ति की गअी। अिस रेलवे तत्रका केन्द्र अुस समय भावनगरके अुपनगर (गढेची) मे था। अिसलिअे अुन्हे अच्छी नौकरी तो मिली ही, साथ ही घर पर रहनेका सुयोग भी अनायास मिल गया। अुस समय वे घरसे गढेचीके कारखाने तक घोडे पर वैठकर जाते आते थे। आफिसके कामके अलावा अुन्हे वाहर भी घूमना पडता था। जहा जहा भी अिस रेलवेका काम शुरू होता, वही समय समय पर अुन्हे जाना पडता था। देखते देखते अुन्होने रेलो तत्रमे और सौराष्ट्रके कुछ राज्योमे अपनी कार्यदक्षता, अुद्योगशीलता और प्रामाणिकताकी सुगध अच्छी तरह फैला दी। अुनकी प्रामाणिकता और सत्यनिष्ठाका सवूत देनेवाली अेक घटना अिसी अर्सेमे हो गअी।

काठियावाडमे अुस वक्त वी० जी० जे० पी० रेलवेकी तरफसे नअी रेलवे लाअिनकी पटरिया विछाअी जा रही थी। अुसमे जिन जिन किसानोके

खेत बीचमे आते वे कट जाते थे। अैसे कितने ही किसान अिजीनियर साहबकी भेट-पूजा करते, ताकि अुनकी जमीन कटनेसे बच जाय। अमृतलाल ठक्करने सहायक अिजीनियरका पद सभाला, अुसके बाद अैसे कुछ किसानोने अपनी जमीनोको कटनेसे बचानेके लिअे नये असिस्टेन्ट अिजीनियर साहब अमृतलाल ठक्करके सामने रुपयोकी थैलिया रिश्वतके रूपमे रखी। परतु वे रुपये पर रीझनेवाले देवता नही थे। वे अुल्टे किसानो पर खफा हुअे और कहा, ले जाओ यह रुपया वापस। मुझे नही चाहिये। रिश्वत देनेका अैसा नीच काम न करना। रेलवे लाअिन डालते समय यदि सहज ही तुम्हारी जमीन बच जाती हो तो भले ही बच जाय। वैसे रुपया देनेसे तुम्हारा कोअी मतलब नही बनेगा।

किसानोके लिअे यह नया अनुभव था। अुस वक्त तो वे लोग चले गये, परतु यह बात धीरे धीरे अूपरके अधिकारियो तक गअी। अिजीनियरी विभाग तो काजलकी कोठरी जैसा था। वहा सभी अपने अपने ओहदे और सुभीतेके अनुसार रिश्वत खाते थे। अैसे काजलकी कोठरी जैसे विभागमे अेक आदमी प्रामाणिकताका आग्रह रखे, यह कौन पसन्द करता? अिससे कितनोकी ही अिस 'अूपरी आमदनी' पर प्रहार होता होगा। अिसलिअे विभागमे खटपट शुरू हुअी और परिणामस्वरूप दो ढाअी वर्षके अन्तमे अुन्हे वह नोकरी छोड देनी पडी। नौकरी छोड देनेका तात्कालिक कारण तो किसी स्टेशन पर बननेवाले मकानोमे खिडकी-दरवाजे रखनेके मामलेमे अपने अफसरके साथ अुनका मतभेद था। अमृतलाल ठक्करने मकानोमे खिडकी-दरवाजे कैसे रखे जाय, यह अपना विषय होनेके कारण किसीका दखल स्वीकार करना पसन्द नही किया और मतभेद अुग्र हो जाने पर त्यागपत्र दे दिया।

सौराष्ट्रमे बी० जी० जे० पी० की नौकरीके अर्सेमे अुन्होने बहुतसे सबध बनाये थे। अिसलिअे वहासे अलग होते ही वढवाण राज्यने अुन्हे राज्यके मुख्य अिजीनियरके रूपमे आनेका प्रस्ताव किया और ठक्करसाहबने अुसे स्वीकार कर लिया। वढवाण राज्यमे अुनके बडे भाअी परमानद ठक्कर तीनेक वर्षसे दाजीराज हाअीस्कूलमे शिक्षकके रूपमे काम कर रहे थे और घरके लगभग सब लोग वही रहते थे। अिसलिअे अमृतलाल ठक्करको वहा जानेमे कोअी दिक्कत नही हुअी। वहा वाघेश्वरीकी खिडकीके पास अेक बडा मकान किराये पर लिया हुआ था। वहा दोनो भाअी, अुनकी पत्निया और बच्चे वगैरा सब साथ रहते थे। अुस समय बडे भाअीको और अमृतलाल ठक्करको जो कुछ मिलता वह सब वढवाण और भावनगरके सयक्त कुटुम्बके

खर्चमे लग जाता। ठक्करने अपनी नौकरीकी अवधिमे वढवाण राज्यमे बहुत मकान बनवाये। दाजीराज हाअीस्कूल, नया राजमहल वगैरा अनकी बडी नीति और होशियारी तथा अुज्ज्वल कारगुजारीके स्मृतिचिन्होंके रूपमें आज भी खडे है। राजमहलकी योजना मि० बूथ नामक अेजेन्सीके अग्रेज अिजीनियरके हाथो बनी थी। और अुस योजनाके अनुसार सारा काम ठक्कर साहबने अपनी देखरेखमे पूरा कराया था।

वढवाणमे अुनकी प्रामाणिकता और नीतिको कसौटी पर कसनेवाली अेक घटना हो गयी थी। वहा वढवाण राज्यके निर्माण-विभागका कुछ काम गिरधर ठेकेदार और अुसके भतीजे झवेरको दिया गया था। अुस काममे कुछ खामी रह गयी थी। अिसलिअे अुसे पास करानेके लिअे अुन लोगोने ठक्कर साहबको रिश्वत देकर खुश करने और अपने अनुकूल तहरीर हासिल करनेकी कोशिश की। अुस समय अमृतलाल ठक्कर अितने आग-बबूला हो अुठे कि वही अुस ठेकेदारको छाता लेकर मारने दौडे। अिस घटनाके कारण काफी हल्ला हुआ। अुस ठेकेदारने राज्यसे शिकायत की, परतु अुसमे अिनका कुछ हुआ नही और अुसकी वदनियतीका भडाफोड हो गया। ठक्कर साहबकी अिस कार्रवाअीको राज्यने किस दृष्टिसे देखा, अिसका हाल मालूम नही होता। परतु अिसमे शका नही कि राज्यको जो स्पष्ट लाभ हुआ अुससे ठक्कर साहबकी प्रतिष्ठा अवश्य बढी होगी। कारण बी० जी० जे० पी० रेलवेकी तरह यहा अुनका कोअी विभागीय अफसर नही था। अिजीनियरी विभागमे तो वे स्वय ही मुख्य अधिकारी थे और यहा किसीके हितोको नुकसान पहुचनेका अदेशा नही था। वढवाण राज्यकी नौकरीके अर्सेमे अुन्हे अनेक अनुभव हुअे और राज्यकी कुछ भीतरी बातोका भी अनायास पता लगा।

अुस समयके राजा बालसिहजी दाजीराज बडे नरम प्रकृतिके आदमी थे। राज्यमे दीवान शामलदासका ही बोलबाला था। वहा रहकर अुन्हे रजवाडोका भ्रष्टाचार भी देखनेको मिला। परतु अुनका अिन बातोसे सबध नही था। अिसलिअे वे अुस तरफसे आख हटाकर अपने काममे ही मशगूल रहते थे। राज्यको जो जो अिमारते बनवानी थी वे सब अढाअी-तीन वर्षमे पूरी हो गअी। अिसलिअे ठक्कर साहबकी नौकरीकी मियाद भी खतम हुअी। वहासे मुक्त होनेके बाद पोरबन्दर राज्यने अुन्हे मुख्य अिजीनियरके रूपमे २००) मासिक वेतन पर नौकर रखा। पोरबदरमे अुन्होने १८९५ मे १९०० के अन्त तक अर्थात् लगभग पूरे पाच बरस काम किया। अुस वक्त राजा छोटी अुम्रके होनेसे पोरबदरमे अेडमिनिस्ट्रेटरका शासन था। नौकरीके अिस

अर्सेमे अुन्होने राज्यके लिअे कुछ अुपयोगी मकान बनाये। अिसी अर्सेमे अुनका डॉ० हरि श्रीकृष्ण देवके साथ प्रथम परिचय हुआ और वह अन्त तक कायम रहा। डॉ० देव महाराष्ट्रके थे। पहली मुलाकातमे ही दोनोका अेक दूसरेके प्रति आकर्षण हो गया। वह अुत्तरोत्तर बढता गया और अन्तमे दोनोके बीच आजीवन मैत्रीमे परिणत हुआ। कारण, दोनोके स्वभावमे बडा साम्य था। दोनो सादे, मेहनती, अीमानदार और परोपकारी थे। पोरबदर राज्यकी नौकरीके दरमियान अुन्होने जो जो काम किये, अुनमे भादरका पुल बाधनेका काम बहुत जबरदस्त था। अुसे नौकरीके आखिरी सालमे अुन्होने हाथमे लिया था। वह वर्ष सवत् १९५६ का था। सौराष्ट्रमे अुस समय बहुत जगह महाभयकर अकाल फैला हुआ था। पोरबदर राज्य अुससे अछूता नही था। कितने ही प्रदेशोमे अकाल-पीडित लोग — जिनके पास गुजरका कोअी खास साधन नही था — अनाजके अभावमे हाथिया थूरके डोडे और पेडोके पत्ते खाकर गुजर कर रहे थे। ठक्कर साहबने भादरके पुलका जो काम शुरू किया था, वहा भी बहुतसे अकाल-पीडित मजदूरीके लिअे आते थे। अुन दिनो अेक करुण प्रसग अुनके देखनेमे आया, जो अुन्हे जीवनभर याद रहा। अुस घटनाका वर्णन अुन्हीके शब्दोमे देखिये

"पोरबन्दर राज्यके नवीबदर गावमे, जहा भादरका पुल बाधनेकी शुरुआत हो रही थी, मिट्टी हटानेके लिअे हजारो अकाल-पीडितोको काम पर लगाया गया था। अुनकी स्थिति आखो देखनेका मौका मिला। अेक प्रसग तो अैसा नजर आया जिसमे अेक किसान पति-पत्नी दोनो मर गये। वे अपने दो-तीन मासकी अुम्रसे लगाकर तेरह-चौदह वर्ष तकके दो-तीन छोटे-छोटे बच्चे पीछे छोड गये थे।

"ये बडे लडके दो तीन मासके भाअीको कैसे सभाल सकते थे? अिसलिअे अिन लडकोने अिस छोटे बच्चेको जीता ही गाड दिया। मेरे मातहत हो रहे कष्ट-निवारण कार्यके केन्द्रमे ही यह घटना हुअी थी। अिसका मुझे बडा दुख हुआ और अुसकी याद तो वर्षो तक बनी रही। आज तक मै अुस घटनाको भूल नही पाया हू।"

मनुष्य देहकी नश्वरता बतानेको जैसे बुद्ध भगवानको अेक बूढे, अेक रोगी और अेक शवके दर्शन हुअे, वैसे शायद कुदरत ही ठक्कर साहबके भावी जीवनकी रचना कर रही होगी। अिसलिअे जिन्दगीके शुरूके दिनोमें ही अुसने अुन्हे यह समझनेका प्रत्यक्ष पाठ दे दिया कि अकाल क्या होता है और अुसमे फसे हुअे मनुष्यका दुख कैसा होता है।

पोरबन्दर राज्यके पाच वर्षोंमे अुनकी राज्यमे खूब ही कीर्ति फैली। और अेक दो अपवादोको छोडकर राज्यकी नौकरी वफादारीके साथ बजाअी. यह कहा जा सकता है। आम तौर पर अितने वर्ष तक अुन्होने जहा जहा नौकरी की, वही मालिक और अपने कामके प्रति बहुत वफादार और अीमानदार रहे। अैक मौके पर अुन्होने वर्षो बाद सार्वजनिक रूपमे स्वीकार न किया होता तो किसीको खबर भी नही होती कि ठक्कर साहबने अपनी अिजीनियरीके कार्यकालमे दो बार रिश्वत ली थी। अिंजीनियरीका धन्धा काजलकी कोठरी जैसा है। अुसमे से जो भाग्यशाली हो वही काले दाग लगे बिना बाहर निकल सकता है। ठक्कर साहबने अेक जगह लिखा है कि, "हजारो रुपये कमाकर देने या खो देनेकी जिसके हाथमे सत्ता होती है, वह अुस सत्ताका सदा ही कोअी दुरुपयोग न करे, यह कैसे हो सकता है? अपने पेशेके सिलसिलेमे वेश्याके साथ बहुत बार परिचयमे आना और अुसके प्रलोभनमे न फसना, यह जितना साधारण मनुष्यके लिअे मुश्किल है अुतना ही मुश्किल अेक अिजीनियरका ठेकेदारसे रिश्वत न लेना है। मुझे याद है कि मैंने अपनी २३ सालकी अिजीनियरीकी नौकरीमे केवल दो बार रिश्वत ली थी। अेक बार पोरबन्दर राज्यमें भादरके बाधके अेक ठेकेदारसे ४०० रुपये लिये थे। अिसमे मेरा बचाव अितना ही है कि अुस वक्तका अुसका काम पूरा हो गया था, आखिरी बिल भी बन गया था। अुसके बाद अुसने रिश्वत दी थी और मैंने ली थी। दूसरी बार पोरबन्दर राज्यके लिअे आस्ट्रियाकी बनावटकी बेतकी कुरसियोकी बडी खरीद करने मैं बबअी गया था, तब खरीदमे लगभग ३०० रुपये अधिक कीमत बना कर मार खाये थे। अिन दो बारके बाद किसी भी समय रिश्वत लेना मुझे याद नही है। जिस प्रकार अपनी कमजोरीका सार्वजनिक अिकरार करके मैं सार्वजनिक क्षमा-याचना कर सकता हू।"

ये दो घटनाअे ठक्करबापाको मानवकी अुच्च कोटिमे रखती है। मनुष्यमात्र भूलोका पात्र है, फिर भी वह अूचा तभी अुठता है जब वे भूले और दोष अुसे आखकी किरकिरीकी तरह खटकते है और अुन्हे दूर करनेको वह सदा ही तत्पर रहता है। अैसे बहुतेरे अिजीनियर होगे जिनके हाथो दो बार तो क्या, बीसो बार रिश्वत लेनेके और दूसरे अपराध होते होंगे। परतु अुनका अिकरार करनेवाले तो अेक ठक्कर ही पैदा हो सकते है। और सब तो यह जानकर भी कि हम भूल कर रहे है आरामसे रिश्वतका रुपया हजम कर जाते होगे। परतु अुनका अतःकरण जड बन गया होता है। ठक्कर साहब ही अितने भाग्यवान थे कि अिस बारेमे जाग्रत रहे।

८

पूर्व अफ्रीकामें

अफ्रीकाका जो प्रदेश पहले ब्रिटिश ओस्ट अफ्रीकाके नामसे पुकारा जाता था, अुसका अेक भाग युगान्डा नामसे मशहूर है। वहा अेक रेलवे लाअिन ग्रेट ब्रिटेनके खर्चसे डालनेका वहाकी सरकारने विचार किया। और अिसके लिअे पैमायशका काम सन् १८८५–८६ मे शुरू किया गया। रेलवे लाअिन बनानेके कामका आरभ लगभग १८९१ में हुआ।

युगाण्डा देश अितना अधिक शिक्षित या विकसित नही था। वहा जगली लोगोको नियमबद्ध मजदूरी करनेकी तालीम नहीं मिली थी। अिसलिअे यह व्यवस्था हुअी कि अुस कामके सिलसिलेमे रेलवे-कामके निष्णात नौकर और मजदूर सब हिन्दुस्तानमे जुटाये जाय। अिजीनियर और अूचे पदोके अफसर अिग्लैण्डसे ही लिये जाते और अुनके मातहत छोटे नौकरोका तमाम स्टाफ और दूसरे मजदूर भारतसे भरती किये जाते।

अमृतलाल ठक्कर पोरबदर राज्यकी नौकरीसे मुक्त होनेकी तैयारीमे थे। अुस समय युगाण्डा रेलवे लाअिनके मुख्य ठेकेदारोने अिजीनियरो और दूसरे आदमियोके लिअे विज्ञापन दिया। अिसी प्रकारका अेक विज्ञापन पढकर अुन्होने अुस कपनीके साथ पत्रव्यवहार किया और नौकरीके लिअे बाकायदा अर्जी भी भिजवाअी। अुनकी अर्जी मजूर हुअी और अुन्हे तीन सौ रुपअेके वेतन पर रख लेना तय हुआ।

अफ्रीकामे नौकरी मिल जानेकी यह खबर जब पिताको और घरके लोगोको लगी, तब अेक तरफ सबको बडी खुशी हुअी और दूसरी तरफ चिन्ता भी हुअी। अफ्रीका जैसे दूर स्थान पर जाना था, अिसलिअे मा-बाप और कुटुम्बी जनोको चिन्ता होना स्वाभाविक था। अलबत्ता, अुस समय वेरावल और पोरबदरमे बहुतसे व्यापारी अफ्रीका जाते थे। अुनमे से कुछ तो लोहाणा जातिके ही थे। फिर, कच्छी लोहाणा तो वर्षो पहलेसे समुद्र यात्रा करते रहे थे और अफ्रीकामे रहकर लाखोका व्यापार करते थे। अुनमें से बहुतोने तो वहा जाकर अितिहासका निर्माण किया था। अिस प्रकार विदेश-गमन सौराष्ट्रवासियोके लिअे कोअी नअी बात नही थी। अितने पर भी भावनगरकी तरफसे समुद्र यात्रा करके विदेश जानेवाले तुलनामे बहुत

थोडे थे और अुनमें भी ठक्कर साहब जैसे पढे-लिखे तो लगभग कोअी नही थे।

विट्ठलदास ठक्कर जैसे साधारण स्थितिके गृहस्थके घरवालोंको और खास तौर पर स्त्रियोंको तो सहज ही अैसा लगता होगा कि विदेशमें पता नही क्या क्या दुःख अुठाने पडे, अकल्पित आपत्तिया आ जाय और दिक्कतें भोगनी पडे। अिसलिअे यह विचार मा-बापको बहुत पसन्द नही आया था। अन्तमें मनको जिस तरह समझाकर कि तीन वर्ष तो देखते देखते गुजर जायेंगे और पुत्र घर लौट आयेगा, विट्ठलदास ठक्करने अमृतलालको अफ्रीका जानेकी अनुमति दे दी। परन्तु पत्नीको साथ भेजनेका तो सवाल ही नही था। हिन्दू परिवारोंमें घरके बुजुर्ग जो तय कर दें वह परिवारके हितमें ही है, यह माना लिया जाता था। और अुनका निर्णय अन्तिम समझा जाता था। अमृतलाल ठक्करकी पत्नी श्रीमती जीवकोर बाअीसे पूछनेकी बात ही नही थी। अफ्रीका जैसे दूरके स्थान और अनजान देशमें अेकाकी जीवन बिताने जाना हो, वहा स्त्रियोंके लिअे अैसी यात्रा करना और अफ्रीकामें छत्र-छायाके बिना अकेले रहना खतरनाक ही माना जाता था। अुन दिनों पत्नीको साथ लेकर विदेश जानेका रिवाज ही नही था। अिसलिअे निश्चय हुआ कि अमृतलाल ठक्कर अकेले ही जाय। वहा अुन्हे खाने-पीनेमें कोअी अडचन न हो, अिसके लिअे यह तय हुआ कि साथमें अेक रसोअिया भी ले जाय। ठक्कर विट्ठलदासने अमृतलालके लिअे अेक विश्वस्त ब्राह्मण रसोअिया ढूढ दिया और अुसे पैंतीस रुपये मासिक वेतन पर तीन वर्षके करारके साथ अफ्रीका ले जानेका निश्चय किया। ठक्कर विट्ठलदासका परिवार कट्टर वैष्णवोंका था। अिसलिअे ब्राह्मणके सिवाय और किसी जातिके रसोअियेसे काम नही चल सकता था। जिस कारण अधिक रुपया देकर भी ब्राह्मण रसोअियेके साथ ही यह बात तय की। इस प्रकार सब व्यवस्था हो गअी तो ३०–३१ वर्षकी भर जवानीमें अमृतलाल ठक्करने वृद्ध मा-बाप, प्यारे भाअी-बहनों और निःसतान पत्नीको घर छोडकर अफ्रीकाकी ओर प्रयाण किया।

साधारण तौर पर यह हिसाब लगाया गया था कि अफ्रीकामें रसोअियेका और अपना सारा खर्च निकाल कर लगभग सौ रुपये देश भेजे जा सकेंगे। सौ रुपये देशमें कुटुम्बका काम चलानेको काफी हो जाते। अुस समय बडे भाअी परमानद तो वढवाणमें शिक्षक थे ही और अपनी गाडी अच्छी तरह चला रहे थे। अिसी प्रकार छोटे भाअी मगनलाल मैट्रिकमें फेल होनेके बाद धधेमें लग गये थे। चौथे भाअी मणिलाल ग्रेज्युअेट होनेके

किनारे पर थे और अमृतलाल ठक्करके अफ्रीका जानेके बाद गोडलके गरासिया कालेजमे शिक्षकके रूपमे काम कर रहे थे। दूसरे दो भाअी केशवलाल और नारायण अभी हाअीस्कूलमे पढ रहे थे। बडी बहन व्याह कर सुसराल चली गअी थी। अिस प्रकार विट्ठलदास अपने लडकोको धधेसे, ठीक रास्ते और पढाअीमे लगे हुअे देखकर सर्वथा निश्चिन्त थे। अब मुझे धधा या नौकरी करनेकी जरूरत नही रहेगी और मै निश्चिन्त होकर प्रभु-भजन, हवेली और जातिकी सेवाका प्रिय कार्य कर सकूगा, अिस विचारसे वे आत्मसतोष अनुभव करते थे। और वानप्रस्थ अवस्थामे ओीश्वरने यह सब अनुकूलता दी, अिसे अपना सौभाग्य समझते और अिसके लिअे ओीश्वरका अुपकार मानते थे।

अमृतलाल ठक्करने अफ्रीका पहुचनेके बाद फौरन् अपना कामकाज सभाल लिया। अिस बार अुन्होने देखा कि रेलवेके काममे अधिकाश मजदूर हिन्दुस्तानसे और अुसमे भी खास तौर पर पजाबसे आये है। पजाबी लोग सशक्त और विदेश जानेके अभ्यस्त थे। साथ ही काम करनेमे भी मजबूत थे। अिसलिअे भारतके लोगोमे अुनका चुनाव पहले होता और अुन्हे कराची बन्दरगाहसे स्टीमरमे चढा दिया जाता। तमाम नौकरो और मजदूरोको पहलेसे निश्चित किया हुआ वेतन मिलता। अिसके सिवाय बधी हुअी दरसे खानेपीनेका सामान मुहैया करनेकी व्यवस्था भी सरकारने कर दी थी। अैसा न किया जाता तो तमाम भारतीयोको जरूरी अनाज और अन्य फुटकर चीजे न मिलती और मजदूर परेशान होते। अिससे नये मजदूर भरती करनेमे दिक्कत पेश आती और परिणामस्वरूप रेलवेका काम आगे न बढ पाता।

रेलवेके कामके लिअे मजदूरोके सिवाय अिजीनियरी विभागमे पैमायश करनेवाले, नापनेवाले, निरीक्षक, स्टेशनमास्टर वगैरा भी भारतके अनेक प्रान्तोसे, विशेषत बगाल, युक्तप्रान्त (आजकलका अुत्तरप्रदेश), पजाब वगैरासे लाये जाते। ये लोग वतन छोडकर दूरके अिस देशमे कमाअी करनेके लिअे आते। देशमे तो वे जहा रहते हो अुस गावमे कुटुम्बकी मर्यादामे तथा जातिके रीतिरिवाजके अनुसार चलते और आम तौर पर नीतिमय जीवन बिताते। परतु अफ्रीका जैसे दूर स्थान पर जाति या गावका नियत्रण अुठ जानेसे वे निरकुश बन जाते और स्वच्छद जीवन व्यतीत करते। अिनमे अधिकाश लोग तो मासाहारी थे, अिसलिअे मास खानेमे अुन्हे आपत्ति नही होती थी। अिसके सिवाय वहा जाकर और भी तरह तरहकी कुटेवे सीख जाते। वे अग्रेजोकी नकल करके शराब पीते, भक्ष्याभक्षका सेवन करते और कुछ तो अिससे भी आगे बढकर वहाकी हब्शी स्त्रियोके साथ दुराचार करते।

ये सब बातें ठक्कर साहबने पूर्व अफ्रीकामें अपनी आंखोंसे देखी और देखकर अुन्हें अचभा हुआ। अिस सबबसे ठक्करबापा अेक जगह लिखते हैं

"रेलवेके नौकर, ओवरसीयर, सरवेयर, स्टेशनमास्टर, क्लर्क वगैरा भारतके अनेक प्रान्तोंसे आते। अुनका मेरे साथ समागम हुआ और अुनके भिन्न-भिन्न रीतिरिवाज और रहन-सहन जाननेका अवसर मिला।

"मैंने देखा कि अिस प्रकार विदेश जानेवाले अधिकाश शिक्षित नौकर विदेश आनेके बाद मर्यादा छोड देते है, शराब वगैराका अुपयोग खूब करते है और भ्रष्ट जीवन बिताते हैं। कुछ तो अग्रेजोका अनुकरण करके अफ्रीकाकी हब्शी स्त्रियोको खुले तौर पर रखेलके रूपमे रखते और चरित्र-भ्रष्ट जीवन व्यतीत करते। अिस प्रकारका व्यवहार ८० फी सदी लोग वहा करते थे।

"अीश्वर कृपासे मै अिससे बच गया हू, जिसके लिअे अपने आपको भाग्यवान मानता हू।"

"अेक बार अस्पतालमे जाने और छोटासा आपरेशन करानेका प्रसग आया तब ब्राडीका गिलास मेरे सामने रखा गया। मैंने अुसे नही पिया तो अुसका अुपयोग पास खडे हुअे कपाअुण्डरको करनेको मिल गया। अिसमे अुसे आनन्द हुआ। यह घटना मुझे पैंतालीस वर्ष बाद भी याद आ रही है।"

पूर्व अफ्रीकामे ठक्कर साहबको नया देश और नये आदमी देखनेको मिले। अुसके साथ कुदरती लीला देखने — घने जगल और विशाल सरोवर देखनेका भी अवसर प्राप्त हुआ। सैकडो वर्षोंसे बिना खेतीका अिलाका होनेसे वहा घने जगलोंका पार नही था। अिन वनोंमे सैकडो वर्षोंसे खडे हुअे पुराने महाभयकर मोटे तनेवाले जटाजूट भीमकाय वृक्ष देखे। भारतके वीरान जगलोमे जैसे सैकडो हिरणोंके टोले छलागे भरते देखे जाते है, वैसे वहा लम्बी और अूची गर्दनवाले जिराफ भटकते देखे। कभी कभी तो सिह गर्जना करते हो और सारे जगलमे अुसकी गूज फैलती हो, अैसे घने जगलोवाले प्रदेशोमे भी घूमना हुआ। और अेक जगह तो दोनो ओर हरियालीसे छाअी हुअी १५००-१५०० फुट अूची गिरिमालाके बीच मीलोंके विस्तारमे फैला हुआ चौडा नीचा घाटीवाला प्रदेश — जिसे अग्रेजीमे Rift valley कहा जाता है — देखनेका भी अवसर मिला। रिफ्टवेलीके पास अूचाअीवाले प्रदेशमें होकर रेलवेको नीचेके प्रदेशमें अुतारा गया है, अिस सिलसिलेमे बडे अिजीनियरीके काम देखे। विशाल पाटोंवाली बडी किन्तु सूखी नदियोंके पुल,

जिन्हे Viaduct के नामसे पुकारा जाता था, अुनकी रचना और अुनको बनानेके लिअे काममे लाअी गअी अिंजीनियरीकी करामात देखनेको मिली। रेलवेके पश्चिमी सिरे पर स्थित विक्टोरिया न्याजा नामक पूर्व अफ्रीकाका विशाल सरोवर प्रत्यक्ष देखा। अिससे पहले अिस सरोवरके बारेमे भूगोलकी पुस्तकोमे अुसका नामपता और थोडी रूखी-सी जानकारी और सक्षिप्त वर्णन पढा था। परतु जब यह भव्य सरोवर, अुसका बिल्लोरी काचकी तरह चमकता हुआ पानी, अुज्ज्वल दूध जैसे फेनके गोले, अुसका विशाल विस्तार और आसपासकी प्रकृति आदि देखनेका मौका मिला, तब ठक्कर साहबका हृदय-सरोवर भी आनदसे छलक अुठा। और अिस पर भी तालावमे जहाज पर बैठकर विहार करनेको मिला अुस समयके आनदका तो कहना ही क्या?

पूर्व अफ्रीकामे श्री ठक्कर जितने समय रहे अुतने समय हर पखवाडे नियमित रूपमे घरको पत्र लिखते थे। अुसमे वे कैसे रहते है, क्या काम हो रहा है, कैसी सुविधा-असुविधा भुगत रहे है, कहा घूमना फिरना होता है, क्या क्या नया देखने-भालनेको मिलता है, वगैरा समाचार तो रहते ही थे। अिसके सिवाय अफ्रीकाके लोगोके विषयमे, अुनके रीत-रिवाज और रहन-सहनके बारेमे विस्तारसे लिखते थे। जहा जहा जाते अुन स्थानोका वर्णन भी लिखते। हर पखवाडे अफ्रीकाकी डाककी मुहरवाला बडा लिफाफा आता तो देशमे सभी विट्ठलबापाके आसपास जमा हो जाते। विट्ठलबापा पत्रमें से पढने लायक सब बाते सारे कुटुम्बको पढ सुनाते। अिस पत्रके साथ बडे लिफाफेके भीतर अेक छोटा लिफाफा भी नियमित रूपमे आता और अुस पर 'जीवकोरको' यह पता लिखा रहता। विट्ठलबापा यह लिफाफा फौरन् घरमे भिजवा देते। पच्चीस वर्षकी अवस्थामे जिसकी अिकलौती छ वर्षकी सतान मर गअी हो और तीसवे वर्षमे सदा ही बीमार रहनेवाली पत्नीको अकेली घर छोडकर जिसे अफ्रीका जाना पडा हो, अुस जवान पतिने अिन पत्रोमे क्या क्या भावनाअे भरी होगी, कैसी कैसी आशाअे और अभिलाषाअे अिन पत्रोमे अक्षरोके रूपमे अकित की होगी, दूर रहनेवाली पत्नीको कैसे आश्वासन दिये होगे, वर्तमान विरह और भावी मिलनके कैसे सुहावने चित्र खीचे होगे, अिसका कोअी ब्यौरा जाननेको नही मिलता जिससे अमृतलाल ठक्करकी अुस समयकी आतरिक स्थितिके दर्शन हो सके। परतु अुनके कर्तव्यशील स्वभावको देखते हुअे दूर रहकर भी अफ्रीकाके प्रदेशके सतत सहवासका आनन्द शब्दोके साधन द्वारा वे जरूर महसूस कराते होगे और भावनगरके अुस छोटेसे घरमे सास-ससुर और अन्य कुटुम्बीजनोके सहवासमें दिन बितानेवाली पत्नीके जीवनमे अभाव अनुभव न होने देने और

अपनी अनुपस्थितिकी कमी न खलने देनेका केवल पत्रोंके ही साधन द्वारा पूरा प्रयत्न करते होंगे, अिसमें शंका नहीं।

श्रीमती जीवकोरके पत्र भी अुनके नाम अफ्रीकामें समय समय पर जाते थे। अेक दो पत्रोंमें अुन्होंने स्त्री-स्वभावसे प्रेरित होकर अमृतलाल ठक्करको सोनेके गहने बनवाकर ले आनेको लिखा था। तब अुन्हें क्या पता था कि अफ्रीका जैसे दूर स्थान पर कमाने जानेवाले पतिका सारा वेतन अफ्रीकाके खर्चमें, परिवारका पुराना कर्ज चुकानेमें और चालू खर्चमें पूरा हो जाता है और जेवर बनवानेके लिअे अुनके पास कोअी खास रकम बचती ही नहीं? ठक्कर साहबने पत्नीको अपने लाक्षणिक हास्यसे भरा हुआ जवाब देते हुअे लिखा कि "यहांकी स्त्रियां सोने-चांदीका जेवर नहीं पहनतीं, अिसलिअे वह यहां नहीं मिलता। यहां तो सब लोहेके गहने पहनती हैं। तुम कहो तो आते समय वह लेता आअुं।"

यों तो अमृतलाल ठक्करके पत्र देशमें नियमित रूपसे हर पखवाड़ेमें अेक बार आते ही थे। पर अेक बार दो पखवाड़े तक लगातार कोअी पत्र नहीं आया तो घरके लोगोंको चिन्ता होने लगी। सारे घरने लगभग डेढ़ मासका समय चिन्तातुर बनकर अनिश्चित दशामें बिताया, अुसके बाद भी पत्र नहीं आया तो विट्ठलदास ठक्करने तारसे खबर पुछवानेका विचार किया। वे तार देने ही वाले थे कि अितनेमें सौभाग्यसे मोम्बासाकी डाक मिली और अुस दिन डाकमें अेक ही साथ तीन लिफाफे मिले! अमृतलाल ठक्करने तो नियमित पत्र लिखे ही थे। परंतु डाककी भूलके कारण पहलेके दो पत्र देरसे पहुंचे।

ये पत्र विट्ठलबापाने वर्षों तक रख छोड़े थे और परिवारके बहुत लोगोंने अुन्हें बार बार पढ़ा था। अिन पत्रोंके बारेमें बातें करते हुअे श्री कपिलभाअी ठक्करने अेक बार कहा था, "जरा समझदार होनेके बाद मैंने बड़े काकाके ये पत्र और अफ्रीकाकी डायरी पढ़ी थी। अुस समय मेरी अुम्र दस-बारह वर्षकी थी। किशोर अवस्थामें अफ्रीका देश, अुसके लोग, जानवर, प्राकृतिक दृश्य, वन, जंगल, पहाड़, सरोवर अित्यादिके रसमय वर्णनसे भरे हुअे पत्र और डायरी मुझे अितने अच्छे लगते थे कि अुनका पढ़ना मुझे कहानी जैसा ही आकर्षक और रोचक प्रतीत होता और घंटों तक काकाके वे पत्र और डायरी मैं पढ़ता रहता। अुन बातोंको भी आज अितने अधिक वर्ष बीत गये हैं कि पत्रों या डायरीके ब्योरेका भी मुझे स्मरण नहीं रहा। केवल अफ्रीकाका अेक अद्भुत, रंगीन कल्पनाचित्र ही मेरी आंखोंके सामने तैर रहा है।"

तोते लाये थे। अिनमे से कुछ चीजे अपने भतीजे-भतीजियोको देकर अुन्हे खुश कर दिया।

शुरूके दिनोमे भावनगरमे बहुत ही धूमधाम हो गअी। कारण, वसाणी मुहल्लेके अुस छोटेसे मकानमे अेक साथ करीब बीस तो परिवारके आदमी अिकट्ठे हो गये थे। अुनके अलावा बाहरसे मिलने आनेवाले परिजनो, मित्रो और अन्य स्नेहियोका ताता भी काफी लगा रहता। अमृतलाल ठक्कर भी अुनके यहा आते जाते थे।

परदेशमे रहकर आनेके बाद आम तौर पर अपना महत्त्व लोग बढा देते है और 'हम भी कुछ है' यह दिखानेके लिअे कपडे-लत्ते, विदेशी आकर्षक चीजो वगैराका ठाटबाट बढाकर अपनी बडाअीका प्रदर्शन करते है। परन्तु अमृतलाल ठक्करके मनमे अिनमे से कोअी भी बात नही थी। ये स्वभावसे ही सादे मनष्य थे और अफ्रीकामे तीन वर्ष अेकाकी रहकर अधिक गभीर और समझदार बन गये थे।

अुस समयकी अुनकी सादगी बतानेवाली और कुटुम्बके लोगोको पाठ देनेवाली अेक-छोटीसी घटनाका आलेखन अुनके भतीजे श्री कपिल ठक्करने नीचे लिखे शब्दोमे किया है

"अुस समयकी कुछ छोटी छोटी घटनाअे मुझे अब भी याद है। धोबीको धोनेके लिअे देनेके कपडोका अेक बडा ढेर अिकट्ठा किया गया था। कपडे बहुत थे, अिसलिअे अुस गट्ठरका बोझा काफी था। हमारे यहा अुस समय घरमे नौकर-चाकर नही थे। ये कपडे या तो धोबी आकर हमारे यहासे ले जाय या हम अुसके यहा रख आवे, दोमे से अेक बात हो सकती थी। सुबहके समय सदाकी भाति हमे कुछ स्नेहियोसे मिलने जाना था। मिलने जानेवालोमे बडे काका, अुनके भाअी और मै तीन आदमी थे। रास्तेमे ही धोबीका घर पडता था। अिसलिअे किसीने कहा कि जाते समय हम धोबीको कहते चलेगे कि आकर कपडे ले जाय। परन्तु अमृतलाल भाअीने कहा कि, 'हमी ये कपडे क्यो न ले जाय?' यह विचार हममेसे किसीकी कल्पनामे ही नही आया था। हमारे जैसे अेक सुखी और प्रतिष्ठित कुटुम्बके आदमी दिन-दहाडे भावनगरके आम रास्ते पर मैले कपडोका गट्ठर अुठाकर चले, यह चौकानेवाला विचार हमे स्वप्नमे भी नही आया था। हमारे जैसे प्रतिष्ठित परिवारके मनुष्योसे अैसा हल्का काम नही हो सकता, अिस तरहके विचार हम रखते थे। परन्तु बडे काकाने अैसे गलत खयालोको कभी महत्त्व नही दिया था। अुन्होने तुरन्त ही कपडोका गट्ठर कधे पर रख लिया और हम स्नेहीजनोसे मिलने चले। रास्तेमे कितने ही परिचित

मनुष्य हमें मिले और अुन्होंने जय श्रीकृष्ण किया। अुनमें से किसीने स्वाभाविक रूपमें ही पूछा, 'यह क्या है, अमृतलाल भाजी?' और बड़े काकाने अुतनी ही स्वाभाविकता और शांतिसे जवाब दिया, 'धोबीके घरके कपड़े।' बड़े काका असा कर रहे हैं, यह देखकर अुनके दूसरे भाअियोंने और मैंने भी शिष्टताकी खातिर ही कपड़ोंका गट्ठर अुठानेमें साथ दिया। अुस वक्त मेरी अुम्र दसेक वर्षकी थी। परन्तु मैं समझता हूं कि परिवारके सब लोगोंके लिअे यह अेक पदार्थपाठ था।"

९

नौकरीके ग्यारह वर्ष

भावनगरमें अेकाध मासमें अिकट्ठा हुआ कुटुम्बी जनोंका मेला अन्तमें बिखर गया। कारण, अिसी अरसेमें अमृतलाल ठक्करको सांगली राज्यमें नौकरी मिल गअी। सांगलीमें पोरबन्दरके समयके अुनके पुराने मित्र डॉ० हरि श्रीकृष्ण देव राज्यके दवाखानेमें डॉक्टरके रूपमें काम करते थे। अुनके साथ ठक्कर साहबका पत्रव्यवहार जारी था। अुनके प्रयत्नसे ही ठक्कर साहबको सांगली राज्यके मुख्य अिंजीनियरकी नौकरी मिल गअी।

ठक्कर साहब अपनी पत्नीको अफ्रीकामें तो साथ नहीं ले गये थे, क्योंकि वह दूर और अनजान मुल्क था। परन्तु यहां तो असी कोअी बात नहीं थी। और अफ्रीकाके श्री ठक्करके निवासकालमें तीन साल तक पति-पत्नी अलग रह ही चुके थे, अिसलिअे सांगली राज्यकी नौकरीका निश्चय होने पर वे अपनी पत्नी जीवकोरको साथ लेकर १९०३ में सांगली गये। अिस प्रकार बहुत लम्बे समयके बाद पति-पत्नीको काठियावाड़से दूर स्थानमें सम्मिलित परिवारसे अलग अकेले रहनेको मिला। अिसलिअे दोनोंको काफी स्वतन्त्रता अनुभव हुअी और बापाके शब्दोंमें कहें तो 'दोनों विवाहित जीवनका आनन्द ले सके।' सांगलीमें अमृतलाल ठक्कर नौकरीके काममें फुरसत पाते तब पति-पत्नी दोनों सांगलीसे दूर कृष्णा नदीके किनारे घाट पर बैठकर कैसा आनन्द करते और मुक्त मनसे विचरते, यह सब पहले कहा जा चुका है।

सांगलीका निवासकाल ठक्कर साहबके लिअे अनेक प्रकारसे सुखद साबित हुआ। अुस समयके अेक दो मीठे स्मरण बापाने सुरक्षित रखे हैं।

अुन्हे सेवाजीवनकी दीक्षा देनेवाले भारतसेवक गोपालकृष्ण गोखलेजीका प्रथम परिचय अिसी अर्सेमे सागलीमे हुआ। और बापा जिन्हे गुरु मानते थे, अुन चार गुरुओमे से अेक प्रो० धोडो केशव कर्वेका परिचय भी अिसी अर्सेमे हुआ था। महाराष्ट्रके अेक प्रसिद्ध समाज-सुधारक और स्त्री-शिक्षाका आन्दोलन करनेवालोमे अग्रणी श्री कर्वेने अुस समय विधवाओका काम हाथमे लिया था। और समाजकी कट्टरताकी शिकार बनी हुअी अिन बहनोको हाथ पकडकर खडा करने और अुनके जीवनमे सार्थकता लाकर अुन्हे समाजका अुपयोगी अग बनानेके लिअे अुन्हे तालीम देकर तैयार करनेके खातिर पूनासे थोडे मील दूर हिगणेभद्रुक नामक स्थान पर विधवा-आश्रम खोला था। साथ ही परोपदेशे पाडित्य दिखानेमे अितिश्री न मानकर अुन्होने स्वय अेक विधवाके साथ विवाह करके महाराष्ट्रीय समाजमे अुदाहरण पेश किया था। अुस समय कर्वे दादा पूनाके फर्ग्यूसन कालेजमे नौकरी करते थे और नौकरी करते करते वह आश्रम चलाते थे। दिनको कालेजमे पढाते और शामको पूनासे पाच मील पैदल चलकर हिगणेभद्रुक आश्रममे जाते। दूसरे दिन सुबह पूना वापस चले आते। घर पर बच्चे बीमार हो या और कुछ कारण हो, तो भी वे रातको आश्रममे गये बिना न रहते। यह क्रम ,लगभग बीस वर्ष तक चला था।

अमृतलाल ठक्कर जब सागलीमे अिजीनियरके रूपमे काम करते थे, तब श्री कर्वेके सम्पर्कमे आये। साधारणत ठक्करकी भी विधवाओके प्रति हमदर्दी रहती थी। वैधव्य दशा कैसी करुण दशा है, अिसका प्रत्यक्ष अनुभव अुन्होने घरमे ही छोटे भाअीकी चौबीस वर्षकी विधवाकी दशा देखकर किया था। अिसलिअे अिन निराधार और दु खी बहनोकी मदद करनेवाले अिस पुरुषकी ओर वे आकर्षित हुअे और अेक बार हिगणे जाकर अुनकी सस्था भी देखी। अिसके बाद अुनके प्रति सम्मान और प्रेम बढने पर वह परिचय निजी मित्रतामे परिणत हो गया और जीवनके अन्त तक बना रहा। अिस सम्बन्धके कारण ही कर्वे साहब भावनगर आने जाने लगे और अुसीसे भावनगरमे महिला-शिक्षाका प्रारम्भ हुआ। आज भावनगरकी कितनी ही बहने, जो अन्यथा शिक्षा प्राप्त नही कर सकती थी, शिक्षा प्राप्त कर सकी और कुछ तो अक्षरज्ञान और प्रारम्भिक शिक्षासे आगे बढकर मैट्रिक और ग्रेज्युअेट भी हो गअी। अिन सब बातोमे कर्वेके साथ हुआ ठक्करबापाका परिचय बहुत कारणीभूत हुआ है।

सागलीके अुनके निवासकालमे ही सन् १९०४ मे गोखलेजी किसी कामसे सागली आये थे। ठक्कर साहब अुन्हे नाम और कामसे तो जानते ही

थे। परन्तु विशेष परिचय डॉ० हरि श्रीकृष्ण देव द्वारा हुआ। वे गोखलेजीके वखान करते थकते ही न थे। जिसलिजे जब वे नागरी आते तो घर बैठे गगा आने जैसी बात हो गअी और अुनसे मिलकर अुनके प्रत्यक्ष दर्शन करनेकी ठक्कर साहबकी अिच्छा हुअी। अिसलिअे अुन्होने गोखलेजीसे मुलाकात करनेके लिअे प्रयत्न भी किया। अुन्होने गोखलेजीको १३ नवम्बर १९०८को अिस प्रकार पत्र लिखा

"माननीय महोदय,

"मै अिस समय सागली राज्यका जिजीनियर हू। आपकी सुविधानुसार मै आपसे लगभग पद्रह मिनट बातचीत करनेकी अिच्छा रखता हू। अिसलिअे मुझे सूचना देनेकी कृपा कीजिये कि मै आपसे मिल सकता हू या नही, और मिल सकता हू तो कब और कहा।

"अितनी स्वतत्रता लेनेके लिअे आशा है आप मुझे क्षमा करेगे।

आपका,

अमृतलाल वि० ठाकर"

गोखलेजीने यह पत्र पढकर अमृतलाल ठक्करको मिलनेका समय दिया। ठक्कर साहब अुनसे मिले और कोअी पन्द्रह मिनट बातचीत करके चले आये।

अिस मुलाकातके सिलसिलेमे बापा अेक जगह लिखते है, "मेरा राजनैतिक जीवन अुस अर्सेमे कोअी अितना विकसित नही हुआ था कि मै अुनके समागममे आनेका साहस कर सकता। परन्तु मेरे मित्र डॉ० हरिकृष्ण देव अुनके सम्पर्कमे आते थे और अुनकी सहायतासे मै अेक बार १९०४ मे अुनसे मिला था और कुछ बाते करके चला आया था।"

सागलीमे अुनके दिन सरलता और सुखसे बीत रहे थे। जिसी बीच वहाके अेक अुच्च अधिकारीसे थोडी खटपट हो गअी और अुन्हे नौकरीसे अलग होना पडा।

अुस समय सागली राज्यका राजा नाबालिग होनेके कारण वहा अग्रेज अफसर द्वारा शासन हो रहा था। ठक्कर साहबका स्वभाव शुरूसे ही स्वतत्र था। खुशामद जैसी वस्तु अुनमे कभी थी ही नही। और स्पष्टवक्ता तो अितने थे कि कभी कभी दूसरोको बुरा भी लग जाता था। अेक बार राज्यका शासन चलानेवाला अग्रेज अफसर किसी सार्वजनिक बाधकामका निरीक्षण करने आया। किसीने अुसके मनमे यह भूत भरकर भेजा था कि ठक्करने जो काम किया है वह ठीक नही है। अिसलिजे जिसकी जाच कीजिये। अिस पर वह अधिकारी वहा जाकर अिजीनियरी काममे

दोप निकालने और भूले वताने लगा। ठक्कर साहबने शुरूमे थोडी सफाओी देकर अुसे समझानेकी कोशिश की, परन्तु जब अुन्होने देखा कि वह हेतुपूर्वक आलोचना कर रहा है तब अुन्होने सीधा कह दिया कि "यह मामला टेकनिकल विषयका है। कोओी अिजीनियर यहा बात करे तो मैं अुसे समझाअू। परन्तु आप अिसमे क्या समझ सकते है?"

यह जवाब सुनकर वह अग्रेज शासक खूब झुझलाया, नाराज हुआ। परिणाम यह हुआ कि अुन्हे सागली राज्यकी नोकरीसे अलग होना पडा।

सागली राज्यसे अलग होनेके बाद तुरन्त ही ठक्कर साहबको बम्बओीमे नौकरी मिल गओी। बम्बओीकी म्युनिसिपेलिटीने अुन्हे वेतन तो अधिक नही दिया। सौ रुपये मासिक ही दिये। परन्तु कामके विना बैठनेसे नौकरी स्वीकार कर लेना अधिक अच्छा है, यह मानकर ठक्कर बापाने नौकरी स्वीकार कर ली।

अिस सिलसिलेमे भी अेक मजेदार बात है। सागली राज्यके अेक अुच्च अफसर मेजर बर्कके साथ ठक्करका अच्छा सम्बन्ध था। अुनकी सिफारिश लेकर अमृतलाल ठक्कर बम्बओी म्युनिसिपैलिटीकी नौकरी प्राप्त करने गये। बम्बओी म्युनिसिपैलिटीके मुख्य अिजीनियर मि० मर्जबानसे अुन्होने मुलाकात की और बातचीतके दौरानमे अुन्होने मेजर बर्कका सिफारिशी पत्र भी दिखाया। अमृतलाल ठक्कर अूचे, गोरे और रआबदार थे। और अुस समय वे लम्बा कोट और पतलून पहनते थे, अिसलिअे मर्जबानने अुन्हे पारसी समझ लिया। साथ ही मेजर बर्कका सिफारिशी पत्र भी लाये है, यह अूपर अूपरसे देखकर कोओी अधिक पूछताछ किये बिना ही अुन्हे पारसी मानकर जल्दी जल्दी नियुक्ति कर दी। अुसके बाद दूसरे दिन जब वे काम सभालनेको दफ्तरमे आये तब पता चला कि ये तो पारसी नही, हिन्दू है। तब अुनके मनमे जरा ठेस लगी। परन्तु अेक बार स्वय वचन दे चुके थे अिसलिअे अपने किये हुअे निर्णयमे परिवर्तन करना अुन्हे ठीक नही लगा। अलबत्ता बादमे अमृतलाल ठक्करका काम और औमानदारी वगैरा देखकर अुन्हे वह नियुक्ति करने पर कभी असन्तोष या अफसोस नही हुआ। अुलटे वे बहुत सन्तुष्ट और खुश हुअे।

बम्बओीकी म्युनिसिपैलिटीने अुन्हे कुर्लामे कचरेकी लाअिट रेलवेके निरीक्षकका काम सौपा। अिस गाडीमे बबओी शहरके अलग अलग मुहल्लोका कूडा-करकट भरा जाता और बबओीसे दूर कुर्लाके अुस पार चेम्बूरके पासकी सैंकडो अेकड अुजाड और वीरान जमीनमे जो बडे बडे खड्डे खोद रखे थे, अुनमे डाला जाता था। शहरका सारा कचरा गाडीमे भरा जाय और चेम्बूरके

पास भगी लोग सारी गाडी खाली करके अुसे साफ कर डालें, यह देखनेका काम श्री ठक्करको करना पडता था। श्री ठक्करने कहा कि यह काम मैला अुठानेसे भी ज्यादा खराब और गदा था। सडा हुआ कचरा, कीचड, पत्ते, घास, कागज, जूठन, पेशाब वगैरा सब अिकट्ठा हो जानेके परिणामस्वरूप जो सडाध पैदा होती और अुससे सिर फटनेवाली जो दुर्गन्ध आती वह असह्य थी। परतु म्युनिसिपल कर्मचारियोके लिअे अिस कामको किये सिवा कोअी चारा नही था। अिस कामका निरीक्षण करते हुअे श्री ठक्कर अिन सब लोगोके सपर्कमे आये और ये लोग कैसे जीते है, क्या खाते है, कहा रहते है और कैसी स्थितिमे रहते है, अित्यादि बाते अुनके जाननेमे आअी।

अुन्होने देखा कि अुनमे से अधिकाश लोग गुजरात-काठियावाडसे आये थे। वे ढेढ, चमार और भगी जैसी हल्की और अछूत मानी जानेवाली जातिके थे। सन् १९०० मे जब छप्पनिया अकाल पडा तब गुजरात-काठियावाडका अपना वतन छोडकर वे नौकरीकी तलाशमे यहा आये और धीरे-धीरे जब नौकरी मिल गअी तो यही बस गये। जिन लोगोको शहरमे काफी वेतन मिलने लगा तो अुन गावोके दूसरे ढेढ, चमार और भगी लोग भी ललचाये और गावोमे से अुनका प्रवाह बम्बअीकी तरफ शुरू हुआ। अिस प्रकार गुजरात-काठियावाडसे बहुतसे अछूत अपने बापदादोका सम्मानपूर्ण धधा छोडकर वेतनके लालचमे बम्बअी आकर बसने लगे। बबअी नगरीने भी अिन दलित जातियोके लिअे काफी आकर्षण पैदा कर दिया था। अिसलिअे वे बबअीकी मौज अुडानेके लिअे बडी सख्यामे अिस महानगरीमे आ बसे थे।

अिनमे से कुछ म्युनिसिपैलिटीमे कचरा अुठानेका काम करते, जब कि दूसरे कुछ लोग मैला अुठानेका काम करते। अिन लोगोकी बस्तिया बम्बअी शहरसे दूर दूरके अुपनगरोमे चेम्बूर जाते हुअे बीचमे पडती थी। बस्तिया गदी और नीची जगहोमे थी। टूटे हुअे लोहेके पीपोके टीन, टाटके टुकडो तथा सडे हुअे लकडो ओर बासकी खपचियोकी मददसे मिट्टीके झोपडे खडे करके वे गदगीमे रहते थे। बापा अिसे जीता-जागता नरक कहते थे। काठियावाडमे अपने छोटेसे गावमे रहकर समानपूर्ण और नीतियुक्त जीवन जीनेके बजाय यहा अुन्हे सुबहसे शाम तक कचरेकी सफाअी करने या नरकके टोकरे अुठानेका गदा काम करना पडता। झोपडे बिलकुल पास पास बने हुअे थे ओर अेक झोपडीमे कितने ही लोगोको रहना पडता था। अेक ही अधेरी झोपडीमे मा-बाप, बच्चे, सास-ससुर, ननद-भावज, जेठ-जेठानी वगैरा साथ रहते थे। अिससे न पूरी स्वच्छता रखी जा सकती थी, न नीति-मर्यादा।

परिणामस्वरूप शिथिलता अितनी अधिक बढ गअी कि नीति-अनीति जैसी कोअी चीज अिन लोगोमे बहुत कम रह गयी थी।

वतन छोडकर बबअी आ बसनेवाले अिन दलित जातियोके स्त्री-पुरुषो और बालकोकी स्थिति देखकर अमृतलाल ठक्करको बडी ठेस पहुचती थी। अुनके मनमे कअी बार प्रश्न अुठता कि अिन लोगोको अपने बापदादोके समयका कपडा बुनने, चमडा कमाने और मुहल्ले झाडनेका धधा क्यो पसन्द नही है? ये देहातका अधिक सुख और आरामवाला जीवन छोडकर अिस जीवित नरकागारमे क्यो आये होगे? अुस समय तो अुन्हे अिसकी कोअी सफाअी नही मिली, परतु वर्षो बाद अछूतोकी सेवा करते करते जब वे अिन लोगोके गाढ सपर्कमे आये और अिनमे से नारायणभाअी, कूकाभाअी, हीराभाअी और सामत मास्टर जैसे कुछ बुद्धिशाली मनुष्योके साथ प्रेम-सबध रखने लगे, तब अुनमे से अेकको अुन्होने यह सवाल पूछा था कि, "कूकाभाअी, आप जैसे सस्कारी मनुष्य अिस धधेकी तरफ कैसे ललचाये?" अुस समय कूकाभाअीने यह जवाब दिया था

"भूख और दु खके मारे लोग क्या नही करते? चोरी करते है, हत्या करते है, झूठ बोलते है और अनेक पाप करते है। तब यह तो सख्त मेहनत और मजदूरीका काम है। पहले तो अैसा गदा काम करते हुअे दिलमे नफरत होती थी, परतु अब अुसकी आदत पड गअी है। और 'गध रही कि सही' वाली कहावतके अनुसार अब हम पर अिसका कोअी असर नही होता।"

अिससे भी अधिक खराब और करुण बात तो यह थी कि अैसा गदा काम करनेकी अरुचिकर नौकरी जुटानेके लिअे अिन अछूत भाअियोको बहुतसे अनुचित मार्ग अपनाने पडते थे। अिसके लिअे अूपरके अफसरोकी खुशामद करनी पडती थी और अुनको 'दस्तूरी' अर्थात् रिश्वत देनी पडती थी। जो लोग देशसे आते अुनके पास घूस देनेको रुपया नही होता। अिसलिअे अुन्हे सौ-पचास रुपयेकी रकम पठान या मारवाडी व्यापारियोसे भारी ब्याज पर लेनी पडती। पठान अुसकी ड्योढी दुगुनी पहले ही लिख लेता और ब्याज भी भारी लेता। नतीजा यह होता कि ब्याज चुकाने और कर्ज अुतारनेसे कभी भी अुसे मुक्ति नही मिलती और अुसकी सारी जिन्दगी कर्ज देते देते ही बीत जाती थी। अिस बातका पता ठक्कर साहबको दु खी लोगोके साथ ज्यो-ज्यो सपर्क बढता गया, धीरे धीरे लगता गया।

ढेढ तथा भगी लोगोकी यह दुर्दशा देखकर ठक्कर साहबके मनमे अत्यत खेद हुआ। अुनके हृदयमे दयाभाव जाग्रत हुआ और अछूत जातिके अिन अभागे लोगोके प्रति अुनके दिलमे सहानुभूतिका स्रोत बहने लगा।

क्या करनसे अिन बेचारोके दु:ख हल्के हो, क्या करनेमे अुनकी कठिनाअियां कम हो, क्या करनेमे अुनकी किसी हद तक मदद की जा सकती है, जिस प्रकारके विचार अुनके मनमे अुठते और अुठ अुठ कर ठडे हो जाते थे। परतु अब अुन्हे चैन नही पड रहा था। जिन अभागे लोगोके लिअे कुछ कर गुजरनेकी वृत्ति अुनके हृदयमे जाग अुठी थी। परतु अुनकी समझमे यह नही आ रहा था कि अिसके लिअे क्या करना चाहिये। मनमे जिस सबधके विचार अुठते रहते थे। ठीक अिसी वक्त वे हरिजनोके आद्यसेवक श्री विट्ठल रामजी शिन्देके ससर्गमे आये और अुनसे टेढ, भगी, चमार, महार वगैरा समाजमे हल्की और अछूत मानी जानेवाली जातियोके लोगोकी सेवा करनेकी प्रेरणा, प्रकाश और मार्गदर्शन प्राप्त किया।

जैसे ठक्करबापाने विट्ठलबापाको अपना प्रथम गुरु बताया है, वैसे ही अिन विट्ठल शिदेको अुन्होने अपना दूसरा गुरु बताया है।

शिदेजी महाराष्ट्रके निवासी थे। दलितोकी सेवा करना ही जिनका जीवन-ध्येय और जीवन-कार्य था। जॉन बैप्टिस्ट जैसे अीसा मसीहके पुरोगामी थे, वैसे ही शिन्देजी भी गाधीजीके पुरोगामी थे, और अछूतोद्धार तथा हरिजन-सेवाका जो महान कार्य गाधीजी हाथमे लेनेवाले थे अुसके लिअे मानो पूर्वभूमिका तैयार करने ही आये हो, अिस प्रकार अुन्होने अपने तपसे अिस क्षेत्रमे प्रारभिक काम कर डाला था।

वे गरीबीमे रहकर और तकलीफे व मुसीबते अुठाकर हिन्दू समाजकी कुछ हानिकारक पुरानी रूढियोके विरुद्ध अकेले दम लड रहे थे और गाधीजीके अस्पृश्यता-निवारणके महान आन्दोलनके लिअे रास्ता साफ कर रहे थे। अुन्होने 'डिप्रेस्ड क्लासेज मिशन' तो बादमे शुरु किया। परतु अुस समय भी अत्यजोके लिअे बबअी प्रदेशमे जगह-जगह पाठशालाअे खोलकर अपने विनम्र ढगसे कार्य शुरु कर दिया था।

शिन्देजी मुक्ति-सेनाके सैनिकोकी तरह लाल साफा बाधते और लबी काली दाढी रखते थे। परतु दलितोके लिअे तो वे अेक खुदाअी फरिश्तेके समान ही थे। अुन्हे अिस कार्यकी प्रेरणा कहासे मिली होगी, अिस बारेमे विशेष जानकारी नही मिलती। परतु यह मालूम होता है कि जिस समय मद्रासमे अुन्नीसवी सदीके अन्तिम दशकमे थियोसॉफिकल सोसायटीके आद्य अध्यक्ष कर्नल ऑल्कॉटने अडियारमे कुछ पचम पाठशालाअे शुरु की थी, तब शिदेजीने भी बम्बअी प्रदेशमे अछूत पाठशालाअे शुरु की थी। पचमका अर्थ है हिन्दुओके चार वर्णोसे भी नीचा पाचवा वर्ण। और अन्त्यजका अर्थ है अतिम वर्ण। शिन्देजीने अपने कार्य और सचाअीसे बम्बअीके कुछ प्रमुख

सुधारको और नागरिकोका विश्वास और प्रेम सपादन कर लिया था। और अुनकी सक्रिय सहानुभूति प्राप्त करके वे अपनी सस्था 'डिप्रेस्ड क्लासेज मिशन' के लिअे अेक प्रभावशाली कमेटी स्थापित कर सके थे। अिस कमेटीके अध्यक्ष न्यायाधीश सर नारायण गणेश चन्दावरकर थे। अिस मिशनके द्वारा वे अत्यजोके लिअे प्राथमिक शालाअे और बबअीमे अेक छात्रालय स्थापित कर सके थे। वे अेक दो बार सौराष्ट्रमे भी आये थे और राजकोट तथा भावनगरमे अछूत पाठशालाअे कायम करनेमे सफल हुअे थे।

ठक्कर साहबके मातहत म्युनिसिपैलिटीके २५० से ३०० तक गुजरात-काठियावाडके हरिजन और महाराष्ट्रके महार और माग लोग कचरेकी सफाअीका काम करते थे। शिन्देजीने अुनके बच्चोके लिअे भी अेक पाठशाला शुरू की थी। ठक्करबापा अिनके सपर्कमे आये और अुनकी कार्यपद्धतिका अवलोकन करनेका अुन्हे मौका मिला। अुस समय शिन्देजीने ठक्कर साहबको गुजरात-काठियावाडके हरिजनोके लिअे पाठशालाअे शुरू करनेकी प्रेरणा और सूचना दी और अिस दिशामे किसी मददकी जरूरत हो तो मदद देनेकी भी अिच्छा प्रगट की।

अिस सबधमे शिदेजीको श्रद्धाजलि अर्पित करते हुअे बापा लिखते है, "वे मेरे चार गुरुओमें से दूसरे गुरु थे और अपने पिताके बाद सार्वजनिक सेवाका कार्य मैने अुनके चरणोमे बैठकर सीखा है। अुम्रमे वे मुझसे छोटे थे तो भी राष्ट्रहितके कार्योके अध्ययनमे वे मुझसे कही आगे बढे हुअे थे। बम्बअीकी तरफ दलित जातियोके कल्याणकी हलचलके वे पिता थे।

" १९०६–७ के अर्सेमे जब मै बम्बअी म्युनिसिपैलिटीकी नौकरीमे था और मेरे नीचे २०० से ३०० तक अछूत, महार और माग जातिके नौकर मैला अुठानेके कामसे भी गदा कचरा अुठानेका काम कर रहे थे, तब अुन्होने मुझे यह पाठ पढाया था कि अिन ढेढ-भगियो और माग-महारोके बच्चोके लिअे पाठशालाअे कैसे चलाअी जाय और अुन्हे अधिक अधिकार कैसे दिलवाये जाय।

"और जब १८८८ के बबअी म्युनिसिपल कानूनमे अेक जाब्तेकी भूल रह जानेके कारण मेरी शुरू की हुअी हरिजन पाठशालाके लिअे सहायता स्वीकृत नही हो रही थी, तब अुन्होने म्युनिसिपैलिटीके किसी सदस्य-मित्र द्वारा अुस पाठशालाके खर्चेका प्रबध भी करवा दिया था।"

और काम करते-करते जैसे वे शिन्देजीके ससर्गमे आये, अुसी तरह काम करते-करते वे देवधर दादाके सपर्कमे भी आये। ठक्करबापा अिन्हे

अपना तीसरा गुरु मानते है। भारत-सेवक-समाज नामक सस्थासे जानगारी तो अुन्हे अुसकी स्थापना हुअी तभीसे थी। फिर, अुस सस्थाके प्रति अुनके मनमे सम्मान और आकर्षण भी बहुत समयसे पैदा हो गया था। जिसलिअे वे अुसकी बबअीकी शाखामे समय समय पर जाते और मुख्य कार्यकर्ताओ और सेवकोसे परिचय बढाते। जिन सेवकोमे देवधर दादाका नाम मुख्य था। वे समाज सेवाके काममे गहरी दिलचस्पी रखते थे। अर्थशास्त्रके बडे अभ्यासी थे। बारह-पन्द्रह घटे तक सतत काम करने पर भी वे थकते नही थे। पूनामे अुन्होने सेवा-सदनकी स्थापना की थी और अुस सस्थाको विकसित किया था। ठक्करबापाको हरिजनोके लिअे पाठशाला चलानेकी प्रेरणा और प्रवृत्तिका श्रेय जैसे शिदेजीको था, वैसे ही अुनकी ऋण-मुक्तिकी योजनाको अमलमे लानेकी प्रेरणाका श्रेय देवधर दादाको था।

अिसी अर्सेमे वे अपने चौथे गुरु प्रो० धोडो केशव कर्वेके अधिक निकट परिचयमे आये।

अेक तरफ ठक्कर साहब दलित वर्गके लोगोसे सपर्क बढा रहे थे और अुनकी सेवा द्वारा सुख और सतोष अनुभव करते थे, तो दूसरी ओर घरकी चिन्ता अुन्हें घेर रही थी। अुनकी पत्नी श्रीमती जीवकोरकी तबीयत पहलेसे ही नरम-गरम रहती थी। वह अब तेजीसे बिगडती जा रही थी। पहले प्रदर, फिर सिर-दर्द, बादमे हिस्टीरिया और जिस तरह करते करते बारीक बुखार और क्षयकी शुरुआत हो चुकी थी। शुरूमे ठक्कर साहब अकेले रहते थे, तब अुन्हे काफी असुविधा रहती थी। पत्नी जीवकोरको अकेली छोडकर अुन्हे नौकरी पर जाना पडता था। परतु बादमे अुनके छोटे भाअी और विधवा भाभी आ गये थे। अिस प्रकार जब ठक्कर साहबके कौटुम्बिक सुख-दु खके दिन बीत रहे थे, तब नौकरीमे अुन्हे तेजीसे तरक्की मिलती जा रही थी। बबअी आनेके बाद पहले ही सालमे अुन्होने अपने अूपरके अधिकारी पर बहुत अच्छी छाप डाली थी। अिनकी व्यवस्था-शक्ति, कायदेसे काम करनेका ढग, अुद्यमशीलता और प्रामाणिकता हर काममे दिखाअी देने लगी थी। यह सब देखकर वे अितने खुश हुअे कि अुन्हे चेम्बूर रेलवेके निरीक्षक-पदसे हटाकर रोड विभागमे ज्यादा अच्छी जगह पर रख दिया और अुनका वेतन सौके बजाय दो सौ कर दिया गया। जिसके बाद तीसरे वर्षमे ही वह बढकर तीन सौ हो गया। बबअीकी सडकोके अुच्च अधिकारीके रूपमे अुनकी नियुक्ति की गअी। वेतनके सिवाय अुन्हे सवारी भत्तेके ६० रुपये मासिक मिलने लगे। जिस प्रकार श्री ठक्करकी अेकाअेक बढती होती देखकर सारी म्युनिसिपैलिटीके दफ्तरमे खलबली

मच गअी। कुछ म्युनिसिपल कर्मचारी तो सीनियॉरिटीका दावा पेश करके अुच्चाधिकारीके पास शिकायत तक ले गये। परतु अुसने साफ कह दिया कि ठक्कर ही अिस जगहके लिअे अधिक योग्य है। सीनियॉरिटीमे मेरा विश्वास नही है। मुझे तो ठोस काम चाहिये।

और कामके ठोसपनके बारेमे तो ठक्कर साहबके विरोधी भी कोअी छोटीसी भूल तक नही बता सकते थे। ठीक समय पर वे काम पर जाते और पहले दिन नोट किया हुआ काम समय पर पूरा करते। वे म्युनिसिपैलिटीकी नौकरी करते थे, परतु अपना तमाम काम फर्ज समझकर करते थे। अुनके समयमे बम्बअीकी सडके सुधरी, काम भी अच्छा हुआ और रास्तो पर काम करनेवाले अछूतो और भगियोकी स्थिति भी किसी अशमे सुधरी। अिस ओहदे पर रहकर अुन्होने कोअी दस वर्ष काम किया, पर अिन दस वर्षोमे अेक भी रिश्वत लेने या पैसा खानेकी घटना अुनके हाथो नही हुअी। म्युनिसिपैलिटीमे अुनके हाथसे हर साल दसेक लाख तककी बडी रकम खर्च होती थी। वे चाहते तो लाख दो लाख रुपया आसानीसे मार खाते। परतु अुनके हृदयकी मानवता नष्ट नही हुअी थी। अुनका अन्त करण जाग्रत था। रुपयेके या किसी और लालचमे पडनेके बजाय वे अीमानदारीसे अपना फर्ज पूरा करते थे। अिसमे वे किसीके प्रति पक्षपात या द्वेष प्रगट नही करते थे। न्याय और नीतिसे काम लेते थे।

अिस समयकी अुनकी सचाअी और अीमानदारीकी अेक-दो घटनाओका अुल्लेख कर दे।

बबअीके किसी रास्ते पर म्युनिसिपल फुटपाथ पर बैठकर अेक आदमी फल-मेवे बेचता था। यह सर्वथा अनुचित ओर गैरकायदे काम था। अिसलिअे ठक्कर साहबकी तरफसे अुसे मनाही कर दी गअी। अुसी दिन शामको ठक्कर साहबके घर अुस मेवा बेचनेवालेने नारगी, मोसम्बी और सेबका टोकरा और मेवेकी टोकरी भेज दी। साथमे थोडेसे चादीके बर्तन भी थे। ठक्कर साहबने शामको घर लौटने पर यह सब देखा ओर घरके लोगोसे पूछा कि ये टोकरे कहासे आये? घरके लोगोने कहा कि पता नही, परतु कोअी फल-मेवेका व्यापारी यहा आया और आपका नाम लेकर यह सब दे गया। ठक्कर साहब समझ गये। वे घरवालो पर नाराज हुअे और तुरत मजदूर बुलवाकर सब टोकरे-टोकरिया अुस मेवेवालेकी दुकान पर वापस भिजवा दिये और फिर कभी अैसा न करनेकी अुसे सूचना कर दी।

अिसी प्रकार अेक ठेकेदार अुन्हे चादीके बर्तन भेट करने आया था। अुसे भी अुलहना देकर ठक्कर साहबने वापस भेज दिया।

ठक्कर साहबको घूस और रिश्वतका बेअीमानीका रुपया लेने पर तो घोर आपत्ति थी ही, परन्तु अपनी प्रामाणिकता और कार्यक्षमताके परिणाम-स्वरूप अुनकी जो कमाअी बढ़ रही थी अुसकी ओर भी वे लापरवाह और अुदासीन बनने लगे थे। लक्ष्मी अुनके पैरोंमें लोटने जा रही थी, परन्तु ठक्कर साहब अुसे ठुकरा रहे थे। क्योंकि वे किसी और आराध्य देवकी अुपासना कर रहे थे।

अिस सिलसिलेमें अेक छोटीसी घटनाका अुल्लेख कर दें। बम्बअीमें जब अुनकी कारगुजारी तेजीसे आगे बढ़ रही थी, तब दूसरी ओरसे अुनके लिअे खींचतान शुरू हो गअी थी। पोरबन्दर राज्यमें अुन्हें कअी बार बबअीसे अिंजीनियरी कामोंमें सलाह-मशविरेके लिअे बुलवाया जाता था। अुनकी सलाह अितनी ज्यादा कीमती साबित होती थी कि अुस समयके अेडमिनिस्ट्रेटर श्री वाजसूरवाला दरबारने स्पष्ट देख लिया कि अुनकी स्थायी अुपस्थिति पोरबन्दरमें ही रहे तो राज्यको बड़ा फायदा हो। अिसलिअे अुन्होंने अिन्हें ५०० रुपये वेतन पर पोरबन्दर आनेका प्रस्ताव किया। और अितने पर भी जब वे न माने तो यह असाधारण प्रस्ताव भी रख दिया कि 'वेतनका जो अंक आप लिख दें वही मंजूर है।' और अिन्हें खींचनेका प्रयत्न किया।

परंतु अिनका मन वेतन और तरक्कीकी तरफ न झुककर किसी और ही दिशामें खिंच रहा था और परिस्थितियां भी अिन्हें अुसके लिअे तैयार कर रही थी।

अुनकी पहली पत्नीका स्वास्थ्य बहुत ही बिगड़ गया था। जिसलिअे देखभाल और जलवायु परिवर्तनके लिअे अुन्हें देशमें भेज दिया गया। परन्तु वे अधिक समय नहीं जी सकीं। सन् १९०९में भावनगरमें ही अुनका देहान्त हो गया। ठक्कर साहबके भाअी मणिलाल अेक वर्ष पहले ही गुजर गये थे और अपने पीछे २४ वर्षकी विधवा पत्नी और दो लड़कियां छोड़ गये थे। विठ्ठलदास ठक्करने भी कभीसे कामकाज छोड़ दिया था। वे अपना सारा समय जातिसेवा और अीश्वर-भजनमें लगा रहे थे। अुनके तप और पुरुषार्थसे भावनगरमें लोहाणा जातिके बच्चोंके लिअे विद्योत्तेजक कोष और छात्रालय अच्छी तरह विकास पा चुके थे। छोटे भाअी केशवलाल ठक्कर डॉक्टरीकी परीक्षामें पास होकर सौराष्ट्रके अलग अलग राज्योंमें नौकरी कर रहे थे। सबसे छोटे भाअी नारायण बबअीमें ठक्कर साहबके साथ रह कर कालेजमें अध्ययन कर रहे थे। माता मूळीबा काफी वृद्ध हो गअी थी और आंखोंमें मोतियाबिन्द हो जानेसे बिलकुल अंधी हो गअी थीं। बड़ी बहन विधवा हो गअी थी और भावनगरमें मां-बापके साथ ही रहती थी।

जीवनकी अिस धूपछाव और कुटुम्बके जजालोके वीच ठक्कर साहवका मन दूसरी दिशामे अधिकाधिक खिचता रहता था। दूसरी तरफ अिनकी पहली पत्नीके गुजर जाने पर विट्ठलदास ठक्कर अिन्हे दूसरी वार व्याहनेकी तैयारी कर रहे थे। ठक्कर साहवने शुरूमे तो अिन्कार कर दिया, परतु जव पिताका आग्रह देखा और परिवारका वहुत दवाव पडा तो कुछ पिताके आग्रहके वश और कुछ अपनी भीतरी अिच्छाके अधीन होकर अेक वरस वाद अुन्होने हा कह दिया और राजकोटके गणात्रा कुलकी कन्याके साथ विवाह कर लिया। यह विवाह, जैसा कि ठक्कर साहवने कहा, अनेक कारणोसे, खास तौर पर दोनोके वीच अुम्रके फर्कके कारण, सुखी सावित नही हुआ। अिस पत्नीका स्वास्थ्य भी अच्छा नही रहा। थोडे समय अुन्हे राजकोटके वेस्ट अस्पतालमे रखा गया, परतु शादीके वाद कोअी डेढ वर्षमे ही वे भी गुजर गअी। अिस प्रकार गृहस्थ जीवनकी अेकके वाद अेक मजवूत गाठे छूटती जा रही थी और ठक्कर साहवको भावी जीवनके लिअे तैयार कर रही थी। अिस अर्सेमे देवधर दादाके साथ अुनका सपर्क वहुत ही गाढ हो गया था और सोसायटीमे अिनका आना-जाना भी खूव वढ गया था। रोज शामको नौकरी पूरी करनेके वाद वे नियमित रूपसे भारत सेवक समाजके दफ्तरमे जाते और वहा देवधर दादाके साथ अछूतोद्धार, दलित-सेवा, म्युनिसिपैलिटीके भगी लोगोकी ऋणमुक्ति वगैरा सवालो पर चर्चा करके विचारोका आदान-प्रदान करते थे। अिस अर्सेमे अुन्होने देवधर दादासे सेवाके वहुतसे पाठ सीखे। धीरे-धीरे अुनका अन्तर सेवामय वनता गया। अपनी आयमे से आधी रकम अर्थात् लगभग १५० से अधिक रुपये तो वे अलग अलग लोकोपयोगी सस्थाओको दानके रूपमे भेज देते थे। घरका प्रवध अुस समय छोटे भाअी नारायणजीके हाथमे था। अुन्होने अिन्टर सायन्समे फेल हो जानेसे पढाअी छोड दी थी और वम्वअीकी अेक पाठशालामे शिक्षकका काम कर रहे थे। अुनकी आय और ठक्कर साहवके वेतनमे से दान देनेके वाद वचे हुअे डेढ सौ रुपयेसे घरका खर्च चलता था। हर महीने वेतन मिलता कि तीन चार दिनमे ही भिन्न भिन्न सस्थाओको जो मदद देना तय किया हुआ था, अुसके अनुसार मनीआर्डरसे रुपये भेज देनेकी हिदायत नारायणजीको पहलेसे ही अुन्होने कर दी थी और तदनुसार अिस सूचना पर वरावर अमल हो जाता था।

अिस प्रकार नौकरी करते करते अेक तरफ अपनेको खपाकर सेवा करते और दूसरी तरफ अपनी कमाअीमे से पाअी-पाअी वचाकर आधा हिस्सा सार्वजनिक सस्थाओको दानके रूपमे दे देते थे। फिर भी अुनके अतरको सतोष

नही हो रहा था। अुन्हे अैसा लगता था कि अब भी कोअी चीज अधूरी है। देशकी दारिद्र्यपूर्ण स्थितिको देखते हुअे देशके काममे चौबीसो घटे लगे रहनेवाले सेवकोकी जरूरत ठक्कर साहबको अनिवार्य प्रतीत होने लगी थी। और अिसलिअे कुटुम्बकी जिम्मेदारीसे मुक्त होकर भारत सेवक समाजके सेवकोकी तरह चौबीसो घटे सेवामे लगे रहनेकी वृत्ति दिनदिन बलवती बनती जा रही थी। अिसलिअे अेक दिन पिताको पत्र लिखकर अुन्होने पुछवाया कि, "छोटे भाअी केशवलाल अच्छी तरह अपने धधेमे लग गये है और कुटुम्बका भार अुठाने लायक हो गये है। आप अिजाजत दे तो मै नौकरीके जजालसे छूटकर अपना समय दलितोकी सेवामे बिताअू।"

पिता अितने जड नही थे कि पुत्रकी अिस प्रबल आकाक्षाको न समझते। वे पुत्रकी बाहरी और भीतरी प्रवृत्तिसे पूरे परिचित थे। अुन्होने पुराना और नया जमाना देखा था। और नये जमानेको भी पहचानते थे। फिर, सेवाजीवनका रसानद तो अुन्होने स्वय ही अनुभव किया था। अिसलिअे पुत्रके अिस निर्णयको वे अुदार दृष्टिसे देख सकते थे, अुसकी कद्र भी कर सकते थे। फिर भी अुनकी दृष्टिकी मर्यादा थी। वे जिस युगके प्रतिनिधि थे, अुसकी सीमाअे लाघकर नूतन युगके सेवाक्षेत्रका अेक खास हद तक ही समर्थन कर सकते थे। पुत्र जो कदम अुठाना चाहता था, अुसे वे अनुचित तो कह ही नही सकते थे, परतु अुसका वे भीतरी अुमगसे स्वागत भी नहीं कर सकते थे। साथ ही अुनके अन्तरको यह अच्छा नही लगता था कि अुनका पुत्र अितनी छोटी अुम्रमे सब काम छोडकर केवल सेवाके कार्यमे पड जाय। अिसलिअे अुन्होने जवाबमे लिखा कि, "अभी तो जो काम कर रहे हो वही जारी रखो। जब तक मै जीवित हू, तब तक यह कदम न अुठाना। और अब मै जीनेवाला भी कितने दिन हू? जिन्दगीके अब बहुत वर्ष बाकी नही रहे है।"

अमृतलाल ठक्करने आज्ञाकारी पुत्रके नाते सब्र किया और पिताकी अिच्छाका आदर करके नौकरी पर बने रहे। अिसके बाद थोडे अर्सेमे विट्ठलदास अुनके साथ रहनेको भावनगरसे बम्बअी चले गये। बम्बअीमे अुनके हमजोलिया मित्र थे। अुन्हे थोडे आरामकी जरूरत थी। बम्बअीमे ही अुन्हे लकवेका हमला हुआ और अुन्होने बिस्तर पकड लिया। अमृतलालने अुनकी खूब सेवा-चाकरी की। ठक्करबापाकी विधवा भाभी, जो अभी तक जीवित है, अिस सेवाकी साक्षी है। अुन्होने कहा था कि, "अमृतलाल भाअीने ससुरजीकी खूब ही सेवा की। अुन्हे पक्षाघात हुआ तब अुन्हे सुलाने, अुठाने, खानापीना देने, पैर दबाने, मालिश करने वगैराका बहुतसा काम

अुन्होंने स्वय किया और बापकी सेवाका आनद लिया। अैसा अवसर किसी भाग्यशाली पुत्रको ही मिलता है।"

विट्ठलदास ठक्करका शरीर अब बिलकुल बेकार हो गया था। लकवेने अब अुनकी जबान पर असर कर लिया था और वे साफ बोल भी नही सकते थे। अिस समय अेक अैसी घटना हुअी, जिसने अमृतलाल ठक्करको बडी मुश्किलमे डाल दिया और पिताको दुख न पहुचने देनेके लिअे अुन्हे झूठ बोलने पर मजबूर किया। अिस घटनाने अुनकी काफी परीक्षा ली।

यह घटना लगभग १९१२ के अर्सेमे हुअी थी। बम्बअीके कुछ समाज-सुधारकोकी तरफसे आर्यन-ब्रदरहुड अर्थात् आर्य लोगोके बीच भ्रातृभाव बढानेवाली सस्थाकी ओरसे अेक सहभोजका कार्यक्रम आयोजित किया गया था। अुसमे सभी जातियोंके लोगोको आमत्रण दिया गया था। अमृतलाल ठक्करने भी अुसमे भाग लिया।

गाधीजीके अिस युगमे अिस प्रकारकी सहभोजकी घटना बिलकुल साधारण लगती है, परतु चालीस-पचास वर्ष पहले अैसा नही था। अुस समय जाति-सस्थाअे बडी बलवान थी। अुनकी रीति-नीतिकी अुपेक्षा करनेकी हिम्मत और अपनेसे हल्की मानी जानेवाली जातिके मनुष्यके साथ अेक पगतमे बैठकर खानेका साहस कोअी न करता था। अगर कोअी करता भी तो अुसे जातिसे बाहर निकाल दिया जाता था।

अलबत्ता, अुस समय बम्बअीमे थोडेसे महाराष्ट्रीय और गुजराती सुधारक थे, जो जातिभेदको नही मानते थे। अमृतलाल ठक्कर लोहाणा जातिके तग दायरेको नही मानते थे, यद्यपि जातिकी सेवा करनेको हर क्षण तैयार रहते थे। १९१० के दिसबर मासमे जब बम्बअीमे लोहाणा परिषद् हुअी तब वे स्वागत-समितिके अेक मजबूत कार्यकर्ता थे और परिषद्के लिअे जो बडा मडप खडा किया गया था, अुसका काम अुन्हे सौंपा गया था। अितने पर भी वे जातिकी सकुचित चारदीवारियोको नही मानते थे। दूसरी जातिके लोगोके साथ भोजन-व्यवहार रखा जाय तो भ्रष्ट हो जाते है, अिस बातमे अुनका विश्वास नही था। अिसलिअे अुन्होने आर्यन-ब्रदरहुडकी ओरसे आयोजित भोजन-समारोहमे भाग लिया। साथ ही कच्छी लोहाणा जातिके दो सज्जन, गोपालजी रामजी और माधवजी गोविन्दजी सेठने भी अुसमे भाग लिया। अिस भोजनमें भाग लेनेवालोमे बम्बअीके प्रख्यात हिन्दू क्रिकेटके खिलाडी श्री बालू और अुनके भाअी भी थे। ये अुस जातिके थे, जिसे आजकल 'हरिजन' कहा जाता है। अिस घटनासे

सारी बबओमें खलबली मच गअी। जिन जिन लोगोंने भोजन-समारोहमें भाग लिया था, अुनके नाम दूसरे दिन अखबारोंमें प्रकाशित हुअे। जिनमें लोहाणा जातिमें खलबली मच गअी। तुरत ही सभा बुलाअी गअी। साप्ताहिक 'गुजराती' पत्रमें खानेवालोंकी सख्त खबर ली गअी और अुनके विरुद्ध कार-वाअी करनेका हिन्दू जातियोंकी पंचायतोंमें अनुरोध किया गया। पंचायतें भी अिस खबरसे गुस्सेमें भड़क अुठीं। अुन्होंने अपराधियोंका न्याय करने और दण्ड देनेका निश्चय किया। जिन जिन लोगोंने प्रीतिभोजमें भाग लिया था, अुन्हें पंचायतके सामने बुलाया गया। अमृतलाल ठक्करने भी घोघारी लोहाणा पंचायतके पंचोंके समक्ष अुपस्थित होनेको कहा गया। अेक सयानी जातिबंधुने अुन्हें यह कहकर भुलावा दिया कि पंचोंके सामने केवल मुंह दिखा आना है और २५-३० रुपयेके जुर्मानेसे सब निपट जायगा।

भुलावेमें आये हुअे ठक्कर साहब जातिके पंचोंके सामने हाजिर हुअे। पंचोंने फैसला सुनाया "अस्पृश्य मनुष्योंके साथ भोजन करनेके लिअे अनिवार्य प्रायश्चित्त और अूपरसे डेढ सौ रुपये जुर्माना।

"प्रायश्चित्त करो और जुर्माना चुकाओ, नहीं तो सारा कुटुम्ब जातिसे बाहर कर दिया जायगा।"

ठक्कर साहबने चुपचाप फैसला सुन लिया और बाहर निकले। अुस दिन अुन्होंने बहुत मनोव्यथा भोगी। जब वे पंचायतसे बाहर निकले तब अुनका सिर चकरा रहा था। बाहर आकर मनको शान्त किया और बादमें विचार करने लगे कि क्या करूं?

प्रीति-भोजन करके पापका काम तो किया नहीं, अुल्टे सुधारका कदम ही अुठाया है। परन्तु पिता बिस्तर पर पड़े हैं। जाति बाहर हो जाअूंगा तो अुनकी श्मशान-यात्रामें कोअी नहीं आयेगा। पिताको मालूम होगा तो अुनके दिलको बहुत बड़ा धक्का लगेगा। और अीश्वर न करे, यदि अुन्होंने प्राण छोड़ दिये तो मुझे जीवन भर अफसोस रह जायगा।

अेक तरफ यह भावना बोल रही थी कि पिताका जी अुनके जीवनके अंतिम क्षणोंमें न दुखाया जाय, अुनके मन्तव्योंके विरुद्ध आचरणकी जानकारी करा कर अुन्हें आघात न पहुंचाया जाय। दूसरी तरफ अुन्हें विश्वास था कि सही बात तो यही है। अिस प्रकार कुटुम्बनिष्ठा और सत्यनिष्ठा, पितृप्रेम और सत्यप्रेमके बीच अुनके मनमें घमासान छिड़ गया और अन्तमें कुटुम्ब-प्रेम और पितृभक्तिने सत्य पर विजय प्राप्त की। अुपनिषदोंके वचना-नुसार पिताके प्रति मोहके सुवर्ण पात्रने सत्यका मुख ढंक गया। अुन्होंने

पचोका निर्णय शिरोधार्य किया। डेढ सौ रुपया जुर्माना अदा कर दिया और प्रायश्चित्तकी क्रिया करके दाढी-मूछ मुडवा ली।

वह दिन ठक्कर साहबने गमगीनीमे बिताया। दाढी-मूछ मुडवाकर घर आये तब पिताने अुनकी तरफ देखकर बाल अुतरवानेका कारण पूछा, तो अुन्हे अेक असत्य छुपानेके लिअे दूसरे असत्यका आश्रय लेना पडा। अुन्होने अुत्तर दिया, "ससुरालमे किसीकी मौत हो गअी है। अिसलिअे दसवेके बाल अुतरवाये है।"

अिस प्रकार ठक्करबापाने अधेड अुम्रमे पिताके प्रति मोहके कारण जो भूल की, अुसका सच्चा प्रायश्चित्त तो अुन्होने लोहाणा जातिसे हल्की ही नही परन्तु अतिम और नीची मानी जानेवाली हरिजन जाति और भीलोकी आजीवन सेवाका व्रत लेकर किया। और अुनका कीर्ति-सूर्य अैसा चमका कि खुले आम ढेढ, भगी, हरिजन और आदिवासियोके साथ रहने और भोजन करने पर भी अुन्ही जातिके पचोने आगे चलकर बापाका बडा सम्मान किया और यह घोषणा की कि हरिजनो तथा भीलोकी सेवा करनेके लिअे लोहाणा जातिने ठक्करबापा जैसे समर्थ पुरुषको जन्म दिया, अिसके लिअे जाति अभिमान और गौरव अनुभव करती है। और बापाको बम्बअीकी कच्छी, घोघारी और हालाअी तीनो जातियोकी तरफसे सम्मिलित अभिनदन-पत्र दिया गया।

अुपरोक्त घटनाके थोडे ही समय बाद विट्ठलदास ठक्कर १९१३ मे गुजर गये। अुनके जाते ही गृहस्थजीवनकी जो आखिरी गाठ अब तक अमृतलाल ठक्करको जकडे हुअे थी वह भी छूट गअी। और अुन्होने कुटुम्बके जजाल और जिम्मेदारीसे मुक्त होकर वसुधारूपी परिवारकी सेवा करनेके लिअे महाभिनिष्क्रमणकी तैयारी की। अपने अिस कदमके बारेमे अुन्होने अपने छोटे भाअी डॉ० केशवलाल ठक्करको भी जानकारी दी। डॉ० केशवलाल, जो सौराष्ट्रके देशी राज्योमे नौकरी करते थे, अिस सम्बन्धमे बडे भाअीसे बातचीत करने और हो सके तो यह निर्णय कुछ वर्ष और मुलतवी करनेको समझानेके लिअे बम्बअी गये। बम्बअीके पालवा बदर पर दोनो भाअी अकेले घूमने गये, तब डॉ० केशवलालने अिस प्रश्नकी चर्चा शुरू करके कहा

"बडे भैया, पाच साल और ठहर जाय तो क्या बेजा है? पाच वर्षमे नौकरीके पद्रह साल पूरे हो जायगे। आपको अेक तिहाअी पेन्शन मिल जायगी। फिर आप गुजारेके लिअे किसीके अधीन रहे बिना स्वतन्त्रतासे सेवाकार्य कर सकेगे।"

छोटे भाओीका हिसाबी मस्तिष्क अुन्हे अिस ढगसे समझा रहा था। अुनका हिसाब यह था कि बडे भाओी अितने वर्ष नौकरीमे बने रहे, तो पासमे थोडी पूजी अिकट्ठी हो जाय और स्थायी पेंशन मिल जाय, ताकि अुन्हे किसीके सामने अपने गुजरके लिअे हाथ फैलानेकी जरूरत न रहे। परन्तु बडे भाओी अमृतलाल ठक्करका हृदय दूसरी ही योजना बना रहा था। अुन्होने बम्बअीके पालवा बन्दरके समुद्रकी ओर देखकर कहा, "पाच वर्ष? पाच वर्षमे तो कितना काम हो सकता है? पाच वर्ष तक बाट देखना अब असभव है। सकल्प करनेके बाद छ वर्ष तो मैने सब्र किया, क्योंकि पिताजीका जी नही दुखाना था। परन्तु अब तो पिताजी चले गये है। अब मुझे पाच सालका समय नही गवाना है।"

यह अुनका अचल और अतिम निर्णय था। जिसमे परिवर्तन नही हो सकता था। अन्तमे १९१३ के दिसम्बर मासमे सब तैयारिया हो गअी और बम्बअीका घर समेट लिया गया। परिवारकी सारी व्यवस्था सोच ली गअी। अुनके पाच भाअियोमे से दो तो गुजर गये थे और दूसरे तीन भाओी अपने-अपने धधोमे अच्छी तरह जम चुके थे। बडे भाओी परमानन्द ठक्कर शिक्षकके रूपमे और डॉ० केशवलाल ठक्कर काठियावाडके अलग-अलग राज्योमे डॉक्टरी अधिकारीकी हैसियतसे काम कर रहे थे। नारायणजी भी बम्बअीमे साथ रहकर शिक्षकके तौर पर काम कर रहे थे। बम्बअीका रहनेका बडा मकान छोड दिया गया, जिसलिअे वे छोटी कोठरी किराये लेकर अुसमे रहने चले गये। बाकी रही भाओी मणिलालकी विधवा पत्नी विजुबहन। अुन्हे वनिता-विश्राममे भेजनेकी व्यवस्था की गअी। फिर १४ जनवरीको म्युनिसिपैलिटीकी नौकरीमे त्यागपत्र दिया। यह त्यागपत्र वापस लेनेको म्युनिसिपल अधिकारियो और अूपरके अफसरोने बापाको बहुत समझाया। नौकरी द्वारा जिन म्युनिसिपल हरिजन कर्मचारियो और दूसरे लोगोकी वे सेवा कर रहे थे, अुन लोगोने भी अुनसे खूब विनती की। परन्तु ठक्कर साहबने अुन्हे अपनी बात समझाकर कहा कि भविष्यमें तुम्हारी अधिक अच्छी सेवा कर सकू, अिसीलिअे मै जा रहा हू।

म्युनिसिपल विभागके सारे लोगो पर श्री ठक्कर साहबका यह आत्म-समर्पण जादूका-सा असर कर गया। जो ठक्कर साहबकी बदतीसे अपने हक मारे गये समझकर अुनसे द्वेष करते थे, वे भी अुनके बारेमे ओछे विचार रखनेके लिअे पश्चात्ताप करने लगे और मनमें और प्रगट रूपमें अुन्हे हजारो धन्यवाद देने लगे। म्युनिसिपल कर्मचारियोने अुन्हे विदाअी-सम्मान दिया। गुजराती लोगोकी तरफसे भी अुनके मान-सम्मानकी जितनी होड

होने लगी और समारोह अितने बढने लगे कि अुन्होने डॉ० केशवलाल ठक्करको अेक बार अेक पत्रमे लिखा था, "मेरा खयाल है कि मै यहा ज्यादा समय रहूगा तो बिगड जाअूगा।"

अिस तरह ठक्कर साहब आखिर म्युनिसिपैलिटीकी नौकरी छोडकर सेवा-जीवनकी दीक्षा लेनेको तैयार हुअे।

१०

दीक्षा

ठक्कर साहबने भारत-सेवक-समाजमे शरीक होनेका जो निर्णय किया था, वह अकेले नही परन्तु अपने पुराने मित्र डॉ० हरि श्रीकृष्ण देवके साथ किया था। और दोनोने अेक ही साथ आवेदनपत्र भेजे थे। अितना ही नही, परन्तु ठक्कर साहबका प्रार्थनापत्र भी अुनकी तरफसे डॉ० देवने ही लिख दिया था।

डॉ० देवका भारत-सेवक-समाजके अध्यक्ष श्री गोखलेजीके साथ बडा पुराना सम्पर्क था। साथ ही गोखलेजी यह भी जानते थे कि अुनकी समाजके सदस्य होनेकी अिच्छा बहुत वर्षोसे थी। १९१० के वार्षिक अधिवेशनमे दिये गये व्याख्यानमे अुन्होने अिसका अुल्लेख करके कहा था कि थोडे समयमे दक्षिण महाराष्ट्रके अेक सज्जनके हमारे समाजमे जुडनेकी सभावना है।

यह सभावना अन्तमे १९१४ मे सफल हुअी और २१ जनवरीको डॉ० हरि श्रीकृष्ण देवने भारत-सेवक-समाजके अध्यक्षको समाजमे भरती होनेके बारेमे पत्र लिखा। ठक्कर साहब अुस समय थोडे सकोचशील स्वभावके होने चाहिये, अिसलिअे समाजमे शामिल होनेका निर्णय करनेके बाद भी यह अिच्छा गोखलेजी पर प्रगट करनेका पत्र स्वय न लिखकर डॉ० देवसे लिखवाया। डॉ० देवके लिखे हुअे वे दोनो पत्र अिस प्रकार है

"पूना शहर,
२१ जनवरी, १९१४

"प्रिय महोदय,

"पिछले कुछ वर्षोसे आप मुझे जानते है। मै बम्बअी विश्वविद्यालयका अेल० अेम० अेण्ड अेस० हू। अब तक सागली राज्यमे मुख्य डॉक्टरी अधिकारी था। अुस अधिकार-पदसे हाल हीमे त्यागपत्र दिया है। मै भारत-

मेवक-ममाजमे भरती होनेको अुत्सुक हू। मुझे यदि ममाजमे दाखिल कर लिया जाय तो अुसके सभी मौजूदा नियमोको मानना मै स्वीकार करता हू। अितना ही नही, समाजकी कौंसिल समय-समय पर जो भी नियम बनायेगी, वे भी सब मुझे मजूर होगे। ममाज देशकी मेवा करनेका जो लक्ष्य रखेगा और अुसके कार्यको आगे बढानेके लिअे मुझमे जो भी अुत्तमसे अुत्तम शक्ति होगी — और मै जहा तक जानता हू वह बहुत थोडी है — वह लगा दूगा।

आपका
ह० श्री० देव"

ठक्कर साहबकी तरफसे लिखा गया पत्र

"प्रिय महोदय,

"बम्बअी म्युनिसिपैलिटीके रोड सुपरिटेन्डेन्ट श्री अे० वी० ठक्करने समाजमे भरती करनेके सिलसिलेमे अपनी तरफसे आपको प्रार्थनापत्र लिखनेका मुझसे कहा है। समाजके सभी नियम वे स्वीकार करते है। अुनका नियमानुसार आवेदनपत्र अेक-दो दिनमे आपको मिल जायगा। श्री ठक्करने बम्बअी म्युनिसिपैलिटीके रोड सुपरिन्टेन्डेन्टकी जगहसे अिस्तीफा दे दिया है और वे १ फरवरी, १९१४ को मुक्त हो जायेगे।

आपका
ह० श्री० देव"

गोखलेजीको ये पत्र लिखे सो तो नियमानुसार थे। परन्तु अिससे कुछ दिन पहले ही यह बात श्री देवने अुन्हे बता दी थी। ठक्कर साहबको अिस बारेमे थोडी शका थी कि अुन्हे भारत-सेवक-समाजमे भरती करेगे या नही। अिसलिअे पहले अुन्होने डॉ० देवसे यह कहा था कि समाजको प्रार्थनापत्र दिया जाय और यदि वह स्वीकार हो जाय तो तुरन्त ही त्यागपत्र दे दिया जाय। परन्तु मान लीजिये प्रार्थनापत्र स्वीकार न हो तो फिर नये सिरेसे नौकरी करने कहा जाय? अिसलिअे प्रार्थनापत्रका परिणाम निकलने तक अुसे जारी रखा जाय और म्युनिसिपैलिटीमे लम्बी छुट्टी ले ली जाय। परन्तु गोखलेजी कच्ची मिट्टीके आदमी नही थे। समाजमे अेक अेक सेवकको भरती करनेसे पहले अुसकी पूरी परीक्षा कर लेते थे। वे ठोक बजाकर आदमी पसन्द करते थे। अिसलिअे अुन्होने राय दी कि समाज अुन्हे भरती करे या न करे तो भी यदि भरती होनेकी अिच्छा हो और मनका सकल्प हो तो पहलेसे ही म्युनिसिपैलिटीसे अिस्तीफा दे देना चाहिये। अुसके बाद ही

भरती होनेके लिअे दूसरा कदम अुठाया जा सकता है। ठक्कर साहबने यह बात भी मजूर कर ली और पहलेसे ही म्युनिसिपैलिटीकी नौकरीसे अिस्तीफा देनेका खतरा अुठाया। और जैसा अूपर कहा जा चुका है, डॉ० देव द्वारा पत्र लिखवाया और बादमे बाकायदा अर्जी दी।

अुस समय अत्यन्त सेवाभावी, शिक्षित और अुपाधिधारी युवकोको ही समाजमे भरती किया जाता था। ठक्कर साहबमे सेवाभाव भरपूर था, यह बात तो साबित हो चुकी थी। वे पढे-लिखे और डिग्रीधारी थे, अिसमे भी कोअी कहनेकी बात नही थी। परन्तु अुनकी अुम्र अुस समय ४५ वर्षकी थी। अध्ययनकालके बाद अुन्होने अिक्कीस वर्ष तो भिन्न भिन्न नौकरियोमे बिताये थे। अिस प्रकार वे लगभग पेन्शन लेनेकी अुम्रके नजदीक पहुच गये थे। अैसी अधेड अुम्रमे पहुचे हुअे मनुष्यका भारत-सेवक-समाजमे कैसे मेल बैठ सकेगा? ये काम देगे भी तो कितना देगे? जवानोमे जो अुत्साह, चपलता और अथक काम करनेकी शक्ति होती है, वह सब अिस पैतालीस वर्षकी अुम्रमे पहुचे हुअे आदमीमे कैसे हो सकती है? समाजका कडे नियमोवाला कठोर जीवन ये बिता सकेगे? अिस प्रकारकी शका समाजके कुछ प्रमुख सदस्योको हुअी थी, खास तौर पर श्रीनिवास शास्त्रीको, जिन्होने ठक्कर साहबको पहले कभी देखा नही था और न अुन्हे अुनका प्रत्यक्ष परिचय ही था। अिसीलिअे अुन्होने ठक्कर साहबको समाजमे भरती करनेके बारेमे अपनी शका प्रगट की थी।

भारत-सेवक-समाजके नियमानुसार जो भी नया आदमी अुसमे प्रविष्ट होनेके लिअे प्रार्थनापत्र देता, अुसका विचार समाजकी व्यवस्थापक समिति (कौसिल) मे होता था। और यह अपेक्षा रखी जाती थी कि अुस समय तमाम सदस्य अुपस्थित रहे। श्रीनिवास शास्त्री भी अुस दिन मौजूद रहे होते। परन्तु कोअी अनिवार्य कार्य होनेसे वे न आ सके, अिसलिअे पत्र लिखकर अुन्होने अपनी राय गोखलेजीको भेज दी। अुसमे, जैसा अूपर बताया गया है, ठक्करको अितनी बडी अुम्रमे दाखिल करनेके विषयमे शका और भय व्यक्त किये गये थे। परन्तु मनुष्य-परीक्षाके अुत्तम निष्णात गोखलेजीको ठक्कर साहबकी योग्यताके बारेमे जरा भी शका नही थी। अुन्होने अिनका तेज अच्छी तरह परख लिया था। अिसलिअे शका और भयका निराकरण करनेवाला अेक पत्र अुन्होने शास्त्रीजीको लिखा। अुसमे थोडेसे शब्दोमे यह बता दिया कि ठक्कर किस मिट्टीके बने हुअे आदमी है। अुसमे गोखलेजीकी मनुष्यको परखनेकी शक्ति और ठक्कर साहबकी अुच्च कोटिकी गुणवत्ताके अेक साथ दर्शन होते है। अिस पत्रमे अुन्होने लिखा था

"मि० ठक्करके सम्बन्धमे बताअू तो वे बम्बअी म्युनिसिपैलिटीके सबसे शक्तिशाली अधिकारियोमे से अेक है। यह बात निश्चित है कि वे अपनी वर्तमान ३६० रुपये मासिककी जगहमे भी कही अूचे पद पर पहुच सकते है। साथ ही हमारी बम्बअीकी कुछ प्रवृत्तियोमे वे पिछले दो सालसे श्री देवधरके साथ काम करते रहे है। और यह सब अतिरिक्त कार्य वे म्युनिसिपल अधिकारीकी हेसियतसे कामका भार ढोते ढोते करते रहे है। अिस बातमे आपको सन्तोष होना चाहिये। अिनमे अेक साधारण मनुष्यकी अपेक्षा बहुत अधिक शक्ति है। देवधर अिनके बारेमे बडी अूची राय रखते है। ये डॉ० देवके निकटके मित्र है और दोनोने अेक साथ समाजमे शरीक होनेका निर्णय किया है। दोनोमे से अेकको भी किसी प्रकारका बन्धन नही ह। और दोनो समाजके कार्यमे ही अपना जीवन पूरा करेगे और अपने जीवनकार्यकी छाप अकित करते रहेगे। यदि अुनकी अिच्छा सुखचैनसे जिन्दगी बितानेकी होती, तो वे अपनी अितनी अच्छी आयवाली और सुख-सुविधा देनेवाली नौकरी छोडकर हमारे नाममात्रके वेतन पर काम करने आगे न आये होते। अुन्हे समाजमे दाखिल करते ही दोनोको अलाहाबादमे अकाल-निवारणके कामके सिलसिलेमे भेज देना है। अिससे आपको सन्तोष हो जायगा ओर आपका यह भय और शका मिट जायगी कि वे किसी भी प्रकारके सख्त कामसे पीछे हट जायगे।

" मैं आपको दुवारा अितना बता देना ह कि ठक्करकी श्रेणीके आदमी ही समाजकी प्रतिष्ठा वास्तवमे जमायेगे। वे शक्तिमान, अुत्साही और लगनवाले ही नही है, परन्तु सच्चे नि स्वार्थी और अुदात्त स्वभावके आदमी है। "

अुत्तम जौहरी जैसे हीरेकी परख करता है और अुसका गुणदर्शन दूसरोको कराता है, वैसे ही मनुष्यरूपी हीरेके पारखी गोखलेजी द्वारा ठक्करबापाकी शब्द शब्दमे की गअी यह प्रशसा कितनी सच्ची थी, यह ठक्करबापाके अिसके बादके सैतीस वर्षोके सेवामय और कठोर जीवनने बता दिया है।

अन्तमे ठक्कर साहब और डॉ० देव दोनोने २१ जनवरी, १९१४ को बाकायदा अर्जी दी। अुसी दिन अुनकी अर्जिया मजूर हो गअी ओर सब सदस्योने अिन दोनोको समाजमे भरती करनेका निश्चय किया तथा अिसकी जानकारी भी अुन्हे अुसी दिन करा दी गअी।

यह निर्णय होते ही ठक्कर साहबने बम्बअी आकर अपने भाअियोको समाजमे शामिल होनेके अपने महान निर्णयकी जानकारी देनेवाला विधिवत् पत्र लिखा। यह पत्र अुस समयके अुनके मनोमथनका, सेवाके लिअे अुनकी

अुत्कट अधीरताका, अुनकी सचाअीका और हृदयकी निर्मलताका द्योतक है। सेवाके क्षेत्रमे वहुतसे मनुष्योको प्रेरणा देनेवाला वह अैतिहासिक पत्र यह है (मूल पत्र अग्रेजीमे है।)

"वम्वअी,
ता० २५-१-'१४

"प्यारे भाअियो,

"यह पत्र लिखते हुअे मुझे दु ख हो रहा है, क्योकि मै मानता हू कि अिस समाचारसे तुम सवको वडा दु ख होगा। यह समाचार पहु-चानेका काम किसी अन्य मित्रके हिस्सेमे आया होता तो अच्छा होता। परन्तु यह कडा कर्तव्य अन्तमे मुझीको पालन करना पड रहा है।

"वम्वअी म्युनिसिपैलिटीकी नौकरीसे मैने अिस्तीफा दे दिया हे और अगली दूसरी तारीखसे नौकरीसे मुक्त होकर 'सर्वेन्ट्स ऑफ अिडिया सोसा-यटी' मे शामिल हो जाअूगा। अिस सम्वन्धमे मैने किसीकी सलाह नही ली। मैने केवल अपने अन्तरकी आवाजकी सलाहके अनुसार अपनी अत-रात्माकी आज्ञाका पालन करके यह कदम अुठाया है। शायद अिसमे मैं भूल कर रहा होअूगा, परन्तु वह भूल भी मेरे अन्तरकी आवाजकी ही भूल होगी। कुछ भी हो, परन्तु अिस आवाजकी मै अव ज्यादा अवहेलना नही कर मकता।

"अपनी नोकरीके दौरानमे मुझे अपने मातहत काम करनेवाले लोगोके साथ अपार मुहव्वत हो गअी है। अितना ही नही, मेरी सडके भी निर्जीव होनेके वावजूद मेरे स्नेहकी पात्र वन गअी हैं। मेरे आप्तजनोकी अपेक्षा मुझे अपने अिन आदमिजो और सडकोसे जुदा होते अधिक दु ख हो रहा है। जैसा मेरे अेक सह-कर्मचारीने कल कहा, अैसा लग रहा हे मानो मैं अपने अधीनस्थ सैकडो मनुष्यो और मजदूरोका कोअी अपराध कर रहा होअू। अैसा लग रहा हे मानो मुझ पर ममता वरसाने वाले और मुझे सदा मीठी दुआअे देनेवाले अिन हजारो आदमियोको निराधार वनाकर मै चला जा रहा हू। किसीने यह भी कहा था कि नोकरीके दिनोमे मै अपने दर्जे और प्रतिष्ठाके आधार पर जनहितके जो काम कर सकता हू, वे नौकरी छोडनेके वाद विलकुल नही कर सकूगा।

"यह सव होते हुअे भी मै निश्चयपूर्वक मानने लगा हू कि भारतको आज समग्र जीवन अर्पण कर देनेवाले सेवकोकी जरूरत है, फुरसत या सुविधासे काम करनेवालोकी नही। और जव तक आजीवन कार्य करनेवाले

भारतको नही मिलेगे, तब तक हमारी कोअी प्रगति नही हो सकेगी। सच्चे काम करनेवालोके लिअे रुपयेके तो भडार भरे है। गोखलेजी जैसोके चरणोमे तो हजारो और लाखो रुपयेका ढेर लगता है। अुन्हे सच्चे काम करनेवाले नही मिलते, अिसलिअे सब कुछ छोडकर अिस ध्येयको स्वीकार करनेमे यदि मै भूल भी कर रहा होअू, तो भी वह भूल शुभ अिच्छाओसे और अीमानदारीके साथ कर रहा हू।

"तुम्हारा मुझ पर कुछ लेना हो तो समय पर बता देना, क्योकि मै अब अतिम बार सबके साथ अपना हिसाब कर लेना चाहता हू। अब तक जिन जिन सस्थाओ अथवा व्यक्तियोको सहायता देकर अुपयोगी होनेका मुझे सौभाग्य मिला, वह आजसे खतम हो जाता है, यह तो बिना कहे ही समझ लिया जायेगा।

"अब मेरी अन्तर्व्यथाका अन्त हो रहा है। जीवनमे सभी वियोग दुखदायी होते है, परन्तु मै तुम सबको अुम्दा काम करनेके लिअे छोडकर जा रहा हू और समझता हू कि मुझे तुम सबके शुभाशीष प्राप्त है।

तुम्हारा भाअी
अमृतलाल"

६ फरवरी १९१४ को दीक्षा देनेकी विधि हुअी। भारत सेवक समाजके आद्य सस्थापक श्री गोपालकृष्ण गोखलेजीने श्री अमृतलाल ठक्कर और डॉ० हरि श्रीकृष्ण देवको गभीर वातावरणके बीच नियत की हुअी नीचे लिखी सात प्रतिज्ञाअे लिवाअी

१ मेरे विचारोमे देशका सदा प्रथम स्थान रहेगा। और मुझमे जो कुछ अुत्तम होगा वह मै देशकी सेवामे ही अर्पण करूगा।

२ देशकी सेवा करनेमे मै किसी भी प्रकारका निजी लाभ अुठानेकी कोशिश नही करूगा।

३ मै तमाम भारतवासियोको अपने भाअी मानूगा। धर्म या जातिका भेदभाव रखे बिना सबकी प्रगतिके लिअे मै काम करूगा।

४ मेरे लिअे और मेरा कुटुम्ब हो तो अुसके लिअे भारत सेवक समाज योगक्षेमकी जो व्यवस्था करेगा या जो वेतन निश्चित करेगा अुसीमे मै सन्तुष्ट रहूगा। अपने लिअे रुपया कमानेमे अपनी जरा भी शक्ति नही लगाअूगा।

५ मै पवित्र व्यक्तिगत जीवन बिताअूगा।

६ मै किसीके साथ भी निजी झगडे या टटे-फिसादमे नही पडूगा।

७ भारत सेवक समाजके ध्येयको मै हमेशा अपने ध्यानमे रखूगा और पूरी लगनके साथ अिस सस्थाके हितकी चिन्ता करूगा। अुसके कार्यकी प्रगतिके लिअे करने योग्य सभी कुछ करूगा। मै भारत सेवक समाजके अुद्देश्य और हेतुके तथा ध्येय और राजनीतिके विरुद्ध अथवा अुनके साथ असगत कोअी भी काम नही करूगा।

अिस प्रकार अमृतलाल ठक्करने गोखलेजीके हाथो विधिपूर्वक दीक्षा ली और अुस दिनसे वे वम्वअीका अपने रहनेका मकान छोड कर सोसायटीके मकानमे रहने चले गये।

११

सेवाजीवनका प्रारम्भ

भारत सेवक समाजमे शरीक होनेके वाद ठक्कर साहव प्रथम पाच वर्ष वम्वअीमे ही रहे और देवधर दादाके मातहत अुन्होने सेवाकी तालीम पाअी। वीच वीचमे अकाल और फुटकर कामकाजके लिअे वे महीने दो महीने अथवा चार छ मास प्रवास कर आते, परन्तु वह काम पूरा होते ही वम्वअी वापस आ जाते।

समाजमे शामिल होनेके वाद तुरन्त ही अुन्हे युक्तप्रान्त (वर्तमान अुत्तरप्रदेश)मे अकाल-निवारणके कामके लिअे भेजा गया। अुस प्रान्तमे मथुरा और वृन्दावन जिलोमे अतिवृष्टिके कारण घासचारेका अकाल पड गया था। वहा जाकर ठक्कर साहवने कष्टनिवारणका कार्य व्यवस्थित ढगसे किया। श्री ठक्कर साहवके अलावा समाजके अेक और सेवक श्री कृष्णदास चितलियाको भी भेजा गया था। परन्तु अुन्हे अिस प्रकारके कामका कोअी अनुभव नही था। ठक्कर साहवको भी अकाल-निवारणके कामका विशेष सीधा अनुभव तो नही था, परन्तु अुनके पिता यह काम करते थे जिसकी प्रेरणा और सस्कार अुनके हृदयमे जमे हुअे थे। अिसके अतिरिक्त पोरवन्दरमे जव अिजीनियरका काम करते थे तव छप्पनके अकालके समय नये वदरगाहके पास वाध वनानेका काम पोरवन्दर राज्यने अुन्हे सौपा था। अुस समय वे अकाल-पीडितोके काफी ससर्गमे आये थे और अुनके साथ कैसे काम किया जाय, अिसका प्रत्यक्ष पाठ अुन्हे मिला था। अिसलिअे अुन्हे अैसे कामका प्रवन्ध करनेमे कोअी मुश्किल नही हुअी। मानो यह कला वे विरासतमे ही

लेकर आये हो, अिस तरह सहज ढगसे अुन्होने अिस कामको हाथमे लिया और आसानीसे पूरा किया।

अुनके अिस प्रथम अकाल-निवारण कार्य और अुनकी पद्धतिके सम्बन्धमें श्री चितलिया लिखते हैं

"१९१४ मे गोकुल-मथुरामे घासचारेका अकाल पडा, तब कष्टनिवारण कार्य करनेके लिअे मेरा वहा जाना हुआ। परन्तु अिस किस्मका काम मेरे लिअे बिलकुल नया ही था। फिर भी अिस मामलेमे ठक्करबापा मेरे मार्गदर्शक बने। हमसे काम लेनेका अुनका ढग मुझे बहुत ही आनन्ददायी मालूम हुआ। व्यवस्थित ढगसे और पद्धतिपूर्वक कैसे काम किया जाय और किफायत कैसे रखी जाय, यह सब अुन्होने मुझे प्रत्यक्ष पाठ द्वारा सिखाया, यद्यपि यह सब शुरूमे मेरे कोमल स्वभावको बहुत कठोर मालूम होता था।"

भारत सेवक समाजके अेक जिम्मेदार सदस्यके रूपमे ठक्कर साहबका अकाल-निवारणका यह सबसे पहला काम था। अिसके बाद अुनके हाथो अकाल-निवारणके जो अनेक काम होनेवाले थे, अुनका यह प्रथम अक ही था। धीरे-धीरे अिस कार्यमे वे अितने निष्णात बन गये कि हिन्दुस्तानमे अिसके बादके छत्तीस वर्षोमें शायद ही अैसा कोअी अकाल पडा होगा जहा ठक्कर साहब कष्टनिवारण-कार्यके लिअे न पहुचे हो।

मथुराका काम पूरा करके वे बम्बअी लौट आये और देवधर दादाके मातहत काम करने लगे। अिसमे सबसे पहला काम बम्बअीकी म्युनिसिपैलिटीके भगी और ढेढ लोगोकी ऋणमुक्ति और अुन्हे दूसरी कुछ राहत दिलवानेका था।

ठक्कर साहब बम्बअीकी म्युनिसिपैलिटीमे नौकरी करते थे तभीसे भगियो और ढेढ भाअियोकी दुर्दशा वे जानते थे। अिसके अलावा, अुस पद पर रहते हुअे वे पहले अुनकी सेवा भी कर चुके थे, अिसलिअे अुनमे से कुछ भाअी, जो थोडे पढे-लिखे थे, ठक्कर साहबके निकट परिचयमे आये थे। और अुनके द्वारा ये अछूत भाअियोके सुख-दुःख, अुनकी स्थिति और अुनके प्रश्नो वगैरासे भी परिचित थे। अिसलिअे भारत सेवक समाजमे आनेके बाद ठक्कर साहब देवधर दादाकी ऋणमुक्तिकी योजनाको सफल बनाने और अुसके लिअे सहकारी समितिया स्थापित करनेमे बडे सहायक सिद्ध हुअे। भगियोकी स्थितिके तथ्य अिकट्ठे करनेमें, अुनके कर्जके आकडे जुटानेमें, अुनमे कौन कौन कितनी रकमके देनदार हैं, कौन लेनदार हैं, मूल रकम कितनी थी और ब्याज कितना मागते हैं, वगैरा ब्योरा प्राप्त करनेमे ठक्कर साहबने खूब मेहनत अुठाअी।

साथ ही अिस ऋणमुक्ति और सहकारी समितियोंका सचालन करते-करते अुन्हे अेक और प्रश्न हाथमे लेना पडा ओर वह था रिश्वतखोरीकी बुराअीको मिटानेका। अुन्होने देखा कि अधिकाश अछूत भाअियोके कर्जकी जडमे यह रिश्वतखोरी ही है। भगियोको पद्रह-सोलह रुपयेकी म्युनिसिपैलिटीकी नोकरी प्राप्त करनेके लिअे अपने अूपरके अफसरोको पचास-साठ या सत्तर रुपये भेट देनी पडती है और अितनी रकम देनेके लिअे पठानसे भारी दर पर रुपया व्याजसे लेना पडता है, यह बात ठक्कर साहब म्युनिसिपैलिटीमे थे तभीसे जानते थे। यह बुराअी अुन्हे बहुत समयसे खटक रही थी। वे जानते थे कि जब तक यह बुराअी नही मिट जाती, तब तक ऋणमुक्तिकी योजना भी पूरी सफल नही हो सकती। अिसलिअे सहकारी समितियोके साथ ही साथ भेट-पूजाकी प्रथाको निर्मूल करनेकी हलचल भी अुन्होने शुरू कर दी।

अुस समय म्युनिसिपैलिटीके स्वास्थ्य-विभागके अफसर मि० टर्नर नामक अेक अग्रेज सज्जन थे। अुन्होने बरसो अिस पद पर काम किया था। ठक्करबापाके कहनेके अनुसार कुल मिलाकर वे अच्छे आदमी थे। वे जानते थे कि रिश्वतखोरीकी गदगी अुनके विभागमे मौजूद है। परन्तु बहुत वर्षोसे चले आ रहे रिवाजको बन्द करनेकी शक्ति या हिम्मत अुनमे नही थी। ठक्कर साहब अुनके पास गये और अुन्हे यह बात समझाअी कि म्युनिसिपैलिटीमे कितना भ्रष्टाचार फैला हुआ है और अेक अेक भगीको नोकरी हासिल करनेके लिअे जरुरी दस्तूर देनेको पठान या साहूकारसे भारी व्याज पर साठ-सत्तर रुपये लेने पडते है और किस तरह वे गले तक कर्जमे डूब जाते है। अिस गन्दगीको मिटानेके लिअे रिश्वत खानेवाले म्युनिसिपल अफसरोके साथ सख्तीसे काम लेनेको कहा। टर्नर साहबने अुनकी बात सहानुभूतिपूर्वक सुनी और अुत्तर दिया कि "आपकी बात शायद सही होगी। परन्तु अितना कहनेमे ही बात पूरी नही हो जाती कि म्युनिसिपैलिटीमे अिस प्रकारकी रिश्वतखोरी चलती है। आप मेरे सामने निश्चित प्रमाणो सहित कुछ मामले अिकट्ठे करके पेश करे, तो मै अिस मामलेमे आगे बढ सकता हू और अिसका कोअी अिलाज कर सकता हू।" ठक्कर साहबने अुनसे कहा कि, "आप अपना अेक खास आदमी मुझे दीजिये। अुसके साथ रहकर मै अमुक अफसरने अमुक भगीसे दस्तूरके अितने रुपये लिये है, अिस तरहके बयान अिकट्ठे कर दूगा।" यह बात अुन्होने स्वीकार तो की, परन्तु अिसमें बहुत अुत्साह नही दिखाया। किन्तु ठक्कर साहबने तो अपना काम जारी कर दिया। वे पहलेकी म्युनिसिपैलिटीकी नौकरीके वक्तसे जिन जिन

लोगोको जानते थे और जिनके गाढ सम्पर्कमे आये थे अुन ककाभाअी, नारायणभाअी, हीराभाअी और सामन्त मास्टर आदि शिक्षित अछूत भाअियोसे मिले और अुनकी मददमे भगी और ढेढ लोगोके साथ रात-दिन माथापच्ची करके अुन्हे मुश्किलसे समझाकर लगभग तीस बयान अुन्होने अिकट्ठे किये। अुनमे म्युनिसिपैलिटीके अिन्स्पेक्टर मि० हीगिन्सने अितने अितने नौकरोसे अमुक अमुक रकमे रिश्वतमें ली है, यह अिकरार लिखवाकर मुहरबन्द करा लिये और अुनकी अेक पूरी किताब बनाकर डॉ० टर्नरके सामने पेश कर दी।

डॉ० टर्नर तो यह देखकर चौक उठे। अितनी तेजीसे और अितना ठोस काम ठक्कर साहब थोडे ही समयमे अुनके सामने पेश कर सकेगे, अिसका अुन्हे स्वप्नमे भी खयाल नही था। अिसलिअे अचानक मय सबूतके ये तथ्य और बयान देखकर वे घबराये। जैसा बापाने अिस घटनाका वर्णन करते हुअे अेक जगह लिखा है, टर्नरने आखे बदलकर गुनाह साबित करने-वाले असल मसालेकी किताब ही अुनके पाससे छीन ली। बादमे अुन्हे खानगी तौर पर कहा कि, "मि० ठक्कर आप अपना कोअी दूसरा काम हो तो कीजिये न। अिसमे क्यो सिरपच्ची करते है? क्योकि अैसा तो चलता ही रहेगा। आप कितना ही प्रयत्न कीजिये, तो भी यह रुकेगा नही। आपको पता नही, अिन भगियोको अिस तरह रिश्वत देनेकी आदत ही पड गअी है। और अच्छा वेतन मिलनेसे वे अिस प्रकार रिश्वत दे सकते है। अिसलिअे यह रिवाज अेक दूसरेको अितना पसन्द आ गया है कि आप या मै चाहे कितनी ही कोशिश करे तो भी अिसे मिटा नही सकेगे।"

ठक्कर साहब तो टर्नरका यह धृष्टतापूर्ण व्यवहार देखकर स्तब्ध ही हो गये। अुन्हे टर्नर पर गुस्सा भी आया। थोडी गरमागरम बहस भी हुअी। परतु अुसका कोअी परिणाम नही हुआ। गुनाह साबित करनेवाला असल मसाला हाथसे चला गया था, अिसलिअे ठक्कर साहब लाचार हो गये। फिर भी वे बिलकुल निराश नही हुअे। अुन्होने अिस दिशामे प्रयत्न जारी रखा और भगियोको स्वय ही अिस प्रकार रिश्वत न देनेकी बात समझाने लगे। अिसमे अुन्हे तत्काल खास सफलता नही मिली। अिस बारेमे अपना अनुभव बताते हुअे वे अेक जगह लिखते है

"भगियोको मै अुपदेश देता कि तुम लोग अपने अूपरके अफसरको घूस न दो। अुन्हे नौकरीकी जरूरत होगी और भरती करनी होगी, तब रिश्वत देनेवाला कोअी न होगा तो भी मजबूरन् तुम्हीमे से किसीको चुनना पडेगा। ओर अिस प्रकार घूस देनेसे अिस समय जितने लोगोको नौकरी मिलती है, अुतनोको घूस दिये बिना ही नौकरी मिल जायगी। परतु

अैसा सूखा अुपदेश अुन्हे क्यो पसन्द आने लगा? वेरोजगार होनेके कारण अुन्हे तो तुरत नौकरी चाहिये थी। अिसलिअे रिश्वत दिये विना अुनकी वारी आ जाय और अुन्हे वुलाया जाय, तव तक प्रतीक्षा करनेका धीरज या समझ अुनमे नही थी। अुन्हे हर महीने पद्रह-सत्रह रुपये मिले तो ही अुनकी हाडी चूल्हे पर चढ सकती थी। अिसलिअे किसी भी अुपायसे जल्दीसे जल्दी नोकरी मिले, यही अुनका अुद्देश्य था और अिसीके लिअे अितनी स्पर्धा होती थी। अिसलिअे मेरे प्रयत्नका तत्काल कोअी परिणाम नही निकला।"

अितने पर भी रिश्वतके विरुद्ध अुन्होने अपना आन्दोलन विलकुल छोड नही दिया। जव जव अिसके लिअे थोडा भी अनुकूल अवसर मिलता, तभी वे अिस प्रश्नको वार वार अुठाते। थोडे वर्षोके वाद जव विट्ठलभाअी पटेल वम्वअी म्युनिसिपैलिटीके अध्यक्ष नियुक्त हुअे, तव फिर ठक्कर साहवने अिस प्रश्नके लिअे अनुकूल अवसर देखा। विट्ठलभाअी पटेलके पास अिन्होने शिक्षा-सवधी मसौदेके सिलसिलेमे मन्त्रीका काम किया था, अिसलिअे वे अिन्हे जानते थे। अिसलिअे फिर अेक वार रिश्वतके मामले अिकट्ठे करके अुन्होने सव तथ्य अुनके और म्युनिसिपैलिटीके तत्कालीन कमिश्नर मि० वलेटनके सामने पेश किये। अिस वार अभियुक्त सव-अिस्पेक्टर हीगिन्सको वुलाया गया और ठक्कर साहवके रूवरू अुससे पूछताछ करके सफाअी मागी गअी। अुस समय अुसने वहानेवाजिया की, तो अुसे चेतावनी दे दी गअी। अितना होने पर भी रिश्वतकी वुराअी तो वनी ही रही। और अुसे रोकनेमे ठक्कर साहवको विशेष सफलता नही मिली। परतु अुन्होने निराश या नाअुम्मीद न होकर अिस दिशामे अुनसे जितना हो सका अुतना किया। अिस प्रयत्नमे ही अुन्होने सतोष माना।

समाजमे भरती होनेके वाद ठक्कर साहवने जैसे देवधर दादाके अधीन तालीम पाअी, वैसे ही गोखलेजी जैसे महापुरुषकी छत्रछायामे रहकर अुनके सहवासका लाभ अुठाने और अुनके अधीन कुछ समय शिक्षा प्राप्त करनेकी भी अुनकी अभिलाषा थी। परतु अुनकी यह अभिलाषा अधूरी ही रही, क्योकि समाजमे प्रविष्ट होनेके दूसरे ही साल गोखलेजीका अवसान हो गया। गाधीजी जव दक्षिण अफ्रीकासे भारत आये तव गोखलेजीने वम्वअीमे अेक विशेष कार्यक्रम रखा था। भारत सेवक समाजके सव सदस्य गाधीजीके समागममे आये और गाधीजी भी अुनके साथ प्रत्यक्ष परिचय वढाये, अिस हेतुसे यह कार्यक्रम रखा गया था। और गाधीजी जव कलकत्ते होकर वम्वअी आये तव अुनका स्वागत करनेके लिअे अुस समारोहमे अुपस्थित रहनेको गोखलेजी रोगशय्यासे अुठकर भी वम्वअी दौड आये थे। अिस समय ठक्कर

साहवका गोखलेजीके साथ थोडा समर्ग हुआ, कभी कभी पूना आते जाते अुनसे भेट होने पर थोडा मपर्क आता। अिसके वाद अेक वार श्री ठक्कर समाजके कामकाजके सिलसिलेमे अलाहावाद ओर वनारम गये थे, तभी गोखलेजीका देहावसान हो गया। अिमलिअे ठक्कर साहवको अुनके समागमका विशेष लाभ नही मिला। निधनके समाचार मुनकर वे पूना दौड गये और गोखलेजीकी स्मशानयात्रामे भी शामिल हुअे। अुम साल ठक्कर माहवने अहमदावादके मजदूर मुहल्लोमे मजदूर वालकोके लिअे पाठशालाअे भी शुरू कराअी थी।

१९१६ मे कच्छमे अकाल पडा, तव वहा भी ठक्कर साहवने पहुचकर कप्ट-निवारणका काम किया। अुसके वादके वर्पमे अुन्होने देवधर दादा तथा श्री जोशीके साथ रहकर खेडा जिलेमे लगान-जाच-समितिके काममे मदद दी। अिसके सिवाय वम्वअी कासिलके गैरसरकारी सदस्योके मडलके वे मत्री वने और मत्रीके रूपमे अुन्होने अपने फर्ज अदा किये। अिम पद पर रहकर अुन्होने गुजरात और ववअीमे शिक्षा सवधी ओर सामाजिक सस्थाओका निकटसे निरीक्षण करके अिन प्रश्नोका अध्ययन किया। यह अनुभव और ज्ञान अिसके वादके वर्षोमे अुनके लिअे काफी अुपयोगी सावित हुअे।

१९१५ मे श्री विट्ठलभाअी पटेलने जब वम्वअीकी धारासभामे अनिवार्य शिक्षाका विल पेश किया, तव ववअी प्रान्तके जिलो ओर तालुकोमे शिक्षाकी तत्कालीन स्थितिकी जाच करनेमे, अुस सवधके आकडे ओर तथ्य अिकट्ठे करनेमे तथा विलकी पूर्वभूमिका तैयार कर देनेमे श्री ठक्कर साहवने खूव मेहनत की। अुस समय अुन्होने जो प्रवास किया था अुसकी पूरी कल्पना आजकलके मोटर गाडी और हवाअीजहाजके जमानेमे शायद ही हो सकती हे। अुम समय जिलेके भीतरी भागोमे दौरा करनेके लिअे गाडी, अिक्का या शिकरम ही मिलती थी। अैसी सवारीमे दिन भर वैठकर सफर करना पडता ओर अेक गावमे पहुचकर वहाके तथ्य अिकट्ठे करके दूसरे गाव जाना पडता। रास्ते पहाडी ओर अूवड-खावड थे। अिसलिअे दिनभर वैठनेमे शरीर अकड जाता, हड्डी-पसली हिल जाती ओर थकान व अुकताहट खूव वढ जाती। फिर भी ठक्कर साहवको तो काममे अितना रस था कि अिस प्रकारकी किसी भी तकलीफकी वे जरा भी परवाह नही करते थे ओर निश्चित कार्यक्रमके अनुमार अपना काम करते रहते थे।

अैसी अेक यात्रामे ठक्कर साहवके भतीजे श्री कपिलभाअी ठक्कर साथ थे। अुन्होने अिस प्रवासके अेक-दो प्रसग लिखे है जिनसे अिसकी कुछ कल्पना होती है कि अुन दिनो ठक्कर साहव कितना परिश्रम करते थे और भूख,

नीद और थकावटकी परवाह किये बिना हाथमे लिया हुआ काम पूरा करनेकी कितनी लगन और सावधानी रखते थे।

वे लिखते है

"अपनी बाल्यावस्थासे ही मै बडे काका (ताअूजी)के जीवनकी कुछ घटनाअे सुनता और देखता रहा हू। अुनमे से अुनके साथ अहमदाबाद जिलेके कुछ देहातोका प्रवास मुझे खूब याद रहेगा।

"　　　　श्री विट्ठलभाअी पटेलके शिक्षा-सबधी बिलके लिअे कुछ आवश्यक आकडे प्राप्त करनेके लिअे राणपुर, धधुका और धोलका जिलोकी प्राथमिक पाठशालाओके निरीक्षणका काम अुन्हे सौपा गया था। बैलगाडीके रास्तेकी यह २०-२५ दिनकी यात्रा थी। भावनगर आकर वे जब राणपुरके लिअे रवाना हुअे, तब मेरी कालेजकी छुट्टिया थी, अिसलिअे मुझे साथ ले लिया। राणपुरसे धोलका तक बैलगाडीमे दौरा करना था और मार्गमे पाठ-शालाओवाले गावोकी मुलाकात लेनी थी। अिजीनियरीके दिनोमे ही अिनकी कार्यनियमनकी शक्तिका विकास हो गया था। और भारत सेवक समाजके सदस्यके नाते अुसके बादके अितने वर्षोमे अुनके कार्यनियमनमे शायद ही कोअी कमी आअी होगी। अेक दिनकी या अेक मासकी यात्राका जो कार्यक्रम बन गया अुसे पूरा करना ही होता था। रेलवेसे तीस-चालीस या पचास मील दूरके गावोमे मोटरमे जाना होता तो भी अुनके नियत किये हुअे घटो और दिनोमे कोअी फेरबदल नही करा सकता था। सवेरे अुस दिन करनेका काम तय हो जाता और रातको अुसका ब्योरा अुनकी डायरीमे लिख लिया जाता था।

"हमारे सफरके दौरानमे अेक रातको हम बारह बजे अेक गावमे पहुचे। गाडी पाठशालाके मुहल्लेमे खडी हुअी। पाठशालाके पास अपने मकानमे सोये हुअे शिक्षकका दरवाजा खटखटाया गया। भरी नीदमे सोये हुअे शिक्षक यह समझकर कि कोअी अिस्पेक्टर अचानक पाठशालाका निरीक्षण करने आये है चौक पडे और गाडीके पास आये। ठक्कर बापाने अपना परिचय दिया और आनेका कारण समझाकर कहा

"'विट्ठलभाअी पटेलके अनिवार्य और नि शुल्क शिक्षाके सबधमे जाचके लिअे निकला हू। और मुझे आपकी पाठशालाके कुछ आकडे चाहिये। दीजियेगा न?'

शिक्षकने कहा, 'अभी तो आप आराम कीजिये, सुबह मै आपको जरूरी ब्योरा दे दूगा।'

वापाने कहा, 'मैं आग्रह तो नही कर मकता, परतु यदि आप यह काम अभी निपटा दे तो हमारा थोडासा समय वच जाय।'

"मास्टरने टूटी चिमनीवाला लैम्प जलाया। अेक दो घटेमे आकडे वगैरा देखने-जाचनेका काम निपट गया। अुस वक्त रातके अेक या दो वजे होगे। वापाने मास्तर साहवसे कहा 'मास्टर साहव, हमने खाना नही खाया है। अभी भोजनकी कोअी व्यवस्था हो सकती है?'

"मास्टरने अुसी समय चूल्हा सुलगाया। दूव तो अुस वक्त मिल नही सकता था। खिचडी और साग तैयार हुअे। तीन वजे मेहमानोने भोजन किया और मास्टर साहवको दक्षिणा देनेकी विधि पूरी करके तडके ही चार वजे गाडी जुतवाकर हम रास्ते लगे।"

"धोलेरामे हमारा मुकाम चार-पाच दिन रहा। वहा केन्द्र रखकर आसपासके गावोमे रोज जानेका निश्चय किया। खानेके समय धोलेरा आ पहुचते और फिर दोपहर वाद अेकाध जगह हो आते। खानेके लिअे किसी स्थान पर कितना ही आग्रह होता तो भी धोलेरामे जिस स्नेहीके घर डेरा लगाया था अुन्हीके यहा खानेके क्रममे कोअी परिवर्तन न किया जाता। डेढ दो मील पर भडियाद गावके किसान ओर प्रजाजन सुखी और सम्पन्न थे। अुस गावके विविध स्थान ओर पाठशाला आदि देखनेमे वारह वज गये। गावके लोगोने खानेके लिअे वहुत ही आग्रह किया। जवावमे अिन्होने धोलेरा जानेके लिअे अेक गाडीकी ही माग की। और अन्तमे हमने डेढ दो वजे धोलेरा आकर भोजन किया।"

अिस प्रकार गुजरातके कुछ जिलोमे घूम-घूमकर अुन्होने आकडे अिकट्ठे किये, तथ्य प्राप्त किये और अिन ठोस तथ्योके आधार पर ही प्राथमिक शिक्षाका विल तैयार किया गया और अन्तमे पास हुआ। अिसके वाद जव विलने कानूनका रूप ग्रहण किया, तव अुसके अमलके लिअे भी अध्ययनपूर्ण लेख लिखकर वापाने खूव प्रचार किया।

शिक्षाकी स्थितिके सवधमे अेक लेखमे अुन्होने कुछ ब्योरे देकर वताया कि

"हमारी आम जनताकी वर्तमान शिक्षा-सवधी स्थिति वडी असतोष-जनक है। १९११ की जनगणनाके आकडोके अनुसार भारतकी आवादीके केवल ११ प्रतिशत पुरुष और अेक प्रतिशत स्त्रिया ही लिखना-पढना जानती हैं। अुसके वाद दूसरे दस वर्ष वीत गये तो भी अिस दिशामे कोअी विशेष सफलता मिली या प्रगति हुअी हो, अैसा नही जान पडता। अिस समय अनुमान लगाकर वताअू तो ८० प्रतिशतसे ज्यादा पुरुष और ९७ प्रतिशतसे

अधिक स्त्रिया अभी तक निरक्षर है। अनिवार्य शिक्षाका कानून पास हो गया यह बात सही है, परन्तु यह कानून अतिमर्यादित रूप और अति मर्यादित क्षेत्रमें ही लागू किया गया है। १,१०,००० और २२,००० की आबादीवाले केवल दो ही शहरोंमें असका अमल हो रहा है। अर्थात् प्रान्तकी सारी आबादीका ० ६७ प्रतिशत भाग ही अिस कानूनसे लाभ अुठानेको आगे आया है।"

अेक अच्छे सरकारी तंत्रके लिअे और साथ ही देशकी प्रगतिके लिअे प्राथमिक शिक्षाकी अनिवार्य आवश्यकता बताते हुअे अुन्होंने लिखा कि, "देशके लिअे और अच्छे राज्यतंत्रके लिअे जैसे सेनाकी जरूरत है, तार और डाककी जरूरत पडती है, रेलवे और नहरकी योजनाओंकी आवश्यकता होती है, वैसे ही राष्ट्रव्यापी शिक्षाकी, देशभरमें प्राथमिक शिक्षाकी भी अुतनी ही जरूरत होती है। और जब तक केन्द्रीय खजानेसे और वहांसे न मिले तो अनमें प्रान्तके खजानेसे प्राथमिक शिक्षाके लिअे रुपयेका बन्दोबस्त न हो, तब तक सार्वत्रिक अनिवार्य शिक्षा अेक सुखद सपना ही बनी रहेगी।"

१२

जमशेदपुरमें मजदूर-कल्याण

गुजरातमें प्राथमिक शिक्षाके बिलका कामकाज पूरा होते ही अेक और बडे कामका भार श्री ठक्कर साहबके सिर पर आ पडा। यह था जमशेदपुरमें मजदूरोंका कल्याण-कार्य।

जमशेदपुरमें टाटा कंपनीकी तरफसे अेक बडा लोहेका कारखाना चलता था। यह कारखाना रातदिन चौबीसों घंटे आठ-आठ घंटोंकी अेक अर्थात् तीन पालियोंमें काम करता था। कारखानेमें बुद्धिशाली और केवल श्रमिक मिलकर कुल २५,००० मजदूर काम करते थे। कारखानेमें व्यवस्थापक और निष्णात अमरीका, अिंग्लैण्ड और जर्मनीसे बुलवाये गये थे और दूसरे कारीगर और मजदूर पंजाब, मद्रास, बंगाल, युक्तप्रान्त और मध्यप्रान्तसे आये थे। साथ ही अिस कारखानेमें मजदूरी करनेके लिअे आसपासके जिलोंसे संथाल और कोल जैसी आदिवासी जातियोंकी स्त्रियोंको भी रखा गया था।

१९१४–१८ का प्रथम महायुद्ध समाप्त होनेके बाद लडाअी और बरसातकी कमीके कारण खुराक और कपडेकी महगाअी सारे देशमें बहुत ज्यादा बढ गअी थी। और मजदूरोंको अपना गुजर चलाना मुश्किल हो रहा

था। अैसे समय टाटा कपनीके व्यवस्थापकोने अपने कारखानेमे काम करनेवाले मजदूरोकी स्थिति आसान करनेके लिअे ओर अुन्हे खुराक, कपडे तथा जीवनकी अन्य आवश्यक चीजे अधिक सस्ती मिले, अिसके लिअे कुछ न कुछ कदम अुठानेका विचार किया ओर १९१८ के जुलाअी मासमे अिसके लिअे दस लाख रुपयेकी रकम अलग निकाली। कारखानेके गरीव मजदूरोके लिअे आवश्यक वस्तुओकी दुकाने खोलने और चलानेके लिअे यह रकम पूजीके तौर पर काममे लेनेका अुनका विचार था।

टाटा कपनीके मालिकोने अिस मामलेमे भारत सेवक समाजसे मदद मागी और अिस प्रकारकी कोअी योजना सभव है या नही तथा अुससे मजदूरोको राहत पहुचाअी जा सकती है या नही, अिसकी जाच करने ओर अिस सवधमे व्यौरेवार योजना तैयार करके अुसका सचालन करनेके लिअे अेक योग्य, विश्वसनीय और कुशल मनुष्यकी माग की। भारत सेवक समाजने अिस कामके लिअे ठक्कर साहवको चुना और समाजके आदेशानुसार वे अगस्त १९१८ मे जमशेदपुर गये। वहा सारी जाच की और प्रारभिक विवरण तैयार किया। अुसमे अुन्होने वताया कि व्यवस्थापक जिस प्रकारकी आशा रखते है अुसके अनुसार दस लाखकी पूजी लगाकर कपनीकी तरफसे ही दुकाने खोली जाय तो मजदूरोको आजकी अपेक्षा काफी सस्ते दामोमे माल मिलेगा। और अिस कठिन समयमे अुन्हे अच्छी राहत मिलेगी। अिसलिअे कपनीने अिसके अनुसार निश्चय किया और ठक्कर साहवकी सेवाअे देनेके लिअे भारत सेवक समाजके अध्यक्षको पत्र लिखा। अध्यक्षकी मजूरी मिल गअी। अिसलिअे ठक्कर साहवने तुरत ही काम शुरू कर दिया।

पुरानी व्यवस्थाके अनुसार जमशेदपुरमे लगभग दर्जन भर थोक मालके वडे व्यापारी थे। अिन व्यापारियोके पास पूजीकी सुविधा अच्छी होनेसे जहा जहासे सभव होता वहासे ये माल मगवाते और अपना अच्छा नफा चढाकर खुरदा व्यापारियोको वेच देते। खुरदा व्यापारियोकी सख्या लगभग ६० से ७० तक होगी। ये व्यापारी अपना खुरदा माल मजदूरोको वेचते। अिस प्रकार मजदूरोके पास अनाज, कपडा, नमक और जीवनकी अन्य आवश्यक वस्तुअे पहुचनेसे पहले वडे व्यापारी और छोटे व्यापारी अुन पर अपना नफा चढा लेते थे। टाटा कपनीका अिरादा अिन वीचके आदमियोका नफा खतम करके, माल जैसे बने वैसे मजदूरोको मूल कीमतसे कुछ अधिक दामोमे मिलनेकी व्यवस्था कर देनेका था। अिसलिअे ठक्कर साहवने मजदूरोको रोजमर्रा जिन जिन वस्तुओकी जरूरत पडती थी, अुनकी अेक सूची बनाअी। अिसके सिवाय जिन वस्तुओके विना काम न चले अुनकी भी

फेहरिस्त बनाअी और लोगोकी जरूरतोका साधारण अदाजा निकालकर जहा जहासे भी सस्तेसे सस्ता और अच्छा माल मिले वहा वहासे जाच कराकर माल मगाना शुरू किया। अिस प्रकार चावल मिदनापुर, बालेश्वर, बाकुडा तथा सभलपुर जिलोसे मगवाया, गेहू बिलासपुर जिलेसे, अरहरकी दाल गोरखपुर जिलेसे, और नमक जो अब तक अदन और पोर्ट सैयदसे आता था कलकत्तेसे मगवाया। और घी बिलासपुर जिलेसे पड्रा रोड जक्शनके रास्ते होकर मगवाया। मालके अिन मुख्य मुख्य और बडे बाजारोमे ठक्कर साहब स्वय हो आते। बाजारमे अच्छी तरह घूमते फिरते। हरअेक मालकी जात और भावताव वगैराकी पूरी छानबीन करनेके बाद ही किफायतशारीसे सौदा करते। अिस प्रकार सितम्बरमे २५,००० रुपये, अक्तूबरमे १५,०००, नवम्बरमे ३१,००० तथा दिसम्बरमे ६८,०००—कुल मिलाकर चार महीनेमे ही १,३९,००० रुपयेका माल खरीदा और जमशेदपुरमे कपनीकी तरफसे अपने ही बडे गोदाम खडे कर दिये।

अितना अिकट्ठा माल नकद दाम देकर लेनेसे वह तुलनामे काफी सस्ता मिला। अिससे व्यापार करके बडे व्यापारियोकी तरह खूब नफा करने या प्रचुर धन कमानेका तो कपनीका अिरादा था ही नही। अिसलिअे अुसने लगाअी हुअी रकम पर ब्याज तक नही चढाया। अितना ही नही, धधेका प्रारभिक खर्च (establishment charges) तथा अन्य फुटकर व्यय मिलाकर मूल कीमत पर कुल पाच प्रति सैकडा चढाकर खुरदा व्यापारियोको माल मुहैया किया गया और अुनसे यह शर्त कर ली गअी कि कपनीके थोक मालकी कीमत पर वे पाच फीसदीसे ज्यादा नफा न ले।

अिस प्रकार छोटे दुकानदारो तथा खुरदा व्यापारियोको कपनीकी बडी दुकानोकी तरफसे अपेक्षाकृत सस्ते दामो माल मुहैया करनेकी व्यवस्था कायम हो जानेसे अेकाध दर्जन जो बडे व्यापारी थोक मालका व्यापार करते थे, अुनका व्यापार बन्द हो गया और सारी बागडोर ठक्कर साहबके खडे किये हुअे कपनीके भडारोके हाथमे आ गअी।

अिसी प्रकार दूसरा कदम कपडेके भडार खोलनेका अुठाया गया। बगाल, बिहार और अुडीसामे पिछले कुछ वर्षोसे कपडेकी काफी तगी पैदा हो गअी थी और लोगोको जरूरतके लायक भी कपडा नही मिल रहा था। अुसमे भी मजदूरो और गरीबोको तो आवश्यक कपडा मिलता ही कहासे? और जो मिलता भी अुसे डचौढे भावो पर खरीदना पडता। मजदूरो और गरीबोके सौभाग्यसे जब ठक्कर साहबने यह व्यवस्था सभाली अुसी समय

देशमे कपडेकी मिलोमे मदीकी जवरदस्त लहर आओी। अुममे लाभ अुठाकर ठक्कर साहवने भारतकी मिलोका, खास तौर पर नागपुरकी अेम्प्रेस मिलका, कपडा वडी मात्रामे — लगभग साठ हजार रुपयेका खरीदा। और कारखानेके मजदूरोके लिअे कपडेकी दुकाने खोल दी गअी। अिसमे छोटे दुकानदारोको भी वीचमे नही रखा गया। कपनीकी दुकाने मजदूरोको सीधा ही कपडा वेचती। अिसके सिवाय कपडा वेचनेवाले ठेलेवालोको कपनीके तय किये हुअे भावोसे कपडा वेचनेकी शर्त पर माल दिया जाता था। अिस प्रकार मजदूरोके लिअे ये दुकाने आशीर्वाद-स्वरूप वन गअी। अुन्होने देख लिया कि पहले अुन्हे जो कपडा डेढ रुपयेमे मिलता था वही अिस नअी व्यवस्थामे अेक रुपयेमे मिलता है। अिस सस्ती कीमतके कारण अेक पुलिसवालेने जो हर साल सिर्फ अेक ही धोती जोडा खरीदता था अिस वर्ष दो धोती जोडे खरीदे। अिसी प्रकार अन्य वहुत लोगोने किया। कपडेकी सव दुकानोमे रोज लगभग ४०० रुपयेकी विक्री होने लगी। और ज्यो ज्यो कपडा अुठता गया त्यो-त्यो नया माल खरीदा जाता रहा। अेकाध महीनेमे ही कपनीको २६,००० रुपयेका दूसरा माल मगवाना पडा।

अिस प्रकार मजदूरोको चावल, दाल, अनाज, कोयला, तेल, कपडा, वगैरा जीवनकी आवश्यक वस्तुअे सस्ते दामो देनेका काम वहुत अच्छी तरह जम गया। यह काम करते करते ठक्कर साहवकी सावधान दृष्टि दूसरी कुछ वातोकी तरफ चली गअी। अुन्होने देखा कि व्याजखोर पठान ओर कावुली लोग अेक हाथमे रुपयेकी थैली और दूसरे हाथमे लाठी लेकर यहा भी पहुच गये है ओर मजदूरोको व्याज पर रुपये अुधार देकर अुनमे थोडे ही समयमे मूलसे भी दुगुने वसूल कर लेते है। अैसे अेकाध दर्जन कावुली लोग अिन गरीव लोगो पर गुलछर्रे अुडाते थे। पैसा अुधार देनेके वदलेमे वे अिन गरीव मजदूरोसे फी रुपया अेकसे दो आने प्रतिमास अर्थात् सालाना ७५ से १५० प्रतिशत व्याज वसूल करते थे।

कावुली लोगोकी अिस दिन दहाडेकी लूटको वन्द करनेके लिअे ठक्कर साहवने वहा ऋणदाता सहकारी समितिया शुरू की। पहले 'अिलेक्ट्रिक रिपेरर्स शॉप' के कामगारोकी अेक समिति स्थापित की गअी। वादमे घासीस नामक भगियोकी और सूरतकी तरफके खलासी मजदूरोकी समितिया स्थापित की गअी।

अिसके अलावा समय वीतने पर ठक्कर साहवने अैसी और आठ नो समितिया भिन्न भिन्न मजदूरोकी कायम की। अिस प्रकार कुल कोअी वारह समितियो द्वारा अुन्होने कारखानेके मजदूरोको सूदखोर पठान लोगोकी शोषण-

नीतिसे बचाया। सबसे पहले तो काबुली लोगोका जो कुछ लेना था अुसकी जाच करके अुसे तय करवाया। और अैसी सहकारी समितियो द्वारा अुनकी रकमे पूरी पूरी चुकवा दी और वे रकमे सबधित मजदूरोके नाम लिखवा दी। अुन पर नामको ही व्याज चढाया जाता। और ये रकमे किस्तोमे मजदूरोके वेतनसे वसूल कर ली जाती। अिस व्यवस्थाने मजदूरोके कर्ज मिट गये। अुन पर अधिक बोझा नही पडा ओर कुछ समय वाद अुनकी स्थिति सुधर गअी।

अिस प्रकार शुरूके छ महीनोमे ठक्कर साहबने सस्ते भावो पर माल मुहैया करनेवाली दुकानोको व्यवस्थित किया, मजदूरोको व्याजसे छुडवानेके लिअे समितिया स्थापित की और दूसरा कुछ फुटकर कामकाज किया। अितना काम भलीभाँति जम गया तो अुन्होने बालकोकी शिक्षा, खेलकूद, चायघर वगैरा मजदूर-कल्याणके दूसरे काम हाथमे लिये। यह सब करनेकी अुनकी कल्पना तो पहलेसे ही थी। परतु अेक काम पूरा करनेके बाद ही दूसरा काम हाथमे लेनेकी अुनकी पद्धति थी। साथ ही टाटा कपनीके व्यवस्थापकोके भी यह बात गले अुतारनी थी। अिसलिअे शुरूमे तो कपनीके सचालकोने जो कार्यरेखा अकित कर दी थी अुसकी मर्यादामे रहकर ही अुन्होने काम किया।

ये दूसरे कार्य हाथमे लेनेके बारेमे अुन्होने पाच छ महीने बाद 'टाटा आयर्न और स्टील वर्क्समे सामाजिक कार्य' शीर्षकसे भारत सेवक समाजके मुखपत्र 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिडिया'मे जो लेख लिखा था अुसमे कहा

"मजदूर-कल्याणका यह काम मजदूरोको सस्ती दरो पर जीवनकी आवश्यक चीजे मुहैया करने अथवा अुन्हे ऋणमुक्तिके मार्ग पर ले जानेमे ही समाप्त नही हो जाता। अलबत्ता, अिस समय यहा जो स्थिति है अुसे देखते हुअे कार्यारभ तो अिन दो चीजोमे ही करना चाहिये। यहा मेरे बिताये हुअे पाच महीनोमे पहला महीना प्रारभिक काममे लगा और दूसरे चार मास दुकाने शुरू करने, अुनके लिअे खरीदारी करने तथा ऋणदाता सहकारी समितिया स्थापित करनेमे लगे। अब दुकाने अच्छी तरह चल रही है, अिसलिअे समाज-कल्याणकी दूसरी प्रवृत्तिया, जैसे बच्चो और बडी अुम्रके आदमियोके लिअे खेलकूदके मडल, बालकोके लिअे क्रीडागण, मजदूरोके बच्चोके लिअे अुनकी अलग अलग मातृभाषाओमे शिक्षा देनेवाली प्राथमिक शालाअे, पुरुषोको शराबखानोकी लतसे छुडवाकर अिस तरफ खीच लानेके लिअे निर्दोष आनद-विहारके जलपान-गृह और अिसी तरहके दूसरे कामोके लिअे ज्यादा वक्त

दिया जा सकेगा। अिन सबसे मजदूरोकी आर्थिक और नैतिक स्थितिमे स्थायी सुधार होगा, अिस बारेमें मुझे जरा भी शक नही है। मै आशा रखता हू कि आगेके सात महीनोमें यह सब काम हाथमे लेनेकी मुझे स्वीकृति दी जायगी। अिस अर्सेमे मै अधिकाश समय अब यही रहना चाहता हू।"

कपनीके सचालकोने ठक्कर साहबको अुनकी अिच्छाके अनुसार काम करनेकी स्वतत्रता दे दी और अिस अर्सेमे अुन्होने खेलकूदके क्लब, प्राथमिक शालाअे, बाल-क्रीडागण और जलपान-गृह आदि शुरु किये। अितना ही नही, मजदूरोके रहनेके लिअे काफी हवा और रोशनीवाले सादे मकान बनवानेकी अेक योजना तैयार की और अुसकी मजूरी लेकर अुस पर अमल भी किया।

१३

पंचमहालके दो अकाल

१९१८-१९ में पचमहाल जिलेमे अकाल पडा। १९१८ के चौमासेमें बरसात बहुत ही थोडी हुअी। अिससे अुस वर्ष अनाज और घासचारा दोनोकी सख्त तगी पैदा हो गअी। घासके अभावमे ढोर मरने लगे और अनाजके अभावमें गरीब लोग परेशान होने लगे। वैसे भी पचमहाल जिलेका अिलाका पहाडी था। कम वर्षाके कारण वहाकी खेतीका बहुत विकास नही हुआ था। अिस पर अकालके सालमे तो सब जगह 'खाअू खाअू' मच जाती। जिलेकी आबादीके पौने भागसे भी अधिक भील लोग थे। अिन लाख सवा लाख भीलोके पास गुजरका कोअी खास साधन नही था। जमीनोका काफी हिस्सा बनियो या बोहरोके नाम लिखा जा चुका था। अुनके शरीर काफी खुराक न मिलनेसे सूखकर बिलकुल अस्थि-पजर जैसे बन गये थे। अकालका ज्यादा खराब असर जिलेके पूर्वी अिलाकेकी पट्टी अर्थात् दाहोद-झालोद तालुकोके गावो पर पडा था।

अिस वर्ष अिस प्रदेशको अकालग्रस्त घोषित करानेके लिअे गुजरातके कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओने काफी मेहनत अुठाअी थी। अिन्दुलाल याज्ञिकने, जो हालमे ही गाधीजीके सपर्कमें आये थे, अकालजन्य परिस्थितिके बारेमें 'नवजीवन अने सत्य' नामक मासिकमे और दूसरे अखबारोमे भी लेख लिखकर खूब अूहापोह मचाया था। परन्तु शुरूमें अुन्हे अिन प्रयासोमे सफलता नही मिली, क्योकि पचमहालमें अुस समय कुछ स्थानीय अफसर स्वार्थवश

यह नहीं चाहते थे कि वहा अकाल घोषित किया जाय। वे अनाज वगैराका खानगी व्यापार करते थे, जिससे अुन्हे नुकसान होनेकी सभावना थी। अिस-लिअे अखबारोमे आनेवाली बातोका सच्चा-झूठा खडन करके वे अपने अूपरके अधिकारियोकी आखोमे धूल झोकनेकी और अिस प्रकार अिन्दुलाल याज्ञिक जैसे कार्यकर्ताओके प्रयत्नो पर पानी फेरनेकी कोशिश करने लगे। परतु ये अफसर अपने अिस काममे अन्त तक सफल नही हुअे। क्योकि पचमहालकी स्थिति ही दिन-दिन अैसी विकट बनती गअी कि झूठे तथ्यो और बनावटी विवरणोके आच्छादन द्वारा वे सच्ची परिस्थितिको लम्बे समय तक छिपा कर नही रख सके। अुत्तरोत्तर बिगडती हुअी परिस्थिति तथा कार्यकर्ताओके प्रचारकार्य और अुसके कारण बढते हुअे अुग्र लोकमतके कारण अन्तमे सरकारको लगा कि अिस दिशामे कुछ न कुछ कदम अुठाना चाहिये। यद्यपि लोगोकी माग और अिच्छाके अनुसार पचमहालके दाहोद-झालोद तालुकोको *तत्काल अकाल-ग्रस्त प्रदेश अथवा कमीका अिलाका घोषित नही किया गया,* परतु अुसके पहले कदमके तौर पर पचमहालमे सचमुच अकालकी स्थिति पैदा हुअी है या नही, अिसकी जाच करनेके लिअे कुछ जगह आजमायशी काम (test works) शुरू कर दिये गये।

अैसे अेक काम पर सुखदेव विश्वनाथ त्रिवेदी नामक अेक ब्राह्मण मिस्त्रीके रूपमे काम करते थे। पचमहाल जिलेमे सार्वजनिक निर्माण-विभागमें नौकरी करते-करते अुन्होने दसेक वर्ष निकाल दिये थे। अुनकी अुम्र लगभग चवालीस वर्षकी थी। स्वभावसे अुग्र होने पर भी अुनका हृदय दयालु था। पचमहाल जिलेके राजकर्मचारी, साहूकार, जमीदार, शराबवाले, जादू-टोना जाननेवाले ओझे और व्यापारी भोलेभाले भीलोको कैसे धोखा देते, लूटते, चूसते, अुनकी जमीने छीन लेते, अुन्हे डरा धमकाकर अुनसे बेगार कराते, और दूसरी तरहसे परेशान करते थे, यह सब अुन्होने दस सालकी नौकरीमें अच्छी तरह देख लिया था। अिसलिअे भीलोके प्रति अुनके हृदयमे सहानु-भूतिकी भावना तो थी ही। अुस पर अकालके कारण अुनकी हालत और भी खराब होनेके कारण अुनके प्रति श्री त्रिवेदीकी दया-ममता खूब बढ गअी। भीलोकी दुर्दशा देखकर अुनका हृदय भर आता। अिसलिअे वे जिस केन्द्रमें थे वहा पूरी तरह मन लगाकर काम करने लगे और अकाल-ग्रस्त भीलोकी भरसक सहायता करने लगे। अुनके अिस प्रकारके मानवता-भरे बर्तावके कारण सुखदेवभाअीकी अुनके अफसरोके साथ अनबन हो गअी और अुसने आगे बढकर अैसा रूप धारण किया कि अन्तमे अुन्हें त्यागपत्र देकर अलग होना पडा।

अिसकी शुरुआत यो हुअी।

दाहोद तालुकेके अेक गावमे अेक जगह अैसा आजमायशी काम शुरु किया गया था। वहा लोग छ-छ सात-सात मील पैदल चलकर काम पर आते और शामको काम पूरा करके अुतनी ही दूर चलकर घर जाते। अकाल-कानूनके अनुसार अुन्हे छ सात पैसे रोज मजदूरी चुकाअी जाती थी। ये छ सात पैसे पानेके लिअे भी भील लोग अितनी बडी सख्यामे आते कि सबको काम देना असभव हो जाता। सरकारने अुस समय जो नियम बनाया था, अुसके अनुसार अेक केन्द्रमे केवल ४०० मनुष्योको ही काम दिया जा सकता था। परतु अकालकी परिस्थिति अितनी विकट थी कि अेक अेक केन्द्रमें ४०० से कही अधिक आदमी आने लगे। जिस क्षेत्रमे सुखदेवभाअी काम करते थे वहा भी निश्चित मर्यादासे अधिक आदमी आते थे। दूसरे केन्द्रोमे अैसे आदमियोको काम पर लेते नही थे, जब कि सुखदेवभाअी अपने यहा किसीको अिन्कार नही करते थे। यह अनुकूलता देखकर अिस केन्द्रमे दूसरे तमाम केन्द्रोसे खूब ज्यादा आदमी बढ गये और बढते बढते वहाका आकडा अन्तमे १,१०० तक पहुच गया।

तब सुखदेवभाअीने अपने अूपरके अफसरको यह हाल बताकर अुससे अेक और कारकूनकी माग की। अुन्होने कहा, "४०० के बजाय १,१०० तक सख्या बढ गअी है। अब अकेलेसे काम नही सभाला जा सकता। अिसलिअे मुझे अेक और आदमी मददगारके तौर पर दीजिये।"

अफसरने कहा, "तुम अितने ज्यादा आदमी भरती क्यो करते हो? दूसरा कारकून नही मिलेगा। ज्यादा आदमियोको कम कर डालो।"

सुखदेवभाअीने जवाब दिया, "मैं अुन्हे बुलाने अुनके घर नही जाता। वे बेचारे निराधार लोग अपने पेटके लिअे मीलो लम्बा रास्ता तय करके आते है। अुन्हे मै कैसे अिन्कार करू?"

अफसर कहने लगा, "क्यो नही? अिन्कार तो करना ही चाहिये। नियमकी मर्यादामे रहकर जितने आदमी आ जाय अुन्हे लिया जाय। बाकीको साफ अिन्कार कर देना चाहिये।"

अिस घटनाके बाद किसी न किसी मुद्दे पर झगडा होता ही रहता। सुखदेवभाअीको अफसरोकी मनमानी, तेज-मिजाजी, स्वार्थपरायणता और अकाल-पीडितोके प्रति किया जानेवाला दुर्व्यवहार खटकता था। अकाल-कानूनकी सूचनासे तीस फी सदी अधिक काम ये अकाल-पीडित लोग करते, तो भी जरा सी देर होने पर अफसर खुद अुन पर जुर्माना कर देता अथवा मात-

हतोको जुर्माना करनेकी हिदायत करता। परतु सुखदेवभाओीको अैसा करनेमे अन्याय मालूम होता था। अिसलिअे वे जुर्माना नही करते। छोटी वडी किसी भी वातमे वे झुकते नही थे। अिसलिअे दोनोके वीच समय-समय पर झडप होती रहती। सुखदेवभाओी पर अुस समय गाधीजीके लेखोका प्रभाव हो गया था। अुन्हे सरकारी नौकरीसे घृणा हो गअी थी। अिसलिअे अुन्हे अधिक समय नौकरी करनेमे अपमान प्रतीत हुआ। अत अेक दिन अफसरके साथ तेजीसे बोलचाल करके नौकरीसे अिस्तीफा दे दिया। अफसरको तो यही चाहिये था। अिसलिअे अुसने तुरत ही त्यागपत्र स्वीकार कर लिया और सुखदेवभाओीको सन् १९१९ के जनवरी मासमे मुक्त कर दिया।

नौकरीसे मुक्त होनेके वाद सुखदेवभाओी चुप नही वैठे। अुस समय गुजरातमे गाधीयुग आरभ हो चुका था और अन्यायका प्रतिकार करनेकी लोगोकी भावना जिलो और तालुको तक पहुच गअी थी। सुखदेवभाओीने झालोद-दाहोदके गावोमे घूमना शुरू किया और गाव-गावके हालचाल अिकट्ठे करके अुन्होने तालुकोकी परिस्थितिके विषयमे, आजमायशी कामोके वारेमे और अिन कामोको करने आये हुअे माल-विभाग और सार्वजनिक निर्माण-विभागके कर्मचारियोके मनमाने वर्तावके वारेमे अेक तरफसे अखवारोको समाचार भेजना शुरू किया और दूसरी ओर वम्वअीमे हालमे ही स्थापित गुजरात सकट निवारण समितिको भी अिस वातसे परिचित रखने लगे। सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास अिस समितिके अध्यक्ष थे और अिन्दुलाल याज्ञिक अिस समितिके गुजरातके प्रतिनिधि थे।

सुखदेवभाओीने अिन्दुलाल याज्ञिकको लिखा,

"अकालके सवधमे अखवारोमे लेख लिखते है सो तो ठीक है, परतु अेक वार यहा आकर सव परिस्थिति आखो देख जाय तो वडा फर्क पडेगा।"

अिसके सिवाय वम्वअी जाकर वे सर पुरुषोत्तमदाससे स्वय मिले और पचमेहालकी परिस्थितिका व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित वर्णन देकर कहा .

"तहसीलदार साहव कहते है, 'अकाल नही, अकाल नही', परतु अेक बार आप आकर परिस्थिति खुद देख जाय तो पता चले कि सच्ची वात क्या है।"

अिन सव प्रयत्नोके परिणामस्वरूप अिन्दुलाल याज्ञिक जनवरी मासमे आये और झालोद-दाहोदकी स्थिति आखो देख गये। वम्वअीसे सर पुरुषोत्तम-दास तो न आ सके, मगर अुन्होने अपने मुनीमको अकालकी परिस्थितिके विषयमे सच्ची जानकारी प्राप्त करनेको भेजा। अिसके सिवाय भारत सेवक

समाजके श्री अेन० अेम० जोशी भी आ पहुचे। अिन सबको सुखदेवभाअीने कुछ खास खास गावोमे घुमाया और सब कुछ आखो दिखलाया। बाहरसे आये हुअे मुनीमने जाचके दौरानमे यह भी देखा कि तहसीलदार और दूसरे अफसर जुवार, मक्की वगैराका निजी व्यापार करते हैं और अूचे भावो पर निकास करके अच्छी-सी रकम कमा रहे है। अिसलिअे वे नही चाहते थे कि यहा अकाल घोषित हो और अनाजका आना-जाना बन्द हो। सर पुरुषोत्तमदासके मुनीमने यह सब आखो देखा और अुसे विश्वास हो गया। बम्बअी जाकर अुसने सर पुरुषोत्तमदासको अपनी रिपोर्ट देकर कहा कि सुखदेवभाअी कहते हैं सो अक्षरश सच है। लोगोकी परेशानीका पार नही है। गावोमें भीलोकी स्थिति अत्यत कगाल बन चुकी है। दूसरी तरफ अिस स्थितिसे लाभ अुठाकर अफसर लोग गुप्त व्यापार कर रहे हैं।

सर पुरुषोत्तमदाम पर अिस बातका काफी असर हुआ। अिसके सिवाय अुन्हें श्री जोशी तथा दूसरे कार्यकर्ताओसे भी अैसे विवरण मिले। अिन्दुलाल याज्ञिकने तो पचमहालसे लौटनेके बाद अकालजन्य परिस्थितिके बारेमें और अुसमें कर्मचारियो द्वारा दिखाअी गअी लापरवाहीके सबधमे बडे अुग्र लेख लिखे। सर पुरुषोत्तमदास बम्बअीके गवर्नरसे मिले और अुनके साथ अिस प्रश्नकी चर्चा की। परिणाम यह हुआ कि पचमहालसे स्वार्थी कर्मचारियोका तबादला हुआ और कष्ट-निवारण कार्य तेजीसे चलनेके लिअे कदम अुठाये गये। खुद गवर्नर भी पचमहालके अकाल-ग्रस्त अिलाकेको देखने जा पहुचे और अन्तमें वहा अकाल घोषित करके राहतके तमाम काम जारी कराये।

अिधर अिन्दुलाल याज्ञिक और बम्बअीकी समितिने भी जनताकी तरफसे कष्ट-निवारण कार्य शुरु कर दिया। दाहोदमे स्थानीय लोगोकी मददसे अेक कष्ट-निवारण-समितिकी स्थापना की गअी और अुसके द्वारा जानवरोको घास और लोगोको रियायती भावो पर सस्ता अनाज मुहैया करनेकी व्यवस्था आरभ की गअी। सुखदेवभाअी अुसके मत्री बने और अिस प्रकार कार्य शुरू हुआ।

अिस अर्सेमे ठक्कर साहब (बापा अुस समय अिसी नामसे प्रसिद्ध थे) जमशेदपुरमे काम करते थे और वहाके मजदूरोके मकानोके निर्माण-कार्यके लिअे जरूरी चीजे खरीदनेके लिअे बम्बअी आये थे। अुन्होने अखबारोमें पचमहालके अकालके विवरण देखे और अुन्हे लगा कि अिस काममे अुन्हे स्वय कुछ न कुछ करना चाहिये। गाधीजीने भी अिस सम्बन्धमे अुन्हे लिखा था। अिसी बीच सर पुरुषोत्तमदाससे अुनकी किसी कामके सिलसिलेमें भेंट हुअी तो अुन्होने भी ठक्कर साहबका ध्यान खीचकर कहा,

"मि० ठक्कर, यह आपका विपय है। आप जैसेको अेक वार वहा हो आना चाहिये। वहा तत्काल कष्ट-निवारण कार्य करनेके लिअे अेक स्थानीय समिति वनाअी गअी है और सुखदेव त्रिवेदी नामक अेक अुत्साही सज्जन यह सव काम कर रहे है। फिर भी अुन्हे आप जैसे प्रौढ और कुशल सेवकके पथ-प्रदर्शनकी जरूरत है।"

ठक्कर साहवके मनमे यह विचार वहुत दिनोसे चक्कर काट रहा था। अिस पर गाधीजी जैसेकी सूचना मिली, सर पुरुषोत्तमदास जैसे प्रतिष्ठित आदमीका आग्रह हुआ और भारत सेवक समाजकी मजूरी भी मिल गअी, अिसलिअे अुन्होने जल्दीसे जल्दी पचमहाल जाना तय किया। और वम्बअी समितिके विशेष प्रतिनिधिके रूपमे अुन्हे अकालकी स्थिति आखो देखने, सरकारी राहत-काम होते हुअे भी जनताकी मददकी जरूरत है या नही, अिसके तथ्य अिकट्ठे करके रिपोर्ट पेश करने और राहतका काम अधिक व्यवस्थित करनेके लिअे पचमहाल भेजा गया।

१९१९ के मार्च मासमे श्री अमृतलाल ठक्कर पहले-पहल पचमहाल आये। आकर दाहोदमे तालावके किनारे स्थित धर्मशालामे, जहा कष्ट-निवारण-समितिका कार्यालय था, डेरा डाला। नहा-धोकर थकान मिटानेके वाद सवसे पहला काम दाहोदकी कष्ट-निवारण-समितिसे मिलनेका किया। अुससे पचमहालके अकाल-ग्रस्त तालुको दाहोद और झालोदकी परिस्थितिकी कल्पना प्राप्त कर ली। स्थानीय अफसरोसे भी मिले और अुनसे व्यौरा जान लिया। कार्यकर्ताओमे प्रत्येकसे वारीक और छोटी छोटी वाते पूछकर प्रारभिक जानकारी जुटा ली और वादमे स्थानीय कार्यकर्ताओको साथ रखकर अपने दौरेका कार्यक्रम तैयार किया।

पचमहालमे अुस समय रेलमार्ग वहुत थोडा था और भीतरी भागोमे आने-जानेके लिअे मोटर, तागा अथवा वैलगाडीका ही अुपयोग हो सकता था। ठक्करवापाने अुस समय मोटरमे सफर करना तय किया होता तो अिसमे कुछ वेजा नही माना जाता। परन्तु वापाने सार्वजनिक सेवाका प्रथम पाठ अपने पिताजीसे ही सीखा था। किफायत, शरीरश्रम और काया-कष्ट अुनके लिअे सेवाके अनिवार्य अग थे। अिसलिअे जिसमे कमसे कम खर्च हो वह वैलगाडी ही अुन्होने पसन्द की।

प्रवासकी तैयारीके तौर पर ठक्कर साहवने अपने अेक दो जोड अधिक कपडे, सादा विस्तर, डायरी लिखनेकी नोटवुक, सफरी भोजनका डव्वा और लोटा-डोर साथमे लिया। अिसके सिवाय अकाल-पीडितोमे वाटनेके लिअे सूती खेस, चादर तथा स्त्रियोके लिअे तैयार सिले हुअे कपडोकी गाठें

ली। अिस प्रकार तमाम तैयारी करके वापाने दाहोद-आलोदके गावोका दौरा शुरू किया।

ठक्कर साहव गाडीमे वैठते ओर भील-सेवा-मडलके सेवक श्री सुखदेवभाअी अुनके गाडीवान वनकर गाडी चलाते। थोडे ही समयमे दोनोकी तान मिल गअी। ठक्कर साहव अुन्हे गावोके वारेमे, वहाके लोगोके वारेमे, भीलोके जीवनके वारेमे अनेक प्रश्न पूछते और सुखदेवभाअी अुनके अुत्तर देते। वर्षा-हीन वर्षके वादकी ग्रीष्म ऋतु आगकी तरह धधक रही थी और गरम लू चल रही थी। परन्तु अिस अुजाड और वीरान प्रदेशमे ये दोनो मानव वातोमे अिनने तन्मय हो जाते कि दोनोमे से अेकको भी अिस वरसती आगका खयाल न रहता। जव कभी वातोसे थक जाते, तो ठक्कर साहव अिस अुजाड जगलमे गहरे स्वरसे अेकाध भजन गाते अथवा 'ज्या ज्या नजर मारी ठरे यादी भरी त्या आपनी' (जहा जहा मेरी नजर जाती है वहा आप ही आप दीखते है।) यह कलापीका अीश्वर-स्तुति सम्वन्धी काव्य जोरसे गाकर सूखे सुलगते निर्जन वनमे भी अीश्वरका दर्शन करते। सफरमे खानेका वक्त हो जाता अथवा भूख लगती तव किसी वडे पेडके ठूठके नीचे (हरे पेड तो रहे नही थे) गाडी छोड देते और साथमे रखा हुआ खोपरा और गुड अथवा रोटी ओर गुड खाकर पेटका भाडा चुकाकर पानी पी लेते और फिर आगे वढ जाते।

अिस प्रकार वाते करते जाते, धरती और जलते हुअे आकाशके वीचके गरम वातावरणमे यात्रा करते जाते, अीश्वरके गुण गाते जाते, स्थानीय परिस्थितिकी जानकारी प्राप्त करते जाते और अकाल-पीडितोकी सहायता करते जाते।

हर गावमे जहा जहा जाते वहा गावके लोगोसे मिलते, अनाज वगैरा की पूछताछ करते। घरमे कितने आदमी है? आमदनी क्या है? खर्च कितना है? कैसे गुजर करते थे? अव कैसे काम चल रहा है? अित्यादि वारीकीसे किन्तु प्रेम और सहानुभूतिपूर्वक पूछते और जहा मदद देने जैसा लगता वहा अनाज, कपडो और कम्वलोकी सहायता देते।

वैलगाडीसे प्रवास कर रहे थे, अिसलिअे सारे प्रदेशका दौरा जल्दी तो कैसे होता? रोज आठ-दस मील और कभी कभी अधिकसे अधिक वारह-पद्रह मील तय कर लेते। और रोज अेक अथवा कभी कभी दो गावोका दौरा कर पाते। अिस प्रकार प्रवास धीरे-धीरे होता था परन्तु जितना काम हुआ अुतना वहुत निश्चित और ठोस होता गया।

अिस प्रकार ठक्कर साहबने अपने अिस प्रथम प्रवासमे दाहोद और झालोद तालुकोके बहुतसे गावोका दौरा किया। कोअी दस दिनमे अुन्होने लगभग १५० से अधिक मीलका सफर किया और कुल मिलाकर ११ कष्ट-निवारण केन्द्रोकी जाच की और सैकडो अकाल-पीडितोके सहायक बने।

सफरके दौरानमे अुन्होने कार्यकर्ताओ, राजकर्मचारियो और लोगोके साथ जिस ढगसे काम किया, अुससे अुन सबका अुन्होने खूब प्रेम और विश्वास सम्पादन किया। सुखदेवभाअी तो ठक्कर साहबके कार्य और सह-वाससे अितने अधिक प्रभावित हुअे कि बात ही न पूछिये। प्रवासके दिनोमें ठक्कर साहबका सबसे ज्यादा सम्पर्क और परिचय अिन्हे हुआ था, और वह भी निकटसे। अुनका पितातुल्य वात्सल्य, अुनकी सहानुभूतिभरी बाते, सादा और कष्टसहिष्णु रहन-सहन, बालक-जैसा निष्पाप हृदय और गरीबोके प्रति निर्व्याज प्रेम — अिन सब गुणो द्वारा सुखदेवभाअीका हृदय अुन्होने प्रथम प्रवासमे ही जीत लिया। अितना ही नही, परन्तु अकालके कामके बारेमे सुखदेवभाअीकी चिन्ता और भार भी हलका कर दिया।

सुखदेवभाअी और ठक्कर साहबके बीच अिस पहली यात्रामे ही जो प्रीति बध गअी सो हमेशाके लिअे बध गअी। अिसके बाद वह कभी नही टूटी, बल्कि अुत्तरोत्तर बढती ही गअी। दोनोको अेक-दूसरेका स्वभाव, रहन-सहन वगैरा अच्छी तरह पसद आ गया।

सुखदेवभाअी अिससे पहले अकालके सिलसिलेमे काफी नेताओके ससर्गमे आये थे। अकालके सम्बन्धमे वे अिन्दुलाल याज्ञिक जैसे अुस समयके प्रखर लोकसेवक और राजनैतिक नेतासे मिले थे। सर पुरुषोत्तमदास जैसे प्रमुख सुधारक और सरकार पर भी प्रभाव रखनेवाले प्रतिष्ठित सज्जनसे मिले थे। अिनके सिवाय और भी कुछ नेताओसे मिले थे। अिन सब नेताओने अुनके काममे दिलचस्पी ली, सहानुभूति दिखाअी और अुनके कार्यका प्रचार किया, आर्थिक सहायता भी की। परन्तु अुनके कामका सारा बोझ अुनके कधेसे अुतारकर अपने कधे पर रख लेनेवाले तो ठक्कर साहब ही हैं, यह प्रतीति अुन्हे अिन ग्यारह दिनोके सहवासमे ही हो गअी। अिसलिअे जब ग्यारह दिनके बाद जुदा होनेका समय आया तब पता नही क्यो अुन्हे अैसा दुःख हुआ मानो अुनका पथप्रदर्शक पिता जा रहा हो। अुन्होने भारी हृदयसे ठक्कर साहबको विदा दी।

दाहोदसे ठक्कर साहब बम्बअी गये और पचमहालके अकालकी स्थितिके सम्बन्धमे अपनी खुदकी जाच और जानकारीकी रिपोर्ट तैयार करके बम्बअीकी

समितिके सामने पेश की। अुसमें अिन सब बातोका ब्यौरा दिया कि यह अकाल कैसे शुरू हुआ, शुरूमे सरकारी कर्मचारियोने कैसी भूले की, कैसी गडबडें मचाअी और अुसके बाद बहुत देर हो चुकने पर अुन भूलोको सुधारनेके कैसे प्रयत्न किये और अब सरकारी तथा गैरसरकारी राहत-काम कैसे हो रहे है। आगे तीन-चार महीने काम किस ढगसे होना चाहिये, अिस सम्बन्धमे अपनी तैयार की हुअी योजना भी पेश की। अकाल सम्बन्धी सारी परिस्थितिकी समीक्षा करनेवाला अेक लेख तैयार करके भारत सेवक समाजके मुखपत्र 'सर्वेन्ट्स ऑफ अिंडिया' मे प्रकाशित किया। अिस प्रकार अुन्होने पचमहालके अकालके प्रश्नमे और कष्ट-निवारण कार्यमे जनताकी दिलचस्पी पैदा की और धनवानोके हृदय अिस ओर मोडनेके लिअे प्रयत्न किये।

अकालकी स्थितिका खयाल कराते हुअे अुन्होने लिखा कि, "पच-महाल जिलेके पूर्वी भाग अर्थात् दाहोद सब-डिविजन पर अकालका सबसे बुरा असर हुआ है। अिससे केवल दाहोद और झालोद तालुकेमे ही घूमनेकी मैंने मर्यादा बना ली थी। पशुओमें अकालका बहुत बडा सकट पाया गया। यद्यपि अुनकी मृत्युसख्या अभी तक बहुत बढी नही है, फिर भी अुनके शरीर अिस समय हड्डियो और पसलियोके पजर जैसे बन गये है। मालूम होता है कि जिलेके अधिकारियोने अिस परगनेमें पशुसकटके विस्तार और मात्राका अदाज लगानेमे पहलेसे ही भूल की। अिसलिअे सरकारने घासकी जो मात्रा अिस प्रदेशको दी है, वह अुसकी जरूरतके हिसाबसे बहुत ही कम है। अिसलिअे कुछ किसानोको घास देनेके बजाय सरकारकी तरफसे घास खरीदनेके लिअे रुपया पेशगी दिया जाता है। लोगोको जो राहत दी जाती थी वह भी अमुक समय तक तो काफी नही होती थी। और नकद दान द्वारा जो राहत देनी थी अुसमे भी अेकाध महीनेकी देर हो गअी। अिस प्रदेशके मेरे दौरेके समय तक भी अकाल-पीडित मजदूरो पर आधार रखनेवाले अुनके कुटुम्बीजनो अर्थात् बालको, वृद्धो — जो मुफ्त राहत पानेके हकदार है — की सख्या भी अनावश्यक नियत्रण लगाकर मर्यादित कर दी गअी थी। परन्तु पिछले महीने अिस स्थितिमे काफी सुधार किया गया है और अिस समय अकाल-निवारणके काममे जो अफसर लगे हुअे है अुन्हे यदि अुनकी भूले बताअी जाती है तो वे भूल-सुधार करनेमें बहुत देर नही लगाते।"

गवर्नरके हाल ही के दाहोद आगमन और अुस अवसर पर अुनके दिये हुअे भाषणके कुछ मुद्दोकी आलोचना करते हुअे अुन्होने लिखा

"फसल न पकनेके कारण भीलोको भारी दु ख सहन करना पडा हे। परतु अुससे भी वडा दु ख तो अुनके पशुओको सहन करना पडा है। दाहोदमे गवर्नरने म्युनिसिपल वोर्डके मानपत्रके जवावमे भील किसानोको खराव सालोके लिअे घासका ढेर जमा कर रखनेकी जो सीख दी है, वह यो तो वडी अच्छी और सपूर्ण है, परतु मुझे कहना चाहिये कि वह गलत जगह दी गअी है। खेडा जिलेके पाटीदार या काठियावाडके कुनवीको वह सलाह दी जाय तो अुसका कुछ व्यावहारिक मूल्य होता हे, मगर जब भीलको दी जाती है तो वह अुसे बिलकुल निकम्मी समझकर फेक देता है।

"दाहोद-झालोद तालुकोकी मेरी यात्राके समय घासका जो सग्रह रखा गया था वह भी खत्म हो गया था। वन-रक्षा-विभागमे जो पेड थे वे भी पत्तोके अभावमे सूखे ठूठ भर रह गये थे, और किसान तो चिन्तातुर होकर अिसकी प्रतीक्षा कर रहे थे कि सरकार परोपकारी सस्थाओसे घास खरीदकर अुन्हे सस्ते भाव पर देगी।"

माल-विभागके अधिकारियोकी भूलोका अुल्लेख करते हुअे अुन्होने वताया कि, "भीलोके दुर्भाग्यसे अुस समयके माल-कर्मचारियोने अिस वातका वहुत वडा अन्दाज लगा लिया कि अिस प्रदेशमे तत्काल वहीका वही कितना घास मिल सकता है। जब परिस्थिति विगडी और घास प्राप्त करनेमें अत्यत विलम्ब हो गया, तब कही अुनमे समझदारी आअी। अिस प्रकारकी नादानी और गडबडका बुरा असर मअी और जूनके महीनोमे अच्छी तरह दिखाअी देगा।"

अकाल-सकटके स्वरूप और विस्तारका पृथक्करण करते हुअे ठक्कर साहबने लिखा था

"लोगोमे अभी तक अकालका सकट बहुत बडा नही है, परतु वे वडी सख्यामे कष्ट-निवारण केन्द्रोमे अिकट्ठे होते है और रोजी पानेके लिअे सुवह शाम दो से छ मील तक चलते है। अतिम आकडोके अनुसार १५,००० मनुष्योको कष्ट-निवारणके केन्द्रोमे काम पर लगाया गया था और लगभग १२,००० मनुष्योको मदद दी गअी थी। अुनमे से अधिकाश दाहोद-झालोदके दो तालुकोके ही थे। दाहोद-झालोद तालुकोकी आवादी १,२५,००० है अर्थात् आवादीका २० फीसदी या पाचवा भाग सरकारी राहतकी सूचीमे दर्ज हुआ था। यह वहुत वडा अनुपात माना जायगा।"

गैरसरकारी कष्ट-निवारण कार्य किस ढगसे हो रहा हे, अिसकी कल्पना देकर कष्ट-निवारण कार्यमे लगे हुअे विद्यार्थियो, स्त्रियो, शिक्षको और व्यापारियोको श्रद्धाजलि देते हुअे ठक्कर साहबने लिखा.

"मौजूदा अकालमे अकाल-निवारणके सरकारी प्रयत्नोमे गैरसरकारी सस्थाओके प्रयत्न काफी मात्रामे पूरकका काम देते है। वम्वअी-कोप अकाल पीडित जिलोको सिर्फ रुपया ही नही देता, परतु अपने प्रतिनिधियोको भी भेजता है। वे स्थानीय समितियोको जानकारी देते है। ये समितिया मूल कीमत या सस्ते भाव पर लोगोको माल या घास देती है। साथ ही सरकार निराधारोको जो मुफ्त अनाज और कपडा वाटती है अुसमे पूरक सहायता देती है अथवा पशुओका मुफ्त केन्द्र चलाती है। पचमहालके दाहोद-झालोद परगनोमे अैसी तीन समितिया है। अिनके सिवाय मुक्ति-सेनाके कर्मचारी और दूसरे मिशनरी भी लोगोका दु ख दूर करनेके लिअे काम करते है।

"गरीब किसानोके गाय, वैल, भैस वगैरा पशुओको वचा लेनेके लिअे मुफ्त अथवा नाममात्रका खर्च लेकर दु खके दिन पूरे न हो जाय तव तकके लिअे पशुकेन्द्र चलाये जाते है। वकील और शिक्षक अपना सारा फालतू वक्त अिस काममे देते पाये जाते है । व्यापारी भी लोगो और पशुओके दुखदर्दमे अुनकी सेवा करनेके लिअे अपने व्यापारिक कामकाजकी अपेक्षा अिस कार्यको तरजीह देते है। और ये दयाके कार्य करनेके लिअे कुछ सरकारी नौकर त्यागपत्र देकर नौकरी छोडते देखे जाते है। जव जव अकाल-पीडित प्रदेशोमे सामाजिक सेवाका काम करनेके लिअे माग की जाती है, तव कालेजके विद्यार्थी अपने नाम लिखानेमे होड करते है। अुच्च स्थान भोगनेवाली महिलायें, जो आम तौर पर शहरी जिन्दगीकी आदी होती है, भूखे और अर्ध-नग्न अकाल-पीडितोको राहत पहुचानेके लिअे वैलगाडीका सफर करके अेक गावसे दूसरे गावका दौरा करती है। अर्ध-नग्न स्त्रियोके दृश्य अिन दिनोमे साधारण हो गये है। गावोमे दिखाअी देनेवाली अिस दारुण गरीवीके वीच अपने मानव-वधुओकी सेवा करनेकी अिच्छा ही वडी भारी राहत है और भविष्यके लिअे वहुत वडी आशा दिलाती है।"

अिस प्रकार वम्वअी समितिका सौंपा हुआ कार्य तत्कालके लिअे निपटाकर ठक्कर साहव जमशेदपुर लौट गये और वहाके मजदूरोके मकानोका काम पूरा करनेमे लग गये। अिस वीच कृशकाय अर्धनग्न स्त्री-पुरुष और नगे-भूखे वालक तो अुनकी आखोके आगे नाच ही रहे थे। अिसलिअे वहाका काम तेजीसे निपटाकर तथा वाकी रहा अपने साथी कार्यकर्ताओको सौपकर अप्रैलके अन्तमे वे अपने वचनके अनुसार पचमहाल जा पहुचे और अकाल-निवारण कार्यका सचालन फिर हाथमे ले लिया। अव तक अुनकी वनाअी हुअी रूपरेखाके अनुसार ही यह काम हुआ था और अुनके अनुरोध पर मोतीभाअी अमीनने जिन तीसेक कालेजके विद्यार्थी भाअी-वहनोको कष्ट-

निवारण कार्य करनेके लिअे भेजा था, वे यह काम सभाल रहे थे। अिस प्रकार अुनका काम काफी हल्का हो गया था। आगेका अुनका मुख्य कार्य प्रवास द्वारा प्रत्येक केन्द्रका निरीक्षण करना और केन्द्रीय कार्यालयका सचालन करना था। अिस कार्यके लिअे वे थोडे दिन दाहोदमें रहते और फिर वही बैलगाडी भंरकर सुखदेवभाअी तथा अन्य अेक दो साथियोको लेकर दौरे पर निकल पडते। अिस वारके दौरेमे भी अुन्हे कितने ही अनुभव हुअे और कितनी ही वाते सुननेमे आअी। भील लोगोकी स्थितिके वारेमे और राज-कर्मचारियोकी लापरवाही और तेजमिजाजीके वारेमें भी अुन्हे काफी जानने और सुननेको मिला। अिसमे धोला खाखरा गावकी घटनाने तो अुनका पुण्य-प्रकोप प्रज्ज्वलित ही कर दिया।

ठक्करवापा जिन दिनो दौरा कर रहे थे अुन्ही दिनो किसीने अुन्हें अुस घटनाके बारेमें कहा था। वह घटना अिस प्रकार हुअी थी

धोला खाखरा गावमे सडक वनानेका अेक कष्ट-निवारण कार्य हो रहा था। दोपहरका समय था। अुस समय अेक ओवरसियरको चाय पीनेकी अिच्छा हुअी। अुसने सडकके अेक जमादारसे कहा, "जा, गावसे दूध ले आ।" जमादार दूध लेने गया। परतु दूध नही मिला तो भटक भटकाकर खाली हाथ लौट आया।

यह देखकर साहवने गुस्सेमे कहा, "दूध क्यो नही लाया?"

जमादारने अुत्तर दिया, "साहव, सारा गाव छान डाला परतु कही दूध नही मिला। ढोरोको खानेको कुछ नही मिलता तव दूध कहासे दे?"

"मै यह कुछ नही जानता। चाहे जहासे दूध लेकर आ।"

"कहासे लाअू साहव? देखिये तो गरमीमे सदा हरे रहनेवाले ढाकके पत्ते तक अिस वार सूख गये है।"

"तो तेरी औरतको दुहकर दूध ले आ।"

अैसा अपमानजनक और हल्का जवाव सुनकर जमादारको खूब आघात पहुचा। परतु वेचारा अेक गरीव नौकर था। मन मारकर वैठ रहा। ठक्कर साहवने अुस ओवरसियरके अिस अुद्दण्ड व्यवहारके वारेमे सुना तो वे वहुत खिन्न हुअे और अुस ओवरसियरको वुलाकर खूब फटकारा।

सरकारी ढगसे होनेवाले अिन सव कष्ट-निवारण कार्योकी खामियोकी तरफ ठक्करवापाका ध्यान तो पहलेसे ही था। वहा कष्ट-निवारणका कार्य करने आनेवाले कर्मचारी भी हुकूमतको भूल नही सकते थे। वे पालकियोमे वैठते, हुक्म देते, और साहवोकी तरह रहते थे। अुनमे मानवता और सहानुभूति थोडी ही होती थी। यह सव देखकर सरकारी राहत-कामकी त्रुटिया

अुनकी दृष्टिमे कभीसे आ चुकी थी। परतु धोला खाखराकी घटनाके बाद गैरसरकारी कष्ट-निवारण कार्यकी अुपयोगिता और अनिवार्यता अुन्हे अच्छी तरह समझमे आ गअी।

तबसे बापाका दृढ निश्चय हो गया कि जब जब अकालका सकट खडा हो तब सरकार भले ही सारा काम अपने कर्मचारियो द्वारा कराये, तो भी सार्वजनिक सस्थाओ द्वारा ही अैसे काम होने चाहिये।

धोला खाखरासे भी अधिक करुण और अुनके हृदयको हिला देनेवाली अेक घटना पचमहालके अेक गावमे १९२२ के अकालके दिनोमे हुअी थी। अुस समय भी बापा पचमहालके अकालग्रस्त प्रदेशमे कष्ट-निवारण कार्य करने गये थे।

तब झालोद तालुकेके गावोमे पीडितोको राहतका अनाज और कपडे बाटते-बाटते अेक दिन भर-दुपहरीमें वे शकरपुरा गावमे जा पहुचे।

यह गाव बहुत अूचाअी और सूखी जमीन पर बसा हुआ है। अुसकी धरती पथरीली और सख्त है। अुस वर्ष खेतीमे अिस गावमे कोअी खास पैदावार नही हुअी थी। लोग भी बहुत ही गरीब थे। ठक्कर साहब वहाकी बिखरी हुअी आबादीमे घर-घर जाकर अनाज और कपडे वगैराका वितरण कर रहे थे। बाटते बातते वे अेक झोपडीके पास जा पहुचे। अुन्होने देखा कि अुनके आगमनके कारण अेक स्त्री जल्दीसे झोपडीके खुले भागमे हटकर अुसके अधेरे कोनेमे घुस गअी और द्वार बन्द कर लिया।

ठक्कर साहबने खडे खडे आवाज दी, "अे बहन, बाहर आओ। अन्दर क्यो बैठी हो?" परतु स्त्री बाहर नही निकल रही थी।

ठक्कर साहबको जरा आश्चर्य हुआ। उन्हे खयाल हुआ कि राहतका अनाज और कपडा लेने तो उल्टे सामनेसे लोग दौडकर आते है, लेकिन यह स्त्री जरा भी हलचल क्यो नही करती?

ठक्कर साहबने दुबारा अुसे चिल्लाकर बुलाया, "अरी बहन, बाहर तो आओ। तुम्हे कुछ अनाज, कपडे वगैरा चाहिये? हम समितिके आदमी बाटने आये है।"

तब भीतरसे स्त्री भीलोकी भाषामे कुछ बोली, परतु बाहर नही निकली।

ठक्कर साहबको आश्चर्य हुआ और अुन्होने सुखदेवभाअीसे पूछा "यह क्या कहती है, सुखदेव? अिससे पूछो तो सही कि बाहर क्यो नही निकलती?"

तव सुखदेवभाअीने, जो भील लोगोकी वोली अच्छी तरह समझते थे, खोलकर कहा

"स्त्री यह कहती है कि मदद तो चाहिये, मगर मै वाहर कैसे आअू? मेरे पास लाज ढकने लायक भी कपडे नही। झोपडीको ओढकर वैठी हू।"

यह सुनकर ठक्कर साहव तो स्तव्ध हो गये! अुन्होने तुरत ही लहगा, साडी वगैरा कपडे दरवाजे और झोपडीके छप्परके वीचके खुले भागमे से अन्दर फेके और दोनो पीठ फेरकर खडे रहे। थोडी देरमे कपडे पहनकर स्त्री वाहर आअी। वह वेचारी वृद्धावस्थाके किनारे पहुच गअी थी। अकालके कारण अुसके हाडचाम सूख गये थे। अिसलिअे नये पहने हुअे अिन कपडोमे वह नकली औरत-सी लगती थी। यह करुण दृश्य देखकर ठक्करबापाका हृदय द्रवित हो अुठा। अुनकी आखोसे आसू निकल पडे!

ठक्कर साहव जैसे देशकी सेवामे समर्पित मिशनरीके पचमहालकी धरती पर गिरे वे ही आसू आगे चलकर वापाका हृदय अिस धरतीके साथ जोड देनेमे कारण वने! भीलोकी सेवाके सकल्पका वीज किसी अनजाने क्षणमें अुनकी हृदय-भूमिमे अुसी दिन वोया गया। अुस पर आसुओका सिचन हुआ और अुससे भील-सेवा-मडल जैसा वटवृक्ष पचमहालकी सूखी धरती पर जम गया। अुसकी शीतल छायाका लाभ लाखो भील ले चुके है और आज भी ले रहे है। यह सव कैसे हुआ, अिसका व्यौरा आगे देखेगे।

१४

काठियावाड़मे खादी-कार्य

१९२० मे गाधीजीके नेतृत्वमे कलकत्ता और नागपुरकी काग्रेसोमें असहयोगका प्रस्ताव पास हुआ। अिसके वाद अुसे अमलमे लानेके लिअे सारे देशमें अुत्साहकी लहर फैल गअी। गाधीजीका गुजरात अिससे अलग कैसे रह सकता था? धारासभाओ, अदालतो और स्कूल-कालेजोके वहिष्कारके साथ विदेशी वस्त्रके वहिष्कार और स्वदेशीके प्रचारका आन्दोलन भी जोरोसे आगे वढ रहा था। सितम्वर मासमे कलकत्तेमे काग्रेसका अधिवेशन हुआ, तभीसे गाधीजीने देशके सामने अेक कार्यक्रम रखा था। अुन्होने कहा था कि सारे देशमे धारासभाओका वहिष्कार, विदेशी कपडेका वहिष्कार, सरकारी स्कूल-कालेजोका वहिष्कार तथा सरकारी अदालतोका वहिष्कार — ये चार वहिष्कार कारगर हो तो भारतके लोगोको अेक वर्षमे स्वराज्य मिल जाय। अिसके

सिवाय अुन्होंने तिलक स्वराज्य कोषमें अेक करोड रुपये अिकट्ठे करने और बीस लाख चरखे चलानेका भी अेक कार्यक्रम देशके समक्ष रखा था। नागपुरके वार्षिक अधिवेशनके बादसे वे यह बात बार बार कहते रहे थे और अिस सिलसिलेमें भाषणों और लेखों द्वारा जनतामें अुत्साह भर रहे थे।

गुजरातने गांधीजीका यह कार्यक्रम खूब अुत्साहसे अपना लिया था। और अपने हिस्सेमें आनेवाले काममें भी ज्यादा कर दिखानेकी अुसकी अुमंग थी। तदनुसार गुजरातने अपने हिस्सेमें आनेवाले दसके बजाय पंद्रह लाख रुपये अिकट्ठे किये, कांग्रेसके सदस्य बडी संख्यामें बनाये और चरखेका कार्यक्रम पूरा करनेके लिअे भी प्रयत्न आरंभ कर दिया।

अिस सारे कार्यक्रममें गांधीजी ज्यादा जोर तो चरखे पर ही दे रहे थे। क्योंकि वे जानते थे कि रुपया देनेमें देश बहादुर है, अिसलिअे रुपया तो आसानीसे मिल जायगा। और सदस्य बनानेमें भी बहुत कठिनाअी नहीं होगी। असली काम चरखेका कार्यक्रम अमलमें लानेका था। चरखेमें अुन्हें स्वराज्यके दर्शन हुअे थे। देशके सारे दुःखदर्दोंके लिअे वे चरखेको ही रामबाण औषधि मानते थे। 'सूतके धागेमें स्वराज्य' का सूत्र अुन्होंने देश भरमें व्याप्त कर दिया था।

अिस अर्सेमें कुछ सुखी श्रीमान लोग गांधीजीके अिन नये नये प्रयोगों और अुनकी प्रवृत्तियोंको दिलचस्पीके साथ देख रहे थे। गांधीजीके कामकी तरफ अुनकी हमदर्दी थी। और धंधेके क्षेत्रमें लाखोंका व्यापार करते हुअे भी व्यक्तिगत जीवनमें वे गांधीजीके स्वदेशीके सिद्धान्तोंको मानने और खादीको अपनाने लगे थे। गांधीजीकी राष्ट्रव्यापी प्रवृत्तिमें वे खुद भी कुछ हाथ बटा सकें तो अच्छा है, यह अुमंग अुनके दिलोंमें रहती थी। अिन धनिकोंमें कलकत्तेके चोरवाडवाले श्री जीवनलाल मोतीचंद और श्री हरखचंद मोतीचंद तथा अमरेलीके श्री रामजी हंसराज कामानी मुख्य थे। रामजीभाअी अुस समय अमरेलीमें रहते थे। अुन्होंने जीवनलालभाअीको लिखा कि सौराष्ट्रमें चरखे और खादीका पुनरुद्धार हो सकता है, परंतु योग्य आदमी हो तो यह काम सुन्दर ढंगसे सफल हो सकता है। जीवनलालभाअीके मनमें भी अिसी प्रकारके विचार चक्कर लगा रहे थे। अिसलिअे अुनके मनमें यह सुविचार अुत्पन्न हुआ और मन ही मन अुन्होंने अेक संकल्प किया कि यदि काठियावाडमें यह काम शुरू किया जाय तो खादी अुत्पत्तिके लिअे वे अपनी पूंजीमें से अेक लाख रुपया बिना ब्याज लगा देंगे।

परंतु यह काम कौन कर सकता है? नया काम, नया क्षेत्र। अितनी बडी पूंजी यदि अनुभवहीन मनुष्योंके हाथोंमें पड जाय तो नष्ट हो जाय।

और जिस हेतुके लिअे यह कार्य करनेकी अुमग पैदा हुअी है वह हेतु भी सिद्ध न हो। यदि कुशल और अनुभवी होने पर भी अप्रामाणिक आदमियोके हाथोमे चली जाय तो रुपयेकी गडबड हो जाय, अधिकाश पूजी लोग खा-पी जाय, जनतामे अप्रतिष्ठा पैदा हो और खादी जैसे पवित्र कार्यको शुरू होते ही हानि पहुचे। यह सब विचार करने पर अुनकी नजर भारत सेवक समाजके श्री अमृतलाल ठक्कर पर पडी। अुन्हे लगा कि यदि ठक्कर साहव यह काम हाथमे ले ले तो जरूर सफलता और यश दोनो मिले।

जीवनलालभाअी ठक्कर साहवके परिचयमे अिससे पहले ही आ चुके थे। जमशेदपुर और अुडीसामे पिछले वर्ष अुन्होने जो कष्ट-निवारण कार्य किया था, अुसके वारेमे वे सव कुछ जानते थे। अुनकी सत्यनिष्ठा, सेवा-भावना, सादगी, किफायतशारी, सार्वजनिक धनकी पाअी-पाअीका अुचित अुपयोग करनेकी अुनकी आदत, हिसावकी सफाअी और सचाअी तथा पारदर्शक प्रामाणिकता वगैरा गुणोसे वे भलीभाति परिचित हो चुके थे। साथ ही अुनकी प्रवध सवधी कुशलताका भी अुन्हे पूरा परिचय मिल गया था। अिसलिअे ठक्कर साहवका खयाल आते ही अुनके मनमे जम गया कि अगर ठक्कर साहव अिस कामकी जिम्मेदारी सभाल ले तो अुनके लगाये हुअे रुपयेका अुचित अुपयोग होगा और अुसकी पाअी-पाअीका फल मिलेगा। जीवनलालभाअी गाधीजीके ससर्गमे आये थे और अुनके देशोपयोगी कार्यमे कभी कभी द्रव्यकी सहायता भी देते थे। अिसलिअे अुन्होने अपना यह विचार पत्र द्वारा गाधीजीको वताया और लिखा कि आपके कहे अनुसार खादीके कामको वेग मिले और काठियावाडमे चरखे चलने लगे, अिसके लिअे अेक लाखकी रकम विना व्याज लगानेका मैने सकल्प किया है। परतु यह कार्य किसी होशियार कार्यकर्ताको सौपा जाय तो ही सफल होगा। मेरी अिच्छा और शर्त यह है कि आप यह काम भारत सेवक समाजके श्री अमृतलाल ठक्करको सौपे। गाधीजीको जीवनलालभाअीका यह प्रस्ताव स्वीकार करनेमे किसी भी प्रकारकी आपत्ति मालूम नही हुअी। जैसे जीवनलालभाअी श्री ठक्करको अच्छी तरह जानते थे, वैसे गाधीजी भी अुनसे भलीभाति परिचित थे। दक्षिण अफ्रीकासे गाधीजी भारत आये और गोखलेजीसे मिले तथा ववअीमे समाजके कार्यकर्ता सदस्योके साथ अुनका परिचय हुआ, तभी श्री ठक्कर भी अुनसे मिले थे और गाधीजीकी सादगी, सयमी जीवन और प्रभावशाली व्यक्तित्वकी ओर आकर्षित हुअे थे। अुसके वाद दोनो यदा-कदा अेक दूसरेके सपर्कमे आते थे। जीवनलालभाअीका सुझाव न आया होता तो भी गाधीजीको श्री ठक्कर साहवसे अधिक योग्य, कुशल, कार्य-

निष्ठ और अनुभवी आदमी अिस कामके लिअे दूसरा शायद ही मिलता। अिसलिअे अुन्होने जीवनलालभाअीके अिस प्ररतावका स्वायत किया ओर श्री ठक्करको अिस वारेमे पत्र लिखकर काठियावाडमे खादी-अुत्पत्तिका काम सभाल लेनेकी वात सुझाअी। दूसरी तरफ जीवनलालभाअीने भी जव ठक्कर साहव कलकत्तेमे थे तव अुनसे रूवरू वात करके अपनी अिच्छा वताअी और गाधीजीका प्रिय खादी-कार्य हाथमे लेनेकी विनती और आग्रह किया।

ठक्कर साहवके लिअे तो अिनकार करनेकी कोअी वात ही नही थी। अुनके लिअे यह 'दधि वेचन और हरिमिलन अेक पथ दो काज' वाली वात थी। चरखे और खादीके द्वारा सौराष्ट्रके हजारो गरीवो और खास तौर पर अत्यजोकी सेवा होती थी और गाधीजीको प्रसन्न करनेवाला अुनका काम भी होता था। अिसलिअे अुन्होने भी जीवनलालभाअीकी अिस मागका स्वागत किया। यह काम करनेके लिअे भारत सेवक समाजकी मजूरी भी ले ली, और वादमे काठियावाडमे यह खादी-कार्य शुरू करनेके लिअे कितनी और कैसी गुजाअिश है, अिसकी जाच करनेके लिअे दौरे पर निकले। अुस समय ठक्कर साहवके अेक मित्र खादी-कार्य कर रहे थे। अुसका निरीक्षण करके खादी-अुत्पत्ति सवधी आकडे जमा करके यह अदाजी हिसाव लगाकर देखा कि प्रयोग सभव है या नही। और हिसावके अन्तमे यह चीज सभव मालूम होने पर अमरेलीमे केन्द्र रखकर अिस प्रयोगको अमलमे लानेकी योजना तैयार कर डाली।

ठक्कर साहवने तारवाडीके रास्ते पर कपोल वोर्डिगके पास अेक वडे दरवाजेवाला मकान किराये पर लिया और अुसमे नीचे खादी कार्यालय तथा अूपर सोने-वैठने व रहनेका स्थान रखा।

शुरूमे काम करनेवालोमे स्वय ठक्कर साहव, सेठ रामजी हसराज कामाणी, हरखचद भाअी, देवचदभाअी आडतिया और करसनदास चितलिया वगैरा थे। अिनके अलावा, वादमे श्री त्रिभुवनदास गौरीशकर व्यास भी कार्यालयमे वैतनिक कार्यकर्ताके रूपमे शरीक हो गये थे। अिस समय वे शिक्षा-विभागमे काम कर रहे थे और कुछ घटे कार्यालयमे देकर हिसाव-कितावका काम सभाल रहे थे। ये सव कार्यालयमे अेक ही कमरेमे वैठते और अुसका प्रवध करते थे।

भूतकालमे काठियावाडमे चरखे तो चलते ही थे। साथ-साथ हाथ-वुनाअीका अुद्योग भी खूव विकसित हुआ था। परतु वादमे चरखा वन्द हो जानेसे ये सारे जुलाहे पेटीका सूत — मिलका सूत — वुनने लग गये थे। काठियावाडमे खादीका काम शुरू हुआ अुस समय अमरेलीके आसपासके

प्रदेशोंमें अेक गजके अर्जवाला मोटा कपडा तो गांव-गांवमें बुना ही जाता था। शहरके कुछ व्यापारी मिलके सूतकी पेटियां मंगवाते और गांवोंमें हरिजन जुलाहे आकर अुनसे बुननेको ले जाते। अुस सूतसे वे छोटे अर्जका मोटा कपडा बुनते और अुसीको व्यापारीको देकर बदलेमें मजदूरी पाते थे। अिस प्रकारका हाथ-बुनाअीका काम अमरेली, धारी, चलाला, बगसरा, कुडला, लाठी और बासावड वगैरा जगहों पर खूब बडी मात्रामें होता था। परन्तु अब जो काम करना था वह तो हाथ-बुनाअीके साथ साथ हाथ-कताअीके अुद्योगका पुनरुद्धार करनेका था।

ठक्कर साहबने अिसके लिअे बडे पैमाने पर रुअीकी गांठें खरीदीं। अुन्हें पिंजारोंसे पिंजवाया तथा थोकबंद पूनियां तैयार कराकर और पैसे देकर कातनेका काम शुरू कराया।

अमरेली शहर और आसपासके गांवोंसे कितनी ही कत्तिनें अमरेली आने लगीं। जिनके पास चरखे नहीं थे अुन्हें नये चरखे तैयार कराकर दिये गये। जिनके पास पुराने चरखे थे अुन्हें घरकी छत परसे अुतरवाकर और अुनकी धूल झडवाकर मरम्मत करके चालू करनेकी व्यवस्था की।

स्त्रियां रोज खादी कार्यालयसे पूनियां ले जातीं और दूसरे दिन अुसका सूत कातकर दे जातीं। ज्यों ज्यों कामका विकास होता गया त्यों त्यों गांवोंमें भी नये नये केन्द्र खुलते गये। अमरेली, धारी, चलाला, लालपर, बगसरा, केरिया आदि गांवोंमें तो चरखा चलने लगा। अिनके सिवाय वढवाण, वीरमगांव जैसे राष्ट्रीय जागृतिके स्थानोंमें और वेरावल, धोराजी वगैरा छोटे शहरोंमें भी हाथ-कताअीका अुद्योग चलने लगा।

ठक्कर साहब अिस समय महीनेमें कुछ दिन मुख्य कार्यालयमें रहकर कार्य संचालन करते, योजना बनाते, हिसाब-किताबकी देखरेख रखते, पूनियोंसे शुरू करके सूत कतकर वापस आने और सूतसे खादी बुनकर तैयार होनेसे लगाकर अुसकी बिक्री तककी सारी व्यवस्था और प्रबंध देखते थे। रोजमर्राके अिंतजामी काममें कोअी विघ्न पैदा होता तो अुसे दूर करनेकी कोशिश करते और कार्यालयके कर्मचारियोंसे अच्छी तरह काम लेते। अिसके सिवाय वे कुछ समय अुत्पत्ति-केन्द्रोंमें दौरा करनेके लिअे रखते और वहां संचालकोंसे मिलकर अुनके काम और प्रश्नोंसे परिचित रहते। कार्यकर्ताओंको कोअी तकलीफ होती तो तुरन्त अुसे दूर करते। कातनेवाली स्त्रियोंकी भी कोअी शिकायत होती तो अुसे सुनते। जहां जहां केन्द्रकी संभावना होती वहां जाकर जांच करते और लोगोंमें खादीके बारेमें अुत्साह भरते। स्थानीय कार्यकर्ता खडे करते और नये नये केन्द्र शुरू करते।

अिस प्रकार धीरे धीरे काठियावाडमे पच्चीस या अुससे अधिक केन्द्र स्थापित किये जा चुके थे। काठियावाडमे अुस समय अेक भी अैसा स्थान नही होगा, जहा खादी-अुत्पत्ति आर चरखेकी पुन प्रतिष्ठाकी सभावना हो और अुसे चरितार्थ करनेके लिअे ठक्कर साहबने परिश्रम न किया हो। जिनमे से कुछ जगहोमे सफलता मिली, और कुछमे असफलता मिली। परतु ठक्कर साहब निरुत्साह हुअे बिना अपना कामकाज आगे बढाते ही रहे और चार मासके अन्तमे सौराष्ट्र-भरमे ५,००० चरखे जारी कर दिये।

अिस प्रयोगका ब्यौरा देते हुअे ठक्कर साहबने अुस समयके 'मर्चेण्ट्स ऑफ अिंडिया' के १६ जून, १९२१ के अकमे प्रकाशित हुअे अेक लेखमे लिखा, "कातनेवाली सब स्त्रिया ही होती है। वे किसानो, रोजाना मजदूरी पर काम करनेवाले लोगो और मजदूर वर्गोमे से आती है आर शहरोमे निम्न मध्यम श्रेणीके कुटुम्बोमे आती है। अिनमे से कुछ पर्देवाली औरते भी होती है, जो अपने घरोके बाहर नही जा सकती। अुनमे से हरअेक औसत दो आने रोज कमाती है। यह रकम कितनी ही छोटी और तुच्छ दिखाअी देती हो, तो भी अुन्हे आशीर्वाद-स्वरूप लगती है और जिन महात्माजीने चरखेका पुनरुद्धार किया अुन्हे वे हृदयसे आशिष देती है। यहा यह याद रखना चाहिये कि यह आय केवल अतिरिक्त आय है। रोजके दो आने बहुत नही गिने जा सकते। फिर भी अिन गरीब लोगोको जहा पहले कुछ नही मिलता था वहा अितनी छोटी अतिरिक्त आय भी अच्छी ही कही जायगी। अिस पत्रके १९ मअीके अकमे अेक सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्रीने लिखा था कि,

"'अेक गरीब किसान अथवा रोजाना मजदूरी पर कातनेवाले परिवारमे चरखेसे हो सकनेवाली आय लाखो कुटुम्बोमे भरपेट भोजन और अधूरे भोजनके बराबर फर्क कर देती है। मतलब यह है कि जिस परिवारको काफी आयके अभावमे अधभूखा या थोडा भूखा रहना पडता है, अुस परिवारमे चरखा जारी होते ही अुसे पेटभर खाना मिलने लायक आय बढाअी जा सकती है।'"

चरखेके कारण जैसे कातनेवालोको लाभ होता है, वैसे ही पिंजारो और जुलाहोको भी लाभ होता है। अिसका अुल्लेख करते हुअे आगे चलकर अुसी लेखमे बापाने लिखा

"कातनेवालोको पीजी हुअी रुअीकी पूनिया दी जाती है। पिंजाअीका खर्च अेक आना सेर आता है। अिससे अेक साधारण शक्ति रखनेवाला पिंजारा दो रुपये रोज तक कमा सकता है। सूत गावके जुलाहोको, जो जातिसे ढेढ होते है, दिया जाता है, क्योकि दूसरे साधारण जुलाहे यह हाथ-कता सूत

बुनना पसन्द नही करते। यह सूत अेकसा नही होता, समय समय पर टूटता रहता है, अिसलिअे मिलके सूतकी अपेक्षा अिसे बुननेमे अधिक समय लगता है। जुलाहेको अेक रतल सूतकी पाच आने बुनाअी मिलती है। अिस प्रकार अेक मामूली जुलाहा अेक रुपया रोज कमा सकता है।"

खादीकी बिक्री और अुसके आर्थिक पहलू दोनोके सबधमे लिखते हुअे अुन्होने कहा, "यहा अुत्पन्न होनेवाली खादी यहा अथवा बम्बअीमे बिकती है। स्थानीय बिक्रीका प्रतिशत अिस समय बहुत कम होता है। परतु भविष्यमें अैसी आशा रखी जाती है कि थोडा ज्यादा विज्ञापन करनेसे अुत्पन्न होनेवाली अधिकाश खादी अिस प्रान्तमे ही बिक जायगी।"

खादी-अुत्पत्तिके आर्थिक पहलू पर आते हुअे अुन्होने लिखा

"अेक मन (कच्चा) रुअीकी कीमत आजकल लगभग ९ रुपये पडती है, जब कि अुतनी रुअीको पिजवा कतवा कर कपडा बनाया जाता है तब अुसकी कीमत ३२ रुपये होती है (कपडेका वजन ३१ पौण्ड रहता है)। अिन ३२ रुपयोमे से २॥ रुपये पिजारेको, ६॥ रुपये कत्तिनोको और १०। रुपये जुलाहेको तथा ३ रुपये व्यवस्था-खर्चमे जाते है। खादीकी लागत कीमत २७ अिच अर्जके अेक गजकी लगभग सात आने होती है। अुत्पत्तिका काम परोपकारी दृष्टिसे नही परतु धधेकी दृष्टिसे ही किया जाता है। परतु अिसमे नफा नही लिया जाता और खादी मूल कीमतसे ही बेची जाती है। अिस काममे अिस समय लगभग ८०,००० रुपयेकी रकम पूजीके तौर पर लगाअी गअी है और पिछले महीनेमे सब मिला कर २०,००० रुपये अलग अलग काम करनेवालोको वेतन और मजदूरीके रूपमे दिये गये। चौमासेके बाद अिस कामका अधिक विस्तृत पैमाने पर विकास करनेका विचार है। अिस व्यवस्थाके तीन अग — कताअी, पिजाअी और बुनाअीमे कताअीका अग सबसे कम आय देनेवाला है। फिर भी रोज सुबह बहुतसी स्त्रिया चारसे छ मील पैदल चल कर पूनिया लेने और सूत देने आती है और अितनी तेजीसे कतनेवाले सूतका बुना जाना सभव न होनेके कारण कुछ स्त्रियोको तो काम दिये बिना ही वापस भेज देना पडता है।"

चार मास प्रयोग करनेके बाद अुसके बारेमे अपनी राय देते हुअे अुन्होने लिखा

"अपने अनुभवसे मै यह कह सकता हू कि कताअी अर्थात् चरखेका भविष्य अुज्ज्वल है। वह भी मुख्य व्यवसायके रूपमे नही, परतु सहायक धधेके तौर पर। अिसके लिअे अलबत्ता कातनेवाली स्त्रियोको पूनिया नियमित रूपमे मुहैया करनी चाहिये। अिस प्रकारका काम मिलनेसे देहातमे रहनेवाले

लोग अपनी मामूली आमदनीमे थोडी वृद्धि कर लेते है। यह काम, मावारण अच्छे दिनोमे देहाती लोगोके गहरकी ओर वहनेवाले वहावको जरूर रोकेगा और अकालके दिनोमे गावोके स्त्री-पुरुष गाव छोडकर कष्ट-निवारण केन्द्रोमे जो अुमड पडते है वह भी अिससे वन्द हो जायगा। अिससे जुलाहे और वढअीको जो अप्रत्यक्ष लाभ होता हे वह स्पष्ट हे। जव तक देग मुख्यत कृषिप्रधान रहता है, तव तक जिन लोगोका जीवन खेती पर निर्भर हे अुनके लिअे अतिरिक्त आय देनेवाला कोअी धधा पूरी तरह आवश्यक हे। भोजनके वाद सवसे जरूरी चीज कपडा है ओर अिस देगके लिअे चरखा ही सवमे अधिक अनुकूल गृह-अुद्योग हे। शायद यह कहा जाय कि खादीकी माग तो कृत्रिम माग हे। अिसलिअे वह अल्पायु हे और देर सवेर अिसका निश्चित अन्त होनेवाला है। परतु यह विचार तो अिस डरसे अुत्पन्न हुआ हे कि मिले चरखे ओर करघेसे भी अैसी मोटी किस्मका कपडा ज्यादा सस्ता पैदा कर सकती है। परतु जव अैसा कपडा अपने ही गावमे पैदा हो और मिलसे ज्यादा मजवूत और टिकाअू हो तया वीचके आदमियोके मुनाफेकी गुजाअिश खतम कर दी जाय, तव वह गरीव वर्गके अधिकाग लोगोकी मागको अच्छी तरह पूरा कर सकेगा। अिसलिअे चरखेका पुनरुद्धार भारतके ग्राम-जीवनका अेक कामचलाअू अस्थायी अग नही, वल्कि स्थायी अग है ओर अुसे अुसी तरह देखना चाहिये। हमारा देग गावोमे जीता हे, शहरोमे नही।"

वापाने जो काम काठियावाडमे शुरू किया था अुसकी गति चोमासेमे धीमी हो गअी। परतु, चोमासा वीतते ही फिर वह काम दुगुने वेगसे शुरू किया गया। तीन महीनेका सतत प्रवास करके सौराष्ट्रके जिस जिस गावमे सभावना हो सकती थी वहा वीरमगावसे वेरावल और भावनगरसे पोरवन्दर तक खादी-अुत्पत्तिकी नयी छावनिया डाल दी गअी और केन्द्रोकी सख्या पैतीससे वढाकर पैसठ कर दी गअी।

जहा नअी शाखा खुलती वहा अेक रुअीकी गाठ ओर ५०० से १,००० रुपये नकद देकर कार्यकर्ताको विठा देते। अिस ओर गावोमे चरखे खतम हो गये तो वढअीको वुलाकर नये चरखे वनवाने शुरू कर दिये। अिस प्रकार अमरेलीका मुख्य कार्यालय चरखोका कारखाना वन गया। अेक तरफ चरखे, दूसरी तरफ पूनियां, तीसरी तरफ सूत और चौथी ओर वुनाअीका काम, अिस प्रकार खादी-अुत्पत्तिकी अेक अेक क्रियामे सारा कार्यालय गूज अुठा।

शुरूमे तीनसे चार नवरका सूत ही ज्यादा कतता था। यह सूत छोटे पनेकी खादी वनानेके लिअे हरिजनोको वुननेके लिअे दिया जाता था। काम वहुत वडे पैमाने पर होता था और फिर नया था। अिसलिअे कुछ हरिजन धोखे-

बाजी भी करते थे। और बुनाअीमे चूना और अिस तरहकी दूसरी चीजे मिलाकर कपडेका वजन बढाते थे। कुछ चालाक कातनेवाले भी वजन बढानेके लिअे सूत पर पानी छिडकते अथवा सूतकी बडी बटी आटियोमे छोटे छोटे पत्थर छिपा देते थे और अुतने वजनकी रुअी या सूत बेचकर खा जाते थे। परतु धीरे धीरे काम काफी व्यवस्थित हो गया और सावधानी बढ गअी, तो अपने आप अिस प्रकारकी धोखेबाजी कम हो गअी।

ठक्करबापाके खादी-कार्यके कारण गाधीजीका नाम सौराष्ट्र भरमे प्रचलित हो गया। अिसमे पहले गाधीजीका नाम देहातके हजारो और लाखो लोगोमे अितना परिचित नही था। अिसके सिवाय खादी-कार्यके आसपास और भी कअी समाजोपयोगी प्रवृत्तियोका विकास होने लगा। अिनमे से अेक थी देहाती जीवनकी सामाजिक और आर्थिक स्थितिकी जाच। खादी-अुत्पत्ति और चरखे द्वारा खादी-सेवक ठक्करबापाकी सूचनाके अनुसार सबधित गावोकी हकीकते भी अिकट्ठी करते थे। गाव गावकी जातिवार और धधेवार आबादी, अुन लोगोकी आमदनी, खेतीकी स्थिति और मवेशियोकी तादाद वगैराके आकडे जितने सरकारी दफ्तरोसे नही मिलते अुतने व्यवस्थित खादी केन्द्रोसे मिलते थे।

अिसके सिवाय ठक्करबापा खादी-अुत्पत्तिको बढानेके लिअे जगह-जगह हरिजनोके सम्मेलन करते और अुन्हे समझाते कि चरखेके जानेसे अुनके बुनाअी-अुद्योगको भी किस प्रकार आघात पहुचा और चरखेका ही सूत बुननेको अुन्हे प्रोत्साहित करते। अिस कामसे अस्पृश्यता-निवारणकी प्रवृत्तिको भी अनायास वेग मिला। अिस प्रवृत्तिके सिलसिलेमे ठक्करबापा जिन थोडेसे सस्कारी हरिजनोके ससर्गमे आये, अुनमे दूदाभाअी और अुनकी लडकी लक्ष्मी भी थी। बापाने ही अुन्हे गाधीजीके पास साबरमती आश्रममे भेजा था।

अुस साल सौराष्ट्रमे खादी-अुत्पत्ति अितनी अधिक हुअी कि भारतका दूसरा कोअी भाग अुसकी बराबरी नही कर सकता था। सच पूछा जाय तो अितने बडे पैमाने पर खादी-अुत्पत्तिका श्रीगणेश काठियावाडमे ही किया गया था। अुस समय काठियावाडकी खादी देशके भिन्न भिन्न भागोमे जाती थी। अितने पर भी अुत्पत्ति अितनी ज्यादा बढ गअी थी कि थोडे ही समयमे माल खूब अिकट्ठा हो गया और अुसकी बिक्री कैसे की जाय, यह चिन्ताका विषय बन गया। अुस समय औसतन् १०० मन सूत रोज तैयार होता था। अन्तमे अिसके लिअे काठियावाडमे खादीका काम करनेवालोकी अेक सभा की गअी और बेचनेके लिअे खादी-फेरी वगैरा अुपाय भी सोचे और किये गये। अिस बीच सौभाग्यसे अहमदाबादमे काग्रेसका अधिवेशन हुआ। बापूकी

सलाहसे वहा खादी-नगर खडा किया गया और काग्रेसके अधिवेशनके लिअे जो विशाल मडप बनाये गये, प्रदर्शन रखे गये और दुकाने खडी की गअी, अुनकी सारी सजावट खादीसे ही की गअी। जिसके लिअे रेलके डिब्बे भर भरकर खादी अहमदाबाद भेजी गअी और अुस अधिवेशनके कारण ६३,००० रुपयेकी खादीकी बिक्री हुअी।

अिस अनुभवके बाद काठियावाडमे खादी-अुत्पत्तिका काम मर्यादित कर दिया गया। अिस बीच ठक्करबापाको खादीके कामके लिअे जितना समय दिया गया था अुसकी मियाद पूरी हो जानेसे अुन्हे पूना वापस बुला लिया गया। परतु अुनका काम तो पीछे भी चलता ही रहा।

अिस सबधमे अेक और बात भी प्रचलित है। ठक्कर साहब अमरेलीमे खादीका काम कर रहे थे, तब असहयोग आन्दोलन देशमे पूरे जोरसे चल रहा था। अमरेलीमे भी अिस सिलसिलेमे समय-समय पर सभाअे होती। अिन सभाओमे ठक्कर साहब केवल अुपस्थित ही नही होते, बल्कि विदेशी कपडेकी होली वगैरा होती वहा भी अेक खादी सेवकके नाते मौजूद रहते थे। यह बात अेक या दूसरी तरह रग चढाकर भारत सेवक समाज तक पहुचाअी गअी। भारत सेवक समाजके राजनैतिक विचार गाधीजीके विचारोसे सर्वथा भिन्न थे। अिसलिअे ठक्कर साहब खादी-अुत्पत्तिका काम करते हुअे खडनात्मक अथवा कानून-विरोधी राजनीतिमे दिलचस्पी ले, यह भारत सेवक समाजके सूत्रधारोको पसन्द नही हो सकता था। जिसलिअे भी बापाको समाजके सूत्रधारोने वापस बुला लिया था, अैसी अेक राय है।

काठियावाडमे बापाने खादी-अुत्पत्ति कार्यमे अेक बरस बिताया। अिस अवधिमे अैसी भी कुछ घटनाअें हुअी, जो हमे अुनके चारित्र्यकी झाकी, अुनके हृदयके दर्शन कराती है। अुनमे से कुछ नमूनेके तौर पर यहा पेश करता हू।

बापा अमरेलीमे बहुत सादगीसे रहते थे। शुरूमे अमरेली आये तब मिलके देशी कपडे पहनते थे और सिर पर साफा बाधते थे। परतु जैसे जैसे खादी मिलती गअी, वैसे वैसे अुन्होने अपनी पोशाक खादीमय बना ली। अुस समय अुन्हे समाजकी तरफसे ९० रुपये मासिक वेतन मिलता था। अिसलिअे वे खादी-कार्यालयसे अेक पाअी भी वेतन नही लेते थे। अुल्टे अपने वेतनकी बचतमे से दूसरोकी मदद करते थे।

अुन्होने अपनी पोशाक बिलकुल सादी बना रखी थी। मोटे हाथ-कते सूतकी धोती, कुर्ता और अूची दिवालकी मोटी खादीकी टोपी पहनते और गावोमे जाते समय हाथमे बडा डडा रखते थे। दूसरे गावोमे जाना

होता तब मोटी धोती और तौलियाका बडल बगलमे दबाकर किसी भी क्षण जानेको तैयार हो जाते थे।

हर महीने कुछ दिन वे बाहरके केन्द्रोका निरीक्षण करने जाते थे। अुसी तरह बगसरा भी जाते थे। बहुत वर्षोसे हडालाके दरबार श्री वाजसूरवालाके साथ अुनका खूब गाढ परिचय था। अुनके यहा रामायण-भागवतकी कथाअे होती थी। जब जब वे बगसरा जाते, तब खादी-कार्यालयका निरीक्षण करनेके बाद कथा सुनने अवश्य जाते थे। दरबार साहबके साथ सबध खूब बढ जानेके बाद वे बहुत बार कूकावावसे बगसरा जानेके लिअे अपनी मोटर मगा लेनेका बापासे आग्रह करते थे। परतु ठक्करबापा अक्सर भाडेकी मोटर लारीमे ही जाते थे। अेक बार अिस तरह लारीमे बैठकर ठक्करबापा और रामजीभाअी बगसरा जा रहे थे। लारीमे बहुत भीड थी। अिसलिअे बापाको पीछेकी सीट मिली। रास्ता खराब हो गया था और अुस वक्त लारियोमे ठोस टायर काममे लिये जाते थे। अिसलिअे जहा जहा खराब रास्ता आता वहा बैलगाडीकी तरह ही लारीमे भी दचके लगते थे। अिसके सिवाय लारी बडी होनेके कारण दचका भी बडा ही लगता था। अुसके कारण बापाको पेटमे बहुत ही दर्द होने लगा। अिस दु खसे बचनेके लिअे अुन्होंने पेट पर खूब सख्त पट्टी बाध ली। ठीक अुमी समय हडालाके दरबार श्री वाजसूरवाला साहबकी मोटर बगसरासे कूकावावकी तरफ जा रही थी। अुन्होंने लारीमे ठक्कर साहबको बैठा देखकर मोटर खडी कराअी। दरबार श्री वाजसूरवाला साहब अुनका धूलमे भरा शरीर, कपडे और पेट पर बधी हुअी पट्टी वगैरा देखकर परिस्थिति समझ गये। अुन्होंने कहा, चलिये, मोटरमे आ जाअिये। ठक्करबापा और रामजीभाअी अित्यादिको मोटरमे ले लिया। फिर दरबारश्रीने कहा, "अमृतलालभाअी, अमरेलीसे अिधर आना हो तब खबर दे दे तो मोटर भेज दू और आपको यह व्यर्थ कष्ट न अुठाना पडे। अब तो खबर देगे न?" अुस दिन बापाको लारीमें जितनी परेशानी अुठानी पडी, वह सब दरबारश्रीने देख ली थी। बापाको शर्म आअी, अिसलिअे अुन्होंने कुछ भी आनाकानी किये बिना तुरत ही कह दिया कि हा, आयदा मैं समाचार भेज दिया करूगा। अिस घटनाके बाद वे दरबारश्रीकी मोटर जरूरत पडती तब नि सकोच होकर मगा लेते।

ठक्कर साहबकी अिजीनियरीकी कुशलताके बारेमे अेक बात दरबारश्री वाजसूरवाला प्रसग आने पर कह सुनाते थे। यहा वह घटना देने जैसी है। १९०९ से १९१३ के वर्षोमे दरबारश्री पोरबन्दर राज्यके सीनियर अेडमिनि-

ट्रेटर थे। अुन दिनो अुन्होने वम्वअी म्युनिसिपेलिटीमे नौकरी कर रहे और पोरवन्दर राज्यमे नौकरी कर चुके अिंजीनियर अमृतलाल ठक्करको पोर-वन्दर वुलाया था और अुन्हे सन्तोप हो अुतने वेतन पर अुस राज्यके अिंजीनियरकी जगह स्वीकार करनेका प्रस्ताव किया था, जिस घटनाका अुल्लेख मैं पहले कर चुका हू। अुस समय दरवारश्री अुन्हे अपने वतन वगसरा भी ले गये थे।

वगसराके अुनके दरवारगढके दरवाजेके अूपर वने कमरेकी दीवारमे अेक वडी दरार पड गअी थी। यह शका हो चली थी कि सारा मकान वैठता जा रहा है। अिसलिअे दरवारश्रीने दो तीन कुशल अिजीनियरोकी सलाह ली थी और अुनकी यह राय हुअी थी कि सारी दीवारको तुडवाकर दुवारा चुनाअी करा लेनी चाहिये, नही तो मकानको खतरा है।

वगसरामे दरवारश्रीने अमृतलालभाअीसे सलाह ली। अुन्होने अेक प्रयोग वताया। मोटे भूरे कागजके टुकडे करके दीवारकी दरार पर थोडे थोडे अतरसे चिपकवा दीजिये। महीने दो महीनेमे ये टुकडे खिचकर फट जाय तो समझना चाहिये कि दीवार वैठ रही है। कागज जैसेके तैसे रहे तो अिस दरारमे सीमेटका पलस्तर लगवा दिया जाय।

दरवारसाहवने अिस सुझाव पर अमल किया। कागज फटे नही। दरार वढी नही। अिसलिअे अुसमे पलस्तर लगवा दिया गया। अुसके वाद आज तक वह दीवार नही तुडवानी पडी।

काठियावाडमे खादी-कार्य कर रहे थे, अुस वीच अेक दुर्घटना हो गअी थी। वगसरामे खादी-कार्यालय नदीके सामनेवाले मोहल्लेमे था। अेक वार चौमासेके दिनोमे खादी-कार्यालयका हिसाव-किताव और अन्य कार्यका निरीक्षण करके वापा कमर तक के पानीमे नदी पार करके गाव तरफ आ रहे थे। अितनेमे अूपरकी तरफ वरसातका जोर होनेके कारण नदीमे अचानक वाढ आ गअी। वापा नदीके वीचमे थे। अव आगे भी दौडकर नही जा सकते थे और न पीछे ही जा सकते थे। वापा कोअी निर्णय करते, अिससे पहले तो पानीका अुछाल आ गया। वापाके पाव जमीनसे अुखड गये और वे पानीमे वहने लगे। खादी-कार्यालयके हरिजन जुलाहे श्री वालाभाअीने किनारे पर खडे खडे यह देखा तो दौडकर पानीमे कूद पडे, वापाको पकडकर अुठा लिया और अपने कधे पर विठाकर वाटसे निकालकर तुरत घर ले आये। वापा डूवते-वहते हुअे थोडा पानी पी चुके थे। अुनकी प्रारभिक सेवा-शुश्रूपा करके पेटमे से पानी निकलवा दिया

गया। अिस प्रकार अेक हरिजनकी साहसपूर्ण सहायतासे बापा अेक दुर्घटनासे बच गये।

यह घटना बापाको वर्षो तक याद रही। १९२१ के बाद बारह-तेरह वर्ष और बीत गये। अुसके बाद १९३४ मे बगसरा बालशिक्षा मडलकी सस्थाके मकानोका शिलान्यास करनेके लिअे बापाको विशेष निमत्रण देकर बुलवाया गया था। अुस समय अुन्होने मकानोका शिलान्यास किया। अिसके सिवाय अेक सौ हरिजनोको शराब न पीनेकी प्रतिज्ञा लिवाअी। अिस अवसर पर अुन्होने पुरानी जान-पहचान ताजी की। १९२०–२१ मे अपनेको बचानेवाले जुलाहे श्री बालाभाअीको वे भूले नही थे। बापा अुनके घर गये, अुनसे मिले और पुरानी घटना याद दिलाअी। अुनके घरका प्रेमसे पानी पिया और बालाभाअीके छोटे लडकेको अपनी गोदमें बिठाकर अुसके हाथमे चादीका सिक्का दिया।

१५

अुडीसामे कष्ट-निवारण कार्य

१९२० मे अुडीसाके पुरी जिलेमे अकाल पडा। लोग भारी सकटमे फस गये। जिलेके अेक विभागमे महानदीकी अेक शाखा कुशभद्रामे बाढ आ गअी। कितने ही गाव अिस बाढके शिकार बन गये। कितने ही लोग मारे गये। कितने ही बेघर हो गये। अिस बार गाधीजीने और भारत सेवक समाजने वहाकी परिस्थिति प्रत्यक्ष देखकर अुसके बारेमे रिपोर्ट तैयार करने और अकाल-पीडितो तथा बाढ-ग्रस्त लोगोके लिअे कष्ट-निवारण कार्य करनेके लिअे ठक्करबापाको अुडीसा भेजा। अिससे पहले बापा मथुरा, गुजरात, सौराष्ट्र वगैरा अनेक जगहो पर अकाल-राहतका काम कर चुके थे और अिस विषयके निष्णात बन चुके थे। अिसलिअे अुडीसा भेजनेके लिअे भी अुन्हीको पसन्द किया गया। १९२० के अप्रैलकी २७ तारीखको वे पुरी पहुचे। अुसके बाद वे आसपासके गावोमे घूमे। बीसेक दिन दौरा करके अुन्होने जो कुछ हकीकते अिकट्ठी की अुनका विवरण पेश किया। अुस समयके भारत सेवक समाजके मुखपत्र 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिडिया'मे वह छपा। वह सारा विवरण अुडीसाके अुस समयके अकाल और अुसमे सरकारी और गैरसरकारी ढगसे हो रहे कष्ट-निवारण कार्य पर अच्छा प्रकाश डालता है। विवरण अिस प्रकार है

"१९१८-१९ का वर्ष सारे भारतमे आम तौर पर कमीका वर्ष था। अुडीसा भी अुसमे अपवाद नही था। पुरी जिला अपनी थोडी और असमान वर्षाके लिअे और महानदीकी शाखाओमे बार बार आनेवाली बाढोके लिअे अत्यत प्रसिद्ध है। अुडीसाके अिस जिलेमे चावलके भाव बहुत ही बढ गये। चावल रुपयेके छ (पक्के) सेरके हिसाबसे मिलने लगा। अिस प्रकारकी अूची दरोके सामने टिके रहनेके लिअे जिला बोर्डोको पिछले साल लोगोको सस्ते भाव पर मुहैया करनेके लिअे मोटे चावलके भडार खोलने पडे थे। मानो यह सब कम हो, अिसलिअे अैसे खराब वर्षके अन्तमे कुशभद्राके किनारे तोड कर बाढ छलक अुठी। नतीजा यह हुआ कि कुशभद्रा और भार्गवी नदीके बीचका १५० वर्गमीलका प्रदेश जलमय हो गया। कुछ निचाअीवाले भागोमे तो पानी दस फुट तक चढ गया और यह बाढ अेकसे छ सप्ताह तक जारी रही। परिणामस्वरूप चौमासेकी फसलका सफाया हो गया। अिस पर भी नवम्बर मासमे असमयकी बरसात आ गयी, जिसने खरीफकी फसलको भी काफी नुकसान पहुचाया। अिस प्रकार किसान और खेतोके मजदूर सर्वथा निराधार बन गये और भुखमरीकी स्थितिमे फस गये।

"अुडीसाके किसान स्वभावसे डरपोक और कमजोर होते है, क्योकि सोलहवी सदीसे अफगान, मुगल और मराठा अुन पर जुल्म गुजारते आये है। अिसके अलावा ये किसान और खेती-मजदूर अत्यत गरीब होते है और हमेशा भुखमरीके किनारे रह कर ही जीते है। पुरी शहरमे सार्वजनिक लोकमत बहुत बलवान न होने पर भी मअी १९१९ मे अेक सभा करके सरकारसे अिस प्रदेशको भी कमीवाला अिलाका घोषित करनेकी माग की गअी थी। पिछले मार्च मासमे श्री गोपबन्धुदासने बिहारकी धारासभाके सामने अकाल-पीडितोकी तसवीरे और पेडोके जिन कदमूल पर वे जी रहे थे अुनकी जडे और धानके छिलके पेश करके अपने जिलेके अकाल-ग्रस्त लोगोके सकट पर प्रकाश डाला था और कष्ट-निवारणकी आवश्यकता पर जोर देकर दो लाख रुपयोकी माग की थी। अितने पर भी सकटग्रस्त लोगोके दु ख हलके करनेको, अुन्हे राहत पहुचानेको कोअी कदम सरकारकी तरफसे नही अुठाये गये। अिस बीच पुरी अकाल-निवारण-समितिकी तरफसे और पुरी जिलेके पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट रायबहादुर सखीचदकी तरफसे अुनके निजी दानकी रकममे से लोगोको मुफ्त चावल बाटनेकी गैरसरकारी योजना अमलमे लायी गयी। कलकत्तेका हिन्दी नाट्य समाज भी अिन लोगोकी सहायताके लिअे दौडा। और अिस प्रकार अकाल-पीडित लोगोको गैरसरकारी ढग पर मुफ्त चावलके रूपमे थोडी बहुत मदद मिली, साथ ही रायबहादुर सखीचदने

पुरीमे अेक अनाथालय और दवाखाना खोला है। अुसमे बच्चे और आदमी अितनी बडी सख्यामे अुमड आये है कि अुन्हे सभाला नही जा सकता। पिछले मार्च महीनेसे भारत सेवक समाजने श्री लक्ष्मीनारायण साहूको थोडी रकम देकर गैरसरकारी ढग पर कष्ट-निवारणका काम करने भेजा था।

"अिन तमाम सार्वजनिक प्रयत्नोके फलस्वरूप सरकारको अपनी जगहसे हिलना पडा और अन्तमे अुडीसा विभागके कमिश्नर अकाल-ग्रस्त क्षेत्रको देखने गये। यह यात्रा बिलकुल अूपरी ढगकी थी, अुसमे गभीरताका नाम भी नही था। यात्राके अतमे अुन्होने बताया कि, 'अखबारो और सार्वजनिक सभाओमे अकालकी परिस्थिति जैसी वर्णन की गअी है वैसी नही है। परिस्थिति जरा भी गभीर नही। और श्री दासने स्थितिका जो बयान बिहारकी धारासभाके सामने रखा था, वह बहुत अत्युक्तिपूर्ण था।'

"अिस प्रकार अकालकी परिस्थितिके बारेमे और लोगोके दु खके बारेमे सरकारी और गैरसरकारी दृष्टिकोणके बीच अितना बडा फर्क पड जानेसे अन्तमे अुडीसाके लेफ्टिनेण्ट गवर्नर सर अेडवर्ड गेट गत अप्रैलकी ७ तारीखको सकटग्रस्त क्षेत्रका मुआअिना करने गये। लोगोको अुस समय जिस सकटका सामना करना पड रहा था, अुसे देखते हुअे अुनकी यात्राका असर बहुत अच्छा हुआ। भले ही लोगोने जितना चाहा था अुतना सब तो अुन्हे नही मिला, फिर भी अुनके आगमनके बाद सकटग्रस्त लोगोको काफी सहायता मिली। लोगोको चावल और पकाया हुआ भात बाटनेके लिअे गावोके झुडोके बीच बीचमे अेक अेक करके छ केन्द्र शुरू किये गये। अिन केन्द्रोमे कुल मिलाकर ५,२०० मनुष्योको चावल और पकाया हुआ भात दिया जाता है। अिसके लिअे अेक खास डिप्टी कलेक्टरकी नियुक्ति की गअी है और यह काम अुसे सौपा गया है। अितने पर भी अकाल-निवारण कानूनमे जो व्यवस्था है, अुससे कम अनाज अिन सब लोगोको दिया जाता है। कानूनके अनुसार पुरुषोको ६० तोला और स्त्रीको ५० तोला चावल मिलना चाहिये, परन्तु यहा सबको ४० तोला दिया जाता है। फिर, अितने सारे लोगोको सभालनेके लिअे केवल छ केन्द्र ही काफी नही है। दूसरे बहुतसे गावोको राहत पहुचानेके लिअे अभी और नये केन्द्र स्थापित करनेकी जरूरत है। अकाल-ग्रस्त भूखे और अशक्त लोगोको चावलका 'डोल' दिया जाता है। परन्तु जो सशक्त है और मेहनत-मजदूरी कर सकते है, अुन्हे काम भी मिलना चाहिये, जिससे वे अपने गावमे या पासके स्थान पर काम करके रोजी कमा सके और अपना गुजर कर सके। जो क्षेत्र अुग्र सकटमे आ गया है अुसका क्षेत्रफल लगभग २५० वर्गमील है और अुसमे

वसे हुअे गावोकी सख्या लगभग ४०० है। आवादीके हिमावसे मारे जिलेकी दस लाख जनसख्यामे से डेढ लाख आदमी अकाल-ग्रस्त है। दूसरे प्रदेशोकी अपेक्षा यहा अैसे ममृद्ध किसानो और कारीगरोकी सख्या बहुत थोडी है, जिन्हे मददकी जरूरत न हो। अिसलिअे और जगहोके वनिस्वत यहा ज्यादा वडी सख्याको राहत मिलनी चाहिये और अुनके लिअे मुफ्त चावल और भातका प्रवध होना चाहिये।

"अिस वीच अकालने अपने खप्परमे असख्य मनुष्योके जीवनकी वलि ले ली है। प्रत्येक गावने — भले वह वडा हो या छोटा — थोडे बहुत मनुष्य तो खोये ही है। यहा गाव बहुत ही छोटे होते है और अुनमे दससे लगाकर सौ घरो तककी वस्ती होती है। अैसे अेक अेक गावमे केवल भुखमरीके कारण तीनसे चार दर्जन मनुष्य और अेक गावमे तो ७५ मनुष्य मौतकी शरणमे गये है। भिखारी, कोढी और आवारा आदमी आसानीसे अिसके शिकार वन गये है। वच्चे और वूढे वडी तादादमे मर गये है और जवान भी अिस अकालके खप्परमे समा गये है। यहा मैने घर छोडकर चले गये वडी अुम्रके स्त्री-पुरुषो और वालकोका तो, जो रास्तेमे मर गये होगे, अुल्लेख ही नही किया है। सरकारने कष्टनिवारण कार्य शुरू करनेमे अितनी देर न की होती तो अकालके परिणामस्वरूप मरनेवाले मनुष्योकी सख्या वहुत थोडी होती।

"मृत्युसख्याका कुल जोड कितना हुआ है, यह तो मै नही कह सकता। अपने आठ दिनके दौरेमे मैने ४० गाव देखे है। अिन गावोमे जाच करनेसे पता चला है कि अिन गावोमे और कुछ दूसरे गावोमे, जिनके मेरे पास आधारभूत आकडे है, कुल मिलाकर ४८० मनुष्य भूखके कारण मृत्युको प्राप्त हुअे है। अिस गणनाके अनुसार यदि सारे प्रदेशका कमसे कम अदाज लगाये, तो भी १,५०० मनुष्य अवश्य भुखमरीसे मर गये होगे। अपनी आखोके सामने ही मैने नीमापारा केन्द्रमे अेक भूखे आदमीको मरते देखा। और अेक अन्य गावमे अेक दूसरे आदमीको मरा हुआ देखा। मै वहा पहुचा तव तक मरनेको घटो हो चुके थे, लेकिन स्मशानमें जलानेके लिअे अुसे हटाया नही गया था। पुरीकी गैरसरकारी अकाल-निवारण-समितिके तीन सदस्योने ६० घरोकी वस्तीवाले अेक गावके वाहर मरे हुअे मनुष्योकी तेरह खोपडिया और कुछ अस्थि-पजर पडे हुअे देखे थे। अिस गावमे पिछले अगस्तसे अव तक २७ आदमी मर चुके है। अिस छोटेसे गावके लिअे यह आकडा बहुत वडा कहा जायगा और मृत्युका अनुपात बहुत भारी माना जायगा। पुरीसे केवल सोलह मील दूर सुतान नामक गावमे पिछले अगस्तकी वाढके समयसे

लगभग ६० से ८० मनुष्य मर गये बताते हैं। और हम जिस दिन अिस गावको देखने गये अुस दिन स्मशान-भूमिमे हमे दुर्भाग्यवश २८ मनुष्योकी खोपडिया देखनेको मिली।

"आम तौर पर अिस प्रकारके अकालका सकट पैदा होनेकी सभावना हो, तो अुससे पहले अुसका सामना करनेकी तैयारीके तौर पर पुलिसको नीचे लिखी तीन बातोका समय समय पर विवरण पेश करना चाहिये। १ भूखा या निराधार मनुष्य आवारा फिरता दिखाअी दे तो अुसकी खबर देना, २ मृत्युके अनुपातमे हमेशासे ज्यादा असाधारण वृद्धि हुअी हो तो अुसकी खबर देना, और ३ भुखमरीकी घटनाअे हुअी हो तो अुनकी सूचना करना (देखिये विहार अकाल कानून, १९१३ की धारा ३४)। गावोके अेक समूहकी २,७५० मनुष्योकी आबादीमे तो अिस वर्षके आरभके चार महीनोमे, यद्यपि वहा भुखमरी नही फैली थी, मैने प्रति मील १८३ मृत्युसख्या देखी। पुलिसकी रिपोर्ट हो या न हो, तो भी क्या यह अेक तथ्य अिस बातका निर्देश करनेको काफी नही है कि यहा असाधारण सकट पैदा हो गया है? अितनी सारी मृत्युओमे से आधी तो केवल भुखमरीके कारण ही हुअी है। यह तथ्य गावोके चौकीदारोने जो आकडे दिये है अुनसे साबित होता है। फिर छोटे छोटे पुलिसके आदमी यह मानते हैं कि अगर हम अिस बातका सही आकडा पेश करेगे कि लोग भुखमरीसे मर गये तो अुसके लिअे हमे जिम्मेदार माना जायगा। अिसलिअे लोग भुखमरीसे मरे हो तो भी वे सच्चा हाल नही बताते। अुसके बजाय यह बतानेका प्रयत्न करते है कि वे अमुक बुखार, हैजा, दस्त वगैरा रोगोसे मर गये है। वास्तवमे अकाल कानून अिस प्रकारकी भुखमरीसे मरे हुअे मनुष्योके सही आकडे पेश करना अुनका फर्ज मानता है। परन्तु अिस प्रकारकी रिपोर्ट देनेकी तकलीफसे बचनेके लिअे झूठी रिपोर्ट पेश करने और यह बात कहनेका मानो अुन्होने नियम ही बना लिया है कि लोग भुखमरीके बजाय रोगसे मर गये हैं। यह चीज मैने अनेक मामलोमे देखी है। अिनकी अिस प्रकारकी रिपोर्टे सरकारको गुमराह करती है और लोगो और सरकारको गलत तौर पर यह माननेको प्रेरित करती है कि लोगोकी स्थिति अच्छी ही है। अिस प्रकार सरकारको वे समय पर कदम अुठानेसे रोक कर निर्दोष जनोकी मृत्युका कारण बनते है।

"और अिस समय भी भुखमरीके कारण मृत्युअे होनेके अुदाहरण अुपस्थित न होते हो सो बात नही है। आअिदा अधिक मृत्यु न होने देनेके लिअे अिस समय जितने मनुष्योको मुफ्त अनाज और पकाया हुआ चावल दिया जाता है, अुससे तिगुनी जनसख्याको यह राहत मिलनी चाहिये। फिर,

सशक्त मनुष्योंको काम मिले अिसके लिअे कुछ केन्द्रीय गावोंमे ही नही, परन्तु गाव-गावमे काम खोलने चाहिये। अिसके साथ-साथ मुझे यह भी बताना चाहिये कि गैरसरकारी मनुष्योंको -- लोगोंको आगे आकर खानगी तौर पर रुपया देना चाहिये और दूसरी जो भी मदद दी जा सके देनी चाहिये। चालीस-पचास बरसकी स्त्रीको घुटने तक पहुचनेवाले फटे-टूटे कपडे पहने देखना और तेरह-चौदह वर्षकी लडकीको केवल लगोटी पहने अर्धनग्न स्थितिमे खडे देखना अत्यत दुःखद वस्तु है। अैसे नगे लोगोंके शरीर ढकनेके लिअे, मरते हुअे बच्चोंको दूध देनेके लिअे, घर छोडकर चले गये लोगोंको फिरसे बुलाकर अुनके घरोमे बसनेकी अनुकूलता पैदा करनेके लिअे, निराधार और अनाथ बने हुअे मनुष्योंकी देखभाल करानेके लिअे और अुन्हे फिरसे अपने पैरो पर खडा कराके नये सिरेसे जीवन आरभ करनेके लिअे पैसेकी -- बहुत पैसेकी जरूरत है। बगालके धनवान जमीदार और अन्य लोग, जिनकी अुडीसामे बडी बडी जागीरे है वे जागीरदार, कलकत्तेके धनाढ्य मारवाडी व्यापारी और सदा अुदारता दिखानेवाले बम्बअीके लखपति पुरीके वकील बाबू जगबधुसिंहको अपना चदा भेज दे। अिस अभागे और अुपेक्षित जिलेकी मदद करनेके लिअे अेक लाख रुपयेकी रकम कुछ ज्यादा नही मानी जा सकती।"

यह विवरण 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिडिया' और 'नवजीवन' पत्रोंमे छपनेके बाद अुसके अुद्धरण भिन्न भिन्न समाचारपत्रोंमे भी आने लगे। और अिस समयकी सरकारकी लापरवाही और निष्ठुरताकी नीतिकी आलोचनाअे भी की गअी। दूसरी तरफ, अिन लेखोंको पढकर बम्बअी-कलकत्तेके जिन अुदार सज्जनोंके हृदय पिघले, अुन दानियोंने दान भेजे और ठक्करबापाने जिस रकमकी माग की थी अुसे लगभग पूरा कर दिया। अिस रुपयेसे ठक्कर-बापाने पुरीमे और आसपासके अनेक गावोंमे अनेक स्थानो पर कष्ट-निवारण भोजनालय शुरू किये और अुडीसाके अस्थि-पजर बने हुअे लोगोंको चावल देकर मौतके मुहमे जानेसे बचाया।

अुडीसामे अुन्होने अितना बढिया काम किया कि गाधीजी भी अुनके कामसे बहुत प्रभावित हुअे। यहा तक कि अिस अर्सेमे जब भारत सेवक समाजके अध्यक्ष श्रीनिवास शास्त्रीजीने ठक्करबापाको अफ्रीकाके भारतीयोंकी मदद करने और अुनके प्रश्नोंके निपटारेमे सहायक होनेके लिअे ब्रिटिश गियाना भेजनेका विचार किया और अुसके लिअे अुन्हे अुडीसाके कामसे मुक्त करनेकी गाधीजीसे अनुमति मागी, तो गाधीजीने अुन्हे अिनकार करते हुअे अुत्तरमे लिखा

"मैं आपके साथ श्री अमृतलाल ठक्करकी ब्रिटिश गियानाकी प्रस्तावित यात्राके बारेमें बात कर लेना चाहता था। वहां जो काम करना है अुसकी यहां अुडीसामें वे जो काम कर रहे हैं अुसके साथ तुलना ही नहीं हो सकती। वहां ब्रिटिश गियानामें तो कोअी तीसरी श्रेणीका साधारण कोटिका आदमी भी भेजा जा सकता है। परन्तु अुडीसामें अिनकी जगह ले सके और अिनकी अनुपस्थितिमें कुशलतापूर्वक काम सभाल सके, अैसा कोअी आदमी है ही नहीं। अिसलिअे मैं आशा रखता हूं कि अकाल-निवारणका काम पूरा होने तक आप अिन्हें वहांसे नहीं हटायेंगे।'

ठक्करबापा अुडीसामें रहकर जो काम करते थे अुसके समाचार गांधीजीको जरूर भेजते थे। अुसके साथ साथ अुडीसाकी स्थायी गरीबी, आलस्य, लोगोंकी कगाल आर्थिक और मानसिक स्थिति वगैराके बारेमें भी अुन्होंने गांधीजीको परिचित कराया। समय समय पर हृदयद्रावक तथ्य भेजकर गांधीजीके हृदयकी करुना-नदीको अुन्होंने अुडीसाकी तरफ मोडा और अन्तमें १९२१ में वे गांधीजीको प्रेमके बल अुडीसाके अकाल-पीडित क्षेत्रमें खींच लाये। गांधीजीने पुरी जाकर जो स्थिति देखी, अुसका चित्र अुन्होंने 'नव-जीवन' के अेक लेखमें अिस प्रकार दिया है:

"सन् १९२१ में जब मैं जगन्नाथपुरी गया, तब वहां मैंने अैसा बहुत कुछ देखा जो आसानीसे भुलाया नहीं जा सकता। परन्तु अुसमें दो वस्तुअें तो अैसी थीं, जिन्हें मैं कभी नहीं भूलूंगा। अेक तो रात-दिन मेरे मस्तिष्कमें बार बार आती ही रहती है।

"अुन दिनों जगन्नाथपुरीमें अेक बहुत ही भला परोपकारी सुपरिन्टेन्डेण्ट था। अुसके आश्रयमें अेक अनाथालय चलता था। अुसे देखने वह मुझे ले गया था। अुसमें अनेक हृष्टपुष्ट प्रफुल्लित बालक रस्सियां गूंथना, टोकरियां बनाना, कातना-बुनना और अैसे ही अन्य अुद्योग करके सुखी जीवन बिताते थे। अुस पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्टने मुझसे कहा था कि ये सब बच्चे अकालपीड़ित मां-बापोंके हैं और अिनमें से कुछ तो अस्थि-पंजर जैसी दशामें ही अनाथालयमें भरती किये गये थे।

"यह आश्रम दिखलानेके बाद वह भला सुपरिन्टेन्डेन्ट मुझे अेक खुली जगहमें ले गया। वहां जगन्नाथजीके मन्दिरकी ही छायामें नगरके आसपास बारह मीलके भीतर रहनेवाले अकाल-पीडित लोगोंको कतारबन्द बिठाया गया था। अुनमें से कुछके प्राणोंकी रक्षाका श्रेय तो अुदार गुजरातियोंको और गुजरातियोंसे प्राप्त धनसे चावल खरीदकर अुन्हें मुट्ठी-मुट्ठी बांटने-

वाले श्री अमृतलाल ठक्करको था। जिन लोगोंमें प्राणोंकी ज्योति धीरे धीरे मन्द पड़ती जा रही थी। वे निराशाकी सजीव मूर्ति जैसे थे। अुनकी पस-लियां अेक अेक करके गिनी जा सकती थीं। अेक अेक नस फूलकर बाहर आ पड़ी थी। किसीके शरीर पर मांस या स्नायुका नाम नहीं था। सिमटी हुआी झुर्रियोंवाली चमड़ी और हड्डियां ही नजर आती थीं। आंखोंका तेज अुड़ गया था। सबके चेहरों पर मानो मर जानेकी अिच्छा फैली हुआी थी। अैसा मालूम होता था मानो जो मुट्ठीभर चावल अुन्हें मिलता था अुसके सिवाय अिस संसारमें और किसी चीजमें अुनकी दिलचस्पी नहीं रह गअी थी। दाम लेकर वे काम करनेको तैयार नहीं थे। प्रेमके लिअे करते या नहीं, कौन जाने? हमारे दिये हुअे मुट्ठीभर चावल खाकर वे अपना जीवन टिकाये हुअे थे। यह भी कहीं वे हम पर मेहरबानी ही न कर रहे हों! अिस प्रकारकी स्थितिमें फंसे हुअे ये स्त्री-पुरुष — हमारे ही भाअी-बहन — अिस प्रकार धीरे धीरे यातनायें भोगकर मौतकी शरण जा रहे थे। यह मैंने अपने अनुभवमें सबसे बड़ी करुणाजनक घटना जानी है। अुनके लिअे तो जिन्दगीका अर्थ मजबूर होकर सहन किया जानेवाला अखंड अुपवास है। और जब वे सदाव्रतका चावल खाकर प्रसंगोपात्त अपना अुपवास तोड़ते हैं, तब अैसा लगता है कि कहीं वे हमारे सुखचैन भरे निष्ठुर जीवनके लिअे हमें शरमानेको तो नहीं कह रहे हैं? ”

विहारकी धारासभामें श्री गोपबन्धु दासने अुडीसाके अकालकी परि-स्थिति और पीड़ितोंका जो वर्णन किया था, वह अुडीसाके कमिश्नरको अतिशयोक्तिपूर्ण लगा। अुन्हीं अकाल-पीड़ितोंका गांधीजीका यह आंखों देखा चित्र है। सरकारी दृष्टि और राष्ट्रीय मानवताकी दृष्टिमें अुस समय कैसा जमीन-आसमानका फर्क रहता था, जिसका यह अेक ठोस प्रमाण है। परन्तु ठक्करबापाने १९१६ से १९४४ तकके अकालोंमें जब जब कष्ट-निवारण कार्य किया, तभी अुन्हें सरकारके साथ हमेशा टक्कर लेनी पड़ी और हर बार अुन्हें कड़वी बात सुनानेको विवश होना पड़ा। यह फर्ज बापा जरा भी हिचकिचाये बिना अदा करते थे।

पुरीके अकालके बारेमें बापाने अकाल-ग्रस्त लोगों और जिलेमें होनेवाली मृत्युओंका ब्यौरा देनेवाले लेख छपवाये और अुनके आधार पर अखबारोंमें सरकारकी लापरवाही और निष्ठुरता भरी नीतिकी आलोचनाअें आअीं, तब सरकार कुंभकर्णी नींदमें जागी और कष्ट-निवारण कार्य अधिक विस्तृत करनेके बजाय अुसने ठक्करबापाके पेश किये हुअे विवरणोंमें अुपस्थित कुछ मुद्दोंके स्पष्टीकरण किये तथा सरकारी कार्रवाअीका लगड़ा बचाव करनेका

प्रयत्न किया। मगर ठक्करबापा यो किसीसे दब जानेवाले नहीं थे। सरकार द्वारा प्रकाशित कम्यूनिक — बयानका अुन्होंने जो करारा जवाब दिया, अुसमे अुनकी निर्भयता, सचाअी, सफाअी, अध्ययनशीलता, मानवता और सरकारी नीतिका खोखलापन और ढोग साफ जाहिर हो जाते है। 'दि मडल ऑफ दि पुरी फैमिन' शीर्षक अुस लेखमे से कुछ महत्त्वपूर्ण भाग देखिये

"आठ महीनेके लम्बे अरसेमे लोगोके नेताओ द्वारा सरकारके सुप्त अन्त करणको जाग्रत करनेके भरसक प्रयत्नोके बाद अन्तमे अुसने मौन तोडा है और अकाल-पीडित लोगोका अुग्र सकट दूर करनेके लिअे अुसने क्या क्या काम किया — अथवा यो कहिये कि काम किया ही नही — अुसकी सफाअी जनताके सामने दी है। पुरी जिलेमे फैले हुअे सकट और अुसे दूर करनेके लिअे सरकार द्वारा की गअी कार्रवाअियो सम्बन्धी जो कुछ पत्र और लेख अखबारोमे छपे हैं, अुनकी ओर 'सरकारका ध्यान दिलाने पर अुन बयानोमे जो अपार असावधानी और भूले रह गअी है अुन्हे सुधारनेके लिअे' सरकारने अेक बडा वक्तव्य प्रकाशित किया है। यह कथित असावधानी सुधारनेमे सरकार स्वय कुछ गभीर भूले कर बैठी है और लोगोके दुःख हलके बतानेके लिअे दूसरोका किया हुआ काम अुसने अपने नाम पर चढा दिया है। कर्मचारियोकी अक्षम्य भूलो पर कलअी चढाकर अुन्हे सुन्दर दिखलानेका प्रयत्न किया है। साथ ही सरकारके हाथो हुअी भूले और दोष दूसरोके मत्थे मढ दिये है और अेक युरोपियन आअी० सी० अेस० कमिश्नरको बचानेके लिअे भारतीय कलेक्टरको बलिदानका बकरा बनाया है। ये शब्द बहुत कडे है, किन्तु ये शब्द घटना-स्थल पर पूरे दो महीने रहकर अिस प्रश्नके बारेमे पूरी तरह वाकिफ होनेके बाद ही लिखे गये है।

"अिस बयानमे सरकारने बहुत ही सावधानीसे सन् १९१८-१९ मे गैरसरकारी ढग पर हुअे कष्ट-निवारणके कार्यका अुल्लेख किया है। कोअी और समय होता तो सरकार अैसा न करती। तब फिर अुसकी प्रशसाकी तो बात ही क्या? खानगी दानसे हुआ यह छोटासा काम भी अिस ढगसे प्रदर्शित करके बताया गया है, मानो सार्वजनिक कोषमे से और सरकारी नौकरीमे सदा जागृत रहनेवाले शासनतत्रकी सूचनानुसार ही किया गया हो! मानो हजारो रुपयेका दान करनेवाले दाता और अपने समय तथा शक्तिका बलिदान देनेवाले कार्यकर्ताओकी कोअी गिनती ही नही! परन्तु सरकार जिला कष्ट-निवारण-समितिकी प्रतिष्ठा अपने सिर पर लेकर ही सन्तुष्ट नही हुअी। अिससे आगे बढकर जब अिन सेवकोके पासका चन्दा खतम हो

गया और वे आगे अधिक समय कष्ट-निवारण कार्य जारी न रख सके, तब अुनकी आलोचना और निन्दा करने लगी और अुन्हें दोष देने लगी। जिनके अलावा, सरकारी अधिकारी निजी रूपसे कुछ प्रतिभाशाली मित्रोंकी मददसे संकट-ग्रस्त लोगोंका कष्ट हल्का करते थे और जब लोग देहातमें ही नहीं बल्कि पुरी शहरकी गलियों और रास्तोंमें मर रहे थे, तब भी सरकार जरा भी हिले-डुले बिना जड़की भांति बैठी रही थी।

"भला हो श्री गोपबन्धु दासका, जिन्होंने अुड़ीसाके अपने भाअियोंके दुःखमें मदद करनेके लिअे बिहारकी धारासभाके सामने सारी बात पेश कर दी और सचाअीको प्रकाशमें लाये। अुस समय अुनके सरकारी विरोधियोंने अुड़ीसाके कमिश्नर मि० ग्रुनिंगके नेतृत्वमें अुनका मजाक अुड़ाया और अुनकी बातोंको हंसीमें अुड़ा दिया। मि० ग्रुनिंग कभी संकट-ग्रस्त प्रदेशको देखने नहीं गये, फिर भी अुन्होंने गोपबन्धुबाबू द्वारा पेश की गअी सच्ची बातोंको चुनौती देने और अुनके बारेमें शंका प्रकट करनेकी धृष्टता और बेहयाअी दिखाअी। यह भला आदमी अपनी विशाल पीठ पर पांच ब्रिटिश जिलों और चौबीस देशी राज्योंका भार ढोता है। अुन्होंने अकाल जांच-समितिके अेक सदस्यसे जबानी कहा था और दूसरेको पत्रमें लिखा था कि 'मेरे जैसा अूंचे दरजेका अफसर रास्तेसे दूर दूर बसे हुअे गांवोंमें, जहां थोड़ेसे आदमी भूखसे मर जाते हों, जांच करने जाय, यह अपेक्षा किसीको नहीं रखनी चाहिये।' अुड़ीसाकी कुछ गरीब स्त्रियां जो पीतलकी चूड़ियां पहनती थीं, अुन्हें वह सोनेकी मान लेते थे और जसदकी पहनती थीं अुन्हें चांदीकी मान लेते थे। क्या यह माना भी जा सकता है कि वह परिस्थितिसे जिस हद तक अनजान थे? अैसी कल्पना भी की जा सकती है? मि० ग्रुनिंगको अैसा लगता हो कि अुड़ीसाका भार वहन करने योग्य शक्ति अुनमें नहीं है, तो जितना बोझा वे अुठा सकें और जहां वे कुशलतापूर्वक अपना काम कर सकें अुतनेसे विभागमें ही नौकरी पर रखनेकी अुन्हें सरकारसे प्रार्थना करनी चाहिये। पुरी जिलेमें कष्ट-निवारणका काम व्यवस्थित ढंगसे नहीं हुआ, अिस असफलताके लिअे अगर कोअी आदमी दोषी हो सकता है तो वह मि० ग्रुनिंग हैं। अुन्होंने बिहार सरकारको अकालकी घोषणा करनेसे हठपूर्वक रोका और अुसे गलत रास्ते ले गये। यह संकट-ग्रस्त क्षेत्र जिस समय १,००० वर्गमीलमें फैला हुआ है और अुसमें फंसे हुअे लोगोंकी आबादी ५ लाख है। फिर भी वह अिस क्षेत्रको 'बहुत छोटा' मानते हैं और शब्दोंकी क्रूर क्रीड़ासे अुस क्षेत्रको घटाकर केवल ९० वर्गमीलका अकाल-ग्रस्त प्रदेश बतानेका प्रयास करते हैं। अैसा करनेके लिअे अकाल कानूनकी ६८वीं धारासे

भी तीस गुना अधिक कडा मापदड रखकर वे शब्दोकी बाजीगरीसे अपनी ही बात सच साबित करना चाहते है।

"... प्रस्तुत मामलेमे अुडीसा बिहारसे दूर होनेके कारण वहा मि० ग्रुनिग खुद ही सरकार है। और अुडीसामे अकाल नही, अरे अन्नकी तगी भी नही, दुःख नही, यह अुनका रवैया कलेक्टरसे लगाकर छोटे चौकीदार तक सबने अपना लिया। सरकारका मुख्य अधिकारी 'अकाल' शब्दका अुपयोग करनेकी अनुमति नही देता, असलिअे भुखमरीसे होनेवाली सैकडो और हजारो मृत्युअे भी अकालकी घोषणा करनेके लिअे पर्याप्त नही हुअी। भुखमरीके कारण हुअी मृत्युओके बारेम सरकारी विज्ञप्ति कहती है

"'भुखमरीके कारण अेक भी मृत्यु होनेकी रिपोर्ट चौकीदारोने नही की और पुलिस अधिकारी रायबहादुर सखीचदने लगातार जो अुत्तम कष्ट-निवारण कार्य किया है और जिसको सभी सम्बन्धित लोग स्वीकार करते है, अुसे देखते हुअे माननीय लेफ्टिनेन्ट गवर्नर साहब अिस बयानको सही नही मानते कि भुखमरीके कारण हुअी मौतोको जान-बूझकर रोगके कारण हुअी मौतें बताया जाता है।'

"यह तो बडा विचित्र तर्क कहा जायगा। रायबहादुर सखीचदने स्वय अेक जैन सदस्य होनेके कारण व्यक्तिगत रूपमे दयाभावसे प्रेरित होकर सकट-ग्रस्तोको सहायता दी है और कष्ट-निवारण कार्य किया हे। परन्तु अुनका और दूसरे सैकडो चौकीदारोका अेक-दूसरेसे कोअी सम्बन्ध नही। अिन दोनोमे कोअी साम्य नही। और ये चौकीदार कोअी श्री सखीचदके नीति और धर्मके अूचे सिद्धान्तोके अनुसार काम नही करते। अिस प्रकारकी दलीलोसे सर अेडवर्ड गेट और अुनकी कार्यकारिणीके सदस्य यह निष्कर्ष निकालना चाहते है कि सखीचदके मातहत काम करनेवाले अुनके सैकडो चौकीदारोमे से अेक भी अपने रजिस्टरमे झूठा हाल लिखने जितना नीचे नही अुतरेगा। अिसके अतिरिक्त पटनाके 'सर्चलाअिट' पत्रने जिस हकीकतकी तरफ अुनका ध्यान खीचा था अुसे वे भूल गये दीखते है। अुसने बताया था कि १८७१ के चौकीदारी कानूनमे अिसकी व्यवस्था होने पर भी कि रजिस्टरकी नोधमे चौकीदारके साथ साथ पचायतके अेक सदस्यके भी हस्ताक्षर होने चाहिये, पुरी जिलेमे अिस बातकी जान-बूझकर और पद्धतिपूर्वक अुपेक्षा की गअी है। 'मैचेस्टर गार्डियन' का मुख्य सवाददाता श्री वॉन नैश सन् १९०० के भारतके अकालसे सम्बन्धित अपनी 'महाकाल' नामक पुस्तकके ४३ वे पृष्ठ पर लिखता है कि 'भुखमरी' शब्द सरकार मजूर नही करती, अिसलिअे यह घोषणा की

गअी है कि यहा जो १५ बच्चे मर गये वे शरीर दुर्बल हो जानेसे सूखकर मर गये। भुखमरीसे मरनेवाले मनुष्योंको पहचाननेके लिअे सरकारने अकालके दिनोंमे यह नया रोग ढूढ निकाला है। यहा पुरीमे अिस 'अिमेशियेशन' शब्दका स्थान दूसरे सामान्य रोगोंने ले लिया है, क्योंकि भोजनके अभावमे सूख गये लोगोके लिअे 'अिमेशियेशन' जैसा हलका शब्द भी काममे लेनेकी मि० ग्रुनिग अिजाजत नही देते।

"पिछले मअी मासमे मैंने यह घोषणा की थी कि जिलेके ४० गावोमे भुखमरीसे कुल ४४० मृत्युअे होनेके विस्तरत और आधारभूत तथ्य मेरे पास हैं और अुस भूमिकाको ध्यानमे रखकर मैंने समस्त प्रदेशमे १,५०० मृत्युअे होनेका अदाज लगाया था। परन्तु पुरीके लोगोका अधिक नजदीकसे परिचय करनेके बाद मुझे अब मालूम हुआ है कि मेरा हिसाब कम था। और अुस दिन पुरीकी गलियोमे और जिन प्रदेशोंको मैं जिलेके अकाल-मुक्त भाग समझता था, अुनमें भी जो असख्य मृत्युअे हुअी थीं अुनकी मुझे कल्पना भी नहीं थी। वह अदाज यदि आज दुबारा लगाया जाय, तो मैं यह आकडा ३,००० से कम न रखू। रिपोर्टमें भुखमरीसे हुअी दो मौतोंका अपना विवरण प्रकाशित करनेके बाद और दूसरोंके प्रकाशित किये हुअे पन्द्रह अुदाहरणोंके बारेमें कलेक्टरके जाच करनेके बाद अुसका जो परिणाम हुआ अुस परसे मुझे अिस बातका अफसोस नहीं है कि मैंने भुखमरीसे मरे हुअे ४४० मनुष्योंके नाम, पते और दूसरा ब्योरा सत्ताधारियोंको मुहैया नहीं किया। क्योंकि अिस मामलेकी सरकारी जाचमें भी जिन घटनाओंका परिणाम अिससे अधिक अच्छा न आता। भुखमरीके कारण होनेवाली मृत्युकी जाच करनेके लिअे निष्पक्ष जाच-समिति नियुक्त की जाय, तो सकडो घटनाअे पेश की जा सकती है। अुस समय सही स्थिति अपने असली रूपमे सामने आ जायगी। परन्तु कलेक्टर और कमिश्नरके द्वारा, जिन्हें लोग अपने दुःखोंकी अुग्रताके लिअे जिम्मेदार मानते है, जाच की गअी तो अिसका कोअी परिणाम नही होगा।"

अिस प्रकार जिस जमानेमे बडे बडे निडर लोग भी सरकारके विरुद्ध बोलनेकी हिम्मत नही करते थे, अुस जमानेमे ठक्करबापाने अुडीसाके बडेसे बडे युरोपियन अधिकारियोंकी गैरजिम्मेदाराना नीतिकी कडी आलोचना की और अुनका जनताके सामने भण्डाफोड किया। यह अुन्होंने किसी निजी रागद्वेषपूर्ण बुद्धिसे नही, बल्कि अिसलिअे किया कि अुडीसाके लाखो निःसहाय गरीब और मूक अकाल-पीडित लोगोंका दुःख अुनसे देखा नहीं जाता था। बापाने जो काम किया अुससे हजारों अकाल-पीडित मृत्युके मुखसे बच गये।

यह तो अुडीसाके अकाल-पीडितोको हुअे तत्काल लाभकी बात हुअी। परन्तु अिसके सिवाय ठक्करबापा द्वारा अुडीसामे किये गये अिस कार्यके अन्य कुछ आनुषगिक परिणाम भी आये। अुससे अेक बात यह हुअी कि अुडीसामे व्यवस्थित सार्वजनिक जीवनका प्रारभ हुआ और बापाने अुसमे बहुत बडा भाग लिया। श्री हरिकृष्ण मेहताब, श्री वि० दासबन्धु, बाबू नवकृष्ण चौधरी, गोपबन्धु दास वगैरा अुडीसाके आजके नेताओका निर्माण ठक्करबापाके हाथो ही हुआ। और अिसीलिअे वे बापाको अुडीसाके आधुनिक जीवनका पिता मानते है।

गोपबन्धु दासके साथ तो अुनका पहली मुलाकातमे ही प्रेम हो गया था। अुनकी सादगी, कर्तव्यनिष्ठा, सेवापरायणता, सचाअी और कामकी लगन वगैरासे बापा बहुत ही प्रभावित हुअे थे। अिसलिअे वे सदा अुनका ध्यान रखते और जब जब मौका आता, तभी अुनकी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमे सहायता करते।

अेक बार जब बापाको अुनके साथ हुअे पत्रव्यवहारसे यह गध आअी कि अुन्हे कुछ आर्थिक कठिनाअी है, तब अुन्होने चोरवाडके परोपकारी और धनी व्यापारी (जो बादमे बापाके अेकनिष्ठ भक्त बन गये) श्री हरखचद मोतीचदसे ता० १६–१२–'२१ को पूनासे नीचेका पत्र लिखकर श्री गोपबन्धुको सहायता देनेका अनुरोध किया था

"भाअी हरखचद,

"खीजडियाके स्टेशन पर तुमने मुझसे कहा था कि देशके काममे अथवा परमार्थके काममे रुपया खर्च करने लायक कोअी बात हो तो मै तुम्हे बताअू और तुम तदनुसार रकम खर्च करनेको तैयार हो।

"अिसलिअे मै यह लिख रहा हू। अुडीसामे पुरी जिलेके सखीगोपाल गावमे अुधरकी तमाम स्वदेशी और राजनैतिक हलचलके पिता पडित गोपबन्धु दास है। वे अिस समय बडी कठिनाअीमे है। अुन्हे मदद भेजनेकी जरूरत है। वे मेरे परम मित्र है। अुन्होने मुझसे सहायताकी माग नही की है। परन्तु अुनके पत्रकी बातोसे और अुनके स्वभावसे जान सकता हू कि अुन्हे अिस समय अेक रुपया भेजा जाय तो वह सौके बराबर होगा। मै स्वय भी अपने मासिक खर्चकी रकममे से आज २५ रुपये भेज रहा हू। अिसलिअे तुम अुन्हे दो-अढाअी सौ रुपये भेज दोगे तो बहुत अच्छा होगा। अगर भेजो तो अुसीके साथ अग्रेजीमे अेक पत्र लिख देना कि यह रकम तुमने मेरी सूचनासे भेजी है। रुपया रजिस्ट्री और बीमा कराकर भेजना। पता अिस प्रकार है।

"अगर किसी कारणसे रुपया न भिजवा सको तो भी मुझे अुत्तर लिखना, ताकि मैं और कोअी व्यवस्था कर सकू।

"यह रकम अकाल या अैसी कोअी कुदरती आफतमे मदद देनेके लिअे भेजनेको मै तुमसे नही कह रहा हू, यह मै जानता हू। परन्तु बाबूकी जरूरत अैसी ही है, बल्कि अुससे भी अधिक है। अभी अभी सरकारने अुन्हे परेशान करनेमे कोअी कसर नही रखी। अुनका हाअीस्कूल लगभग टूट गया है। वे स्वय बेहाल हो गये है। अेक बार २४ दिन जेल भी हो आये है। दूसरी बार जानेके आसार दिखाअी दे रहे है। जिन सज्जनके प्रति मुझे बहुत ही आदर है। अुत्तर लिखना।

अमृतलाल वि० ठक्कर
के वन्देमातरम्"

श्री हरखचदभाअीने बापाका पत्र मिलते ही तुरन्त २५० रुपये भेज दिये। बापाके शब्दोका अुन दिनो भी अितना गहरा असर पडता था। अुनके शब्द अधिकतर व्यर्थ नही जाते थे।

अुडीसाके अकालके निमित्त यह अुनकी अुडीसाकी पहली मुलाकात थी। अुसके बाद अधिक नही तो कमसे कम छ सात बार तो वे किसी न किसी कामके सिलसिलेमे अुडीसा हो आये थे और वहाके लोगोकी अलग अलग ढगसे अुन्होने सेवा की थी। अुडीसाके लोग आज भी बापाको विविध प्रसगो पर याद करते है।

१६

पंचमहालमें क्या देखा ?

जैसा हम पहले देख चुके है, ठक्कर साहबका अकाल-निवारण कामके सिलसिलेमे और अुसमे भी खास तौर पर दाहोद-झालोद तालुकोके भील प्रदेशमे सन् १९१९ और १९२२ मे दो बार दौरा हुआ। अिस अरसेमें अुन्होने आदि-वासियोकी जो करुण स्थिति देखी, अुसने अुनके हृदयको झकझोर डाला। अिस वक्त अुन्हे भीलोके सामाजिक जीवन, अुनके रीति-रिवाज और रहन-सहन तथा अुनकी आर्थिक और सामाजिक स्थितिका बहुत ही निकटसे अव-लोकन करनेका मौका मिला। अितना ही नही, दोनो बार अुनकी सेवा करनेके लिअे ही जानेके कारण भीलोके हृदयका दर्शन करनेका जो अवसर आम

तौर पर राजकर्मचारियो, व्यापारियो और अन्य अूचे वर्गके लोगोको शायद ही मिलता है वह ठक्कर साहबको अनायास ही प्राप्त हो गया।' ज्यो-ज्यो वे अुनके (भील लोगोके) निकटतर सम्पर्कमे आते गये, त्यो त्यो अिन लोगोको वे अधिकाधिक समझते गये और अिन बहादुर किन्तु डरपोक और क्रूर किन्तु सहृदय भोले लोगोके प्रति अुनके हृदयमे प्रेम और सहानुभूतिकी सरिता अुत्कट रूपमे बहने लगी।

अबसे पहले आदिवासियोके जीवनके सम्बन्धमें अुन्होने जो तरह तरहकी बाते सुन रखी थी, वे सब अूचे वर्गके लोगोमे सुनी थी और अुन परसे भील लोगोके जीवन ओर रहन-सहनके बारेमे अपने मनमे चाहे जैसे विचार बना रखे थे। परन्तु जब अुनका प्रत्यक्ष जीवन देखनेका अवसर मिला, अुनके खेत, कुअे, घरबार, कुटुम्ब-कबीले और बालबच्चे वगैराको खुद जाकर देखा, तब अुन्हे अपने विचार बदलनेको मजबूर होना पडा।

भील लोग जगली और क्रूर होते है, सुधरे हुअे मनुष्योंके सहवाससे दूर रहते है, आबदस्त नही लेते (शौच जानेके बाद पानीका अुपयोग नही करते), शिकार करके जगली जीवन बिताते है, नीति-अनीतिका अुन्हे कुछ भान नही होता, सुधरे हुअे मनुष्यको देखकर जगली पशुकी तरह या तो चौंककर भाग जाते है या जहरीले तीरोसे अुसे जानसे मार डालते है अथवा घायल करके लूट लेते है, अुनके साथ घुलने-मिलनेकी बात तो दूर रही, अुनके प्रदेशमे जाना भी खतरनाक होता है। अिस प्रकारके विचारोकी अस्पष्ट छाप भील लोगोके बारेमे आम तौर पर अूचे वर्गके लोगोके मन पर होती है। अैसी थोडी बहुत छाप ठक्कर साहबके मन पर भी अस्पष्ट रूपमे पहले पडी हुअी थी। परन्तु भीलोकी सेवा करनेवाले सेवकोके सम्पर्कमे आनेके बाद और पचमहालमे दो बार अकालके समय अुनकी प्रत्यक्ष सेवा द्वारा अुनके सीधे सम्पर्कमे आनेके पश्चात् ठक्कर साहबने जो कुछ देखा, जाना और अनुभव किया, अुस परसे अुन्हे विश्वास हो गया कि भीलोके बारेमे अूचे वर्गके लोग आम तौर पर जो विचार रखते है, वे अेक खास हद तक ही सच होते है। भील लोगोके जीवनका दूसरा पहलू भी होता है और वह अुनके प्रति तुच्छता, तिरस्कार और घृणाके भाव प्रगट करनेके बजाय प्रेम, सहानुभूति और करुणा प्रगट करनेकी प्रेरणा देनेवाला होता है।

पचमहालमे आनेके बाद अुन्होने देखा कि सभी भील जगली नही है। अुनका बडा भाग देहातमे रहकर खेती-बाडी करके अपना गुजारा करता है। अुन्होने यह भी देखा कि अुनकी कल्पनाके अनुसार लोग गुजरातके अन्य ग्रामवासियोकी तरह अेक ही जगह गाव बसाकर नही रहते, परन्तु अपने

अपने खेतो पर छुटपुट झोपडोमे अलग अलग रहते है। अुनमे से कुछके पास अपनी जमीन होती है, जबकि दूसरोके पास जमीन नही होती। अथवा होने पर भी बादमे चली गअी है। वे सब दूसरोकी जमीन पर मजदूरी करते है। ये भील कभी कभी शिकार भी जरूर कर लेते है। परन्तु शिकार पर ही अुनका जीवन-यापन होता हो सो बात नही।

अुनमे से अधिकाशको पहननेके लिये लाज ढकने लायक अेक छोटीसी लगोटी, सिर पर चिदी जैसा फेटा और खानेको मक्की, बटी, बावटा और गुजरा वगैरा अनाज पीस कर बनाअी हुअी काजी मिलती है। बिछौनेमे गद्दी-गद्देकी तो बात ही नही। मवेशीके गोठमे घास बिछाकर और अूपर साफा फैलाकर वे रात बिताते है।

स्वभावसे भील भोलाभाला होने पर भी क्रोधी जरूर होता है। सौ बरसके बाद भी बापका कर्ज चुकावे, अैसा अीमानदार होते हुअे भी चोरी और शराबकी बुराअीमे वह काफी फसा हुआ रहता है। अुन्होने देखा कि भूखा भील चोरी करे, यह कहावत वहा खब प्रचलित है। शराब तो अुसका परम मित्र मानी जाती है। धार्मिक क्रियाओमे शराब, विवाहमे शराब, अतिथि-मेहमानके आने पर शराब, बीमारीमे शराब और अतमे मौतके बाद भी शराब। शराब पीनेके लिअे पैसे न हो तो कर्ज करके अथवा बनाकर पिये, तभी अुसे चैन पडता है।

ठक्कर साहबने देखा कि पचमहालके दाहोद-झालोद तालुकोकी सवा लाखकी आबादीमे अेक लाखसे अूपर भील जातिकी ही आबादी होनेके बावजूद अुन्हे अपने बलका भान नही है। अुनमे सहयोगकी भावना विकसित नही हुअी है। स्वभावसे बहादुर और प्रामाणिक होते हुअे भी वे आलसी और अज्ञान है। ओझोके जादू-टोनोके चक्करमे फसे हुअे है। साथ ही अधविश्वास, व्यसन और कर्जमे गले तक डूबे हुअे है। हिसाब-किताब बिलकुल नही समझते। कडाकेके जाडे और जलती हुअी धूपकी परवाह किये बिना नग शरीर पच्चीस-तीस मील चल लेनेवाले और सामने जाकर बाघको मार डालनेकी हिम्मत रखनेवाले ये भोले जीव अितने अधिक डरपोक होते है कि पुलिस और सरकारी कर्मचारीसे डरे तो डरे, लेकिन अूचे मामूली वर्गके लोगोसे भी डरते है। कही कानूनके चगुलमे न फस जाय, अिस डरसे सदा घबराहट अनुभव करते रहते है। अपने अिस अज्ञान, कायरपन, व्यसन, कर्ज और फिजूलखर्चीके कारण वे लगभग गुलाम और अर्ध-गुलाम जैसी स्थितिमे रहते है और अुनके जैसा ही करुण और अपमानजनक जीवन बिता रहे है।

दौरेमे अुन्होने यह भी देखा कि भीलोको लूटनेके लिअे, चूसनेके लिअे और दवानेके लिअे सरकार, साहूकारो, कर्मचारियो, जागीरदारो, जादू-टोनेवालो, व्यापारी वनियो और वोहरोकी सारी मेना खडी है। यह फौज अुन्हे परेशान करती है, समय पडने पर धोखा देती है और अुनकी मेहनत-मजदूरीका मुफ्त अुपभोग करती है।

अुपरोक्त अूचे वर्गके तरह तरहके लोग अुन्हे किस तरह लूटते है, चूसते है और दवाते है, यह भी ठक्कर साहवको पचमहालके अपने प्रवास और निवासके दिनोमे देखने-सुननेको मिला।

व्यापारी अुन्हे रुपया अुधार देता, कलाल शराव पिलाता, और दोनो अुन्हे वरवाद करके धीरे धीरे अुनके पास जो कुछ मालमत्ता हो अुसे छीन लेते। ढोर-डगर और खेत-जमीन गिरवी रख लेते और कलके खातेदार भील किसानको भूमिहीन और वेगार करनेवाला वना देते।

दूसरे, भील लोगोको अपना कच्चा माल वेचने और चीज-वस्तुअे खरीदने अथवा और किसी कामके लिअे शहरमे आना पडता। शहरकी सीमामे घुमे और कोअी कर्मचारी सामने मिल जाय तो अुनकी कमवख्ती ही आ जाती। तुरन्त अुन्हे पकडवा मगवाते, पानी भराते, लकडी फडवाते और दूसरे काम वेगारमे कराते। अफसरोकी वात तो दूर रही, पुलिसके सिपाही भी यदि अुन्हे सामने मिल जाय, तो वे भी अफसरी रुआवसे ही डरा-धमकाकर अुनसे काम कराते। खुदका कितना ही जरूरी काम हो तो भी वह अेक तरफ पडा रहता और खाकी कपडोवाला आदमी धमकाये तो किसी भी प्रकारकी चू-चा किये विना हाथ जोडकर अुसके आगे हो जाना पडता। वह कहे वहा जाकर वह जो काम वताये अुसे पूरा कर देनेके वाद ही वे वाजार जा पाते।

घरके लिअे खरीदी करनी हो, अपना माल वेचना हो, या दूसरा काम करना हो, वह सव वादमे ही हो सकता था। अिन शहरी 'साहवो' मे वे अितने डरते कि साहव लोगोकी नजरमे चढ जानेके भयसे अक्सर जरूरी काम होने पर भी वे शहर जाना छोड देते।

शहरके व्यापारी भी अुन्हे किस प्रकार धोखा देते है, अिसकी घटनाअे और तरीके भी ठक्कर साहवके काफी जाननेमे आये। जगलमे दिनभर भटक-भटकाकर वबूलके अेक अेक पेडसे अिकट्ठा किया हुआ दो चार सेर गोद वाजारमे वेचने जाय तो अुसकी मेहनतके पूरे दाम नही मिलते। व्यापारी अुसे वुलाकर कहते, "ला, देखे क्या लाया है? गोद? ला, तौल ले।" फिर अुसमे

भीलोकी भापामे मीठी-मीठी वाते करके समझाते और कहते "तू जगलमे गोद ले आया, अिसम क्या वडी वहादुरी की? यह तो वडा आसान काम है। परतु हमारा नमक मालूम है, कहासे आता है? दूर, ठेठ समुद्रमे से। फिर भी तू हमारा परिचित है, जिसलिअे ला तुझे वदलेमे वरावर नमक तोल दू।" यो कहकर व्यापारी मानो अुस पर अुपकार कर रहा हो, अिस तरह गोदके वरावर नमक तोल देता और तीन चार गुनी महगी चीज सस्तेमे छीन लेता।

जिस प्रकार चीजे तोलनेमे धोखेवाजी की जाती, अुसी प्रकार अनाज मापनेमे भी धोखेवाजी की जाती। अनाज लेनेके लिअे जो 'पाली' या दूसरा माप होता, अुसके लिअे अेक गोल किनारा रखा जाता, जिसे मापके सिरे पर फसा देनेसे मापके अूपरका गोलाकार सिरा थोडा वढ जाता और मापनेमे अनाज अधिक आता। जव व्यापारियोको भीलोके खेत या खलिहानसे अनाज लेना होता तो यह किनारा फसा कर अनाज मापते और भीलोको अनाज देना होता, तव यह किनारा हटाकर असल मापसे कम अनाज मापकर देते।

अिसी प्रकार घी, तेल, मक्की और दूसरी जो चीजे भील स्वय पैदा करते, वे शहरोमे साहूकार सस्ते दामोमे छीन लेते। खेतके अनाजके वारेमे तो यह स्थिति थी कि भीलोके खेतमे फसल खडी हो तभीसे साहूकार अुनके खेतमे चक्कर काटने लगते ओर रुपया अुधार देकर अुसके पेटे फसल सस्ते भावो लिखवा लेते। खलिहानमे अनाज आता तव थोडा वहुत अनाज रहने देते। अिस प्रकार अपने ही खेतमे फसल आनेके वाद पूरे दो-तीन महीने भी न वीतते कि भीलोको खानेके लिअे फिर साहूकारके यहासे अुधार अनाज लाना पडता। अिस प्रकार लगान चुकानेके लिअे सस्तेमे अनाज वेचकर वे नकद पैसे लाते और वादमे सस्तेमे वेचा हुआ वही अनाज महगी कीमत पर साहूकारसे खरीदते। साहूकार सवाये व्याज पर अुन्हे अनाज अुधार देता। खानेका ड्योढा ओर वीजका दुगुना तो मामूली वात हो गअी थी। अिस प्रकारके विषचक्रमे भील अैसे फसे हुअे रहते थे कि अुससे कभी छूट नही पाते थे।

सयोगसे कदाचित् किसी भीलके पास घरमे नकद रकम वच गअी हो, तो अुसे वरवाद करा देनेके लिअे अुस समयकी ब्रिटिश सरकारने अुनके लिअे पारसी लोगोको शरावके ठेके देकर दुकाने खोलनेकी सुविधाअे दे रखी थी। अिस प्रकार अेक ओर शरावमे रुपया अुडाकर वे कमजोर ओर कर्जदार वनते और दूसरी तरफ आपसके लडाअी-झगडे खडे करके टटे-फसादमे जीवन विताते। अिस पर हर दूसरे-तीसरे साल अकाल पडता। अिस लगातार पडनेवाली मारसे

वे अितने लथड जाते कि वर्षोकी मेहनतके बाद भी बहुत ही थोडे खडे हो सकते थे। अिस प्रकार हजारो भील पीढी दर पीढी तगहालीमे, गरीबीमे, व्यसनमे और कर्जमे डूबकर दु खी जीवन बिताते थे, आधे पेट रहकर जिन्दगी गुजारते थे और अन्तमे बर्बादीके रास्ते लगकर मृत्युकी शरणमे चले जाते थे। अुन्हे अिस रास्तेसे हटाकर अेकता, सगठन और सहयोगके मार्ग पर ले जानेवाला, अुनके अधकारमय जीवनमे प्रकाशका दीपक जलानेवाला कोअी न था। मुक्ति-सेनाके अिनेगिने आदमी जरूर थे, परतु वे अिनके शरीरको बचाकर आत्माको बिगाडते थे। ससारके भौतिक सुखोके लालच और स्वार्थपूर्ण सेवा द्वारा वे अपनी धर्म-परिवर्तन करनेकी हलचलको आगे बढाते थे। किसी भी प्रकारकी आशा रखे बिना सपूर्ण नि स्वार्थ भावसे अुनकी सेवा करनेवाला कोअी नही था। ठक्कर साहबने भीलोकी यह दुर्दशा देखी। देखकर अुनका हृदय रो अुठा। अुन्हे लगा कि अिस अज्ञान, अधविश्वासी और बिखरी हुअी बहादुर जातिका हाथ पकडनेवाला कोअी नही मिला तो सारी जाति विनाशके पथ पर जाकर बर्बाद हो जायगी।

अुनके जीवनमे सेवा द्वारा प्रवेश पाकर किसी भी तरहका राजनैतिक, धार्मिक या सामाजिक स्वार्थ रखे बिना अुन्हे रास्ते पर लाया जा सकेगा, अिसी विचारमे से भील-सेवा-मडलका जन्म हुआ। अिसका विचार-बीज तो १९१९ मे ही अैसे ढगसे बोया जा चुका था जिसकी ठक्करबापाको भी कल्पना नही थी। अुस समय तो अुन्हे पता भी नही होगा कि यह बीज किसी दिन परिपक्व होगा और जो सस्था समस्त भारतमे अपना अैतिहासिक भाग अदा करनेवाली है अुसकी बुनियाद अुनके अपने ही हाथो पडेगी। परतु कुदरत अपना काम अजीब ढगसे करती रहती है। वह अिस विचार-बीजको अुनकी हृदय-भूमिमे अैसे अनजाने ढगसे बो रही थी, जिसकी अुन्हे कल्पना भी नही होगी। और अिस बातका अिन्तजार कर रही थी कि समय पाकर वह परिपक्व हो। अब हम देखे कि यह कैसे हुआ।

१७

बुनियाद डाली

१९१९ के मार्च मासमे पचमहालके अकाल-पीडित प्रदेशका प्रवास करनेके बाद भारत-सेवक-समाजके 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिंडिया' नामक साप्ताहिक मुखपत्रमे अुन्होने अेक लेख लिखा था। अुसमे मालूम होता ह कि भीलोकी सेवाके लिअे सेवकोकी सेना खडी करनेका विचार-बीज अुसी वक्तमे अुनके मनमे पड गया था। अुस लेखमे अन्य कुछ बातोके साथ-साथ अुन्होने लिखा था

"मैने बम्बअीकी समितिके सामने अकाल-निवारणके बडे कामोके लिअे अवैतनिक सामाजिक कार्यकर्ता रखनेकी अेक छोटीसी योजना पेश की है। मैं आशा रखता हू कि अुसका अमल जितना बने अुतना जल्दी होगा। ये कार्यकर्ता कालेजमे अध्ययन करनेवाले अुन विद्यार्थियोमे से चुने जाय, जो अपनी छुट्टिया भीलोके साथ रहकर अुनकी सेवामे व्यतीत करना चाहते हो। ये कार्यकर्ता भीलो और अुनके बच्चोके बीच बसकर अुनकी मदद करनेकी कोशिश करे, अुन्हे लिखना-पढना वगैरा सिखाये और अुन्हे अूचा अुठाये।"

यद्यपि अुनका यह विचार दाहोद-झालोद तालुकोके अकाल-ग्रस्त भीलो और अुनके बालकोको तात्कालिक राहत ओर सहायता देनेके लिअे ही था। अुस समय अुन्होने कोअी स्थायी योजना नही सोची थी। अिसलिअे १९१९ के जूनके अन्तमे कष्ट-निवारण कार्य पूरा हुआ, तो अुसीके साथ यह तात्कालिक विचार भी पूरा हुआ ओर यह योजना भी पूरी हो गअी।

अिसके बाद १९२२ मे फिर अकाल पडा और फिर कष्ट-निवारण कार्य करनेके लिअे ठक्कर साहब पचमहाल गये। अुस समय चरखे द्वारा कष्ट-निवारण कार्य करते करते भील लोगोके निकट सहवासमे आये। अिस बीच मीराखेडी आश्रममे अेक ब्राह्मण दपतीको भील बालकोको पढाते और कथा सुनाते देखकर ठक्कर साहबके मनमे भीलोकी सेवा करनेका पुराना सस्कार फिर जाग्रत हुआ। और अिसके लिअे अेक स्थायी सस्था खडी करनेकी अुन्हे प्रेरणा हुअी। या अैसा भी कहा जा सकता हे कि शकरपुरा गावमे अुस भील बुढियाकी करुण स्थितिने और अुसके बादकी अनेक घटनाओंकी परम्पराने भील-सेवाका जो विचार-बीज अुनके मनमे डाल दिया था और जो बहुत समय तक सुप्त रूपमे पडा हुआ था, अुस बीजके अकुर मीराखेडी

आश्रममे अुन्हीकी कल्पनाका काम करते हुअे ब्राह्मण दपतीको देखकर फूट निकले और भीलोकी सेवा करनेके लिअे स्थायी सस्था कायम करनेकी अुन्हे प्रेरणा हुअी। अुन्होने अिस विचारको मूर्तरूप देनेका निश्चय किया। सन् १९२२ के दिसम्बर मासमे ही सारी योजना बना डाली और अुस योजनाकी रूपरेखा 'युगधर्म' मासिक और 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिडिया' मे प्रकाशित कर दी।

अिस योजनाके अनुसार भीलोका काम करनेके लिअे सेवाकी भावनावाले और मिशनरी ढगके युवकोका अेक दल खडा करने और अुसके द्वारा काम करनेकी बात सोची गअी थी। यह अपेक्षा रखी गअी थी कि ये युवक कर्तव्यनिष्ठ, सेवाभावी, नि स्वार्थी और अपने तथा अपने परिवारकी साधारण जरूरतोके लायक ही वेतन (३० से ५० रु० मासिक) लेकर काम करनेमे सतोष माननेवाले हो। कल्पना यह थी कि अैसे सेवकोका अेक सेवा-मडल बने और अुसका अध्यक्ष भारत-सेवक-समाजका अेक सदस्य अथवा अुतनी ही योग्यतावाला कोअी और सज्जन रहे। और वह तीन वर्ष तक दूसरा कोअी काम न करके अिसीमे अपनी सारी शक्ति लगाये।

सस्थाके अुद्देश्य, कार्य और कार्यक्षेत्रके सबधमे नीचेकी रूपरेखा बनाअी गअी थी —

सस्थाका प्रारभ अेक मुख्य कार्यकर्ता और अन्य बारह सेवकोसे किया जाय। अिन सेवकोको मुख्य कार्यकर्ता ही चुन ले, जो अिस सस्थाका अध्यक्ष हो। ये कार्यकर्ता दाहोद-झालोद तालुकोके भील प्रदेशमे अेक अेक केन्द्र स्थापित करके आसपासके गावोमे भी काम करे। अिसके अलावा, अिन दोनो तालुकोकी सीमा पर सथरामपुर, बासवाडा, कुशलगढ, जाबुवा, राजपुर, देवगढ-बारिया और सजेलीके जो देशी राज्य स्थित है, वहा भी परिस्थिति अनुकूल होने पर सेवाकेन्द्रोकी स्थापना की जाय और अुनके द्वारा भील-सेवाके कार्यका विस्तार किया जाय।

ये सेवक भील लोगोके गहरे सपर्कमे आकर अुन्हे शारीरिक स्वच्छता सिखाये। गावमे पाठशाला हो तो भील बालको और अुनके माबापको समझाकर अुन्हे पाठशाला भेजे। गावमे पाठशाला न हो तो स्वय शुरू करे और भीलोके लडके-लडकियोको पढाये। बडी अुम्रके भील लोगोको बातोसे अथवा प्रत्यक्ष दिखलाकर खेती-बाडीके काममे सुधार करावे तथा अुनसे आलस्य छुडवाकर अिस प्रकारके प्रयत्न करे कि वे अुद्योगी बने।

वे साहूकारके जबर्दस्त ब्याजके पजेमे फसनेसे भील लोगोको बचाये। पुलिस, जगल-विभाग और माल-विभागके सरकारी अफसरोकी बेगार और अन्य

प्रकारके जुल्मोंमें अुनकी रक्षा करे। अेक गाव अथवा मुहल्लेके लोगोंकी बीज और नकद पैसेकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे परस्पर सहकारी समितियां स्थापित करनेके लिअे भील लोगोंको समझाये। खेतीबाड़ीके अलावा फुर्सतके समय-कातने, बुनने और अिसी प्रकारके जो अन्य गृह-अुद्योग हों अुनके लिअे सुविधा कर दे। सामाजिक कुरीतियोंको तिलांजलि देने और शराब तथा मांसाहार छोड़नेकी धीरे-धीरे अुन्हें शिक्षा दे। ग्रामको रामायण-महाभारतकी कथा सुनाये और साथ साथ देश-विदेशमें होनेवाली घटनाओंकी जानकारी और समझ भी दे। भीलोंको अुनकी बीमारीमें सहायता देनेके लिअे छोटासा दवाखाना चलाये। और ढेढ, चमार, भंगी, डबगर वगैरा अस्पृश्य जातियोंके मित्र बनकर अुनकी सेवा करे।

अिसके लिअे दाहोद, गरबाडा, जेसावाडा, गराडू, लीमडी, डूंगरी वगैरा स्थानों पर दसेक केन्द्र शुरू हों। अुनमें से दो जगह भील बालकोंके लिअे अेक भील आश्रम स्थापित किया जाय और अुसका संचालन किया जाय।

कार्यकर्ताओंके तीससे पचास रुपये तक मासिक वेतन, दो आश्रमके मकानों और चालीस विद्यार्थियोंका खर्च तथा शुरूका कुछ खर्च वगैरा कुल मिलाकर तीन वर्षके लिअे लगभग ५२,००० रुपयेका अंदाज लगाया गया। और यह रुपया ठक्कर साहबने गुजरातसे सार्वजनिक चंदेके रूपमें प्राप्त करनेकी आशा रखी। जबसे अुन्होंने यह योजना प्रकाशित की तभीसे अुन्होंने पूरी श्रद्धा रखी थी कि गुजरात अितना रुपया अवश्य दे देगा। यह बात योजनाके अंतिम भागमें अुन्होंने जो अपील की है, अुस परसे साफ देखी जा सकती है।

अुन्होंने लिखा है

"अिन बारह सेवकों और अेक अध्यक्षके लिअे तीन सालके खर्चके ५२,००० रुपयेकी जरूरत होगी और गुजरात अथवा गुजरातियोंसे अितने सेवक और अितनी रकमकी भिक्षा मांगना ज्यादा तो हरगिज नहीं है। अनुभवसे अितना तो कह सकता हूं कि यदि अिस कामके लिअे गुजरातके युवक वर्गमें से बारह अैसे सेवक निकल आयें, जो भील भाअियोंकी कमसे कम तीन साल तक सेवा करनेका व्रत लें, तो रुपया जरूर मिल जायगा। जनताको थोड़ा-बहुत सेवाकार्य करके बताया जायगा, तो गरीब भारत भी आवश्यक रुपया अिकट्ठा कर देनेमें पीछे नहीं रहेगा।"

अिस प्रकार पंचमहाल जिलेमें भील-सेवा-मंडल संबंधी जो अपील और योजना शुक्रवार ता० १–१२–'२२ को अुन्होंने प्रकाशित की, वह बेकार नहीं गअी। यद्यपि अुन्होंने जैसी आशा रखी थी वह तो पूरी तरह सफल नहीं

हुअी, परतु शुरूके हिसावसे अुन्हे लोगोकी तरफसे ठीक जवाब मिला। रुपयेकी चिन्ता तो थी ही, परतु अुससे भी अधिक चिन्ता अुन्हे योग्य मनुष्य प्राप्त करनेकी थी। परतु जो मनुष्य अेक बार अपना सारा स्वार्थ छोडकर प्रभु-प्रीत्यर्थ काम करनेको निकल पडता है, अुसकी अीश्वर हमेशा सहायता करता है।

ठक्कर साहबको भी अीश्वर अथवा प्रकृतिने अनपेक्षित सहायता दी। अुन्होने नये प्रारभ किये हुअे अिस कार्यमे जिन बारह साथियोका हिसाब लगाया था, अुनमे से मुख्य माने जाने लायक पाच छ साथी सेवक तो लगभग बिना परिश्रमके और सहज रूपमे ही मिल गये।

सबसे पहले तो सुखदेवभाअी त्रिवेदी — भीलोके सुखदेव काका — अुन्हे १९१९ मे ही अनायास मिल गये थे। अुन पर ठक्कर साहबका ध्यान तभीसे था। अुनके बारेमे ठक्कर साहबकी राय बहुत अूची थी। अेक जगह सुखदेव भाअीका परिचय देते हुअे वे बताते हैं कि "सुखदेव विश्वनाथ त्रिवेदी, जो आम तौर पर सुखदेव काकाके नामसे मशहूर है, भीलोकी सेवा करनेवाले पिता है और मै अुनकी माता हू, अेसा माना जा सकता है। सुखदेव दाहोदके सार्वजनिक निर्माण-विभागमे १९०८ से १९१८ तक सरकारी नौकरी करते थे। वे स्वभावसे अुग्र किन्तु प्रामाणिक और गरीबोके प्रति दयाभाव रखनेवाले थे। अिसलिअे अुन्हे अिस बातकी पूरी जानकारी थी कि भीलोको अिजीनियरी विभागके ठेकेदार तथा गावके बोहरे-बनिये वगैरा किस प्रकार चूसते और धोखा देते है तथा अुनकी जमीने छीन लेते और अतमे अुन्हे केवल मजदूर बना देते है। अुन्होने यह भी देखा था कि अकाल-निवारणके कामके लिअे जो कष्ट निवारक अफसर बनकर आते, वे भी राजाकी तरह कुरसीकी पालकी बनाकर भीलोसे किस तरह अुठवाते थे। यह सब देखकर वे मन ही मन झुझलाया करते। फिर १९१९ मे पचमहालमे अकाल पडा, तब भील किसानोको कुछ राहत पहुचानेके लिअे क्या काम किया जा सकता है, अिसकी जाच करने जब मै वहा गया, तब वहा भाअी सुखदेवसे मेरी जान-पहचान हुअी। अुन्हे मेरे जैसा कोअी आदमी चाहिये था और मुझे अुनके जैसा कोअी स्थानीय जानकार आदमी चाहिये था। अिसलिअे हमारा अच्छा मेल बैठ गया। भाअी सुखदेवने तो सेवाक्षेत्रमे अुतरनेके बाद भी खूब अुतार-चढाव देखे है। फिर भी वे अिस क्षेत्रमे अन्त तक डटे रहे, यह अुनके सेवाभाव और मनकी दृढताका परिचायक है।"

दूसरे श्री डाह्याभाअी नायक ताजे ही गुजरात विद्यापीठसे स्नातक बनकर निकले थे और श्री अिन्दुलाल याज्ञिकके नेतृत्वमे वीरमगाव तालुकेम

रहकर ग्रामसेवा और काग्रेसका काम कर रहे थे। वादमें वे भ्रमण करते करते श्री अिन्दुलाल याज्ञिकके आदेशसे पचमहाल आ पहुचे और अुनके पथ-प्रदर्शनके अनुसार मीराखेडीमे अत्यज आश्रम खोलकर भील वच्चोके साथ रहकर सुखदेवभाअीके साथ शिक्षा और सेवाका काम करने लगे थे।

अिनके वारेमे ठक्करवापाने वादमे लिखा था कि, "विश्वासपात्र, अुद्योगी और पूरी तरह लगनसे काम करनेवाले डाह्याभाअी जैसे कार्यकर्ताका मिलना भी अीश्वरकी कृपासे ही सभव हो सकता है। सिर पर कुटुम्वका भार, लडकियोके व्याह करनेकी अपार चिन्ता और लडकोको पढानेके खर्चका वोझ होने पर भी जिन्हे सार्वजनिक कार्यकी लगन लगी हो, अैसे ये अेक ही आदमी है। अिनकी स्थिति मेरे जैसा विधुर और अकेला आदमी नही समझ सकता। व्रतके वीस वर्ष पूरे हो जाने पर भी भीलोकी सेवामे ही रमे रहते है। पिछले आठ दस सालसे भीलोमे रहकर अुन्होने क्रम-विक्रयकी सहकारी समितिया और सहकारी वैंक स्थापित किया है। अुनका वह कार्य प्रशसनीय है।

अिसके सिवाय गिनतीके महीनोमे ही भील-सेवा-मडलके आधार-स्वरूप दो और महत्त्वपूर्ण कार्यकर्ता भी ठक्करवापाको सहज ही मिल गये।

अुस समय तक भील-सेवा-मडल या अैसी कोअी सस्था वाकायदा स्थापित नही हुअी थी। ठक्कर साहव मअी मासमे अकाल-निवारणका काम पूरा करके पूना चले गये थे। भारत-सेवक-समाजका अेक रिवाज था (जो आज भी प्रचलित है) कि जून मासमे अेक वार समाजके सव सदस्य अिकट्ठे हो और सव अेक जगह महीने भर साथ रहे। अपने अपने कामकी जानकारी देकर प्रसगोपात्त चर्चा करे, मुश्किले पेश करे और अेक दूसरेके साथ विचार-विनिमय करके परस्पर सहायता और मार्गदर्शन प्राप्त करे। यह समेलन पूनामे ही भारत-सेवक-समाज सस्थाके मकानोमे रखा जाता है। ठक्कर साहव जिस प्रकार सारा जून मास पूनामे विताकर अुत्तर भारतमे वडी धारासभाका कामकाज किस ढगसे होता है, यह प्रत्यक्ष देखने और ज्ञान प्राप्त करनेके लिअे शिमला गये थे। वहासे सीमाप्रान्तका दौरा करके लौट रहे थे कि अितनेमे पजावमे लाहोर और अमृतसरके वीच किसी छोटे स्टेशन पर अुनकी गुजराती मालूम होनेवाले व्यक्तियोसे भेट हो गअी। अुनमे से अेक थे पारसी श्री लोखडवाला और दूसरे थे वम्वअीके धनाढच काग्रेसी कार्यकर्ता श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त। वे पजाव काग्रेस कमेटीका हिसाव जाचने जा रहे थे। भारत-सेवक-समाजके अेकनिष्ठ कार्यकर्ताके रूपमें ठक्कर साहवका नाम तो अुन्होने सुन ही रखा था, अिसलिअे अुन्हे गाडीमे जाते देखकर सहज ही मिलने गये। मिलने पर अनेक वाते हुअी।

श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तने — जो गाधीजीके आदेशके अनुसार कालेजकी पढाअी छोडकर सेवाकार्यमे लगे थे और वम्वअीमे खादीभडार और चरखा वर्ग चलाते थे तथा काग्रेसका काम कर रहे थे — वातचीतमे वताया

"मेरे अेक मित्र हैं। वे शहरमे रहकर काग्रेसका काम करते हैं, परन्तु शहरी जीवनसे अुकता गये हैं। वहाके कामसे अुन्हे सन्तोष नही होता। अिसलिअे किसी गावमे वैठकर गाधीजीके वताये हुअे मार्ग पर सेवा करना चाहते हैं। अुन्होने गाधीजीकी पुकारको सुनकर कालेजकी पढाअी छोड दी है और अव वे साधक आश्रममें तालीम पा रहे हैं। साथ ही काग्रेसका दफ्तर भी सभाल रहे हैं।"

मानो श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तके साथ अुनका वर्षोका सम्वन्ध हो, अिस प्रकार ठक्कर साहवने तुरन्त अुनकी वात पकड ली और कहा

"तव अुन्हे दाहोद क्यो नही भेज देते? वहा भी गावोका ही काम करना है और वह भी वेचारे अुन अनपढ, अज्ञान और गरीव भीलोके वीच करना है, जो समाज द्वारा खूव कुचले और चूसे गये हैं। अुनके जैसे नवयुवकोको वहा अवश्य आना चाहिये। आप अपने अिन मित्रसे वात कीजिये और अेक वार सीधे अुन्हे वहा जरूर भेज दीजिये।"

यह वात सुनकर श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तके हर्षका पार नही रहा। वहुत दिनसे वे अधेरेमे कोअी चीज ढूढ रहे थे, वह अुन्हे अेकाअेक मिल गअी। ठक्कर साहवकी वात अुन्होने सहर्ष स्वीकार कर ली और अपने मित्रकी अुनसे मुलाकात करा देना मजूर कर लिया।

श्रीकान्तभाअीके मित्र थे श्री पाडुरग वणीकर। ये महाराष्ट्री युवक वडौदाके निवासी थे और श्रीकान्तके साथ रहकर गिरगावमे काग्रेस कमेटीके मत्रीके रूपमे काम करते थे। ठक्कर साहवके साथ अुनकी पहली मुलाकात वम्वअीके स्टेशन पर ही हुअी और वे अिनकी ओर आकर्षित हुअे। अिसके वाद वे दाहोदमे ठक्कर साहवका भील-सेवा-मडलका काम देखने गये। वहा पहले तीन महीने रहे और तीन महीनेसे तीन वरस सेवा करनेके लिअे ठहर गये। अिस प्रकार करते करते अतमे अुन्होने वीस वर्ष तक सेवा करनेकी प्रतिज्ञा ली और जैसा वापाने अेक जगह कहा है, अुन्होने यह प्रतिज्ञा अत तक अुत्तम ढगसे पालन की। अुनके सेवा-जीवनके वर्षोका परिचय देते हुअे ठक्करवापाने अेक जगह लिखा है कि

"दाहोद तालुकेके जेसावाडा गावमे भील वालकोके लिअे अेक मिट्टीके घरमे आश्रम स्थापित किया और अुसमे शुरूके दो चार वर्ष श्री वणीकरने

अैसे कगाल घरमे निकाले कि अुस घरका चित्र अव भी जव मेरी आखोके सामने आ जाता है तो मै काप अुठता हू। गावके घरकी मिट्टीकी दीवारे थी। अुनके छेदमे से अेक दिन तो छ सात फुट लम्वा साप निकला और भाअी वणीकर और अुनकी पत्नीको न काटकर चला गया। यह मेरी आखो देखी घटना है।

"दूसरी वार अेक ढोर वाधनेके ठानके अूपरके कोठेमे — जहा पूरी तरह खडे रहना भी सभव नही था — दोनो पति-पत्नी रहते थे और मै अुनके यहा आता-जाता था, यह मुझे याद है। अैसी सेवा करते हुअे वम्वअीके अेक अुदार भाटिया सज्जनको दया आअी और अुसने पाच-सात हजारकी रकम दी। अुससे अेक खेत खरीदकर रहने और विद्यार्थियोके छात्रालयके लिअे अच्छे मकान वनाये गये। तव अुन्हे कुछ सुख हुआ। आजकल ये भाअी वणीकर मेरे आग्रहसे मध्यप्रान्तमे सरकारकी तरफसे गोड वगैरा आदिवासियोका काम पिछले दो सालमे कर रहे है।"

श्री वणीकरकी तरह ही अुनके पीछे पीछे श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त भी आकर्षित हुअे और धीरे धीरे वे भी वम्वअीका महलोका रहना छोडकर पचमहालकी सूखी जमीन पर वीरान मुल्कमे देहातके मिट्टीके मकानमे रहकर भीलोकी सेवा करने लगे। अुनके पीछे अुनकी श्रीमत पत्नी भी आ गअी।

अिन दो सेवकोके सिवाय अवालाल व्यास जैसे अेकनिष्ठ और मूक भीलसेवक पचमहालकी भूमिमे ही मिल गये। वे गुजरात विद्यापीठके स्नातक हो गये थे। ठक्कर साहवके व्यक्तित्व और भीलोकी सेवाके लोभसे आकर्षित होकर अिस नये मडलमे शरीक हो गये और अुन्होने वतनमे ही सेवायज्ञ शुरू कर दिया।

अिनके सिवाय श्री अीश्वरलाल वैद्य, श्री रूपाजीभाअी परमार, श्री मगनलाल महेता वगैरा सेवकोका स्रोत भी जारी ही रहा। अिस प्रकार ठक्कर साहवने जव १९२२के दिसम्वरमे अपनी योजना प्रकाशित करके गुजरातके सामने ५२,००० रुपयेकी रकम और वारह सेवकोकी माग रखी, तव अिसके लिअे अुन्होने जो आशा रखी थी अुसके अनुरूप सौ प्रतिशत नही तो भी लगभग साठ-सत्तर प्रतिशत अुत्तर अुन्हे प्रथम छ मासमे ही मिल गया। अीश्वरका नाम लेकर पचमहालकी सूखी धरतीमे भील-सेवा-मडलकी वुनियाद डाली गअी और पूर्ण श्रद्धा और भक्तिसे सेवाका श्रीगणेश कर दिया गया।

१८

कार्यका आरम्भ

भील-सेवा-मडलकी वाकायदा स्थापना तो १९२२ के दिसम्बरमे ठक्कर साहबने योजना प्रकाशित की अुसके वाद हुअी। परन्तु कार्यका आरम्भ तो वहुत पहले हो चुका था। मीराखेडीमे सुखदेवभाअीने तीस रुपयेकी जमीन लेकर अुस पर झोपडी वना ली थी और अुसमे आश्रम शुरू कर दिया था। वादमे अुसमें नदलाल आचार्य और डाह्याभाअी नायक वगैराके शरीक होने पर वहा शिक्षाका कार्य भी शुरू कर दिया गया था। अिस आश्रम और पाठशालाका जो खर्च आता, वह गुजरात प्रान्तीय काग्रेस समितिकी तरफसे मिलता था और श्री अिन्दुलाल याज्ञिक अुसकी देखरेख रखते थे। ठक्कर साहबका अिस सस्थाके साथ कोअी सीधा सम्वन्ध नही था, परन्तु १९२२ के आरम्भमे पचमहालमे भारत-सेवक-समाज और वम्बअीकी कष्ट-निवारण-समितिकी तरफसे काम करने आये और मार्चमें अुनके हाथसे अिस सस्थाका अुद्घाटन हुआ, तवसे सस्थाके कार्य-सचालनमे प्रेरणा और पथप्रदर्शन देनेमे वे प्रमुख थे। श्री अिन्दुलाल याज्ञिक तो अुस समय असहयोगकी राजनीतिमे अितने अधिक गुथे हुअे थे कि अिस सस्थाका आर्थिक भार वहन करनेके सिवाय अधिक जिम्मेदारी अुन्होने अपने सिर नही रखी थी, अुन्हे अितनी फुरसत भी नही थी। अिस पर भी ठक्कर साहव जैसे वुजुर्ग, अेकनिष्ठ और निष्णात मानवसेवक अिस विभागमे मौजूद हो, तब श्री अिन्दुलाल याज्ञिक अिसकी चिन्ता क्यो करे? सार यह कि मीराखेडीमें जो कुछ काम शुरू होता, अुसके खर्चका प्रवन्ध श्री अिन्दुलाल याज्ञिक और प्रान्तीय समितिके अधीन काम कर रहा अन्त्यज मडल करता ओर अुसकी देखरेख, सचालन और पथप्रदर्शन ठक्कर साहव करते। अिस प्रकार मीरा-खेडीके आश्रमके पीछे दो महान सस्थाओके प्रतिनिधि-स्वरूप दो महान पुरुषोका पृष्ठवल और समर्थन विद्यमान था।

१९ मार्च, १९२२ को होलीके पर्वके वाद ठीक सातवे दिन मीरा-खेडी आश्रमका अुद्घाटन श्री ठक्कर साहवके शुभ हाथोसे किया गया और अुस दिन चार भील वालकोको पहले पहल आश्रममे भरती किया गया।

अिस सिलसिलेमे ठक्कर साहवने आश्रमके रोजनामचेमें अिस प्रकार लिखा

"आज रविवार फागुन वदी सप्तमीके दिन भील आश्रमका प्रारम्भ किया। नीचे लिखे चार लडके भरती किये गये

१ वेस्ता कमजी अुम्र ८ वर्ष
२ चूनीलाल कमजी अुम्र ५ वर्ष
३ मानजी तेलिया अुम्र १० वर्ष
४ जविया धनजी अुम्र १३ वर्ष

"अिन चार लडको और अन्य पाच लडकोको दोपहरके दो बजे नहलाकर और तिलक लगाकर गुड खिलाया। अुपरोक्त चार लडकोको नये कपडे पहनाये। प्रार्थना कराअी और आजसे आश्रम खोला।

"निम्नलिखित सज्जन अुपस्थित थे

१ भाअी जेठालाल विश्वनाथ
२ भाअी सुखदेव विश्वनाथ
३ भाअी दलमुखराम केशवलाल पुरोहित
४ भाअी जशभाअी चूनीभाअी अमीन
५ आचार्य नदलाल हरजीवन महेता

"दाहोदके नारायण छत्रमलजी दलालकी तरफसे अिस अवसर पर २।। सेर गुड भेटमे मिला है।

फाल्गुन वदी ७, सवत् १९७८ १९ मार्च, १९२२

अमृतलाल वि० ठक्कर"

आश्रमके रोजनामचेमे "भील बालकोको नहला-धुलाकर, नये कपडे पहनाकर, तिलक लगाकर और गुड-धानी खिलाकर भरती किया"— ये शब्द लिखते समय बापाके मनमे क्या क्या भाव अुठे होगे, यह बतानेको आज वे जीवित नही है। मगर आज भी हम जगल और वीरान प्रदेशमे स्थित अुस अूचे टीले पर खडी झोपडीमे मन्द मन्द मुसकाते हुअे और भील बालकोको प्रेमसे नहलाते और तिलक लगाते हुअे अुन वयोवृद्ध पुरुष और अुनके अुल्लासपूर्ण वदन तथा प्रेम बरसाती आखोकी कल्पना आसानीसे कर सकते है। अुनके हृदयमे बसा हुआ स्वप्न मानो मीराखेडीकी धरती पर साकार बन रहा हो, अैसा आश्रमके रोजनामचेमे पहले पन्ने पर आजसे तीस वर्ष पहले लिखे गये अिन अक्षरोसे पढा जा सकता है।

ठक्कर साहब अुस समय दाहोद-झालोदके अकाल-पीडित प्रदेशमे १९२२ के जनवरीसे मअी अत तक रहे और चरखे द्वारा कष्ट-निवारण कार्य किया। अिस अरसेमे वे समय समय पर मीराखेडी आश्रम देखने आ जाते।

महीनेमे अेक दो वार तो अचूक आते थे। आते तव मकान देखते, पाठशाला देखते, विद्यार्थियोको क्या पढाया जाता है, कैसे पढाया जाता है, अिसका निरीक्षण करते। विद्यार्थियोको जो पढाया जाता है अुसे वे पूरी तरह समझते है या नही, अिसकी परीक्षा करनेके लिअे पूछताछ करते। अिसके सिवाय अुन्हे कैसे रखा जाता है, अिसकी भी अुतनी ही वारीकीसे जाच करते।

जूनके महीनेमे अकाल-निवारणका काम पूरा करके वे अमरेली गये और अमरेलीसे अेक मास पूना रहकर पजावके दौरे पर गये। वहासे लौटनेके वाद अुन्हे मिले हुअे साथियोकी मददसे पचमहाल जिलेके दाहोद-झालोद तालुकोमे रामका नाम लेकर भील-सेवा-मडलकी स्थापना करके कार्यारभ किया। दाहोदके अकाल कार्यालयको ता० ५–११–'२२ को भील सेवा मडल कार्यालयमे वदल डाला गया। दिसम्वरमे योजना प्रकाशित की गअी और वादमें जैसे जेसे सेवक मिलते गये वैसे वैसे गरवाडा, जेसावाडा, गलतोरा, मुडाहेडा वगैरा गावोमे केन्द्र खोले गये और अेक अेक सेवकको वहा रख कर अुसे कामकी जिम्मेदारी सौंपी गअी।

ये सेवक अपने अपने केन्द्रोमे पाठशाला चलाते, गरीवो और कगालोको अनाज और कपडेकी मदद देते, धार्मिक पुस्तकोमे से प्रसगोपात्त कथा सुनाते, वीमार और रोगियोको अुपयोगी दवा देते और मद्यनिषेधका अुपदेश करते। अिस प्रकार प्रत्येक केन्द्रमे रखा गया सेवक अेक ही साथ शिक्षक, अुपदेशक और वैद्यका काम करता था।

दाहोदसे दक्षिणमे वारह मील दूर गरवाडा गावमे अेक पाठशाला शुरू की गअी। वहा लगभग ६० भील वालक और २० हरिजन लडके पढने आने लगे। अिस गावमे जिला वोर्डकी पाठशाला बहुत वर्षोसे चलती थी। परन्तु कुछ कारणोसे भील लडके वहा वहुत नही जाते थे, जवकि अिस नअी पाठशालामे ८० तक विद्यार्थी आने लगे। अिन लडकोको मडलकी तरफसे स्लेट, पेन्सिल, पुस्तक वगैरा मुफ्त दी जाती थी। पाठशालाके अलावा जुलाहोकी अेक सहकारी-समिति भी शुरू की गअी।

दूसरा केन्द्र जेसावाडा था। यह गाव दाहोदसे वायव्य दिशामे आठ मील दूर स्थित है। वहा केवल पाठशाला ही नही परन्तु छात्रालय भी शुरू किया गया और श्री पाडुरग वणीकर जैसे विद्वान और अुत्साही कार्य-कर्ता और अुनकी पत्नीको वहाका सारा काम सौपा गया। विद्यार्थियोको मुफ्त खानापीना, रहना तथा कपडा वगैरा दिया जाता था। विद्यार्थियोको लिखने-पढने और हिसावके सिवाय वढअीगिरी और कलाअी जैसे अुद्योग

भी सिखाये जाते थे। अिसके सिवाय वहा अीश्वरलाल वैद्यके सचालनमें अेक दवाखाना भी शुरू किया गया। जेसावाडाके आसपास तीन तीन चार चार कोस दूरसे लोग यहा दवा लेने आने लगे। वहाके लोग कच्चे कुओंका पानी पीते, अिसलिअे नहरूका रोग अुस जिलाकेमें खूब फैलता था। जिन रोगियोको अिस दवाखानेसे काफी राहत मिलती। अीश्वरलाल वैद्य रोज औसत तीस बीमारोको दवा देते। अुनमे बुखार, दस्त और नहरूके रोग आम थे।

तीसरा केन्द्र गुल्तोरा दाहोदसे ११ मील दूर था। यहा दिन और रात दोनोकी पाठशाला शुरू की गअी। अुसमें विद्यार्थियोकी औसत हाजिरी ४९ तक रहती थी। विद्यार्थियोको स्लेट, पेन और पुस्तक मुफ्त दी जाती थी। ४२५ रु० खर्च करके यहा अेक पाठशाला और शिक्षकके रहनेका मकान — लकडीके खभो और खपचियोकी दीवालोका अेक झोपडा — बनाया गया। शालाके लिअे जमीन अिसी गावके अेक भील किसानने दी थी।

चौथा केन्द्र मुडाहेडा दाहोदके अुत्तरमे १६ मील दूर था। अिस गावमें अेक शाला शुरु की गअी, जिसमे ३० से ४० तक विद्यार्थी आने लगे। अेक पचाल गृहस्थने शालाके मकानके लिअे मुफ्त जमीन दी। वहा भी गुलतोराकी तरह ही ४२५ रुपये खर्च करके शाला तथा शिक्षकके रहनेका मकान बनवाया गया।

अिसके अतिरिक्त दाहोदसे पूर्वमें १२ मील दूर टीमरडा गावमें भी काम शुरु हुआ। यहा आसपासके गावोमे लगभग चार स्थानो पर जिला बोर्डकी पाठशालाअे थी। अिसलिअे दूसरी नअी पाठशाला शुरु नहीं की गअी। लेकिन सेवकोकी तरफसे अिसके लिअे प्रचार कार्य शुरु हुआ कि अिन्ही पाठशालाओमे विद्यार्थी पढने जाने लगे। बालकोको पाठशालाओमें ले जानेका काम कार्यकर्ता और सेवकोको सौपा गया।

ठक्कर साहब स्वय तो दाहोद रहते और वहा रहकर जिन सब केन्द्रोमे जाया करते थे। महीनेमे कमसे कम अेक बार वे लगभग प्रत्येक केन्द्रमे बैलगाडीसे जाते और अेक दो दिन केन्द्रमे बिताकर कार्यका निरीक्षण करते। कार्यकर्ताओकी कोअी कठिनाअी होती तो अुसे दूर करते। अुनकी जरूरतोका ध्यान रखते। अिसके सिवाय जरूरत होती वहा काममे अुनका पथप्रदर्शन भी करते थे।

प्रथम छ मासमे अिस प्रकार चार जगहो पर पाठशालाअे, अेक जगह छात्रालय, अेक जगह औषधालय और दो जगह सहकारी समितिया शुरू की गअी।

यद्यपि अिसमे सभी जगह अुतनी सफलता नही मिली जितनी सोची गअी थी और काममे अपार कठिनाअिया आअी, फिर भी पहले छ महीनोमे अितना काम अवश्य हुआ जिससे अुत्साह बना रहे।

अिस सम्बन्धमे ठक्कर साहबने रिपोर्ट प्रकाशित करके सस्थाकी जरूरते बताते हुअे लिखा, "फिलहाल शिक्षको और सेवकोका वेतन, जेसावाडा आश्रमके भोजनालयका खर्च तथा अन्य खर्च, दवाओकी कीमत, पाठशालाओमे विद्यार्थियोको दिये जानेवाले कपडे, पुस्तके और साबुन वगैराका खर्च मिला कर कुल चालू खर्च ७०० रु० से अधिक हुआ है। अब तक कुल दान केवल २,७४८ रु० मिला है। यह सब रकम चालू खर्चमे काम आ गअी है। अिसके सिवाय थोडा कर्ज भी हो गया है। अिस प्रकार हर महीने लाकर हर महीने खाना पडे, अैसी हमारी स्थिति है। खर्चमे कोअी कमी होना सभव नही। अितना ही नही, आगामी वर्षमे तो मूल योजनाके अनुसार केन्द्र बढाकर पाचके दस करनेका विचार है। अिस प्रकार अुस हिसाबसे चालू मासिक खर्च बढकर दुगुना अर्थात् १,४०० रुपये हो जायगा।"

अिसके बाद देशमे रहनेवाले धनवानोसे अिस सस्थाको दान देनेके लिअे दर्दभरी अपील करते हुअे कहा

"बम्बअी-अहमदाबाद जैसे शहरोमे तथा अन्य स्थानो पर रहनेवाले सज्जनोसे मै विनती करता हू कि हमारे समाजकी अैसी नीची पक्तिकी और कुचली हुअी जातियोका भविष्य बदलना जरूरी है और अिसके लिअे सेवको और धन दोनोकी जरूरत है। भील लाखोकी सख्यामे है। यह जाति पानीवाली है। परन्तु आज अुसे अपने अिन्सानी हकोका भान नही है। अिस नीचे गिरी हुअी जातिको मददके जरिये खडा करके देशकार्यमे लगाना चाहिये। यह काम आसान नही है। अिसके लिअे सेवाभाववाले सच्चे सेवकोकी खास जरूरत है और रुपयेकी भी अुतनी ही जरूरत है। धनवानोके भण्डारमे पतित जातियोको सीधा खडा करनेके लिअे आवश्यक धन-सामग्री भरी हुअी है। अुसमे से थोडी सहायता अुन्नतिके लिअे तैयार खडी अिस जातिके लिअे नही मिल सकती? मुझे पूरी आशा है कि दुखियोकी पुकार अवश्य सुनी जायगी।"

१९

कठिनाअियां

भील-सेवा-मडलकी स्थापनाके वाद शुरूमे काम काफी आगे बटा, लेकिन ज्यो-ज्यो अुसका विकास होता गया, त्यो त्यो अनेक प्रकारकी परेशानिया और मुश्किले भी सामने आने लगी। दाहोद-झालोद तालुकोमे जव तक ठक्कर साहव केवल अकाल-निवारणका ही काम करते थे, तव तक सरकारी कर्मचारियो, व्यापारियो, भील लोगो, वोहरो और अन्य वर्गोका साथ अुन्हे काफी मात्रामे मिला। जनताने तो अुनका स्वागत ही किया। कर्मचारियोने विवेकपूर्वक अुनके काममे सहयोग और सहायता दी। अूचे वर्गोने भी अेक परोपकारी सज्जन और सच्चे सेवकके नाते अुनका वडा सम्मान किया। यहा तक वे सवकी नजरोमे वडे आदमी लगते और 'दूरके पहाड सुहावने' वाली कहावतके अनुसार कलेक्टरसे लगाकर साधारण कर्मचारी और अूचे वर्गमे लगाकर आम जनता तक वे सवको अच्छे लगते थे। परन्तु ज्यो ही अुन्होने भील-सेवा-मडलकी स्थापना करके शिक्षा, सहकारी समितया, औपधालयो और आश्रमो द्वारा गरीवोकी सेवा करना शुरु किया, त्यो ही अुन्हे कर्मचारियो और कुछ स्थापित स्वार्थोका विरोध सहन करना पडा। यह सव तो ठीक है, मगर जिनके कल्याणके लिअे अुन्होने अपना जीवन अर्पण कर दिया और अिस प्रदेशमे सेवा केन्द्र स्थापित किये थे, अुन भीलोकी तरफसे भी कुछ अपवाद छोडकर अुन्हे सहयोग मिलनेके वजाय कठिनाअियोका ही अनुभव होने लगा।

मडलकी तरफसे जहा जहा पाठशाला खोलने या आश्रम शुरु करनेके लिअे सेवक गावमे जाते, वहा वहा शुरूसे ही अुनके पैर न जमने देनेकी नीति कुछ कर्मचारियोने अपना ली थी। कारण, थोडे समयमे ही अुन्होने साफ देख लिया कि यदि अिन लोगोने यहा अपने केन्द्र खोल दिये और गहरी जडे डाल दी, तो हमारी हुकूमत तो खतम ही समझना चाहिये। फिर भीलो जैसी अज्ञान और पिछडी हुअी जातिसे जो अनेक प्रकारकी मुफ्त सेवा मिलती हे, वह वन्द हो जायगी। भील हमसे डरना छोड देगे। फिर हमारा हुक्म नही मानेगे और जो काम अिस समय आसानीसे अुनसे वेगारमे करा लिया जाता हे, वह मुश्किलसे भी नही कराया जा सकेगा। कुछ अपराधोमे अुन्हे अनुचित रूपमे फसाकर वादमे छुडवानेके लिअे अुनमे रिश्वतका रुपया नही अैंठा जा सकेगा। ये और अिस प्रकारके जो अन्य तरह तरहके

लाभ वे निरंकुश होकर भोग रहे थे, अुन पर अंकुश लग जायगा और हुकूमतसे मिलनेवाले तमाम लाभ बन्द हो जायगे — यह दहशत अुन्हे लगने लगी।

अिसलिअे वे टेढे या सीधे ढगसे अिस तरहकी कोशिश करते कि भील-सेवकोको न तो देहातमे रहनेके लिअे मकान मिले और न पाठशालाओके लिअे जमीन मिले। कोअी भील गावके कार्यकर्ताको अपने घर ठहरने न दे अिसका वे ध्यान रखते। अगर कोअी ठहरानेकी हिम्मत करता, तो अुससे वैर रखते और मौका मिलने पर बदला लेकर अुस भीलको अितना तग करते कि फिर वह कार्यकर्ताके पास फटकनेका साहस भी न करता। कार्यकर्ता लोकलबोर्ड या अिस तरहकी धर्मशालामें ठहरने जाता, तो अुसमें भी कुछ बहाने बनाकर विघ्न डालते और ठहरना मुश्किल कर देते। पाठशालाके लिअे जमीन खरीदने जाते तो अिसकी सावधानी रखते कि कोअी अुन्हे जमीन न बेचे, अितने पर भी जमीन मिल जाती तो आसपास या लगी हुअी जमीनवाले पडोसी भीलो या स्थानिक मनुष्योको मडलके विरुद्ध अुभाडकर बीचमे सीमा या मेडका झगडा करा देते। जमीन पर झोपडे खडे किये हो तो कुछ न कुछ बहाना बनाकर अथवा बिना बहानेके ही पटवारी अुन्हे अुखडवा देते। कानूनकी बारीकियोसे फायदा अुठाकर मडलके कार्यकर्ताओके विरुद्ध सच्चे-झूठे मुकदमे खडे करते और लम्बे समय तक अदालतोमे धक्के खिलाकर परेशान कर डालते।

मडलके कायम होनेके बाद शुरूके चार-पाच वर्षोमे शायद ही कोअी वर्ष अैसा बीता होगा, जिसमे मडलके किसी न किसी कार्यकर्ता पर मुकदमा न चलाया गया हो।

मडलका कामकाज शुरू हुआ, अुन्ही दिनो अेक मुकदमा अुन्होने सुख-देवभाअीके विरुद्ध जमीनके बारेमें दायर किया। मीराखेडीमे सुखदेवभाअीने सस्थाके लिअे खेतीकी जमीन लेकर अुस पर आश्रमके लिअे झोपडा बनाया था। अिसलिअे खेतीकी जमीनका खेतीके सिवाय दूसरे कामके लिअे अुपयोग करनेका अुन पर अभियोग लगाया गया और अिसके लिअे अुन पर १० रुपये जुर्माना हुआ। सुखदेवभाअी कलेक्टरसे मिले, अुनसे अपील की और अुन्हे समझाया कि गाधीजी जैसे निष्णात वकीलकी सलाहके बाद ही मैंने यह झोपडी बनाअी है। खेती तो मै करता ही हू। अिसके सिवाय फुरसतके समय लडकोको पढाता हू। अिसलिअे कानूनके अनुसार मुझ पर जुर्माना नही होना चाहिये। अिसके बाद भी जुर्माना पूरी तरह तो माफ नही हुआ, परन्तु १०

रुपयेके जुर्मानेकी सजा घटा कर केवल दस रुपये ही रखी गओ। अन्तमे सुखदेवभाअीने दस रुपये भर दिये और अपना पीछा छुडाया।

अिसके अतिरिक्त सुखदेवभाअी पर सरकारी कामकाजमे दखल देने और अेक स्त्रीको मारपीट करनेके सम्बन्धमे दो अलग अलग मुकदमे चलाये गये। अेक मामलेमे तो लोगो पर धाक बैठाने और यह बतानेके लिअे कि वे मडलके चाहे जैसे स्तभ स्वरूप कार्यकर्ताको भी पकड कर जेलमे ठूस सकते है वारटकी तामील शनिवार शामको की, ताकि सुखदेवभाअी कोर्टमे हाजिर होकर जमानत पर छूट न सके और शनिवारकी रात और रविवारके दिन अुन्हे जेलमे ही सडना पडे।

साथ ही धूलाभाअी नामक अेक भील शिक्षकको जिस दिन वे मडलमे शरीक हुअे अुसी दिन पकड लिया गया और अुन पर भी अेक झूठा मुकदमा चलाया गया।

मडलके कार्यकर्ताओके खिलाफ चलाये गये अिन सब मामलोका जिक्र करते हुअे बापाने स० १९८१ के वार्षिक विवरणमे अिस प्रकार लिखा था

"पिछले साल मडलके कार्यकर्ताओके विरुद्ध जनताके अेक दुष्ट नौकरने (अर्थात् सरकारी कर्मचारीने) झूठे मुकदमे खडे किये थे। अिन मुकदमोके बारेमे आप सब जानते है, क्योकि सारे दोहद शहर और पचमहाल जिलेका ध्यान अुनकी तरफ आकर्षित हुआ था। अुस समय हमारे मत्री श्री सुखदेव-भाअीको तो चार दिन हवालातमे भी रखा गया था, परन्तु अन्तमे तीनो मामलोमे अलग अलग मजिस्ट्रेटोने अुन्हे छोड देना ही मुनासिब समझा था। अग्रेजीमे कहावत है कि अन्त भला तो सब भला। अुसके अनुसार अिस मामलेका ब्यौरेवार अितिहास नही पेश कर रहा हू। परन्तु —

'भलो न तजे भलाअी ने बूरो तेम बूराअी,
न गया कोअी निशाळमा, भणवा भलमनसाअी'

(भला आदमी अपनी भलाअी नही छोडता और बुरा आदमी बुराअी नही छोडता। भलमनसाहतकी शिक्षा लेनेके लिअे कोअी स्कूलमे नही जाता।)

"अिस प्रकार बुरेकी बुराअी मालूम हो गयी। हमने तो अिस विपत्तिको अपनी परीक्षा मान ली थी और अुसमे बिना किसी विघ्नके अुत्तीर्ण हो गये थे।"

परन्तु अिन विपत्तियोका यही अन्त नही होना था। मडलकी अभी और परीक्षा होनी बाकी थी।

१९२४ में मडल पर फिर आफत आअी। जावुआ गावमे मडलके किशोर अवस्थाके कार्यकर्ता और पाठशालाके आचार्य मगनलाल झवेरचद महेता पर अेक झूठा अभियोग लगाकर अुन्हे अेक रात हवालातमे रखा गया और दूसरे दिन मुश्के वाधकर दाहोद शहरमे घुमाया गया।

अिस मुकदमेके वारेमे असल वात यो हुअी। पाठशालाके आचार्य मगनलाल महेता अपने मिलनसार स्वभाव और कार्यदक्षताके कारण भील विद्यार्थियोमे वहुत प्रिय हो गये थे। मगनलाल आचार्य अुन्हे अक्षरज्ञान देते ही थे।

अिसके सिवाय शराब न पीने, मास छोडने और रोज नहानेके वारेमे भी अुपदेश देते थे। अुनके अुपदेशोका वहुत असर अिन विद्यार्थियो पर होता था। अुनमे से कुछ निरामिषाहारके समर्थक वन गये। अेक दिन दो भील गावके तालावमे मछलिया मार रहे थे। अुन्हे गावके कुछ लडकोने देखा। अिसलिअे अुन्होने पाठशालामे आकर आचार्य मगनलालजीसे वात कही। मगनलालजी पाठशालासे तालाव पर गये। अुन्हे देखकर वे भील कुछ शर्मसे और कुछ अिस अपराधी अन्तःकरणसे कि वे जनसमाजके विरुद्ध आचरण कर रहे है, तालावमे जाल फेंककर तुरन्त भाग गये। अिसलिअे मगनलाल भी पाठशालामे लौट आये। अिस वीच गावके कुछ लडके, जिनमे अेक पाठशालाका विद्यार्थी भी था, तालावके पानीमे से जाल ढूढ लाये और अुत्साहमे सबने मिलकर अुन्हे जला दिया। अिसके वाद कुछ दिन वीत गये। पद्रह दिनके वाद गरवाडा थानेदारका गावमे मुकाम हुआ तव अुसे अिस वातका पता चला। अुसने देखा कि पाठशालाके आचार्यको फन्देमे फसानेका यह अच्छा मौका है। अिसलिअे अुसने झूठे गवाह और सबूत खडे करके मगनलाल पर यह आरोप लगाया कि अुन्होने खुद जाल लाकर जला दिया और हाथोमे हथकडिया डालकर रातभर जगल-विभागके थानेमे अुन्हे कैद रखा और दूसरे दिन सवेरे दाहोद गावमे घुमाकर अुन पर अदालतमे मुकदमा चलाया। परिणामस्वरूप अुन पर ३१ रुपया जुर्माना हुआ।

अिस घटनाके सम्बन्धमे ठक्करवापाने पुलिस कर्मचारियोके वैरवृत्तिसे भरे हुअे व्यवहारकी आलोचना करते हुअे सन् १९२५ के वार्षिक विवरणमे सख्त टिप्पणी लिखी है। अुसमे वे कहते है कि

"गत वर्ष मडलके अेक कार्यकर्ता भाअी मगनलाल झवेरचद महेताके विरुद्ध गरवाडाके पुलिसवालोने अेक झूठा मुकदमा खडा किया था। मडलके भिन्न भिन्न कामोमे जिन सरकारी नौकरोको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमे चिढ है अथवा जिनके आचरणका भडाफोड होता है, वे अिस मडलके सेवकोको तग

करने या कष्ट देनेमें थोडा भी विचार नहीं करते। सन् १९८१ के सालमें भी गरवाडाके थानेदारने तीन फौजदारी मुकदमे चलवाये थे, परन्तु अुनमें अुन्हें सफलता नहीं मिली। परन्तु पिछले वर्ष मगनलाल महेताके खिलाफ जो मुकदमा खडा किया गया, अुसमें वे फिलहाल कामयाब हो गये हैं।

"दाहोदकी अदालतने मगनलाल महेताको कसूरवार ठहराकर अुन पर ३१ रुपये जुर्माना किया है। अिस मामलेकी अपीलका अूपरकी अदालतसे फैसला नहीं हुआ है। अिसलिअे अधिक लिखनेकी जरूरत नहीं। परन्तु केवल द्वेषभावसे और सार्वजनिक हितके लिअे अुसके दुष्कृत्योंका भंडाफोड करनेवाले मंडलको नुकसान पहुंचानेके अुद्देश्यसे दुष्ट पुलिस झूठे मामले खडे कर सकती है, अिसका यह अेक नमूना है। सत्य पर डटे रहनेवालेको थोडा दुःख सहन कर ही लेना चाहिये, अिस न्यायसे हम अैसी त्रासें बरदाश्त करनेको तैयार ही बैठे हैं।"

अिसके बाद दूसरे ही वर्ष फिर रायणवाडियामें आचार्यके रूपमें कार्य करनेवाले श्री दुर्लभजीभाओ पर मछली मारनेवालोंके साथ मारपीट करके अुन्हें लूट लेनेका झूठा अभियोग लगाया गया। अिस घटनाका मंडलके वार्षिक विवरणमें अुल्लेख करते हुअे ठक्करबापा सरकारी नौकरोंकी विरोधी नीतिकी कलअी खोलकर सरल और स्पष्ट शब्दोंमें आलोचना करते हैं। वे लिखते हैं

"भीलों जैसी अज्ञान जातिका फायदा अुठाकर सरकारी नौकर अुन्हें खूब तंग करते हैं। अैसी परिस्थितिमें मंडलके केन्द्रोंका सरकारी नौकरोंकी आखोंमें किरकिरी बनकर खटकना स्वाभाविक है। मंडलके नये केन्द्रके आरम्भसे ही अुनकी तरफसे कठिनाअियां अुपस्थित की जाती हैं, अिसलिअे बहुत असुविधायें अुठाकर केन्द्रको जमानेमें देर लगती है।

"अिस वर्ष भी मंडलके नये केन्द्र रायणवाडियाके आचार्य दुर्लभजीभाओ पर पुलिसने मच्छीमारोंको मारपीट कर लूट लेनेका आरोप लगाकर मुकदमा चलाया है। अैसे मुकदमोंसे पाठशाला या आश्रमके कार्यमें विघ्न जरूर पडता है। परन्तु अब तो मंडल अिन विघ्नसंतोषी मनुष्योंका आदी हो गया है। मुकदमेका नतीजा अभी नहीं निकला है, परन्तु अुसके परिणामकी बाट देखे बिना रायणवाडिया पाठशाला आगे बढ रही है। मछली मारनेके जालके सम्बन्धमें यह दूसरा मुकदमा है। वास्तवमें तो सरकारी नौकर अैसा जाल डालकर मंडलके आदमियोंको पकडने जाते हैं। परन्तु अन्तमें निराश होते हैं। 'सत्यमेव जयते नानृतम्।'"

अिस प्रकार अफसरो और सरकारी नौकरोकी तरफसे समय समय पर विघ्न डाले जाते सो तो ठीक। जैसा बापाने कहा, अिस बातका अुन पर कोअी असर नही होता था। परन्तु अेक और मुश्किल खुद भीलोकी तरफसे ही पैदा हो गअी। वह यह कि भीलोके बच्चे पढने ही न आते। बडे शहरोकी बस्ती छोडकर केवल सेवाभावमे रगकर जो सेवक यहा आये, अुन्हे सरकारी शिक्षा-विभागकी भाति तैयार पाठशालाअे और तैयार विद्यार्थी नही मिले थे कि कुर्सी पर बैठकर पाच घटे पढा दिया और छुट्टी मिली। यहा तो जडसे ही काम खडा करना था। अुन्हे दाहोदसे कुछ मील दूर गावोमे बैठना पडता था। अिस पर भी कअी जगह न तो रहनेके पूरे साधन ओर अन्य सुविधाये मिलती और न लोगोका पूरा सहयोग। शुरूमे प्रत्येक कार्यकर्ताको देहातमे जाकर भीलोको जमा करके, समझाकर अुनके बच्चोको पाठशाला या आश्रममे भरती करानेका काम करना पडता था।

फिर, शुरूमे तो भीलोके बालक कुतूहलवश पढने और रहने आ जाते। परन्तु आखिर तो वे जगलके जीव ठहरे। दो चार दिन आश्रममें रहते, अुसके नियमानुसार प्रात कालीन प्रार्थनासे लगाकर रातको सोने तक समय बिताते तो अुन्हे मानसिक आकुलता अनुभव होती। अुन्हे लगता मानो अुनका जीव पिजडमे बन्द कर दिया गया है; और फिर वे मौका पाकर कोअी न देख सके अिस तरह रातको बिस्तरसे अुठकर अथवा बाहर कही काममे जानेका बहाना बनाकर आश्रमसे पाच, सात या दस मील दूर अपने गाव भाग जाते। भील-सेवा-मडलने प्रारम्भमे देहातमे जहा-जहा केन्द्र कायम किये, वहा-वहा प्रत्येक कार्यकर्ताको अैसा ही अनुभव हुआ। भीलोके बालक आते, पाठशाला या आश्रममे भरती होते, दो चार दिन ठीक तरहसे रहते और फिर शिक्षककी आख बचाकर चले जाते। झालोदमे आश्रम शुरू किया गया तब अुसमे २७ विद्यार्थी भरती हुअे, परन्तु दो तीन दिन बाद ही बारह विद्यार्थी भाग गये।

अेक बार आश्रमका अेक विद्यार्थी फागुन मासमे आचार्यसे छुट्टी लिये बिना अपने गाव मुणखेसल जानेको आश्रमसे भाग गया। रास्तेमे अुसे धूप लगी या और कुछ कारण हुआ और वह मर गया। भील लडकोकी यह भागदौड केवल झालोद आश्रम तक ही सीमित नही थी। जेसावरा, मीराखेडी, गरबाडा, जाम्बुवा, भीमपुरी वगैरा प्रत्येक केन्द्रमे वह मामूली बात थी। अिस कारण कार्यकर्ता अथवा शिक्षक अपना कार्य निश्चित रूपमे नही कर सकते थे। भीलोके अिन भाग जानेवाले बालकोको कैसे रोका जाय और

भागकर गये हुओंको समझाकर कैसे वापस लाया जाय, यह बड़ा भारी कठिन कार्य हो गया था।

झालोद तथा अन्य स्थानों पर अिस प्रकार भील बालक भाग जाते तब शिक्षक या गृहपति अुन्हें बुलाने जाते। यह देखकर वहांके बनिये व्यापारी लोग हंसते और कहते कि अिन जंगली भीलड़ोंके पीछे खूनका पानी क्यों कर रहे हो? ये कभी समझनेवाले हैं? अिन्हें पढ़ाकर क्या करोगे? अितने पर भी कार्यकर्ताओंमें स्वयं ही अितनी लगन थी और बापाकी अैसी प्रेरणा थी कि वे कठिनाअियोंकी परवाह न करके अपने काममें लगे रहते।

अुन दिनों दाहोद-झालोद तालुकोंके प्रदेशमें पगडंडीके रास्ते या पहाड़ीके किनारे, नदी पार करता हुआ या भीलोंके झोंपड़ोंमें भटकता हुआ खादी-धारी आदमी नजर आता, तो सभी अुसे पहचान लेते कि यह भील-सेवा-मंडलका कार्यकर्ता, शिक्षक, मिशनरी या जो भी कहिये सब कुछ है और वह या तो भील बालकोंको बुलाने गया होगा अथवा बुलाकर पाठशाला जा रहा होगा। मंडलके शुरूके दिनोंमें जहां जहां आश्रम स्थापित हुअे वहां यही स्थिति रही। शुरूके दस-बारह महीनोंमें तो अुग्र रूपमें। अिसके बाद कार्यकर्ताओंके पुरुषार्थ और समझानेके कारण कुछ अंशमें हलकी हो गअी। फिर भी पांच छः वर्ष तक वह थोड़ी बहुत मात्रामें बनी ही रही।

दूसरा परेशान करनेवाला सवाल था मकानोंकी कठिनाअीका। कार्य-कर्ता किसी गांवमें जाता तो वहां रहनेके लिअे या पाठशालाके लिअे मकान न मिलता। अिस बारेमें पहले कहा जा चुका है कि बापाने जिस दिशामें कार्यकर्ताओंको नया ही हल सुझाया। अुन्होंने शुरूसे ही स्वावलम्बन और स्वाश्रयका पाठ पढ़ाया। कार्यकर्ता जिस गांवमें जाय वहां स्वयं ही लोगोंको समझा-बुझाकर कमरा जुटा ले और रहना शुरू कर दे। रहनेकी जगह लोग न दें तो गांव छोड़कर चला न जाय परन्तु तब तक तपश्चर्या की जाय। गांवके बाहर किसी विशाल पेड़की छायामें जैसे अवधूत धूनी रमा-कर पड़ा रहता है वैसे ही अुसे सेवाकी धूनी जगाकर पड़े रहना है। जाबुवाके तरुण आचार्य मगनलाल झवेरचंद महेताने शुरूमें पेड़के नीचे ही रहना और शिक्षण कार्य शुरू किया था। अुसके बाद ज्यादातर बन्द रहने-वाले सरकारी मकानोंके बन्द बरामदोंमें और बादमें अेक लुहार भक्तके लुहारखानेके सायबानमें पाठशाला शुरू की। अिसी प्रकार झालोदसे ३२ मील दूर भीमपुरीमें जब आश्रम खोलनेके लिअे भीलसेवक श्री रूपाजी परमारको भेजा गया, तब बैलगाड़ीमें सामान अुतारकर अुन्होंने बड़के नीचे

ही डेरा लगाया और भील बालकोको अिकट्ठा करके वही पाठशाला शुरू की। रूपाजी बडकी टहनीके साथ सनकी चटाओकी दीवार खडी करके रातको पेडके नीचे ही सो रहे थे कि रातको छलागे भरता हुआ बाघ आया। आकर अुसने दहाड मारी। दहाड सुनकर रूपाजीभाओके हाथपैर ढीले हो गय। फिर भी दूसरे दिन डरके मारे अुन्होने गाव और वह स्थान छोड नही दिया, परन्तु मिशनरीके अुत्साहसे काम जारी ही रखा। बापाको यह खबर मिली तो अुन्होने रूपाजीको बधाओ भेजी और कहा कि, "हमे तो खतरोके बीच ही जीकर काम करना है।"

जेसावाडा आश्रममे, जहा श्रीकान्तके मित्र श्री पाडुरग वणीकरने डेरा डाला था, अुनकी गोठान जैसी जीर्ण-शीर्ण कोठरीमे अेक दिन साप निकला। निकलकर वापस बासकी टट्टीमे घुस गया। रात थोडी कठि-नाओसे बीती, परन्तु काम तो आगे बढाना ही था। जेसापराकी जमीन खेतीकी थी, अिसलिअे साप तो कभी कभी ही निकलते, मगर बिच्छू और कनखजूरेका कोओ पार ही नही रहता था। फिर भी ओश्वर पर श्रद्धा रखकर खतरेके बीच जीकर अुन्होने काम किया।

भील लोग अपने बालकोको आश्रम और पाठशालामे पढने भेजे, यह अुन्हे समझानेमे आरम्भ-कालमे शिक्षक और सेवकोको बडी दिक्कत अुठानी पडी थी। भीलोको अिन सेवकोका परिचय नही था, अिसलिअे शुरूमे तो वे डर-डरकर अिनसे दूर भागते थे। सेवककी अपेक्षा वे अुन्हे चूसनेवाले कसाओ बोहरे और बनिये आदि व्यापारी वर्ग पर ही अधिक विश्वास रखते। और ये लोग भीलोके भोलेपनका पूरी तरह लाभ अुठाते। अुन्हे अुल्टी-सीधी पट्टी पढाकर कहते कि, "ये लोग तुम्हे मुफ्त खिलाते और पढाते है, परन्तु अिसमे मत लुभा जाना। ये तो अपने स्वार्थके लिअे अैसा करते है। स्वार्थ न हो तो कोओ पराये लडकोको मुफ्त खाना-पीना और कपडा क्यो देगा? दुनियामे कभी अैसा कही हुआ है? ये थोडे दिन अिस तरह खिला-पिलाकर तुम्हारे लडकोको लडाओमे भेज देगे। अिसलिअ अपना भला चाहते हो तो अपने लडकोको मडलकी पाठशालाओमे मत भेजो।"

बेचारे भोलेभाले भील लोग अिनका कहा सच मान लेते, अिनकी बात झट अुनके गले अुतर जाती और वे बच्चोको आश्रममे न भेजते।

भीलोको पढाओके लाभ समझाये जाय, तो भी बच्चोको पाठशालामे भेजनेकी बात अुनकी समझमे ही नही बैठती थी। कोओ शिक्षक अुन्हे कहने लगे तो वे ठडे दिलसे भीलोका अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र समझाकर कहते

"अेक लडका ढोरोमे जाता है, दूसरा खेतमें काम करता है और अेक घर सभालनेको रहता है। अब अेक और ज्यादा हो तो दे दू।" दूसरा भील अिससे भी आगे बढकर कहता कि, "हम भीलोको पढनेकी क्या जरूरत? हमे कहा नौकरी करने जाना है? हम भीलोके लिअे तो चौदह विद्याअे हलकी नोकमे है।"

साथ ही जो लोग अज्ञान भीलोको रुपया अुधार देकर अुन्हे सदाके लिअे कर्जमे डुबाये रखते थे और अुन्हे अनेक प्रकारसे चूसते थे, अुन व्यापारी और सूदखोर वर्गोकी तरफसे भी मडलके बारेमे भीलोमे गलतफहमी पैदा करनेकी पूरी कोशिश होती थी।

मीराखेडीमे आश्रम स्थापित हुआ तब वहाका अेक बोहरा अिन भीलोके दिलोमे आशका पैदा करनेके लिअे अुन्हे अुल्टी-सीधी बातें समझाता और चेतावनी देता कि, "अिन लोगोसे वास्ता रखा तो खेत छीन लेगे। अिस लिअे तुम अिनसे कोअी सम्बन्ध न रखो और अिन्हे अपने खेतोमे न आने दो।" असल बात यह थी कि यह बोहरा ही भील लोगोके खेत छीन लेनेकी कोशिशमे लगा हुआ था। अुसे यह डर था कि मडलके कार्यकर्ता भीलोके साथ सम्बन्ध बढायेगे तो अुसकी लूट बन्द हो जायगी। यह बोहरा बडा बदमाश था। वह फी रुपया चार आने ब्याज लेता था। अुसे सब 'अूभो वहोरो' (खडा बोहरा) कहते थे, क्योंकि वह हिसाब-किताब कुछ नही रखता था, जबानी ही हिसाब करके भीलोको धोखा देता और हर साल अुनसे खूब रुपया अैठ लेता था।

अैसा ही अेक और बनिया व्यापारी था। अुसका नाम मगन गोपालजी था। वह भी भीलोके साथ लेन-देन करनेमे काफी कमाअी करता था। वह तो मडलके कार्यकर्ताओकी हसी अुडाता और कहता था

"आप लोग भीलोको पढाने और सुधारनेकी व्यर्थ माथापच्ची करते है। आप कितनी ही मेहनत कीजिये, परन्तु अेक बात आपको मालूम है? भील लोग जो अनाज पैदा करते है, वह हमारे ही भाग्यमें लिखा है। अुनकी मक्की और दूसरा सारा अनाज खेतोमे से सीधा हमारी कोठीमें ही जाता है। अिसके लिअे विधाताने पाअिप लाअिन बना दी है। अिसलिअे कहावत पड गअी है कि 'आअी होली कि निपटे भील और कोली'। होलीके बाद भीलके पास खानेको कुछ होता ही नही। अुसे तो बनियेकी दुकानसे ही लेना पडता है।"

भील लोगोकी सेवा ये अूचे वर्गके लोग करे, यह दाहोदके अूचे वर्गके व्यापारियोको पसद नही था। अेक और धनवान व्यापारी कहता था

"आप लोग अिन भीलोके लिअे क्यो परिश्रम कर रहे है? बनिये-ब्राह्मणोके लिअे काम करे तो फल निकलेगा। ये जगली लोग आबदस्त लेते नही, खरहे मार कर खा जाते है, आचार-विचारका अुन्हे भान नही। अैसे लोगोके लिअे अितना अधिक परिश्रम करनेकी अपेक्षा बनिये-ब्राह्मणोका बोर्डिंग चलायें तो कामका फल निकले।" अिन दलीलोके बारेमे बापा सुनते तो कहते "आप सब बनिये-ब्राह्मणोका बोर्डिंग चला रहे हैं। फिर अुन्हे हमारी क्या जरूरत? हम तो अिन गरीब लाचार लोगोका काम कर देते है, जिनका कोअी बेली नही और जिन्हे सब लूट खाते हैं।"

मीराखेडीमें मडलके कार्यकर्ताओको जो जमीन मिली थी, वहा अेक छोटासा आश्रम खडा किया गया था। अुस आश्रममे जाना हो तो जल्दीके रास्ते अेक पडोसी भीलके खेतमे होकर जाना पडता था। शुरूमे अिसी तरह चलता था, परन्तु अिस बीच अेक विघ्नसतोषी व्यापारीने भीलोको भडकाया। अिससे मडलके सेवको और विद्यार्थियोका वह रास्ता बद कर दिया गया। अिसलिअे बादमे अुन्होने घूम कर लम्बे रास्ते जाना शुरू कर दिया।

भीमपुरीमे हरजी महाराज नामक अेक भील पटेल था। अुसने पाठशालाके लिअे थोडीसी जमीन दी। अुसे तहसीलदारने धमकाया और कहा, "जमीन क्यो दी? वापस ले लो।" अिस बातकी खबर लगते ही मडलके मत्री सुखदेवभाअी वहा पहुच गये और अुसके नोटिस देनेके पहले ही अुससे मिले, अुसे हिम्मत दिलाअी और समझा लिया। अिसलिअे जमीन मडलके पास रह गअी।

मुडाहेडामे भी अेक पाठशाला बनानी थी। अिसके लिअे अेक भीलने मुफ्त जमीन दी। परन्तु झालोदके कमाम्दारने अुसे बुलाकर खूब धमकाया। बेचारा भील डर गया। अुसने बापाके पास आकर सारी बात सुनाअी और हाथ जोड कर कहा, "चाहिये तो सौ रुपये ले लीजिये। परन्तु जमीन नही दूगा। मै मारा जाअूगा।"

सरकारी नौकरोकी अैसी मनमानी और गुडागिरी देख कर बापा अुस दिन बहुत क्रोधमे आ गये। अुनका पुण्यप्रकोप भडक अुठा और अुन्होने सेवकोसे अपना कार्य अधिक लगन और जोशसे जारी रखनेका अनुरोध किया। अुस दिन बापाने अिस घटनाकी आलोचना करनेवाला अेक लेख लिखा और अखबारोमे छपनेको भेजा। अुसमे अुन्होने सरकारी नौकरोकी मनमानी नीति और मडलके प्रति वैरवृत्तिकी निन्दा करके लिखा कि, "कितने ही विघ्न आये तो भी भील-सेवा-मडलने भीलोकी सेवा करनेकी जो प्रतिज्ञा ली है, अुसे वह पूरा करेगा। मडल शिक्षा और सेवा द्वारा अपना काम

जारी रखेगा। जो अीश्वर पक्षियोंको घोंसला बनानेकी बुद्धि देता है, वह हमें भी जंगलके बीच जीनेकी बुद्धि देगा। अिस कार्यमें कर्मचारी कितने ही विघ्न डालें तो भी मैं डरकर या अुकताकर आश्रम बन्द नहीं करूंगा। मकान मिले तो अच्छा, न मिले तो बड़के पेड़के नीचे भी हमारी पाठशाला चालू रहेगी।"

दाहोद-झालोद तालुकोंकी सीमा पर स्थित देशी राज्योंमें भी भीलोंकी आबादी बहुत थी। अुनकी हालत तो जिलेके भीलोंसे भी खराब थी। वहां न सरकारी पाठशाला होती थी, न संस्थाकी तरफसे। अिन भीलोंमें कभी कभी सामाजिक सुधार करनेके लिअे मंडलके कार्यकर्ता जाते थे। परन्तु वहां अुनकी प्रवृत्तियों पर जिलेसे भी अधिक कड़ा अंकुश रहता था। पहले पहले तो देशी राज्योंकी हदमें अिजाजतके बिना आने ही नहीं देते थे। कोअी आ जाय तो कर्मचारी जल्दी ही रवाना कर देते अथवा दूसरी अड़चनें अुपस्थित करते। अुस समय जिला कलेक्टरने पोलिटिकल अेजेंट द्वारा देशी राज्योंके नाम अेक गुप्त परिपत्र भेजा था, जिसमें यह हिदायत दी गयी थी कि, "१९१३–१४ में गोविन्द गुरुने जैसा तूफान कराया था, वैसा यह ठक्कर न करा दे, अिसकी सावधानी रखें।"

गोविन्द गुरु भीलोंके गुरु थे। अिधरके बांसवाड़ेके देशी राज्यमें अुन्होंने धर्मका झंडा गाड़कर भीलोंको हजारोंकी संख्यामें 'भगताअी' की कंठी बंधवाअी और मांस-मदिरा छोड़नेकी प्रतिज्ञा करवाअी। देखते देखते यह हलचल खूब फैल गअी। और हजारों लोग गुरुकी कंठी बांधकर भक्त बनने लगे। धीरे धीरे अिस आन्दोलनने अुग्र रूप धारण किया और धार्मिक प्रवृत्तिसे बढ़कर राजनैतिक रूप धारण करने लगा। अुस समय पोलिटिकल अेजेण्टने मानगढ़की पहाड़ी पर अिकट्ठे हुअे भीलोंको बिखर जानेका हुक्म दिया। परन्तु भीलोंने यह हुक्म नहीं माना। अिसलिअे पुलिसने हवामें गोली चलाअी। गोली चलानेसे कोअी भील घायल नहीं हुआ और न मरा। अिसलिअे समस्त प्रदेशमें अैसी हवा फैल गअी कि गुरु गोविन्दमें चमत्कार है, दुश्मनकी गोली भी अुनके मंत्रके सामने कुछ काम नहीं कर सकती। अिससे अधिक भील अिकट्ठे हुअे और जोशमें आ गये। नतीजा यह हुआ कि सेनाने अुन पर गोली चलाअी और अुसमें सैकड़ों भील मारे गये। गुरु गोविन्दको पकड़ लिया गया और अुनको लम्बी सजा दी गअी। दस वर्ष बाद जब वे छूटकर आये तब भील-सेवा-मंडलने अुन्हें आश्रय दिया। अिससे कलेक्टरको ठक्करबापाकी प्रवृत्तियोंमें भी गुरु गोविन्दकी प्रवृत्तियोंकी गन्ध आअी हो तो आश्चर्य नहीं!

देशी राज्योमे यो भी 'गाधीवालो' और काग्रेसी आन्दोलनकारियोके लिअे द्वार बन्द ही थे। अिस पर कलेक्टरका परिपत्र और मिल गया। फिर तो पूछना ही क्या? हमेशा गोरे हाकिमोको ही खुश रखनेमे राज्यका हित समझनेवाले राजा और अुनके दीवान अिस मामलेमे दुगुने अुत्साहसे काम करते और ठक्करबापा या गाधीजीके दूसरे अनुयायियोमे पूरी तरह सावधान रहते। सावधानी कैसी रखते, यह १९२३ मे दशहरेके दिन बापा और अुनके साथियोके प्रति पासके ही सरहदी देशी राज्य देवगढ-बारियाके दीवान और पुलिस अधिकारीने जो अुद्धत और अुद्दण्ड व्यवहार किया अुससे सिद्ध हो जाता है। देवगढ-बारियाकी घटना भील-सेवा-मडलके अितिहासमे चिरस्मरणीय बन गअी है और वह देशी राज्योकी अुस समयकी मनमानी कार्रवाअियोका भडाफोड करती है।

दाहोद-झालोदकी सीमा पर ही देवगढ-बारियाका देशी राज्य था। वहा हर साल दशहरेके दिन राजाकी सवारी निकलती और भीलोका बडा मेला भरता था। अिस मेलेमे भील हजारोकी सख्यामे जमा होते और अुस दिन खूब शराब चढाकर गाने-बजानेमे मस्त होकर रुपये और स्वास्थ्यकी बरबादी करते। बापाने दशहरेके दिन भील बालकोको लेकर देवगढ-बारियाके प्रवासमे जानेका निश्चय किया। अुन्होने साथियोसे यह बात करके कहा कि अिससे अेक आनन्ददायक पर्यटन हो जायगा। भील लडकोको राजाकी सवारी और मेला वगैरा देखनेको मिलेगा और साथ साथ भीलोमे मद्य-निषेध और समाज-सुधारका प्रचार होगा। बापाने श्रीकान्ताभाअी, कुछ और साथी तथा विद्यार्थी वगैरा मिलाकर कोअी चालीस यात्रियोका पैदल सघ निकाला। जेसावाडासे सवेरे रवाना हुअे। दिन भरमे कोअी बाअीस मील तय करके शामको देवगढ-बारिया पहुचे। सब थककर चूर हो गये थे, अिसलिअे थोडे आरामके बाद स्वस्थ होकर तुरन्त मेला देखने निकले। विद्यार्थी खादीके कपडे पहने हुअे थे और हरअेकके हाथमे शराब मत पीओ, शराब पीनेसे बच्चे ठड और भूखसे मरेगे, रोज नहाओ, रोज नहानेसे तुम्हारे शरीर साफ रहेगे, दाद-खुजली नही होगी और नहरू नही निकलेगा, जादू-टोना करने वाले ओझासे मत डरो, वे लुटेरे है, तुमको ठग लेगे — अिस प्रकारके सूचनात्मक वाक्योवाले तख्ते थे। किसीने गलेमे डाला, किसीने लकडी पर लटकाया। अिस प्रकार विद्यार्थियो, कार्यकर्ताओ और सेवकोका सघ मेलेमें घूमता-घामता तालाबके किनारेके पास आया। अितनेमे राजाकी सवारी निकली। आगे आगे भीलोका दल हाथमे तीर-कमान और भाले लिये हुअे, अुनके पीछे राज्यके दूसरे पुलिसवाले और बादमे राजाकी सवारी थी। अुस

समय दीवानकी नजर अिस खादीधारी संघ पर पड़ी। उनकी आंख फिर गओी। अुसने तुरन्त ही पुलिस अधिकारीको बुलाया और अुसके साथ कानाफूसी की। अिसके बाद सवारी खतम हुओी और बापा और अुनकी मंडलीके तमाम भाओी डेरे पर आ गये। अितनेमें ही पुलिसका आदमी बुलाने आया "होमरूलिये कौन हैं? होमरूलियोंको साहब बुलाते हैं।"

बापा और साथके चालीस आदमियोंका संघ पुलिसके थाने पर गया। वहां देखा तो थानेदार नहीं था। थाने पर अुन्हें रातको देर तक यों ही हिरासतमें बैठाये रखा। थानेदार अुस समय दीवानके पास गया होगा। अन्तमें रातको ग्यारह बजे वह आया और अुसने बापाको जबानी हुक्म दिया कि अिस राज्यमें सरकारके या राज्यके विरुद्ध हलचल करनेका हुक्म नहीं। अिसलिओे अिसी वक्त बारिया राज्यकी हद छोड़कर चले जाओ।

बापा अुस समय अितनी रात गये सब विद्यार्थियोंको लेकर कहां जाते और कैसे जाते? राज्यकी सीमाके बाहर जानेमें तो आठ मीलका जंगल पार करना पड़ता था। रातको यह किसी भी तरह हो नहीं सकता था। फिर भी बापाने थानेदारसे लिखित आज्ञा मांगी। लिखित आज्ञा थी नहीं। थानेदारके जबानी हुक्मको बापाने माननेसे अिनकार कर दिया और कहा कि, "अिस समय अितनी रात गये अिन लड़कोंको लेकर जाना मेरे लिओे संभव नहीं। आप लिखित हुक्म भी नहीं देते। अिसलिओे मैं स्वेच्छासे अिस समय यहांसे नहीं जाअूंगा। आप चाहें तो हमें जबरदस्ती अुठाकर राज्यकी सीमासे बाहर फेंक दे सकते हैं।"

थानेदारने अन्तमें रातको अुन्हें छोड़ दिया। अिस प्रकार रातको देर तक अुसके साथ झकझक करके बापा डेरे पर आये तो डेरेवालेने मकान खाली कर देनेकी सूचना दी। बापा समझ गये कि यहां तक हुकूमतका दबाव आ पहुंचा है। अिसलिओे मकान खाली कर देनेके सिवाय कोओी चारा नहीं था। बापा मकान खाली करके संघको लेकर तालाबके किनारे पर गये और वहां बिस्तर लगाकर सब घेरा बनाकर सोये। सोनेके बाद भी दो-तीन बार पुलिसके आदमी आकर देख गये। अेक बार तो थानेदार घोड़े पर चढ़कर आया और कहने लगा "क्यों अमृतलाल काका कोओी अड़चन तो नहीं?" अिसकी जड़में अुन लोगोंका अुद्देश्य बापा पर सतत निगरानी रखनेका था। बादमें दीवान मोतीलालने भी अपना आदमी भेजा। अुसने आकर बापाको जगाया और कहा, "दीवान साहब आपको याद कर रहे हैं।" बापा बहुत बिगड़े और पूछा "और क्या काम बाकी रह गया है? पुलिस थानेमें लम्बे समय बिठा रखनेसे सन्तोष नहीं

हुआ तुम्हारे दीवानको ?" अुस आदमीने नरम होकर कहा, "साहबने यह कहलाया है कि आप यहा खुलेमे ठहरकर कष्ट क्यो पा रहे है? आप मेहमान घरमे ठहरिये।" बापाने कहा, "दीवान साहबसे कहना कि अुनका सन्देश मिल गया। अुसके लिअे धन्यवाद। वैसे अुन्होने हमारा आतिथ्य बहुत अच्छा किया।"

अिस प्रकार वह आदमी चला गया और बापा और अुनके साथियोने पिछली रात नीदमे बिताअी। दूसरे दिन सुबह अुठकर सबने बिस्तर समेटे तो पता चला कि तालाबके किनारे गन्दगी पडी हुअी है और वहा सबने रात बिताअी है!

सवेरे फिर दीवानने आदमीके साथ सन्देशा भेजा कि पहलेसे कहलवा दिया होता, (अर्थात् अिजाजत ले ली होती!) तो यह नौबत न आती। बापाने अिनका जवाब भेजा, "हम तो भारत-सेवक-समाजके आदमी है, अिसमे कहलवानेकी क्या बात थी?"

अिसके बाद बापा और दूसरे सब पैदल जेमावाडा आश्रम लौट आये।

बापाको राज्यके दीवान और पुलिसका बरताव बहुत ही अखरा था। बादमे अुन्होने अिस सम्बन्धमे पत्रव्यवहार भी किया। साथ ही अिसकी भी परीक्षा कर ली कि दीवानकी 'पहलेसे कहलवाने' की बातमे कितना सार है। अिसलिअे दीवानको अेक और पत्र लिखकर अुन्होने सूचित किया कि, "देवगढ-बारियामे भील लोगोकी आबादी बहुत है। वे सब हमारे आश्रम या पाठशालामे अपने बच्चोको नही भेज सकते। अिसलिअे राज्यमे ही किसी अनुकूल स्थान पर आश्रम बनाने या पाठशाला खोलनेकी अिजाजत दीजिये।"

दीवानने मीठे शब्दोमे चालाकीभरा जवाब दिया, "आपको यहा तक आनेका कष्ट क्यो अुठाना पडे? पाठशाला या आश्रम जो भी शुरू करने लायक मालूम हो वह राज्यको बताअिये। राज्य स्वय ही शुरू कर देगा।"

अिसके बाद वर्षो तक अुसने राज्यमे न तो आश्रम या पाठशाला शुरू करनेकी अिजाजत दी और न राज्यकी तरफसे शुरू की। अितने पर भी बापाने अपनी कोशिश नही छोडी। राज्यकी हदमे से भीलोके अच्छे तेजस्वी लडकोको चुनकर अपने आश्रममे रखा और पढा-लिखाकर तैयार किया। और बादमे जब बारियामे भीलोके बीच सेवा करनेके लिअे अुन्हीको रखने लगे, तब वह समझ गया और नरम हो गया। अुन दिनो देशी राज्योमें भीलोकी शिक्षा और समाज-सुधारका निर्दोष काम करना भी कितना कठिन था, यह अिस घटनाने अच्छी तरह साबित कर दिया।

अुपरोक्त कठिनाअियोंकी शृंखला देखकर कोअी यह न समझ ले कि अुन्हें कभी कहीं अनुकूलता प्राप्त ही नहीं हुअी। गुजरात या भारतमें अैसी बहुत कम जगहें हैं, जहां लोग सब बातें नकारात्मक दृष्टिसे ही देखा करें। हमारे यहां आम तौर पर लोग साधुओं, सेवकों और कार्यकर्ताओंको पहले कसौटी पर कसते हैं और अुस पर यदि वे सच्चे अुतरें तो अुन्हें पूजते भी हैं।

पंचमहालमें छावनी डालकर पड़े हुअे बापा और अुनके सेवकोंके प्रति सम्मान रखनेवाले, वे अच्छा काम कर रहे हैं अैसा विचार रखनेवाले आदमी भी जरूर थे। वे मंडलकी स्थापना हुअी तभीसे बापाके काममें मदद देते थे। कुछ सहृदय व्यापारी अक्सर थोड़े रुपये-पैसेकी भी सहायता करते थे। गरीब लोगोंकी, गांवोंके लोगोंकी सेवा करके भील-सेवा-मंडलने थोड़े ही वर्षोंमें अैसा वायुमंडल पैदा कर दिया था कि वे संस्थाको अन्नके रूपमें अथवा दूसरी तरह भी कुछ मदद देते थे। मंडलके प्रारंभिक वर्षोंमें कठिनाअियों-रूपी बादलोंमें अितनी-सी विद्युतरेखा थी।

फिर, अुपरोक्त कठिनाअियोंके सिवाय और भी अेक कठिनाअी थी, जो आम तौर पर प्रत्येक संस्थाके साथ लगी रहती है। और वह थी आर्थिक संकट की। भील-सेवा-मंडलको शुरूके वर्षोंसे ही रुपयेकी हमेशा तंगी रहती थी। अुसका व्यय आयसे हर साल ज्यादा होता था। संस्थाके वार्षिक विवरणमें अिस बारेमें बापाको हर बार लगभग अेकसा ही लिखना पड़ता कि, 'मंडलकी आर्थिक स्थिति हरगिज संतोषजनक नहीं कही जा सकती।' अिसके बावजूद हर बार काफी रकम मिल जाया करती थी।

सन् १९२३ में मंडलका वार्षिक खर्च १७,२१६ रुपये हुआ। अिसमें से १२,९०४ दानमें मिले और ४,३१२ का कर्ज हो गया। जिसमें दवाखानेकी फीस तथा ब्याजके १,३९३ रुपयेकी आय होने पर खालिस कर्ज २,९१९ रुपये बाकी रहा। अिसी प्रकार दूसरे साल चालू खर्च १८,५०० तथा मकान बनानेका खर्च ३,१४३ मिल कर कुल २१॥ हजारसे अूपर खर्च हुआ था और मिले हुअे दानकी रकम २०,६३९ थी। अिस तरह हर साल थोड़ा थोड़ा कर्ज बाकी रहता था। फिर भी बापाको अपने काम और अीश्वर पर अटूट श्रद्धा थी। वे हर बार वार्षिक रिपोर्टमें लिखते कि, 'मंडलकी आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं।' फिर भी पैसेकी बहुत चिन्ता नहीं रखते थे। अुन्हें भगवान पर पूरी श्रद्धा थी। वे कहते, "जिसे सारे विश्वकी चिन्ता है वह स्वयं चिन्ता रख कर मंडलका काम चलाये जा रहा है। अीश्वर दे अुसी पर गुजर करनेवाला किसान जैसे रोज अपने लायक जुटा लेता

है, वैसे ही मडल भी हर वर्ष प्रभु पर श्रद्धा रख कर जुटा लेता है। अैसे सयोगोमे बधी हुअी आमदनीसे होनेवाला प्रमाद रुक जाता है और जनताके सामने अपने कामके हिसावके साथ खडा रहनेका मौका मिलता है।"

बापा मडलके लिअे चदा करने स्वय तो जाते ही थे। साथ ही कभी कभी सुखदेवभाअी, डाह्याभाअी, श्रीकान्तभाअी वगैरा साथियोको भी भेजते थे। अुन्हे रुपया कम ज्यादा मिले, अिसकी वे चिन्ता नही करते थे। परन्तु वे मानते थे कि सार्वजनिक कार्यकर्त्ताके लिअे यह बडी जरूरी तालीम है।

शुरूके दिनोमे अुन्होने मडलके चदेके लिअे सुखदेवभाअीको अहमदाबाद भेजा था। अुस समय मिल-मालिको और सेठोके बगलोके चक्कर काट काट कर वे अपने पैरोके तलवे घिस डालते थे, तब मुश्किलसे कही अुनका स्वागत होता था। कुछ तो यो ही चक्कर लगवाते थे। कोअी अपमानजनक अुत्तर देते। सुखदेवभाअी बहुत ही निराश हो जाते थे और बापाको रोज पत्र लिखते। अितने निराशाभरे पत्र पढकर बापा अुन्हे साहस और अुत्साह दिलाते और कहते कि निराश होनेकी जरूरत नही। अेक बार रेवडीबाजारमें सुखदेवभाअी अेक सेठकी दुकान पर गये। अुसने जवाब दिया, "फुर्सत नही, कल आना।" अुन्होने कहा, "ठीक है, यह रख जाता हू, अिसे आप पढ लेना। मै कल आपसे फिर मिलूगा।"

वह सेठ बिगडा, "भाअी, तुम जाते हो या चपरासीसे धक्के देकर निकालनेको कहू।"

सुखदेवभाअीने कहा, "चपरासीसे कहनेकी जरूरत नही, मै यह चला।" यह सब अुन्होने जाकर गाधीजीको कहा। गाधीजीने कहा, "ठक्कर साहबको लिखो। वे मेरे नाम पत्र लिखे और सस्थाके बारेमे बताये। मै व्यवस्था कर दूगा।"

तदनुसार सुखदेवभाअीने बापाको पत्र लिखा। तब बापाने लिखा कि गाधीजीको क्यो कष्ट दिया जाय? स्वय कमाये और स्वावलबी बने तभी खर्च करते समय पता चले कि पाअी पाअी कहासे आती है।"

अिस प्रकार बापाको मडलकी आर्थिक चिन्ता निरतर बनी रहती थी। बीच बीचमे तो कडी कसौटीमे से भी पार होना पडता था। फिर भी बापाने सस्थाके लिअे स्थायी कोष जमा कर जानेका कभी विचार नही किया। कारण, वे मानते थे कि अैसा करनेसे सस्थाकी स्थिति मठ जैसी बन जायगी। सेवक आजकलके मठाधीशोकी तरह आलसी और अहदी बन जायेगे और सस्थाको जग लग जायगा।

जिस प्रकार बापाने मंडलका काम आगे बढ़ाना शुरू किया, तब अूपर बताअी अनेक कठिनाअियां आअीं। परन्तु अुनसे न घबराकर अुन्होंने धीरज और लगनसे धीरे धीरे लोगोंका सहयोग प्राप्त करके अुनका प्रेम और विश्वास संपादन करके मार्ग निकालनेकी कोशिश की।

२०

साधना और कार्यविकास

हमने देख लिया कि भील-सेवा-मंडलके प्रारंभिक वर्षोंमें किस किस प्रकारकी कठिनाअियां पैदा होती थीं, कार्यकर्ताओंको कैसी परेशानी अुठानी पड़ती थी, कुछ स्वार्थी व्यापारी अुनके रास्तेमें किस तरह रोड़े डालते थे और भीलोंका अज्ञान और आलस्य भी मंडलके कार्यमें किस प्रकार रुकावट पैदा करता था। अिन कठिनाअियों और विडम्बनाओंके बीचमें मार्ग निकाल कर मंडलके कार्यका विकास करना था। जिसके लिये आवश्यक धीरज, सहनशीलता, कार्यपरता, अुद्योग, परिश्रमशीलता और साहस आदि गुण बापामें अच्छी मात्रामें थे। बापाकी जगह कोअी अुग्र कार्यकर्ता होता, तो सरकारी कर्मचारियोंके साथ लड़ बैठता और झगड़ेमें मंडलका काम भी अेक तरफ रह जाता। अुनमें भी कोअी नरम स्वभावका विनीत वर्गका कार्यकर्ता होता, तो यह समझकर कि अितनी मुश्किलोंके बीच काम करना असंभव है, अपना क्षेत्र बदल डालता। अिससे भी ढीला कोअी आदमी होता तो कर्मचारियोंकी खुशामदमें लग जाता अथवा अिस हद तक नीचे न अुतरता तो भी अुन्हें खुश रख कर काम निकालनेकी मनोवृत्ति बना लेता। नतीजा यह होता कि कामकी आत्मा मर जाती। परन्तु बापाकी नजरके सामने कार्य, कार्यकी दिशा, ध्येय और ध्येय तक पहुंचनेका मार्ग वगैरा सब स्पष्ट था। साध्य और साधन दोनों चीजें अुन्होंने तय कर डाली थीं। जिनके बीच रह कर काम करना है, आसपास किस किस प्रकारके तत्त्व विद्यमान हैं, कैसे कैसे बल काम कर रहे हैं, कहां कहां संघर्षकी संभावना है, यह सब, वे जानते थे। और यह जान लेनेके बाद ही अुन्होंने मंडल, मंडलके कार्य, मंडलके कार्यकर्ताओं और आसपासके समाजका चित्र खींच रखा था। अेक कुशल अिंजीनियर जैसे सारे मकानका नकशा बनाता है, वैसा ही नकशा अुन्होंने मंडलके बारेमें तैयार कर रखा था। अब तो अुन्होंने बुनियाद खोदकर अिमारत खड़ी करके अींट-चूना भरना शुरू कर दिया था।

भील-सेवा-मडलके प्रथम दस वर्षका समय अुसके सस्थापक और साथी कार्यकर्ताओके लिअे साधनाका काल था। बापाने अेक साधककी वृत्ति और लगनसे ही ये वर्ष विताये और हाथमे लिया हुआ काम पूरा करनेके लिअे कडा परिश्रम किया। वे शुरूके अिन दिनोमे मडलके अध्यक्षके रूपमे दाहोदके मुख्य कार्यालयमे रहते और वहा रह कर मडलका सचालन करते। भील-सेवा-मडलका मुख्य कार्यालय अुस समय दाहोदके अेक मिट्टीके मकानमे था। वहा थोडे समय रहनेके बाद गावके बीचमे दाहोदके अेक व्यापारीके दुमजिले मकानमे बदल लिया और बादमे जो तीसरा मकान मिला वह भी अैसा ही था। मिट्टीकी दीवारे और अूपर खपरेल अैसे बिलकुल मामूली मकानमे बापा रहते। अुनके साथ अेक हिसाबनवीस अेक व्यवस्थापक और अेकाध सस्थाका रसोअिया वगैरा मिलाकर दूसरे तीन-चार आदमी रहते थे। आगे चलकर जैसे-जैसे काम बढता गया, वैसे-वैसे आदमी भी बढते गये। बापाने सब कार्यकर्ताओके लिअे दाहोदमे अेक आम भोजनालय रखा। वहा सब साथ खाते। अिसके अलावा, शुरूसे ही वे अपने साथ अेक-दो भील विद्यार्थी भी रखते थे। अिस भोजनालयमे बापा सबके साथ बिलकुल सादा, गरीब आदमीके लायक खुराक खाते थे। हफ्तेमे दो तीन बार मक्कीकी रोटिया होती, अेक दो बार जुवारकी भी होती। गेहूका अुपयोग होता जरूर था, मगर थोडी मात्रामे।

पचपन-साठ वर्षके बुजुर्ग आदमी होने पर भी कभी असा नही हुआ कि अुन्होने खाने-पीनेमे 'यह क्यो बनाया, वह क्यो नही बनाया' का कभी कोअी प्रश्न अुठाया हो। जो होता वही सबके साथ खा लेते। बाहरसे कभी नजदीकी रिश्तेदार या अैसे ही कोअी मेहमान आते, तब परेशानी पैदा होती थी। अेक बार ठक्करबापाके छोटे भाअी डॉ० केशवलाल ठक्कर अुनसे मिलनेके लिअे दाहोद आये। अुस दिन बापाकी विशेष सूचना पर गेहूकी रोटी वगैरा चीजे बनी और अुन्हे परोसी गअी। डॉ० केशवलाल ठक्करने स्वाभाविक तौर पर ही मानो अपने घर भोजन कर रहे हो अिस तरह सब चीजे खा ली और अुन्हे कोअी शका या विचार भी न होता। परन्तु बादमे घूमते-घूमते अुन्होने अेक तख्ता देखा। वह भोजनका समयपत्रक था और हर रोज मडलके आम भोजनालयमे क्या क्या बनाया जाय, अिसका ब्यौरा अुसमे दिया हुआ था। डॉ० केशवलाल ठक्करको बादमे पता चला कि यह समयपत्रक, जो वहा हमेशा टगा रहता था, बापाकी सूचनासे ही अुनके आनेसे पहले अुतरवा लिया गया था। कारण, वह समयपत्रक अुनके देखनेमे आता तो नाहक अुनका जी दुखता अथवा बडे भाअीको अिस बारेमे अुलहना

देने या प्रेमपूर्ण आग्रह करके जिस प्रकार मक्की और ज्वारकी रोटिया खानेके बजाय अुन्हे रोज नियमित रूपमे वनिये-ब्राह्मणोकी खुराक दाल-चावल-रोटी-साग वगैरा खानेका अनुरोध करते। यह स्थिति पैदा न होने देनेके लिअे वापाने ममयपत्रक अुतरवा कर अेक तरफ रखवा दिया था। परन्तु अिस वातका डॉ० ठक्करको अचानक ही पता चल गया।

दाहोद कार्यालयके कामकाजमे वे रोज सन्ध्या तक की नियमित डाक लिखते, स्थानीय पाठशाला और आश्रममे समय देते, गावमे जुलाहो और हरिजनोके मुहल्लोमे जाकर वन्से और खादीका प्रचार करते और मुसलमान भाअियोके साथ भाअीचारा बढाते। मडलके गावोमे चलनेवाले केन्द्रोको हिदायते भेजते। वहासे कार्यकर्ताओने जो जो चीजे मगाअी हो, वे दाजारसे मगवाकर गावोमे भिजवाते। अिसके सिवाय और जो भी काम सौंपा गया हो अुस पर अमल करते।

दाहोदमे वे महीनेमे पद्रह सोलह दिन मुश्किलसे रहते थे। वाकीका अधिकाश समय वे सब केन्द्रोका दौरा करनमे विताते। वही दो बैलोकी छोटी गाडी, वही साथी सुखदेवभाअी और वही भीलोके गाव, झोपडे और महल्ले। अुस ममय वापा पगडी बाधते थ। देहातमे जाते ममय गाडी होने पर भी बहुत पैदल चलते। चलते ममय धोतीका कच्छ बना लेते और हाथमे सन्यासीके दण्ड जैसा लम्बा मोटा रखते थ। हरअेक केन्द्रमे महीनेमे अेक बार तो कमसे कम जाते ही थे। वहाकी पाठशालाका निरीक्षण करते। लडके क्या पढते है, कैसे पढते है, शिक्षक अुन्हे किस प्रकार पढाते है, अित्यादि वातोकी खुद जाच करते। चलते वर्गमे आकर पाठशालामे बैठते और शिक्षण कार्यका निरीक्षण करते। लडकोको कविता सिखाते। हिसाब-पहाडे पूछते, कहानी कहते और अुपदेश भी देते। और पाठशाला और आश्रममे स्वच्छता तथा सुव्यवस्था रहती है या नही, अिसका सबसे पहले ध्यान रखते। कही भी कागजका टुकडा पडा हो, दातुनकी चीर पडी हो या दूसरा बेकार कूडा पडा हो तो गुस्-गुस्स कुछ भी न बोलकर चुपचाप अुठा लेते और कचरेकी टोकरीमे या अुसके लिअे नियत किये हुअे स्थानमे डाल देते। कागजके टुकडे पडे हो तो अुठाकर जेबमे डाल लेते।

विद्यार्थियोके नाखून बढ गये हो, वाल बढ गये हो, कपडे फट गये हो, आखोमे कीचड हो, कान गदे हो, नखोमे मैल हो, तो यह बताते कि अिन सबको साफ कैसे रखा जाय और अेक-दो बार खुद ही धोकर अुदाहरण अुपस्थित करते।

अेक वार झालोद आश्रममे पाठशालाके अेक कमरेके आगनमे चूना चिपट गया था। चूना लगाते समय गिर गया था और जहा का तहा सूख गया था। कितने ही दिन तक अिस स्थितिमे रहनेसे अुसके पिंडे सख्त होकर जम गये थे। बापा अेक वार अिस आश्रमको देखने गये, तब वह चूना अुनकी नजर पडा। अुसे देख कर अुन्होने वहाके अेक जिम्मेदार शिक्षक और कार्यकर्ताको आदेश दिया कि अिसे साफ करवा देना। शिक्षकने वह चूना साफ करनेका विचार तो रखा था, मगर चूना यो निकलेगा नही और जमीन साफ होगी नही, यह मानकर कुछ अश्रद्धा ओर कुछ आलस्यके मारे यह काम मुलतबी रखा। दूसरे दिन भी स्थिति ज्यो की त्यो थी। यह देखकर बापाने कुछ भी न कहकर अेक विद्यार्थीसे फावडा मगवाया और धोतीका कच्छ चढाकर फावडेकी धारमे सारा चूना घिस कर अुखाड डाला। अितने समयमे वहुतसे विद्यार्थी जमा हो गये। अुन कार्यकर्ता शिक्षकको पता चला तो वे भी दौडते हुअे आये और बापाके हाथसे फावडा छुडा कर और यह कह कर कि 'लाअिये बापा, मै कर डालू' साफ करने लगे। अुनकी शर्म-सकोच और पछतावेका पार नही था। परन्तु बापाने अुन्हे जरा भी अुलहना न देकर केवल अितना ही कहा कि, "देखो, अितना काम करनेमे पूरा आध घटा भी नही लगा। अितनेसे समयके आलस्यके कारण कितने दिन पाठशालाके कमरेमे गदगी पडी रही और विद्यार्थियोके सामने गलत अुदाहरण अुपस्थित हुआ? अगर हम ही सफाअी, स्वच्छता तथा सुघडताका आग्रह नही रखेगे, तो विद्यार्थी ये वाते किससे सीखेगे?" वे शिक्षक भाअी लिखते है कि, "मेरे लिअे तो यह प्रसग जीवन भरका अेक पदार्थपाठ हो गया।"

बापाने शुरूमे ही मडलकी सस्थाओमे स्वच्छताका यह आदर्श रखा, अिसलिअे अुनके अधीन तालीम पाकर तैयार हुअे कार्यकर्ता द्वारा चलनेवाले किसी भी आश्रम या पाठशालामे आज भी जाये तो वहा आगन, पाठशाला और मुहल्ला साफ मिलेगा। मकान बिलकुल सादे होगे, परन्तु मिट्टीसे लिपे हुअे होगे। मुहल्लेमे पेड या फूलोके पौदे लगे होगे। छोटे छोटे रास्तोके दोनो ओर अीटो या खपरेलोकी किनार खडी की गयी होगी। पाठशाला, भोजनालय, भडार, कमरे सब स्वच्छ और सुघड होगे और प्रत्येक वस्तु अपनी जगह रखी हुअी नजर आयेगी। दाहोद, झालोद, मीराखेडी, जेसा-वाडा वगैरा आश्रमोको मैने आखो देखा है और वहा की सफाअी, सादगी और सुघडता आखोमे समा जानेवाली मालूम हुअी है। अिन आश्रमोमे पढनेवाले भील कुमार और कन्याये भी देखने लायक है। अुनके मुख पर,

भले वे परिश्रम कर रहे हो या पढ रहे हो, गाते हो या खेलकूद करते हो, अेकसा आनन्द नजर आता है। अुनकी पोशाक ज्यादातर खादीकी ही होती है। और वह भी स्वच्छ, सादी और सुघड होती है। शहरोंमें सादुन और नील लगाकर वगुलेके पंख जैसे कपडे पहननेवाला जो खादीधारी वर्ग होता है, अुसके साथ अिन लोगोंकी तुलना नहीं की जा सकती। जिनके कपडो पर मिट्टीका रंग चढा हुआ दिखाअी देता है, फिर भी जिस रंगका बखान तो विनोबाजीने भी किया है। और अुनके शब्दोंमें कहे तो "यह तो जमीनके साथ मनुष्यका सम्बन्ध बताता है।" वैसे अुनके कपडे बिलकुल साफ, बिना मैलके, बिना दागके, बिना फटे हुअे और सुघड होते है। फटे हुअे कपडो पर पैबन्द लगाया हुआ होगा, परन्तु फटे-टूटे कपडे किसीके शरीर पर नहीं पाये जायेंगे।

भील कन्याओ और बालकोमे स्वच्छताका अितना अचा स्तर बना रहा है, अिसकी जडमें बापाका सफाअीका आग्रह ही है। वे जिस किसी पाठशालामें जाते, वहांके विद्यार्थियोंके कपडे देखते, अुनके नख बढे हुअे है या कटे हुअे, और बाल कघी किये हुअे है या नहीं, यह भी देखते। कपडों या बालोमें जूं पडी है या नहीं, अिसकी भी जांच करते। और अिनमें से कुछ भी मालूम पडता कि तुरत अुसकी सफाअी करके शिक्षकके सामने मिसाल पेश करते।

मंडलके शुरूके वर्षोंमें अेक दिन बापा मुंडाहेडा गांव गये थे। वहां विद्यार्थियोंमें मिलेजुले। शिक्षकके साथ बाते कीं। बादमें सब विद्यार्थियोंको साथ लेकर तालाब पर नहाने गये। वहां जाकर सब विद्यार्थियोंको नहलाया। अुस समय अेक विद्यार्थीके सिरमें फोडे हो गये थे। फोडे अभी गीले थे और सिर पर मक्खियां बैठकर तंग करती थीं। बापाने अुस विद्यार्थीको पास बुलवाया। फिर अुसे अितने प्रेमसे नहलाया मानो अपने लडकेको नहलाते हो और बादमें सहज भावसे ही अपना अंगोछा लेकर धीरे-धीरे अुसका सिर पोंछा। फिर सिरके फोडोंकी जांच करके शिक्षकसे पूछा, "ये फोडे कितने दिनसे है? अिसका अिलाज हो रहा है या नहीं?" शिक्षकने कुछ गोलमोलसा जवाब दिया। बापाने अुसके लिअे दवाका प्रबंध कराया और अुसके सिरके फोडे मिटनेके बारेमें पूरी चिन्ता दिखाअी।

जैसा आग्रह वे अलग अलग आश्रमोंमें रहनेवाले विद्यार्थियोंकी शारीरिक स्वच्छताका रखते थ, वैसा ही आग्रह वे अिस बातका रखते थे कि अुन्हें मिलनेवाला भोजन स्वच्छ, सादा और पौष्टिक हो। साथ ही वे यह भी अच्छी तरह देखते थे कि वह भोजन अच्छी तरह पकाया हुआ मिलता है या नहीं। और अिसमें कहीं भी फर्क मालूम होता तो पाठशालाके आचार्य अथवा गृहपतिको हिदायत देते।

मीराखेडीमे अेक बार वे आश्रम तथा पाठशाला देखन गये, तब निरीक्षक-पोथीमे लिखे हुअे अुनके नीचेके वाक्य अिस बातका समर्थन करते है

"कल दोपहर बाद भाओी सुखदेव और नर्मदाशकरके साथ आया। आज सुबह दाहोद जा रहा हू।

"डाह्याभाओी आचार्य सूरत गये है। हरगोविन्ददास, मथुरभाओी तथा छगनलाल काम कर रहे है। विद्यार्थियोकी सख्या अच्छी है। आज ४४ हाजिर है।

"कल शामको कोदर रसोअियेने बच्चोको दलिया कच्चा खिलाया। यह भी अबजी जैसे बडे लडकेको मैने पूछा तब मालूम हुआ। आचार्य बच्चोसे अलग खाते है, अिसीका यह परिणाम है। हमारा ध्येय यह होना चाहिये कि आचार्य और बच्चे अेक ही भोजनालयमे खाये। यह ध्येय जैसे गोधरा और नवसारीके अत्यज आश्रमोमे पालन किया जाता है, वैसे यहा नही किया जा सकता? भगवान वह दिन जल्दी लाये।

"जाडेमे सवेरे साढे पाच बजेके बजाय छ बजे अुठनेका नियम रखनेका अनुरोध है।

ता० १-१-'२८ अमृतलाल वि० ठक्कर"
पौष सुदी ९, स० १९८४

अुनका यह खयाल होने पर भी कि आचार्योको विद्यार्थियोके साथ रखना चाहिये, अुन्होने यह खयाल आचार्यो पर जबरन् लादनेकी कभी कोशिश नही की। यहा भी अैसा प्रयत्न न करके बापा अीश्वरसे प्रार्थना करते है कि अैसा दिन जल्दी आये। साथ ही, छात्रालयमे छोटे बडे परिवर्तन सुझानेके लिअे सचालककी हैसियतसे हुक्म नही देते, परतु अनुरोध करते है।

बापाका यह दृढ विचार था कि आचार्यो और विद्यार्थियोको साथ खानेका नियम रखना चाहिये। दाहोदके कार्यालयमे रहकर सचालन करते तब वहा आश्रम जैसा नही था, परतु बापा स्वय अेक दो विद्यार्थियोको साथ रखते और साथ ही खिलाते। अिस सिलसिलेमे भी अेक सूचक घटना मिलती है। अेक बार दाहोदमे खानेका समय होते ही रसोअियेने तीन थालिया परोसी। अुनमे से अेक थालीमे घी ज्यादा परोसा और वह अधिक घीवाली थाली बापाके आसनके सामने रखी। बापाने यह देख लिया। अुन्होने फौरन वह थाली हाथमे लेकर पासके अेक भील विद्यार्थीकी थालीके साथ बदल ली। रसोअियेने यह देखकर बेचैन होकर कहा, "बापा यह थाली आपकी है।" बापाने कहा, "कोअी परवाह नही। अिसमे घी अधिक है, अितनी

ही बात है न? बापा तो अब बूढा हो गया। अुसे अितना घी पचेगा नही। अधिक घी जवानोंको ही पच सकता है।"

यों कहकर हसते हसते रसोअियको समानता और बन्धुताका अेक पदार्थपाठ दे दिया। अुस दिनसे रसोअिया बापाकी मौजूदगीमें परोसनेमें किसी भी प्रकारका पक्षपात करना भूल गया और बादमें सबको अेक ही ढंगसे परोसने लगा।

मीराखेडीमें अेक भील कार्यकर्ता थे। अुन्होंने प्रथम तीन वर्षकी और फिर बीस वर्षकी सेवाकी प्रतिज्ञा ली थी। वे आश्रमकी पाठशालामें पढे थे। और पढकर बापाकी प्रेरणासे संस्थामें शरीक हुअे थे। अेक दिन बापा आश्रम देखने आये। कार्यकर्ताकी खुशीका पार नहीं था। अुनका हर्ष समाता नहीं था। जिस भावसे शबरीने भगवान रामचन्द्रजीके लिअे बेर रखे थे अुसी भावसे भील कार्यकर्ताने बापाके लिअे अपने घर हलुवा, पूरी, शाक वगैरा बनवाया। बापाको अुस दिन कुछ काम था, अिसलिअे वे बाहर चले गये। जाते जाते कह गये कि मैं अेक घंटे बाद आश्रमके भोजनके समय लौट आअूंगा और विद्यार्थियोंके साथ खाअूंगा। अिसलिअे अगर पांच सात मिनट देर हो जाय तो प्रतीक्षा करें। अिससे अधिक देर तो हरगिज नहीं होगी।

कार्यकर्ता भाअीको तो बापाको खिलानेका अुत्साह था। अुनके लिअे अुन्होंने खास खाना बनवाया था। फिर भी शर्म और संकोचसे अिस बातको खोल नहीं सके। मनमें बापाको खिलानेकी चोरी भी जरूर थी। अिसलिअे अुन्होंने कहा, 'ठीक है।' परंतु बापाके चले जाने पर अिस डरसे कि कहीं बापा समय पर न आ पहुंचे अुन्होंने समयसे पहले भोजनकी घंटी बजाकर विद्यार्थियोंको जल्दी खिला दिया। अिसके तुरन्त बाद ही बापा नियत समय पर आ पहुंचे और कार्यकर्ता भाअीको सामने खडा देखकर बोले, "क्यों, समय पर आ गया न?" अुस भाअीने कहा, "हां, परन्तु विद्यार्थियोंने तो भोजन कर लिया है और आपके लिअे मेरे घर पर भोजन तैयार कराकर रखा है।" बापा वहां खाने गये। भील सेवकने हलुवा, पूरी वगैरा परोसे। बापाने अुस समय तो चुपचाप खा लिया। मगर बादमें अुसे मीठा अुलहना देकर कहा, "शिक्षकों और विद्यार्थियोंको सदा अेक ही भोजनालयमें खाना चाहिये। शिक्षकोंसे यह न हो सके तो दरगुजर किया जा सकता है। परन्तु मेरे जैसा संस्थाका मुख्य मनुष्य महीने भरमें अेकाध बार यहां आये, तब विद्यार्थियोंके साथ रहने, खाने, बातें करने और भाअीचारा बढानेका जो मौका मिलना चाहिये वह अैसी घटनाओंसे छिन जाता है। साथ ही, भीलों जैसे गरीब लोगोंकी सेवा करनेवालेके लिअे अैसा भोजन पुसा भी नहीं सकता

और शोभा भी नहीं देता। असलिअे अैसा फिजूल खर्च कभी न किया जाय और मेरे निमित्तसे तो खास तौर पर न किया जाय।"

अैसी ही अेक और घटना झिमी गावमे हुअी थी। शहरसे सेवा करने आये हुअे अेक-दो भाअी देहातके सादे भोजनसे कुछ कुछ अुकता गये थे। अुन्हे थोडी नवीनता चाहिये थी और स्वाद भी। असलिअे अेक भाअी दाहोद गये तब कुछ पपीते और पकौडियां बनानेके लिअे कुछ और सामग्री ले आये। बादमे कुछ भाअियोने अिकट्ठे होकर पूरी, पकौडिया और शकर डालकर पपीतेका 'मीकजबीन' वगैरा तैयार किया। ठीक अुसी दिन बापा आश्रमकी देखरेखके लिअे आ पहुचे। आश्रममे चक्कर काटते हुअे अुनकी नजर शिक्षकोंके अिस समारोहकी तरफ गअी। परन्तु अुस समय वे कुछ न बोले। थोडी देर अिधर अुधर घूमे। अितनेमें छात्रालयमे भोजनका घंटा बजा। बापा भी सब विद्यार्थियोंके साथ खानेको अुठे। जाकर पंगतमे बैठ गये। शिक्षकोने अुन्हे समझाया और कहा, "बापा, आपको तो हमारे साथ खाना है।" बापाने कहा "यही सबके साथ ठीक है।" शिक्षकोंने बहुत आग्रह किया परन्तु बापाने कहा, "मुझे यहा सबके साथ ही अधिक अनुकूल होगा।" अन्तमे शिक्षकोने अपनी भूल समझी। वे तैयार की हुअी रसोअी छात्रालयके भोजनालयमे लाये। सबको थोडी थोडी परोसी। बापाने भी ली। अध्यापकोंने भी ली और अुस दिन शिक्षक, विद्यार्थी, बापा और अन्य मेहमानो वगैराने सामूहिक भोजन किया और थोडेसे मित्रोके लिअे सोचा हुआ प्रीतिभोज सबके लिअे प्रीतिभोज बन गया।

दाहोदमें रहकर बापा अलग अलग केन्द्रोके अवलोकनार्थ जाते, तब अुनका कार्यक्रम पहलेसे ही तैयार हो जाता था। कामकी आवश्यकताके हिसाबसे कही अेक दिन कही अेक रात तो कही केवल दो चार घंटे ही ठहरते और पाठशाला या आश्रमका निरीक्षण हो जाता, प्रबंध और शिक्षा सम्बन्धी प्रश्नोका फैसला हो जाता और गावके दूसरे सवाल निपट जाते तो चल देते। जरूरतसे ज्यादा अेक दिन तो क्या अेक घंटा भी कही ठहरते नहीं थे। जिस कामके लिअे जितना समय तय किया हो अुतने ही समय वे रहते थे।

अिसमें अेक दिन अैसा हुआ कि दौरेमे अलग अलग केन्द्रोका निरीक्षण करते करते वे जाबुवा गावकी पाठशाला देखने आ पहुचे। जाबुवामे अुनके प्रिय शिष्य मगनलाल झवेरचंद महेता आचार्यके रूपमें काम करते थे। बापाके मन तो सब कार्यकर्ता अेकसे थे। परतु मगनलाल पर अुनका लडके जैसा प्रेम था। वे वहा रहे, खाया, पाठशालाके कामकाजका निरीक्षण किया

और फिर रात वही बिताओ। दूसरे दिन सुबह जल्दी ही साढे पाच बजे वहासे रवाना हो जानेका निश्चय किया। परतु सयोगवश अुस दिन सारी रात झिरमिर झिरमिर वर्षा हुओ। आकाश अभी तक निरभ्र नही हुआ था। काले काले बादलोका घटाटोप होता जा रहा था और अैसा लगता था मानो अभी बरसात टूट पडेगी।

मगनलाल महेताने सोचा कि अैसी भयकर वर्षा सिर पर मडरा रही है तब बापा थोडे ही जायगे? अिसलिअे वे अिस विचारमे कि बापाके साथ अेक दिन और रहनेको मिलेगा मनमे खुश होकर दूसरे दिनका कार्यक्रम सोचने लगे और अिस सबधमे विचार करके सो गये।

परतु दूसरे दिन प्रातःकाल होनेसे पहले ही बापा जल्दी अुठकर प्रातःकर्मसे निवृत्त हुअे, बकरीका दूध पिया और जानेके लिअे तैयार हो गये। धोतीका कच्छ चढाकर अुन्होने तो लाठी हाथमे ले ली। मगनलालको आश्चर्य हुआ। पूछा, "बापा, कहा चले?"

बापाने कहा, "कहा क्यो? यहासे आगे दूसरे गावको।"

"मगर बापा, अैसेमें जायगे? सिर पर वर्षा मडरा रही है।"

बापा कहने लगे "अिससे क्या, बरसात होगी तब देखा जायगा। अुससे पहले तो रास्ता तय करके आगेके मुकाम पर पहुच जाअूगा।"

मगनलालने बापासे खूब अनुनय-विनय किया। कहा, "बापा, आज जाना रहने दीजिये। यह बरसात अभी टूट पडेगी और परेशानीका पार नही रहेगा।"

परन्तु बापाने कहा, "मै अिस तरह ठहर नही सकता। अिस वर्षाको अपना काम है तो मुझे भी अपना काम है। अपना काम पूरा करनेमें अगर वर्षाको जल्दी या देर नही होती, तो मै कैसे देर कर सकता हू? कुदरत अपना काम करेगी और अिन्सान अपना।"

मगनलालने बहुत दलीलें दी। आग्रह किया। विनती की। फिर भी जब अुन्हे निश्चय हो गया कि बापा किसी तरह नही मानेगे, तब अुन्होने कहा, "जानेका निर्णय कर ही लिया है तो भले जाअिये। मै आपको नही रोकूगा। परतु रास्तेमे शायद मुश्किल हो, अिसलिअे मै आपको अकेले नही जाने दूगा। मै आपके साथ चलूगा।"

बापाने कहा, "नही, यह भी नही हो सकता। तुम्हारा जो कर्तव्य है अुसे छोडकर तुम मेरे साथ नही चल सकते। अिससे पाठशालाका काम बिगडेगा, बच्चोकी पढाअीमे हानि होगी और दूसरे कामोमें भी हर्ज होगा। अिससे ज्यादा अच्छा है कि तुम यही रहो। मै आरामसे पहुच जाअूगा।"

अन्तमें बहुत ही आग्रह करनेके बाद मगनलालने बीचका रास्ता निकाला और अेक अन्य भील सेवकको बापाके साथ भेजा।

अिस प्रकार बापाने मगनलालसे विदा ली और जाबुवा गावसे निकलकर हाथमें लाठी लेकर रवाना हुअे। अभी थोडी दूर भी नही पहुचे थे कि अितनेमे मूसलधार बरसात पडने लगी। खेत और रास्ते पानीसे छलाछल भर गये। जूते दस दस सेरकी मिट्टीके ढेले अुखाडने लगे। बापा लाठीके सहारे बरसातके पानीमे भीगते भीगते चल रहे थे। अुस समय अुनके पास छत्री नही थी। बकरीके बालोका कम्बल बापाने ओढ लिया था। परतु वह बरसातको कितना रोकता? बरसातके पानीमे आधे भीगते भीगते वे आगे बढ रहे थे। साथमे वह भील कार्यकर्ता भी चल रहा था। चलते-चलते रास्तेमे नदी आ गअी। नदीमे बाढ आ गअी थी। अब क्या किया जाय अिसका विचार करते हुअे बापा अेक पेडके नीचे खडे रहे। वहा खडे खडे अुन्होने नदीकी तरफ देखा। अुन्होने अपनी नजरसे नदीके पाटको नाप लिया और मन ही मन विचार करने लगे, मानो वे अपने जीमे निश्चय कर रहे हो मेहनत तो होगी, परतु थोडासा परिश्रम करुगा तो किसी जगह तग पाट ढूढकर वहासे कम मेहनतसे सामनेके किनारे पहुच जाअूगा। अिस प्रकार विचार करके वे अुस भीलके साथ नदीके किनारे किनारे थोडी दूर चले। फिर जहा पानीका पाट तुलनामे तग मालूम हुआ वहा गये और वहासे वे बाढके प्रवाहमे अुतरे। थोडे कदम तो वे गये। परतु फिर आगे जाना खतरनाक मालूम हुआ। अुन्होने चारो तरफ नजर डाली। सौभाग्यसे अुसी समय नदीके किनारेकी अेक टेकरी पर अुन्होने अेक झोपडा देखा। वहा अेक भील परिवार रहता था। अुस भीलको पुकार कर बापाने बुलाया। सौभाग्यसे वह भील बापाका परिचित निकला। भीलने बापाको पहचान लिया "यह तो अकालमे सहायता देनेवाला और कपडे बाटनेवाला बाबा है।' देखकर वह दौडता हुआ आया। दो-चार मित्रोको अुसने और बुलाया और सबकी मददसे बापाको अुस दिन नदी पार कराअी। अन्तमे बापा दोपहरको अेक बजे गरबाडा पहुचे। सुबहके छ बजे चले थे सो चलते चलते पाच मीलका रास्ता तय करके सात घटेमे मुकाम पर पहुचे।

अिस प्रकार बापा चाहे जैसी कठिन परिस्थितिमे भी कर्तव्य कर्म छोडते नही थे, न मुलतवी रखते थे और न अुसे ढीला करते थे। परतु अन्तरकी जागृति रखकर शुद्ध आचरणको जीवनमे अुतारते और शिक्षक, सेवक, साथी, विद्यार्थी सबकी प्रीति सपादन करते। कठिनसे कठिन काम सबसे पहले स्वय

करके अुदाहरण स्थापित करते। कठिनाअियां और विडम्बनाअें दूसरोंके सिरसे अुठाकर अपने सिर ओढ़ लेते। दूसरोंके दुःखको अपना बना लेते।

मंडलके प्रारंभके बाद अेक ही वर्षमें अेक सेवकका बलिदान दिया गया। यह बापा और अन्य साथियोंके लिअे भी अेक आघात पहुंचानेवाली घटना थी। ता० १२-९-'२४ से दाहोदसे नौ मील दूर जंगलमें रोझम गांवमें मंडलके अेक सेवक श्री गंगाशंकर ओझा पाठशाला चलाते थे। यह गांव जंगलके बीचमें होनेसे वहां मच्छर बहुत थे। हवा मलेरियावाली थी। और अिधरके लोग और सेवक अिस स्थानकी अंदमानके काले पानीके साथ तुलना करते थे। भाअी गंगाशंकरने वहां मेहनत करके अेक वर्षमें पाठशालाके कामका तेजीसे विकास किया। अेक दिन अचानक गंगाशंकरको बुखार आया। बुखारके साथ दस्त शुरू हो गये और अन्तमें अेकाअेक हैजा हो गया और बीमारी शुरू होनेके बाद केवल चौबीस घंटेमें ही अुनके प्राण-पखेरू अुड़ गये। अिस प्रकार वे अचानक गुजर जायेंगे, यह तो किसीको सपनेमें भी खयाल नहीं था। गांवके लोगोंको भी अुनके गुजर जानेके बारह घंटे बाद ही खबर लगी। क्योंकि वे गांवसे बाहर अपनी अेक अलग झोंपड़ीमें रहते थे। पता लगनेके बाद गांवके लोगोंने दाहोद खबर देनेके लिअे आदमी दौड़ाया। खबर सुनकर बापाके दिलको गहरा आघात लगा। तुरंत ही बापा और अन्य साथी कार्यकर्ता वहां दौड़ गये। मृतकको श्मशान पहुंचाया और बादमें अुनकी अुत्तरक्रिया भी की। अिस प्रकार बिना किसीको पता चले जंगलके बीच आदिवासी भीलोंकी सेवा करते करते ये सेवावीर सद्गतिको प्राप्त हुअे। अुनकी स्थिति देखकर सबको बड़ा दुःख हुआ। सुखदेवभाअीकी तो मानो छाती ही फट गअी। बापाको अैसा दुःख हुआ जैसे अपने सगे पुत्रकी ही मृत्यु हुअी हो। आश्वासन केवल अितना ही था कि अिस भाअीने कर्तव्य कर्म करते करते ही मृत्युका आलिंगन किया और भील-सेवा-मंडलके अितिहासमें अपना मूक स्वार्पण लिखवाकर चले गये। बापा और अुनके अन्य साथियोंने अुस सेवक वीरके नामसे अेक चबूतरा बनवा दिया है। अुस पर सादे पत्थरका स्तंभ खड़ा करके अुनके नामके अक्षर खुदवा दिये हैं। भाअी गंगाशंकरकी शहादतकी गवाही देनेवाला यह चबूतरा और अुस पर खड़ा किया गया स्तंभ आज भी खेतोंके बीच खड़ा है और सैकड़ों मुलाकातियोंको प्रेरणा दे रहा है।

रोझमके खराब जलवायुका खयाल करके थोड़े समयके लिअे वह केन्द्र बन्द करके अुसके नजदीकके गांवमें बदल दिया गया। अिसके बाद थोड़े

अरसेमे ता० २१-११-'२३ को झालोद आश्रम शुरू हुआ। बम्बअीसे आये हुअे सेवक श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तको अिस आश्रमका सचालन सौपा गया। बम्बअीका यह अमीरका लडका महलोका निवास छोडकर झालोदके अेक कलालके साधारण मकानमे रहकर भीलोकी सेवा करने लगा। अिनके आस-पास भील, पटेलिया और अैसी ही दूसरी आबादी रहती थी। अिनके बीचमे रहकर वे भील बालकोको पढाते, तालाबमे नहाने ले जाते और अुनकी हर तरहकी सेवा करते। शुरुके वर्षोमे सवर्णोकी आलोचना और हसी सहन करके और कअी तरहकी दूसरी असुविधाअे अुठाकर अुन्होने झालोदके आश्रमको स्थिर किया। बादमे अबालाल व्यास और वीरसिहने अिस आश्रमका विकास किया।

यह अुस समयकी बात है जब मीराखेडी आश्रम आरभमे अिन्दुलाल याज्ञिकने शुरू किया था और बापा अिसकी देखरेख रखते थे। बापाने आश्रमके वार्षिक समारोहके अवसर पर अेक अधे सब-जजको अध्यक्षके तौर पर बुलाया था। ये सज्जन यद्यपि सरकारी नौकर थे तो भी अुन्हे भीलसेवाकी प्रवृत्तिमे अच्छी दिलचस्पी थी। अिसलिअे बापाने अुन्हे अध्यक्षपद स्वीकार करनेकी प्रार्थना की। अुन्होने अिसे स्वीकार कर लिया। श्री अिन्दुलाल याज्ञिकको यह पसन्द नही आया, क्योकि वे अुस समय असहयोगके रगमे पूरी तरह रगे हुअे थे। अिसलिअे अिस रचनात्मक कार्यके वार्षिक समारोहके अवसर पर अध्यक्षकी हैसियतसे अेक सरकारी नौकर (सब-जज) आये और वह भी विदेशी वस्त्रके कोट-पतलूनमे सज्जित होकर आये, यह सब अुन्हे अच्छा नही लगा। अिसलिअे अुन्होने बापाको अेक कडा पत्र लिखकर अपने दिलका गुबार निकाला। पत्र यद्यपि विनयपूर्ण भाषामे लिखा हुआ था, फिर भी दिलमे भरा हुआ अुबाल अुसमे अच्छी तरह अुडला गया था। अिसलिअे शब्दोमे काफी अुग्रता आ गअी थी। अैसे विदेशी वस्त्रोमे आनन्द माननेवाले सब-जजकी अध्यक्षके रूपमे बापाने जो पसन्दगी की थी अुसके बारेमे अरुचि व्यक्त की गअी थी। यह पत्र पढकर बापाको अितना बुरा लगा कि अिस घटनाके बादसे अुन्होने मीराखेडी आश्रममे जाना बिलकुल बन्द कर दिया। अेक दिन बापा दाहोदसे गरबाडा पाठशाला देखने जा रहे थे। रास्तेमे अुन्हें खूब प्यास लगी। सडकके किनारे पेडके नीचे अुन्होने गाडी खडी कराअी और पासके मीराखेडी आश्रमसे पानी मगवाया। आश्रमके अन्य कार्यकर्ताओको खबर लगने पर सब पानी वगैरा लेकर बापाको बुलाने आये और बापासे थोडी देर आश्रममे विश्राम करनेके लिअे विनती करने लगे। परतु बापाने आनेमें आनाकानी की। कार्यकर्ताओने बापासे खूब प्रार्थना की, समझाया, आग्रह किया

परतु अुस दिन वापा मीराखेडी आश्रममे नही गये। अुन्होने क्रोधमे भरकर कहा, "अिन्दुलाल समझता क्या है? अुन सव-जजको अध्यक्ष बनाकर मैं बुला लाया, अिसमे मैंने बुरा क्या किया? भील सेवाके लिअे अुनके दिलमे भावना है, श्रद्धा है। अुनके आगमनमे आश्रमको नुकसान नही होगा, लाभ होगा। जो असहयोगी हैं वे तो सब काम कर ही रहे हैं, परन्तु जो दूसरे क्षेत्रोमें हैं वे भी अिस ढगसे अिस कामकी तरफ मुडेंगे।" अुस दिन तो वापा मीराखेडी आश्रममे नही गये। और थोडे दिन तक अुनकी यह नाराजी वनी रही। वादमे अेक वार श्री अिन्दुलाल याज्ञिक वापासे मिले और अिस प्रश्नके वारेमे वापाका समाधान कर दिया। वापाको वुरा लगा हो तो अफसोस जाहिर किया। अिसके वाद वापा फिर आश्रमम आने-जाने लगे। अिसके पश्चात् लगभग अेक दो वर्षमे अर्थात् ता० २९-१२-'२४ तक मीराखेडी आश्रम भील-सेवा-मडलको सोप दिया गया। तवसे वह वापाकी सीधी देखरेखमे आ गया और प्रान्तीय समितिकी तरफसे वार्षिक खर्चके पौने भागके वरावर रकम भी अुसे चलानेके लिअे मिलने लगी। ता० ८-५-'२५ को मीराखेडी राष्ट्रीय आश्रमका वार्षिक अुत्सव सरदार श्री वल्लभभाअी पटेलकी अध्यक्षतामे मनाया गया।

अिस प्रकार अेक आश्रम और चार पाठशालाओमे शुरू हुआ काम धीरे धीरे विकसित होते होते सारे दाहोद और झालोद तालुकेमे फैल गया और तीन वर्षके अन्तमे कुल चार आश्रम तथा आठ पाठशालाअे मडलकी तरफसे चलने लगी। सव जगह कुल मिलाकर ५०० भील वालक पढाअी करने लगे। मडलका कुल खर्च पहले साल रु० १७,२१६, दूसरे वर्ष रु० १८,५०० और तीसरे वर्ष रु० २१,५०० आया। हर साल आयसे खर्च अधिक होता और मडलके सिर पर थोडा थोडा कर्ज वढता गया। फिर भी वापाने अिसकी झूठी चिन्ता करके अेक साथ ज्यादा पूंजी जमा करनेका लोभ कभी नही रखा।

अिस प्रकार भील-सेवा-मडलके कामको जव वापा आगे वढा रहे थे, अुसी समय अुन्हे विचार आया कि सारे भारतमे भीलो जैसे आदिवासी तो वहुत होंगे। अगर गुजरातके आदिवासी भीलोकी यह स्थिति हो, तो भारत भरमे अिनकी स्थिति खराव ही होनी चाहिये। ये लोग दूसरे प्रान्तोमे कैसे रहते है, क्या काम करते है, कैसे जीते है, अुनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति कैसी है, अित्यादि देखना-जानना चाहिये। अिसलिअे अुन्होने अिस सिलसिलेमे भारतके भिन्न भिन्न भागोमे दौरा करनेका निर्णय किया। प्रवाससे पहले अिस सवधमे जो भी साहित्य प्रकाशित हुआ था, वह सव देख लेनेका

और अिस बारेमे और भी कुछ पूर्व तैयारी करनेका अुन्होने विचार किया। बम्बअीमे मित्रोसे माग-तागकर तथा भारत-सेवक-समाज और रॉयल अेशियाटिक सोसाअिटीके पुस्तकालयोसे कुछ पुस्तके मगवाकर और दूसरी कुछ खरीदकर अुन्होने आदिवासियो सम्बन्धी काफी साहित्य अिकट्ठा कर लिया। अेक महीनेमे तो अिस विषयमे बहुतसी पुस्तके बापाने पढ डाली। रसेलकी अेटनोग्राफीकी पुस्तक, मर्दुमशुमारीकी रिपोर्टे, अलग अलग प्रान्तो और जिलोके विवरण, गजट और अन्य कुछ प्रकाशन अुन्होने देख लिये। अिसके सिवाय कुछ दूसरे साहित्य पर भी नजर डाल ली। जैसा बापा अेक जगह कहते है, "अिस वाचनके अन्तमे मेरे सामने अिसकी स्पष्ट रूपरेखा तैयार हो गअी है कि मुझे प्रवासमे क्या करना है।' भूगोलका ज्ञान भी अिस प्रवासमे अुपयोगी होगा, यह सोचकर जिन जिन प्रान्तोमे जाना था अुनका आधारभूत और विस्तृत भूगोल भी पढ लिया।

अिसके बाद जनवरी १९२६ से अप्रैल तक अुन्होने जहा जहा आदि-वासी बसते थे अुन मध्यप्रान्त, बिहार और आसामके कुछ पहाडी प्रदेशोमे दौरा किया। अिसमे मध्यप्रान्तमे माडला और रायपुर जिलोमे, बिहार और बगालके सथाल परगनेमे और आसाममे सिलहट नागा तथा खासी चेरापूजी और जटिया जिलोका दौरा किया। वहासे लौटकर सथाल, नागा, खासी, मुडा वगैरा आदिवासी जातियोके बारेमे, अुनके जीवनके बारेमे, अुनके रहन-सहनके बारेमे, अुनके आर्थिक-सामाजिक प्रश्नोके बारेमे, अुनकी राजनैतिक स्थितिके विषयमे, और अुनके होनेवाले धर्म-परिवर्तनके सम्बन्धमे विस्तृत लेख लिखे। गुजराती और हिन्दीमे अिस प्रकारका प्रयत्न बापाने ही पहले पहल किया था। अुन्होने वर्षोसे अधेरेमे पडे हुअे अिन अिलाकोको अेकदम प्रकाशमे ला दिया। गाधीजीने बापाके य लेख 'नवजीवन' मे 'हमारी पुरानी जातिया' और 'पहाडी जातियोमे धर्म-परिवर्तन' शीर्षकोसे ता० २८-३-'२६ और ४-४-'२६ को लगातार दो सप्ताह तक छापे। अितना ही नही परन्तु अुन पर नीचेकी बहुत ही मार्मिक टिप्पणी भी लिखी

"भाअी अमृतलाल ठक्कर अपने सन्यासको सुशोभित कर रहे है। अुन्होने भगवा नही पहना, अपनेको सन्यासी बताते भी नही, फिर भी काम तो वे सन्यासीको शोभा देनेवाला ही कर रहे है। बूढे हो गये है तो भी चैनसे बैठते नही और अपने आसपासवालोको भी नही बैठने देते। जब दुखका दावानल चारो ओर जल रहा हो, तब चैनसे कौन बैठ सकता है? अथवा आलसी ही बैठ सकता है। भाअी अमृतलाल अछूतोके गुरु तो है ही। अब पहाडी जातियोके गुरु बननेकी साधना कर रहे है। मै आशा रखता हू

कि अुनके मर्मभेदी लेख सब कोअी पढ़ेंगे और अुन पर विचार करेंगे। जिन्होंने पिछले सप्ताहका लेख न पढ़ा हो वे पढ़ लें। जिस सप्ताहका भी पढ़ें और विचार करें। जो काम भाअी अमृतलालने सुझाया है अुसमें हम क्या और कैसे भाग ले सकते हैं, अिसका विचार बादमें करेंगे।"

जेसावाड़ामें भील-सेवा-मंडलकी तरफसे श्री वणीकर काम कर रहे थे। वहां भीलोंके लिअे अेक मंदिर बनवाया गया था। अुसमें मूर्तिकी प्रतिष्ठा करनी थी। दौरेसे लौटनेके बाद बापा अुसके समारोहकी तैयारीमें लग गये। मंडलका कार्य आरम्भ करनेके बाद तुरन्त ही बापाको भीलोंमें धार्मिक संस्कार डालनेकी अनिवार्य आवश्यकता महसूस हुअी थी। अुनकी मान्यता थी कि भीलोंको सदाचारके मार्ग पर लगाना हो तो अुनमें अिस प्रकारके धार्मिक संस्कार शुरूसे ही डालने चाहिये। अिसके लिअे अुन्होंने आश्रमों और पाठशालाओंमें रामायणका प्रचार शुरू कराया था। संस्थाके ही अेक तरुण कार्यकर्ता और जालुवाकी पाठशालाके आचार्य मगनलाल महेताकी भीली भाषामें लिखी हुअी रामायण बापाने प्रकाशित कराअी थी। बादमें अिस कथाको श्री वणीकरके भानजे दत्तु महाराजने कविताका रूप देकर और अुसमें संगीतके स्वर भरकर खूब लोकप्रिय बनाया था। अिस रामायणकी कथाकी रचना अिस ढंगसे की गअी थी कि अेक ही घंटेमें कही जा सके। अिस सम्बन्धका प्रसंग बहुत ही रोचक और सूचक है। अुसे मगनलाल महेताके ही शब्दोंमें देखें।

"दाहोदमें काम करते करते अेक बार बापाकी जांघमें फोड़ा हो गया था। सौ बार धोये हुअे घीका मरहम लगाने पर भी वह मिटा नहीं। अुसकी वेदना भी काफी होती थी। चलना तो दूर रहा बापासे अच्छी तरह बैठा भी नहीं जाता था। हम कार्यकर्ता कभी कभी आकर अुनकी खबर ले जाया करते थे। अेक दिन अिस प्रकार वणीकर दादा, अीश्वरलालभाअी और अन्य कार्यकर्ता वहां आये थे। मैं भी चौदह मील पैदल चलकर दोपहरके बारह बजे आ पहुंचा था। खा-पीकर सब बापाके पास बैठे थे। गांवोंके कामके सम्बन्धमें बात चली। अुसमें से भीलोंको धार्मिक शिक्षा देनेकी कुछ बात निकली। बापाने कहा

"'वणीकर, तुममें से कोअी भीली भाषामें रामायण लिख दे तो अच्छा हो। भील तुलसीकृत रामायण समझते नहीं। और अितने बड़े लम्बे काव्यमें अुन्हें रस भी नहीं आता। अिनके मानसके अनुकूल संक्षेपमें रामायणकी कथा लिख दो, जो सारी की सारी अेक बैठकमें पढ़ी जा सके।'

"यह सुनकर मेरे हृदयमें हर्ष समाया नही। कौन जाने बापाने अज्ञात रूपसे मेरे ही हृदयको प्ररणा की हो। मैंने तीन चार दिन पहले ही रामायणकी कथा अेक ही बैठकमे तीन चार घटे बैठकर लिख डाली थी। अुसके कागजोका पुलिंदा मेरी जेबमें ही था।

"मैंने हर्षसे बापाको कहा 'बापा, मैंने अभी अेक कथा लिखी है।'

"है?" कहते ही बापा सो रहे थे सो आधे बैठ हो गये। "कब?" अुन्होने पूछा।

"तीन चार दिन पहले ही।"

"कहा है?"

"यही मेरी जेबमे," कहकर मैंने बापाको कागजोका पुलिदा दिया।

"बापा अुस पर अेक नजर डाल गये। फिर मुझसे कहने लगे, 'तुम पढ जाओ' और मै अुसमें से कुछ पन्ने पढ गया।

"सुनकर वे आनन्दमे बिस्तरमें बैठ गय और बोले, 'मैं अिसे छपवाअूगा।

"अिसके बाद तो बापा दूसरी प्रवृत्तियोमे अितने डूब गये कि आठ महीने तक प्रस्तावना लिखनेकी अुन्हे फुरसत ही नही मिली। और अुनकी प्रस्तावनाके बिना छपवानेकी मेरी अिच्छा नही थी। अिसलिअे वह पाडुलिपि ज्योकी त्यो पड़ी रही।

"आठ महीनेके बाद बापाने तीन पन्नोकी लम्बी प्रस्तावना लिखी, जिसमें अुन्होने कहा

" भाषाको फेरबदल करनेकी कला बहुत थोडोको साध्य होती हैं। कोअी गुजराती बगाल या महाराष्ट्रमे जाकर बसे, तो बगाली या मराठी भाषा ग्रहण करना, बगाली या महाराष्ट्रीकी तरह बोलना अुसे बडा मुश्किल मालूम हाता है। सूरत या भडोचके आदमीको काठियावाडकी भाषामें बहुत विचित्रता और परायापन लगता है। यह तो सस्कारी भाषाकी बात हुअी। परन्तु अपनी भाषा सस्कारी और सामनेवालेकी अपूर्ण, असस्कारी या जगली हो, तब तो अपनेसे हल्की, नीची मानी जानेवाली जातियोकी बोली बोलना सीखनेकी, अशुद्ध परन्तु दूसरी जातिकी बोलीमे पूरा अनुकरण करके बोलनेकी कला पूर्ण सहानुभूतिके बिना और सामनेवालेके जीवनके साथ ओतप्रोत हुअे बिना नही सिद्ध हो सकती। यह कला कुछ अशोमें अिस छोटीसी 'वार्तार' के लेखक मगनलाल महेताने साधी है। तीन वर्ष तक लगातार अुन्होने जाबुवाकी पाठशालाके मुख्य शिक्षकका काम किया है। १६-१८

वर्षकी अुम्र होने पर भी अुन्होंने जगलमे वहाकी पाठशाला स्थापित की, अुसे वढाया, अितना ही नही पैरो पर खडा किया और दो तीन तूफानोमे से भी पार कर लिया है। अितना ही नही, अुस गावके वडी अुम्रके भील भाअियोके साथ परिचय पैदा किया है, अुनके सुख-दुखमे भाग लिया है, अुन्हे रामायणकी पुस्तकमे से कथा सुनाअी है और दूसरी कअी तरहसे अुनमे घुलमिल गये है। अुनकी वोली पर अुन्होने पूरा कावू पा लिया है और भीलोकी ही वोलीमे अथवा भीली भाषामे यह सक्षिप्त रामायण लिख डाली है। अिसलिअे अुन्हे वधाअी देता हू और दूसरे वडी अुम्रके भीलसेवकोसे अुनका अनुकरण करनेका अनुरोध करता हू। साथ ही यह छोटीसी प्रस्तावना लिखनेमे मैने आठ महीने लगा दिये, अिसके लिअे भाअी 'मगन' से क्षमा चाहता हू। मै चाहता हू कि यह 'वार्ता' भील वालको तथा अखेडोमे खूब पढी जाय और अुसकी कथायें हो।"

अिस प्रकार लगभग १९२६ के मअी मासमे यह कथा लिखी गअी। अुस समय तमाम आश्रमो और पाठशालाओके भील वालकोमे और देहातके भील भाअियोमे भी रामका प्रचार वहुत अच्छी तरह हो चुका था। साथ ही भीलोमे रामचन्द्रजीके वारेमे जाग्रत हुअी अिस श्रद्धाको वनाये रखनेके लिअे और अुनके धार्मिक सस्कारोको पोषण देनेके लिअे मदिरकी जरूरत मालूम होने पर वडोदाके अेक सज्जनसे अुसके लिअे रकम जुटाअी गअी और अससे जेसावाडामे मदिर वनवाया गया। भील समाजमे अिस तरहके मदिरके निर्माणकी यह पहली ही घटना थी। अिसलिअे अिस प्रसगको शोभा देनेवाला अेक भव्य समारोह करनेका अुन्होने निश्चय किया था।

गाधीजीने, जो वापाकी लगभग प्रत्येक प्रवृत्ति पर खुश थे, अिस मौके पर 'नवजीवन' मे टिप्पणी लिखकर अुनके कार्यको प्रोत्साहन और वेग देनेका प्रयास किया। 'भीलोमे प्राणप्रतिष्ठा' शीर्षकसे ता० १८–४–'२६ के अकमे वह टिप्पणी प्रकाशित की। अुसमे लिखा था

"रामनवमीके दिन भाअी अमृतलाल फिर भीलोका मेला भरनेवाले है। अुस समय रामजीके मदिरका अुद्‌घाटन होगा अर्थात् अुस दिन मूर्तिकी प्राणप्रतिष्ठा होगी। अिसे हम भीलोकी प्राणप्रतिष्ठा क्यो न कहे? भाअी अमृतलालने हमे अुनके प्रति हमारा धर्म सुझाया है।"

अिस प्रकार निश्चयके अनुसार रामनवमीके दिन जेसावाडा आश्रममें खूब ठाठसे अुत्सव मनाया गया। हजारो भील और आमन्त्रित मेहमान आश्रमके चौकमे अिकट्ठे हुअे। मूर्तिकी प्रतिष्ठा गोवर्धन पीठके अधीश्वर श्री भारती कृष्णतीर्थके वरद हस्तसे हुअी। दाहोदमे राम, लक्ष्मण और

जानकीजीकी वनवासी स्वरूपकी मूर्तियोंकी पालकीकी सवारी निकाली गअी। हजारों भीलोंकी अुत्साहपूर्ण अुपस्थितिमें बडी धूमधामसे और विधिपूर्वक राम, लक्ष्मण और जानकीजीकी मूर्तियोंकी मंदिरमें प्रतिष्ठा की गअी। मंगल गीत गाये गये, पुण्य प्रवचन हुअे। प्रो० देशबन्धुने बाणविद्याके अद्‌भुत खेल दिखलाये। अमरेलीके अंधकवि हंसराजने अपने धार्मिक गीत और भजन गाये। सौराष्ट्रके लोककवि श्री झवेरचन्द मेघाणीने लोकगीतों और लोक-वार्ताओंकी झडी लगा दी। अुस दिन जेसावाडामें सर्वत्र आनन्दोत्सव फैल गया और अुस दिनसे पंचमहालके भीलोंमें रामनवमीके मेलेकी प्रथा शुरू हुअी।

अुस दिन बापाने अपने अेक मित्रके नाम ता० २१-४-'२६ को लिखे पत्रमें बताया "राममंदिरकी आज प्राणप्रतिष्ठा हुअी। जटाशंकर शिवलाल जोशीने विधिके अनुसार पूजा कराअी। पूजा करनेवाले भाअी वणीकर और बडोदा निवासी सेठ चिमनलाल शामल बेचर थे। ध्वजारोहण जग-न्नाथजीके श्रीमद् शंकराचार्यजी भारती कृष्णतीर्थने कृपा करके बडोदासे पधार कर किया। मंडलकी तरफसे यह प्रथम धार्मिक संस्था स्थापित हुअी। . जबरदस्त मेला भरा था। भगवानकी कृपासे यह समारोह बहुत अच्छी तरह सम्पन्न हुआ।"

जेसावाडामें मंदिरकी स्थापनाका अुत्सव पूरा हो जानेके बाद अुस समयकी बम्बअी सरकारकी कार्यकारिणीके सदस्य सर चूनीलाल महेता दाहोदके दौरे पर आये। अुनके साथ अुत्तर विभागके कमिश्नर पेटर साहब तथा कलेक्टर श्री गोवान टेलर थे। सब दाहोद स्टेशन पर अुतरे। स्टेशन पर ही ठक्करबापाको खडे देखकर सर चूनीलालने अुन्हें बुलाया और अुनके साथ भील-सेवा-मंडलके सम्बन्धमें बातें हुअीं। परिणामस्वरूप मीरा-खेडी आश्रम देखनेका निश्चय हुआ। आश्रमकी पाठशाला और छात्रालय वगैरा देखकर और वहां हुआ काम देखकर सर चुनीलाल प्रभावित हुअे और अुसमें दिलचस्पी पैदा होने पर संस्थाकी स्थितिसे भी परिचित हुअे। सब हाल मालूम करनेके बाद अुन्होंने कमिश्नर और कलेक्टरसे प्रश्न पूछे

"भील-सेवा-मंडल अैसा अच्छा काम कर रहा है, तो फिर अुसे पास वाली जो २० अेकड पडती जमीन चाहिये अुसे देनेमें देर क्यों कर रहे हैं?"

कमिश्नरने जवाब दिया "साहब ये लोग राजनैतिक आन्दोलन-कारियोंके साथ मिलकर अपना काम करते हैं।"

सर चुनीलालने कहा "श्री ठक्कर तो भारत-सेवक-समाजके प्रसिद्ध समाज-सेवक हैं। अिनके बारेमें अैसी बात माननेको मैं तैयार नहीं।"

कलेक्टरने बीचमें पडकर सरकारी नीतिका बचाव करते हुअे कहा "साहब, वे सब खादीकी टोपी पहनते हैं और खादी टोपीवालोंकी टोलीके साथ मिलकर सरकारसे सहायताकी माग नहीं करते।"

सर चूनीलालने कहा "खादीकी टोपी पहननेमें ही हमें अुनके साथ क्यों छुआछूत रखनी चाहिये? श्री ठक्कर, आप सरकारसे सहायताकी माग क्यों नहीं करते?"

ठक्करबापाने जवाब दिया, "अगर आपके अफसरोंको मुझमें विश्वास न हो तो मैं सहायताकी माग कैसे करूं?"

सर चूनीलालने अुन्हें आग्रहपूर्वक माग करनेको कहा और अुसके फलस्वरूप २० अेकड पडती जमीन मीराखेडी आश्रमको मिली।

अिसके बाद दूसरे वर्ष झालोद आश्रममें भी राममंदिर बनवाया गया और अुसकी प्राणप्रतिष्ठाका अुत्सव रामनवमीके दिन शंकराचार्य श्री कुर्तकोटिजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस बार सरकारकी तरफसे विशेष पुलिस बुलाअी गअी थी, फिर भी भील निडर होकर दूर दूरके गावोंसे हजारोंकी संख्यामें श्री रामबापाके अुत्सवके निमित्त अुमड आये थे। झालोद शहरसे ठेठ आश्रम तक लम्बा जुलूस निकाला गया। सारा रास्ता मानवसमूहसे छा गया। दाहोद-झालोदके साहूकारों, व्यापारियों, देसाअियों तथा गोधरा, कलोल वगैरा स्थानोंसे आये हुअे मेहमानोंने अिस अुत्सवमें खूब रसपूर्वक भाग लिया। गुजरातके सुप्रसिद्ध संगीत विशारद श्री ओंकारनाथजी और अुनके भाअी श्री रमेशचंद्रजीने श्रोताजनोंको भारतीय संगीतसे मंत्रमुग्ध किया। दूसरे दिन मंडलका वार्षिक विवरण पढकर सुनाया गया। अिस मौके पर खास तौर पर अुपस्थित हुअे श्री किशोरलाल मशरूवालाने मंदिरप्रवृत्तिके बारेमें और मंडलके कामकाजके सम्बन्धमें चर्चा करके प्रेरणा और पथप्रदर्शन दिया।

झालोद आश्रममें मंदिरकी स्थापना होनेके बाद अुसकी पूजा करनेके लिअे किसी श्रद्धालु रामभक्तकी खोज हो रही थी। अितनेमें वणीकरके भानजे श्री दत्तुभाअी बडनेरकर मंडलमें आ पहुंचे। अुन्होंने गांधर्व महाविद्यालयमें वर्षों तक रहकर संगीतकी तालीम पाअी थी। संस्थाकी तरफसे अुन्हें आश्रमोंकी प्रार्थनाओं और भीलोंमें भजन-प्रचारके लिअे रख लिया गया। अुन्होंने मगनलाल झवेरचंद महेता द्वारा रचित भीली रामायणकी कथाको अलग अलग राग-रागिनियोंमें जमा लिया और गाव गाव घूमकर वे अिस गीत-रामायणका प्रचार करने लगे। अपनी सुन्दर और सादी भीली तर्ज

और सरल शब्दो वगैराके कारण भीलोमे यह रामायण खूब लोकप्रिय हो गअी और सैकडो भील बालक अुसके गीतोको कठस्थ करके पाठशालामे या आश्रममे, घरमे या खेतमे गाने लगे। अिस प्रकार रामायणका खूब प्रचार हुआ। अिसी तरह अुन्होने महाराष्ट्रके पैसा फडके ढग पर 'भील बाल-गोपाल मेला' चालू किया और बम्बअी, अहमदाबाद जैसे शहरोमे ले जाकर अुसका खूब प्रचार किया।

मडलकी शुरूसे ही दो और प्रवृत्तिया भी ठक्करबापाने शुरू की थीं। अेक, अुपदेश द्वारा मद्य-निषेध और दूसरी सहकारी समितिया। अिन दोनो कार्योमे भी अुन्हे काफी सफलता मिली थी। भीलोमे प्रचारके कारण और व्यवस्थित प्रयास द्वारा कडला और विजयगढमे शराबकी दो दुकाने वे बन्द करा सके थे।

मडलके कुछ कार्यकर्ताओने अेक सहकारी कोष स्थापित करके अुसके द्वारा मडलके सेवकोको कठिनाअीके समय सहायक होनेवाली अेक सहकारी समिति स्थापित की थी। अुसमे सस्थाके कोषसे बापाने ४०० रुपयेके शेर लिवाये। धीरे धीरे अिस समितिका विकास हो गया।

अिस प्रकार मडल अनेक तरहसे विविध क्षेत्रोमे प्रगति कर रहा था और अपने कामकाजको आगे बढा रहा था। अिस अरसेमे भीलोकी सेवाका व्रत लेनेवाले कितने ही सेवकोकी तीन सालकी मीयाद पूरी होने आ रही थी। अिसलिअे अब सबके बीस वर्षकी सेवाकी प्रतिज्ञा लेनेका समय आ पहुचा था। जिन बापाने सेवकोको तीन वर्ष तक भीलोकी सेवा करनेकी प्रेरणा दी थी, अुन्होने अुन्हे बीस वर्षकी प्रतिज्ञा लेनेकी प्रेरणा और अुत्साह दिया। बापाने स्वय बीस वर्षकी प्रतिज्ञा लेनेका निश्चय प्रगट किया।

यह घटना भील-सेवा-मडलके अितिहासमे सुवर्णाक्षरोमे लिखी जायगी। बापाकी अुम्र अुस समय ५५ वर्ष पार कर चुकी थी। फिर भी अेक नौजवानकी शोभा देनेवाले अुत्साहसे भीलोकी सेवा करनेके लिअे अुन्होने और सत्रह वर्ष देनेकी तैयारी दिखाअी। अिसी प्रकार अुनकी प्रेरणासे श्री सुखदेवभाअी, श्री पाडुरग वणीकर, श्री डाह्याभाअी नायक, श्री मगलदास आर्य, श्री अबालाल व्यास, श्री रूपाजीभाअी परमार, श्री अीश्वरलाल वैद्य वगैरा सात भाअी भी बीस वर्षकी प्रतिज्ञा लेनेको तैयार हुअे। फरवरी १९२७ की २२ तारीख! वह दिन धन्य था। वह समय मगलमय था।

यज्ञवाटिका आश्रम (जेसावाडा) मे स्थित रामजीके मदिरमे ब्राह्म मुहूर्तमे आरती पूरी हुअी। अुस समय मडलकी दीक्षा लेनेवाले सेवक प्रातःकाल

जल्दी अुठकर नहा-धोकर तैयार हो गये और समारोहके मडपमे आकर अपने अपने आसनो पर बैठ गये थे। पहले बापाने प्रतिज्ञा ली। फिर अुन्होने प्रत्येकसे विधिपूर्वक सेवाकी प्रतिज्ञा लिवाअी। बापा प्रत्येक वाक्य टुकड टुकडे करके बोलते जाते और सेवक भी अुसी तरह अुन शब्दोको दुबारा बोलते जाते।

प्रतिज्ञा अिस प्रकार थी

"मै आज मगल प्रभातमे भगवान श्री रामचन्द्रजीके समक्ष नीचे लिखे अनुसार सेवाके लिअे काया-वाचा-मनसा बधता हू।

१ मै अपनी सारी बुद्धि और शक्ति भील भाअियोकी सामाजिक अुन्नतिके कार्यमे लगाअूगा। भीलोमे पटेलिया तथा अैसी ही अन्य पिछडी हुअी जातियोका समावेश हो जाता है।

२ यह सेवा करनेमे मै अपना किसी भी प्रकारका स्वार्थ नही साधूगा और मडलकी तरफसे मेरे अपने और मेरे परिवारके निर्वाहके लिअे जो व्यवस्था कर दी जायगी अुससे सन्तोष करूगा।

३ मै वर्तमान सवत् १९७९ की चैत्र शुक्ला पूर्णिमा, १ अप्रैल, १९२३ से सवत् १९९९ की चैत्र शुक्ला पूर्णिमा, १ अप्रैल, १९४३ तक बीस वर्ष भील भाअियोकी सेवा करूगा।

४ मै मन, वचन और कायामे शुद्ध जीवन बिताअूगा तथा सब भील भाअियोको अैसा ही करनेको यथाशक्ति प्रेरित करूगा।

५ मै यथासभव किसीके साथ किसी भी प्रकारके झगडेमे नही पडूगा। भील-सेवा-मडलके नियम शुद्ध बुद्धिसे पालूगा और मडलके अुद्देश्योको पूरा करनेका प्रयत्न करूगा।

६ भीलोके साथ अछूत जातियो — ढेढ, भगी, ढवगर, चमार वगैराकी भी सेवा करूगा। और प्रयत्न करूगा कि अुनका सामाजिक दरजा अूचा हो।

७ अिस मडलका काम फिलहाल दाहोद-झालोद तालुकोमे व्याप्त है। अुनमें रहकर ही सेवा करूगा। मडल दूसरी जगह रहकर भीलोकी सेवा करनेका निश्चय करेगा तो वहा भी जाअूगा।"

अिस प्रकार श्री वणीकरने प्रतिज्ञा ली और अन्य भाअियोने भी अपनी अपनी निश्चित की हुअी तिथि और तारीखके अनुसार प्रतिज्ञाअे ली।

प्रतिज्ञाके अन्तमे बापाने अेक सक्षिप्त किन्तु सामयिक मगल प्रवचन किया और सेवकोमे से प्रत्येकको बारी बारीसे सीख देकर कहा, "पवित्र रहना, जो काम हाथमे लिया है अुसमे अन्त तक ओतप्रोत होकर अपनी

हड्डिया अिन्ही लोगोमे गिराना। और अपने निर्दिष्ट ध्येय तक पहुचे विना बीचमे कभी थकावट मिटानेके लिअे नही रुकना।"

रूपाजी भाअी नामक भील जातिके लोकसेवकको सम्बोधन करके बापाने कहा

"तुम बीस वरसकी प्रतिज्ञा ले रहे हो, अिससे मुझे प्रसन्नता होती है। दूसरे भाअियोसे तुम्हारी जिम्मेदारी दूसरी तरहकी है। मै तुम्हे आशिष देता हू कि तुम अपने कार्य और व्यवहारसे अपने जातिभाअियोके लिअे ध्रुव-तारा बन कर रहोगे। दूसरी जातियोके सेवक जो प्रयत्न करेंगे, अुनकी अपेक्षा भीलो और पिछडे हुअे वर्गोकी सच्ची अुन्नति तुम्हारे जैसे जो अनेक सेवक होगे अुनसे ही ज्यादा होगी। अिसलिअे तुम योगियोके लिअे भी कठिन अिस परम गहन सेवाधर्ममे सभाल-सभालकर कदम रखना और अिसके लिअे सतत जाग्रत रहना कि कही कोअी भूल न हो जाय।"

शपथ लिवाअी गअी तब वातावरण गभीर था। प्रतिज्ञा और प्रवचन पूरे होनेके बाद 'अेक ज दे चिनगारी'[1] और 'शिर साटे नटवरने वरिये'[2] दो भजन गवाये और फिर सबको सम्बोधन करके बापाने कहा कि, "याद रखना, तुम टुकडे टुकडे होकर गिर जाना, परन्तु ली हुअी प्रतिज्ञा न तोडना। मुझे विश्वास है कि तुम सब अैसे ही हो।"

यह बापाके लिअे धन्य दिवस था। आज अुनका सपना लगभग पूरा हुआ था। जिन्हे अधिकाश अूचे वर्गके लोग चूसते और लूटते थे, अुनकी आजीवन सेवाका व्रत लेनेवाले सात सेवक अुन्हे मिल गये थे। तीन वर्ष समाप्त हो चुके थ। तीन वर्षमे काफी काम हो चुका था। और बाकीकी सत्रह वर्षकी सेवाके अन्तमे निर्दिष्ट ध्येय तक पहुचनेके लिअे अब वे अकेले नही थे। (अकेले जानेमे भी अुन्हे कोअी डर नही था) परन्तु अन्य सात कार्यनिष्ठ और ध्येयनिष्ठ सेवकोका समूह अिस लम्बी मजिलको तय करनेमे अुनके साथ था। अब अुन्हे पूरा विश्वास हो गया था कि अिस कार्यके लिअे औीश्वरके आशीर्वाद है, अिसलिअे वह जरूर फूले-फलेगा। अिस विश्वासके कारण अुनके पैरोमे नअी शक्ति और आखोमे नया तेज आ गया था।

---

१ हे औीश्वर तेरी ज्योतिकी अेक ही चिनगारी दे।

२ सिर देकर नटवरकी भक्ति करे।

२१

देशी राज्योंकी प्रजाके सेवक

१

जिस समय ठक्करबापा पचमहालमे भीलोके बीच रहकर काम कर रहे थे और अपने साथियो द्वारा अुस कार्यको धीरे-धीरे देहातमे फैला रहे थे, अुन दिनो अुन्हे अेक और फर्ज अदा करनेका आमत्रण आ पहुचा। वह था भावनगर राज्य प्रजा-परिषद्के दूसरे अधिवेशनके अध्यक्षपदका और अुस स्थान पर रहकर प्रजा-परिषद्का पथप्रदर्शन करने और अुसका सचालन करनेका।

ठक्करबापा स्वभावसे ही राजनीतिके आदमी नही थे। सक्रिय राजनीतिमे अुन्होने पहले कभी भाग या दिलचस्पी नही ली थी। समाज-सेवा और मानव-सेवा ही अुनका कार्यक्षेत्र था। फिर भी भावनगर राज्य प्रजा-परिषद् जैसी राजनैतिक सस्थाके अध्यक्षपद सम्बन्धी प्रस्तावको स्वीकार किया, असकी तहमे दो कारण थे।

अेक तो वे स्वय भावनगर राज्यके निवासी थे। और राज्यके वतनीकी हैसियतसे अुन्हे धर्मका पालन करनेको कहा जाय, तो अुससे अिनकार नही किया जा सकता था। दूसरे, जो लोग भावनगरमे प्रजा-परिषद्का काम सभाल रहे थे, अुनके साथ बापाका वर्षो पुराना सम्बन्ध था। खास तौर पर परिषद्के कार्यकारी मत्री श्री बलवन्तराय महेताको वे बहुत समयसे जानते थे और कुछ ही समय पहले बिलीमोरामे हुअे बडोदा राज्य प्रजामडलके अधिवेशनके समय अुनके सीधे सम्पर्कमे आये थे। ठक्करबापाको वे अुत्साही, सेवाभावी और कार्यक्षम युवक-कार्यकर्ता मालूम हुअे थे। असलिअे अुनके प्रति बापाको ममता थी। साथ ही देशी राज्योकी प्रजाके अपने दु खदर्द थे। वर्षोसे वह अुपेक्षित और राजनैतिक विकासकी दृष्टिसे पासके ब्रिटिश भारतके लोगोकी अपेक्षा अधिक दबी हुअी थी। और बापा तो दीन-दुखियोके बेली थे, शोषितो और पीडितोके सहायक थे। जहासे भी दु खकी पुकार कानो पर पडती, वही तुरन्त दौड जाना अुनका सिद्धान्त था। असलिअे जब भावनगर राज्य प्रजा-परिषद्के महुवा अधिवेशनका अध्यक्षपद स्वीकार करनेके लिअे मत्रियोकी ओरसे अुन्हे अनुरोध किया गया, तब बापा अुनकी प्रार्थनाको अस्वीकार न कर सके। अलबत्ता अध्यक्षपद स्वीकार करनेमे

शुरूमें तो अुन्होंने आनाकानी की और सूचित कर दिया कि भावनगरकी राजनीतिके बारेमें मैं कुछ नही जानता, अुसके भीतरी प्रवाहोंको नही समझता, अिसलिअे मेरे बजाय और किसी अधिक अनुभवी और जानकारको चुनेंगे तो अच्छा होगा। पर बादमें जब अिसी पदके लिअे अुनसे आग्रह किया गया, तो बापा अिस प्रार्थनाको अस्वीकार न कर सके। जवाबमें बलवतराय महेताको सूचित किया कि दो शर्तों पर मैं परिषद्का अध्यक्षपद स्वीकार करनेको तैयार हू। अेक तो परिषद् होनेसे पहले मैं भावनगर राज्यके कुछ गावोंका दौरा करके अुन्हें स्वय देख लू और अुनके प्रश्नोंका खुद अध्ययन कर लू, तथा अिसके लिअे सफरकी सारी व्यवस्था की जाय, दूसरे, अध्यक्षका भाषण भी आप तैयार कर दे।

परिषद्के मत्री श्री बलवतराय महेताने ये दोनो शर्तें स्वीकार की। अधिवेशनके थोडे दिन पहले बापा भावनगर आये। भाषण मागा। बलवतराय महेताने यह सोचकर भाषण लिखा नहीं था कि बापाके आने पर मुख्य मुद्दों पर अुनके साथ बैठकर चर्चा करनेके बाद लिखूगा। परतु बापाने तो अुसी वक्त माग की, अिसलिअे अुसी रात जागरण करके श्री बलवतराय महेताने भाषण लिख डाला। दूसरे दिन बापाने अुसे पढ लिया। अुसमें अेक दो मुद्दे छूट गये थे, जो अुन्होंने जोड दिये। खास तौर पर अुस समयके भावनगर राज्यकी नाबालिगी शासन-कौंसिलके अध्यक्ष सर प्रभाशकर पट्टणी समय समय पर राज्य और प्रजाके सबधकी बाप-बेटके सबधसे जो तुलना किया करते थे, अुसकी बापाने अपने भाषणमें कुछ आलोचना की।

अिसके बाद निश्चित कार्यक्रमके अनुसार ठक्करबापाको भावनगर राज्यके राजुला, लीलिया और अुमराला महालके गावोंमें तीन दिन भ्रमण कराया। वे आठ-दस गावोंमें घूमे। वे जहा जाते वहा सभाकी पहलेसे ही व्यवस्था कर ली जाती। लोग भी काफी सख्यामें अुपस्थित होते। अिस सबका असर ठक्करबापाके मन पर बहुत अच्छा हुआ। अुन्हें लगा कि भावनगरके कार्यकर्ता सिर्फ बाते ही नही बनाते, बल्कि काम भी अच्छा कर रहे है। अिन दिनोंमें वे भावनगर राज्यके किसानो, व्यापारियो, कार्यकर्ताओ और विद्यार्थियोंके सीधे ससर्गमें आये। राज्यके अनेक प्रश्नो, दावपेचो और कठिनाअियो वगैरासे परिचित हुअे।

अिधर परिषद् सबधी तमाम तैयारिया हो चुकी थी। १९२६ के मअी मासकी १२ तारीखको महुवामें परिषद् हुअी। मालण नदीके विशाल पाट पर अमराअीमें मडप बनाया गया था। वहा अुसका अधिवेशन हुआ। अुसमें किसान, प्रतिनिधि और दर्शक अच्छी सख्यामें अुपस्थित हुअे। बाहरसे भी बहुत

लोग आये थे। परिषदके अध्यक्ष श्री ठक्करबापाके साथ 'सौराष्ट्र' पत्रके संचालक और अुस समयके देशी राज्योंके राजनैतिक आन्दोलनके नेता श्री अमृतलाल सेठ, श्री अब्बास तैयबजी, श्री रामदास गांधी वगैराने अुपस्थित होकर परिषद्में चेतना और अुत्साह भरा था। अिसके सिवाय महात्मा गांधी, डॉ० सुमंत महेता, 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के सम्पादक श्री सैयद अब्दुल्ला ब्रेलवी, श्री देवचंद अुत्तमचंद पारेख, काठियावाडकी स्थायी सेनाके सरदार श्री फूलचन्द कस्तूरचंद शाह, श्री मोहनलाल मोतीचंद, कवि श्री नानालाल, श्री गिरजाशंकर त्रिवेदी वगैराके परिषद्की सफलता चाहनेवाले और अुसके प्रति सहानुभूति प्रगट करनेवाले संदेश आये थे। गांधीजीने अपने संदेशमें कहा था

"परिषद्ने अछूतों और भीलोंके गुरु अमृतलाल ठक्करको अध्यक्ष चुनकर अपनी ही अिज्जत बढाअी है। मैं आशा रखता हूं कि अैसी परिषद्में जिस खादीके जरिये सैकडों अछूत भाअी अीमानदारीसे रोजी कमाते हैं और जिसके द्वारा भूखसे पीड़ित अनेक बहनें अपनी लाज कायम रखकर भी कुछ आने कमा सकती हैं, अुस खादीको स्थान मिलेगा और अस्पृश्यताका जो मैल हिन्दूधर्ममें घुस गया है वह धुल जायगा।"

स्वागताध्यक्ष सेठ श्री हरिलाल मोहनलाल नगरसेठने भी अपने व्याख्यानमें भावनगर राज्यके विविध प्रश्नोंकी चर्चा की। परिषद्के सभापति श्री अमृतलाल ठक्करकी सेवा-भावना और कार्यदक्षताको अंजलि अर्पित की। अुनके जैसे सेवाजीवनके महारथी, साधुचरित, धुरंधर प्रजासेवक नेताके मिलने पर धन्यता अनुभव की और अुनके नेतृत्वमें अच्छे समाज-सेवक जुटाकर अुनका संगठन करके काम करनेकी आशा व्यक्त की।

अिसके बाद ठक्करबापाने अध्यक्षकी हैसियतसे अपना व्याख्यान पढा।

अध्यक्षके नाते श्री ठक्करबापाने जो भाषण दिया, अुसमें भावनगर राज्यके छोटे बडे तमाम प्रश्नोंको ले लिया। खेती संबंधी प्रश्नों, शहरों और देहातके प्रश्नों, प्रजा-प्रतिनिधि सभाके अधिकारोंको विस्तृत करनेसे संबंध रखनेवाले प्रश्नों, अस्पृश्यता-निवारण और खादीके प्रश्नों, चमडा-कर और अिजारेके प्रश्नों तथा वेगारके प्रश्नोंकी छानबीन की। अुन्होंने भावनगर राज्यकी शासन नीतिको प्रतिक्रियावादी कहकर कौंसिलके अध्यक्ष सर प्रभाशंकर पट्टणीके प्रबंधकी मर्यादित किन्तु स्पष्ट आलोचना की। अितना ही नहीं, सर प्रभाशंकर पट्टणी राज्य और प्रजाके संबंधको जो बाप बेटेका संबंध बताते थे, अुसका असली स्वरूप दिखाकर अिस बातकी पोल खोलनेकी भी

हिम्मत दिखाअी। बेगार और जकातके प्रश्नके प्रति न्याय करके अैसे अन्यायपूर्ण रीत-रिवाजोको मिटानेकी स्पष्ट हिमायत की और मकान-करकी भी कडी निन्दा की। अुनके सारे भाषणमे तथ्योकी निश्चितता, राज्यके अलग अलग विभागोका बारीकीसे किया गया अध्ययन और स्पष्ट मतप्रदर्शन स्थान स्थान पर दिखाअी देता है।

परिषद्की अिस बारकी कार्रवाअी, अध्यक्षके भाषणमे अिस्तेमाल की गअी अति विवेकपूर्ण भाषा, प्रार्थनाके रूपमे पास किये गये बहुतसे प्रस्ताव और डरते डरते की जानेवाली आलोचनाअे वगैरा देखकर आज हसी आती है। छोटे छोटे मामूली सुधार करानेके लिअे और हल्केसे हल्के प्रस्तावोका अमल करानेके लिअे अस समयके अुग्रसे अुग्र माने जानेवाले कार्यकर्ताओको भी 'माननीय दरबारश्रीसे 'प्रार्थनाके' रूपमे ही प्रस्ताव पास करने पडते थे। अितना ही नही, जहा भी अैसी परिषद् होती, वहा जो लोग भाग लेते अुनमे से किसी भाअीसे कोअी कडा शब्द भूले भटके अिस्तेमाल हो जाता तो वह दो खुशामदके शब्दप्रयोग करके अुसकी क्षतिपूर्ति कर देता था। परतु अिन सबका कारण अुस समयका निरकुशता, जुल्म और खुशामदसे भरा हुआ वातावरण था। लोगोके दिलमे राज्यसत्ताका डर था। सौराष्ट्रके २०२ छोटे बडे रजवाडोमे से अेक दो अपवादोको छोडकर बाकीमे निरकुशताका ही बोलबाला था। राजकोट, भावनगर जैसे गिनतीके राज्योको छोड दे, तो समस्त सौराष्ट्रमे नागरिक स्वातन्त्र्यका नामोनिशान भी नही था। और भावनगर जैसे राज्यमे भी वह मर्यादित मात्रामे ही था। सौराष्ट्रके बित्ते जितने छोटेसे राज्यमे भी कोअी परिषद् करनी हो, अरे साधारण सभा करनी हो तो भी पहलेसे राज्यकी मजूरी लेनी पडती थी। अुस समयकी प्रजाशक्तिका अदाजा लगाकर खुद गाधीजी और सरदार पटेल जैसोने भी अलग अलग देशी राज्यो और अुनके राजाओके साथ पहलेसे कुछ समझौता करके सभा करनेका तरीका अपनाया था।

अिस भूमिकाको नजरमे रखकर यदि हम ठक्करबापाका भाषण देखे और सत्यके प्रकाशमे अुसका मूल्याकन करे, तो कहा जायगा कि ठक्कर-बापाने अध्यक्षके रूपमे बहुत निडर और ठोस काम कर दिखाया।

राज्यके अूचेसे अूचे अधिकारीके प्रभाव और रोबसे दबे बिना पूरी तरह विनय और विवेक रखकर भी भावनगर राज्यकी नीति और प्रबधमें कहा दोष थे, दीवान साहब कहा भूल कर रहे थे और आयदा अिन दोषो और भूलोका निवारण करनेके लिअे क्या क्या हो सकता है, यह सब अुन्होने मित्रभावसे बताया था। प्रजाकी भूले भी अुन्होने अुतनी ही

निडरतामें बताओ थी। अुन्होंने अिस बात पर जोर दिया था कि जब तक प्रजा अपनी भूलें और दोष दूर न करे, डर और आलस्यको तिलांजलि नहीं दे, अपने ही भाअियोंके प्रति किये जानेवाले अन्याय न मिटाये, अस्पृश्यताको दूर न कर दे और खादीको न अपनाये, तब तक सच्ची प्रगति या अुन्नतिकी आशा नहीं रखी जा सकती।

परिषदमें १५–१६ प्रस्ताव पास हुअे। अुनमें प्रजा-प्रतिनिधि सभा और अुसकी कार्य-दिशा विस्तृत करने, मुफ्त प्राथमिक शिक्षाका प्रबंध करने, बेगारकी प्रथा अुठा देने, चमडा-करके अिजारे बन्द करने, महालोंकी म्युनिसिपैलिटियोंके प्रबंधके लिअे खर्चकी पूरी व्यवस्था करने, और पानीकी योजनाअें हाथमें लेनेके बारेमें दरबारसे प्रार्थना करनेवाले अधिकांश प्रस्ताव अध्यक्षपदसे ही पेश हुअे थे।

अिस प्रकार बापाकी अध्यक्षतामें परिषद्‌का काम बहुत सरलतासे पूरा हुआ। अिसके बाद आखिरी प्रस्तावके मुताबिक अध्यक्ष श्री अमृतलाल ठक्कर, अुपाध्यक्ष तथा मंत्री आदि सहित आठ आदमियोंका शिष्ट-मंडल परिषद्‌में पास हुअे प्रस्ताव दरबारके सामने रखनेके लिअे राज्यकी कौंसिलके अध्यक्ष श्री प्रभाशंकर पट्टणीसे मिलने गया। अुसका वर्णन शिष्ट-मंडलके अुस समयके अेक सदस्य और कांग्रेसके वर्तमान मंत्री श्री बलवंतराय महेताने अिस प्रकार किया है

"दीवान श्री प्रभाशंकर पट्टणीको अिस परिषद्‌में जो कुछ कार्रवाअी हुअी वह पसन्द नहीं आअी थी। फिर भी वे ठक्करबापा जैसे मानव-सेवकसे, जो भारत-सेवक-समाजके सदस्य थे और मानी हुअी नरम राजनीतिवाली सामाजिक संस्थाके काममें लगे हुअे थे, मिलनेमें तो अिन्कार कैसे कर सकते थे? अिच्छा या अनिच्छासे अुन्होंने मिलनेका समय दिया। तदनुसार शिष्ट-मंडल मिलने गया। ठक्करबापाने सारे प्रस्ताव पेश किये। अेकके बाद अेक सवालकी चर्चा हुअी। बेगार, रिश्वतखोरी, 'तोबकडा' (अेक तरहका अति-रिक्त भूमिकर), चमडा-करका अिजारा, निकासीकी जकात वगैरा अुठ जाने चाहियें, अैसी मांग सदस्योंकी तरफसे पेश हुअी। चर्चामें दीवान श्री प्रभाशंकर पट्टणीने अुद्धतता दिखाअी। यह चीज असंभव है, यह नहीं हो सकती, यह मैं नहीं करूंगा, वगैरा अुनका नन्ना चलता रहा और अुन्होंने अैसा अकडा हुआ रवैया दिखाया मानो वे मुद्देकी चर्चा ही करनेको तैयार न हों। बापाको तो जैसे सिरसे पैर तक आग लग गअी। अुनका चेहरा गुस्सेसे लालसुर्ख हो गया। हमें क्षणभर अैसा लगा मानो ज्वालामुखी फट पडेगा। परंतु

अुस दिन अुन्होने खूब आत्मसयम रखा और वे कुछ नही बोले। मुलाकात पूरी करके बाहर निकले, तब ठक्करबापाने पट्टणी साहबके आदमीसे कहा, 'पट्टणी साहबसे कह देना कि अुन्होने जिस ढगका रवैया अख्तियार किया है, वह अच्छा नही है। और आयदा मैं कभी अुनसे मिलने नही आअूगा।' यह सन्देश जब पट्टणी साहबके पास पहुचा, तब शायद अुन्हे भी पछतावा हुआ होगा या बादमे अपनी भूलका भान हुआ होगा। अिसलिअे अुन्होने बापाके लिअे शामको खास तौर पर आदमी और गाडी भेजकर अुन्हें मिलने बुलाया। अुस समय पट्टणी साहबको जो कुछ कहना था दिल खोलकर कहा। अुन्होने बापाको शान्त करनेका प्रयत्न किया, परिषद्मे की गअी मागोमे से वेगार अुठा देनेकी माग स्वीकार की और दूसरे मुद्दोके सबधमे अुदारतासे विचार करनेको कहकर ठक्कर साहबको मना लिया।

"अिस मुलाकातके बाद बापाको थोडा सतोष हुआ कि चलो, अितना काम तो निपटा।"

आम तौर पर हमारे यहा परिषदोमे यह होता था कि परिषद्के लिअे चुने हुअे अध्यक्ष तीन दिन तक अर्थात् परिषद्की बैठकके होते रहने तक अुसका कामकाज सभालते, भाषण देते और प्रस्ताव पास करते, परतु फिर बारह महीनो तक अुनकी प्रवृत्ति ठडी हो जाती। वे किसी परिषद्के अध्यक्ष है, यह बात भी लगभग भूल जाते। परतु ठक्करबापाकी बात अलग थी। भारत-सेवक-समाज और गाधीजी दोनोके असरमे रहकर अुन्होने बहुत सीखा था, अिसलिअे परिषद् खतम होनेके बाद भी पत्रव्यवहार द्वारा अुन्होने परिषद्के साथ सबध कायम रखा। अितना ही नही, वे हर दो महीनेमे भावनगर राज्यके तालुको और महालोमे अुन प्रदेशोके कार्यकारिणी समितिके सदस्योको साथ लेकर देहातका दौरा करते, अुनके प्रश्न समझते, लोगोकी शिकायते और दुखदर्द सुनते और अुनका निवारण करनेका प्रयत्न करते। अिस प्रकार अेक दो बार बापा भावनगर राज्यके दौरे पर आकर बैलगाडीमें देहातमे घूमे। परतु बादमें दूसरे कामोका दबाव अितना अधिक रहा कि अिच्छा होते हुअे भी वे अधिक प्रवास नही कर सके। फिर भी अुन्होने पूरे साल भावनगर राज्यके प्रजा-परिषद्के अध्यक्षकी हैसियतमे पूरी पूरी जिम्मेदारी निभाअी और राज्यके लोगोके लिअे जी-तोड काम किया। राज्यके शासनकर्ताओंसे मिलकर, अुनके साथ सिरपच्ची करके लोगोकी कुछ शिकायते दूर कराअी और अैसा वातावरण पैदा करनेकी कोशिश की, जिसमे साधारण प्रजाको शासनका भार यथासभव हल्का महसूस हो।

२

भावनगर राज्य प्रजा-परिषद्के अध्यक्षके रूपमें ठक्करबापाने जो काम किया, अुससे वे काठियावाडके देशी राज्योंके प्रमुख कार्यकर्ताओंके बडे घनिष्ठ सम्पर्कमें आये। यह संबंध अध्यक्षपदका अेक वर्ष पूरा होने पर वहीं खतम नहीं हो गया, परंतु आगे भी जारी रहा और दिन दिन अधिकाधिक दृढ होता गया। अिस बीच काठियावाड राजनैतिक परिषद्का चौथा वार्षिक अधिवेशन पोरबन्दरमें करना तय हो चुका था। अिसके लिअे अध्यक्ष किसे चुना जाय, यह सवाल था। जिसके लिअे तीसरी राजनैतिक परिषद्के अध्यक्ष महात्मा गांधी, मंत्रियों तथा कुछ अन्य सदस्योंकी अेक अुपसमिति बनाअी गअी थी। अुसमें मंत्रियोंकी हैसियतसे श्री देवचंद अुत्तमचंद पारेख और श्री फूलचंद कस्तूरचंद शाहके सिवाय श्री अमृतलाल सेठ, श्री मणिलाल कोठारी, श्री बलवंतराय महेता वगैरा भी थे। अिस अुपसमितिकी अेक बैठक ता० ३०–११–'२६ को साबरमती आश्रम अहमदाबादमें हुअी थी। अध्यक्षके स्थान पर गांधीजी थे। चर्चा और विचारके बाद सबने ठक्कर-बापाको अध्यक्ष चुन लिया और यह तय किया कि १९२७ के मार्च मासमें परिषद् की जाय। परंतु अुस समय पोरबंदरमें प्लेग फैला हुआ होनेके कारण १९२७ में अधिवेशन नहीं हो सका। अतः १९२८ की जनवरीमें ता० २०, २१ और २२ के तीन दिन अधिवेशनके लिअे तय किये गये।

ठक्करबापा जैसे अराजनैतिक पुरुषके सिर पर परिषद्के अध्यक्ष-पदका मुकुट रखनेके निश्चयकी तहमें खास कारण थे। सौराष्ट्रमें अुस समय देशी राज्योंकी प्रजाके दुःखदर्द दूर करनेकी जो लोग कोशिश करते थे और प्रजाके नाम पर अुसकी तरफसे लडनेका दावा करते थे, वे श्री अमृतलाल सेठ और अुनकी मंडली तथा अुनके विचारोंके साथ मेल रखनेवाले कुछ और कार्यकर्ता देशी राज्योंके प्रश्नों और अुनके हलके बारेमें कांग्रेससे भिन्न विचार रखते थे। ये विचार बाहरसे अुग्र दिखाअी देते थे, लेकिन अुन्हें अमलमें लानेका कार्यक्रम सुरक्षित स्थान पर रहकर सभाअें, भाषण और अखबारी प्रचार करनेके अलावा आगे नहीं बढता था। साथ ही श्री अमृतलाल सेठ और अुनके साथी व्यक्तिगत रूपमें कितने ही अुग्र विचार रखते हों और अिसके लिअे राजाओंके मनमाने शासनके विरुद्ध पूरा जोश दिखाते हों, तो भी देशी राज्योंकी जिस प्रजासे अुन्हें काम लेना था वह बिखरी और दबी हुअी पडी थी। अपनी शक्तिका भी अुसे पूरा भान नहीं था। अुसमें राज्यके विरुद्ध सिर अुठाने लायक हिम्मत और संगठन-शक्ति पैदा करनी बाकी थी। देशी

राज्योकी सरहदके बाहर रहकर देशी राज्योके प्रजाके ये नेता राजाओके जुल्मो और निरकुशताकी क्रूर कहानिया प्रगट करके दुनियामे अुनका ढिढोरा पीटते थे। यह कार्य कितना ही आकर्षक लगता हो, अुससे जुल्मोकी चक्कीमे पिसती हुअी प्रजाकी भावनाको अपनी तरफ खीचा जा सकता हो, तो भी अुससे देशी राज्योकी प्रजाके मूलभूत दुख दूर नही हो सकते थे। यह बात गाधीजीने, जिनका समस्त भारतकी राजनीति पर पूर्ण प्रभाव था, स्पष्ट रूपसे समझ ली थी। काठियावाड राजनैतिक परिषद्की अध्यक्षता अेक वर्ष तक सभालनेके बाद तो अुनका यह विचार और भी स्पष्ट हो गया था। अुन्होने देख लिया था कि देशी राज्योकी प्रजाके दुखदर्द कोअी स्वतत्र दुख-दर्द नही थे। वे तो भारत पर ब्रिटिश सत्ताके अन्यायी आधिपत्यके ही अेक अगके रूपमे अस्तित्व रखते थे। अिसलिअे जब तक भारत परसे ब्रिटिश सत्ता न अुठ जाय, तब तक अलग अलग देशी राज्योके प्रश्नोके लिअे अुन राज्योमे लडाअी-झगडे पैदा करके अुनको हल नही किया जा सकता था। गाधीजीकी और अुनके नेतृत्वमे काम करनेवाली काग्रेसकी नीति ब्रिटिश भारत और देशी राज्य दोनोमे रचनात्मक कार्यो द्वारा जनशक्ति पैदा करके और अुसे सगठित करके अुससे ब्रिटिश सत्ताका मुकाबला करानेकी थी। देशी राज्योकी दबी हुअी और बिखरी हुअी प्रजा पूरी तरह सगठित होने से पहले राजाओसे टक्कर ले और सीधी लडाअीमे फस जाय और परिणाम-स्वरूप निरकुश सत्ताका पहला हमला होते ही दब जाय, अिस प्रकारके अुग्र आन्दोलनको वे देशी राज्योमे मजूरी नही देते थे। वे मानते थे कि देशी राज्योमे जागृति लानेके लिअे प्रजा अपनी सारी शक्ति रचनात्मक कार्योमे ही मर्यादित रखे। अिसलिअे अिन दो विचारधाराओके बीच हमेशा सघर्ष बना रहता था। केवल ठक्करबापा ही अैसे दोनो विचारप्रवाह रखनेवाले तत्त्वोके बीच सन्तुलन कायम रखकर अुस समयके काठियावाडके सार्वजनिक जीवनको आगे बढा सकते थे। विचारोमे अुग्र मतवादी नौजवानोके दिलकी आकाक्षाओकी वे कद्र करते थे और अुनका अुत्साह बढाकर अुन्हे गाधीजीके कार्यक्रममे विश्वास रखनेको प्रेरित करते थे और दूसरी ओर काठियावाडमे राजनैतिक जागृति लानेके लिअे रचनात्मक कार्यक्रम पर ही विशेष जोर देते थे।

अैसी परिस्थितिमे गाधीजीकी सूचना और सलाहसे अुन्होने काठियावाड राजनैतिक परिषद्के चौथे अधिवेशनकी अध्यक्षता स्वीकार की। भावनगरका राजनैतिक अधिवेशन होनेके तीन वर्ष बाद पोरबन्दरमे अिस परिषद्की बैठक हो सकी। और वह भी महात्माजीकी विचारसरणी ओर नेतृत्व अुस समयके

परिषद्के नेताओंने स्वीकार किया, अिसी कारण पोरबन्दरमें यह परिषद् करना सभव हुआ था।

अधिवेशनके दिन परिषद्के अध्यक्ष श्री ठक्करबापा सुबह ही पोरबदर आ पहुचे थे। पहलेसे दी हुअी सूचनाके अनुसार महात्माजी भी अध्यक्षके साथ ही आये थे। अुनके साथ कस्तूरबा, सरदार वल्लभभाअी पटेल, दरबार गोपाल-दास, रानी भक्तिलक्ष्मीबा, गुजरातके वयोवृद्ध नेता श्री अब्बास तैयबजी वगैरा भी आये थे। अिन सब नेताओंका सम्मान करनेके लिअे पोरबदरकी अुत्साहमे पागल बनी हुअी प्रजाने सारे शहरको ध्वजा-पताकाओं और तोरणोंसे सजाया था। रास्तो और चौकोंमे पानीका छिड़काव किया था। और घटो पहलेसे गाडीके आनेकी राह देखती हुअी लोगोंकी भारी भीड स्टेशनके प्लेट-फार्म पर और स्टेशनके बाहर खडी थी।

२० तारीखको सुबह जब गाडी पोरबन्दर स्टेशनके प्लेटफार्म पर पहुची, तब महात्मा गाधीकी जय, भारत माताकी जय, ठक्करबापाकी जय आदि जय-घोषोंसे जनताने सारा स्टेशन गुजा दिया था। अुसके बाद गाधीजी, अध्यक्ष ठक्करबापा और अन्य नेताओंको फूलमालाअे पहनाअी गअी। लोगोंकी अत्यत भीडके कारण गाधीजीको पोरबदरसे पहलेके स्टेशन पर ही अुतार कर मोटर द्वारा सीधे निवासस्थान पर ले जानेकी स्वागत-समितिने व्यवस्था कर रखी थी। परतु गाधीजीने अैसा करनेसे अिन्कार कर दिया और अध्यक्ष महोदयका स्वागत हो जानेके बाद ही जानेकी अिच्छा प्रगट की थी। अिसलिअे वह कार्यक्रम बदल दिया गया था। गाधीजी डिब्बेसे बाहर निकले। अुनके पीछे कस्तूरबा, अुनके पीछे परिषद्के अध्यक्ष ठक्करबापा, अब्बास तैयबजी, श्री वल्लभभाअी पटेल, अिमाम साहब, दरबार गोपालदास, रानी भक्तिलक्ष्मीबा, साध्वी मीराबहन, महादेव देसाअी, प्यारेलालजी और कुमारी मणिबहन पटेल वगैरा अुतरे और लोगोंकी भीडके बीचसे मार्ग करके स्टेशनसे बाहर निकले। अिधर गाधीजीको मोटरमे राज्यके अतिथिगृहमे ले जाया गया। अुधर कार्यकर्ताओंने अध्यक्ष महोदयको आगे करके जुलूस निकाला। अध्यक्ष महोदयके दर्शनोंके लिअे पोरबदरके विशाल रास्तोंके दोनो ओर लोगोंकी भीड लगी हुअी थी। शहरमे प्रवेश करते ही गली-गली और चौराहे-चौराहे पर स्त्रियों, बच्चो, व्यापारियो, विद्यार्थियो और अन्य प्रजाजनोंने अध्यक्ष महोदयके दर्शनके लिअे अेक-दूसरे पर गिरना शुरु कर दिया। जगह-जगह जुलूसको ठहराकर अध्यक्ष महोदयको फूलमालाअे पहनाअी गअी। मुख्य रास्तो और गलियोंमे घूमकर लगभग दो बजे जुलूस समाप्त हुआ। अुसके बाद ठक्करबापाको अध्यक्षके निवासस्थान पर ले जाया गया।

परिषद्का कामकाज शामको चार बजे शुरू हुआ। अिससे पहले ही सारा मडप झालावाड, गोहिलवाड, सोरठ, हालार वगैरा प्रान्तोके भिन्न भिन्न देशी राज्योकी प्रजाके लगभग ४५० प्रतिनिधियो और शहर तथा गावोसे आये हुअे हजारो दर्शकोसे खचाखच भर गया था। अुनमे देहातसे आये हुअे लगभग २,००० किसान भाअी और मेर लोग खास तौर पर ध्यान आकर्षित करते थे। बहनोके लिअे अलग जगह रखी गअी थी। ठीक चार बजे गाधीजी, ठक्करबापा और अुनके साथके सब लोग सभामडपमे आ पहुचे थे। लोगोने जयघोषसे अुनका स्वागत करके सारे सभामडपको गुजा दिया। अिसके बाद थोडी देरमे ही शाति फैल गअी और परिषद्का कामकाज शुरू हुआ।

राजकोटकी राष्ट्रीय पाठशालाके विद्यार्थियोने अीश्वरस्तुति तथा मातृभूमिका प्रशसागीत गाकर मगलाचरण किया। स्वागताध्यक्ष श्री देवीदास लक्ष्मीचद घेवरियाने अपना व्याख्यान पढकर सुनाया और बादमे अध्यक्ष महोदयको सुनहरी चन्द्रक पहनाया। अिसके बाद भारतकोकिला श्री सरोजिनी नायडू और अन्य देशनेताओके परिषद्की सफलता चाहनेवाले सदेश पढे गये।

सन्देशवाचन पूरा होनेके बाद ठक्करबापा अपना अध्यक्षीय व्याख्यान पढने खडे हुअे, तब सभाजनोने हर्षनाद और जयघोषसे अुनका स्वागत करके अपूर्व सम्मान किया। अुसके बाद दूसरे ही क्षण शाति स्थापित होने पर अुन्होने धीर गभीर वाणीमे तीस पन्नोका अपना लम्बा व्याख्यान पढना शुरू किया।

प्रारम्भमे ही बापाने अपनी स्वभाव-सहज विनम्रता प्रगट करके कहा “समाजमे नीचा दर्जा रखनेवाली भील और अछूत जातियोके गाढ परिचयमे रहनेवाले, ज्यादासे ज्यादा थोडा बहुत शिक्षा और समाज-सेवाका काम करनेवाले और अपने लिअे कोअी दूरका अगम्य कोना ढूढ लेनेवाले मुझे आपने राजनैतिक परिषद्का अध्यक्षपद दिया है, यह जब मैंने अिस शहरके भाअी कालीदास गाधीसे पहले-पहल सुना, तब मुझे यह खयाल हुआ था कि कुछ न कुछ भूल हो रही है। राजनैतिक क्षेत्रमे न अुतरे हुअे, अुसकी अुलझनोको सुलझानेकी आदत न रखनेवाले और राजनीतिज्ञता शब्दमे जिन सद्गुण-दुर्गुणोका समावेश होता होगा अुनसे अलिप्त रहनेवाले अेक आदमीको आपने याद करके पचमहालके पहाडी प्रदेशसे पकड लिया। अिसके पीछे आपका अुद्देश्य क्या होगा, अिसके बारेमे तर्कवितर्क करनेका साहस मैं नही करता। परन्तु स्व० लोकमान्य गोखले साहबकी भारत-सेवक-समाज जैसी

राजनैतिक संस्थाका मैं अेक आजीवन सदस्य हूं, अिस अेक बातके सिवाय परिषद्के अध्यक्षकी योग्यता मुझमें है, यह मेरे प्रति बहुत ज्यादा पक्षपात रखनेवाले मित्र भी नहीं कह सकेंगे।

"मुझे भय है कि जिस पद पर पूज्य और जगद्विख्यात गांधीजी किसी समय विराजे थे, अुस पदको मैं कैसे सुशोभित कर सकूंगा। साथ ही सन् १९०० के बाद तो मैं नाममात्रका ही काठियावाड़ी रहा हूं। काठियावाड़के राजनैतिक प्रश्नोंसे भी मैं ज्यादातर नावाकिफ हूं। काठियावाड़के दुःखदर्दोंसे, किसानोंकी मुश्किलोंसे और अछूत जातियोंको सहनी पड़ रही मुसीबतोंसे मैं अपरिचित हूं, तो फिर राजा-प्रजाके गाढ़ सम्पर्कमें तो आ ही कैसे सकता हूं? फिर भी मैं आपका हूं। काठियावाड़में जन्मा हूं, पला हूं और 'सरल सौराष्ट्रवासी' होनेका अभिमान रखता हूं। अिसीसे आप सब भाअियोंने मेरे प्रति जो पक्षपात बताया है अुसके लिअे मैं आप सबका ऋणी हूं।

अिस प्रकार ऋण स्वीकार करनेके बाद ठक्करबापाने पोरबन्दर राज्यके पुराने संस्मरण याद करके मृत्युको प्राप्त हुअे भावनगरके साथी कार्यकर्ता सेठ नरोत्तम भाणजीको श्रद्धांजलि दी और बादमें परिषद्के ध्येय और कार्यक्रमके विषयमें अेकके बाद अेक मुद्देकी छानबीन की। काठियावाड़के देशी राज्योंमें राजा-प्रजा दोनोंके अुत्कर्षके लिअे जिम्मेदार शासन-तन्त्रकी जरूरत बताते हुअे कहा, "हमारी परिषद्ने देशी राज्योंमें जिम्मेदार शासन-प्रणाली जारी करनेका ध्येय पहली ही बैठकमें स्वीकार किया है। मैं मानता हूं कि जिम्मेदार राज्यतंत्रकी शासन-पद्धति राज्यसंस्थाकी रक्षाके लिअे मजबूतसे मजबूत किलेबन्दी है। जो राजा या दीवान यह दीर्घ दृष्टिवाली राजनीति अंगीकार करेंगे, अुनका आनेवाला समय स्वागत ही नहीं करेगा, बल्कि अुनकी संतानें अुनकी स्तुति करेंगी। मैसूर, त्रावणकोर-कोचीन और औंध जैसे राज्य धन्य हैं, जो राज्यसंस्थाके अिस परम हितकारी मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। काठियावाड़में भी माननीय राजकोट नरेशने विशाल मताधिकार पर बनी हुअी प्रजा-प्रतिनिधि सभा स्थापित करके अुसे प्रश्न पूछने, प्रस्ताव पेश करने, आमद-खर्चका अन्दाज तैयार करने, कानून पास करने और अिस प्रकारके अुदार अधिकार प्रदान किये हैं जिनसे राज्यतंत्रको प्रजाके प्रति अपनी जिम्मेदारीका सतत भान रहे। अिसके लिअे मैं अुन्हें बधाअी देता हूं।

"वांकानेरके राजासाहब और भावनगरके स्व० महाराजा साहबने भी प्रजा-प्रतिनिधि सभाके सम्बन्धमें प्राथमिक कदम अुठाकर जमानेकी जरूरतको स्वीकार किया है। परन्तु अब तो दोनों सभाओंका विकास होना बहुत जरूरी है।"

नागरिक स्वतत्रताके प्रश्नकी समीक्षा करते हुअे अुन्होने वताया कि, "देशी राज्योकी प्रजाकी तुलनामे काठियावाडके केवल दो-चार राज्योमे ही सार्वजनिक जीवन विकसित हो रहा है। व्यक्ति-स्वातत्र्य सार्वजनिक जीवनका प्राण है। अर्थात् कानूनकी मर्यादामे रहकर राज्यका प्रत्येक प्रजाजन लोक-जागृतिकी हलचल कर सकता हे। जिस राज्यमे अिस अीश्वरीय वरदानका सपूर्ण अुपभोग नही करने दिया जाता, अुसे पिछडा हुआ माना जाता है। अपनी प्रजामे से भीरुता, चुगलखोरी, खुशामद और षड्यत्रबाजीके दूषण मिटाकर अुसमे निर्भय और विनयशील मनुष्यत्वका विकास करना हो, तो प्रजाको नागरिक स्वतत्रताके अधिकार देने पडेगे।

"सार्वजनिक जीवनको प्राणवायु देनेवाले तत्त्व ये है—सभा तथा सस्थाकी स्वतत्रता, जान और मालकी स्वतत्रता, वाणीकी स्वतत्रता, लेखनकी स्वतत्रता और अखबार छापने-मगानेकी स्वतत्रता। ये सब तो मानवजातिके प्रारम्भिक अधिकार है। ये बच्चेके लिअे माके दूध जेसी वस्तुअे है। अिनका दुरुपयोग हो तो भारतीय फौजदारी कानूनमे दण्ड देनेकी सत्ता है। अितने पर भी आज अिनमे से अेक या दूसरी या सभी स्वतत्रताओके विरुद्ध खास तौर पर प्रतिबध लगा दिया गया है। मित्रोको याद होगा कि कुछ वर्ष पहले मेरे जैसे अहानिकर मनुष्यको भी खादी ओर मदिरा-निषेधका काम करते करते अेक समर्थ राज्यकी पुलिसके हाथो कष्ट सहन करना पडा था। अिसके सिवाय, कुछ देशी राज्योके भीतर स्वय न्यायमदिरमे भी अभियुक्तको न्याय प्राप्त करनेके साधनोसे जबरन् वचित रखा जाता है। कानूनकी सपूर्ण पदवी प्राप्त वकीलोको भी अुनका किसी भी प्रकारका अपराध बताये बिना सनदे न मिल सकी और अिसके फलस्वरूप अभियुक्तोको अिन्साफकी छानबीनके बारेमे असन्तोष रहा, यह जानकर तो मुझे हैरत होती है। यह व्यक्ति-स्वातत्र्यका ही नही, परन्तु पवित्र न्यायका भी लोप कहा जायगा।"

अखबारो और सभाओ पर लगाये गये अकुशोका अुल्लेख करते हुअे अुन्होने सौराष्ट्रके देशी राज्यो द्वारा अिस सम्बन्धमे अपनाअी गअी हास्यजनक नीतिका पृथक्करण करके अुसका खोखलापन और व्यर्थता समझाअी

"छापाखानो और समाचारपत्रो पर जगह जगह अनुचित अकुश पाये जाते है। अिससे नये विचारोकी अुत्पत्ति अथवा प्रचार बन्द नही होता — और बन्द नही हुआ हे, यह तो दीये जैसी स्पष्ट बात है। राज्य क्या नही जानते कि अुनके पडोसमे ही अेजेसी और ब्रिटिश भारतकी सीमाये मौजूद है जहा परिषदे हो सकती है, छापाखाने खोले जा सकते है ओर अखबार भी आजादीसे निकलते है? अुन सबमे अुनकी समालोचना तो अुनके प्रतिबधोकी

हसी अुडाते हुअे जारी ही रहती है। अखबारोंका प्रवेश-निषेध कर दिया जाता है तो प्रजा रेलगाड़ीमें अथवा राज्यसे सटकर लगी हुअी सरहदमें जाकर अुसे पढ़ सकती है। तो फिर अिस हवा जैसी चीजके विरुद्ध दरवाजे बन्द करनेमें क्या फायदा है? अिसके बजाय तो युगबलके तत्त्वोंको अुदार हृदयसे स्वीकार करके अुन्हें अपना लेना चाहिये। देशी राज्योंका कोअी भी सरकारी प्रजाजन अपने राजाका सम्मान कायम रखकर संयमी और मर्यादित वाणीमें राज्यतंत्रकी आलोचना करे, तो वह अुलटे राज्यसत्ताके लिअे भूषण-स्वरूप है। राजा-महाराजाओंसे अनुरोध करनेके बजाय मैं खास तौर पर रजवाड़ोंके शासन-प्रबंधकोंसे अनुरोध करता हूं कि अपने भोले नृपालोंको राजद्रोह या असन्तोषकी परछाओंका मायावी भय दिखाकर निर्भयताकी लहरोंको न रोकिये। अुलटे, अुन्हें व्यर्थके डरसे मुक्त करके राजा-प्रजाके बीच विश्वासका वातावरण फैलाअिये।"

काठियावाड़में अुस समय अलग अलग राज्योंमें किसी जगह भाग-बटाजी और किसी जगह बीघोटीकी प्रथा[1] प्रचलित थी। अुसका अध्ययन-पूर्ण अवलोकन करके दोनों प्रथाओंके गुण-दोष बताये। और बादमें अिस बात पर जोर दिया कि किसानोंको जमीनके रहन, बिक्री वगैराके हक मिलने चाहिये।

काठियावाड़की अपढ़ और दबी हुअी ग्रामजनताको कष्ट दे रही बेगारकी प्रथा पर आते हुअे अुन्होंने अुस पर कड़े प्रहार किये। अुन्होंने कहा

"बेगार भी हमारे यहां गुलामीके अेक अन्य अवशेषकी तरह रह गअी है। और सत्ताधीश अुसे अपनी सत्ताके महान चिन्हके रूपमें मिली हुअी अमूल्य वस्तुके तौर पर कायम रख रहे हैं। जिनी परने भारतीय फौजदारी कानूनके कर्ता मैकालेने गुलामी सम्बन्धी धाराओंमें से अन्तकी ३७४ वीं धारा द्वारा कानूनकी पुस्तकमें यह स्थापित किया है कि, "जो भी शख्स दूसरेसे अुसकी मरजीके विरुद्ध गैरकानूनी मजदूरी (बेगार) करायेगा, अुसे अेक साल तककी सादी या सख्त कैदकी सजा दी जायगी या अुस पर जुर्माना किया जा सकेगा अथवा वह कैद और जुर्माना दोनों सजाओंका पात्र होगा।"

यह धारा अुद्धृत करके अुन्होंने बताया कि, "हमारी रियासतोंमें सभी जगह ताजीरात हिन्द लागू होता है, परन्तु अुन्होंने तो अिस धाराको अपनी हदमें से बिलकुल निर्वासित ही कर दिया है। 'यह धारा हमें मान्य नहीं'—अैसी घोषणा अुन्होंने अपने राज्यकी कानूनकी पुस्तकमें कर दी हो,

[1] जमीनके हर बीघे पर कर लगानेकी प्रथा।

अैसा मालूम नही होता। अितने पर भी कौन राजा, कौन तालुकेदार, कौन बडे अफसर बेगार नही कराते? अपने हकके रूपमे अुसे स्थापित नही करते? बेगारके दाम दिये जाते है या नही, यह बडा सवाल नही। मेरी आपत्ति तो बेगारके सिद्धान्तके विरुद्ध है। और ब्यौरेका भी विचार करे तो यह जग-प्रसिद्ध बात है कि कराअी हुअी बेगारके बदलेमे या ली हुअी खाद्य-सामग्रीकी अेवजमें पूरे या थोडे दाम भी शायद ही मिलते है। बेगारके प्रश्नका तात्त्विक दृष्टिसे विचार करे तो भी अुसके समर्थनमे कुछ नही कहा जा सकता। अिस दण्डविधानके — ताजीरात हिन्दके मीमासक सर हरिसिंह गौड कहते है कि, 'किसीको — राज्यको भी — किसी मनुष्यसे अुसकी अिच्छाके विरुद्ध काम लेनेका अधिकार नही।' अैसी हालतमे किसान भर बरसातमे अपने खेतमे हल चला रहा हो तब अुसके हल छुडवाकर अफसर अपनी गाडीमे जोतनेके लिअे बैल ले जाय, अपने लिअे दूधकी जरूरत हो तब लोगोकी भैंसे खुलवाकर अपने तबूके पास बधवाये अेक ताल्लुकेदारके बालकुवरके लिअे धायको भी अपने बच्चेसे जुदा करके बेगारमे ले जाया जाय, तो यह कहे बिना नही रहा जाता कि अैसी बेगार लेनेका अमानुषिक कृत्य करनेवाले पग पग पर फौजदारी जुर्म करते और सख्त कैदके पात्र बनते है। ये अपराध पुलिसके हस्तक्षेपके योग्य (Cognizable) है, फिर भी पुलिस विभाग अुन्हे क्यो दर्ज करने लगा?

"राजा-महाराजाओ तथा अेजेसीके अधिकारियोको अपने अपने अिलाकेमे बेगार अुठा देनी चाहिये। प्रजाजनोसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि वे बेगार करनेसे अिन्कार करके जो दुःख आये अुन्हे सहन करनेको तैयार रहे और अिस गुलामीके रिवाजसे मुक्त हो जानेका साहस दिखाये।"

काठियावाडकी रेलवे और अुसके रद्दी अितजाम पर आते हुअे अुन्होने कहा "पच्चीस लाखकी छोटीसी आबादी पर बीसो शासकोका शासन है। अिस भिन्न भिन्न रचनासे जो सकुचित दृष्टि, जो षड्यन्त्रबाजी, जो सकुचित मन हमारे हो गये है, होते है और भविष्यमे होते रहेगे, अुसी नियमके आधार पर हमारे रेलवे तत्रकी नीतिके परिणाम भी आये है। कुल १,०२८ मीलकी हमारी रेलवे है। अुसमे छ अलग अलग तत्र है — भावनगर, गोंडल, जूनागढ, पोरबदर, जामनगर और बी० बी० सी० आई० रेलवे कपनी। प्रत्येकका अितजाम, मैनेजर और मुसाफिरोके साथ बर्ताव अलग अलग है। भूतकालमे छोटे पैमानेके प्रबध रमणीय मालूम होते होगे, परन्तु अिस नये युगमें वे असगत

प्रतीत होते हैं और बहुत खर्चीले हैं। और रेलवेको कमाओी करानेवाले यात्रियो तथा व्यापारियोको अुससे बड़ा कष्ट होता है।"

अितनी कटी आलोचना करनेके बाद अिस व्यवस्थामे सुधार करनेके पहले कदमके तौर पर वे प्रजाजनोकी सलाहकार-समिति बनानेकी सिफारिश करते हैं और कहते हैं कि "जैसे भारतकी तमाम रेलोके प्रबंधकोने अपनेको सलाह देनेके लिअे नये खास मडल बनाकर अुन्हे आमत्रण दिये हैं, वैसे यहाके मौजूदा छ अलग अलग रेलवे-तत्र क्यो नही कर सकते?"

बादमे अुसका कारण बताते हुअे खुद ही कहते हैं कि "परन्तु अेक अनियंत्रित मनुष्यकी शासन-सत्ताको माननेवालोके गले यह घूट अुतरना हम मुश्किल मानते हो, तो फिर हमीको काठियावाडकी रेलोके लिअे अैसी समिति बनाकर अभी तो अपना काम चलाना चाहिये।"

अिसके बाद राजाओसे फिजूलखर्ची और विलासकी तरफसे मुह मोड कर अपने खर्चमे कमी करने और 'जमानेकी तेजीसे बढी आ रही प्रजाबलकी बाढ अुन्हे मजबूर करे अुसके पहले स्व० सिंधिया महाराजकी दूरदेशीसे काम लेकर अपना अुचित सालियाना स्वय ही तय कर लेने' के लिअे पुकार पुकार कर अनुरोध किया।

आगे चलकर बापाने अपने व्याख्यानमे अछूत भाअियोकी सेवा और अस्पृश्यता-निवारण, मद्य-निषेध, कन्या-विक्रय-निषेध तथा खादी-प्रचार अित्यादि रचनात्मक कार्यको अपनाकर प्रजाशक्ति बढाने और अुसका सगठन करनेकी हिमायत की, और अतमे काठियावाडकी तत्कालीन परिस्थितिका करुण चित्र खीच कर अुसकी १९५० के सयुक्त सौराष्ट्रके भावी रगीन चित्रके साथ तुलना की।

१९२८ मे सौराष्ट्रकी प्रजाकी स्थिति क्या थी, अिस बारेमे बापा नीचे लिखा वर्णन करते हैं

"हमारे छोटे तालुके, राज्य और अन्य राज्यसत्ताअे अनेक और अनेक प्रकारकी होनेके कारण सकीर्णता, षड्यत्रबाजी, पराधीनता, राज्यकर्ताओका विलासीपन, रैयतकी मतिमदता आदि खूब बढ गये हैं। काठियावाडीका अर्थ ब्रिटिश गुजरातमे आम तौर पर षड्यत्री, धूर्त, मुहमे राम बगलमे छुरीका प्रतीक, दिलका काला, अस्पष्टवक्ता आदि होता है। फिर छोटे राज्यतत्रके कारण हमारे यहा राज्यप्रबध बहुत महगा होता है, राजकुटुम्बोके विलासोमे लाखो-करोडो रुपये पानीमे जाते हैं और हमारे मनुष्यत्वका हनन होता है, सो अलग।"

अिन सब कष्टो और अनिष्टोका अुपाय बताते हुअे बापा कहते है, "अिन सब खराबियोका अेक ही अिलाज है कि हम सयुक्त हो जाय। समस्त काठियावाडका अेक राज्यतन्त्र खडा किया जाय। हम जो जूनागढी, जामनगरी और भावनगरी कहलाते है और अपनी अपनी अलग अलग पगडियोसे पहचाने जाते है, अुसके बजाय सौराष्ट्रवासीके रूपमे पहचाने जाय और अेक ही प्रान्तके शहरी होनेका अभिमान रखने लगे, अिस प्रकारका अेक चित्र खीचनेका मैने प्रयत्न किया है। मेरा अनुरोध है कि अुसे आप हसीमे न अुडा कर शान्तिसे अुस पर विचार करे।"

क्या है वह चित्र? कैसी अुसकी रेखाअे है और कैसे अुसके रग है? यह बापाके ही शब्दोमे देखे

"अब मै आपसे भविष्यकी, बहुत दूरके नही, परन्तु २०–२२ वर्ष बादके भविष्यकी कल्पना करनेकी प्रार्थना करता हू। आज काठियावाडमे पहलेसे सातवे वर्गके ६६ राज्य हैं। अिनके सिवाय अेजेसीके थानोका अिलाका है। फिर गायकवाड सरकारके अमरेली और ओखा प्रान्त तथा अहमदाबाद जिलेका धधुका तालुका और घोघा महाल है। ये सब प्रदेश सयुक्त हो जाय तभी अखिल सौराष्ट्र कहलायेगा। यह सारा अिलाका अेक ही राज्यतन्त्रके अधीन आ जाय, सोराष्ट्र प्रान्तके सभी छोटे बडे राज्य मिल कर अुसके अगभूत बने, अुसकी अेक प्रजा-प्रतिनिधि सभा और अेक राजमडल या अुमराव सभा बने, अिस सारे प्रान्तकी आय अेक ही कोषमे जमा हो और अुसका अेक ही बजट अिन दोनो सभाओमे पास हो — अिस चित्रकी कल्पना करने और अुसमे रग भरनेके लिअे मै आप सबको, केवल आप ही को नही, परन्तु राजा साहबोको भी आमत्रण दे रहा हू। छब्बीस लाखकी आबादीवाला प्रान्त क्या आप सबको बहुत बडा प्रान्त लगता है? ब्रिटिश भारतमे तो अेक अेक जिला अिससे अधिक आबादीवाला है। ब्रिटिश भारतके गोरखपुर और दूसरे जिलोकी जनसख्या समस्त काठियावाडकी जन-सख्यासे ज्यादा है। पिछली सदीमे जर्मनीमे छोटे छोटे राज्योको अिकट्ठा करके जर्मन साम्राज्य बनाया गया, पिछली ही शताब्दीमे जापानकी डेमीअेटोके अेकत्र होनेसे अेक 'जापानी साम्राज्य' बना। तो फिर १९५० के सालमें काठियावाडके ७० राज्य मिल कर अेक हो जाय तो अिसमें आपको क्या आश्चर्य या विस्मय होगा? सघबल बढनेसे हमारी प्रगति बहुत होगी, ब्रिटिश भारत और दूसरे देशोमे सौराष्ट्रकी प्रतिष्ठा बढेगी और सयुक्त भारतका अेक प्रान्त बन कर, अभी हम भारतवर्षमे जो 'फोरेनर्स' अर्थात् कानूनकी दृष्टिसे विदेशी माने जाते है सो नही रहेगे।

"परन्तु अिस चित्रकी थोड़ी-सी रूपरेखा हम खींचें। पहले और दूसरे वर्गके अर्थात् जिन्हें अपने राज्यमें रहनेवाले प्रजाजनोंके लिअे अपने कायदे-कानून बनानेका पूरा अख्तियार है और अपने प्रजाजनों पर पूर्ण सत्ता है, अैसे अिस समय चौदह राज्य हैं। और तीसरेसे सातवें दर्जे तकके बावन रजवाड़े हैं। जिन अिलाकोंमें पूरा अख्तियार राज्यकर्ताओं और ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधियोंके बीच कम या ज्यादा मात्रामें बटा हुआ है, अुनकी आबादी दो लाख है। अेजेन्सीके प्रान्तमें अठाओी लाखकी आबादी है और अुसमें पूरा अख्तियार अिस समय ब्रिटिश हुकूमतके हाथमें है। अन्तमें गायकवाड़ सरकारका और घोघा-धंधुका तालुकोंका अिलाका आता है। अब अिसमें मुख्य प्रश्न पहले और दूसरे दर्जेके राज्योंका है। अुन राज्योंमें कहीं कहीं प्रजातंत्री शासनके बीज बोये गये हैं और आशा रखी जा सकती है कि वहां बीस वर्षके बाद या अिससे पहले भी प्रजा-प्रतिनिधि सभाअें पूर्णतया विकसित हो जायगी। तीसरेसे सातवें वर्गके राज्योंकी प्रजाको प्रजा-प्रतिनिधित्व मिलनेमें लंबा समय लग ही नहीं सकता, बल्कि अुसमें तो अुल्टे यह माना जा सकता है कि ब्रिटिश हुकूमत सहायता देगी। और अेजन्सीकी हदके प्रजाजन तो अिस समय दरअसल ब्रिटिश प्रजाजनों जैसे ही हैं। फिर रह गये गायकवाड़ी प्रान्त और अहमदाबाद जिलेके दो तालुके। अगर १९५० में ब्रिटिश भारतमें प्रचलित प्रजातन्त्रकी संस्थाअें पूरी तरह काठियावाड़ प्रान्तमें काम करने लगें, तो फिर मौजूदा गायकवाड़ी और ब्रिटिश माने जानेवाले अुपरोक्त प्रदेश काठियावाड़में मिल जानेमें हिचकिचाहट या आनाकानी नहीं करेंगे।

"परन्तु अेक मुख्य बात बाकी रह गयी। पहले और दूसरे वर्गके जो चौदह राजा अिस समय राज्य और राज्यकी आयको अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति मानते हैं, अपनेको वैधानिक राजा न मानकर सर्वसत्ताधीश मानते हैं, अुनका क्या हो? अुन्हें नवयुगमें अपनी निरकुश सत्ताका, अपने राज्य-लोभका राजी-खुशीसे त्याग करके, अपने मंडल और प्रजा-प्रतिनिधियोंकी संयुक्त रूपमें बनी हुअी राज्यसत्ताको अपने अधिकार सौंपने पड़ेंगे और अपने दर्जेके योग्य मानमर्तबा कायम रखने लायक सालियाने स्वीकार करने पड़ेंगे। क्या वे अितनी कुरबानी किये बिना रहेंगे? जापानके 'डेमी' अर्थात् बड़े बड़े तालुकोंके राजा आजसे ६० वर्ष पहले अपनी कुल सत्ता वहांके सम्राट् 'मिकाडो' के चरणोंमें रख सके, वहांके हजारों मनुष्योंका सारा क्षत्रिय वर्ग — सेमुराअी — अपनेको मिलनेवाली वंशपरम्परागत आय केवल नाममात्रका ही मुआवजा लेकर छोड़ सके, तो फिर हमारे चौदह

राजा क्या अितना त्याग नही कर सकते ? मातृभूमिकी सेवाका यह अुदीयमान युग क्या अुनके अन्तरमे अितनी अुदारता और दीर्घदृष्टि पैदा नही करेगा ? यह वात अलवत्ता सही है कि जापान सयुक्त हुआ तो विदेशी भयके कारण। परन्तु जो वात डरके कारण हुअी, वह अपनी खुशीसे क्यो नही हो सकती ? विस्मार्ककी राजनीतिज्ञता और शासन-नीतिसे यदि जर्मनीके रजवाडे अेक हो सके, तो क्या काठियावाडके रजवाडे भी अपने पूर्ण विकासके लिअे, प्रजाके स्वातत्र्यमे सहायता देनेके लिअे और सारे भारतकी प्रगतिके लिअे सयुक्त नही होगे, ओर स्वय अपनी अनियत्रित सत्ताका वलिदान नही देगे ? भविष्यके गर्भमे क्या है यह कहनेका सामर्थ्य किसमे है ? परन्तु अपने प्रान्तकी भावी वैधानिक रचना — अुसके सपने कहे तो हर्ज नही — करनेका प्रत्येक वुद्धिमान और भावनाशील मनुष्यको हक है। आपको पसन्द हो तो अिस चित्र पर विचार कीजिये, अुसे विकसित कीजिये और अुसमे विविध रग और छोटी-वडी खूविया भरिये। अगर आपको यह विचार अनुचित प्रतीत हो, तो अिसे फेक दीजिये, अपनी कल्पनाके घोडे दौडाअिये और भविष्यका सौराष्ट्र कैसा होना चाहिये, अिसका चित्र अपनी वुद्धिके अनुसार वनाकर प्रजाके सामने रखिये।"

कितना सुन्दर चित्र ! वीस-वाअीस वर्षके वादके सौराष्ट्रकी कितनी सुन्दर कल्पना !

वापाने अपनेको अराजनैतिक समाज-सेवक, काठियावाडके अटपटे राजनैतिक प्रश्नोसे अपरिचित, कूटनीतिज्ञतासे परे अेक 'सरल सौराष्ट्रवासी' के रूपमे वताया है, सो अक्षरश सच है। फिर भी सौराष्ट्रकी राजनीतिको जाननेवाले, अेक अेक राज्य और अुसके प्रश्नोका सागोपाग ज्ञान रखनेवाले राजनैतिक नेता और राजनीतिज्ञ भी सौराष्ट्रके भावीकी जो कल्पना नही कर सके, वह सुन्दर और वास्तविक कल्पना ये राजनीतिसे अलिप्त और पचमहालके अेक कोनेमे पडे हुअे 'सरल सौराष्ट्रवासी' कर सके और २०–२२ वर्षके वादके सौराष्ट्रका चित्र खीच सके, यह कैसी आश्चर्यकी वात है ! अीश्वरकी कैसी अगम्य गति है कि अुसमे श्रद्धा रखनेवाले सर्वथा अराजनैतिक और 'सरल सौराष्ट्रवासी' के दिलमे जो स्वप्न पैदा हुआ, अुसे अुसने अक्षरश सत्य सिद्ध कर दिखाया। सतोके वचन कभी मिथ्या नही जाते, यह वात वापाके अिन वचनोने फिर अेक वार सावित कर दी।

१९२८ मे अुन्होने २०–२२ वर्ष वादके अर्थात् १९४८–'५० के सौराष्ट्रकी कल्पना करनेको कहा, और अुन्होने जो सोचा था वही हुआ। अुनकी अिस कल्पनाने २०–२२ वर्षके वाद सौराष्ट्रमे मूर्त रूप लिया। अुस समय १९२८ मे

काठियावाड राजनैतिक परिषद्‌मे अुपस्थित होनेवाले सरदार वल्लभभाअी पटेलके हाथोसे ही बापाने सौराष्ट्रके जिस सयुक्त राज्यकी कल्पना की थी अुसका ठीक बीस वर्ष बाद निर्माण हुआ। अुसमें काठियावाडके सभी छोटे-बडे राज्य शामिल हुअे और सौराष्ट्रकी अेक अिकाअी बनी। राजाओने सारी सत्ता सौंपकर सालियाना लेना स्वीकार किया। अुसकी रेल अेक हुअी, अुसका खजाना अेक हुआ। बाकी रह गया है सिर्फ अमरेली और बबुका तथा घोघा तालुकोके प्रदेशका सौराष्ट्रके साथ विलय। परन्तु वह भी जल्दी ही होनेवाला है।

बापाने अध्यक्षकी हैसियतमे जो सुन्दर, वास्तविक, राजा-प्रजा दोनोको अपना कर्तव्य बतानेवाला और दोनोको अपनी शक्ति और मर्यादा बतानेवाला तथा लोगोके समक्ष अेक ठोस कार्यक्रम रखनेवाला व्याख्यान दिया था, अुसका आम लोगो पर बहुत अच्छा असर हुआ। दर्शको, प्रजा-परिषद्‌के अधिकाश प्रतिनिधियो और अखबारोके सम्वाददाताओ तथा अखबारनवीसो वगैरा सबको राजा-प्रजा दोनोके कल्याणकी भावनावाला बापाका अध्यक्षीय भाषण पसन्द आया। स्वय गाधीजीने भी यह कह कर कि अध्यक्षके भाषणमें 'भीलो और ढेढोके गुरुको शोभा देनेवाला गाभीर्य था' अुसका बखान किया। अितने पर भी अुस समयके देशी राज्योकी प्रजाके अुत्कर्षके लिअे काठियावाडमे काम कर रहे अुग्र माने जानेवाले प्रजाके छोटेसे नेतावर्गको यह व्याख्यान पूरा सतोष नही दे सका। अुनकी दृष्टिमे वह अधूरा और नरम था। अिस व्याख्यानकी समालोचना करते हुअे अुस समयकी काठियावाडकी राजनीतिमे अुग्र माने जानेवाले देशी राज्योकी प्रजाके नेता श्री अमृतलाल सेठने अपने साप्ताहिक पत्र 'सौराष्ट्र' मे अिस प्रकार सम्पादकीय टिप्पणी लिखी

"हमारी आज होनेवाली परिषद्‌के अध्यक्ष कोअी अुद्दाम युवक न होनेके कारण — शान्त वृद्ध पुरुष होनेके कारण — वे प्राचीन प्रणालियोका भग करेंगे, यह हमने बिलकुल नही माना था। परन्तु आज अन्यत्र प्रकाशित अुनका भाषण पढ कर अुनके किये हुअे प्रणालिका-भगके लिअे हमे खास तौर पर अफसोस हुआ है। अुनके जैसे शान्त, अभ्यासी और विचारकसे काठियावाडका भूतकालीन अितिहास समझनेकी हमने आशा रखी थी। अुनके भाषणमे आज तेजीसे घटनेवाली राजनैतिक घटनाओकी बारीक समीक्षा पढनेकी हमने अुम्मीद रखी थी। हमारी दोनो आशाअे पूरी नहीं हुअी। अगर अुन्होने भविष्यका अेक मधुर स्वप्न न खीचा होता और आजकलकी राज्य-सस्थाओमे प्रचलित कुछ प्रथाओका विवेचन न किया होता, तो हमें अुनके बारे

भाषणको निराशाके निष्कर्षके रूपमे ही वर्णन करना पडता। भरतपुरका मामला, नरेन्द्र-मडलकी हलचल, वटलर कमेटी, वाअिसरॉय महोदयका काठियावाडका दौरा, जाम साहवका खानेके समयका भाषण, काठियावाडके वदरगाहोका प्रश्न, काठियावाडम चौतरफ गुथी हुअी (चुगीकी) सीमा-रेखाओका जाल आदि मौजूदा सुलगते हुअे प्रश्नो पर जो अध्यक्ष चुप रह सकता है, वह या तो राजनैतिक आदमी ही नही, या अितना भीरु है कि राजनैतिक परिषद्का राजनैतिक अध्यक्ष होने पर भी राजनैतिक विचार प्रगट करनेमे डरता और कापता है। और हमारा दुख खास तो अिसलिअे अधिक है कि श्री ठक्करवापा अिनमे से किसी भी वर्गके मनुष्य नही। वे अच्छे अच्छे नौजवानोको शर्मानेवाली वहादुर मनोदशा रखनेवाले है। १९५० का स्वप्न देखनेवाले भविष्यकालके आदमी है और राजनैतिक विचारणा अुनके वाकीके भाषणमे साफ नजर आती है। अैसे पुरुपसे हमने अधिक अच्छी आशा रखी थी। वह आज भग हो गअी, अिसके लिअे हम अपना शोक प्रगट करते है।"

श्री अमृतलाल सेठ ठक्करवापाको, अुनकी निर्भयता और नि स्वार्थताको अच्छी तरह जानते थे। अिसीलिअे तो अुन्होने अुनके भाषणके अधूरेपनकी आलोचना करते करते भी अन्तमे अुन्हे श्रद्धाजलि ही दी है। और भाषणके अधूरेपनका दोष किसी और तत्त्व पर डाला है। परन्तु अुनकी जगह कोअी और अध्यक्ष होता, तो वह अपने अैसे भाषणके लिअे कडी-से-कडी आलोचनाका शिकार वना होता।

अितने पर भी यह सम्पादकीय लेख पढकर वहुतसे अखवारी मित्रोने भी श्री सेठसे कहा कि 'आज तकके तमाम अध्यक्षोके भाषणोसे यह भाषण कही वढाचढा है।' और अेक अन्य मित्रने यहा तक कहा कि 'पिछला अग्रलेख लिखकर श्री ठक्कर साहवके प्रति आपने अन्याय किया है।' तव अुसकी सफाअी देते हुअे श्री सेठने स्पष्टीकरण किया कि, 'भाषण जरूर वढिया है, परन्तु ठक्कर साहव जैसे ज्ञानवीर, कर्मवीर और निर्भय नेतासे सुलगते हुअे प्रश्नो पर जिस स्वतत्र विचारकी हमने आशा रखी थी अुसे यह भाषण पूरा नही कर सका। अिसके लिअे ठक्कर साहव कम जिम्मेदार है यह भी हम जानते है। पोरवन्दर परिषद्के सिर पर लादी हुअी कुछ मर्यादाअे अध्यक्षके भाषणका गला घोटनेके लिअे जिम्मेदार है, यह भी हम जानते है। ठक्कर साहवकी शक्तिके साथ 'सौराष्ट्र'के अग्रलेखने अन्याय नही किया, परन्तु अुनकी परिस्थितियोका अुल्लेख किया था।'

ये परिस्थितिया कौनसी थी ? ये परिस्थितिया थी परिषद्मे महात्माजीकी अुपस्थिति और जब तक प्रजामे निर्बलता मौजूद हो तब तक अेक सस्थाके रूपमे जबान पर स्वेच्छासे अकुश रखने और अुसके द्वारा प्रजाबल पैदा करनेकी परिषद्को दी हुअी सलाह। यह सलाह काठियावाडके अधिकाश कार्यकर्ताओके गले तो अुतर गअी थी, परन्तु अेक छोटे-से किन्तु अच्छा प्रभाव रखनेवाले काठियावाडके नेतावर्गके गले नही अुतर रही थी। सच पूछा जाय तो अिस सलाहका अनुसरण किया गया अिसीलिअे तो पोरबदरमे अिस बार राजनैतिक परिषद् की जा सकी और कुछ हद तक वह वास्तविक भूमिका पर काम कर सकी। अितने पर भी यह वर्ग अपने ढगसे काम न कर सका, अिसका क्षोभ तो अुसके मनमे रह ही गया।

परिषद्मे विषय-विचारिणी समिति और खुली बैठक दोनोमे दो दिन तक जो कार्रवाअी हुअी, अुसमे अिस चीजकी प्रतिक्रिया दिखाअी दी। दो दिनकी कार्रवाअीमे खूब जोशीले भाषण हुअे, चर्चाअे हुअी। अेक प्रस्ताव पर परिषद्के कार्यकर्ताओकी खानगी बैठकमे खूब रस्साकशी हुअी। वह प्रस्ताव गाधीजीने पेश किया था और काठियावाडके सार्वजनिक जीवनका किस दिशामे और किस ढगसे विकास किया जाय, अुसकी कुजीके तौर पर था। वह प्रस्ताव अिस प्रकार था

"राजा-प्रजाके बीच किसी प्रकारकी गलतफहमी न हो और अिस परिषद्को अपनी शक्तिका पूरा भान रहे, अिस हेतुसे और कुछ समयसे चली आ रही प्रथाको निश्चित करनेके लिअे यह परिषद् निश्चय करती है कि परिषद् किसी भी राज्यकी व्यक्तिगत निंदा अथवा आलोचनाके रूपमे कोअी प्रस्ताव न करे।"

अिस प्रस्ताव पर विषय-विचारिणी समितिमे और काठियावाडमे काम करनेवाले कार्यकर्ताओमे दो भाग हो गये। अेक भाग, जिसका नेतृत्व श्री अमृतलाल सेठ करते थे, अिस प्रकारकी मर्यादा स्वीकार करनेमे विश्वास नही रखता था। परिषद् जिये या मरे, परन्तु अुनका विचार था कि अैसी मर्यादा स्वीकार न की जाय। अुन्हे डर था कि अैसी मर्यादासे देशी राज्योको अधिक जुल्म करनेकी छूट मिल जायगी, देशी राजाओकी लूट और शोषण-वृत्ति बढती जायगी, अुनके पाप बढते जायगे, अुनके अन्याय बढते जायगे और फिर भी परिषद्को चुप ही रहना पडेगा। वे मानते थे कि परिषद्को अिस प्रकार बधनशील बनानेसे देशी राज्योकी प्रजाके दुःख रोनेवाला कोअी नही रहेगा और अुसके हितोको बहुत नुकसान पहुचेगा। अिस वर्गकी सख्या परिषद्मे थोडी थी, परन्तु

अुसका प्रभाव काफी था। गाधीजीने कार्यकर्ताओकी खानगी सभामे अपना हृदय अुडेला। अलग अलग ढगसे अनेक कार्यकर्ताओमे चर्चा और विचार-विनिमय करके अुन्होने अुनके मनका समाधान किया और अन्तमे वह प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे पास करवाया तथा जो वर्ग अिस प्रस्तावके विरुद्ध विचार रखता था, अुसके नेता श्री अमृतलाल सेठके ही द्वारा अुसका समर्थन कराया। अलबत्ता श्री सेठने जो कहा वह विचारपूर्वक नही, परन्तु महात्माजीके प्रति सम्मान और आदर होनेके कारण और यह समझकर कहा कि गाधीजी जो कुछ विचारते होगे वह अच्छा ही होगा।

ठक्करबापाका मत भी शुरूमे अिस तरहकी मर्यादा स्वीकार करनेके पक्षमे नही था। परन्तु अुन्हे तो गाधीजीके प्रति अपार श्रद्धा थी। अिसलिअे यह मानकर कि गाधीजी जो भी तय करेगे, वह अच्छा ही परिणाम लायेगा, वे भी अिस प्रस्तावको माननेके लिअे तैयार हो गये।

परिषद्की खुली बैठकमे अिस मुख्य प्रस्तावके सिवाय काठियावाडमे व्यायाम-प्रचार करनेसे सम्बन्ध रखनेवाला, खादी-प्रचार और खादीकी बिक्री बढानेके लिअे अमुक रकमका प्रबध करनेवाला, अस्पृश्यता-निवारण आन्दोलनको आगे बढानेसे सम्बन्ध रखनेवाला, देशी राज्योका भावी सम्बन्ध भारत सरकारके साथ ही रहना चाहिये अैसा प्रजामत घोषित करनेवाला, देशी राज्योमें प्रजा-प्रतिनिधि सभाओकी स्थापना और राजाओके निजी खर्चमे सालियाना (सिविल लिस्ट) की माग करनेवाला प्रस्ताव तथा अैसे दूसरे प्रस्ताव पास हो गये। और तीन दिन बाद गाधीजी और ठक्करबापाके पथप्रदर्शनमे परिषद्का कामकाज पूरा हुआ। तीनो दिन ठक्करबापाने काफी चतुराअीसे काम लिया और लगभग सबको सतोष देनेका प्रयत्न किया। अिस प्रकार पोरबन्दर राजनैतिक परिषद्का अधिवेशन सफल हुआ और काठियावाडकी प्रगतिकी दिशामे अुसने अेक कदम अुठाया।

भावनगर-प्रजा-परिषद् और काठियावाड राजनैतिक परिषद्की तरह ही बापाका अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद्के साथ भी गहरा सम्बन्ध था। अितना ही नही, अिस सस्थाके सर्जनमे भी अुनका प्रमुख भाग था। काठियावाडके देशी राज्योके कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओ और भारतके अन्य राज्योके प्रमुख कार्यकर्ताओको अैसी भारतव्यापी सस्था कायम करनेकी जरूरत जान पडती थी, जो भारतके सारे देशी राज्योका प्रतिनिधित्व करे और अुनके दु ख-दर्दकी आवाज अुठा सके। भारतके देशी राज्योका ही नही, परन्तु समस्त भारतके लोगोका प्रतिनिधित्व करनेवाली भारतव्यापी सस्था काग्रेस थी। परन्तु अुसके कार्यों और देशी राज्योमे काम करनेकी अुसकी नीतिमे अिन

लोगोको सतोष नही था। काग्रेसने देशकी और लोगोकी शक्तिकी मर्यादा देख कर और तत्कालीन परिस्थितिको ध्यानमे रखकर अपना सारा ध्यान और कार्यशक्ति ब्रिटिश भारतमे ही केन्द्रित की थी। अिसमे देशी राज्योके कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओको अैसा लगा कि यदि ब्रिटिश भारतमे काग्रेस प्रजाकीय सस्थाके तौर पर काम करती हो और राजा भी अपने स्वार्थी हितोकी रक्षाके लिअे नरेन्द्र-मडल नामकी अलग सस्था बना कर बैठे हो, तो सारे भारतके देशी राज्योकी प्रजाके लिअे, जिसका कोअी रक्षक नही, अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् होनी चाहिये। १९२६ मे ब्रिटिश सरकारने बटलर कमेटीकी नियुक्ति की, तब तो अैसी सस्थाकी जरूरत अिन लोगोके लिअे अनिवार्य हो गअी। यह जरूरत समझनेवाले जो थोडेसे प्रमुख व्यक्ति थे, अुनमे ठक्करबापा भी अेक थे। भारत-सेवक-समाजके सदस्य श्री वझे, श्री पटवर्धन तथा देशी राज्योकी प्रजाके कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओने मत्रणा करके ठक्करबापाकी प्रेरणासे बम्बअीमे अेक सम्मेलन बुलाया। अिस सम्मेलनने देशी राज्योकी प्रजाकी तरफसे अेक घोषणापत्र प्रकाशित करके प्रजाकीय अधिकारोकी घोषणा की और अिस सम्मेलनमे ही अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् जैसी सस्था बनानेका विचार पेश किया। सम्मेलन होने तक तो कुछ न कुछ अुत्साह बना रहा। परतु बादमे लोगोका अुत्साह मद पड गया और छ महीने तक अिस दिशामे कोअी खास काम नही हो सका। अन्तमे ठक्करबापाने फिरसे यह प्रश्न हाथमे लिया और श्री बळवतराय महेताको प्रोत्साहन देकर अिस कार्यमे लगाया। साथ ही अैसी व्यवस्था की कि श्री अमृतलाल सेठ, श्री मणिलाल कोठारी, श्री पोपटलाल चूडगर वगैरा श्री बलवन्तराय महेताके काममे मदद करे। अिस प्रकार थोडी सी पूर्वभूमिका तैयार होनेके बाद दीवानबहादुर रामचद्र रावकी अध्यक्षतामे बम्बअीके माधवबागमे परिषद् हुअी। निजयसिहजी पथिक स्वागताध्यक्ष बने। अिस परिषद्मे बटलर कमेटीके सामने देशी राज्योकी प्रजाका दृष्टिकोण रखनेका निश्चय किया गया।

अिस बीच राजाओकी फिजूलखर्ची और जुल्म वगैरा बढते जा रहे थे। अुनकी निरकुश सत्तामे किसी भी प्रकारका फर्क पडता दिखाअी नही देता था। अुल्टे, नरेन्द्र-मडल द्वारा दावपेच लगाकर और लाखो रुपये खर्च करके भारत और अिग्लैण्डमे अपने परोपकारीपन और प्रगतिका विज्ञापन करके वे लोगोको भ्रममे डाल रहे थे। अुस समयका 'सौराष्ट्र' पत्र अनेक राजाओकी प्रजाविरोधी प्रवृत्तियोकी, अुनकी फिजूलखर्चीकी और अुनकी स्वछदताकी तफसील जुटा जुटाकर छाप रहा था और अुनकी पोलें खोल रहा

था। विलायतमे राजाओंकी हलचलोके बारेमे 'सौराष्ट्र' का अेक लेख पढकर ठक्करबापा आगबबूला हो अुठे। अुन्होने अपनी मनोव्यथा व्यक्त करनेवाला निम्न लिखित पत्र 'सौराष्ट्र' के सपादकके नाम लिखा था

"कलके 'सौराष्ट्र' के अकमे 'विलायतकी हवाअे' लेख पडा। पढकर मुझे तो बडा गुस्सा आया। बटलर कमेटी, हमारी स्मशान-शान्ति, हमारे देशी राज्योका फर्ज वगैरा बातोका मै बहुत समयसे विचार करता हू और निराश होता हू। परतु निराश होकर बैठे रहनेसे क्या होगा? कुछ न कुछ सक्रिय काम करना ही चाहिये। अभ्यकर, चूडगर, आप, पथिकजी वगैरा लोगोको यह काम तुरन्त हाथमे लेना चाहिये। चुपचाप बैठे रहनेसे कोओ कुछ नही देगा और किसीको हम पर दया नही आयेगी। हमे अवश्य ही जोशके साथ आदोलन करना चाहिये। अैसा लगता है कि अभीकी हमारी चुप्पी Criminal Silence — घोर पातकभरी चुप्पी बन रही है। हमे Concerted Action — सगठित कार्य आरभ कर ही देना चाहिये, नही तो हमारी पूरी लापरवाहीके कारण हमारा मामला जरूर बिगड जायगा।"

अन्तमे बटलर कमेटीके सामने प्रजाकीय दृष्टिबिन्दु रखनेके लिअे अेक शिष्टमडल विलायत भेजना तय हुआ। बापासे अिस डेप्युटेशनमे शरीक होनेका अनुरोध किया गया, परतु अुन्होने अिन्कार कर दिया। अिसलिअे श्री राम-चद्र राव, श्री अभ्यकर और श्री पोपटलाल चूडगरको अिस शिष्टमडलके सदस्योके रूपमे भेजा गया। अुन्होने बटलर कमेटीके सामने देशी राज्योकी *फिजूलखर्ची, मनमानी, प्रजाके हकोकी अवहेलना, नागरिक स्वातत्र्यका सर्वथा* अभाव और लोगो पर ढाये जानेवाले भयकर जुल्मोकी कहानी पेश की और अुसके समर्थनमे अध्ययनपूर्ण आकडे और ब्यौरे आदि दिये। परिणाम-स्वरूप भारतके देशी राज्योमे और विलायतके राजनैतिक लोगोमे काफी खलबली मची।

सन् १९२९ के मअी मासमे बम्बअीमे अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद्का दूसरा अधिवेशन श्री सी० वाय० चिन्तामणिकी अध्यक्षतामे हुआ। अिस अधिवेशनमे पटियाला राज्यके कुछ प्रजाजनोने पटियालाके निरकुश शासनके विरुद्ध पुकार करनेवाला जो अेक स्मृतिपत्र वाअिसरॉयके नाम भेजा था, अुसकी प्रतिया छपवाकर छूटसे बाटी गअी।

अिस स्मृतिपत्रमे पटियालाके अुस समयके महाराजा श्री भूपेन्द्रसिहजीके विरुद्ध हत्या, बलात्कार, लूट, स्त्रियोकी गैरकानूनी हिरासत, व्यभिचार, झूठे मुकदमे खडे करके विरोधियोको रास्तेसे साफ कर देना, युद्धकोपका रुपया हजम कर लेना वगैरा आरोपो और आक्षेपोकी लबी सूची दी गअी थी।

अिन आक्षेपोंका ब्यौरा सुनकर सब दिङ्मूढ बन गये थे और अुसे पढकर सबको यह खयाल होता था कि क्या सचमुच ये आक्षेप सही भी हो सकते हैं? सही हों तो भारतकी ब्रिटिश सरकार अिन्हें अेक दिन भी बर्दाश्त नहीं कर सकती। फिर भी यह सच था कि ये आक्षेप मौजूद थे और सरकार अुन्हें बर्दाश्त कर रही थी। दूसरी तरफ पटियालाके जिन दस नागरिकोंने वाअिसरॉयके नाम स्मृतिपत्र भेजा था, वे अेक अेक आक्षेप सिद्ध कर देनेको तैयार थे।

देशी राज्य प्रजा-परिषद्की कार्रवाअीमें अिस विषय पर खूब चर्चा हुअी। और चर्चाके अन्तमें निम्नलिखित सदस्योंकी अेक जांच-समिति नियुक्त करना तय किया गया

श्री सी० वाय० चिंतामणि, अध्यक्ष
श्री लक्ष्मीदास आर० तेरशी
श्री शार्दूलसिंह कवीश्वर
प्रो० जी० आर० अभ्यंकर
श्री अमृतलाल दलपतभाअी सेठ

सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वरके अिस जांच-समितिमें शरीक होनेमें असमर्थता प्रगट करने पर अुनकी जगह ठक्करबापाको लिया गया। जांच-समितिके सदस्योंमें से श्री सी० वाय० चिन्तामणि तथा श्री लक्ष्मीदास तेरशी पंजाब न जा सके, अिसलिअे श्री ठक्करबापा, श्री सेठ तथा प्रो० अभ्यंकरने जांच की। ठक्करबापाने समितिके कार्यवाहक अध्यक्षकी हैसियतसे काम किया।

जांच-समितिने १९२९ के दिसम्बर मासमें अपना कामकाज शुरू किया। मार्गमें खडी कठिनाअियोंका कमेटीको पूरा पूरा खयाल था। पटियालाके महाराजा समस्त भारतके राजाओंके मुखिया थे। नरेन्द्र-मंडलके सभापति थे। बीस वर्षसे निरंकुश और अनियंत्रित सर्वाधिकारसे वे अपनी सत्ता भोग रहे थे। दूसरी ओर अनेक जुल्मोंसे कुचली और दबी हुअी प्रजाका कोअी आधार नहीं था। अिस राजाके पाप कर्मोंके विरुद्ध अेक शब्द भी कहना और अुसके गुस्सेसे बचे रहना, ये दोनों बातें नहीं हो सकती थीं। अितने पर भी समितिने अपना काम शुरू किया। समितिने १६ से ३० दिसम्बर १९२९ तक जांचका काम किया। अिस बीच हजारों साक्षी अपनी गवाही देने आये। समितिके सदस्योंने गवाहोंकी निजी जांचके लिअे बलवान, अंबाला और लुधियाना आदि स्थानोंका दौरा किया। अपनी १२ बैठकोंमें ४६

साक्षियोके बयान लिये। अुसके बाद अुनमे से ३५ आदमियोकी कैफियते ली। अिसके सिवाय समितिके सामने अन्य ५६ लिखित कैफियते पेश हुअी। कुछ और भी दस्तावेजी साहित्य प्राप्त किया गया।

अिन कैफियतो और अन्य जो भी साहित्य मिला अुस सब परसे समितिने जितने अिलजाम कानूनकी दृष्टिसे साबित किये जा सकते थे अुनकी भूमिका सामने रखकर सारा विवरण तैयार कर लिया और अुसके सार-रूपमें महाराजा पटियालाके विरुद्ध निम्नलिखित १२ प्रकारके अभि-योगोकी अेक तालिका तैयार कर ली।

१ अपने ससुरके चचेरे भाअी सरदार लालसिहकी रूपवती पत्नी दिलीपकुवर पर मोहाध होकर अुसे अपने महलमे पकडवा मगाया और अुसे तलाक देनेके लिये लालसिहको खूब समझाया। परन्तु लालसिहके अिनकार करने पर अेक पुलिस अफसरको रुपया देकर अुसके द्वारा लालसिहकी हत्या करानेका प्रयत्न हुआ। अुसमे असफलता मिलने पर दूसरी बार प्रयास किया और लालसिहका खून कराया। महाराजा भूपेन्द्रको दिलीपकुवरसे दो लडकिया हुअी। लालसिहके कत्लके बाद अुन्होने दिलीपकुवरके साथ खुले आम शादी कर ली।

२ पटियाला राज्यके बहादुरगढ किलेमे बमका कारखाना खोला और चलाया गया।

३ विचित्रकुवर, अुसके लडके और लडकीको गुम कर दिया गया, जिनका अभी तक पता नही चला। डॉ० बख्शीसिहने जब पटियाला छोडा तब वे अपने कुटुम्बको घर पर छोड गये थे। बख्शीसिह कहते है कि अुनकी पत्नी विचित्रकुवरका महाराजाकी मौजूदगीमे खून हुआ और लडकीका खून बिजलसिहकी पत्नीने किया। लडका भी गुम कर दिया गया।

४ सरदार अमरसिहकी पत्नी जब पटियालामे अपने पिताके घर पर थी, तब महाराजा अुसे अुठा ले गये। बीस वर्ष अुसे अपने अत पुरमे रखा। राजासे अुसके अेक लडका और अेक लडकी हुअी है। सरदार अमरसिह पर तरह तरहके झूठे मुकदमे चलाये गये और अुसे जेलमे डाल दिया गया (१९३० तक)। अभी तक अुसे छोडा नही है। सरदार अमरसिहने अिस मामलेमे पजाब सरकार और भारत सरकारसे न्याय मागा, परन्तु अुसे न्याय न देकर भारत सरकारके अेजेण्टने २०,००० रुपये नकद लेकर पत्नी परमे हकदावा अुठा लेनेकी सलाह दी।

५ सरदार हरचदसिहको गैरकानूनी तौर पर गिरफ्तार किया और अुसकी २० लाखकी सम्पत्ति जब्त कर ली।

६ जो महाराजाके क्रोधभाजन बने अैसे कितने ही प्रजाजनो पर पटियालाकी पुलिसने झूठे मुकदमे खडे किये।

अिसके अलावा महाराजाकी शिकार लीला, गैरकानूनी गिरफ्तारी, अनेक प्रकारकी बेगार, कर, युद्धऋणका रुपया प्रजाजनोको न लौटाकर स्वय हजम कर जाना, मेहसूल और प्राणी-महकमोंके जुल्म और त्रास तथा सार्वजनिक कामोके नाम पर अिकट्ठे किये गये रुपयेकी फिजूलखर्ची वगैरा अभियोग भी समितिने महाराजा पर लगाये।

अिन अभियोगोके समर्थनमे काफी सामग्री थी। अुस सबके अध्ययनके अन्तमे समितिने अपना यह मत व्यक्त किया कि "वािअसरॉयसे किये गये निवेदनमे पटियालाके प्रजाजनोने महाराजाके विरुद्ध जो आरोप लगाये है वे गैरजिम्मेदारीसे नही लगाये गये है, परन्तु प्रत्येक आरोपके पीछे ठोस प्रमाण है और कुछ मामलोमे तो चौकानेवाली और आघात पहुचानेवाली हकीकते है।"

समितिके अध्यक्ष ठक्करबापा और अन्य दो सदस्योके हस्ताक्षरसे यह सारा विवरण तैयार हुआ और अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद्की तरफसे प्रकाशित हुआ।

अुसकी प्रस्तावनामे श्री बलवन्तराय महेता और श्री मणिशकर त्रिवेदीने लिखा कि " विवरणमे जिस परिस्थितिका भडाफोड किया गया है वह अत्यन्त दुखदायक है।

"हिन्दुस्तानमे राष्ट्रीय हृदय है भी? हमारी राष्ट्रीय स्वतत्रताकी लडाअी सच्ची और वास्तविक है? राष्ट्रीय आत्मप्रतीतिके प्रयत्न सच्चे है? अिनका अुत्तर 'हा' मे हो तो हमे जरा भी शक नही कि अिस विवरणमे प्रगट किये गये तथ्य भारतके सार्वजनिक जीवनमे प्रमुख भाग लेनेवाले नेताओके हृदयको भारी आघात पहुचायेगे और देशी राज्योमे अेकतत्री सत्ताके कारण लाखो देशबान्धवोके प्रति गुलामो और अर्ध-गुलामो जैसा जो बरताव हो रहा है अुसके प्रति असख्य हृदयोमे रोषकी ज्वाला भभक अुठेगी।"

और सचमुच ही पटियालाके विवरणमे प्रगट किये गये तथ्योने देश भरमे जगह जगह खलबली मचा दी। हजारो मनुष्य पटियाला महाराजकी अिस पिशाचलीलाके विरुद्ध रोषमे भडक अुठे। देशके कुछ अखबारोने अिस विवरण पर ध्यान देकर अुग्र सम्पादकीय लेख लिखे। भारत-सेवक-समाजके मुखपत्र 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिंडिया'ने 'अुन पर मुकदमा चलाओ' शीर्षक अग्रलेखमे अिस प्रकार लिखा

"जाच-समितिकी जाचके दौरानमे अपनी सफाअी देनेका महाराजा पटियालाको पूरा मौका होने पर भी अुन्होने अुससे लाभ नही अुठाया।

परन्तु अिससे अेकत्रित प्रमाणोंका ठोसपन और सचाअी जरा भी कम नहीं होती। अिस विवरणको प्रकाशित करके प्रजा-परिषद्ने अपना फर्ज अदा किया है। भारत-सरकारको अपनी प्रतिष्ठाकी थोडी भी परवाह है, अैसा नहीं लगता। फिर भी क्या सरकार अब अपना कर्तव्य पालन करेगी?"

'अमृतबाजार पत्रिका' ने सारा विवरण छापकर अुस पर दो अग्रलेख लिखे और परिषद्के मन्त्रियोंको विवरण प्रकाशित करने पर बधाअी देते हुअे लिखा कि, "सारा विवरण अितनी गभीर बातोंसे भरा हुआ है कि किसी भी प्रकारकी कानूनबाजी या शब्दाडम्बरपूर्ण तर्कवाद सरकारको अपने कर्तव्यसे मुक्त नहीं कर सकेगा। महात्मा गाधी, प० नेहरू और कअी दूसरे ब्रिटिश भारतीय नेताओंने वाअिसरॉय लार्ड अर्विनकी शुभनिष्ठाकी कद्र की है। आज अुस शुभनिष्ठाकी परीक्षाका सच्चा और अेकमात्र अवसर आया है। " आक्षेपोंकी क्रमश आलोचना करके 'पत्रिका' ने आगे लिखा कि "सर्वोपरि सत्ताका रियासतोंके साथ सम्बन्ध हो जानेके बाद आज तक किसी भी भारतीय राजाके विरुद्ध दस्तावेजी और जबानी सबूतोंके साथ अैसे गभीर आरोप नहीं लगाये गये।"

अुस समयके कलकत्तेसे निकलनेवाले अेक दूसरे पत्रने अिस विवरणकी आलोचना करते हुअे लिखा था कि, "जो राजा (पटियालाका राजा) अपना चालचलन सुधारनेका वचन देकर लार्ड मिण्टोकी सरकारके हस्तक्षेपसे बाल बाल बच गया था, अुस राजाके अपने अेक प्रजाजनकी स्त्रीको बीस हजार रुपयेमें खरीद लेनेके प्रयत्नमें भारत सरकारकी सम्मति देखकर सचमुच आश्चर्य होता है।"

कलकत्तेके अेक तीसरे अखबार 'अेडवान्स' ने अपनी सम्पादकीय टिप्पणीमें बताया कि, "जिस समय नरेन्द्र-मण्डलकी सभामें राजाओंकी अिज्जत-आबरू और अुनके सुधरे हुअे शासनकी नेकनियतीकी पटियालाके राजा बडी बडी बातें कर रहे थे, अुसी समय स्वय दिल्लीमें पटियाला जाच समितिने अेक अति गभीर विवरण जनताके हाथोंमें रखा है। भाषणके समय अिस विवरणकी प्रति पटियालाके राजा या लार्ड अर्विनके पास थी या नहीं, यह हम नहीं जानते। परन्तु अिस विवरणमें महाराजाके विरुद्ध हत्या कराने, रिश्वत लेने और गभीर कुशासनके आरोप लगाये गये हैं। अिस विवरणके त्रासजनक ब्यौरेसे महाराजाके हैवानियत भरे आचरण पर से परदा हट जाता है। महाराजा और लार्ड अर्विन दोनोंको हम समय रहते चेतावनी

देते है कि समस्त भारतकी जनता अिन ब्यौरोमे अितनी थर्रा गअी है कि वह अिन आरोपोको जरा भी अधिक समय तक सह लेनेको तैयार नही।"

वम्वअीके अुस समयके युवक नेता वीर नरीमानने अेक अखवारी वयानमे 'वर्तमान युगके अिस सवसे भयकर आक्षेपपत्र' के समर्थनमे आवाज अुठाकर वताया कि, "अेक वावलाके खूनके लिअे अिन्दौरके राजाको विलायतके वर्फीले पहाडोमे धकेल दिया गया, अघोपित आरोपोके आवार पर नाभाके राजाको अुटकमडमे नजरवन्द रखा गया, तो अिस राजाके प्रति अितना अुदार और विशेप व्यवहार किस लिअे किया जा रहा है? यदि ये आक्षेप वेवुनियाद हो तो पटियाला नरेश चुप क्यो है? और यदि अिनमे सार हो तो भारत-सरकारकी चुप्पी ओर लापरवाही वहुत ही अर्थपूर्ण वन जाती है।"

अिस प्रकार पटियालाके विवरणके आधार पर जव देशके कुछ समाचारपत्र और वीर नरीमान जैसे कुछ काग्रेसजन महाराजा पटियालाके आचरण पर अितने अुग्र रूपमे टूट पडे, तव गाधीजी और जवाहरलालजी जैसे नेता अिस प्रश्न पर चुप क्यो रहे, यह सवाल कुछ लोगोके मनमें अुठ सकता है। क्या पटियाला राज्यमे जो कुछ हो रहा था, अुसमे अुनकी मूक सम्मति थी? अथवा पटियालाके प्रजाजनोके प्रति अुन्हे कम सहानुभूति थी? जो वहने पटियालाके महाराजाकी वासनाका शिकार वनी, अुनके प्रति गाधीजी और काग्रेसके दूसरे नेताओके हृदयमे अनुकपा नही थी? क्या पटियालाके महाराजाके विरुद्ध अुनके हृदयमे रोष नही भडक अुठा? क्या अुनका 'राष्ट्रीय हृदय' जाग्रत नही था? ठक्करवापाके गले जो वात अुतर गअी वह गाधीजीके गले क्यो नही अुतरी? गाधीजी भी अिस जाच-समितिमे शामिल होकर महाराजा पटियालाके विरुद्ध लगाये गये आक्षेपोको प्रगट करने ओर वाअिसरॉय द्वारा अुन्हे पदभ्रष्ट करानेमे क्यो कार्यरत नही हुअे? अिस तरहके प्रश्न अुस समय भिन्न भिन्न राजनैतिक दलो और अखवारोने अुठाये भी थे। गाधीजी या काग्रेसने यह प्रश्न अुस समय हाथमें नही लिया, अिसका कारण देशी राज्योके प्रति काग्रेसकी निश्चित नीति थी। गाधीजीने देख लिया था कि देशी राज्योमे राजाओकी तरफसे जो दमन, अत्याचार, लम्पटता आर दूसरे जुल्म हो रहे है, अुनका मूल कारण देशी राज्य नही, परन्तु अुस विदेशी सत्ताका भारत पर आधिपत्य है जिसके आधार पर देशी राज्य टिके हुअे है। अिसलिअे जव तक यह आधिपत्य दूर न हो तव तक कितने ही प्रयत्न किये जाय, कितने ही आसू वहाये जाय, कितना ही गुस्सा भडकाया जाय, कितने ही जोशीले भापण और लेख लिखे

जाय, तो भी देशी राज्योकी प्रजा पर होनेवाले जुल्मोका अन्त नही होगा। मुक्ति-मदिरमे प्रवेश करनेके लिअे दरवाजेसे सिर टकरानेसे कार्य सिद्ध नही होगा, परन्तु दरवाजेके तालेको कुजी लगाकर खोलना चाहिये। अिसलिअे देशी राज्योकी प्रजाको राजाओके जुल्मोसितमसे छुडानेके लिअे अुन्हे सहारा देनेवाली सत्ताकी ही श्रेडरज्जु तोडनेके काममे काग्रेस, गाधीजी और जवाहरलालजी अुस समय लगे हुअे थे।

तब बापा अिस दृष्टिसे क्यो नही देख सकते थे? क्योकि शुरूमे वे भारत-सेवक-समाजकी नीतिमे तैयार हुअे थे। अुस समय अुस नीतिके अनुसार वे ब्रिटिश भारतमे नरम अर्थात् वैध रवैया अख्तियार करते थे और देशी राज्योके बारेमे अुग्र विचार प्रगट करते थे। अिससे आगे जाना और लडाअी चलाना तो अुनके कार्यक्रममे था ही नही। जबकि गाधीजी और काग्रेसकी नीति विचारको तुरन्त ही आचरणमे लानेकी होनेके कारण वे देशी राज्योकी प्रजाके दुखदर्दके साथ सहानुभूति तो रखते थे, परन्तु अिन राज्योके राजाओके दोषोकी तालिका प्रजाके सामने रख कर अुनकी आलोचनाओकी डोडी पीटनेमे ही रियासती प्रजाकी सेवाकी अितिश्री नही समझते थे।

काग्रेस और अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद्के बीच नीतिका यह मतभेद अिसके बाद भी बहुत वर्षो तक — ठेठ लखनअू काग्रेस तक बना रहा। अिस गज-ग्राहमे बापाकी स्थिति बडी नाजुक और विचित्र प्रकारकी थी। विचारोमे अुनकी सहानुभूति रियासती प्रजाके कार्यकर्ताओके साथ थी। परन्तु बापा स्वय मूलमे मानव-प्रेमी और दुखियोकी मददको दौडने वाले सेवकवीर थे, अिसलिअे जहा कही दुख देखते, अुसी तरफ अुनकी सहानुभूति चली जाती थी। दूसरी ओर गाधीजीके प्रति बापाकी भक्ति और अपार श्रद्धा अुन्हे गाधीजीके साथ जोडे रखती थी। गाधीजी कहते है सो भी सही है, फिर भी किसी राज्यमे प्रजा दुखी होती हो तो अुसकी पुकार सुनाना और दुख देनेवाले राजाकी खबर ले डालना भी बुरा नही — अैसा कुछ अुनका विचार था। अिसलिअे अुनकी कोशिश अेक ओर देशी राज्योकी प्रजाके नेताओको समझानेकी और दूसरी तरफ अैसे अुपाय करनेकी रहती, जिससे गाधीजीका हृदय अिन कार्यकर्ताओके प्रति कोमल रहे।

अेक बार मैने देशी राज्योकी प्रजाके किसी समयके नेता श्री अमृतलाल सेठसे यह सवाल पूछा था कि देशी राज्योमे काम करनेके विषयमे गाधीजी और सरदार वल्लभभाअीकी नीति तथा अखिल भारतीय देशी राज्य

प्रजा-परिषद् और धुमकी नीतिमे अुत्तर दक्षिणका अन्तर होने पर भी, दोनोकी कार्यपद्धति और प्रश्नोको हल करनेकी दृष्टि अलग होते हुअे भी बापा दोनो पक्षके लोगोके साथ अच्छा सम्बन्ध कैसे बनाये रख सके? तब अुन्होने अुत्तर दिया था कि बापाका सदा अेक सूत्र था और वह सूत्र वे समय समय पर मुझे भी सुनाते थे। वह सूत्र था "गाधीजी सन्त है। सन्तका जी मत दुखाओ।" जब जब हमारे बीच तीव्र मतभेद पैदा होते, सघर्ष अुत्पन्न होते, तब तब वे यह अेक ही वाक्य हमे बार बार सुनाते। दूसरी तरफ हमारी प्रत्येक आवश्यकताके क्षणमे, कमाटीकी घडीमे, दुखमें, आफतमे वे हमारे पास ही खडे होते थे, अिसलिअे अुनके वचनोको भी हमे कअी बार मानना पडता था। अिस प्रकार बापा अिन दो भिन्न भिन्न तत्त्वोको जोडनेवाली कडी बन गये थे।

सरदारके साथ भी देशी राज्योके प्रश्नके सम्बन्धमे जब गरमागरम बहस हो जाती, तब वे कहते कि "तुम्हे सरदारसे मिलजुलकर रहना चाहिये।"

अिस समझौतेकी नीति और सहानुभूतिपूर्ण रवैयेके कारण ही ठक्करबापा दोनो पक्षोकी प्रीति प्राप्त कर सके और आगे चलकर देशकी शक्ति बढ जानेके बाद जब काग्रेसने देशी राज्योकी नीतिमे फेरबदल करके राजकोटमे सत्याग्रह किया, अुसके बाद तो सरदार और प्रजा-परिषद्के बीचका अन्तर बिलकुल घट गया। यह परिणाम लानेके लिअे जिन थोडेसे लोगोने प्रयत्न किये, अुनमे बापाका हिस्सा बहुत बडा था।

१९४७ मे स्वराज्य मिलनेके पश्चात् सरदारने थोडे ही महीनोमे बापाके शब्दोमे कहे तो 'जादूकी लकडी' फेरकर भारतके तमाम देशी रजवाडोका प्रश्न हल कर डाला और अुन्हे स्वतत्र भारतके साथ जोड दिया। यह देखकर तो बापाका हर्ष समाता ही नही था। सरदारके प्रति वे यदाकदा धन्यवाद और हर्षके अुद्गार प्रकट करते ही रहते थे। सरदारकी अिस सफलताके लिअे बापाने अुन्हे बारम्बार मुक्तकठसे श्रद्धाजलि दी है और कहा है कि, "ब्रिटिश सत्ताके जमानेमे देशका जो तीसरा हिस्सा बिलकुल अलग-सा था, अुसे अब भारतके साथ मिला देनेका श्रेय अकेले सरदार साहबको देना चाहिये।"

अिस प्रकार ठक्करबापाने अपनी सूझबूझके अनुसार १९२५-२६ मे देशी राज्योकी प्रजाके हितके लिअे मेहनत की और जब जब अुसके लिअे काम करनेका मौका मिला, तब तब यथाशक्ति प्रयत्न किया। देशी राज्योकी प्रजा अुनके अिस परिश्रमके लिअे अुन्हे हमेशा याद करेगी।

१९३०-३२ की लड़ाओ

१९३० का साल जैसे देशके लिअे अेक परीक्षाका वर्ष था, वैसे ही भील-सेवा-मडलके लिअे और अिस कारण ठक्करबापाके लिअे भी था। लाहौर काग्रेसका पूर्ण स्वाधीनताका प्रस्ताव, गाधीजीका स्मरणीय दाडी-कूच आदि घटनाओने देशभरमे लडाओका अुग्र वातावरण पैदा कर दिया था। अैसे समय भील-सेवा-मडलमे सम्मिलित युवा देशभक्त सेवक अुस हवासे अछूते कैसे रह सकते थे? वातावरणकी छूत तो अुन्हे कभीसे लग चुकी थी, ओर अुनमे से अुग्र कार्यकर्ता श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त, श्री पाडुरग वणीकर, श्री सुखदेव-भाअी वगैरा लडाओमे जानेको अुतावले हो रहे थे। बापा अुन्हे समझा रहे थे कि भील-सेवाका आजीवन व्रत लेनेवाले सेवक लडाओमे नही जा सकते। लडाओ कोओ बुरी नही। लडाओमे सबको जाना चाहिये। यह अुनका धर्म भी है। फिर भी जो लोग अेक विशिष्ट कार्यसे बंधे हुअे हैं और जिन्होने अेक खास जिम्मेदारी सिर पर ले रखी है, वे अुस कामको अधूरा छोडकर अथवा खटाओमे डालकर नही जा सकते। अुधर कार्य-कर्ताओकी दलील यह थी कि अिस समय जब सारे देशमे आग लगी हुओ है और देशकी स्वतन्त्रताके लिअे सर्वस्वकी बाजी लगा देनेको गाधीजी सबका आह्वान कर रहे है, तब कोओ भी सस्थाको लिये बैठा नही रह सकता। अुनकी सबसे ठोस दलील यह थी कि "साबरमती आश्रमसे बडी तो कोओ सस्था नही? वहासे यदि ८० आश्रमवासियोको लेकर गाधीजी आज ब्रिटिश साम्राज्यके विरुद्ध मैदानमे अुतर आये है और अपना सर्वस्व होमनेको निकल पडे है, तो फिर हमारी क्या बिसात? स्वराज्य आ जायगा तो सस्थाअे अनेक पैदा हो जायगी। परन्तु यदि हमारे दोषसे स्वराज्य पीछे हटेगा, तो ये सस्थाये भी नही टिक सकेगी।" सच बात यह थी कि अुस समय गाधीजीने देशमे अैसा गरम वायुमडल बना दिया था कि कोओ भी स्वाभिमानी और तेजस्वी आदमी बैठा नही रह सकता था। नौजवान तो खास तौर पर! फिर अूपरके अेक दो सेवक तो अिस शर्त पर मडलमे शरीक हुअे थे कि भविष्यमे स्वतन्त्रताकी लडाओ छिडी तो अुसमे शरीक होगे।

बापाने साथियोसे खूब बहस की और अुन्हे लडाओमे न जाने और मडलका काम करनेके लिअे ठहर जानेको बहुतेरा समझाया, बिनती की,

परन्तु कार्यकर्ता अपने निश्चयमे अटल रहे। अुनका यह अटल निश्चय था कि भले ही मडलसे स्थायी रूपमे त्यागपत्र देकर अलग होना पडे, लेकिन लडाओीमे तो हर हालतमे जाना ही चाहिये। अुनके साथ चर्चा करते करते बापाको बडा क्रोध चढ आया और अन्तमे वे रो पडे। अुनके रुदन और गहरी व्यथाका असर कार्यकर्ताओके दिलो पर हुआ। वे भी गद्‌गद हो गये। लेकिन वे अपने निर्णयमे फेरबदल नही कर सके। व्यक्तिके दु खदर्दसे देशका दु खदर्द अुनके लिअे अधिक था। अिसलिअे वे अन्त तक अटल रहे। अन्तमें बापा झुक गये। अुन्होने अुदारता दिखाकर मध्यम मार्ग निकाला। अपने साथियोको अिकट्ठा करके अुन्होने बताया कि तुम सबको लडाओीमे जाना हो तो भले जाओ। मै तुम्हे रोकूगा नही। लडाओीमे जानेकी सबको छूट दूगा। परन्तु साथ साथ मडलकी जिम्मेदारी भी अदा करनी होगी। यह काम भी चलता रहे और लडाओीमे भी भाग लिया जा सके, अैसी कोओी व्यवस्था सोचनी चाहिये। मै अैसा कुछ करूगा। अिस बीच तुम मुझे अपने ढगसे सारा प्रबन्ध करने दो। अन्तमे कार्यकर्ताओने मजूर किया और बापा जैसा कहे वैसा करनेकी तैयारी बताओी।

बापाने भी अुस समयका वातावरण देखकर श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त, श्री पाडुरग वणीकर, श्री सुखदेवभाओी, श्री डाह्याभाओी नायक, श्री मगलदास आर्य और श्री चूनीलाल वगैराको भील-सेवा-मडलसे कामचलाअू रूपमे मुक्त करके लडाओीमे जानेकी छूट दी और स्वय मडलका सारा भार वहन किया।

लडाओीके कारण और अनुपस्थित रहनेवाले कार्यकर्ताओके कारण सस्थाके कामको कमसे कम नुकसान पहुचे और अुसकी सारी प्रवृत्तिया पूर्ववत् जारी रहे, अिसका अुन्होने बराबर ध्यान रखा। दूसरी तरफ जो भी भाओी जेल चले गये अुनके परिवारोकी अेक बुजुर्गके नाते सभाल रखी। मडलके हर कार्यकर्ताके सुखदु खकी और कुटुम्बकी चिन्ता अुन्होने अपने सिर पर ले ली। जिनके परिवार आर्थिक तगीमे फस गये थे अुनके खर्चके लिअे प्रबन्ध किया; अितना ही नही, सौराष्ट्रके कुछ कार्यकर्ता, जो ठक्करबापाके ससर्गमे आये थे, कठिनाओीमे तो नही है, अिसकी जाच कराकर अुनके परिवारोकी भी दूर बैठे बैठे चिन्ता रखी और अुन्हे सहायता पहुचाओी।

अिस प्रकार बापा भारत-सेवक-समाजकी नीतिके प्रति वफादार रहकर सीधी लडाओीसे दूर रहे थे। फिर भी अुस नीतिकी मर्यादामे रहकर लडाओीमे लगे हुअे सैनिकोकी मदद करते थे। अिसके बावजूद अुनके मनमें द्वद्व शुरू हो गया था। समाजमे ली हुओी प्रतिज्ञाके अनुसार अुन्हे सस्थाकी

असभव था। अिसी तरह वह लम्बे समय तक कानून भगकी मूक साक्षी वनकर सव कुछ देखा करे और सत्ताकी अवहेलनाको वरदाश्त कर ले, यह भी नही हो सकता था। अिसलिअे सरकारने सविनय कानून भग करनेवाले काग्रेसके सैनिको और अुनका समर्थन करनेवाले प्रजाजनोको पकडकर अुन पर अदालतमें वाकायदा मुकदमा चलानेका सीधा मार्ग ग्रहण करनेके वजाय अुन पर जोर-जुल्म करना शुरू कर दिया और अुसकी मात्रा दिनोदिन अितनी वढा दी कि जुल्म ठेठ अमानुषिक हद तक पहुच गये।

देशके काग्रेसी नेता ही नही, अराजनैतिक पुरुष और नरम नेता भी सरकारके जुल्मोसे चौक अुठे थे। व्रिटिश न्याय-नीति और शुद्ध वुद्धिमे नरम नेताओने जो विश्वास रखा था, अुसे भी नौकरशाहीकी अिस अत्याचारी नीतिने वडा आघात पहुचाया था। वापा भारत-सेवक-समाजके सदस्यकी हैसियतसे गुजरातमे सव जगह घूमते थे और जहा कही जुल्म होता वही पहुचकर सरकारके दुष्कृत्योका भडाफोड करते थे।

धोलेरामे पुलिस सैनिको पर जुल्म कर रही है और नमक लाने और वेचनेवालोको पकडकर अदालतमे खडा करनेके वजाय कुत्ते-विल्लियोकी तरह नोचकर अेक अेक सैनिक पर पाच पाच पुलिसवाले टूट पडते है और अुनके हाथोसे नमक छीनकर अुन्हे धूलमे घसीटते है, यह वात सुनकर वापा धोलेरा पहुचे। सव वातोकी खुद जाच की। सैनिकोके वयान लिये और अुनके वारेमे वक्तव्य प्रकाशित करके सरकारकी नीतिकी कलअी खोली।

अिसी प्रकार जव लडाअीने अधिक अुग्र रूप धारण किया और धरासणामे पुलिसने काग्रेसके स्वयसेवको पर अितिहासमे कभी न सुना गया निर्दय लाठी प्रहार किया और वहुतमे स्वयसेवकोको पशुओकी तरह मार-पीटकर अुनकी हड्डिया तोड डाली, तव वे धरासणाकी रणभूमिकी तरफ दौडे गये और अपनी नजरके सामने पुलिसने जो लाठी प्रहार किया अुसके वारेमे वक्तव्य प्रकाशित करके सरकारके आचरणकी अुन्होने निन्दा की। साथ ही मडलके मत्री सुखदेवभाअी अेक टोलीमे सैनिक वनकर धरासणा पर धावा करने गये अुस दिन वापा समरभूमि पर मौजूद थे और जव सुखदेवभाअी पुलिसकी लाठीसे घायल होकर समरागणमे गिर पडे तव अुन्हे प्रेमसे अुठाकर अुन्होने डोलीमे डाला और दवाखाने ले गये तथा अुनकी मरहमपट्टी वगैरा हुअी तव तक वहा खडे रहे। खेडा जिलेके अेक गावमे पुलिसने गोली चला दी थी और अुसके फलस्वरूप अेक नौजवानकी अुसी समय मृत्यु हो गअी थी। अिस सम्वन्धमे वकीलोके साथ रहकर वापाने जाच की थी।

मुहम्मदाबादमे शराबकी दुकान पर पहरा देनेवाले स्वयंसेवकों पर पुलिस असह्य जुल्म करती है, यह बात सुन कर बापा मुहम्मदाबाद दौड़े गये और वहाकी स्थिति आखो देखनेके लिअे दुकान पर पहुच कर अुस समयके कानूनके अनुसार दुकानसे जितनी दूर खडे रहना चाहिये था अुतनी दूर खडे रहे। परन्तु अुस समय ब्रिटिश नौकरशाहीने दमनका ही राज चला रखा था। गाधीजी जैसेको भी अुसने मुक्त नही रखा था। जिसने भारतकोकिला सरोजिनी नायडू जैसी भारतकी प्रथम सन्नारी और कवयित्रीको घटो तक घेर कर खुली धूपमे खडा रखा और पानी तक नही पीने दिया, जिसने नरहरि परीख जैसे गुजरातके प्रथम पक्तिके सेवको पर पशुओ जैसा लाठीप्रहार करके सिर फोड दिये, अुस सरकारका मिजाज बिगड गया था। कोओी कितना ही तटस्थ क्यो न हो, वह किसी भी आदमीको सरकारी जुल्मोकी जाच नही करने देती थी। किसी भी व्यक्तिका हस्तक्षेप सहन नही किया जाता था। ठक्करबापाका नाम भी पुलिसकी काली फेहरिस्तमे दर्ज हो चुका था, अिसलिअे जब वे मुहम्मदाबादमे काग्रेसी स्वयसेवकोके शराबखानेके पहरेका निरीक्षण कर रहे थे, तब अुन्हे १९३० के आर्डिनेंस न० ५ के मातहत पकड लिया गया और अुन पर सरकारी कामकाजको जबरन् रोकनेका आरोप लगाया गया।

सच बात यह थी कि बापा सरकारी कर्मचारी या पुलिसको अुसका फर्ज अदा करनेसे रोकनेके लिअे नही, परन्तु कर्तव्यकी कानूनी मर्यादाका अुल्लघन करके पुलिस स्वयसेवको पर जो नाजायज जुल्म कर रही थी अुसे आखो देखने और यह बात सच हो तो सरकारी नीतिका पर्दाफाश करके जनताके सामने रखनेको वहा गये थे। और यही बात सरकारी कर्मचारियोको खटकती थी, अिसलिअे अुन्हे पकड लिया गया।

अुनकी गिरफ्तारीका समाचार देनेको श्री चूनीलाल परीखने भारत-सेवक-समाजके नाम जो पत्र लिखा, वह तथा श्री छगनलाल जोशीका पत्र अिस हकीकत पर अच्छा प्रकाश डालते है।

श्री चूनीलाल परीखने अपने ३–८–'३० के पत्रमे अिस प्रकार लिखा था

"सविनय निवेदन है कि भील-सेवा-मडलके अध्यक्ष श्री अमृतलाल ठक्करको, जो खेडा जिलेमें पुलिसकी कार्रवाओी देखने आये थे, मुहम्मदाबादके थानेदारने कल दोपहरको साढे तीन बजे गिरफ्तार कर लिया है। श्री ठक्कर मुहम्मदाबादके शराबखानेसे कुछ फुटकी दूरी पर खडे रह कर यह देख रहे थे कि स्वयसेवक जो पहरा दे रहे है वह कितना शान्तिपूर्ण है और असे शान्त पहरेदारोके साथ पुलिस कैसा बर्ताव करती है।

" पहले दिन धरना देनेवाले स्वयसेवकोको पुलिसने खूब मार मारी थी, अिसलिअे आज भी अैसा अमानुषिक और गैरकानूनी कृत्य पुलिसके हाथो न हो, यही वे देखना चाहते थे। "

साबरमतीके व्यवस्थापक श्री छगनलाल जोशी अुस समय बाहर थे। अुन्होने भी अिस घटनाके सम्बन्धमे लिखा था कि,

"मुहम्मदाबादमे हमेशा ११ से १८ की सख्यामे पिकेटिग करनेवाले स्वयसेवकोको दिनमे पकडा जाता था और बादमे पुलिस चौकी पर ले जाकर अुन पर निर्दयतासे लाठीप्रहार किया जाता था। अुन्हे दस दस घटे खडे रहनेको मजबूर किया जाता था और अुनमे से अेक स्वयसेवकके गुह्याग भी दबाये गये थे।"

अिस प्रकार ठक्करबापाका अुद्देश्य सिर्फ अितना ही देखना था कि पुलिसके आदमी अिन स्वयसेवकोको बेजा तौर पर परेशान न करे, गैर-कानूनी ढगसे मार न मारे और अुन पर दूसरा जुल्म न करे, बल्कि अुनके विरुद्ध कानूनी कार्रवाअी करे। परन्तु पुलिस-विभागकी अुस समयकी अुद्धतता की कोअी सीमा नही थी। वह बौरा गया था। अुसका कुछ अैसा खयाल था कि "कानून भग करनेवाले अुच्छृखल लोगोकी मददको आनेवाला यह ठक्कर कौन है?" अिसलिअे अपने बीचमे आनेवाले ठक्करबापा जैसे विनीत और तटस्थ पुरुषको भी अुसने झूठा अभियोग लगाकर पिंजडेमे बन्द कर दिया था।

३ तारीखको दोपहरमे बापाके पकडे जानेके बाद आम तौर पर यह माना जाता था कि अुनके मुकदमेकी सुनवाअी दूसरे दिन शुरू हो जायगी। परन्तु अिसके बजाय सुनवाअी ८ तारीखको शुरू हुअी। अिन चार दिनोमे सरकारी कर्मचारियोने यह आशा रखी थी कि यदि ठक्कर आगेसे पिकेटिंग न करनेका वचन दे तो अुन्हे छोड दिया जाय। परन्तु अिस बारेमे वे पूरे असफल रहे। भारत-सेवक-समाजकी नीतिके अनुसार वे ब्रिटिश हुकूमतके किसी भी कानूनको भग नही करना चाहते थे। परन्तु साथ ही पिकेटिंग करनेका अपना कानूनी अधिकार भी नही छोडना चाहते थे। अिसीलिअे अुन्होने किसी भी प्रकारका वचन देनेसे साफ अिन्कार कर दिया। अिसलिअे बादमे पुलिसको अुनके विरुद्ध मुकदमा चलाना पडा।

८ तारीखको पहले ही दिन केसकी सुनवाअी हुअी। अिसका वर्णन बापाने ही अपने अेक पत्रमे किया है

"मुकदमा बहुत अच्छी तरह चला। पहले पहल पुलिस थानेदार मुनशीकी गवाही ली गअी। गवाही बहुत सक्षिप्त थी। अुसमे मुनशी साफ

झूठ वोले। गवाहीमे अुन्होने कहा कि 'मै २ सितवरको वारह और सवा वारहके वीच शरावकी दुकानके पास मौजूद था और मैने ठक्करको पद्रह स्वयसेवकोके साथ पामके पेडके नीचे खडे देखा था।' अैसा मफेद झूठ मुझसे सहन नही हुआ। अिसलिअे मैने मजिस्ट्रेटको साफ कह दिया कि यह आदमी सरासर झूठ वोल रहा है। जिरहमे अुनकी पूरी फजीहत हुआी। वे सर्वथा असफल रहे। अपना अेक झूठ छुपानेको अुन्होने और वहुतसी झूठी वाते पैदा कर ली और दूसरी कओी असवद्ध वाते अुन्हे कहनी पडी।

"तीनसे छ वजे तक मामलेकी सुनवाओी फिर हुआी। १ और ३ के वीचका वक्त समझौतेके निष्फल प्रयत्नमें गया। अव ११ तारीखको मुकदमेकी सुनवाओी फिर होगी।"

अुन्हे दो सप्ताह हवालातमे रखा गया। वापा जव तक हवालाती कैदी थे तव तक हवालातमे अुनके साथ कैसा वर्ताव किया जाता था, अिस वारेमे वे लिखते हैं

"अव मुझे खेडा जिलेमे वदल दिया गया है। वहा मुझे कैदीकी तरह नहीं, परतु शाही मेहमानकी तरह रखा जाता है। हा, सगीन लगी हुआी वदूकवाले सतरी पहरा जरूर देते हैं। परतु अुन्हे अितनी दूर रखा जाता है कि मुझे दिखाओी न दे। मुहम्मदावादसे मेरी वदली खेडा होनेसे मैं प्रसन्नचित्त रहता हू और तवीयत भी वहुत अच्छी रहती है। साथ ही दाहोदके अेक कारकुनको मेरे पास रहने दिया जाता है। अिस प्रकार मेरी गाडी अच्छी तरह चल रही है।"

मुकदमेकी दो तीन पेशिया पडी तो वापा अुकता गये। जिस ढगसे मुकदमा चल रहा था और जिस प्रकार पुलिस कर्मचारी झूठका जाल विछाते जा रहे थे, अुस सवको देखकर वापाके मनमे जम गया कि अव मुकदमेमे कोओी दम नही रहा। अिसलिअे यह जानकर कि अिसे अधिक लम्वानेमे सार नही, अुन्होने सफाओी देना छोड दिया और अपने वकीलको यह वात वता दी। अदालतमे सिर्फ अेक लम्वा वयान दिया और अुसमे जो कहना था सो कह दिया। अिस वयानमे अुन्होने कहा

"मेरे विरुद्ध चल रहे मुकदमेकी सुनवाओीकी अिस मजिल पर मैंने अपने विद्वान मित्र श्री सोमाभाओीसे विनती की है कि अव वे अिस मामलेमे मेरा वचाव करनेकी और तकलीफ न करके सफाओी देना छोड दे। अिस प्रकारके मेरे जल्दीमे या अेकाअेक अुठाये गये कदमकी तहमे कारण अिस प्रकार हैं।

"१ मुझे जिस कामके कारण पकडा गया है, वह काम पूरी तरह जायज है। अितना ही नही, अुसकी जडमे सरकार और मुहम्मदावादके शरावखाने पर पहरा लगानेवाले स्वयसेवक दोनोकी सेवा करनेका अुद्देश्य था। यह तभी हो सकता था जव मै स्वय जाकर देखता कि शरावकी दुकान पर क्या हो रहा है और अिस वारेमे सही वात आम जनताके सामने रखता। परतु थानेदारको यह अरुचिकर और कष्टप्रद मालूम हुआ कि मेरे जैसा वाहरका आदमी अुसके गैरकानूनी व्यवहारमे दखल दे। और अुसने मुझे मौजूदा आर्डिनेसो द्वारा अुसके हाथमे सौपी हुअी निरकुश सत्ताके जोर पर गिरफ्तार कर लिया।

"२ दूसरे मै अेक महीनेसे कुछ अधिक समय जमानत पर छूटकर वाहर रहा, अुस वीच सरकारकी कार्रवाअियोकी मै अखवारोमें आलोचना करू अथवा जहा दगेकी मभावना हो अुस हिस्सेमे जाकर जाच करू अर्थात् सत्य वस्तुका निश्चय करके अुसे जाहिर करू, अिस पर कलेक्टर और जिला-न्यायाधीशने अेतराज किया।

"मेरे अिस कथित अपराधके लिअे मेरे नाम नोटिस तामील किया गया है और अिसका कारण पूछा गया है कि मेरी जमानतका मुचलका क्यो न रद्द कर दिया जाय।

"महोदय, अिस नोटिसके सवधमे मेरा अुत्तर यह है कि मै अपनी किसी भी प्रकारकी स्वतत्रता स्वेच्छापूर्वक छोडना नही चाहता। अिसलिअे आप खुशीसे मेरा जमानत-मुचलका रद्द करके मुझे वापस हिरासतमे भेज सकते है।

"केसकी सुनवाअीके दौरानमे मेरे विरुद्ध तथाकथित जिम्मेदार पुलिस और आवकारी दोनो विभागोके कर्मचारियोके मुहसे वहुतसी नीचताकी हद तक पहुची हुअी झूठ वाते मैने धीरज खोये विना सुनी है। अिनमे भी आवकारी-विभागके अिन्स्पेक्टर श्री मुनशीने अदालतके सामने जो झूठी वाते पेश की, वे तो सचमुच आश्चर्यकारक और स्तव्ध वना देनेवाली थी। जिस दिन मेरे गुनाह करनेकी वात कही जाती है, अुस दिन ११ से ३ के वीच अेक मिनट भी अुपस्थित न होनेके वावजूद शपथ लेकर अुन्होने यह कहनेकी धृष्टता दिखाअी है कि वे वहा तीन घटे मौजूद थे। यह आश्चर्य पैदा करनेवाली वात है। मै अैसे सफेद झूठ वोलनेवाले आदमियोके सामने अिस अदालतमे खडा रहना नही चाहता। और वह झूठ वोले है, अिसका विश्वास अदालतको करा देनेकी मुझे अिच्छा नही होती। वादी पक्ष सरकारी नौकरीसे वाहरका अेक भी स्वतत्र साक्षी पेश नही कर सका। मै पिकेटिंग कर रहा था अथवा

दूसरोको अैसा करनेको भडका रहा था अथवा छूटमे यह जो कहा जाता है कि मेरे साथ पेडके नीचे १५ पिकेटर बैठे थे — यह सब साबित करनेके लिअे वादी पक्ष अेक भी स्वतत्र साक्षी, अर्थात् सरकारी नौकरोके सिवाय अेक भी साक्षी, पेश नही कर सका। यहा तक कि जिन शराब पीनेवालोके बारेमे कहा जाता है कि मैने अुन्हे न पीनेको समझाया, अुनमे से भी अुसे कोअी साक्षी नही मिला।

"मुझ पर मुकदमा चलानेवाले न्यायाधीशसे, जो प्रबध विभागके अधिकारी भी है, मुझे शुद्ध न्याय मिल सकेगा, अिस बारेमे मुझे अिस मामलेके प्रारभमे ही शका थी। फिर भी अन्तमे मित्रो और शुभाशयी साथियोकी बात मानकर अपने मित्र और वकील श्री सोमाभाअीकी हार्दिक सहायता द्वारा अपना बचाव करनेकी बात मैने मजूर की थी। परतु अब मैं पहले तो वादी पक्षकी तरफसे जो झूठ बाते पेश की गअी है अुनसे और दूसरे अिस्तिगासेके वकीलके मुहसे प्रगट होनेवाली सरकारी नीतिसे — जो नीति सचाअीको दबाती है और तथाकथित दगेके हिस्सेमे होनेवाली घटनाओके लोकपक्ष द्वारा वर्णन किये जानेवाले समाचारोका प्रकाशन रोकती है — बिल्कुल अूब गया हू। साथ ही, आपने भी सरकारी नीति व्यक्त करके मुझे यह आदेश दिया है कि तगदिलीके अिन दिनोमें मैं सरकार-विरोधी आलोचना न करू। अिससे मैं अिस निर्णय पर पहुचा हू कि मुझे अिस अदालतमे न्याय मिलनेकी आशा नही रखनी चाहिये। अिसलिअे मैं आपसे केवल वादी पक्षका सबूत सुनकर तथा १५ तारीखको दिये हुअे मेरे बयानमे आपकी मरजीमे आवे वैसा फैसला देनेकी विनती करता हू। आप जो भी फैसला देगे वह मुझे मजूर होगा और अुस सजाको स्वेच्छापूर्वक भोगनेकी मेरी तैयारी है।

"महोदय, अिन दिनोमे किसीको न्याय मिलनेकी आशा क्यो रखनी चाहिये? जब समस्त राष्ट्र महा बलवान और शस्त्रसज्जित ब्रिटिश साम्राज्यके विरुद्ध अहिसक युद्ध करने निकल पडा हो, तब राष्ट्रीय मुक्तिके आन्दोलनसे सहानुभति रखनेवाला मेरे जैसा आदमी अन्यायके फदेसे छूट नही सकता। और अैसा हो तो अुसके लिअे शिकायत नही करनी चाहिये। जब अेक मामूली थानेदारके दर्जेके पुलिस कर्मचारीके दुर्व्यवहारकी जाच करनेके लिअे गैर-सरकारी जाच-समितिको मनाही कर दी जाती हो और अैसी जाचकी घोषणा करनेकी कोअी हिम्मत करे तो अुसे कैदमे डाल दिया जाता हो, जब जिलेके न्यायाधिकारीकी अुपस्थितिमे और अुसकी आखोके सामने खुले तौर पर राष्ट्रीय झडे जला दिये जाते हो, जब सत्याग्रहियोको आसरा देनेवाले

लोगोको राज्य और देशके भयंकरसे भयंकर दुश्मन मानकर जेलमें धकेल दिया जाता हो और अिसी भूमिकी सतानोको अवाछनीय विदेशी मानकर निर्वासित अथवा जेलमे बन्द कर दिया जाता हो, तब मेरे जैसा आदमी अपने लिअे न्याय पानेकी आशा रखे तो वह मूर्खता ही होगी। भले ही मैं यह काम अेक आन्दोलनकारीके रूपमे नही, परतु सामाजिक कल्याणकी दृष्टिसे करता हू, तो भी मेरा अिस सरकारकी अदालतोसे न्यायकी आशा रखना व्यर्थ है।

"वैसे, मैं तो न्यायकी आशा अुस अधिक अूचे न्यायाधीशसे ही रखता हू जो मेरा और आपका दोनोका न्याय सच्चे स्वरूपमे करेगा।

"अीश्वर मुझ पर मुकदमा चलानेवाले झूठे वादी पक्षको सत्य सिखाये और वह अपने दुष्कृत्योके लिअे पश्चात्ताप करे, यही प्रार्थना है।"

अिस प्रकार बापाने अदालतके सामने सच्ची हकीकत पेश करके पुलिस कर्मचारियोके झूठ और सरकारी नीतिरीतिका भण्डाफोड करके अुसकी कडी आलोचना की।

यह बयान हो जानेके बाद न्यायाधीश चाहते तो अुसी दिन फैसला दे सकते थे। परतु अुन्होने तीन दिन बाद अुसका फैसला दिया।

फैसलेमे न्यायाधीशने पुलिसकी बात मान्य रखी और बापाकी बात अमान्य करके कहा कि, "हकीकत अगर जैसा श्री ठक्करने कहा अुसके अनुसार हो तो पुलिसके लिअे अेक निर्दोष मनुष्यको और वह भी श्री ठक्कर जैसी हैसियत और प्रतिष्ठा रखनेवाले व्यक्तिको गिरफ्तार करनेका कोअी कारण नही हो सकता और अिनके जैसे प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध व्यक्तिको झूठे मुकदमेमे फसानेकी पुलिस थानेदारने हिम्मत भी न की होती। सक्षेपमे प्रतिवादी पक्षकी अपेक्षा वादी पक्षकी बात अधिक सच होना सभव है। अिसलिअे अभियुक्तके विरुद्ध अुत्तेजना फैलानेका जो आरोप है, अुसे मैं पूरी तरह साबित हुआ मानता हू और अुसे १९३० के आर्डिनेस न० ५ के अनुसार कसूरवार ठहराकर छ महीनेकी सजा देता हू।"

अिस प्रकार बापाको छ मासकी सजा हुअी और अुन्हे साबरमती जेलमें भेज दिया गया। वहासे फिर मित्रोकी सलाह और दबावके वश होकर अुन्होने अूपरकी अदालतमे अपील की। नडियादकी सेशन्स कोर्टमें बापाकी तरफसे १९ अक्तूबरको अपील दायर कर दी गअी। सौभाग्यसे अुसी दिन अपीलकी सुनवाअी हुअी, जिसमे दोनो पक्षोकी दलीले सुननेके बाद फैसला देते हुअे नडि-यादके सेशन्स जज पटवर्धनने बताया कि, "अिस मामलेमे यह स्पष्ट नहीं होता कि अभियुक्तने किसको परेशान किया। अिसलिअे मैं नीचेकी अदालतके

दिये हुओ फैसले और सजाको रद्द करके यह हुक्म देता हू कि सारा मुकदमा फिरसे चलाया जाय।"

अिस प्रकार लगभग सवा महीने साबरमती जेलमे सजा भोगनेके बाद बापाको छोड दिया गया।

यह सवा महीना बापाने साबरमती जेलमे किस प्रकार विताया, अिसकी झाकी अुनके ३ अक्तूबरको लिखे हुओ अेक पत्रसे मिलती है। अुन्हे 'ब' वर्गमे रखा गया था, फिर भी वे अपने हजारो काग्रेसी भाअियोकी, जिन्हे 'क' वर्गमे रखा गया था, खुराक दाल-रोटी तथा भाजी-रोटी स्वेच्छापूर्वक खाते थे और अुसीमे आनद मानते थे। अुस पत्रमे अुन्होने लिखा था

"मुझे यहा आये दस दिन हुओ। पहले ही दिनमे मैं यहाके वातावरणके अनुकूल बन गया हू और अुसीके अनुसार मैंने अपना जीवनक्रम बना लिया है। जैसा तुम जानते हो, मुझे 'ब' वर्गमे रखा गया है। अिससे 'अ' वर्ग मे रखने पर मुझे जितने मित्र मिलते अुनकी अपेक्षा बहुत अधिक मित्र और साथी मिल गये है। साथ ही तुम यह भी जानते हो कि मैं रेलमे शायद ही दूसरे दर्जेमे सफर करता हू। नियमके तौर पर ही मैं तीसरे दर्जेमे यात्रा करता हू और जब लोगोकी भीडमे होता हू तभी मुझे सुख होता है। अिसलिअे यहा अधिक विस्तृत सख्याके मित्रोके ससर्गमे मुझे आनन्द आता है। 'अ' वर्गमे केवल १५-२० भाअी ही है, जब कि 'ब' वर्गमे साठ-सत्तर लोग है। मानो अितने सारे सदस्योका अेक बडा परिवार बन गया है। और जैसे बाहर जहा जहा जाता हू वहा सबका बापा बन जाता हू वैसे यहा भी अिन सबका बापा बन गया हू।

"खुराकके मामलेमे मै पूरी तरह सुखी हू। मेरे करोडो देशबधु विविध वानगियोसे रहित जो सादा भोजन करते है वह मुझे यहा जेलमे करते आनद होता है। तुम्हे शायद पता होगा कि हममे से अधिकाश भाअी स्वेच्छापूर्वक हल्कीसे हल्की किस्मका ('क' वर्गका) भोजन लेते है। परतु मुझे तो यह भी अब तक काफी अनुकूल आया है। और यदि मैंने बहुत वजन नही खोया अथवा बीमार न पडा, तो मैं अुसी पर डटा रहना चाहता हू।

"मैं रातको नौ बजे सो जाता हू और पाच बजे अुठता हू। दोपहरको भी थोडा लेट लेता हू। अिस प्रकारकी नियमितताके कारण मेरा स्वास्थ्य बिलकुल अच्छा रहता है। अीश्वरने मुझे बहुत अच्छा शरीर और मजबूत

काठी दी है और अुसे मैं नियमित आदतो और अच्छे आहार-विहारमे कायम रख सका हू।"

बापाको जेलमे सूतकी गेद बनानेका काम दिया गया था, यह अुनके भाअी डॉक्टर ठक्कर साहबके नाम लिखे अेक पत्रसे जान पडता है।

नडियादके सेशन्स जजके सजा रद्द कर देनेके बाद ठक्करबापा छूट गये। और नये सिरेसे मुकदमा चलानेकी पेशीकी तारीख पहली दिसम्बर पडी। परतु अुस दिन या बादमे मुकदमा चला ही नही, क्योकि जिस आर्डिनेन्सके अनुसार बापा पर अभियोग लगाया गया था, अुसकी मीयाद २९ नवम्बरको पूरी हो जानेसे वह रद्द हो गया। अिसलिअे अुस आर्डिनेसके मातहत सब मामले खारिज हो गये। बापाका मुकदमा भी अिसी तरह खारिज हो गया और अुन्हे किसी भी प्रकारके बधनके बिना पूरी तरह मुक्ति मिल गअी।

जेलके बाहर आनेके बाद भील-सेवा-मडलका कार्य बाट देख रहा था। १९३० की लडाअीके दौरानमे केवल बापाके मुख्य साथियोने ही नही, परतु मडलके २० विद्यार्थी और अन्य शिक्षकोने भी लडाअीमे सक्रिय भाग लिया था और कारावास भी भोगा था। अिस प्रकार देशव्यापी राष्ट्रीय युद्धमे अुन्होने अपना हिस्सा अदा किया था। बापाके तैयार किये हुअे कार्यक्रमके अनुसार मडलके दो आजीवन सदस्य श्री अबालाल व्यास और रूपाजी परमारकी कानून भग करके जेल जानेकी बारी अिसके बाद आनेवाली थी। अितनेमे गाधी-अर्विन समझौता हो गया और वे अिस सौभाग्यसे अुस समय तो वचित रहे।

परतु आगे चलकर अुन्हे भी यह सोभाग्य मिला। १९३१ मे जेलसे छूटकर मडलके कार्यकर्ता थोडी थकान मिटाकर मडलका काम आगे बढाये, अितनेमे तो गाधी-अर्विन समझौता टूट गया और देशभरमे नेताओसे लगाकर साधारण कार्यकर्ताओ तककी बडे पमाने पर गिरफ्तारिया हुअी। भील-सेवा-मडल सामाजिक कार्य करनेवाली सस्था होने पर भी पिछले वर्ष अुसके मुख्य कार्यकर्ताओ और नेताओने लडाअीमे भाग लिया था, अिसलिअे अिस बार मडल सरकारके दमनचक्रसे बच नही सका। अेक बापाके सिवाय अुसके अधिकाश आजीवन सदस्योके नाम सरकारकी काली सूचीमे आ गये थे। अिसलिअे गुजरातमे जो सामूहिक गिरफ्तारिया हुअी, अुनमे मडलके मुख्य आजीवन सदस्य पहले ही झपट्टेमे आ गये।

बापा अिस बार बिलकुल अकेले रह गये। मडलके मुख्य नेता जेलमे थे। गुजरात प्रान्तीय समितिसे मडलको जो आर्थिक सहायता अब तक मिल

रही थी, वह लडाओीके कारण वन्द हो गओी थी। दूसरे दान भी अुगाहनेवालेके अभावमे कम मिले थे और खर्च तो लगभग अुतना ही रहा। अिसके सिवाय जेल गये हुअे कार्यकर्ताओकी भी सभाल रखनी थी। वापाने अिस वार सारी रचना जडसे वदल डाली। सस्थाका खर्च विलकुल कम कर दिया। मडलका वोझा अुन्होने गुजरातकी अलग अलग शिक्षा-सस्थाओ पर डाल दिया। जो भील विद्यार्थी आठ-दस वर्ष सस्थामें तालीम पाकर अग्रेजी पढने लगे थे, अुन सवको चरोतर शिक्षा मडलमे भेज दिया गया। कुछको देवगढ-वारियाकी अग्रेजी पाठशालामे भेज दिया गया। वटओी और छपाओीका काम सीखनेवाले विद्यार्थियोको भी वाहर भेज दिया। मीराखेडी आश्रममे वुनाओी अुद्योग मदिर स्थापित किया गया। भील कन्याओको सूरतके वनिता विश्राममे भेजकर अुनकी आगेकी पढाओीके लिअे व्यवस्था की। साथ ही १९३०-३२ की जागृतिसे लाभ अुठाकर पाठशालाओमे भील कन्याओको अधिकाधिक सख्यामे भरती करनेके लिअे प्रोत्साहन दिया। अुन्हें खास तौर पर छात्रवृत्तिया देनेका अिंतजाम किया।

भील विद्यार्थियोके सिवाय कार्यकर्ताओके प्रति भी जिम्मेदारी अदा करनी थी। वापाने जेल गये हुअे कार्यकर्ताओके कुटुम्वोको थोडी वहुत मासिक रकम मिलते रहनेका प्रवध किया। और कुछको तो अपने साथ रखकर अेक ही घर और अेक ही भोजनालय वना दिया। अिस कठिन स्थितिमें किसीको तगी या अभावका अनुभव नही होने दिया। भील-सेवा-मडलके अेक प्रमुख कार्यकर्ता श्री डाह्याभाओी नायक अिस सवधमे लिखते है "वापाके साथ काम तो वहुत वर्षोसे किया था, परतु अुनके साथ अेक कुटुम्वीजनके रूपमे रहने और घरके वडेके तौर पर पिताके रूपमे वे कितने प्रेमल है, छोटेसे वडे तक सवको वे कितनी अुष्णता प्रदान करते है, अपनी सुविधा-असुविधाका खयाल रखे विना छोटेसे छोटे कुटुम्वीजनकी सुविधाकी जल्दी व्यवस्था कर देनेकी अुनकी कितनी कोशिश रहती है, अिन सव वातोका अवर्णनीय अनुभव जव मैं अुनके साथ अपनी पत्नी और वच्चो सहित रहा तभी हुआ। वापाके कार्यकी सफलताकी जो अनेक कुजिया थी अुनमे से यह मुख्य कुजी थी, अिसकी मुझे प्रतीति हो गओी।"

२३

तपकी सिद्धि

१९२२–२३ से १९३२–३३ तकके दस वर्ष पूरे करके भील-सेवा-मडलने सेवाकार्यकी पहली मजिल पूरी की। अिन दस वर्षोमे ठक्करबापा और अुनके साथियोने कितनी कडी तपश्चर्या की, कैसी साधना की और अुस तपस्याके अतमे अुन्हे क्या मिला? अुन्होने क्या सिद्धि प्राप्त की?

केवल स्थूल दृष्टिसे ही देखे तो अिन दस वर्षोमे जिस भील प्रदेशमे अज्ञान, दरिद्रता, वेकारी, गरीवी और वहम फैले हुअे थे, अुसके भीतरी हिस्सोमे केन्द्र खोलकर पाठशालाअे और आश्रम स्थापित किये और हर साल औसतन् ५०० बालकोको शिक्षा दी। अिसी तरह प्रति वर्ष करीब २०० बालकोको आश्रमोमे रखकर अुन्हे सस्कारी जीवनकी तालीम दी। अुन्हे वाचन, लेखन, गणित और हिसाब-किताबके अलावा खेती, खादी-विद्या, सिलाअी, वढअीगिरी और स्काअुटिग अित्यादि विषयोका ज्ञान देकर कार्य-क्षम बनाया और अिस प्रकार भीलोके लगभग दो से तीन हजार कुटुम्बोमे पढे-लिखे विद्यार्थी रखकर अुनके आचार-विचार और जीवनमे परिवर्तन किया। दाहोद-झालोद अिलाकेमें दो तीन जगह दवाखाने खोलकर हजारो बीमारोको आयुर्वेदकी सादी दवाओ द्वारा सहायता दी। सहकारी समितियो और खादी द्वारा हरिजनो और भीलोको साहूकारोंके पजेसे छुडाया। सरकारी कर्मचारियोके जुल्म और बेगारसे भील भाअियोको मुक्ति दिलवाअी। शराबके भयकर व्यसनसे अनेकोको छुडवाया। केवल लगोटी पहनकर जगलमे निरुद्देश्य जीवन बितानेवाले भीलोको सिखा-पढाकर अिस तरह तैयार किया कि भारतके स्वातत्र्य सग्राममे अिन लोगोने भी अपनी कुर्बानी देकर हाथ बटाया। अज्ञान, वहमी और गरीब भीलोमे से स्वातत्र्य सग्रामके सैनिक खडे किये। अितना ही नही, बाहरसे पैसे आदिकी भीख मागकर लगभग पाच लाख रुपयेकी रकम बापाने अकाल-निवारण, ऋण-निवारण और शिक्षाके रूपमे भील-सेवा-मडल द्वारा खर्च की। तालुकेमे दो जगह राम-मदिरकी स्थापना करके भीलोको वहम और जादू-टोनेसे छुडाया और सबसे बडी सिद्धि तो यह थी कि भील लोगोके मानसमे आमूल परिवर्तन कर दिया। बापाकी तपश्चर्याने अिन बिखरे हुअे, लहरी और बहादुर किन्तु डरपोक, शराब और ताडीमें फसे हुअे और गले तक व्यसन और कर्जमे डूबे हुअे भीलोमे से

संयमी, सदाचारी, मितव्ययी और अुपयोगी कार्यकर्ता तैयार किये। अिसकी प्रतीति भीलोंके सबधमे अुन्हींके दो अलग अलग जातिभाअियोंकी अलग अलग समय पर रची हुअी भीली भाषाकी कविताअें अच्छी तरह करा देती है।

बापाके भील-सेवा-मडलकी बुनियाद डालनेसे पहलेके सुधारोंसे दूर रहे असस्कृत भीलका चित्र देखिये

> मरियु लअीने कामठी लअीने वगडामा अमु फरीअे रे,
> मनखा मारी डगरा मारी वगडामा अमु राजा सिये रे
> चोरी करी, लोक लूटीने दाणा पैहा लायहु रे,
> डगरा ने बोकटा मारी, तेनु माह खाहु रे
> महुडा गाळी हरो पीने कीरियाटी करी नाचहु रे,
> मनमा फावे तेम फरीअे नी खाअी पी मझा करीअे रे

भावार्थ —हम लोग हंसिया और धनुष-बाण लेकर वनमे यथेच्छ विहार करेंगे। मनुष्यों और पशुओंका शिकार खेलेंगे, क्योंकि जगलमें हमारा शासन चलता है, हम जगलके राजा है। हम लोग चोरी करेंगे और लोगोंको लूटेंगे और अुनसे अनाज और पैसे छीनकर लायेंगे। पशुओं और बकरोंको कत्ल करके अुनका मास खायेंगे। महुअेकी शराब बनाकर खूब पीयेंगे, मत-वाले बनकर नाचेंगे और शोरगुल मचायेंगे। मनमे आये वैसे वनमे विहार करके और खा-पीकर मजा अुडायेंगे।

अिस प्रकार अिनकी आकाक्षा और अभिलाषा तीर-कमान लेकर जगलमें घूमनेकी, मनुष्य और पशु मारकर राजा बनकर फिरनेकी, चोरी करके और लोगोंको लूटकर अनाज और रुपया प्राप्त करनेकी, ढोर मारकर अुनका मास खानेकी, महुअेकी शराब बनाकर और अुसे पीकर पागल बनकर नाचने और जैसे जीमें आये वैसे घूमफिर कर जीवनका आनद लूटनेकी थी। अिसके बजाय अुन्हीं भील भाअियोंको बापाके ससर्गसे सुसस्कृत बना हुआ अेक शिक्षित भील कार्यकर्ता अुपदेश देकर कहा ले जाना चाहता है, यह अुसीके शब्दोंमें देखिये। कारण, भील-सेवा-मडल द्वारा भीलोंमे जागृति पैदा करके अुनके जीवनमे सुधार करनेका बापाका जो लक्ष्य था, वह अिस कवितामे भलीभाति बताया गया है।

> हामळो वीरा हामळो बूनो (२) हासी हामी वात रे
> रामजीनी भगति मने हासी वाली लागे
> गावी बावो रवीने बोल्या हामळो वीरा वात रे — रामजीनी
> हरो सोडो माह मोडो, सोडो सोरी साडी रे — रामजीनी

रीटिया कातो, तकली कातो, कातो घरे घरना रे — रामजीनी
ठक्कर बावो रजीने बोल्या हामळो वीरा वात रे — रामजीनी
सोरा सोरी भणावो भूडा, भणो तमु डाहा रे — रामजीनी
बावा रामने मदरे आवो मेलो मेला देवता रे — रामजीनी
सरीकात बावो रजीने बोल्या हामळो वीरा वात रे — रामजीनी
जाजु देवु करो मती, राखो हामी टेक रे — रामजीनी
सुखदेव काको रजीने बोल्या हामळो वीरा वात रे — रामजीनी
मीनत मजूरी करो वीरा, करो हासी खेड रे — रामजीनी
वणीकर दादो रजीने बोल्या हामळो वीरा वात रे — रामजीनी
वीर वणो, होड वणो, राखो हाड कामठु रे — रामजीनी
मोटाजी भगत रजीने बोल्या हामळो वीरा वात रे — रामजीनी
अुगली धुगळी भगति करो, बोलो हासु हासु रे — रामजीनी
डाया गरुजी रजीने बोल्या हामळो वीरा वात रे — रामजीनी
घोरमा बाहेर सप राखो राखो हासी रीत रे — रामजीनी
मगन भायो रजीने बोल्या हामळो वीरा वात रे — रामजीनी
गुदरा जातर करवा मेलो राखो बावा राम रे — रामजीनी
रूपो भायो रजीने बोल्या हामळो वीरा वात रे — रामजीनी
वडवा करवा मेलो वीरा हगळा धूती खाता रे — रामजीनी
पोगे पडी वीनवु वीरा धरती राखो हात रे — रामजीनी
हामळो वीरा हामळो वूनो लालचद भाअीनी वात रे — रामजीनी

भावार्थ — हे भाअियो और बहनो, सुनो। मै तुम्हे सच सच वात बताता हू। मुझे रामजीकी भक्ति सचमुच प्यारी लगती है। मालूम है गाधी बाबा तुमसे क्या कह रहे है? वे कहते है कि भाअियो, शराब छोड दो। मास छोड दो, चोरी और लूट-पाट भी छोड दो। और चरखा चलाओ, तकली चलाओ, हरअेक घरमे चरखेकी आवाज गूजा दो। ठक्करबापा कहते है कि हे भाअी-बहनो, अपने लडके लडकियोको पढाओ और तुम समझदार बडे लोग भी पढो। तुम्हारे लिअे बाबा रामका मदिर बनवाया है। तुम अपने झूठे देवी-देवताओको छोडकर सच्चे प्रभु रामके मदिरमे आओ। श्रीकान्त बाबा अुपदेश देते है कि हे भाअियो, ज्यादा कर्ज मत करो और अपनी सच्ची टेक पर अटल रहो। सुखदेवकाका कहते है वह भी सुनो। वे कहते है कि हे भाअियो, मेहनत-मजदूरी करो और सच्ची खेती करो।

वणीकर दादाकी वात भी सुनो। अुनका कहना है कि भील भाअियो तुम सच्चे वीर और धीर वनो, अपने पास धनुप-वाण रखो और अुनका सच्चा अुपयोग करो। वडे भगत अम्वालाल व्यास कहते हैं कि तुम लोग रोज स्नान करो और नहा-धोकर शुद्ध वनकर पूजा-पाठ और भगवानकी भक्ति करो। डाह्या गुरुजीका कहना सुनो। वे कहते हैं कि घरमे और वाहर मिलकर रहो। अिस सच्ची रीतकी रक्षा करो। मगनभाअीका कहना है कि झूठे देव-देवियोके सामने मानता रखकर पशुओकी वलि चढानेकी वात अव छोड दो और वावा रामको भजो। रूपाजी भाअी अुपदेश करते हैं कि ओझा और जतीको वुलाना छोड दो। वे धूर्त लोग हैं, तुम्हे ठग लेगे। लालचद भाअी हाथ जोडकर और पाव पडकर तुमसे कहते हैं कि हे भाअी-वहनो, होशियार रहो और अपनी जमीनको साहूकारोसे वचाकर अपने हाथमे रखो।

अिस प्रकार भीलोके दोषो और अपूर्णताओके वर्णनके अलावा वापा और सेवकोकी लाक्षणिकताअे भी अुपरोक्त गीतमे दी गअी हैं और वापाकी शुरू की हुअी यह सस्था भीलोको किस स्थितिसे किस आदर्श स्थितिकी तरफ ले जाना चाहती थी और अुसमे भीलोसे क्या क्या काम कराना चाहती थी, यह सव सीधेसादे शब्दोमे वहुत ही लाक्षणिक ढगसे दिया गया है।

भील भूखो मरते हैं, लूटे जाते हैं, चूसे जाते हैं, दूसरोसे दवाये जाते हैं, अुन्हे सरकारी नौकरोकी वेगार करनी पडती है। अिस सवका कारण यह है कि अुन्होने अेक अीश्वरको छोडकर झूठे देवी-देवताओकी, वहमकी, झूठकी और पापकी पूजा की। यदि अुन्हे दुःख छोडकर सुख प्राप्त करना हो तो पाप छोडना चाहिये, डर छोडना चाहिये, वहम और अधश्रद्धा छोडनी चाहिये, परिश्रम करना चाहिये और अीश्वरमे श्रद्धा रखनी चाहिये। भील-सेवा-मडलका यह अुपदेश भीली रामायणके अेक गीतमे सुन्दर ढगसे दिया गया है। पहले रामराज्यका चित्र देकर अुसे प्राप्त करनेके लिअे क्या करना चाहिये, अिसके अुपाय वताये गये हैं। पचमहालकी धरतीमे दस दस वर्ष तक धूनी रमाकर वैठे हुअे वावा और आजीवन सेवाव्रतधारी साथियोका लक्ष्य किस दिशामे था, यह अिस काव्यमे अच्छी तरह व्यक्त हुआ है।

वह भजन अिस प्रकार है

वावा रामना राजमा तो जवरु सुख हतु रे,
वावा राम रैयतने सोरा जेम पाळता रे जी

वावा रामना राजमा लोकुने न्याय मळे रे,
लोकुने जुल्म कोअी दन थायो नथी रे जी
वावा रामना राजमा तो लोकु भगति करे रे,
अेतरे वावा राम दया राखता रे जी
वावा रामना राजमा कदी दुकाळ नी पटे रे,
धान जवरु पाके अेवु रामराज रे जी
वावा रामना राजमा तो लोकु अेवा हुता रे,
पाप कोअी दन करता नी अेवु रामराज रे जी

भावार्थ —वावा रामके राज्यमे तो वडा सुख था, वडा आनन्द था। वावा राम अपनी प्रजाका अपनी सन्तानकी तरह लालन-पालन करते थे। अुनके राज्यमे लोगोको न्याय मिलता था। प्रजा पर कभी जुल्म नही होता था। वावा रामके राज्यमे लोग भक्ति करते थे, अिसलिअे भगवान अुन पर दया करते थे। अुनके राज्यमे कभी अकाल नही पडता था। अनाज खूब पकता था। अैसा रामराज्य था। वावा रामके राज्यमे अैसे लोग थे, जो कभी पाप नही करते थे।

अकाल, सरकारी कर्मचारियोके कष्टो, कर्ज और साहूकारोके अत्याचारोसे सदा दुखी रहनेवाले भीलोके समक्ष अैसा सुन्दर रामराज्यका चित्र खीचकर अुन्हे भी अैसे रामराज्यमे रहना हो, सुखी होना हो तो क्या करना चाहिये, अिसका आगे चलकर भजन अुपदेश देता है

रामनी दयाथी तमुने मुखी थावु होय रे,
भूडा काम, भूडा वोल ने पाप सोडी दो रे जी

भावार्थ — अगर रामकी कृपासे तुम सुखी होना चाहते हो, तो वुरा काम छोड दो, वुरी भाषा वोलना छोड दो और पापका त्याग करो।

अिसके वाद पापोकी सूची दी गअी है

मनखाने गना वगर मारे ने तीहुना रे,
दाणा सीथरा लूटे ते पाप केवाय रे जी
डगरा वोकडा ने पखी कूकडा तु मारे रे,
माछला मारे ती पाप केवाय रे जी
सोरी करी पैसा लावे जूठु वोले भाया रे,
वडवा भोपा करे ती पाप केवाय रे जी
महुडा गाळीने हरो पीने माह खाय रे,
अुगळे नी कोअी दन ती पाप केवाय रे जी

मोस्खाओी राखे नी कोओी दन डाळा जातर करे रे,
गुदरु करे ती पाप केवाय रे जी

भावार्थ.—मनुष्यको किसी अपराधके विना मारना, और अुसका अनाज, कपडा वगैरा लूटना पाप कहलाता है। तुम जो पशुओ, बकरो, पक्षियो और मुर्गोको मारते हो और मछलियोका शिकार करते हो, वह पाप कहलाता है। तुम जो चोरी करके पैसे लाते हो और झूठ बोलते हो और ओझासे जादू-टोना कराते हो, वह पाप है। तुम महुअे गाल कर शराब पीते हो और मास खाते हो तथा स्नान करके साफ-सुथरे नही रहते, यह पाप कहा जाता हे। तुम गदे देवी-देवताओके सामने मानता मान कर पशुओकी बलि चढाते हो और अपनी अभिलाषा पूरी करनेकी अुनसे प्रार्थना करते हो, यह भी पाप कहा जाता है।

अिस प्रकार पापोकी सूची देकर आगे अुनसे छूटनेके लिअे ओीश्वरकी शरण लेने और पापको छोडनेका अुपदेश देता हे

दुनियाना धणी बावा रामजी तो मोटा रे,
रामनी दयाथी सुख मळहे आपुने रे जी
दख जहे सुख मळहे राम भजवाथी रे,
भजन तमु करो नी ती पाप केवाय रे जी
पाप सोडी भाया तमु भाव थकी भजो रे,
दुनियाना धणी बावा रामनी जे बोलो रे जी

भावार्थ —दुनियाके मालिक रामजी बडे भगवान है। अुनसे बडा कोओी नही। अुनकी कृपासे हमे निश्चित ही सुख मिलेगा। रामका भजन करनेसे हमारा दु ख मिटेगा और हमे सुख मिलेगा। अगर तुम अुनका भजन न करो तो वह बडा भारी पाप होगा। तुम सब पाप छोड दो और भक्ति भावसे रामजीका भजन करो। दुनियाके स्वामी रामजीकी जय बोलो।

बापा और अुनके आजीवन व्रतधारी सेवकोकी साधना और कार्य-परायणताके फलस्वरूप हजारो भीलोने बावा रामको अपनाया, सैकडोने शराब छोडी, असख्य लोग ऋणमुक्त हुअे, बहुतसे भाओी-बहनोने अक्षर-ज्ञान, स्वच्छता, शरीरश्रम, व्यवस्थित परिश्रम और सघ-जीवनकी तालीम पाओी। अिस तरह बापाने भीलोके सामाजिक जीवनके भिन्न भिन्न पहलुओमें परिवर्तन किया और अुन्हे सच्चे मनुष्य बनाया। जो लोग चोरी और लूट-खसोट करते थे अुन्होने बापाके पुण्य प्रभावसे और भील-सेवा-मडलके कार्यकर्ताओके तपसे चोरी और लूट न करनेकी प्रतिज्ञा बापाके सामने ली।

और अन्त तक अिस प्रतिज्ञा पर डटे रहनेके भी अुदाहरण है। यह कोअी अैसी वैसी सफलता नही कही जायगी।

भील-सेवाके कामके साथ साथ पिछले कुछ वर्षोसे बापाने हरिजन-सेवाका काम भी हाथमे लिया था। गुजरातमें अिस काममे बापा गाधीजीके पुरोगामी माने जा सकते है। गाधीजीने 'हरिजन' शब्द तो १९३२–३३ मे अपनाया। अिससे पहले गुजरातमे हरिजनोके लिअे अन्त्यज शब्द काममे लिया जाता था। गुजरातमे गाधीजीकी प्रेरणासे पहले पहल हरिजन कार्य गोधरा आश्रमके श्री विट्ठल व० फडके — मामासाहब फडके — ने शुरु किया। अुन्होने गोधरामे हरिजनोकी सेवा करनेके अुद्देश्यसे अेक अत्यज आश्रम स्थापित किया। बापाने अिस काममे जो सहायता की और प्रोत्साहन दिया और अुसमे लगे हुअे भाअियोका जो साथ दिया, अुससे अिस प्रवृत्तिका गुजरात भरमे विकास हुआ। बापाने भील लोगोकी सेवा करनेके लिअे पचमहालमे स्थायी छावनी डालना तय करके भील-सेवा-मडलकी स्थापना की। अुसी कल्पनासे हरिजनोकी सेवा करनेके लिअे गुजरात अत्यज सेवा-मडलकी स्थापनाका विचार अुत्पन्न हुआ।

शुरूमे 'अत्यज कार्यालय' नामकी सस्था प्रारभ हुअी। श्री अिन्दुलाल याज्ञिक और ठक्करबापाने अुसके मत्रीके रूपमे काम किया। अछूतोके लिअे गुजरातमे दो-चार अलग अलग पाठशालाअे शुरू हुअी और नडियादमे आश्रम स्थापित किया गया। अुसके बाद १९२३ मे गुजरात अत्यज-सेवा-मडलकी बाकायदा रचना की गअी और ठक्करबापा अुसके पहले अध्यक्ष हुअे। अुस समय आजीवन सदस्योके रूपमे कुछ भाअियोने प्रतिज्ञा ली। अिस मडलने १९२३ से १९३३ तक दस वर्ष काम किया। १९२४ मे श्री परीक्षित-लाल मजमुदार अिस मडलके मत्री बने। अिसके बाद गुजरातमे अत्यजोकी सेवाके लिअे जितने भी दौरे हुअे, अुनमे श्री परीक्षितलाल मजमुदार सदा बापाके साथ रहते थे। अिस मडल द्वारा बापाने गुजरातमे अत्यजोकी पाठ-शालाअे जारी कराअी। दिन दिन अुनकी सख्या बढती गअी और पिछले वर्षोमे गुजरातमे अत्यजोके अुत्कर्षके लिअे दो आश्रम तथा तीस पाठशालाअे जारी हो गअी। अिस कार्यमे श्री चूनीभाअी और अुनकी पत्नी, श्री जुगतराम दवे, श्री नरहरिभाअी परीख, डॉ० सुमत महेता वगैरा साथ देते थे। अिनमें से कुछ लोग अनेक मुश्किलोके बीच रह कर अत्यजोकी सेवाका यह कार्य कर रहे थे। अुस समयके सस्मरण याद करते हुअे बापाने अिन सब सेवकोकी नि स्वार्थ सेवा और कठिनाअियोके साथ लड-झगड कर मार्ग निकालनेकी दृढ मनोवृत्ति और सेवा-भावनाको अजलि अर्पण की है।

गुजरातमे जब बापा भीलो और हरिजनोकी सेवाका काय कर रहे थे, अुस अर्सेमे १९२७ के जुलाओमे अतिवृष्टिके कारण भारी बाढ आओी। अिस बाढ-सकटके कारण भाल और गुजरातके धोलका, धधुका, आणद तथा बडोदा और कडी राज्योके कुछ प्रदेशोमे पानी फैल गया। अुस समय सरदार श्री वल्लभभाओी पटेलने गुजरातमे कष्ट-निवारणका काम व्यवस्थित ढग पर शुरू किया। अुनके साथ रह कर अुनके अधीन जिन्होने काम किया, अुनमे श्री ठक्करबापा भी थे। ठक्करबापा अुम्रमे सरदारसे बडे थे। अिसलिअे सरदार अिनका बहुत आदर करते थे। अिस कारण जब ठक्करबापाने कष्ट-निवारण कार्यमे सक्रिय सहायता देनेकी अिच्छा प्रदर्शित की, तब सरदारने अुनसे पूछा कि आपको कहा काम करना पसद होगा? और क्या काम करेगे? तब ठक्करबापाने अुन्हे जवाब दिया कि आप जहा भेजेगे वहा और जो काम बतायेगे वही करूगा। ठक्करबापाकी अिस नम्रतासे सरदार खूब प्रभावित हुअे थे और अुनकी अिच्छा जानकर जहा कामकी विशेष आवश्यकता थी अैसे प्रदेशमे — आणदमे — छावनी डाल कर अुन्हे काम करने बैठाया।

बापाने अुन दिनो बाढ-सकटमे फसे हुअे लोगोको राहत देनेके लिअे खूब काम किया और बडी मेहनत अुठाओी। अिस कार्यके सम्बन्धमे बापा लिखते है, "गुजरातमे बाढ आनेके बाद तुरत ही समितिके ध्यानमे यह बात लाओी गओी कि गावोके बहुतसे कुअे, खास तौर पर अत्यजोके लिअे खुद-वाये गये कुअे, भर गये है अथवा अेक खास हद तक अुन्हे नुकसान पहुचा है। देहातमे सवर्ण अपने कुओसे अत्यजोको पानी नही भरने देते। अिसलिअे कुछ गावोमे अुन्होने खुद अपने कुअे खोद लिये है और अन्य कुछ स्थानो पर पानीके लिअे अुन्हे सवर्णोसे भिक्षा मागनी पडती है, या जहा गाव भरके कपडे धोये जाते है और दूसरी गदगिया भी होती है, अुस तालाबका गदा पानी काममे लेना पडता है। अिसलिअे समितिने सबसे पहले अत्यजोके कुअें खुदवानेके लिअे अपने कोषसे ५०,००० रुपयेकी बडी रकम खर्च करना तय किया है और अिसके लिअे ५ दिसबर, १९२७ को विशेष प्रस्ताव पास किया है।"

यह काम कष्ट-निवारण समितिने ठक्करबापाको सौंपा था। अुन्होने जिला और तालुका बोर्डके साथ पत्रव्यवहार करके जिन जिन गावोमे अैसे कुओकी जरूरत थी अुनकी सूची तैयार की। बादमे कार्यकर्ताओके मडल द्वारा यह काम अुन्होने आगे बढाया। अक्तूबर १९२८ तक अैसे १२० कुअे खुदवानेमे आर्थिक सहायता देनेका निश्चय किया गया और अुस पर ३६,१९१ रु०

खर्च करनेकी मजूरी दी गअी। अुसमे से अक्तूबरके अधबीच तक २३,६८९ रु० खर्च कर दिये गये। अिसके बाद बरसात शुरु हो जानेसे कुअे खुदवानेका काम मंद पड गया और चौमासेके बाद वह फिर हाथमें लिया गया। अिसके सिवाय समितिने सार्वजनिक धर्मशालाओ और पुस्तकालयोंके मकानो आदिको, जो जल-सकटके दिनोमे टूट गये थे अथवा जिन्हे थोडे बहुत अशमे नुकसान पहुचा था, सुधरवानेके लिअे ७५,००० रु० की रकम मजूर की। अिन धर्मशालाओकी मरम्मतके लिअे अथवा अुन्हे नये सिरेसे बनवानेके लिअे १९२८ के अक्तूबर तक लगभग रु० ४९,२९४–८–० की सहायता मजूर की गअी, जिसमें से अक्तूबर तक रु० २३,३४०–९–६ की रकम खर्च हो गअी। गावके लोग धर्मशालाकी मरम्मत अथवा पुनर्निर्माणके काममें जो खर्च होता, अुसके आधे या पाव भागका खर्च दे देते थे।

अिन दिनो ठक्करबापाने जल-सकटमे फसे हुअे लोगोके बीच रह कर जो राहत-काम किया, अुसका असर बम्बअीकी अिस राहत-केन्द्रकी सस्था पर बहुत ही पडा। अुसने अपने वर्णनमे ठक्करबापाकी नि स्वार्थ सेवाओकी बहुत प्रशसा की है। ठक्करबापाके अिस कार्यसे साधारण प्रजाजनोको तो मदद मिली ही, परन्तु गुजरातके हजारो अत्यजोको खास तौर पर बडी राहत मिली।

अत्यजोकी अुपरोक्त सेवाओके अतिरिक्त बापाने भगी भाअियोके लिअे नअी सहकारी समितिया स्थापित करनेमे और पुरानी समितियोको व्यवस्थित बनानेमे भी काफी रस लिया था। नवसारी और नडियादकी सहकारी समितियो पर तो वे स्वय ही सीधी देखरेख रखते थे। नडियादकी भगी सहकारी समितिके सदस्योको साहूकारोके कर्जसे छुडवानेके लिअे अेक योजना अुन्होने तैयार की और अुस पर अमल करके कर्ज पेटे निकलनेवाले कुल ७०,००० रुपयेमे से भगियोकी तरफसे ३०,००० रु० चुका कर तमाम भगी सदस्योका कर्ज मिटा दिया और अुन्हे ऋणमुक्त कर दिया। अिसी तरह झालोद तथा महुवाकी भगी सहकारी समितिके सदस्योको भी साहूकारोके कर्जसे मुक्त किया।

भगी भाअियोके लिअे कुअे खुदवा देनेको बापाने बम्बअीके केन्द्रीय कोषसे ५०,००० रु० की जो रकम ली, अुसके सिवाय बिडला कोषसे २२,००० और महात्मा गाधी कोषसे २०,००० अिस प्रकार कुल ९२,००० रु० की रकम प्राप्त करके भगियोंके लिअे कुअे खुदवानेका काम हाथमे लिया और पाचेक वर्षमे लगभग २०० नये कुअे खुदवाये तथा दूसरे बहुतसे पुराने कुओकी मरम्मत कराअी।

गुजरात अत्यज मडलके अध्यक्षके रूपमे वापा अत्यजोकी जो विविध प्रकारकी सेवा कर रहे थे, अुसके पीछे कुदरतका सकेत मालूम होता था। निकट भविष्यमे ही अुनके कधो पर भारतव्यापी हरिजन-सेवाकी जिम्मेदारीका जो बोझ पडनेवाला था, अुसीके लिअे मानो प्रकृति अुन्हे तैयार कर रही थी। वापाको अिसका स्वप्नमे भी खयाल नही था कि थोडे ही समयमे गाधीजी हरिजनोके कल्याणके लिअे, हिन्दू जातिकी अेकताके लिअे, जो आमरण अुपवास आरभ करेगे, अुससे अस्पृश्यता-निवारणका राष्ट्रव्यापी आन्दोलन होगा और अुसके परिणामस्वरूप हरिजन-सेवाकी जो अखिल भारतीय सस्था खडी होगी अुसका मत्रीपद वापाको ग्रहण करना पडेगा। परन्तु वापाने सोचा भी नही होगा अुतनी तेजीसे यह सब काम अुनके पास आ गया। अिसके ब्यौरेमे जानेसे पहले भील-सेवा-मडलने वापाकी प्रत्यक्ष अनुपस्थिति किन्तु अुनके पथ-प्रदर्शनमे पिछले २० वर्षोमे कितनी प्रगति की, अिसका विहगावलोकन कर ले।

२४

भील-सेवा-मडलकी दूसरी मजिल

हरिजन-सेवक-सघके मत्रीकी हैसियतसे जिम्मेदारी अुठानेको वापाको दिल्लीमे रहना पडा ओर देशके अलग अलग भागोमे लम्बे लम्बे सफर करने पडे। फिर भी भील-सेवा-मडलकी जिम्मेदारी अुन्होने छोडी नही थी। हरिजन-सेवाका काम करते-करते भी अुन्होने मडलके अध्यक्षके नाते वरसो तक काम करना जारी रखा। पचमहालमे दस वर्षकी साधना और तपस्याके परिणामस्वरूप मडलके कार्यकर्ताओका जो समूह तैयार हो गया था, अुसके हाथोमे रोजमर्राके कामकी वागडोर सौंप कर वे दूर रहते हुअे भी मडलकी सभाल रखते और अुन्हे समय-समय पर प्रेरणा, मार्गदर्शन और सलाह-सहायता वगैरा देते थे।

कम वरसातके कारण जनवरी १९३३ से पचमहाल जिलेमे साल विगड गया। फसल नही हुअी। नतीजा यह हुआ कि वहुतसे भील-परिवार आधी भुखमरी भोगने लगे। १९ जनवरीको मडलने अकालके सकटमे घिरे हुअे भीलोकी स्थितिके वारेमे अेक वक्तव्य प्रकाशित करके चदेके लिअे अपील की। फलस्वरूप मअी मासके अत तक ७४६ रु० मिले। और १९३० के सस्ता अनाज दुकान कोपकी वचतके ८३० रु० रखे थे। अिन दो रकमोकी

मददसे मडलके आश्रमोमे जमीन वरावर करने, कच्चे कुअे खुदवाने और अिसी तरहका दूसरा काम फरवरी माससे शुरू किया गया। भीलोको मजदूरीके वदलेमे अनाज दिया जाता था। पुरुषको २।। सेर, स्त्रीको २ सेर और वच्चेको १ सेर मक्की अथवा जवार मजदूरीके वदलेमे मिलती थी।

फरवरी मासमे मीराखेडी, झालोद और भीमपुरी आश्रमोमे काम खोले गये। वहा मजदूरोकी औसत हाजिरी मार्चमे ७८ और अप्रैलमे ८८ रहने लगी। परिस्थिति दिनोदिन विगडती गयी। अप्रैलकी पहली तारीखको ठक्करवापाने सर रुस्तम वकील और दीवानवहादुर कावलीको जो पत्र लिखा, वह अुस समयकी स्थितिका वास्तविक चित्र अुपस्थित करता है। अुस पत्रमे अुन्होने लिखा था

" वेचारे भील लोग अपने प्राण टिकाये रखनेके लिअे नीचीसे नीची दर पर भी कामकी खोजमे भटक रहे है। अुनके और अुनके कुटुम्वके लिअे अकाल कानूनके अनुसार सस्तेसे सस्ते अनाज पर गुजर करनेकी नौवत आ गयी है। और कानूनके अनुसार अुन्हे डेढ सेर अथवा अिससे भी कम अनाज मिलता है। अिससे अुनकी हड्डिया और चमडी मुश्किलसे साथ रह सके, अैसी स्थिति आ गअी है। फिर, मान लीजिये कि अनाज सस्तीसे सस्ती दर पर मिलता हो तो भी अिन सैकडो और हजारो लोगोको अिस मदीके जमानेमे काम कौन दे? वे छोटे छोटे शहरोके आसपास कामकी तलाशमे झुडके झुड आते है, परन्तु काम नही मिलता। कल्याण-कार्यकर्ताओ द्वारा थोडे खानगी काम जरूर खोले गये है, परन्तु वे सैकडो और हजारोको रोजी नही दे सकते। अिनके पास गुजारेके लिअे कुछ भी नही है। अिस मामलेमे जिला लोकल वोर्ड भी वडी ढिलाअी दिखा रहा है। अूपरसे चावुक फटकारनेवाला कोअी नही है अिसलिअे सुस्त होकर पडा है। सरकार भी भील लोगोकी खराव और दुःखी हालतको समझ नही सकी। अुसने पूरा लगान वसूल करनेके हुक्म दे दिये है। खानगी कामो पर वेतनके वजाय अढाअी सेर जवार अर्थात् अेक आना रोज मजदूरी दी जाती है। परन्तु वह भी वहुत मर्यादित सख्याको, क्योकि हजारोको काम देनेकी अुनकी शक्ति नही।

"क्या सरकार अिस वारेमे समय रहते नही चेतेगी? या वह अिस वातकी राह देखते वैठी रहेगी कि भील लोग प्राणोकी वाजी लगा कर पेटका खड्डा पूरनेके लिअे किसी बाजार या दुकानको लूटे? छप्पनके अकालमे सन् १९०० मे जव भीलोने लीमडी शहरको लूटा, तभी सरकारको भीलोकी भुखमरीकी सच्ची स्थितिका भान हुआ। मै आशा करता हू कि सरकारको फिरसे अैसा

ही चेतावनीका सिग्नल देनेकी जरूरत नही पडेगी। आम तौर पर भील जाति कानूनको माननेवाली है, सिवाय अुस हालतके जब कुदरत या समाज अुसे अन्नसे वचित रखकर मरने-मारने पर अुतारू कर दे। भुखमरीमे तडप रहे अिन लोगोको अन्न देना और भूखके कारण मरने-मारने पर अुतारू होकर और पागल बनकर अुनकी लूटनेकी वृत्ति जागृत न हो यह देखना राज्यका धर्म है। हम सब अुन्हे अितनी नीची हद तक न पहुचायें जिनसे अुन पर पागलपन सवार हो जाय और वे काबूसे बाहर होकर अुत्पात मचायें। अिसके बजाय अिस समय वे जो पसीनेकी रोटी खाना चाहते हैं, अुसमे हम अुनकी मदद करे।"

अिस पत्रमे तत्कालीन अकालकी स्थिति, सरकार और जिला लोकल बोर्डका अुपेक्षाका रवैया और बापाका अुसके प्रति रोष प्रतिबिम्बित होता है। और अुनकी बात भी बिलकुल सच थी। भीलोके झुडके झुड मजदूरी ढूढने दाहोद-झालोद और लीमडीमे रोज अुमड पडते और मजदूरीके अभावमे निराश होकर लौट जाते। अिसके अलावा कितने ही लोग घास और सूखी लकडियोके भारे, कच्चे आम और दूसरे जगली फल, ढाकके पत्ते वगैरा लाकर शहरमें बेच जाते।

अन्तमे परिस्थिति जब दिनोदिन अुग्र बनती गअी, तब जिला तथा तालुका लोकल बोर्डोकी तरफसे कुछ काम शुरू हुअे। शहरके अुदार सज्जन भूखे लोगोको चने-धानी बाटने लगे। भील-सेवा-मडलने अकालकी परिस्थितिके सिलसिलेमे दूसरा वक्तव्य निकाल कर धनके लिअे फिर लोगोसे अपील की। अिसका जवाब अच्छा मिला। बम्बअीमे १,५०० रु० की रकम मिली। अिसके सिवाय मडलके पास १९२० के अकाल-कोषकी जो रकम बची हुअी थी अुसमे से अकाल-ग्रस्त लोगोको अन्न-दान देना शुरू हुआ। अिसके लिअे अलग अलग छ केन्द्रोमे कार्य आरभ हुआ। अीश्वर-कृपासे ता० १८–६–'३२ को अच्छी वर्षा हो गअी। परन्तु लोगोके पास खानेको भी पूरा अनाज नही था, तब बुवाअीके लिअे अनाज कहासे लाते? अिस अर्सेमे ता० २५–६–'३३ को बापा दाहोद गये और तालुकेके गावोमे दो दिनमे १०६ मीलका सफर करके लोगोकी स्थिति आखो देखी। जेसावाडा, मीराखेडी, झालोद, गरबाडा, भाभरा, लीमडी वगैरा स्थानो पर गये। सेर भर अन्नके लिअे तरसते हुअे हजारो स्त्री-पुरुषोके झुडके झुड अुन्होने केन्द्रो पर अुमडते देखे। यह दृश्य देख कर बापाका हृदय द्रवित हो अुठा और मीराखेडीके टीले पर अेकान्त स्थानमे अुन्होने आसू बहाये। अुसी दिन बापाने जीवदया-

मडलके नाम तार देकर ५,००० रुपये बीजके लिअे मगवाये और गुजरातसे २५,००० रुपये देनेकी अपील की।

ता० २६–६–'३३ को बापाने दाहोदके प्रमुख व्यापारियो और अन्य प्रतिष्ठित नागरिकोकी अेक सभा बुलाअी और अुनके सामने सकटग्रस्त भीलोका चित्र खीचकर अुनसे मदद मागी। शहरकी पचायतने अन्न-दानके लिअे जो अनाज चाहिये, अुसमे रोज छ मानी (मानी=१२ मन) अनाज १२ रु० मानीके हिसाबसे प्रत्येक मानी पर रु० २–३ का नुकसान अुठा कर देना मजूर किया। बम्बअीमे भी फडके लिअे जीवदया-मडल द्वारा रुपया अिकट्ठा करनेका काम हाथमे लिया गया। परिणामस्वरूप जो सहायता मिली, अुसमे से जूनके अतिम सप्ताहमे १७५ गावोके ५,००० आदमियोको दानका अनाज बाटा गया। ये दिन तो ठीक निकले। लेकिन जुलाअीमे फिर बरसात खिच गअी और हालत ज्यादा खराब हो गअी। ६ मे १२ जुलाअीके दिन तो बहुत ही भयकर थे। आकाश बिलकुल साफ था। बरसातकी कही भी आशा नही थी। अन्न-दान लेनेवालोकी सख्या अिन दिनो बढ कर २५,००० तक पहुच गअी। अेक ही सप्ताहमे ३,००० मन अनाज दानके रूपमे बाटा गया। अिन दिनोमे बापा तो तालुकेके गावोमे घूमते ही थे। अिसके सिवाय बम्बअीके जीवदया-मडलके मत्री श्री मानकर भी परिस्थिति देखने आये। साथ ही सौभाग्यसे सर दोराबजी टाटा ट्रस्टमे भी ५,००० रु० की अकल्पित सहायता आ गअी। अुससे तत्काल राहत देनेमे सरलता हो गअी। थोडे दिन अपनी निजी देखरेखमे कष्ट-निवारण कार्यकी व्यवस्था करके बापा दिल्लीके लिअे रवाना हुअे। परन्तु गाडीमे बैठे बैठे अुनके हृदयमे तो दाहोद-झालोदके अकालकी और अकाल-पीडितोको बचानेकी बात ही रम रही थी। अिसलिअे अुन्होने मडलके कार्यकर्ता श्री चूनीभाअी और श्री डाह्याभाअी नायकके नाम ता० ८–७–'३३ को कोटासे दिल्ली जाते हुअे पत्र लिखा। अुसमे अुन्होने मडलके विद्यार्थियोका कष्ट-निवारण कार्यमे अुपयोग करने और अुन्हे सेवाका पाठ सीखनेका अवसर देनेका सुझाव रखा।

पत्रमे अुन्होने अिस प्रकार लिखा था

"भील-सकट-निवारण कार्यके सबधमे अेक बातकी तुम्हारे साथ चर्चा करनी रह गअी। वह पत्र द्वारा कर रहा हू।

"हमारे भील विद्यार्थियोको अेक कामकी तालीम मिलनी चाहिये। और वह देहातमे घूमनेकी। अग्रेजी पढनेवाले सभी ओर गुजराती पढने-वाले बडी अुम्रके तमाम विद्यार्थियोको सप्ताहमें कमसे कम दो दिन पढाअीका

त्याग करके भी भीलोमे भेजनेका प्रबध करना चाहिये। अुनके सामने आया सेवाका यह सुन्दर अवसर खो नही देना चाहिये। वे शनि-रवि या और किसी दिन तीन-चारकी टोलीमे कुछ गावो और झोपडोमे जाय, महायताका सन्देश पहुचाये, भूखोको ढूढ निकाले, नगोको ढकें, और मूक भील कष्ट अुठा अुठाकर मरणासन्न न होने पाये, जिसलिअे अुन्हे ढूढकर अुचित राहत दिलावे। १९१९ मे मोतीभाअीके भेजे हुअे अेक श्रेणीके २० नगेनरी युवक मेरे पास थे, जिनके लिअे मै गौरव अनुभव करता था। अब तो हमारे अपने आश्रमोके भील बालक भी वही काम कर सकते है। अिसलिअे यह अवसर न खोना। हमारे आश्रमोकी पढाअी पन्द्रह दिन बन्द रहे, अग्रेजी पाठशालाओंमे अेकाध सप्ताहकी छुट्टी लेनी पडे तो भी हर्ज नही। परतु यह सेवाका पाठ पढानेका मौका नही चूकना चाहिये। थैलेमे जुवारकी रोटी रखकर, पानीकी बोतल गलेमे डालकर और हाथमे लाठी लेकर अुन्हे दो दिनमे छ सात गावोका या लगभग सौ झोपडोका चक्कर लगा आना चाहिये और दयाका सन्देश पहुचाना चाहिये। बच्चूभाअीके सुनाये हुअे कथीरके गहने बेचने या दो दो दिनके भूखे आदमी मिलनेके किस्से सुनता हू, तब मेरा हृदय रोता है। जगन्नाथपुरीके जिलेमे अपनी आखोके सामने अकाल-ग्रस्तोको मुर्दे हो जाते देखनेके दृश्य याद आते है, तब अैसा डर लगता है कि कही मेरे भोले भीलोकी भी अैसी हालत न हो जाय। रुपयेकी चिन्ता मत करो। सेरके बजाय डेढ सेरका अन्न-दान कर देना। परतु यदि कोअी भील भूखसे पीडित होकर मर गया, तो अुसके लिअे हम अीश्वरको क्या जवाब देगे? जिडन्या, टाटा, वाडिया, सब हमारे सहायक और तरफदार है। रुपयेकी कमी नही। काम शरीरको खपाकर करना-कराना और भीलोको शाति देना। मूक भीलोका आशीर्वाद लेना और लिवाना। मै तुमसे दूर रहता हू और दूरसे वेदान्तकी बाते करता हू, अिसलिअे शरमाता हू। यह भी अीश्वर-निर्मित है।"

बापाकी सूचनानुसार अुनके साथियोने जी-तोड काम किया। दाहोद-झालोद और सरहदके देशी राज्योके कुल मिलाकर ३५ गावोको अुन्होने सभाल लिया। अिसके सिवाय झालोद और लीमडीके व्यापारी सघोने ३३ गावोमे अन्न-दान देना बन्द कर दिया, तो वह जिम्मेदारी भी मडलके कार्यकर्ताओ पर आ गअी। जुलाअीके तीसरे सप्ताहमे अन्न-दान लेनेवालोकी सख्या बढकर ३६,५०० से अूपर पहुच गअी। अेक लाखकी भीलोकी आबादीमे से तीसरे भागके लोगोका निर्वाह धनिकोकी अुदारता पर हुआ। अैसी विकट परिस्थिति होने पर भी सरकारकी तरफसे अन्न-दानके लिअे

केवल २,००० रुपयेकी तुच्छ रकम मिली और ८,००० रुपये तकावीके लिअे मंजूर किये गये।

अिन दिनोंमें मंडलकी तरफसे मजदूरीके ग्यारह केन्द्र खुले हुअे थे और १,००० आदमियोंको रोज मजदूरी दी जाती थी। पुरुषको डेढ आना, स्त्रीको सवा आना और बच्चेको अेक आना। यह मजदूरी अकालके अिन दिनोंमें भीलोंके लिअे आशीर्वादरूप हो गअी थी।

दिल्ली चले जानेके बाद भी ठक्करबापा पंचमहालके अिन तालुकोंके अकालके विषयमें चिन्तित थे। वहाकी परिस्थितिके बारेमें पत्रव्यवहारसे सदा परिचित रहते हुअे भी अुन्हें दिल्लीमें चैन नही पडा। ता० २१–७–'३३ को श्री जयन्तीलाल मानकरके साथ बम्बअीसे दाहोद आये। कष्ट-निवारण केन्द्रोंका अवलोकन किया। फिर बबअी गये और चंदेके लिअे कोशिश करके जरूरतके लायक रुपये जुटाये। अिसके सिवाय टाटा ट्रस्टसे भी ३,००० रुपयेकी दूसरी रकम प्राप्त की।

अीश्वर-कृपासे बादमें बरसात हो गअी और लोगोंके जीमें जी आया। कार्यकर्ताओंके मन भी हल्के हुअे और बापाकी चिन्ता कम हुअी। २२ अगस्तको अन्न-दान करनेका काम बन्द कर दिया गया। आठ सप्ताह अर्थात् लगभग दो महीनेमें मंडल द्वारा भिन्न-भिन्न केन्द्रोंमें पैंतीससे चालीस हजार भीलोंको नियमित अन्न-दान दिया गया। लगभग ५ हजार मनसे ज्यादा अनाज बीजके लिअे दिया गया। ७२,००० मजदूरोंको रोजी दी गअी। फटेहाल और अर्धनग्न स्त्रियों और पुरुषोंको ५,२३६ रुपयेकी कीमतका लगभग ३३ गाठ कपडा सिलवा कर बाटा गया। अिस प्रकार ठीक समय पर राहत-काम हाथमें लेनेसे हजारों भील बच गये। बापा और अुनके कार्यकर्ताओंकी तपश्चर्यासे अनेक संस्थाअें, पंचायतें, मंडल और व्यक्ति काम करने बाहर निकल आये। नतीजा यह हुआ कि भुखमरीके कारण अेक भी भीलकी मृत्यु नहीं हुअी और अीश्वर-कृपासे सब बच गये।

अकालके अंतमें लगभग ७,००० रु० की रकम बची। अिससे हर साल १०० कच्चे और १०० पक्के कुअें खुदवाने, १०० खादके खड्डे तैयार करने और २०० अेकड जमीनमें पाड बावनेके लिअे भील किसानोंको प्रोत्साहन और सहायता देनेमें खर्च करनेका कार्यक्रम तैयार किया गया और अुसे अमलमें लाया गया।

अिधर बापा पर हरिजन कार्यकी भारी जिम्मेदारी मौजूद थी, अिसलिअे अकालका काम अच्छी तरह पार लग जाने पर वे फिर हरिजनोंके काममें लग गये। अिन वर्षोंमें मंडलको थोडी धूप-छाहमें से गुजरना पडा। अुसका

आर्थिक भार भी वढता गया। मडलके कार्यकर्ता चिन्तातुर थे, परतु वापाने असकी चिन्ता नही की। यह मानकर कि यह अनुभवमे अुनके सीखनेका समय है, अुन्हे सीखने दिया। जुलाअी १९३५ मे तीन आजीवन सेवक कुछ मतभेद और कुछ निराशाके कारण मडलसे अलग हो गये, परतु वादमे अुनमे से अेक सेवक श्री डाह्याभाअी वापाके समझाने और आग्रहसे फिर आ गये।

मडलका वारहवा वार्षिक अुत्सव झालोदमे गुजरातके लोकसेवक श्री चदूलाल देसाअीकी अध्यक्षतामे मनाया गया। अुस समय श्रीमती लीलावती खाडवालाके दिये हुअे २,५०० रु० के दानसे भील पुस्तकालय और भील धर्मशालाके जो मकान वनवा दिये गये थे अुनका अुद्‌घाटन किया गया। अुसके वादके वर्षमे सरदार वल्लभभाअी पटेलकी अध्यक्षतामे मीराखेडी आश्रममे तेरहवा वार्षिकोत्सव मनाया गया। मडल शिक्षा और वैद्यकीय राहतकी दिशामे धीरे धीरे प्रगति कर रहा था। अितनेमे १९३६-३७ के सालमे फिर अकाल पडा। अिस वर्ष शुरूमे तो अच्छी वरसात हुअी। अिसलिअे लोगोने अुनके पास जो कुछ पैसा था अुसे वीज खरीदनेमे खर्च कर दिया। वुवाअी कर ली। परतु वादमे वरसात वन्द हो गअी और छप्पनके अकालको भुला देनेवाले दिन देखनेकी नौवत आअी। १९३३ मे अकाल पडा था, १९३४-३५ मे फसलको पाला मार गया था और १९३६ मे फिर अकाल। अिस अेकके वाद दूसरे अकालने अैसी स्थिति पैदा कर दी कि अच्छे अच्छे भी हिम्मत हार जाय। परतु भील-सेवा-मडलने अिस वार भी अगस्त माससे कष्ट-निवारण कार्य हाथमे लिया। पचमहालकी परिस्थितिके सवधमे अेकके वाद अेक तीन वक्तव्य प्रकाशित करके सरकारसे अिस वार तुरत ही शीघ्र कार्रवाअी करनेका अनुरोध किया। मडलके प्रचारके फलस्वरूप सरकारने आजमायशी काम शुरू किये। अिस वार सारे गुजरातमे अकालकी स्थिति थी। सरदार वल्लभभाअीने अिसके लिअे रुपया देनेकी अपील प्रकाशित की। गुजरातने ७५,००० रु० की रकम देकर सरदारकी झोली भर दी। अिस वीच गुजरात प्रान्तीय समितिके मत्री श्री मोरारजी देसाअी अकाल-जन्य परिस्थितिका अध्ययन करने पचमहाल आये। अुनके सामने निम्नलिखित कैफियत पेश की गअी "रात वीतती है, पर दिन नही कटता। हमारी स्थिति असह्य है। अव तक घास-लकडी वेचकर काम चला, परतु अव तो वे भी नही रहे। हमारे पास निर्वाहका कोअी भी आधार नही है। २०–२५ रुपये कीमतके मवेशीके पूरे दो तीन रुपये भी नही मिलते। झोपडीकी वल्लियां वेचना वाकी रहा है। पशुओंके लिअे घास नही। पीनेको पानी

नही। हमारी समझमे नही आता कि अब हम कैसे जियेगे। हमसे सख्त मजदूरी नही होगी, क्योंकि पिछले महीनेसे थोडीसी पतली राब पीकर आधा पेट रह कर काम चला रहे है। अब हममे शक्ति ही नही रही।"

श्री मोरारजीभाअी पर अिस बयानका बहुत अच्छा असर हुआ। और यह चीज अुनके हाथमे लेनेके बाद सरकार भी जाग्रत हुअी और अुसे मजदूरीके राहत-काम अधिकाधिक सख्यामे खोलने पडे।

गुजरात प्रान्तीय समितिने सारे गुजरातमे कष्ट-निवारणका काम शुरू कर दिया था। अिसलिअे दाहोद-झालोद तालुकोका कष्ट-निवारण कार्य समितिने भील-सेवा-मडलको सौपा। मडलने ता० २-९-'३६ से सस्ते अनाजकी दुकाने खोली। १५,००० रु० की पूजी लगाअी। दाहोद और आसपासके गावोसे अिकट्ठा अनाज खरीद लिया। सरकारकी तरफसे कष्ट-निवारणके काम शुरू हुअे। अगस्तमे ५००, सितम्बरमे ४,३८० और अक्तूबरमे ७,६०० मजदूर कष्ट-निवारण कार्यमे काम करने लगे। यह सख्या बढते बढते फरवरी १९३७ मे १८,०००, अप्रैलमे ३०,००० और मअीमे ३८,००० तक पहुची। अकालके छ सात महीनोमे औसतन् ३,००० आदमियोको अन्न-दान दिया गया। घासके अभावमे जब ढोर मरनेके किनारे पहुचे, तब मडलकी प्रार्थना पर सरकारने दाहोदमे ५०,००० पौड घासका पुराना ढेर मुक्त किया। बबअीके जीवदया-मडल और गोग्रास-मडलने भी पशुओको बचानेके लिअे मेहनत अुठाअी। जीवदया-मडलने पचास लाख पोण्डका घास अिस वर्ष मडल द्वारा सस्ती दरो पर बेचा और अुसमे १६,००० रु० का घाटा अुठाया। सामूहिक रूपमे पशुओको घास डालनेके २० केन्द्र चलाये गये। अितने पर भी अकाल अितना तीव्र था कि मडलकी तमाम कोशिशोके बावजूद काफी सख्यामे पशु मर गये। तथापि अिन प्रयत्नोके अभावमे जिस बडी सख्यामे ढोरोको बचाया जा सका वह नही हो सकता था। मडलने गुजरात प्रान्तीय समितिकी तरफसे अकाल-निवारणका काम किया, कुल पौने दो लाख मन अनाज सस्ते भावसे बेचा, १३,००० मन बीज सस्ते दामो पर मुहैया किया और २,००० मन बीज तथा नमक मुफ्त बाटा गया।

अकाल-निवारणके अिस कामके साथ-साथ मडलके शिक्षा और अन्य सेवाकार्य भी व्यवस्थित रूपमे जारी रखे गये थे।

१९३७ मे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेसके प्रान्तोमे पद ग्रहण करनेके बाद शासन-प्रबध काग्रेसी नेताओके हाथमे आया। बम्बअीमे बालासाहब खेर मुख्यमत्री और श्री मोरारजी देसाअी गृहमत्री हुअे। साथ ही मडलके अुपाध्यक्ष

श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त वम्वअीकी धारासभामे चुने गये। अिस कारण मडलको अच्छा फायदा हुआ। सरकारकी तरफसे मडलको ३,००० रु० की वार्षिक सहायता दी गअी। साथ ही मडल द्वारा सचालित पाठशालाअे रजिस्टर कराअी हुअी होनेके कारण अुन्हे भी जिला स्कूल-वोर्डकी तरफसे मदद मिलने लगी।

१९३७ के अक्तूवर मासमे वडोदा राज्यके वाकल नानछल टप्पे पर आश्रम चलानेवाले मडलके अेक कार्यकर्ता श्री गणपतिशकर भट्ट जगलकी जलवायुके शिकार वने और अन्तमे मर गये। मडलने सेवाक्षेत्रमे अिस प्रकार दूसरा वलिदान दिया। अुन्होने अेक भील महिलासे विवाह किया था। अुनकी पत्नी विजयावहन आज भी कस्तूरवा स्मारक कोषकी तरफसे तालीम पाकर गरवाडामे काम कर रही है।

अिस वीच दाहोदमे मडलके नये मकान वनानेकी मजूरी मिली। जमीन तो वर्षों पहले ले रखी थी। परतु मडल सदा सरकारकी आखोमे खटकता था, अिसलिअे मकान वनानेकी अिजाजत नही मिली थी। वह अव जाकर मिली। श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तने वहा मकान तथा कुआ वनवा दिया और अिसी जमीन पर सिंधके नगरपारकरकी अेक वहन श्रीमती विजयाकुवर विट्ठलदासने जो दो हजार रुपये दिये थे अुनसे कन्या आश्रमका मकान खडा किया गया। ता० १२-१-'३९ को वम्वअीके अुस समयके मुख्यमत्री वालासाहव खेरके हाथो अुसका अुद्घाटन किया गया। अिस अवसर पर श्री मोरारजीभाअी भी आये थे और अुनके हाथो आश्रमके चौकमे वृक्षा-रोपण किया गया। अिस प्रसग पर भील किसानो ओर दाहोदके नगरजनोने वडी सख्यामे अुपस्थित होकर अपना अुत्साह दिखाया था।

अिसके वाद वापाकी प्रेरणासे थाना जिलेमे आदिवासी-सेवा-मडलकी स्थापना की गअी और मडलके अेक आजीवन सदस्य और पुराने कार्यकर्ता श्री पाडुरग वणीकरको अेक वर्षके लिअे वहा भेजा गया। वापाकी अिच्छा धीरे धीरे मडलमे काम करनेवाले आजीवन भील सदस्यो पर मडलके सचालनकी जिम्मेदारी डालनेकी थी। और अिसके लिअे अुन्हे तालीम देकर तैयार भी किया जाता था। परिणामस्वरूप १९४०-४१ मे मडलकी व्यवस्थापक-सभामे अैसे आजीवन भील सदस्योको अधिक सख्यामे लिया गया। अुसी वर्ष श्री मोरारजी देसाअीकी अध्यक्षतामे मीराखेडीमे भील-परिषद् की गअी और अुसमे भीलोके प्रश्नोकी चर्चा और विचार किया गया।

वापाने भील-सेवा-मडल द्वारा जैसे शिक्षा और आरोग्यकी प्रवृत्तिया शुरूसे ही चलाअी, वैसे ही सहकारी प्रवृत्तिके वीज भी वहुत शुरूसे ही

झालोद और दाहोद तालुकोंमें डाले गये थे। प्रारम्भमे ये सहकारी समितिया भील पटेलिया किसानोको खाद और बीजके लिअे रुपया अुधार देती थी। अुनके बाद अुनका विकास होता गया। सहकारी समितियोके सदस्योके अनाजका सग्रह करके अुसे खरीद लिया जाता और अुसकी अमानत रकम जमा करके अुन्हें जरूरी कपडा और अन्य वस्तुअे बेची जाती। ३०–३५ समितियोके समूहके बीच अेक क्रय-विक्रय सघ खोल दिया जाता। अैसा अेक सघ गरबाडामे १९३९ मे, लीमडीमे १९४० मे, जेसावाडामें १९४१ मे और झालोदमे १९४६ मे स्थापित किया गया। ये चारो सघ कुल १०० समितियोको सभाल लेते है। अुनके सदस्योकी सख्या ३,९६६ है और अुनकी कुल शेयर-पूजी २६,६०० और अमानत पूजी ७५,९०० रु० है। अिन सब सघोको शृखलाबद्ध करनेवाली केन्द्रीय सस्था 'दाहोद सहकारी क्रय-विक्रय सघ' की स्थापना ता० १५–१२–'४३ को श्री वैकुठराय महेताके हाथो हुअी। यह सघ किसानो, मजदूरो और आम लोगोको नफाखोरी और काळाबाजारके पाशसे बचाकर बधे हुअे भावो पर जीवनकी आवश्यक चीजे मुहैया करनेका काम कर रहा है। अुसकी सदस्य सख्या २,००० है। शेयर-पूजी ३७,७०० और अमानत पूजी ५५,००० रु० है।

सराफी सहकारी समितियोकी सख्या बढकर कुल १२९ हो गअी है, जिनके कुल ६,५६५ सदस्य है। अुनकी शेयर-पूजी १,०६,५०० रु० है, जब कि अमानत पूजी १,८६,६०० रु० है। भील सदस्योके बडी सख्यामे निरक्षर होनेके कारण समितियोका कामकाज करनेके लिअे सघके मत्री और कारकुन रखे गये है और अुनके कामकी देखरेख रखनेके लिअे अेक खास अफसरकी नियुक्ति की गअी है।

साथ ही, सहकारी समितियो, ग्रामोद्योग समितियो और शहरी बैंकोको रुपया अुधार देनेके लिअे पूर्व पचमहाल बैंकिंग यूनियन लिमिटेडकी ता० १६–४–'४७ को श्री वैकुण्ठराय महेताके हाथो स्थापना की गअी है। अुसकी शेयर-पूजी ८५,००० रु० है और अुसमे समितियोकी अमानतें २,१६,००० रु० की और व्यक्तियोकी अमानते २,८४,००० रु० की है। अुसके कामकाजकी पूजी ७,५०,००० रु० की है। अिन तमाम सहकारी सस्थाओके सचालकोके तौर पर भील-सेवा-मडलके आजीवन सदस्योमें से ही कोअी न कोअी काम करते है।

१९४० मे भील-सेवा-मडलके अुपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त व्यक्तिगत सत्याग्रहमे शरीक हुअे और कानून-भगके परिणामस्वरूप अुन्हे अेक वर्षकी जेल हुअी। सजाकी अवधि पूरी करके जेलसे बाहर निकलनेके

थोडे ही समय बाद गाधीजीका 'भारत छोडो' आन्दोलन शुरू हो गया। गाधीजी और कार्यसमितिके तमाम सदस्य पकडे गये। नतीजा यह हुआ कि देश भरमे आन्दोलनने अुग्र रूप धारण कर लिया। सरकारने बडे पैमाने पर गिरफ्तारिया शुरू की। मडलके लगभग तमाम मुख्य कार्यकर्ताओ — श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त, श्री डाह्याभाअी नायक, श्री सुखदेवभाअी त्रिवेदी, श्री पाडुरग वणीकर और श्री अबालाल व्यास — को बिना मुकदमा चलाये अनिश्चित अवधिके लिअे भारत-रक्षा-कानूनके मातहत नजरबन्द कर दिया गया। अिनके सिवाय मडलके लगभग ३५ विद्यार्थियो और ६ विद्यार्थिनियोने लडाअीमे कूदकर कारावास स्वीकार किया। अिस स्थितिमे मडलका रोजमर्राका काम खटाअीमे पडने लगा। अिसलिअे बापाने दिल्लीसे आकर मडलका कामकाज दाहोदके दो वकील मित्रो — श्री रामचद्र शुक्ल और श्री रामचद्र पड्या — को सौंपा। सुअेज फार्मवाले श्री शान्तिलाल पड्याको मडलका अवैतनिक मत्री नियुक्त किया गया। अिसके सिवाय मडलके ट्रस्टी श्री हरखचद मोतीचद शाह तथा श्री वैकुण्ठराय महेता समय-समय पर दाहोद आकर सलाह-सूचना दे जाते थे। अिस प्रकार मडलके मुख्य सेवकोकी गैरहाजिरीमे भी कामकाज जारी रखा गया।

नजरबन्दी कानूनके अनुसार पकडे गये पाच सेवकोमे से कुछ १९४३ मे और बाकीके १९४४ मे जेलसे छूटे। अुसके बाद ता० २-३-'४४ को मडलकी व्यवस्थापक-सभा बुलाअी गयी। अिस सभाके समक्ष बापाने अपने मनकी अभिलाषाअे व्यक्त करते हुअे कहा

"मै अब बूढा होने आया हू। मेरी अिच्छा आखे बन्द होनेसे पहले यह देखनेकी है कि दूसरे प्रान्तोमे आदिम जातियोके कल्याण-कार्यका प्रारभ हो जाय। भील-सेवा-मडलके आजीवन सदस्योमे से भाअी वणीकर जैसेको अब दाहोद-झालोद, पचमहाल और गुजरात छोडकर मध्यप्रदेश जैसे प्रान्तमे जाकर यह काम करना चाहिये।"

आदिवासियोकी सेवा सिर्फ गुजरातमे ही नही, परतु भारतके अन्य प्रान्तोमे भी हो, यह अिच्छा बापाके दिलमे वर्षोसे घर कर रही थी। और अुसीके अनुसार अुन्होने दो वर्ष पहले अपने अेक साथी श्री सुखदेवभाअीको राजस्थानमे आदिवासियोकी सेवा करने भेजा था। अिसी अिच्छाके अनुसार बरसो पहले अेक भील-सेवकके साथ कच्छका रेगिस्तान पार करके अुन्होने थरपारकरमे अेक केन्द्र स्थापित किया और अुस सेवकके सुपुर्द किया था। अुसी अिच्छाके अनुसार अब अुन्होने श्री वणीकरसे मध्यप्रदेशमे जाकर आदि-वासियोके जिले मडलामे डेरा डालनेका अनुरोध किया। वर्षो तक अेक ही

भूमि पर काम करनेवाले और भाअीकी तरह रहनेवाले सेवकोको शुरूम तो जुदा होनेमे धक्का लगा। परतु बापाके लिअे तो 'सवै भूमि गोपालकी, तामे अटक कहा' वाली स्थिति थी और अुनके साथी भी बापाके साथ रहकर अिस भावनाको थोडे बहुत अशोमे जीवनमे अुतार सके थे। अिसीलिअे ठक्करबापाकी आज्ञा होते ही श्री पाडुरग वणीकर आदिवासियोकी सेवा करनेके लिअे मध्यप्रदेशमे गये और वहा मडलामे छावनी डालकर रहे। अुसके बाद बापाने मध्यप्रदेशकी सरकारके सम्मुख जो योजना रखी थी अुस पर अमल करनेके लिअे सरकारकी ओरसे श्री वणीकरकी सेवाअे अुधार देनेका अनुरोध करने पर आदिम जाति-सेवक-सघने अुनकी सेवाअे मध्यप्रदेशकी सरकारको अुधार दी है। श्री वणीकर मध्यप्रदेशके आदिवासियोकी आबादीवाले तमाम प्रदेशके सगठनकर्ताके रूपमे मडला जिलेमे काम कर रहे है। अिसी प्रकार मूक और निस्पृह हृदयवाले श्री अबालाल व्यास अुडीसामे सरकारकी मददसे आदिवासियोके पुनरुत्थानका काम कर रहे है। अिस तरह जिन जिन प्रान्तोमे आदिवासियोके कामके लिअे जरूरत पडी, वहा वहा भील-सेवा-मडलके मजे हुअे और अनुभवी कार्यकर्ताओको बापाने भेजा।

अिस प्रकार जब अेक तरफ आदिवासियोकी सेवाका काम विस्तृत होता जा रहा था, तब यहा घरमे भी मडलकी प्रवृत्तिया विकास पाती जा रही थी। ता० २०–४–'४५ को झालोदमे शबरी कन्या आश्रमके मकानका अुद्घाटन बम्बअीके तत्कालीन मुख्यमत्री श्री बालासाहब खेरके हाथो हुआ। अुसके बादके दो दिनोमे मीराखेडीमे पश्चिम भारतीय आदिवासी सेवको और कार्यकर्ताओका अेक सम्मेलन किया गया। वहा आदिवासियोके प्रश्नोकी चर्चा-विचारणा की गअी और सब सेवको और कार्यकर्ताओने अिस आशयका मत व्यक्त किया कि अब अखिल भारतीय आदिवासी-सेवक-सघ जैसी राष्ट्र-व्यापी सस्था स्थापित करनेका समय आ पहुचा है। परतु यह खयाल करके कि अखिल भारतीय सस्था शुरू होनेसे पहले पश्चिम भारतकी अेक मध्यस्थ सस्था स्थापित होनी चाहिये, पश्चिम भारतीय आदिवासी-सेवक-सघकी स्थापना की गअी। अिस सस्थाने ता० २४–६–'४६ को बम्बअी सरकारके सामने आदिवासियोके सर्वागीण अुत्कर्षके लिअे अेक पचवर्षीय योजना पेश की। साथ ही हरिजन-सेवक-सघके कार्यके सिलसिलेमे दिल्ली जानेके बाद बापा वहा बैठे बैठे 'आदिम जाति कल्याण-कार्य' नामक जो सस्था चला रहे थे, अुसकी लगाम भी अुन्होने श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तको सौप दी।

भील-सेवा-मडल द्वारा जिस तरह शिक्षा, सहकारी समिति, खादी, खेती, अस्पृश्यता-निवारण और डॉक्टरी राहत वगैरा अनेक कार्य पचमहालमे

जारी हो गये थे, अुसी तरह मद्यनिषेधकी प्रवृत्ति भी निरतर चालू ही रही। बापाने जिस दिन मडलकी स्थापना की, अुसी दिनसे यह काम भी शुरू कर दिया था। अिस सिलसिलेमे अुन्हे दाहोदके शरावखानेके मालिक श्री मचेरशा और सरकारी कर्मचारी, दोनोके साथ काफी सघर्षमे आना पडता था। परतु अिसकी परवाह किये बिना बापा तो भीलोमे घर की हुअी अिस बुराअीको मिटानेके लिअे लगातार प्रयत्न करते रहे, वे सरकार पर अिस मामलेमे प्रहार करनेमे जरा भी न हिचकते और न कोअी प्रहार करनेका मौका चूकते। बार बार भीलोके मेले और परिषदे करके शराबसे होनेवाली हानिया अुन्हे समझाते और मद्यनिषेधके प्रचारके लिअे तो आसपासके देशी राज्योमे भी जाते। अिस सबधमे समय-समय पर लेख लिखते। अेक बार सरकारने राज्यकी आय बढानेके लिअे अुस समय जो शराबकी दुकाने मौजूद थीं अुनके सिवाय देहातमे भी सस्ती शराबकी दुकाने शुरू कर दीं। अुस समय तो बापाका पुण्य प्रकोप भडक अुठा।

अुन्होने अिस सिलसिलेमे लेख लिखते हुअे बताया कि "राज्यका फर्ज गावोमे रहनेवाले लोगोके लिअे गाव-गाव शालाअे खोलनेका है। यह बात तो दूर रही। अुल्टे, अुसने गाव गाव शराबकी दुकाने खोल दी है, ताकि जो लोग अज्ञान है, वे अधिक अज्ञान रहे, अुनका आलस्य और व्यसन ज्यादा बढे और वे निरन्तर काल्पनिक सुखके भ्रममे फसे रहे। अैसा करके सरकार केवल अपना प्रारभिक कर्तव्य ही पालन नही करती, बल्कि अिन भले और भोले लोगोको अेक नअी लत लगाकर घोर पाप कर रही है।"

अिस प्रकारकी गाव-गाव खोली गअी अिन दुकानोके विरुद्ध बापाने अैसा जिहाद छेड दिया कि अन्तमे सरकारको ये सस्ती शराबकी दुकाने अुठा लेनी पडी।

शराबबन्दीकी माग करनेके लिअे तथा अिनामदारो और तालुकेदारोके जुल्मोके खिलाफ भीलोको सगठित करने और अुनमे जाग्रति लानेके लिअे किसान सघकी तरफसे श्री शान्तिलाल पड्याने दोनो तालुकोमे भीलोका अेक कूच निकाला और २६ जनवरी, १९४७ को स्वातत्र्य-दिवसके दिन लीमडीमे श्री रविशकर महाराजकी अध्यक्षतामे भील-परिषद् की गअी। अिस परिषद्मे तालुकोके गावोके और आसपासकी सरहदके देशी राज्योके भीलोने हजारोकी सख्यामे आकर दिलचस्पीके साथ भाग लिया। अिसी वर्ष अगस्तके महीनेमे भारत स्वतत्र हुआ। और अुसके बाद सरदार पटेलकी कार्यदक्षताके परिणामस्वरूप देशी राज्य बम्बअी प्रान्तमे मिल गये, तो तुरत बापाकी सूचनाके अनुसार सतरामपुर, देवगढ-बारिया वगैरा तथा राजपीपला और

सावरकाठामें आश्रम स्थापित किये गये। अिस प्रकार वापाकी वहुत वर्षोंकी मुराद पुरी हुअी। सरहदके अिन देशी राज्योमे मडलकी सेवाओंका असर तो पहलेसे ही पड चुका था। और वहाके कितने ही भील भाअियोके वालक मडलके आश्रमोमे रह कर पढाअी भी कर गये थे। अिसलिअे अिन नये आश्रमोको वेग प्राप्त करनेमे देर नही लगी। साथ ही स्वतत्रता मिलनेके वाद वम्वअी प्रान्तने भील-सेवा-मडल द्वारा मीराखेडी और आसपासके ४५ गावोमें सर्वोदय योजना चलाअी। यह काम अभी भी हो रहा है। अिसके सिवाय भीलोकी सहकारी प्रवृत्तिमे भी अच्छा वेग आया है। वम्वअी सरकारने जगल ठेकेदारोको न देकर जगल सहकारी समितियोको देनेकी नीति अख्तियार की है, अिसलिअे अिस कार्यमे भी अच्छी प्रगति हो रही है।

अिस प्रकार पच्चीस वर्ष पहले श्री ठक्करवापाने पचमहालकी सूखी धरती पर सेवाका जो पौदा लगाया था, वह वढकर आज वटवृक्ष वन चुका है और अुसकी छायाके नीचे अनेक भील वालक, स्त्रिया और पुरुष कल्लोल कर रहे हैं। वापाने जिस सस्थामे भील सेवाकी अुपासना करके दस दस वर्ष तक प्रत्यक्ष रूपमे काम किया और दूसरे पद्रह वर्ष जिसका सतत पथ-प्रदर्शन किया, अुस सस्थाने अपने पच्चीस वर्षके कार्यकालमे क्या किया? अिस प्रश्नके अुत्तरमे वर्तमान अध्यक्ष ही कहते हैं कि "अिसका हिसाव रुपये–आने–पाअीमे नही किया जा सकता।" परन्तु रुपये–आने–पाअीमे यह हिसाव लगाना हो तो भी खुशीसे कहा जा सकता है कि भील-सेवा-मडल द्वारा अिन पच्चीस वर्षोंमे भीलोकी सेवा और अुनके सेवकोके निर्वाहके लिअे जो दसेक लाख रुपये खर्च हुअे, अुनमे से अेक अेक रुपयेने सौ सौ रुपयेका काम किया है। भीलोके समाज-जीवनका प्रवाह जिस अुल्टी दिशामे वह रहा था, अुसे अुधरसे हटा कर सही दिशामे मोडा है। अिन आश्रमोमे तालीम पाये हुअे भाअियोमे से अनेक शिक्षक हो गये, कर्मचारी हो गये, सेवक वन गये, खादी कार्यकर्ता वन गये, स्वातत्र्य-सग्रामके सैनिक हो गये, और रचनात्मक कार्यकर्ता वन गये है। प्रान्तीय और वडी धारासभाओके सदस्य भी हो गये हैं। और वे जीवनके अलग अलग क्षेत्रोमे अपना नैतिक जौहर दिखा रहे हैं। अितना ही नही, वापाके शुरू किये हुअे भील-सेवा-मडलका सचालन अेक अपवाद (श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त जो अुसके अध्यक्ष हैं) के सिवाय वाकी सव भील कार्यकर्ता ही कर रहे है। अिन कार्यकर्ताओंमे परिश्रमशीलता तो थी ही, परन्तु कामकी नियमितता, हिसावकी सफाअी, प्रामाणिकता, सेवावृत्ति, दूसरोके लिअे कष्ट सहनेकी तैयारी, असुविधाअे

अुठा लेनेकी शक्ति, निरभिमानता और सरलता अित्यादि बापाके मुख्य गुण भी अुनमे आ गये है। सक्षेपमे कहे तो अिन पच्चीस वर्षोमे भील-सेवा-मडलने पचमहालकी धरतीका और अुसके बालकोके जीवनका कायापलट कर डाला है।

यहा अक बातकी सफाअी जरूरी हो जाती है। बापा स्वय क्रान्तिकारी नही थे, परतु पुरानी परपराके सुधारवादी समाज-सेवक थे। अुनमे अटूट मानव-प्रेम भरा था, अिसलिअे जहा कही भी दु ख देखते वहा अुसे दूर करनेका वे सदा प्रयत्न करते थे। भीलोको अज्ञान और वहममे सडते देखा तो अुनके लिअे अुन्होने पाठशालाअे और आश्रम शुरू कर दिये। अिन पाठशालाओमे जो शिक्षा दी गअी थी वह पुराने ढगकी थी। अूचे वर्गके लोग यह शिक्षा पाकर जैसे हाथ-पैर काममे लेनेकी कला खो बैठे है और नौकरी ही अुनमे से अधिकाशका लक्ष्य बन गया है, वैसे ही अिन भील भाअियोमे दाखिल हुअी पुराने ढगकी शिक्षाके फलस्वरूप अुनमें से अधिकाशका लक्ष्य भी नौकरी ही हो गया। अिस प्रकार अिस शिक्षाके परिणामस्वरूप जो लाभ मिलनेवाले थे वे तो भीलोको मिले ही, साथ ही अुसकी हानिया भी अुन्हे मिल गअी। अितने पर भी गाधीजीके सर्वग्राही आन्दोलन और गाधीजीके प्रति बापाकी श्रद्धा और भक्तिके कारण शिक्षा और आश्रम-सचालनकी पद्धतिमे थोडे-बहुत सुधार तो जारी हुअे ही और अुस हद तक पुराने ढगकी शिक्षाके परिणामस्वरूप जो हानिया होती थी अुनसे कुछ अशमे वे बच गये। यह अेक बात छोड दे तो मडलकी प्रवृत्तिने और कअी तरहसे भीलोके जीवनमे महान परिवर्तन किये है तथा अुन्हे सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक लाभ पहुचाये है।

बापाका यह ऋण अेक अेक समझदार भील पूरे अत करणसे स्वीकार करता है और यह समझता है कि बापा न होते तो अीश्वर जाने हमारी जातिके कल्याण-कार्यकी क्या हालत होती।

दूसरे, भील-सेवा-मडलके सचालक ठक्करबापा थे और बापाका अेक तरफ भारत-सेवक-समाज और दूसरी तरफ काग्रेस वगैराके साथ घनिष्ठ सबध था। अिसलिअे यह सस्था काग्रेस और भारत-सेवक-समाज दोनोकी प्रीतिभाजन बनी रही। जब जब सस्थाको जरूरत हुअी तभी गाधीजी और अुनकी मडली तथा श्री देवधर और समाजके अन्य नेता भील-सेवा-मडलके अुत्सवके अवसर पर भील-परिषदोमे यदा कदा आते और अिस कार्यको प्रेरणा, सहानुभूति और प्रोत्साहन देते थे। चार्ली अेण्ड्रूज, सरदार वल्लभभाअी पटेल और रविशकर महाराज जैसे महापुरुषोने १९२३ से १९४७ की अवधिमे

अलग अलग समयमें भील परिपद्का अध्यक्षपद स्वीकार किया और अुसे प्रेरणा तथा पथप्रदर्शन देकर वे भील-सेवा-मडलके कार्यको अच्छा वेग प्रदान कर गये। यह भी वापा और वापाके कार्यके प्रति अिनकी प्रीतिके कारण ही हुआ। गाधीजीने तो शुरूसे ही अिस सस्थाको अपनी सस्था माना और गुजरात प्रान्तीय समिति द्वारा आवश्यक आर्थिक सहायताका अेक हद तक प्रवध कर दिया। अिसके सिवाय प्रो० घोडो केशव कर्वे, श्री देववर दादा, श्री हृदयनाथ कुजरू, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, फादर अेल्विन और अैसे ही अन्य नामाकित स्त्री-पुरुष भी अिस सस्थाको देखने आये और अुसे काफी प्रोत्साहन दे गये। अिस प्रकार भारतभरके वडे-वडे आदमियोका लाभ अिस सस्थाको मिलता रहा, अिसमे वापाके सवध, अुनकी निर्व्याज मनोवृत्ति और सेवाकी लगन कारण-भूत थे। भील-सेवा-मडल द्वारा वापाने भीलोकी जो सेवा की है, वह गुज-रातमे अनन्य और अद्वितीय है। और समस्त भीलजाति अपने अिस धर्म-पिताको, वापाको हमेशा याद करेगी।

२५

हरिजन-सेवक-संघके मंत्रीपद पर

१

भारतके राजनैतिक प्रश्नके निपटारेके लिअे ब्रिटिश अधिकारियोने अेकके वाद अेक तीन गोलमेज परिषदे लदनमे वुलाअी। अुसके वाद १९३२ मे अुस समयके ब्रिटिश प्रधानमत्री राम्से मेक्डोनल्डने साम्प्रदायिक निर्णय देकर भारतके नये तैयार होनेवाले सविधानमे अत्यजोको हिन्दू जातिसे अलग मताधिकार दिया और अिस प्रकार राष्ट्रके शरीर पर अेक और शस्त्राघात करके अुसके टुकडे करनेका प्रयत्न किया। गाधीजी पहलेसे ही अिस किस्मके अलग मताधिकारके विरुद्ध थे, क्योकि अिसमे अुन्हे भारतमे आपसी झगडेके वीज दिखाअी देते थे और अन्तमे देशका नाश जान पडता था। अिसलिअे १९३१ के गाधी-अर्विन समझौतेके वाद ब्रिटेनके आमत्रण पर जव वे काग्रेसके अेकमात्र प्रतिनिधिके रूपमे गोलमेज परिपद्की वैठकमे भाग लेने गये, तव अुन्होने अिस साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध पहलेसे ही अपना मजवूत विरोध प्रकट कर दिया था। अुसी समय अुन्होने ब्रिटिश अधिकारियोको चेतावनी देते हुअे कहा था कि नये सविधानमे भारतके अत्यजोको यदि अलग मता-

धिकार दिया जायगा, तो मैं अुसका अपनी सारी शक्तिसे, प्राणोंकी बाजी लगाकर भी विरोध करूंगा।

अुस समय गांधीजीके कहे हुअे वचनोंमें निहित गांभीर्यको ब्रिटिश सत्ताधीशोंने समझा नहीं। अुन्होंने सोचा होगा कि यह तो गांधीजीकी खाली धमकी ही है, अिस पर कभी अमल नहीं होगा। परंतु जब यह निर्णय प्रकाशित होनेकी तैयारीमें था, तब गांधीजीने अुस समयके भारत-मंत्री श्री सेम्युअल होर और प्रधानमंत्री श्री राम्से मेक्डोनल्डके साथ पत्रव्यवहार करके हिन्दुओं और अंत्यजोंके बीच स्थायी भेद पैदा करनेवाला साम्प्रदायिक निर्णय न देनेका अनुरोध किया और दलीलें देकर अुन्हें समझानेके प्रयत्न किये। परंतु अुसका कोअी परिणाम नहीं हुआ। गांधीजी अुस समय जेलमें थे। और जेलमें रहकर अिस निर्णयके विरुद्ध प्रचार करके लोगोंको समझा नहीं सकते थे। अिसलिअे सब प्रयत्न असफल हो जानेके बाद यह निर्णय रद्द घोषित न हो जाय, तब तक आमरण अुपवास करनेका अुन्होंने फैसला किया। और यह फैसला अुन्होंने अधिकारियोंको बताया। २० सितम्बरको गांधीजीने अुपवास शुरू किया। देखते देखते यह समाचार भारतवर्षमें बिजलीकी तरह फैल गया। सारा देश तिलमिला अुठा। जगह-जगह गांधीजीको बचा लेनेके लिअे प्रयत्न होने लगे। भारतके कोने-कोनेसे दिल्ली और लंदन तार गये। लोकमतके अुग्र दबावका अन्तमें लंदन पर असर हुआ और ब्रिटेनके प्रधानमंत्रीको अपने निर्णयमें परिवर्तन करना पड़ा। अुसने यह बात स्वीकार की कि यदि भारतके अंत्यज स्वयं ही अलग मताधिकारका विरोध करते हों, संयुक्त मताधिकार स्वीकार करते हों और अिस मुद्दे पर दोनों पक्ष मिल कर कोअी समझौता कर लें, तो अुस समझौतेके आधार पर जिस साम्प्रदायिक निर्णयमें फेरबदल करनेमें ब्रिटेनको आपत्ति नहीं होगी।

अुनकी अिस प्रकारकी घोषणाके बाद भारतके बड़े बड़े नेता अंत्यजोंके नेता डॉ० भीमराव आंबेडकरको समझानेकी कोशिश करने लगे। श्री आम्बेडकरने तो हाथमें आये हुअे अिस सुवर्ण अवसरसे पूरा लाभ अुठानेका निश्चय कर रखा था। अिसलिअे वे रूठकर बैठ गये। अन्तमें बड़े बड़े नेताओंने अुन्हें मनानेका पूरा-पूरा प्रयत्न किया। साम्प्रदायिक निर्णयसे मिलनेवाली बैठकोंसे भी अधिक बैठकें देकर अन्तमें अुन्हें मना लिया गया और अुनके साथ समझौता हो गया। अिस आशयका तार विलायत भेजा गया, तब ब्रिटेनके प्रधानमंत्रीने अपने साम्प्रदायिक निर्णयका अुतना भाग रद्द घोषित किया। और यह समाचार भारत आने पर अन्तमें गांधीजीका अुपवास छूटा।

यह परिणाम लानेमें पडित मदनमोहन मालवीयजी, श्री घनश्यामदास बिडला और अन्य प्रथम पक्तिके नेताओंने जो अग्रगण्य भाग लिया, अुसमें ठक्करबापाका नाम भी गिना जा सकता है। गाधीजीके अुपवास शुरू करनेके समाचार दाहोदमें मिलते ही ठक्करबापा दाहोदसे सीधे पूना दौड गये। यरवदा जेलमें गाधीजीसे मुलाकात की। अुपवाससे पहलेकी अुनकी मनोभूमिका समझी। अुपवासके पीछे रहा अुनका दृष्टिबिन्दु भी समझा। और गाधीजीसे यह समझकर कि वे देशसे क्या चाहते हैं, खास तौर पर सवर्ण हिन्दुओंसे क्या चाहते हैं, बम्बअीमें सर्वदल-सम्मेलन करने और सम्मेलनके सामने गाधीजीकी बात रखनेमें बापाने बडा महत्त्वपूर्ण भाग लिया।

दूसरी तरफ डॉ० भीमराव आबेडकरको, जो मौका देखकर घात लगाये और मुह फुलाये बैठे थे, मना लेनेमें, अुन्हें राजी करनेका रास्ता निकालनेमें और सबको सर्वमान्य समझौते पर लानेमें बापाने सुलह करानेवालेके रूपमें बहुत महत्त्वपूर्ण भाग लिया।

अुस समय सबसे विवादास्पद विषय यह था कि अलग अलग प्रान्तोंमें अत्यजोंको किस अनुपातमें बैठकें दी जाय। अिसमें लोदियन-कमेटीके विवरणमें अलग अलग प्रान्तोंमें हरिजनोंकी जो सख्या बताअी गअी थी अुसका आधार स्वीकार किया गया था। अिस विवरणमें मद्रास, बबअी (सिन्ध सहित), पजाब, बिहार, अुडीसा, मध्यप्रान्त और आसाम प्रान्तोंके हरिजनोंकी जो सख्या दी गअी थी वह तो ठीक थी। परतु बगाल और युक्त प्रान्त (मौजूदा अुत्तर प्रदेश) के आकडे निश्चित नही थे।

अिस मामलेमें बगालके हरिजनोंकी आबादीके आकडोंके बारेमें सवर्ण और अवर्ण हिन्दू दोनों अेकमत हो गये थे। परतु अुत्तर प्रदेशका प्रश्न अन्त तक नही निपटा था। डॉ० आबेडकरने सारा हिसाब लगाकर यह माग की थी कि अलग अलग प्रान्तोंमें कुल मिलाकर १७५ बैठकें हरिजनोंके लिअे सुरक्षित रखी जाय। परतु सायमन-कमीशनके विवरणको आधार माना जाय, तो हरिजनोंको १७५ के बजाय १३१ बैठकें मिलनी चाहिये थी। अन्तमें बातचीतके परिणामस्वरूप हरिजनोंको १४८ बैठकें देकर अुनके मनका समाधान कर दिया गया था।

यह बात अुनके गले अुतारनेमें भारतके भिन्न भिन्न प्रान्तोंकी आबादी, हिन्दू आबादीमें अुनका अनुपात, आम आबादीमें अुनका अनुपात, अुन्हें कितनी बैठकें मिलनी चाहिये, अित्यादि तथ्य अिकट्ठे करनेमें ठक्करबापाने खूब परिश्रम किया था। अुन्होंने अुन दिनों जागरण कर करके लोदियन-कमीशनके विवरण, सायमन-कमीशनके विवरण और अलग-अलग समयमें हुअी

भारतकी जनगणनाके विवरणो आदिके पन्ने पल्टे थे। और वडी मेहनत करके अलग अलग कमेटियो तथा नेताओको आकडे मुहैया किये थे। अितना ही नही, पूना-समझौते द्वारा हरिजनोको और किसी फैसलेमे जो मिलनेवाला था अुससे अधिक मिला है, यह हकीकत अुन्होने आकडो और दलीलोमे सिद्ध करके हरिजनोके मनका समाधान करनेका मफल प्रयत्न किया था।

वापाने अपने 'व्हॉट दे हैव गेण्ड' नामक लेखमे जो तफमीले दी है, वे अुनकी अध्ययनशीलता और अुद्योगपरायणताकी अच्छी प्रतीति करा देती है।

यरवदा-समझौतेका समर्थन करनेवाले अिस लेखके अन्तिम भागमे मारे प्रश्नकी समीक्षा करते हुअे वापा लिखते है "गाधीजीके प्राण वचाये जा सके, यह अेक ही चीज पूना-समझौतेका औचित्य दिखानेके लिअे काफी है। परतु तथाकथित सवर्णो और जिन्हे वे अछूत वताते है अुन हरिजनोके वीच अिस अैतिहासिक अुपवासने जो अेकता स्थापित की, अुस सिद्धिको अलग रखे, ब्रिटेनके प्रधानमत्रीको अपना निर्णय वदलना पडा, अिस वातको भी अेक तरफ रख दे, तो भी अिस समझौतेका नैतिक मूल्याकन कम नही करना चाहिये। अुसने ब्रिटेन और दुनियाको यह वात वता दी कि हिन्दुत्वमे अव भी सामाजिक सजीवता और सास्कृतिक अेकवाक्यता मौजूद हे। और वह स्वय अपने प्रयत्नसे अपना राजनैतिक भविष्य भी निर्माण कर सकता है।

"अिस अुपवाससे हिन्दूधर्म और हिन्दू जातिने अपनी भीतरी अेकताका दर्शन किया है और ब्रिटेनके प्रधानमत्री ओर अुनके मत्रिमडलकी तरफमे वार वार दी गअी अिस चुनौतीका कि भारतीयोको अपने साम्प्रदायिक प्रश्नोका निराकरण स्वय ही कर लेना चाहिये, अिस अुपवासने कारगर तरीके पर जवाव दिया है, यह कहू तो मै अतिशयोक्तिपूर्ण दावा करता हू अैसा नही माना जायगा। साम्प्रदायिक निर्णयने राष्ट्रवादियोके डरको वाजिव ठहराया, तो यरवदा-समझौतेने गोलमेज परिपद्मे कुछ भारतीय प्रतिनिधियो द्वारा प्रधानमत्रीमे घरके झगडेमे पडकर निपटारा करनेके लिअे किये गये अनुरोधमे गाधीजीने शरीक होनेसे जो अिनकार किया था अुमका औचित्य सिद्ध कर दिखाया।"

अिस लेखमे जैसे वापाने हरिजनोके मनका ममाधान करनेका प्रयत्न किया हे, वैसे ही समझौतेसे अस्पृश्योने जरूरतमे ज्यादा हिस्सा छीन लिया, अिस खयालवाले सवर्ण हिन्दुओको भी समझानेकी कोशिश की है। अिमी लेखमे अुन्होने अेक जगह लिखा है कि

"कुछ लोग अिस समझोतेसे १४८ बैठके हरिजनोको देनेका जो निश्चय हुआ हे अुसकी तुलना पिछले अगस्तमे प्रधानमत्रीके दिये हुअे साम्प्रदायिक निर्णयमे अुल्लिखित ७१ बैठकोके साथ करते है और यह निष्कर्ष निकालते हे कि अत्यजोको जरूरतसे ज्यादा दे दिया गया हे। परतु वे यह बात भूल जाते है कि अछूतोको ७१ बैठकोके सिवाय हिन्दू जातिकी अथवा साधारण बैठकोके लिअे चुनाव लडनेका अधिकार मिला था। अिसके अलावा, यह भी याद रखना चाहिये कि दलित वर्गको दिया जानेवाला अलग मताधिकार कमसे कम बीस वर्ष तक जारी रहा होता, जब कि यरवदा-समझौतेके अधीन अिस चीजका तुरत ही अत हो गया हे।"

थोडेमे कहे तो अिस समझौतेकी तहमे बापाकी पहली दृष्टि यह थी कि अिससे गाधीजीके जीवनकी रक्षा हो रही हे। और सब दलीले तो अुनके सरल ओर समाधानमूलक स्वभावने ही ढूढ निकाली थी।

अिस प्रकार यरवदा-समझौता हुआ। गाधीजीका अुपवास छूटा, देश और ससारके लिअे अुनके बहुमूल्य जीवनकी रक्षा हो सकी और यह परिणाम लानेमे बापा स्वय भी अपने यथाशक्ति प्रयत्न द्वारा हाथ बटा सके, अिससे अुनके आनदकी सीमा नही रही। अिस प्रकार बबअीमे अेकत्र हुअे सवर्ण नेताओका गाधीजीको बचा लेनेका तात्कालिक हेतु तो सिद्ध हुआ, परतु साथ ही वे यह भी समझते थे कि जब तक हिन्दू समाज और हिन्दू धर्ममे से अस्पृश्यताका पाप नष्ट नही हो जाता, तब तक देश पर आफतके जो बादल छाये हुअे है, वे सदाके लिअे नही बिखर सकते। जब तक अस्पृश्यता नही मिटती, तब तक गाधीजीके मनको भी चैन नही पडेगा। और अैसा होगा तो गाधीजीकी जानका खतरा हमेशा बना ही रहेगा। अिन दिनोमे जैसे अुन्होने अस्पृश्यताके अस्तित्वके कारण गाधीजीकी आन्तरिक व्यथाको समझा, वैसे ही अस्पृश्यता-रूपी राक्षसका सहार करके हिन्दू धर्म और हिन्दू समाजको शुद्ध करनेकी जरूरतको भी समझा। साथ ही पूना-समझौतेके अनुसार वे अछूतोके लिअे कुअे, तालाब, धर्मशालाअें और सार्वजनिक अुपयोगके स्थान खोल देनेके लिअे अुसे कानूनी रूप देनेका प्रयत्न करनेको भी रजामद हुअे थे। स्वराज्यकी स्थापना तक यह चीज कानूनी रूप ग्रहण न करे, तो स्वराज्यकी पार्लियामेण्टमे यह कानून पास करानेका भी वे पहला वचन दे चुके थे।

अिस सारी परिस्थितिको ध्यानमे रखकर बम्बअीमे अिकट्ठे हुअे नेता यरवदा-समझौता करके ही नहीं रुके, बल्कि वे भारतमे अस्पृश्यताका काला मुह कैसे हो अिसका भी विचार करने लगे। और विचारके अन्तमे गाधीजीकी

प्रेरणा, आशीर्वाद और मार्गदर्शन द्वारा अुन्होंने अस्पृश्यता नष्ट करनेके लिअे अेक भारतव्यापी संस्थाकी स्थापना की। अिसका नाम अखिल भारतीय अस्पृश्यता-निवारण-संघ रखा। गांधीजीने अिस संघके अध्यक्षके लिअे श्री घनश्यामदास बिड़लाका नाम सुझाया। परन्तु बिड़लाजीको अैसा नहीं लगा कि वे अकेले हाथों अिस भगीरथ कार्यको चला सकेंगे। अिसलिअे अुन्होंने अध्यक्षपद संभालनेके लिअे गांधीजीके सामने अेक शर्त रखी। और वह यह कि अिस संघके मंत्रीका काम करनेको श्री ठक्करबापा तैयार हों। गांधीजीने अिस बातका तुरंत स्वागत किया और ठक्करबापासे संघका मंत्रीपद स्वीकार करनेको कहा। बापा पर भील-सेवा-मंडलके संचालनकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी। साथ ही लड़ाअीके दिनोंमें मंडलको आर्थिक मुसीबतोंका भी काफी सामना करना पड़ा था। अिसलिअे भील-सेवा-मंडलके कामको अिस प्रकार छोड़कर दिल्ली जाकर हरिजन-सेवक-संघका मंत्रीपद संभालना बड़ा कठिन था। परंतु बापूने बापाको समझाया। अुनके हृदयमें अपील करके कहा कि "भील-सेवा-मंडलका काम अुपयोगी तो है ही परंतु देश और हिन्दू जातिके अितिहासकी अिस घड़ीमें हरिजन-सेवा अधिक जरूरी है। अिसकी जड़में सारे राष्ट्रकी आत्मशुद्धि करके अुसे अूंचा अुठानेकी आध्यात्मिक भावना विद्यमान है। अैसा करनेके लिअे अुच्च नैतिक बलवाले मनुष्योंकी अिस कार्यमें पहली आवश्यकता है। हिन्दू जातिने सदियों तक अस्पृश्यता जारी रखकर जो पाप किया है, अुसका प्रायश्चित्त करना है। अिस मामलेमें बापा जैसे व्यक्ति ही पहल कर सकते हैं।'

अन्तमें गांधीजीकी बात बापाकी भी समझमें आ गअी और अुन्होंने संघका मंत्रीपद स्वीकार कर लिया। अिस प्रकार भारतमें अस्पृश्यताका नाश करनेके लिअे अस्पृश्योंकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति सुधारने और सवर्णोंके हृदयोंमें पश्चात्तापकी भावना जागृत करके अुन्हें अपने पापका प्रायश्चित्त करनेकी प्रेरणा देनेके लिअे अस्पृश्यता-निवारण-संघकी स्थापना हुअी। बादमें जब गांधीजीने अछूतोंके लिअे 'हरिजन' शब्द अपनाया, तब अिस संघका नाम बदलकर हरिजन-सेवक-संघ रखा गया।

सवर्ण नेताओंकी बम्बअीमें जो बैठक की गअी थी, अुसमें अस्पृश्यता-निवारण-संघकी नीति और कार्यक्रम तैयार कर लिये गये और संघके अध्यक्ष और मंत्रीके हस्ताक्षरोंसे प्रकाशित किये गये अेक सम्मिलित वक्तव्यमें अिस प्रकार घोषित किये गये

"यह संघ भारतमें सब प्रकारके प्रचलित अस्पृश्यताके कलंकसे हिन्दू जातिको सभी शांतिमय अुपायों द्वारा मुक्त करेगा।

"यह सघ मवर्णोके मानसमे जडमूलसे अैसा परिवर्तन करनेका प्रयत्न करेगा, जिससे वे हरिजन भाअियोको अपने वरावर समझे और अुनके साथ वैसा ही वर्ताव करे। परतु जाति-प्रथाका नाश और अन्तर्जातीय भोजन वगैरा मघके कार्यक्षेत्रकी मर्यादाके वाहर रहेगे।

"अस्पृश्यताकी सस्थाके फलस्वरूप देशमे जो अनेक वुराअिया फल-फूल रही है, अुन सवसे भारतमे रहनेवाली समस्त जातियोको सभी शातिपूर्ण साधनो द्वारा सघ मुक्त करेगा। हमारी प्रजाके अेक पददलित विभागको जो अनेक प्रकारके नागरिक अधिकारोके अुपभोगसे वचित रखा गया है और अुनके लिअे जो रुकावटे पैदा कर दी गअी है, अुन्हे दूर करके हमारे ये पददलित भाअी सव प्रकारके नागरिक अधिकार भोग सकें, अिसके लिअे सघ सभी प्रयत्न करेगा।

"सघका कार्यक्षेत्र सवर्णो और जिन्हे अव तक अछूत माना गया है अुन हरिजनो, दोनो प्रकारके लोगोमे रहेगा, और जव तक अस्पृश्यताका छोटा-सा भी निशान वाकी रहेगा, तव तक सघ सवर्णोको धीरजसे समझा-वुझाकर अपना काम जारी रखेगा। अितने पर भी अुसके कामका मुख्य झुकाव तो रचनात्मक ही रहेगा। शिक्षाकी दिशामे हरिजनो और दलितोको अूचा अुठाने तथा अुनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति सुधारकर अुनकी प्रगति करनेका काम मुख्य रहेगा। यही कार्य अस्पृश्यता-निवारणकी दिशामे हिन्दू समाजको तेजीसे आगे वढा सकेगा।"

सघके कार्यक्रमका ब्यौरा समझाते हुअे अुसी वयानमे वताया गया है कि,

"भारत भरमे अस्पृश्यता-निवारणका काम व्यवस्थित ढगसे होनेके लिअे अुसे २२ प्रान्तो और १८४ केन्द्रोमे वाट दिया गया है। प्रत्येक केन्द्रके लिअे ३,००० रु० की रकमका प्रवध करनेको कहा गया है। अिस प्रकार सारे देशके सभी केन्द्रोमे काम शुरू हो तो प्रतिवर्ष ६ लाख रुपये खर्च होनेका अदाज है। अितनी रकम केन्द्रीय कोष और प्रान्तो तथा जिलोसे होनेवाले चदेसे प्राप्त कर ली जायगी। अिस प्रकार यह हिसाव लगाया गया है कि सघके कार्यके लिअे प्रति वर्ष छ लाख रुपयेकी रकम अिकट्ठी की जाय और हर साल खर्च कर डाली जाय।

"यह कार्यक्रम पाच वर्ष तक जारी रखनेका अिरादा है। अिस कार्यके साथ ही भारत हितवर्धक मण्डल (अिण्डिया वेलफेयर लीग) के सचालक ववअीके श्री डेविडका अेक सुझाव भी जोड दिया गया है। अिस सुझावके अनुसार १,००० हरिजनोको प्रारभिक शिक्षासे लगाकर अूची शिक्षा तकका

खर्च जुटाना है। अुनके सुझाये हुअे मार्गके अनुसार देशमें कमसे कम १,००० धनवान मनुष्योंको आगे आना चाहिये और प्रत्येक धनवान सज्जनको अेक अेक हरिजन विद्यार्थीकी शिक्षाकी जिम्मेदारी अपने सिर पर ले लेनी चाहिये। श्री डेविडका यह सुझाव हमें (अध्यक्ष और मन्त्रीको) बहुत मुनासिब लगा है और हम आशा रखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति और कुछ नहीं तो कमसे कम अेक हरिजन विद्यार्थीका खर्च अुठा लेगा।"

अिस प्रकार बम्बअीमें संघकी स्थापनाका काम पूरा हुआ। अुसके बाद अनुकूलताकी दृष्टिसे संघका मुख्य कार्यालय दिल्लीमें रखा गया। और तबसे ठक्करबापाने दाहोदका निवास छोड़कर दिल्लीमें रहना शुरू किया। भील-सेवा-मंडलके रोजमर्राके कामकी जिम्मेदारी अपने पुराने, विश्वस्त और अनुभवी साथी कार्यकर्ताओं पर डालकर यह नया मिशन पूरा करनेको अुन्होंने कमर कसी। और अिस प्रकार बापाने हरिजन-सेवक-संघके नये कार्यका श्रीगणेश किया।

सबसे पहला काम अुन्होंने सारे देशमें दौरा करने, प्रान्त प्रान्तमें हरिजनोंकी स्थितिका अध्ययन करने, सवर्णोंके हृदय पिघलाने और अस्पृश्यताके विरोधमें जोरशोरसे प्रचार करनेका किया। अिन छ: महीनोंमें दिल्लीमें वे मुश्किलसे महीनेमें आठ-दस दिन बिताते थे। बाकीके बीस-बाअिस दिन और कभी बार तो सारा महीना वे लम्बे सफरमें गुजारते थे। अेक बरसमें ठक्करबापाने देशके भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें दौरे किये। भूख, थकावट और जागरणकी अुन्होंने परवाह नहीं की। जगह जगह घूमकर अुन्होंने हरिजनोंके प्रश्न समझे, तथ्य अिकट्ठे किये और अखबारोंमें अपनी यात्राके अनुभव और विवरण दिये। हरिजनोंकी कैसी स्थिति है, अिसका हूबहू चित्र दिया।

प्रवासमें जहां जहां गये वहीं हरिजनोंकी असली हालत आंखों देखनेका अुन्हें मौका मिला। और अुन्होंने यह देखा कि सवर्ण भाअियोंने धार्मिक मान्यताके झूठे भ्रममें पड़कर हरिजनोंको कैसी करुण स्थितिमें डाल दिया है, अुन पर वे कैसे कैसे जुल्म गुजार रहे हैं। हरिजनोंकी बस्ती गांवके बाहर अैसी गंदी जगह पर होती, जहां सारे गांवका कूड़ा-करकट डाला जाता था। वे अच्छे कपड़े नहीं पहन सकते थे। कहीं कहीं शक्ति होने पर भी शादीमें बारातका जुलूस नहीं निकाला जा सकता था, और अिसी तरहके दूसरे ठाट नहीं हो सकते थे। वर राजा घोड़े पर बैठकर या पालकीमें नहीं निकल सकता था। सोने-चांदीके जेवर नहीं पहने जा सकते थे। अिस तरह हरिजनों पर भांति भांतिके प्रतिबंध रूढ़ियोंके रूपमें प्रचलित थे। जिनके सिवाय गांवकी चौपाल, मंदिर, रास्ते, तालाब, कुअें और पाठशालाअें वगैरा सार्वजनिक अुपयोगके

स्थानोमे वे नही जा सकते थे और न अुनका अुपभोग अथवा अुपयोग कर सकते थे। और दक्षिणमे तो कही कही यह हाल था कि सवर्ण हरिजनोकी परछाअी भी अपने पर नही पडने देते थे। अगर किसी पर अुनकी परछाअी पड जाती तो वह भ्रष्ट हो जाता था। साथ ही दक्षिणके कुछ भागोमे हरिजनोको 'सेवकम् सेवकम्' बोलते हुअे चलना पडता था। शहरोसे गावोके हरिजनोकी स्थिति और भी खराब थी।

अिस स्थितिमे हरिजन कही सिर अुठाते, तो सवर्ण अुन पर क्रुद्ध होकर अुनका बुरा हाल करते थे। अुन्हे पशुओकी तरह मारते-पीटते, अुनके झोपडे जमीदोज कर डालते या आग लगाकर जला देते। कभी कभी बहुत अधिक मारके कारण हरिजनोकी मृत्यु भी हो जाती। अिनमे से अधिकाशकी तो दाद-फरियाद भी नही सुनी जाती और यदि कोअी हरिजन-सेवक अुनकी मदद करनेका प्रयत्न करता तो अुसकी भी दुर्दशा होती। सवर्ण अुनका सामाजिक बहिष्कार करते और अन्य कअी प्रकारसे अुन्हे परेशान करते।

अधिकाश हरिजन तो सवर्णोसे अितने ज्यादा दबे हुअे रहते कि कोअी भले सवर्ण यदि पाठशाला, चोपाल, तालाब, कुअे वगैरा सार्वजनिक स्थानोका अुपयोग करनेके नागरिक अधिकारोका अुपयोग करनेके लिअे हरिजनोको अुत्साह दिलाते भी, तो वे अुनके कहने पर ध्यान न देते और कहते, 'अरे, बाबा, हम जहा पडे है वही ठीक है। व्यर्थ हमे दुखी करने क्यो आये हो?"

अिस प्रकार देश भरमे हरिजनोकी आर्थिक स्थिति ज्यादातर बहुत खराब थी। अिसके सिवा सामाजिक और राजनैतिक अधिकारोमे वचित रहनेके कारण अूपर बताअी हुअी और न बताअी हुअी अनेक प्रकारकी दिक्कतें भी अुन्हे अुठानी पडती थी। यहा तक कि अधिकाश हरिजनो और सवर्णोको अिसमे कोअी बुराअी ही नही दिखाअी देती थी। 'हरिजन सामाजिक रूपमे अछूत है, आर्थिक दृष्टिसे गुलामोसे भी बदतर है और धार्मिक हेसियतसे जिन मदिरोको हम गलत तौर पर अीश्वरके धाम कहते है अुनके दरवाजे अिनके लिअे बद है'—गाधीजीके ये वाक्य बापाने अपने प्रवासमे जगह-जगह चरितार्थ हुअे पाये।

दूसरी तरफ गाधीजीके सितम्बर मासके 'युगप्रवर्तक' अुपवासके बाद सवर्णोमे, अिन-गिने स्थानो पर ही सही, जागृति पैदा हो गअी थी। अुन्हे हरिजनोके प्रति किये जानेवाले छुआछूतके पापका भान हो गया था और परिणामस्वरूप छुटपुट स्थानोमे प्रायश्चित्तकी गगोत्री बहनी शुरू हो गअी

थी । २० सितम्बर १९३२ से २ अक्तूबर तकके समयमे गाधीजीके अुपवासके फलस्वरूप और ठक्करवापा तथा अन्य वहुतसे हरिजन-सेवकोंके प्रयासके कारण देशभरमे लगभग १५० मदिर खुल गये थे और अिसी प्रकार कितनी ही पाठशालाओमे हरिजन विद्यार्थियोको प्रवेश मिलने लगा था। बम्बअी, दिल्ली, नागपुर, पूना और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमे हरिजनोके साथ सहभोजके कार्यक्रमोका भी सफलतापूर्वक आयोजन किया गया था। परतु यह सब तो समुद्रमे बूदके बराबर था। सैकडो वर्षोसे अस्पृश्यताका कीडा हिन्दूधर्मको भीतरसे कुतर रहा था। अुसे पूरी तरह निकाल डालनेके लिअे व्यवस्थित, सगठित और बडे पैमाने पर अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलन छेडनेकी और साथ साथ रचनात्मक दृष्टिसे जगह जगह काम शुरू कर देनेकी जरूरत थी। ठक्करवापा रात-दिन अेक करके भारतके लगभग तमाम प्रान्तोमे खूब घूमे। जहा रेल नही जाती थी अैसे भागोमे भी घूमकर हरिजनोकी दशा सुधारनेके लिअे और अस्पृश्यतारूपी राक्षसका सहार करनेके लिअे देशभरमे २२ प्रान्तीय शाखाओ और १७८ जिला केन्द्रोका जाल बिछा दिया। और अुनके द्वारा अस्पृश्यता विरोधी आन्दोलन सब मोर्चो पर छेड दिया।

अिस प्रकार बापा जब देशके अलग अलग भागोमे प्रवास कर रहे थे और हरिजन-सेवाके कार्यमे मन और कर्मसे डूब गये थे, तब अचानक अेक दिन अुन्हे गाधीजीके अुपवासके निर्णयकी खबर मिली। सारे देशमें यह समाचार फैल गया था कि यह अुपवास १९३३ के मअी मासकी तारीख़मे शुरू होगा। आठ दिन पहले तो अुसकी किसीको खबर भी नही थी। जेलमे अुनके साथ रहनेवाले श्री महादेवभाअी और सरदार वल्लभभाअी पटेल तकको नही थी। २७ अप्रैलको आधी रातके समय जब गाधीजीके मनमे मथन चल रहा था, तब तो वे निश्चिन्त सो रहे थे। मनोमथनके फलस्वरूप गाधीजीने यह निर्णय किया और रातके डेढ बजे अुन्होने बयान तैयार करके दूसरे दिन सवेरे प्रार्थनाके बाद सरदार वल्लभभाअी पटेलके हाथोमे रख दिया। महादेवभाअीका पिछली रातका जागरण होनेके कारण गाधीजीके आदेशसे वे वापस सो गये थे। दुबारा जागे तभी अुन्हे भी अिसका पता चला।

अिस दुखद समाचारसे बहुतोको धक्का लगा। बहुतोको दुख हुआ। परतु गाधीजीको अन्तरकी जो आवाज सुनाअी दी, अुस पर अमल करनेसे अुन्हे कैसे रोका जा सकता था? अिस कदमके बारेमे सरदार वल्लभभाअीने अेक पत्रमे लिखा था, "बापूने अिस बार की हुअी प्रतिज्ञामे

किसीकी सलाह या सम्मति ली ही नही। अिस बारकी प्रतिज्ञा केवल धार्मिक थी, अिस कारण अिसमे मेरी सम्मतिका सवाल ही नही था।

"रातको अेक बजे जब हम सब नीदमे पडे हुअे थे, तब अुन्होने अपना निर्णय किया और डेढ बजे अुठकर वह वक्तव्य तैयार कर लिया जो प्रसिद्ध हुआ। मैंने देखा कि अुसमे फेरबदलकी जरा भी गुजाअिश नही रखी गअी थी। फिर भी अिस बारेमे पूछकर विश्वास कर लिया और जब जान लिया कि निर्णय हो ही चुका है, तब तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे लिअे अीश्वरके अधीन होनेके सिवाय कोअी चारा ही नही।

" प्रतिज्ञाके गुण-दोषोका विचार करने पर अैसा लगा कि यरवदा-समझौतेके बाद हिन्दू समाजके कुछ भागके वर्ताव और खास तौर पर सनातनी और कुछ शिक्षित हिन्दुओके प्रचारके ढगको देखते हुअे जल्दी या देरसे अुपवास तो आने ही वाला था। तो फिर अितनी-सी बातके लिअे शोक क्यो किया जाय कि अुपवास थोडे दिन ओर न टाला जा सका?"

जो मनोदशा, समझ और दृष्टि सरदार वल्लभभाअीकी थी, लगभग वही मनोदशा ठक्करबापाकी थी। अिसलिअे वे तो गाधीजीके अुपवासको अीश्वरेच्छा मानकर अुसके अधीन हो गये और किसी भी प्रकारका शोक करनेके बजाय गाधीजीके प्रिय अस्पृश्यता-निवारणके कार्यमे ही दुगुने वेगसे जुट गये।

अस्पृश्यताकी भावनाके कारण हिन्दू समाजने हरिजनोकी कैसी करुण और भयकर दशा कर दी थी, अिसका चित्र लेखो और भाषणो द्वारा वे जनसमाजके सामने बिना थके रखते ही रहे। गाधीजीके अुपवासके दौरानमे अुन्होने 'भगी बस्ती या नरक' शीर्षकसे अलाहाबाद, दिल्ली, कलकत्ता, मथुरा और भावनगर वगैरा बडे शहरोके मेहतर-मुहल्लो, अुन्हीके पास खडे किये जानेवाले पाखानो, अुनके झोपडोके सामने ही अुडेली जानेवाली मैलेकी टोक-रियो और गाडियोका जो कपकपानेवाला चित्र दिया, वह अितना हूबहू है कि पढनेवालेके नाक-मुहको दुर्गंधमे भर देता है। तब जिन्हे दिन-रात अिस मैली गदी जगहमे नरकके ढेरके बीच रहना पडता है अुनकी दशा क्या होती होगी? हिन्दू समाजके हाथो भगी भाअियोकी यह जो दुर्दशा हुअी है, अुसे दूर करना सवर्णोका धर्म है या नही? यह दशा कैसे दूर हो? अिस विषयमे समझाते हुअे लेखके अतिम भागमे ठक्करबापा लिखते है, "हमारे शिक्षित वर्गके लोग जब तक भगियोके मुहल्लेमे जाकर नही बसते, चौबीसो घटे अुनके सुख-दुःखमे भाग नही लेते, दिन-रात अुनकी सेवा नही करते, तब तक अिस नरकवाससे अुन्हे मुक्ति नही मिलेगी।

"पतितमे पतित लोगोके, चोर-डाकुओंके, हत्यारे लोगोके निवास-स्थानमे जाकर हमारे साधु-सतोने सेवा की है। गुजरातमे स्वामीनारायणकी अैसी सेवा प्रसिद्ध है। हमारी नजरके सामने ही भाअी रविशकरने चोर-डाकुओंके बीच रहकर अुनके जीवन पलट दिये हैं। विदेशी भी अैसी सेवा करने यहा आते है। भगी तो चोर, डाकू और हत्यारोसे हजार दर्जे अच्छे है। अुनकी दीन-हीन दशा सुधारना हमारा धर्म है। परतु हमने आज तक अिस तरफ ध्यान ही नही दिया। अिस नरकवासकी ओर अेक निगाह डालने तककी परवाह नही की।

"अब हमारी आखें कुछ कुछ खुली है। गाधीजीके महाव्रतसे हमारी निद्रा कुछ-कुछ अुडी दीखती है। अैसी महाविपत्तिके समय हरिजनोकी क्या सेवा हो सकती है, अिसका विचार करना चाहिये। आशा है कि यह सब चार दिनका तमाशा नही हो रहेगा और गाधीजीका महाव्रत पूरा होते ही दलित हरिजनोकी सेवाका हमारा जोश ठडा नही पड जायगा। दीन-दलितोकी हायकी प्रलयाग्निसे बचना हो, तो हम जालिमोको आज ही, अिसी क्षण चेतकर सावधान हो जाना चाहिये।"

८ तारीखको शुरु हुआ अुपवास २९ तारीखको पूरा हुआ। अुस समय गाधीजीके कुछ साथी कार्यकर्ता पूना पहुच गये थे। ठक्करबापा भी अिस पवित्र दृश्यके साक्षी बननेके लिअे पूना गये थे। और जब बापूने प्रार्थना पूरी करनेके बाद दोपहरके बारह बजे प्रेमलीला बहन ठाकरसीके हाथो मुसबीके रसका प्याला लिया, तब अुनके साथी, सेवक, डॉक्टर और हरिजन वगैरा बडी सख्यामे अुनके पास बैठे थे। महादेवभाअीके वर्णनके अनुसार "सब हरिजन भाअी सच्चे हरिजन-सेवक ठक्करबापा और जमनालालजीके चारो ओर घेरा डाले बैठे थे।"

गाधीजी अीश्वर-कृपासे बच गये। २१ दिनके अुपवास पूरे हुअे और गाधीजीने पारणा किया। अिस शुभ अवसर पर कस्तूरबा गाधी, सरदार वल्लभभाअी पटेल, मालवीयजी, राजाजी, श्री जमनालाल बजाज वगैरा नेताओने जो सदेश भेजे थे, अुनमे ठक्करबापाने भी बापूके अनशनकी सफलताके लिअे अीश्वरका आभार व्यक्त करनेवाला यह सदेश भेजा था

"राजाजीके कथनानुसार आज चमत्कार हो गया। हम सब अीश्वरका जितना आभार माने अुतना ही थोडा है। 'रघुपति राघव राजा राम' की धुन पडितजी लगा रहे थे, तब बापूकी अगुलिया ताल दे रही थीं, अीश्वर-परायणताका अिससे अधिक सबूत शकाशीलोके लिअे और क्या चाहिये? अगर मैं यह कहू कि हरिजनोकी सेवा अब अधिक जोरसे, धार्मिकतासे और

सर्वव्यापी होगी और जिसमें सारा देश भाग लेगा, तो यह मेरी धृष्टता नहीं मानी जायगी। जिस धार्मिकतामें अिस आन्दोलनको पुष्टि मिली है, अुससे अधिक जोरमें वह सफल हो। हम हरिजनोंको पूरी तरह अपनायें और दुनियामें अूचा सिर करके और छाती तानकर चल सकें, अितनी मुराद हमारी अीश्वर पूरी करे।"

२

बापूके अुपवास पूरे होनेके बाद ठक्करबापा फिर अपने काममें लग गये और पहलेके कार्यक्रमके अनुसार प्रांत प्रांतमें घूमकर प्रवास करने लगे तथा जहां जहां अनुकूलता मिली, वहां हरिजन-सेवाके केन्द्र स्थापित करने और हरिजनोंके प्रति कर्तव्यपालनके लिअे सवर्णोंके हृदय जाग्रत करनेमें अपनी सारी शक्ति लगाने लगे।

हरिजनोंकी सेवामें वे अितने तन्मय हो गये थे कि दौरेके दौरानमें अेक दिन अचानक अुन्हें अेक विचार आया। अुनके मनमें खयाल आया कि गांधीजी यदि अस्पृश्यता-निवारणके लिअे सारे देशमें घूमें और जगह जगह प्रत्यक्ष अुपदेश देकर लोगोंके अन्तःकरणको जाग्रत करें, तो अिस काममें अच्छी सफलता मिल सकती है। यह विचार बापाको खूब जंचा। अिसलिअे अुसी दिन गांधीजीके नाम अेक पत्र अुन्होंने लिख डाला और अपने काममें लग गये। दो दिन बाद अुन्हें गांधीजीका पत्र मिला। अुसमें अिस आशयकी बात कही गअी थी कि "आपका विचार अुत्तम है। अिसलिअे मैं अुसका स्वागत करता हूं। अब मुझे किस प्रकार और कहां कहां दौरा करना होगा, अिसका कार्यक्रम आपको तैयार कर लेना है। और तदनुसार मुझे सूचना दीजिये तो हम प्रवास शुरू कर दें।"

गांधीजीका जवाब पढ़कर बापाके हर्षका पार नहीं रहा। अुन्हें सपनेमें भी यह खयाल न था कि प्रवासके दिनोंमें मामूली तौर पर लिखे हुअे अुनके अिस पत्रका अितना सुन्दर और तात्कालिक अुत्तर मिलेगा। ठक्करबापाने अलग अलग प्रान्तोंके कार्यकर्ताओंके साथ पत्रव्यवहार करके गांधीजीका प्रवासक्रम बनाया। और बादमें अुसमें छोटे-मोटे जरूरी सुधार करके अिस संबंधमें अिस प्रकार वक्तव्य निकाला

"गांधीजीकी हरिजन-यात्राके लिअे अेक कार्यक्रम तय किया गया था। परन्तु हरिजन-कार्यकी प्रगतिका विचार करने पर अुसमें कुछ बड़े परिवर्तन अनिवार्य हो गये हैं। योजना यह है कि गांधीजीकी यात्रा नौ महीने तक यानी ८ नवम्बरसे ३१ जुलाअी १९३४ के अन्त तक जारी रहे। अिस

यात्राकी तारीखे और प्रान्तवार व्यौरा नीचे दिया जाता है। प्रत्येक प्रान्तके कार्यक्रमका व्यौरा सवधित प्रान्तोके हरिजन-सेवक-सघके मत्री और अध्यक्ष तय करेगे। जो सूचनाअे पहले जारी की गअी है, अुनके अनुसार क्रम निश्चित करना है। परतु ये तीन नियम तो पालने ही चाहिये

(१) हर रोज दोपहरके चार घटे — जहा तक हो सके १० से २ बजे तक सार्वजनिक कार्य बद रखा जाय, ताकि नहाने-धोने, खाने और पत्रव्यवहारके लिअे समय मिल जाय।

(२) दिनके कार्यका आरभ सुबह ६–३० से पहले न हो और रातके ८ बजेसे ज्यादा काम न रहे।

(३) जहा तक हो सके मोटरकी अपेक्षा रेलकी यात्रा ही पसन्द की जाय। परतु जहा मोटरकी यात्राके विना काम ही न चले वहा वह यात्रा प्रतिदिन ७५ मीलसे ज्यादा नही होनी चाहिये।

प्रवासक्रम

सप्ताहमे दो दिन — जहा तक हो सके सोम और मगलको — यात्रा, मुलाकाते, भाषण वगैरा कोअी कार्यक्रम न रखा जाय, जिससे अुन दिनोमे गाधीजीको पत्रव्यवहार निपटाने और 'हरिजन' तथा 'हरिजनबधु' के लिअे लेख लिखनेका काफी वक्त मिल जाय। सोमवार तो मौनवार ही होता है। अिसलिअे हर हफ्ते यात्राके लिअे कामके पाच ही दिन रहेगे।

प्रान्त	कुल दिन	तारीखे	कामके दिन
मध्यप्रान्त	३१	८ नव० से ८ दिस०	२३
	९ दिसम्बर रेलमे और झासीमे		
दिल्ली	५	१० से १४ दिस०	३
	१५ दिसम्बर रेलमे — दिल्लीसे बेजवाडा		
आध्र	१४	१६ से २९ दिस०	१०
मद्रास शहर	५	३० दिस० से ३ जन०	३
मैसूर मलाबार	१०	४ से १३ जन०	८
कोचीन-त्रावणकोर	७	१४ से २० जन०	५
तामिलनाड	२०	२१ जन० से ९ फर०	१०
	(६ दिनका पूरा आराम)		
	१० फरवरी रेलमे — मद्राससे अुत्कल		
अुत्कल	७	११ से १७ फर०	५
बगाल	२८	१८ फर० से १७ मार्च	२०

आसाम	७	१८ से २४ मार्च	५
विहार	१४	२५ मार्चसे ७ अप्रैल	१०
युक्तप्रान्त	३५	८ अप्रैलसे १२ मअी (आरामके ७ दिनो सहित)	२०
पजाव	१४	१३ से २६ मअी	१०
सिन्ध	७	२७ मअीसे २ जून	५
राजपूताना	७	३ से ९ जून	५
अहमदावादमे आराम	७	१० से १६ जून	—
गुजरात काठियावाड	१४	१७ से ३० जून	१०
वम्वअी	७	१ से ७ जुलाअी	५
महाराष्ट्र, निजाम राज्य	१७	८ से २४ जुलाअी	११
कर्नाटक	७	२५ से ३१ जुलाअी	५

अिस कार्यक्रमकी रूपरेखा कामचलाअू मानी जायगी। अिसमे परिवर्तन करने पडे तो होगे, परतु वे हरिजन-कार्यके लिअे ही किये जायगे।

अिस प्रकार अेक अिजीनियर जितनी निश्चिततासे अपने कामका नकशा खीचता है, अुतनी निश्चिततासे ठक्करवापाने गाधीजीकी हरिजन-यात्राका नकशा खीचकर दे दिया। अिसमे, जैसा अुन्होने वताया, परिस्थितिके अनुसार परिवर्तनकी गुजाअिश रखी गअी थी।

यात्राका प्रारभ मध्यप्रान्तमे स्थित सेठ जमनालालजीके निवासस्थान वर्धासे हुआ। अुपवासके वाद गाधीजी वहुत ही कमजोर हो गये थे, अिसलिअे लगभग डेढ मास तक अुन्होने वर्धामे ही आराम लिया और अुसके वाद नववरकी ७ तारीखको अुन्होने हरिजन-यात्रा शुरू की। वर्धामे सेठ श्री जमनालालजीने लक्ष्मीनारायणका मदिर वनवाया था और हरिजनो सहित तमाम वर्गोके लिअे किसी भी प्रकारके भेदभावके विना खोल दिया था। अिसके वाद अेक और मदिर — राममदिर — भी वर्धामे वापूके निवासकालमे खुला। अिन मदिरोमे दर्शन करके गाधीजीने कार्यारभ किया। अुसी दिन वर्धासे नौ मील दूर स्थित सेलू गावमे अेक सज्जनने अपना मदिर हरिजनोके लिअे खोल देनेकी घोषणा की। अुस शुभ अवसर पर गाधीजी वहा गये और अस्पृश्यता-निवारणका सदेश दिया। अिसके वाद मध्यप्रान्तमे वे नागपुर, कटोल, कामठी, रामटेक, तुमसर, देवली, चादा, यवतमाल, अमरावती, खामगाव, अकोला, चीखलदा, वडनेरा वगैरा गावो और शहरोमे घूमे।

जगह जगह सभायें हुयी। नागपुरमें तीस हजारकी बड़ी सार्वजनिक सभाके सामने गांधीजीने अस्पृश्यता-निवारणके संबंधमें व्याख्यान दिया। जिन सब गांवोंमें हरिजनकार्यके लिये चंदा हुआ। पहले ही सप्ताहमें लगभग रु० १४,८१२–६–२ चंदेमें मिले। अिसी तरह दूसरे सप्ताहके दौरेमें अुन्हे रु० ९,८७८–२–६ मिले। दो हफ्तेमें गांधीजीने कुल ५०० मीलकी यात्रा की। प्रवासके दौरानमें पंडित लालनाथ और अुनकी मंडलीने गांधीजीके कार्यमें रुकावट डालनेके प्रयत्न किये। गांधीजी जहा जाते वहा वे मोटरके आगे लेट जाते, अुनके पैर पकड लेते और अिस प्रकार अुनके मार्गमें कठिनाअी पैदा करते। परंतु गांधीजी धर्मकार्य समझकर जिसे अपना चुके थे, अुस प्रिय यात्राको छोड देनेवाले नही थे। वे प्रेमसे समझा-बुझाकर पंडित लालनाथ और दूसरे विरोधियोंके दिल जीतनेका प्रयत्न करते।

मध्यप्रान्तका अेक विभाग पूरा करके दौरा करते-करते गांधीजी जबलपुर पहुचे, तब अिस प्रकारके तेज दौरे और भरे हुअे कार्यक्रमके कारण अुनका खूनका दबाव बढ गया। अिसलिअे जबलपुरमें अुन्हे चारेक दिन आराम करना पड़ा। डॉ० अन्सारीने अुनकी देखभाल की और तबीयत सुधरते ही अुनकी यात्रा आगे बढी। दिसम्बरके पहले सप्ताहमें अुन्होंने ६०० मीलकी यात्रा पूरी की। और लगभग ३१,००० रुपये हरिजन-कोषमें अिकट्ठे किये। मध्यप्रान्तका दौरा खतम करके गांधीजी दिल्ली गये और वहा अेक सप्ताह रहकर लगभग अेक दर्जन सभाओंमें भाषण दिये। वहासे चलकर कुछ समय वर्धामें आराम करके दक्षिण भारतकी यात्रा शुरू की। बेजवाडा, मछलीपट्टम्, मद्रास वगैरा स्थानों पर अुन्होंने भाषण दिये। प्रत्येक स्थान पर अुन्हे थैलियां भेट की गअी। मद्रासमें समुद्र तट पर अेक लाखके जनसमूहके समक्ष अुन्होंने भाषण देकर लोगोंमें अस्पृश्यताका नाश करके हिन्दू धर्मका कलंक मिटानेका अनुरोध किया। अिसके बाद अुन्होंने गुन्तूर, कोकोनाडा, अिलोर, राजमहेन्द्री, विशाखापट्टनम् वगैरा स्थानोंका दौरा किया और कुल मिलाकर अेक हजार मीलसे ज्यादाकी यात्रा की। ७६ गांवोंमें गये। और ६८,४३० रुपये जमा किये। वहासे आगे बढकर वे मैसूर गये। वहासे बंगलोर होकर अुन्होंने मलाबार, कोचीन, त्रावण-कोर वगैरा स्थानोंका दौरा किया। जगह-जगह मंदिर, कुअे, धर्मशालाअें वगैरा हरिजनोंके लिअे खुलने लगे थे, लोग बडी संख्यामें गांधीजीकी सभामें अुपस्थित होते थे और खुले हाथों हरिजन-कोषमें रुपया देते थे। जिस प्रकार अुनकी यात्रा और हरिजन-सेवाका कार्य वेगके साथ चल रहा था। अितनेमें अेक अैसी घटना हुअी, जिसने अुनके प्रवासको रोक दिया। १५

जनवरी, १९३४ को बिहारमे भारी भूकम्प हुआ। हजारो आदमी मारे गये। तीन मिनटमे ही अुत्तर बिहारमे अधिकाश शहर मिट्टीमे मिल गये। ९०० मीलकी रेल्वेका नाश हो गया। पुल टूट गये। रास्ते टूट गये। लाखो देहाती बेघरबारके हो गये। अुस समय बिहारके सबसे बडे नेता राजेन्द्रबाबू जेलमे थे। सरकारने अुन्हे छोड दिया। अुन्होने गाधीजीको बिहारकी परिस्थितिके समाचार दिये। तो भी गाधीजीने जहा तक हो सका हरिजन-यात्रा जारी रखी। बादमे जब अुन्हे महसूस हुआ कि अुनका धर्म अुन्हे वहा बुला रहा है, तब वे हरिजन-यात्रा स्थगित करके मार्च मासमे बिहार जानेको तैयार हुअे। हरिजन-यात्राकी अिस पहली मजिलके अन्तमे अेक अखबारी प्रतिनिधिके हरिजन-कोषमे हुअी प्रगतिके सबधमे प्रश्न पूछने पर अुन्होने बताया, "दौरेमे २ मार्च तक रु० ३,५२,१३०–९–७ अिकट्ठे हो सके है। तीन हिसाब-किताब जाननेवाले कार्यकर्ता हमारी मडलीके साथ प्रवास कर रहे है और केन्द्रीय बोर्डके सदा जाग्रत रहनेवाले मत्री ठक्करबापाकी सीधी देखरेखमे दिनरात काम करते है। कअी बार अुन्हे रातमे जागकर काम करना पडता है। और कोषमे प्राप्त हजारो चादी और ताबेके सिक्कोका हिसाब मिलानेके लिअे आधी रात तक दिया जलाना पडता है। यह सब रुपया दिल्लीके केन्द्रीय कार्यालयमे भेजा जाता है और वहा बैकमे सुरक्षित रखा जाता है। ये हिसाब बार बार जाचे जाते है और हरिजन बोर्डकी समय-समय पर होनेवाली बैठकोमे पेश किये जाते है।"

हरिजन-यात्रामे गाधीजी जहा जहा गये, वहा वहा लगभग सभी जगह ठक्करबापा बापूकी छायाकी तरह अुनके साथ ही रहे। अिनका मुख्य काम गाधीजीके प्रवासकी व्यवस्था करना, अुनका समय-पत्रक ठीक करना, अेकत्रित होनेवाले चदेको सभालकर रखना और भिन्न भिन्न प्रदेशोमे हरिजनोकी स्थानीय परिस्थितिके सबधमे विस्तृत जानकारी अिकट्ठी करना था। गाधीजीकी अिस यात्राका विरोध कुछ सनातनी करते और अुनके मार्गमे विघ्न डालते थे। गाधीजी अहिसा और प्रेमके प्रभावसे विघ्न दूर करते थे। परतु हरिजन-यात्रा ज्यो ज्यो आगे बढती गअी, त्यो त्यो कुछ सनातनी लोगोका धीरज टूटता गया और असहिष्णुता बढती गअी। बिहारके भूकम्पके बाद गाधीजीने फिर हरिजन-यात्रा शुरू की, तब जसीडी स्टेशन पर पडोने गाधीजी पर हमला किया और वे जिस मोटरमे बैठे थे, अुस पर लाठी प्रहार करके अुसकी पिछली छत्री तोड डाली। गाधीजी अुस वारसे बाल बाल बचे। अिसी प्रकारकी और भी दो घटनाअे बिहारमे हो गअी। गाधीजीने 'हरिजनबधु' के अेक अकमे 'तीन दु खद प्रसगो' मे अुसका जो हूबहू वर्णन

किया है, अुसमे ठक्करबापा भी कैसे अिन हमलेके शिकार हुअे थे, जिनका थोडासा चित्र अिस प्रकार दिया गया है

" दूसरे दिन २६ तारीखको सुबह दो बज कर दस मिनट पर देवगढ जानेके लिअे जसीडी जंकशनमे गाडी पकडनी थी। पंडित लालनाथ अपनी टोलीके साथ हर स्टेशन पर अुतरते और 'हम जिन्हें हरिजन कामके लिअे आगे नहीं बढने देंगे' के नारे लगा कर गाते और दूसरी घोषणायें करते। अिससे मेरी वह रात बिगड गअी। मेरी जानकारीके अनुसार अुन्हे किसीने ये प्रदर्शन करने पर सताया नहीं था। जैसा हमेशा होता है, हर स्टेशन पर मुझसे मिलने झुडके झुड लोग आते। मैं अपनी यात्रा बन्द कर दू, अिस ढंगसे सनातनी मुझे सतानेका प्रयत्न करते। परन्तु लोग शान्त रहते। अिस प्रकार मैं जसीडी पहुंचा, जहा पर मानव-सागर अुमड रहा था। स्टेशन पर दिये-बत्तीका बंदोबस्त ठीक नहीं था, अिसलिअे मैं किसीका मुह नहीं देख सकता था। पुलिस तो वहां थी ही। मुझे सहीसलामत ले जानेमे स्वयसेवकोंके साथ वह भी थी।

"जहा टिकट लिये जाते हैं अुस दरवाजे पर पहुचनेके बाद हम दम घोटनेवाली भारी भीडमे से गुजरे। बीच बीचमें काले झंडेवारी भी थे। अत्यंत कठिनाअियोके बीच पुलिस कर्मचारियो और स्वयसेवकोंने मुझे मोटर-गाडीमें बिठाया। ठक्करबापा जो मेरे साथ ही आनेवाले थे, न आ सके। गाडीको वहा अधिक देर ठहराना खतरनाक मालूम हुआ। अिसलिअे गाडी धीरे धीरे आगे बढने लगी। गाडीकी छत पर सख्त चोटें पडने लगीं। मुझे लगा कि छत अभी टूट कर चूर चूर हो जायगी। अितनेमे छतके पिछले हिस्से पर अेक प्रहार हुआ। कांचके टूटे हुअे टुकडे मेरे पास गिरे। शशिबाबूको, जो आगेकी बैठक पर बैठे थे, विश्वास था कि यह पत्थरकी चोट है और काच तोडनेके लिअे लगाअी गअी है। मुझे अिसका पक्का पता नहीं। परन्तु मैंने अितना जान लिया कि मैं अधिक नहीं तो भारी आघातसे बच गया।"

जसीडी स्टेशन पर हुअी घटनाके सम्बन्धमे देवगढमे व्याख्यान देते हुअे गांधीजीने कहा था, " परन्तु यहा भाषामे तो सभ्यता है ही नहीं, लोग मार-पीट पर भी अुतर आये हैं। सवेरे जल्दी ही अढाअी बजे मैं जसीडी स्टेशन पर अुतरा तो अुन्होंने तिरस्कारभरी वाणीसे आकाशको गुंजा दिया। वे हिंसक भी बन गये। अुनसे होता तो वे मोटरकी छत्री अवश्य तोड डालते। छत्री पर भारी चोटें तो पडी ही। पिछला कांच तोड डाला गया और मैं अीश्वर-कृपासे ही गंभीर चोटसे बचा। मैं मानता

हू कि मुझे शारीरिक हानि पहुचानेकी अुनकी अिच्छा नही थी। छत्री पर लाठिया मार कर और काच तोड कर अुन्हे केवल मुझ पर आये रोषका प्रदर्शन करना था। परन्तु अुनका हेतु कुछ भी हो, अुनका कृत्य अवश्य हिंसक था। अुसके शायद अैसे परिणाम होते, जिनसे अुन्हीको खेद होता।"

देवगढकी गाधी-स्वागत-समितिके मत्री और काग्रेस महासमितिके सदस्य श्री शशिभूषण रायने, जो गाधीजीकी मोटरमे थे, अिस घटनाका वर्णन करते हुअे बताया कि, "जसीडीमे गाधीजीके शरीर पर हमला करनेवाले वैद्यनाथ धामके पडे थे। अुनके नेता देवगढके कुछ पडे थे, जो विहार प्रान्तीय वर्णाश्रम सघके पदाधिकारी है और देवगढमे रहते है।

"गाधीजी २६ अप्रैलको प्रात २-१० वजे जसीडी स्टेशन पर पहुचे। पुलिस द्वारा किये गये प्रवधके अनुसार स्वागत-समितिके पाच सदस्योको प्लैटफार्म पर जाने दिया गया था। गाधीजी और ठक्करवापाको अुसी गाडीसे आये हुअे स्वयसेवक घेर कर चलने लगे। अिस सघको गौरीशकर डालमियाके हवाले कर दिया गया। दरवाजे पर गाधीजीको अेक दो मिनट रुकना पडा, क्योकि बाहरका मोटर तकका रास्ता काले झडेवाले पडोने रोक लिया था। श्री कमलादत्त द्वारी और श्री राधेश्याम पाठपति अुनके नेता थे। मैने स्वयसेवकोकी कतारको रुक जानेका हुक्म दिया और अुन्हे प्लैटफार्म पर रह कर सघके दूसरे आदमियोकी मदद करनेको कहा। श्री वालेश्वरसिहको, जिन्हे गाधीजीका अगरक्षक मुकर्रर किया गया था और जो दायी तरफ खडे थे, गाधीजीको सभालनेका हुक्म दिया गया। मै मोटरको चलनेके लिअे तैयार रखनेको आगे गया।

"गाधीजी मुश्किलसे दरवाजेके बाहर निकले। अुस समय अुनके मुहके सामने और सिरके अूपर जोर जोरसे काले झडे फहराये जा रहे थे। बालेश्वरसिहने और दूसरोने अपने सिरो पर और हाथो पर वार झेल कर गाधीजीकी रक्षा की। ठक्करबापा हमसे अलग पड गये, और हम गाधीजीको अकेले ही मोटर तक ले जा सके। मोटरकी अगली वैठक पर पडित विनोदानद झा और मै वैठे थे। गाधीजीने पूछा कि ठक्करवापा कहा है? हमने कहा कि वे दूसरी मोटरमे आयेगे। गाधीजीकी मोटरके आगे स्वयसेवकोकी लारी चल रही थी। गाडिया धीरे धीरे चलने लगी। परन्तु थोडी ही दूर गये कि लारी रोक दी गअी। अिसलिअे गाधीजीकी मोटरको लारीसे आगे निकल जाना पडा। मोटर आगे चली तो वन्द मोटरकी छत्री पर लाठियोकी मार पडी। अिसलिअे मोटरको बहुत नुकसान हुआ। यह देख कर कि गाधीजीकी जान जोखिममे है कैप्टन सत्यनारायण पाडे मोटरके

पीछे काचकी तख्तीकी रक्षा करते हुअे खडे रहे। परन्तु वे नीचे गिर गये और दूसरी मोटरके नीचे दब गये। अुन्हे गभीर चोट पहुची है और वे अस्पतालमे पडे है। अिस प्रकार मोटरका पिछला भाग अरक्षित हो गया, तो पत्थर फेके जाने लगे। अुनमे से अेक पिछले हिस्सेमे लगा और दूसरेसे गाधीजीके सिरसे लगी हुअी पीछेके काचकी तख्ती टूटी। तख्ती मोटी होनेके कारण अुसने पत्थरके वेगको रोका, नही तो अुससे गाधीजीके सिरको गहरी चोट लगती। मैने कल गाडीकी जाच की है और जैसा गाधीजीने कहा है, मुझे अिसमे जरा भी शका नही कि वह पत्थर गाधीजीके सिरको ताक कर ही मारा गया था और अुसीसे तख्ती टूटी थी। अिस प्रकार लाठीकी मार सहन करती-करती मोटर धीरे धीरे पचासेक गज चल कर भीडमे बाहर निकली और फिर आजादीके साथ चलने लगी। अिस प्रकार देवगढके काले झडेवाले पडो और दो तीन मारवाडियोके हमलेसे भगवानने गाधीजीको बचा लिया। स्वयसेवकोके कप्तान श्री मदियाके सिर और पीठ पर सख्त घाव लगे है। अिसके सिवाय गाधीजीको बचानेकी कोशिश करनेमे २४ स्वय-सेवकोको चोटे आअी है।"

अैसे प्रसग पर ठक्करबापाके मनकी स्थिति भी अस्थिर रहती थी। गाधीजीके प्रति भक्तिभावके कारण अुन्हे चिन्ता होती थी कि कही गाधीजीको चोट न पहुचे। फिर भी अुन्हे हमेशा यह श्रद्धा रहती थी कि गाधीजी अिन सब विघ्नोको पार करके अन्तमे सुरक्षित रूपमे बाहर आयेगे। कठिनाअियोमे से मार्ग निकालनेकी गाधीजीकी शक्तिमे अुन्हे पूरा विश्वास था।

अप्रैल मास पूरा बिहारके दौरेमे बीता। अुसके बाद मअी मासकी ४ तारीखको गाधीजी, ठक्करबापा और अुनकी मडली अुडीसाके लिअे रवाना हुअी। यहा गाधीजीको पैदल यात्रा करनेका विचार सूझा। बादमे ठक्करबापा और अुत्कलके कार्यकर्ताओके साथ अुन्होने अिस बारेमे चर्चा की। ठक्करबापा और अुत्कलके कार्यकर्ता दोनोने यह राय जाहिर की कि शुरूमे पुराने तय किये हुअे कार्यक्रमके अनुसार ही यात्रा करनी चाहिये। परन्तु गाधीजीने पैदल यात्राका मर्म अुन्हे समझाया तो अन्तमे ठक्करबापा और अुडीसाके कार्य-कर्ता दोनो सहमत हो गये। जगन्नाथपुरीसे कटक तक ५५ मीलका रास्ता पैदल तय करनेका निश्चय किया और अुसके अनुसार दौरा शुरू भी हो गया। अुसका बहुत ही रसप्रद वर्णन ठक्करबापाने अपने छोटे भाअी डॉ० केशवलाल ठक्करके नाम प्रवासके तीसरे दिन लिखे गये पत्रमें किया

हू कि मुझे शारीरिक हानि पहुचानेकी अुनकी अिच्छा नही थी। छत्री पर लाठिया मार कर और काच तोड कर अुन्हे केवल मुझ पर आये रोषका प्रदर्शन करना था। परन्तु अुनका हेतु कुछ भी हो, अुनका कृत्य अवश्य हिंसक था। अुसके शायद अैसे परिणाम होते, जिनसे अुन्हीको खेद होता।"

देवगढकी गाधी-स्वागत-समितिके मत्री और काग्रेस महासमितिके सदस्य श्री शशिभूषण रायने, जो गाधीजीकी मोटरमे थे, अिस घटनाका वर्णन करते हुअे बताया कि, "जसीडीमे गाधीजीके शरीर पर हमला करनेवाले वैद्यनाथ धामके पडे थे। अुनके नेता देवगढके कुछ पडे थे, जो बिहार प्रान्तीय वर्णाश्रम सघके पदाधिकारी है और देवगढमे रहते है।

"गाधीजी २६ अप्रैलको प्रात २-१० बजे जसीडी स्टेशन पर पहुचे। पुलिस द्वारा किये गये प्रबधके अनुसार स्वागत-समितिके पाच सदस्योको प्लैटफार्म पर जाने दिया गया था। गाधीजी और ठक्करबापाको अुसी गाडीसे आये हुअे स्वयसेवक घेर कर चलने लगे। अिस सघको गौरीशकर डालमियाके हवाले कर दिया गया। दरवाजे पर गाधीजीको अेक दो मिनट रुकना पडा, क्योकि बाहरका मोटर तकका रास्ता काले झडेवाले पडोने रोक लिया था। श्री कमलादत्त द्वारी और श्री राधेश्याम पाठपति अुनके नेता थे। मैने स्वयसेवकोकी कतारको रुक जानेका हुक्म दिया और अुन्हे प्लैटफार्म पर रह कर सघके दूसरे आदमियोकी मदद करनेको कहा। श्री बालेश्वरसिहको, जिन्हे गाधीजीका अगरक्षक मुकर्रर किया गया था और जो दायी तरफ खडे थे, गाधीजीको सभालनेका हुक्म दिया गया। मै मोटरको चलनेके लिअे तैयार रखनेको आगे गया।

"गाधीजी मुश्किलसे दरवाजेके बाहर निकले। अुस समय अुनके मुहके सामने और सिरके अूपर जोर जोरसे काले झडे फहराये जा रहे थे। बालेश्वरसिहने और दूसरोने अपने सिरो पर और हाथो पर वार झेल कर गाधीजीकी रक्षा की। ठक्करबापा हमसे अलग पड गये, और हम गाधीजीको अकेले ही मोटर तक ले जा सके। मोटरकी अगली बैठक पर पडित विनोदानद झा और मै बैठे थे। गाधीजीने पूछा कि ठक्करबापा कहा है? हमने कहा कि वे दूसरी मोटरमे आयेगे। गाधीजीकी मोटरके आगे स्वयसेवकोकी लारी चल रही थी। गाडिया धीरे धीरे चलने लगी। परन्तु थोडी ही दूर गये कि लारी रोक दी गअी। अिसलिअे गाधीजीकी मोटरको लारीसे आगे निकल जाना पडा। मोटर आगे चली तो बन्द मोटरकी छत्री पर लाठियोकी मार पडी। अिसलिअे मोटरको बहुत नुकसान हुआ। यह देख कर कि गाधीजीकी जान जोखिममे है कैप्टन सत्यनारायण पाडे मोटरके

पीछे काचकी तख्तीकी रक्षा करते हुअे खडे रहे। परन्तु वे नीचे गिर गये और दूसरी मोटरके नीचे दव गये। अुन्हे गभीर चोट पहुची है और वे अस्पतालमे पडे है। अिस प्रकार मोटरका पिछला भाग अरक्षित हो गया, तो पत्थर फेके जाने लगे। अुनमे से अेक पिछले हिस्सेमे लगा और दूसरेसे गाधीजीके सिरने लगी हुअी पीछेके काचकी तख्ती टूटी। तख्ती मोटी होनेके कारण अुसने पत्थरके वेगको रोका, नही तो अुससे गाधीजीके सिरको गहरी चोट लगती। मैने कल गाडीकी जाच की है और जैसा गाधीजीने कहा है, मुझे अिसमे जरा भी शका नही कि वह पत्थर गाधीजीके सिरको ताक कर ही मारा गया था और अुसीसे तख्ती टूटी थी। अिस प्रकार लाठीकी मार सहन करती–करती मोटर धीरे धीरे पचासेक गज चल कर भीडमे वाहर निकली ओर फिर आजादीके साथ चलने लगी। अिस प्रकार देवगढके काले झडेवाले पडो और दो तीन मारवाडियोके हमलेसे भगवानने गाधीजीको वचा लिया। स्वयमेवकोके कप्तान श्री मदियाके सिर और पीठ पर सख्त घाव लगे है। अिसके सिवाय गाधीजीको वचानेकी कोशिश करनेमे २४ स्वय-सेवकोको चोटे आअी है।"

अैसे प्रसग पर ठक्करवापाके मनकी स्थिति भी अस्थिर रहती थी। गाधीजीके प्रति भक्तिभावके कारण अुन्हे चिन्ता होती थी कि कही गाधीजीको चोट न पहुचे। फिर भी अुन्हे हमेशा यह श्रद्धा रहती थी कि गाधीजी अिन सव विघ्नोको पार करके अन्तमे सुरक्षित रूपमे वाहर आयेगे। कठिनाअियोमे से मार्ग निकालनेकी गाधीजीकी शक्तिमे अुन्हे पूरा विश्वास था।

अप्रैल मास पूरा विहारके दौरेमे वीता। अुसके वाद मअी मासकी ४ तारीखको गाधीजी, ठक्करवापा ओर अुनकी मडली अुडीसाके लिअे रवाना हुअी। यहा गाधीजीको पैदल यात्रा करनेका विचार सूझा। वादमे ठक्करवापा और अुत्कलके कार्यकर्ताओके साथ अुन्होने अिस वारेमे चर्चा की। ठक्करवापा और अुत्कलके कार्यकर्ता दोनोने यह राय जाहिर की कि शुरूमे पुराने तय किये हुअे कार्यक्रमके अनुसार ही यात्रा करनी चाहिये। परन्तु गाधीजीने पैदल यात्राका मर्म अुन्हे समझाया तो अन्तमे ठक्करवापा और अुडीसाके कार्य-कर्ता दोनो सहमत हो गये। जगन्नाथपुरीसे कटक तक ५५ मीलका रास्ता पैदल तय करनका निश्चय किया और अुसके अनुसार दौरा शुरू भी हो गया। अुसका वहुत ही रसप्रद वर्णन ठक्करवापाने अपने छोटे भाअी डॉ० केशवलाल ठक्करके नाम प्रवासके तीसरे दिन लिखे गये पत्रमे किया

है। यह पत्र सहृदय बापाकी कोमल भावना और आदर्शनिष्ठाकी झाकी करानेवाला होनेके कारण पूरा यहा अुद्धृत किया जाता है

"पुरी जिलेका दाड मुकुन्दपुर गाव
ता० ११-५-१९३४

"भाअी केशवलाल,

"तुम्हारा पत्र बहुत दिनोसे नही आया। मेरा खयाल है कि तुम्हारा पत्र मिले बहुत दिन हो गये। सभव है मैने अुत्तर नही दिया हो। अिसलिअे तुम मेरे खतका अिंतजार कर रहे होगे।

"गाधीजीको नयी सृष्टिकी रचना और पुरानीका अन्त करनेमे देर नही लगती — यही अभी अभी हुआ है। राजनैतिक मामलेमे अुन्होने जो किया अुसकी बात मै नही लिखता — अिसका तो जिन्हे दु ख हुआ हो, जो बर्बाद हो गये हो, वे रोना रोयेगे। मै तो हरिजन-यात्राके सिलसिलेमे लिख रहा हू। अब तक रेल और मोटरसे छ महीने यात्रा की। बीचमे बिहार भूकम्पके कष्ट-निवारणका काम आ गया और अुसके लिअे अेक मास बिहारमे लगाया। वह ठीक था। अैसा करना जरूरी था। परन्तु अभी तक जिन जिन प्रान्तोका दौरा करना बाकी रहा है वहा घूमनेमे रुकावट आ गअी, अुन्होने डाल दी। अभी बगाल, यू० पी०, पजाब, गुजरात, महाराष्ट्र और सिंध — अितने प्रान्त बाकी रहे है। अिन सबकी यात्रा बिहार-भूकपके दिनोसे पहले जितने दिन दिये थे अुनसे आधे दिनोमे पूरी कर लेनी थी। अैसा करनेमे ३१ जुलाअी आ जाती और गाधीजीके जेलसे छूटनेको अेक वर्ष पूरा हो जाता, अथवा अुनके वापस जेलमे जानेका समय आ पहुचता।

"परन्तु अितनेमे ही बुढअूको अीश्वरीय आदेश मिल गया। विचार-स्फुरणा तीव्र हो गअी। 'बस, अब मै तो रेल-मोटरसे तग आ गया हू। शहरोके लोगोके 'गाधीजीकी जय' के नारोसे मेरे कान बहरे हो गये है। मुझसे अब यह सहन नही हो सकता। हरिजन-यात्रा करनेका जो व्रत लिया है, अुसे ३१ जुलाअी तक तो पूरा करना ही है। परन्तु वह रेल-मोटरसे न करके पहलेके यात्रियोकी तरह पैदल करना है।' अुनकी यह हठ पिछले दस-पद्रह दिनसे शुरू हुअी।

"मेरी दलील थी कि 'आगेकी यात्राके लिअे प्रान्तोको वचन दिये जा चुके है, कार्यक्रम बन चुका है। पहले दो-तीन बारके कार्यक्रम झूठे साबित हो चुके है। अिसलिअे अब फिर अुन्हे अेक बार निराश नही होना पडे। वर्ना लोग कहेगे कि हमने वचनभग किया।'

" 'प्रान्तोवाले यदि सब हा करते हो तो मुझे कोअी आपत्ति नही,' यह दलील भी मैंने अुस समय दी, जब गाधीजी मुझ पर अधिक दबाव डालने लगे।

"अितनेमे तो हम जगन्नाथपुरीमे आ पहुचे। काठकी मूर्तिवाले जगन्नाथजीके गावमे आने पर अेक दम जोश आया। अुडीसाके कार्यकर्ताओंको बुलाया। पहले मैंने अकेले अुनके साथ चर्चा की। मैंने 'प्रोस' और 'कॉन्स' (बापूके अिस विचारके पक्ष और विपक्ष) बताये। अुन सबने निश्चय किया कि प्रत्येक जिलेमे जहा जानेके वचन दिये जा चुके है वहा जरूर जाय, परन्तु अुन स्थानो पर आधा दिन या अेक दिन अुनकी अिच्छानुसार हम पैदल चलनेका बन्दोबस्त कर देंगे। अुस दिन गाधीजीका मौन था। दूसरे दिन अुनके रूबरू अिस प्रश्न की चर्चा हुअी।

"वे कहने लगे, 'मै अैसे समझौते (कम्प्रोमाअिज) से खुश नही होता। मुझे तो पूरा लड्डू चाहिये।' बूढेके मेग्नेटिज्म (आकर्षण) या हिप्नोटिज्म (तत्रविद्या) के कारण सब चुप हो गये।

" 'हम आध्यात्मिक मूल्यो (स्पिरिच्युअल वेल्यूज) को नही समझते। आपको पैदल यात्रामे धार्मिकता प्रतीत होती हो तो आप भले ही वैसा कीजिये। हम तो आपके चलाये चलेंगे'। नरम अुडिया भाअियोने कहा।

"बस, दूसरे ही दिन मगलवार ता० ९ को सवेरे साढे पाच बजे पैदल यात्रा प्रारभ कर दी। आज तीसरा दिन है। सघ चलता रहता है। रोज आठ मीलकी यात्रा दो हिस्सोमे सुबह-शाम मिल कर करते है।

"अपने राम तो पहले ही दिन पाच मील चलकर दोनो पैरोंमे चप्पलकी रगडसे तीन छाले कर बैठे।

"गाधीजीने अेक 'लडकी' (अर्थात् राजकोट वनिता विश्रामकी सुपरिटेंडेन्ट सुशीला पै — बम्बअी म्युनिसिपैलिटीके स्वर्गीय रा० ब० पैकी लडकी) से कहा कि ठक्करबापाके पैर बहुत थक गये है। अुन पर गरम पानी डालकर सेक करो। हमारी पहलेकी बुढियाओ जैसे अुपाय अिस बूढेको खूब आते है। 'छालोको फोडना मत। बोअर युद्धमे सफर करते हुअे मेरा यही हाल हुआ था। पहले साबुन और गरम पानी और बादमे नमकका पानी पैरो पर डालो। बादमे घी की मालिश करो।' अिस प्रकार बापूने मेरे पैरोका अिलाज कराया। अिससे थकान और छालोंकी तकलीफ कम हुअी। अुसी दिन शामसे बैल-गाडीमे बैठनेका अितजाम किया। अब थोडी गाडीमे और थोडी पैदल यात्रा करता हू।

"पिताजी और माके साथ तुम लोगोने जगन्नाथपुरीकी पैदल यात्रा की थी और अुसका जो वर्णन करते थे, वह सब याद आ रहा है। १९२१ मे भी याद आता था और अब १९३४ मे भी याद आ रहा है। सघ पहले दिन तो छोटा था। दूसरे तीसरे दिनसे बढता गया। गावोके लोग गाधीजीका सघ देखने और दर्शन करनेके लिअे रास्ते पर भीडमे खडे रहते है। बुढअू घुटनेके अूपर तक धोती पहने, नगे शरीर और गजे सिर, दोनो तरफ अेक अेक 'लडकी' के कधे पर हाथ रखकर दौडता हुआ चलता है। कल जब अुन्हे जरा छाला पडनेको हुआ तो जूते हाथमे ले लिये। आज भी मैने अुन्हे नगे पैर चलते देखा। 'अब सडक पर ककर नही, अिसलिअे नगे पैर चलना ठीक रहता है,'—मै गाडीसे अुतरकर चल रहा था तब अुन्होने यो कहा।

"आज पुरीसे २१ मील पर आ पहुचे है, अेक पक्के मकानमे डेरा है। मै अपना बिस्तर बिछा कर यह पत्र लिख रहा हू। पासके कमरेमे केलेके पत्तेकी पत्तले लग रही है और हरखचद परोसवा रहे है। अुडिया और हिन्दी भाषाकी बाते चलती रहती है। 'बापा' से कह रहे है कि खानेको चलिये।

"हमारा रोजका कार्यक्रम आजकल अिस प्रकार है

"१ सुबह चार बजे सब अुठते है। मै ३–३॥ बजे अुठ जाता हू। गाधीजी तो अेक दो बजे ही अुठ जाते है और बस्ता खोल कर पत्र लिखने बैठते है और अपने प्रसिद्ध टेढेमेढे गुजराती अक्षर निकालते है। ४ से ४–२० शौच, ४–२० से ४–४० प्रार्थना, ४–४० से ५–१५ बाधाबूधी — नाश्ता, ५–३० बिदाअी।

"२ चारसे सात मीलकी यात्रा करना। ७॥ बजे — देरमे देर आठ बजे पहुचना। जाते ही गावमे सभा करना। फिर वहा जाना जहा आगे जानेवाले आदमियोने ठहरनेका बदोबस्त कर रखा हो। स्नान करना, कपडे धोना, रसोअी बनाना। यह मौसम गरमीका होनेसे आमका अुपयोग अच्छा होता है।

"३ ग्यारह बजे खा पीकर पत्रव्यवहार, आराम, नीद। दोसे तीन बजे तक पूर्व व्यवस्थाके अनुसार भाषण तथा तीनसे चार तक बापूसे बाहरके आदमियोकी मुलाकात वगैरा। ४ से ४॥ फुटकर काम। बादमे ब्यालू और ५॥ बजे शामको कूच।

"४ ५॥ से ७ तक तीनसे चार मीलका प्रयाण। जाते ही सभामे प्रार्थना, बादमे सभा। फिर जहा पहलेसे डेरेका प्रबध किया गया हो वहा

जाकर १० वजे तक पत्रव्यवहार, व्यवस्था, कामकाज और सो जाना।

"सवेरे रोज साढे पाच वजे निकल पडनेमे वडा आनद आता है।

अमृतलाल वि० ठक्करके वन्देमातरम्"

अुडीसाकी पैदल यात्रा पूरी करनेके वाद गाधीजी वर्धा और वम्बअीमे काग्रेसकी कार्यसमितिमे भाग लेने गये। वम्बअीमे वे ता० १७ और १८ दो दिन ठहरे। अुसके वाद वे ओर ठक्करवापा वगैरा सव ता० १९ को पूना गये। वहा थोडे दिन रह कर वे अस्पृश्यता विरोधी आन्दोलन चला रहे थे। ता० २५ को पूनाकी म्युनिसिपैलिटीने मानपत्र देनेका निश्चय किया। गाधीजी, ठक्करवापा ओर अुनकी मडली मोटरमे वैठ कर अुस सभामे जा रही थी। अुस समय किसी धर्मान्ध सनातनीने पागल वन कर गाधीजीकी मोटर पर वम फेकनेका प्रयत्न किया। सौभाग्यसे जिस मोटरको अुसने गाधीजीकी मोटर समझा था वह अुनकी नही थी। अिसलिअे गाधीजी वच गये। ठक्करवापा भी वच गये। परन्तु अुस मोटरमे वैठे हुअे दूसरे आदमी घायल हुअे। हा, अुन्हे विशेष चोट नही पहुची और तत्काल सार-सभाल हो जानेमे अेक भी आदमीकी प्राणहानि नही हुअी। गाधीजीने अिस कृत्यको पागलपनका काम मान कर अुसकी निन्दा की ओर यह आशा प्रगट की कि अिस कामको किसी समझदार सनातनीका समर्थन नही होगा। पूनासे गाधीजी अहमदाबाद गये और वहासे काठियावाडका दौरा किया। अिसके अलावा वे जिस जिस जगहका दौरा वाकी रहा था अुसकी पूर्ति करने अजमेर, कराची, लाहोर, कलकत्ता, कानपुर, लखनअू और वनारस वगैरा शहरोमे घूमे और अिस प्रकार ९ मासकी हरिजन-यात्रा पूरी हुअी। अिस यात्राके दौरानमे गाधीजी और ठक्करवापाने १२,५०० मीलका सफर किया। आठ लाखसे अूपर रुपये हरिजन-कोषमे अिकट्ठे किये। अिसके सिवाय प्रत्येक प्रान्तमे और गाव गावके सवर्णो और हरिजनोमे नअी जागृति और नअी चेतना आअी।

१९३३-३४ के वर्षमे गाधीजीके साथ वापाने ९ मास प्रवास किया। अिसके सिवाय यात्राके पहले महीनो और पिछले महीनोमे हरिजन कार्य-सम्वधी अुनके दौरे चालू ही रहे। १९३३-३४ के वर्षमे वापाकी कारगुजारी वतानेवाले दोरोके आकडे अुस वर्पके भारत-सेवक-समाजके वार्पिक विवरणमे अिस प्रकार दिये गये है। अुनसे वापाके लम्वे दौरो और अुनमे विताये हुअे दिनोकी कल्पना होगी।

	मास	कुल दिन	केन्द्रमे विताये हुअे दिन	दौरेमे विताये हुअे दिन
१९३३	अप्रैल	३०	१०	२०
	मअी	३१	२७	४
	जून	३०	—	३०
	जुलाअी	३१	१४	१७
	अगस्त	३१	१०	२१
	सितवर	३०	—	३०
	अक्तूवर	३१	२९	२
	नवम्वर	३०	—	३०
	दिसवर	३१	२२	९
१९३४	जनवरी	३१	—	३१
	फरवरी	२८	—	२८
	मार्च	३१	१४	१७
		३६५	१२६	२३९

गाधीजीकी हरिजन-यात्रा तो पूरी हुअी, परन्तु ठक्करवापाके हरिजन-कार्य सम्वधी प्रवासका तो अन्त ही नही था। ज्यो ज्यो काम आगे वढने लगा, त्यो त्यो दौरे भी वढने लगे। १९३४ के जुलाअी मासमे अुन्होने सिधके कुछ कार्यकर्ताओके साथ मरुप्रदेशके देहाती अिलाकेमें अूट पर २०० मीलका सफर किया और दक्षिण सिधके हरिजनोकी स्थितिका व्यौरेवार विवरण प्रकाशित करके वताया कि "थरपारकर जिला विशाल मरुप्रदेश है। अुसका क्षेत्रफल १३,६०० वर्गमील और आवादी ४,६८,००० से कुछ ज्यादा है।

अिस आवादीके वीस फीसदी यानी ९४,००० हरिजन हैं। अुनमें ३५,००० मेघवाल, ४८,६०० भील, ९,१०० कोली और १,००० दूसरी विविध जातियोके लोग है। अिन तीनो जातियोको कट्टर हिन्दू समान रूपमे अछूत मानते हैं, क्योकि वे सव मुर्दार मास खाती है। अिस प्रदेशमे आवादी कम होनेसे गाव वहुत छोटे छोटे होते हैं, अिसलिअे अुनमे पाठशाला चलाना आर्थिक दृष्टिसे वहुत मुश्किल है।

"अिस प्रदेशके हरिजनोकी आर्थिक स्थिति अत्यत शोचनीय है। यहा सहकारी समितिया न होनेसे लेन-देनका अिजारा वनियोके हाथमे है। वे भारी व्याज लेते हैं। अिसके सिवाय ये साहूकार गरीवोसे जवरन् वेगार कराते हैं।. अिस प्रदेशमे पानीका प्रश्न वडा विकट है। कुअेमे १०० से ३००

फुट नीचे पानी होता है। और कुआ बनानेका खर्च ३०० से १,५०० रुपये तक होता है। सौभाग्यसे यहा हरिजनोको सार्वजनिक कुओसे पानी भरने दिया जाता है, यद्यपि पानी भरनेके लिअे अुनका अलग समय होता है।

"अिस अिलाकेमे दो हरिजन आश्रम चलाये जाते है। अेक जोधपुर रेलवे लाअिनमे आठ मील दूर गकरोमे और दूसरा सिन्धकी अेक दक्षिणकी सरहद पर रेलवेसे १०० मीलसे अधिक अतर पर नगरपारकरमे है। पहलेमे अक्षरज्ञानके अतिरिक्त अून तथा रुअी कातना-बुनना और चमडेका काम सिखाया जाता है। निरक्षरताकी मरुभूमिमे ये दो आश्रम मीठे झरनोके समान है। अन्य दो आश्रमोकी खास जरूरत है। अेक छछोके पास और दूसरा माथीमे। ये दो आश्रम चलानेमे कमसे कम ३०० रुपये मासिक चाहिये, परन्तु अुसकी सुविधा अभी नही हो सकती। मगर यहा अिसमे अधिक जरूरत तो सारा समय देनेवाले सेवाभावी मत्रीकी है, जो थरके रेतीले टीलोके प्रदेशमे अूट पर सफर करके अिस वीरान मुल्कमे रहनेवाले हरिजनोका मित्र और मार्गदर्शक बने।"

अिसके बादके महीनोमे ठक्करबापाने झासी, होशगाबाद, नागपुर, कारजिया, अमरकटक, पेडरारोड, बिलासपुर, सारकडा, वर्धा, अमरावती, मोरसी, बडनेरा, भुसावल वगैरा स्थानोका दौरा किया और वहासे गुजरातमे अुतर कर थोडे दिन साबरमती आश्रममे रह कर नवम्बर माससे काठियावाडमे लखतरसे प्रवास शुरु किया। काठियावाडमे कुल मिला कर अुन्होने ३२ दिन दौरा किया। अुसमे वढवाण, मूली, लीबडी, नागनेश, राणपुर, बोटाद, सोनगढ, पालीताणा, सुरका, सिहोर, भावनगर, वरतेज, सथरा, रोयल, तमाजा, महुवा, कुडला, बगसरा, अमरेली, जेतपुर, जूनागढ, वथली, वडाल, केशोद, वेरावल, चोरवाड, वालागाम, शील, पोरबन्दर वगैरा स्थानोमे घूमे। काठियावाडके हरिजनोकी आर्थिक ओर सामाजिक दोनो स्थितिया आखो देखकर अुनके सम्बधमे विस्तृत जानकारी अिकट्ठी की। अुनके लिअे पाठशाला, कुअे, दवा वगैराकी सहूलियते है या नही, अिसकी जाच की और अिस बारेमें 'मेरी यात्रा' शीर्षक दस बारह लेखोकी लेखमाला 'हरिजनबधु' मे शुरु की। अिस लेखमालामे हरिजन प्रश्न सम्बधी अुनके सावधानीपूर्ण अवलोकन और अध्ययनके दर्शन होते है।

हरिजन-यात्रामे अुन्होने हरिजनोकी सबसे बडी और रोजमर्राकी कठिनाअी पानीकी पाअी। अिसलिअे प्रवासके अतमे अुन्होने 'हरिजनबन्धु' मे 'हरिजनोको पानी दो' नामक नीचेका लेख लिखा, जिसे पढ कर आज भी सहृदय मनुष्यका हृदय हिल जाता है।

"काठियावाडकी मेरी अेक माससे अधिककी हरिजन-यात्रा ता० १५ (दिसबर १९३४) को पूरी हुअी हे। और अब कच्छकी आठ दिनकी यात्रा भी पूरी होने आअी है।

"अपने अिस दौरेमे मै ७२ गावो ओर ११८ हरिजन मुहल्लोमे घूमा हू। अिसके अलावा पचास गावोके हरिजनोने स्वय अपनी कठिनाअिया मुझे कह सुनाअी है। जहा जहा हरिजनोके सुख-दुख सुनने और अुनकी स्थितिकी कल्पना प्राप्त करने बैठता, वही हरिजनोने खुद अपने गावकी या आसपासके गावोकी अैसी शिकायते कह सुनाअी कि 'अपने पानीके लिअे हमे चोरी करनी पडती है। पकडे जाने पर हमारी ओरतो पर पत्थरोके वार होते है, घडे फोड दिये जाते है। जहा स्त्रिया बच्चोके पोतडे धोती हो या गाय-भैसे पैरोसे कीचड रोद कर पानीको गदा कर देती हो, अैसे तालावके गदे पानी पर हमे गुजर करना पडता है। मवेशियोके कुडके कीडे पडे हुअे पानी पर निर्वाह करना होता है। अिस तरहका कुडका पानी प्राप्त करनेके लिअे भी कही कही तो हमे फी घर हर साल अेक रुपया चडसवालेको देना पडता है।

"अैसी खून अुबालनेवाली, हृदयको हिला देनेवाली दीन-हीन हरिजनोकी हाय सुनकर अेक काठियावाडी और अेक हिन्दूके नाते मै शर्मिन्दा होता हू।

"ब्रिटिश हिन्दुस्तानके खास गुजरातमे तो तालुका ओर जिला बोर्डोने, म्युनिसिपैलिटियोने तथा ग्राम और प्रान्त पचायतोने बाकायदा अैसे ठहराव पास किये है कि सार्वजनिक कुअे हरिजनोके लिअे खुले है। और तदनुसार हरिजन किसी किसी जगह सार्वजनिक कुओका बेरोकटोक अुपयोग करने लगे है तथा दूसरे स्थानो पर अैसा प्रयत्न करने लगे है।

"अैसी स्थिति मेरे काठियावाडमे कब आयेगी? राजा और प्रजा हरिजनोके प्रति अपना फर्ज समझने लगे और अिसमे बरसो बीत जाय तब तक हवाके बाद जीवनकी प्राथमिक आवश्यकता — पानी — के बिना हरिजनोको तडपाना हमारे मनुष्यत्वको शोभा नही देता। अिसलिअे आपद्धर्म समझ कर अभी तुरत हरिजनोके लिअे अलग कुअे बनवानेकी हरिजन-सेवक-सघने हिम्मत की है।

"कुओकी माग हरिजनोकी तरफसे चारो ओरसे आ रही है। अिस मागको अेक-दो वर्षमे पूरा नही किया जा सकता। अिस साल हरिजन-सेवक-सघके मारफत समस्त काठियावाडमे लगभग सौ कुअे बनवानेको

काठियावाडके राज्यो और सघोकी ओरसे सहायता मिल जायगी, अिस विश्वाससे कअी जगह बनवानेका वचन दे चुका हू।

"हरिजनोको पानी देनेके लिअे मेरी माग बडी नही है। औसतन् हर कुअे पर २५० रुपये खर्च आयेगा। अिस हिसाबसे काठियावाड और बृहद् काठियावाडमे अैसे सौ दानवीर लोग हरिजनोका हार्दिक आशीर्वाद लेनेको बाहर निकल ही आयेगे, यह श्रद्धा रख कर काठियावाड हरिजन-सेवक-सघको कुओका काम हाथमे लेनेकी सूचनाअे देकर मै अपने स्थान दिल्लीको जा रहा हू।"

अिस बयानके बाद काठियावाडमे, जहा हरिजनोके लिअे पानीकी बिलकुल व्यवस्था नही थी, कुअे खुदवाना शुरू हुआ और यह काम कुछ वर्ष तक चालू रख कर हरिजनोके पानीका प्रश्न कुछ हद तक बापाने हल किया।

१९३५ के सालमे हरिजन कार्यकी काफी प्रगति हुअी। गाधीजी और ठक्करबापाके सतत प्रवासो और प्रयत्नोके कारण अस्पृश्यता-निवारण तथा हरिजन-सेवाका कार्य काफी आगे बढा। दो वर्षमे भिन्न भिन्न प्रान्तोमे और खास तौर पर दक्षिणमे काफी सख्यामे मदिर हरिजनोके लिअे खुलने लगे। परन्तु १९३६ मे त्रावणकोर राज्यने हरिजनोके लिअे राज्यके तमाम मदिर खोल देनेकी जो घोषणा प्रकाशित की, अुसने अस्पृश्यता-निवारणके कामको जबरदस्त वेग दिया। दक्षिणमे अस्पृश्यताका किला बडा मजबूत था। अुसमे अिससे बडी दरार पड गअी। अिन बरसोमे बापाने भारतके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक हरिजन-कार्यके सगठनके लिअे और अस्पृश्यता-निवारण आन्दोलनके लिअे सख्त और सतत प्रवास किये थे। १९३५ मे गुजरातका दौरा करके अुन्होने अपने अनुभवो और अिकट्ठे किये हुअे ब्यौरोकी अेक लेखमाला लिखी। अिसी तरह दक्षिण भारतमे १९३५ के फरवरीसे अप्रैल तक प्रवास करके मद्रास प्रान्तके अधिकाश भागोमे दौरा किया और वहाके हरिजन-कार्यको अधिक सगठित किया। अुसके बाद अुन्होने अक्तूबरसे दिसबर तक कलकत्ता और आसामका प्रवास किया। अिस बारके दौरेमे अुन्होने आसामके हरिजनोकी सख्या, अुनकी नामशूद्र, पटनी, जोगी, माली, केवट, सूत्रधार, ढेली, मोची, महार, मेहतर, वगैरा अलग अलग जातियो, अुनकी आर्थिक और सामाजिक दोनो प्रकारकी स्थिति, हरिजन होनेके कारण सवर्णोकी तरफसे और दूसरी तरह अुठानी पड रही परेशानियो और मुश्किलो वगैराके तथ्य अिकट्ठे करके अुनका वर्णन 'आसामकी हरिजन यात्रा'

शीर्षकसे 'हरिजनबन्धु' मे दिया। अिस लेखके शुरूमे अुन्होने दौरेका ब्यौरा देते हुअे बताया

"आसाम प्रान्तमे छठी बार यात्रा करके अभी लौटा हू। अिस बार तो पूरा अेक मास वहाके अलग अलग जिलोके दौरेमे लगाया। पहाडी जातियोका अध्ययन करने, जलप्रलयके कष्टमे राहत पहुचानेका काम करने, हरिजन-कार्यकी देखरेख और व्यवस्था करने या गाधीजीकी हरिजन-यात्राकी जमादारी करनेके लिअे और दूसरे अलग अलग कारणोसे पिछले नौ वर्षमे मैने अिस प्रान्तमे ६ बार सफर किया है। अिसलिअे अिस प्रान्त पर मेरी ममता बढती गअी है।"

अिस प्रान्तके हरिजनोकी स्थितिका ब्यौरा देकर आगे लिखा "आसामकी कुल आबादी ९२।। लाख है। अुसमे ५२ लाख हिन्दू, २८ लाख मुसलमान, १० लाख अेनिमिस्ट और ढाअी लाख अीसाअी है। अिस प्रकार हरिजनोकी कुल आबादी २८.७ फी सदी है और हिन्दू धर्मावलबियोके ५० प्रतिशतसे अधिक है। प्रत्येक सवर्णके साथ अेक अेक अवर्ण, यह स्थिति कैसे सहन की जा सकती है? अिसलिअे आसामके अवर्णोको अूचा अुठानेके लिअे भगीरथ प्रयत्न करनेकी आवश्यकता है। किसी भी प्रान्तमे हरिजनोका अितना भारी अनुपात नही है। और फिर आसामी भाअियोकी दूसरे प्रान्तोसे आये और बसे हुअे हरिजनोके प्रति जितनी लापरवाही है अुतनी और कही नही पाअी जाती। यह स्थिति सुधारनेके लिअे बहुत बडा प्रयत्न करनेकी जरूरत है। अिसमे समस्त भारतके नेता साथ दे, यह जरूरी है। क्या ठेठ पूर्वी कोनेमे पडे हुअे आसामकी पुकार सुनी जायगी?"

२८ अक्तूबर, १९३५ से १४ नवम्बर, १९३६ तककी अुनकी डायरीके अन्तमे अिस अर्सेमे अुन्होने भारतके भिन्न भिन्न भागोमे कितना दौरा किया और सघके दिल्ली कार्यालयमे कितने दिन बिताये, अिसका हिसाब लगाया गया है। अुसके आकडे बताते है कि अिन ३८४ दिनोमे अुन्होने १६२½ दिन मुख्य केन्द्र दिल्लीमे और २२१½ दिन दौरेमे गुजारे थे। और अुनमे आसाम, बगाल, वर्धा, बम्बअी, दाहोद, आगरा, नागपुर, काश्मीर, जम्मू, पजाब, सिन्ध, गढवाल, राजपूताना, कानपुर, पूना, भडौच, अलमोडा, दक्षिण हैदराबाद, केरल और अुडीसाके कुछ भागोमे भ्रमण किया और हरिजन-सेवाके कार्यको वेग दिया था।

१९३७ मे काग्रेसके पद ग्रहण करनेका निश्चय करनेके बाद कुछ प्रान्तोमे जब कॉग्रेस सरकार सत्तारूढ हुअी, तब अस्पृश्यता-निवारण और हरिजन-सेवाके कार्यको काफी सहारा मिला। ठक्करबापाने अुस वर्षमे भी

अलग अलग प्रान्तोका दौरा किया। वे काग्रेसी मत्रियोसे मिले, अुनके सामने हरिजन-सेवाकी विस्तृत योजना रखी और अस्पृश्यता मिटानेके लिअे सब क्षेत्रोमे कैसे लडा जाय और अुसमे सरकार किस प्रकार मदद दे, अिस बारेमे अुनसे विस्तृत चर्चा की। अस्पृश्यता मिटाने और हरिजनोको आगे बढानेकी बात तो काग्रेसके सविधानमे ही थी। अिससे प्रान्तोमे काग्रेसी मत्रिमडलोकी तत्परता और बापाका अिस क्षेत्रका अनुभव और ज्ञान वगैरा बाते अिकट्ठी हो गअी। अिसलिअे हरिजन-कार्य बडी तेजीसे आगे बढने लगा। सरकार और सघ दोनोका हेतु हरिजनोको शिक्षाकी दृष्टिसे अधिक अुन्नतिशील और प्रगतिशील बनाना और सरकारी नौकरियोमे भी अुन्हे काफी हिस्सा दिलवाना था। दोनोकी मिलीजुली कोशिशसे अिस दिशामे काफी काम हुआ। हरिजनोके लिअे साधारण शिक्षा पर होनेवाले खर्चके अलावा प्रत्येक राज्यने हरिजनोकी शिक्षा और दूसरे कल्याण-कार्यके लिअे अलग रकमका प्रबध किया। बम्बअी राज्यमे १९३७–३८ के वर्षमे ५६,००० की रकमकी व्यवस्था की गअी थी, जो बढकर १९३९–४० मे १,६१,००० रुपये तक पहुच गअी। मद्रासमे १९३७–३८ मे ७,१७,८७२, १९३८–३९ मे ७,७८,७६४ और १९३९–४० मे ८,४९,०२२ रुपये हरिजनोकी शिक्षाके लिअे खर्च किये गये। अिस प्रकार हरिजन-सेवक-सघके प्रचारसे और सरकारकी मददसे प्रत्येक प्रान्तमे नअी नअी पाठशालाअे खुली, अिसके अलावा सरकारी स्कूल-कालेजोमे हरिजनोको बिना रुकावटके प्रवेश मिलनेकी सुविधा पैदा की गअी। साथ ही कुछ स्थानो पर हरिजनो द्वारा कुअे, तालाब और रास्ते वगैराके अुपयोगके विरुद्ध सवर्णोने जो रुकावट पैदा की थी अुसे भी कानूनकी सहायतासे दूर करनेकी कोशिश की गअी। अिन सब कामोके लिअे बापाने सारे हिन्दुस्तानमे जगह जगह अेकसे अधिक बार दौरा किया और भिन्न भिन्न राज्योमे शासनकर्ताओके साथ लबी चर्चा करके हरिजनोके कष्ट दूर करनेका प्रयत्न किया।

लोगोमे अस्पृश्यताकी भावना कहा तक घर कर चुकी थी, अिसका अदाज भी बापाको अलग अलग समय अलग अलग प्रदेशोमे किये गये प्रवासमे मिलता था। १९३७ के अक्तूबरमे बापा श्री रामेश्वरी नेहरू, श्री छगनलाल जोशी वगैराके साथ सौराष्ट्रके दौरे पर निकले थे। अुस समय द्वारकामे सवर्णोकी ओरसे खूब विरोध हुआ था। हरिजनोके लिअे तो ठीक मगर श्री ठक्करबापा और रामेश्वरी नेहरू जैसे सवर्ण जातिके नेताओको भी द्वारकाधीशके मदिरमे जानेसे वहाके पडोने रोक दिया था। अिस सम्बधमें बहुत ही बडा अूहापोह हुआ था। बापा और श्रीमती रामेश्वरी नेहरूने द्वारका

और ओखामे वहाके हरिजनोकी स्थितिके बारेमे तथ्य जुटाये। वहाके कुछ पढे-लिखे हरिजनोने अुन्हें अेक लिखित वक्तव्य भी दिया था। अुसमे अुन्हे होनेवाली असुविधाओ — जैसे कि वेगार, मार, मन्दिर-प्रवेश-निषेध, अग्रेजी पढाओकी मनाही, गोमती-स्नानके लिअे नियत सवर्णोके टट्टी जानेकी खुली और गदी जगह वगैराके दु खो और आपदाओका वर्णन किया गया था। ठक्करबापाने अुनका सारा वक्तव्य और अुनके हर मुद्देका विवरण 'हरिजनवधु' के ता० २४-१०-'३७ के अकमे 'ओखा मडलके हरिजन' शीर्षकसे दिया था।

हरिजनोके लिअे मदिर-प्रवेशकी मनाही कर दी गअी है, अिस प्रकारकी वक्तव्यमे की गअी शिकायतके सम्वधमे वापाने लिखा

"सनातनी लोगोमे अभी तक अेक अैसा वर्ग मौजूद है, जो हरिजनोके सेवको अर्थात् हरिजनोको अुपरोक्त सुविधाअे दिलवानेकी कोशिश करनेवालोके लिअे भी मदिरोके द्वार वन्द कराता है। तव हरिजनोकी तो वात ही क्या की जाय? वडोदा सरकारने राज्यके मदिर हरिजनोके लिअे कभीके खोल दिये है। यह (द्वारकाधीशका) मदिर राज्यका नही, राज्याश्रित है, परन्तु हरिजनसेवकोके लिअे अभी मनाही हुअी हे। अिसका परिणाम भी अच्छा होगा।"*

अुनकी वेगार और मार सम्वधी शिकायतका अश अुद्धृत करके वापाने टीका करते हुअे लिखा कि, "वेगारका कष्ट हरिजनोको भारतके किस भागमे नही है? ताजीरात हिन्दकी ३७४ वी धारा ७५ वर्षमे लागू हुअी है। वह अैसी लगती है मानो वेगार करनेवालोका अुपहास करनेको वनाअी गअी हो। मुफ्त वेगार करानेके अलावा गालिया और मार पडनेके अुदाहरण तो अनेक स्थानोमे मिलते है। अिस मारसे हरिजनोके मर जानेकी मिसाले भी मिलती है। यह स्थिति भगवान कव सुधारेगा? अिस प्रश्नका अुत्तर जो मुझे सूझता है, वह तो यह हे कि हरिजन हिम्मत करके अदालतमे वेगार करानेवालो पर मुकदमा चलावे और मजिस्ट्रेट भी भगवानका डर रख कर कानूनके अनुसार ३७४ वी धारा पर पूरी तरह अमल करके वेगार करानेवालेको पूरी वारह मासकी जेल-यात्रा कराये।"

अपने वक्तव्यमे गोमती-स्नानके लिअे नियत हरिजन-घाटका वर्णन करके हरिजनोने वताया था कि, "अिस घाट पर अूची जातिके कमसे कम

* अिस प्रकार हरिजनसेवकोके लिअे वन्द किये गये मन्दिरके द्वार स्वराज्यके वाद डॉ० जीवराज महेता और श्री रविशकर महाराज तथा सौराष्ट्र रचनात्मक समिति वगैराके प्रयत्नोसे १९४९-५० में हरिजनोके लिअे भी खुल गये और तवसे खुले ही है।

हजार-पाच सौ आदमी रोज टट्टी जाते है।" अिस पर टीका करते हुअे बापाने अपने हृदयका दु ख अुडेल कर लिखा कि, "हरिजनोके लिअे अलग रखे गये गोमती तीर्थकी यह भयकर दशा मैं स्वय नही देख सका था। परन्तु द्वारकाके प्रमुख कार्यकर्ता भाअी अम्यकरने अूपर लिखे अनुसार ही हूबहू वर्णन भरी सभामे दिया था। और निर्लज्ज बन कर गलियोमे टट्टी बैठनेकी आदत तो सुबह सात बजे मैंने खुद घूम कर देखी थी। माडवी (कच्छ) में भी यही स्थिति अभी तक बनी हुअी है। अधिकाश बदरी गावोमे यह रिवाज था। परन्तु माडवी और द्वारकामे यह अब तक जरा भी कम नही हुआ और न पाखाने बनानेका प्रयत्न हुआ। यह कितनी शर्मकी बात है!

"भगियोकी सुविधाका थोडा भी विचार किये बिना हमारे शहरी लोग पाखाने बनाते है। हम चाहे जैसी गदगी कर दें, डब्बे भी न रखे, धोनेकी सुविधा भी भगीको न दे, तो भी अुसे साफ तो करना ही पडता है। और यहा तो शहरकी गली गलीमे खुले पाखाने होते है। अिसलिअे बेचारे भगीका दम ही निकल जाता है। साथ ही गायकवाडी राज्यमे अदालतके दरवाजेमे अुन्हे घुसने न दिया जाय और स्कूलके कमरेमे अलग बिठाया जाय, यह तो आश्चर्यकी बात कही जायगी।"

वक्तव्य देनेवाले हरिजन भाअियोको आश्वासन देते हुअे बापाने लेखके अतमे बताया कि, "अुन्नतिके मार्गमे अग्रसर हुअे लोगोको अिस परीक्षामे पास होना ही पडेगा। परन्तु जहा शक्ति और अुत्साह न हो, वहा असे विघ्न मार्गमे आने पर मार्ग अधिक विकट लगना स्वाभाविक है। जहा अपनी स्थितिका सच्चा भान नही हुआ हो, वहा परिस्थितिकी यह विषमता मालूम नही होती। परन्तु परीक्षामे तो अुत्तीर्ण होना ही पडेगा और अुसमे हिम्मत खो देनेसे आगे नही बढा जा सकता। द्वारकाके हरिजन भाअियोसे मेरी अितनी-सी विनती है।"

१९३८ का वर्ष हरिजन-यात्रामे बितानेके सिवाय बापाने जनसेवाकी विविध प्रवृत्तिया हाथमे ली। अिस वर्षमे मध्यप्रान्त और बरारकी सरकार द्वारा म्युनिसिपैलिटीके भगियोकी स्थितिकी जाच करनेके लिअे नियुक्त जाच-समितिके अध्यक्षके तौर पर अुन्होने काम किया। अुसमे भगियोकी स्थितिके सम्बन्धमे विस्तृत जानकारी और आकडे अिकट्ठे करके अुनकी आर्थिक और शिक्षा-सम्बधी स्थिति सुधारनेके लिअे बापाने निश्चित सिफारिशें की। अिसके सिवाय अुसी साल बापाको अुडीसा प्रान्तकी सरकारने पार्शियली अेक्सक्लुडेड अेरियाकी जाच-समितिका अध्यक्ष नियुक्त किया। हरिजन-सेवाके सिलसिलेमे बापाने अुडीसा, मध्यभारतके देशी राज्य और

दक्षिण राजपूतानेके राज्योमे प्रवास किया। अिसके अतिरिक्त अुत्तर प्रदेशमे जलसकटका सामना करनेके लिअे कष्ट-निवारण कार्यका सगठन किया।

१९३९ मे गाधीजीके कहने और वम्वअी सरकारके सुझाव पर वापाने पश्चिम खानदेशके आदिवासियोके लिअे कल्याण-केन्द्र जारी कराये और अुनके द्वारा भील-सेवाका काम आगे वढाया। अिसीके साथ अन्य प्रान्तोमे आदिवासियोकी सेवाकी ओर अुन्होने ध्यान दिया। अुडीसाके देशी राज्योमे धनकेनाल और तालचेरमे जव राज्यसत्ताका जुल्म वढ गया और कुछ लोग हिजरत करके अुडीसा प्रान्तके अिलाकेमे चले आये, तव वापाने अिन दु खी निर्वासितो और हिजरतियोके लिअे कष्ट-निवारण केन्द्र स्थापित करके अन्न और आश्रयकी तत्काल व्यवस्था कर दी।

१९३९ मे महायुद्धकी नीतिके कारण काग्रेस सरकारोने अिस्तीफे दे दिये। अिससे हरिजन अुद्धारके लिअे काग्रेस सरकारोने हरिजनोको कानूनकी, सरकारी नोकरियोकी, शिक्षाकी और अन्य जो सुविधाअे कर दी थी, अुन्हे काफी धक्का पहुचा। परन्तु हरिजन-सेवक-सघका काम तो चलता ही रहा। अुसी वर्षमे वापाने जीवनके सत्तर वर्ष पूरे किये। सारे देशने अुनकी सुवर्ण जयती मनाअी। अिसका व्यौरा आगेके प्रकरणमे देखेगे।

२६

बापा-जयंती

१९३९ के सितवरकी २५ तारीखको वापाके अेक साथी श्री श्याम-लालजीने वापाकी अतरग मडलीके दो-चार मित्रोको अेक खानगी पत्र लिखा। अुसमे वताया कि ठक्करवापा नवम्वरकी २९ तारीखको ७० वर्ष पूरे कर रहे है। अितनी अुम्रमे भी अुनका शरीर अच्छा है, तदुरुस्ती भी अच्छी है और भारतके हरिजनो और आदिवासियोकी सेवाके लिअे दिन दिन अधिक कसा हुआ और मजवूत वनता जा रहा है। अिसलिअे वापाकी ७१ वी वर्षगाठ शोभास्पद ढगसे मनानी चाहिये। यह जयती किस प्रकार मनाअी जाय, अिसके लिअे आप कुछ सुझाव दीजिये। कुछ मित्रोने अिस अवसर पर अुन्हे ७,००० रुपयेकी थैली अर्पण करनेका और दूसरे कुछ मित्रोने हरिजनो, दलितो और शोषितोकी अुन्होने जो सेवा की हे अुसकी कद्रके तौर पर अेक सुन्दर अभिनन्दन ग्रथ प्रकाशित करनेका भी सुझाव दिया हे। मेरे खयालसे अिस दूसरे सुझाव पर अिस समय अमल करना कठिन है। मै स्वय

यह मानता हू कि वापाका सम्मान करनेके लिअे अेक ठक्कर जयती अुत्सव समितिकी रचना करनी चाहिये। यह समिति अुत्सव सम्बधी कार्यक्रम तैयार करे और अुत्सव वम्वअी अथवा अहमदावादमे मनाया जाय।

श्री श्यामलालजीके विचारका हरखचदभाअी, डॉ० केशवलाल ठक्कर, श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त तथा श्री परीक्षितलाल मजमुदार वगैरा वापाके साथी कार्यकर्ताओने स्वागत किया। वापाका सम्मान करनेके लिअे अेक सम्मान समारोह समितिकी रचना हुअी और अुसकी जाहिरात करके अिस अुत्सवको सफल वनानेके लिअे लोगोसे अनुरोध किया गया।

अिस सिलसिलेमे गाधीजीको भी खवर दी गअी और अिस वारेमे 'हरिजनवधु' मे कोअी छोटी-सी टिप्पणी लिखनेकी प्रार्थना की गअी। गाधीजीने अिसे सहर्ष स्वीकार किया और 'वापा–जयती' शीर्षकसे 'हरिजन-वधु' मे ता० १६–१०–'३९ को निम्नलिखित टिप्पणी प्रकाशित की

"ठक्करवापाको —— जो हरिजनोके और अुन दूसरी जातियोके पितातुल्य है, जो अुन्ही जैसी दशामे है और जिन्हे आधी जगली और पशुपूजक वगैरा नाम देकर अनेक वर्गोमे वाट दिया गया है —— अगली २९ नवम्वरको सत्तर वर्ष पूरे हो रहे है। दिल्लीके हरिजन-निवासके लोगोने अिस घटनाका अुत्सव ठक्करवापाके दिलको भानेवाले ढग पर करनेकी योजना वनाअी है। वे ठक्कर-वापाको अुनके जन्मदिवस पर हरिजन-कार्यके लिअे ७,००० रुपयेकी छोटी-सी रकमकी थैली भेट करना चाहते है। वे चाहते है कि मै अिस प्रयत्नको आशीर्वाद दू और अुसका विज्ञापन करू। मैने अुन्हे जो जवाव लिखा है अुसमे अुन पर अश्रद्धाका आरोप लगाया है। ठक्करवापा अेक विरले लोकसेवक है। अुनमे अभिमान या आडवरका नाम भी नही है। अुन्हे स्तुति नही चाहिये। अुनका काम ही अुनका अेकमात्र सतोष और अेकमात्र मनोरजन है। वुढापेने अुनके अुत्साहको शिथिल नही वनाया है। वे स्वय ही अेक सस्था जैसे है। मैने अेक वार अुन्हे लिखा कि, 'आप जरा आराम ले तो अच्छा'। तुरत ही अुनका अुत्तर आया 'अितना सारा काम करना वाकी है, तव मुझसे आराम कैसे लिया जाय? मेरा काम ही मेरा आराम होना चाहिये।' अपने जीवनकार्यके लिअे शक्ति खर्च करनेमे वे अपने आसपासके जवानोको भी शर्माते है। ७,००० रु० की थैली अिस प्रवृत्तिके लिअे और अुसका भारी वोझा अपने मजवूत कधो पर वहन करनेवाले पुरुषके लिअे अपमानस्वरूप है। अिन सेवकोको सारे हिन्दुस्तानसे कमसे कम ७०,००० रु० अिकट्ठे करनेका निश्चय रखना ही चाहिये। यह रकम भी अिस कार्य और अुसके जनकके लिअे कुछ नही है। परन्तु

अेक महीनेके भीतर जमा करनेके लिअे यह खासी रकम होगी। हरिजनो और भीलोमे पाअी-पैमे अिकट्ठे किये जा सकते तो कैसा अच्छा होता। वे ठक्करबापाको पहचानते है। परन्तु धनिक और मध्यम श्रेणीके लोग भी बापाको जानते है और अुनके प्रति प्रेम रखते है। वे अिस फडमे अिस काम और जो महान सेवक अुसके प्रतिनिधि है अुन दोनोकी खातिर खुले हाथो रुपया देगे, अिसमे मुझे कोअी शका नही है। चन्देका रुपया (१) हरिजन-निवास, किंग्सवे, दिल्ली, (२) हरिजन आश्रम, साबरमती और (३) मेगाव, वर्धा होकर —अिन तीनोमे से किसी भी पते पर भेजा जा सकता है।"

गाधीजीकी अिस टिप्पणीका बहुत व्यापक असर हुआ। भारतके तमाम प्रान्तोमे जगह जगह अिस जयतीके निमित्तसे चन्दे शुरू हुअे। हजारो लोगोने प्रेमसे अिस कोषमे रुपया दिया और गाधीजीके कहे अनुसार ७,००० के बजाय ७०,००० तो अिकट्ठे कर ही दिये, परन्तु अिससे भी आगे बढ कर यह आकडा अेक लाखके अूपर पहुच गया।

अुसके बाद ता० २९–११–'३९ को बम्बअीके गोवालिया तालावके मैदानमे खास शामियाना खडा करके अुनके सत्कार समारोहका अुत्सव मनाया गया। अुस मौके पर सरदार वल्लभभाअी पटेल, श्री भूलाभाअी देसाअी, गुजरात हरिजन-सेवक-सघके अध्यक्ष श्री नरहरि परीख, श्री परीक्षितलाल मजमुदार, महाराष्ट्र हरिजन-सेवक-सघके अध्यक्ष श्री वी० अेन० बरवे, मत्री श्री अुपाध्याय, भील-सेवा-मडलवाले श्रीलक्ष्मीदास श्रीकान्त, श्री जयरामदास दौलतराम, ठक्करबापाके छोटे भाअी डॉ० केशवलाल ठक्कर, अुनके भतीजे श्री कपिल ठक्कर तथा श्री रामू ठक्कर, प० हृदयनाथ कुजरू, सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, सर सी० वी० महेता, महिला विश्वविद्यालयवाले श्री कर्वे, मध्यप्रान्तकी गोड जातिकी सेवामे लगे हुअे फादर अेल्विन, सरदार पृथ्वीसिंह, गाधीजीके मत्री श्री महादेवभाअी देसाअी, श्री मगलदास पकवासा, श्री कन्हैयालाल और श्रीमती लीलावती मुन्शी, श्रीमती हसा महेता, श्रीमती लीलावती आसर, सेठ सूरजी वल्लभदास, बम्बअीके भूतपूर्व मत्री श्री बाला-साहब खेर, श्री मथुरादास त्रिकमजी, श्री नगीनदास मास्टर, डॉ० सोलकी, श्री गोशीबहन केप्टन और अन्य प्रमुख काग्रेसी अुपस्थित थे।

सभा-स्थान पर श्री ठक्करबापाके पहुचने पर तालियोसे अुनका स्वागत किया गया। शुरूमें शाताकुजकी हरिजन बालिकाओने ठक्करबापाका स्वागत करनेवाला गीत और बम्बअीकी हरिजन लडकियोने ठक्करबापाकी दीर्घायु चाहनेवाले गीत गाये।

सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासने बताया कि ठक्करबापाके प्यारे नामसे परिचित बने हुअे अिस पुरुषने २५ वर्षसे केवल गुजरातकी ही नहीं परन्तु भारतके सभी प्रदेशोकी सेवा की है। अपने सुखकी परवाह किये बिना अेक मनसे सतत २५ साल तक की गअी अुनकी सेवाओका ब्यौरा आपने जान लिया होगा। अुनकी अिस सेवाकी कदर करनेके लिअे यह सभा बुलाअी गअी है।

गुजरात हो या महाराष्ट्र, बगाल हो या बिहार, अुडीसा हो या पजाब, जहा भी प्रकृतिका कोप होता वही ठक्करबापा दौड जाते और राहत-काम हाथमे ले लेते है।

बम्बअी हरिजन-सेवक-सघकी स्थापना हुअी तो अुसकी सफलताका अेक अचूक आश्वासन यह था कि ठक्करबापा अिसके मत्री थे। अुनका किया हुआ काम भारतके अितिहासमे प्रसिद्ध होगा।

सेवाग्राममे पूज्य महात्माजीका अिस अवसरके लिअे भेजा हुआ खास सदेश लेकर आये हुअे श्री महादेवभाअी देसाअीने बताया कि आजके प्रसगका माहात्म्य आपको अिसी बातसे मालूम हो जावेगा कि गाधीजीने यह सदेश लेकर मुझे यहा भेजा है। वे खुद यहा आना चाहते थे, परन्तु अैसा करनेकी अुनमे शक्ति नही है।

अुनके हाथका (हिन्दीमे) लिखा हुआ सन्देश यह है

"बापाकी अिकहत्तरवी जयती मनानेमे मुझे हाजिर होना चाहिये, लेकिन मै अिस लायक नही रहा हू। मेरी तो हार्दिक आशा है कि बापा सौ वर्ष पूरे करे। बापाका जन्म ही दलितोकी सेवाके लिअे है। भले वह अस्पृश्य हो या भील या साताल या खासी। अुनकी कदर करनेमे हम दलितोकी कुछ न कुछ सेवा ही करते है। बापाकी सेवाने हिन्दुस्तानको बढाया है।

सेगाव, ता० २७-११-'३९ मो० क० गाधी"

अिसके बाद श्री हरकिशनदास झवेरीने अिस मौकेके लिअे देश भरमे प्राप्त लगभग डेढ सौ सदेशोमे से कुछ पढ कर सुनाये।

राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबूके सन्देशमे अिस अवसर पर अुपस्थित न हो सकनेके लिअे खेद और ठक्करबापाके प्रति आभार प्रदर्शित किया गया था। ठक्करबापाके परिश्रम और सेवाओका अुल्लेख करके अुन्हे त्यागी और धर्मकुशल सेवक बताया गया था। और अीश्वरसे यह प्रार्थना की गअी थी कि वे लम्बे समय तक यह कार्य करते रहे और देशको अुसका लाभ मिलता रहे।

दूसरे सदेश बनारस विश्वविद्यालयके अुपकुलपति श्री अेस० राधाकृष्णन्, श्री नलिनीरजन सरकार, श्री घनश्यामदास विडला, श्री विजयालक्ष्मी पडित, श्री हरविलास शारदा, काका कालेलकर, श्री कुमारप्पा, श्री रामानद चटर्जी, लेडी विद्यागौरी नीलकठ, डॉ० राजन्, काठियावाड राजनैतिक परिषद्, तथा अन्य अनेक हरिजन सस्थाओंके सिवाय दूसरी कुछ सस्थाओ और भारतके प्रसिद्ध व्यक्तियोकी ओरसे मिले थे।

अुसके बाद श्री वल्लभभाओी पटेलने कहा कि, "आजके अवसर पर दो शब्द कहनेका मुझे जो सम्मान मिल रहा है अुसके लिअे मुझे गर्व है। कारण, अैसे मौके थोडे ही आते है। भारतमे तो जो सार्वजनिक जीवनमे लगे हुअे है अुनकी आयु छोटी हो जाती है।

"ठक्करबापाने सेवाके लिअे किये गये परिश्रमके बावजूद अपने शरीरकी रक्षा की है। आज बम्बओीमें, तो कल आसाम या बगालमे और फिर पजाबमे वे दौड जाते है। अुन्होने शरीरकी रक्षा कैसे की, अिसका मुझे आश्चर्य होता है।

"गाधीजी, राष्ट्रपति और अन्य लोगोकी तरफसे आये हुअे बहु-सख्यक सदेश आपने सुने। अुनसे आप समझ सकेगे कि सार्वजनिक जीवनमे लगे हुअे कितने सारे लोगोको बापाने आकर्षित किया है। अकल्पित विपत्तिके अनेक मौको पर ठक्करबापा जी-तोड मेहनत करते रहे है। हमे अुनकी सेवासे प्रोत्साहन मिलता है। अुनके साथ कितने ही अवसरो पर किये हुअे कामके मीठे स्मरण मुझे याद आते है। भारतके हरिजन-कार्यके सेवकोने तो अुन्हींसे अुत्साह प्राप्त किया है। ठक्करबापाके दिलमे गरीबोके लिअे जो दया है, वह तो खुद ओीश्वरके दर्शन जैसी है। हम हरिजन-सेवाकी बाते तो करते है, परन्तु हमारे पाप धुलते ही नही। जो कुछ हो सका है अुसमे तो ठक्करबापा और गाधीजीकी तपस्या ही बोल रही है। बापाको अर्पण की जानेवाली थैलीमे गाधीजीने सात हजारके सत्तर हजार कर दिये, परन्तु सत्तर हजारके बाद भी वह प्रवाह चलता रहना चाहिये।

"भारतसे अस्पृश्यताका नाश कर देनेका गाधीजीने सकल्प किया है। वह मिटे और गाधीजीकी प्रतिज्ञा अपने जीवनमे पूरी हो जाय, अिसके लिअे अिस काममे साथ देकर गाधीजीको जिलाअिये। हम प्रार्थना करे कि हरिजनोकी अैसी सेवा करनेवाले ठक्करबापाको और तीस वर्ष जिला कर ओीश्वर अुनको अधिक सेवा करनेका मौका दे।"

श्री भूलाभाओी देसाओीने अिस अवसर पर बापाको अजलि देते हुअे कहा कि, "आजका प्रसग हिन्दू समाज और हिन्दू धर्मके अुद्धारका प्रसग

है। जब तक अस्पृश्यता है, तब तक हिन्दू धर्मका अुद्धार नही होगा। और तब तक स्वराज्य मागना भी अनुचित ही है। आज ठक्करबापा सत्तर वर्ष पूरे कर रहे हैं। अुनके साथ बैठकर मैं अपने आपको पवित्र हुआ मानता हू। ठक्करबापाको शब्दोसे नही, कार्यसे बधाअी देनी चाहिये। अीश्वर अुन्हे बहुत वर्षो तक जिलाये, यही प्रार्थना करता हू।"

बम्बअीके भूतपूर्व मुख्यमत्री श्री बालासाहब खेरने कहा कि, "१९१४ से लगाकर पाव सदी तक ठक्करबापाने देहकी परवाह किये बिना देशके दरिद्र-नारायण और दुखियोकी, अकाल-पीडितोकी, अज्ञानी भीलो और किसानोकी सेवा की है। भारतका अेक भी कोना अैसा नही जहा ठक्करबापाकी सेवाका लोगोको परिचय न हो। अैसे पुरुषके सत्कारके लिअे अिकट्ठे होकर हम बहुत कुछ सीखेगे। गीतामे आदर्श पुरुषके लिअे कहे गये 'निर्ममो निरहकार' वगैरा विशेषण ठक्करबापा पर लागू हो सकते है। ठक्करबापासे मैं स्वार्थ-त्यागके सिवाय व्यवस्था-शक्तिकी जरूरत समझा। तीव्र सेवा और कार्यभक्ति तो अुनके विरल गुण है। पचमहालके भीलोकी सेवा करके कल तक असभव-सी लगनेवाली वस्तुको अुन्होने सभव बना दिया है।"

भारत-सेवक-समाजके अध्यक्ष पडित हृदयनाथ कुजरूने कहा कि, "समितिमे ठक्करबापा भरती होने आये तब मुझे अुनका प्रथम परिचय हुआ। तब मुझे लगा था कि यदि वे सस्थामे आयेगे तो सस्थाका बल बढेगा। और २६ वर्षके अनुभवसे मैं कहता हू कि हमारे यहा अैसा अेक भी सदस्य नही, जो सेवामे ठक्करबापासे बढ कर हो। व्यायामके प्रति अुदासीनता होते हुअे भी वे सेवाकार्यके लिअे रात-दिन चाहे जितना परिश्रम कर सकते है। वे सफर करनेमे भी नही थकते। ठक्करबापाको देख कर अैसी आशा होती है कि हमारे समाजके अेक विभागको अस्पृश्य मान कर अुनके साथ कुत्ते-बिल्ली जैसा बर्ताव किया जाता है, वह ठक्करबापा जैसोकी तपस्यासे नष्ट होगा। अैसे पुरुषकी प्राप्ति केवल भारत-सेवक-समाजका नही, परन्तु सारे देशका सौभाग्य है।"

फादर अेल्विनने ठक्करबापाको श्रद्धाजलि अर्पित करते हुअे कहा, "ठक्करबापाको मैं अेक फरिश्तेके रूपमे जानता हू। परन्तु फरिश्तेमे और ठक्करबापामे अितना ही फर्क है कि जहा फरिश्ते अपने पखो पर अुड कर आसानीसे आवागमन कर सकते है, वहा ठक्करबापा गाडियो और मोटरोमे टकराते फिरते है। १९३० मे गुजरातके किसान अेक अद्भुत अहिंसक सग्राम कर रहे थे, तब मैने अिस फरिश्तेको देहातमे काम करते हुअे देखा। अन्यायके अवसर देखकर अुनके पुण्य-प्रकोपको बढते मैने देखा है। भूखोके

लिअे अुनकी हमदर्दी भी मैंने देखी है। दु खीको देख कर होनेवाला अुनका दु ख मैंने देखा है । सचमुच ठक्करवापा अेक सत्यनिष्ठ और विरल पुरुप हे । मैंने अुन्हे अकेले गावोमे वालको और वीमारोकी सेवा-शुश्रूपा करते देखा है। अुनके सदेशका अर्थ करू तो अितना ही कह सकता हू कि वाते करना वन्द करो और काम करो । अिसी प्रकार ठक्करवापाके किये हुअे कामकी हम कदर कर सकेंगे और अुन्हे सच्ची अजलि दे सकेंगे।"

भारतमें महिला विश्वविद्यालयकी स्थापना करनेवाले प्रो० कर्वेने कहा, "ठक्करवापाको मैं तीस वर्पसे जानता हू। अुनके साथ मैंने खूब विचार-विनिमय किया है। ठक्करवापाका किया हुआ काम अितना वडा है कि अुसे सव कोअी जानते हे। मैं अुम्रमे अुनमे कुछ वडा हू, अिसलिअे सेवा-कार्यमे मैं जल्दी लग गया । परन्तु अव तो वे अैसी सीढी पर पहुच गये हे कि मुझे अुनसे पाठ लेना है।"

डॉ० सोलकीने कहा कि, "वम्वअीमे पिछडी हुअी जातियोके अुत्कर्पके लिअे नियुक्त जाच-समितिके विवरणमे ठक्करवापाकी की हुअी सिफारिशो और रूपरेखाओ पर पूरा अमल किया जाय, तो दरिद्रनारायणकी सेवाअे सफल हो सकती हैं। काम करनेको ठक्करवापा हमेशा तैयार रहते हे। वे नरसिंह मेहताके वर्णन किये हुअे वैष्णवजन हे।"

अिसके सिवाय श्री झीणाभाअी राठोड, श्री शिवधरकर, श्री रामभाअू राव वगैराने वापाकी दीर्घायु चाह कर अुनकी सेवाओको अजलि अर्पित की।

अध्यक्ष-पदसे श्री राजाजीने ठक्करवापाको अजलि देते हुअे कहा कि, "आपकी ओरसे ठक्करवापाको अजलि अर्पण करनेका अेक महान अवसर आज मुझे प्राप्त हुआ है। मुझे कहते हर्ष होता है कि ठक्करवापाकी थैलीमे ७०,००० से अधिक रुपये अिकट्ठे हो गये हे। अुसमे कुल १,१७,४४०–१३–९ की रकम जमा हुअी है। परन्तु रुपयेसे सेवाका माप कैसे लगाया जा सकता है? यह थैली तो केवल अुस मापके अेक प्रतीकके समान है। दलितो और हरिजनोके लिअे ठक्करवापाने जो कुछ किया है, वह अन्य अधिक वुरे अनिष्टोका मारक सिद्ध हुआ है। हमारा धर्म कितना ही वडा हो, तो भी अुस पर अस्पृश्यताका अेक महान कलक लगा हुआ है । वह कलक दूर करनेके कार्यमे ठक्करवापा लग गये हे। गाधीजीके सदेशमे थोडे-से ही शब्द हे । वे चाहते है कि ठक्करवापा सौ वर्ष जियें, अुनकी जिन्दगीका हरअेक वर्ष, हरअेक दिन और हरअेक घटा वहुत ही कीमती है। हममें से कितने अैसे हैं, जो सत्तर वर्ष जीनेकी आशा रख सकते हे?

"हम अेक महान राष्ट्र हैं। हममे वहुतसे होशियार है, वहुतेरे चालाक है, अनेको वुद्धिशाली पडित है, कअी भले आदमी है। परन्तु अितने पर भी हमारे समाजमे अस्पृश्यता घर किये वैठी है। हम सख्यामे पैंतीस करोड है, परन्तु अिनमे कुछ करोड तो हरिजन है। ये करोडो हरिजन भाअी हमारे ही अधकारमे खो गये हैं। अुन्हे वापस प्राप्त करनेको गाधीजी और ठक्करवापा जैसे लोग तपस्या कर रहे है। हम अुसमे सहायक हो और अस्पृश्यताका कलक दूर करके अुनका मार्ग साफ करे तथा अपने ही भुलाये हुअे और खोये हुअे करोडो देशवन्धुओको पुन प्राप्त करके आनद पाये। आपकी तरफसे मैं यह थैली ठक्करवापाको अर्पण करता हू।"

अिसके वाद श्री राजगोपालाचार्यने थालीमे रखी हुअी थैली वापाको भेट की और अपने हाथसे ही अुन्हे कुकुमका तिलक लगाया। वम्वअी प्रान्तीय काग्रेस समिति, नगरपालिका और अन्य सस्थाओकी ओरसे ठक्कर-वापाको अितने अधिक पुष्प-हार अर्पण किये गये कि वे फूलोके ढेरमे लगभग दव-से गये।

वम्वअीके झाडूवालोकी तरफसे अुन्हे ७७१ पैसोकी अेक छोटीसी थैली भी वादमे आ पहुची थी।

ठक्करवापाने अिस सम्मानका अुत्तर देते हुअे कहा

"आप सवने जिस प्रेमसे यह समारोह करके मेरा सत्कार किया है, अुसके लिअे मैं आपका आभार मानता हू। अिस अवसरके वारेमे ज्यो ज्यो मैं विचार करता हू, त्यो त्यो मेरा खयाल होता है कि यह तो रजका गज हो गया। मेरे साथ काम करनेवाले दो-तीन भाअियोने यह षड्यत्र किया। गाधीजीने अुसका समर्थन किया और वादमे मेरे लिअे अुसमे शरीक होनेके सिवाय कोअी चारा ही नही रहा।

"मैं तो वहुत ही अल्प सेवक हू। किसी भी प्रकारका वुद्धिशाली काम करके मैंने नही दिखाया। सेवा और मजदूरीका काम मैं करता हू। अिस कार्यके पाठ तो मुझे छप्पनिया अकालके समय पिताजीसे मिले थे। सच पूछा जाय तो अिस सारे कामका श्रेय गाधीजीको मिलना चाहिये। अिस कामका प्रताप मेरे जैसे छोटे आदमीका नही हो सकता। यह प्रताप तो गाधीजीका है। १९३२ मे अुन्होने अुपवास किया, तवसे यह महायज्ञ शुरू हुआ है। अपने अुपवासके द्वारा गाधीजीने हरिजनोको ७० के स्थान पर १५१ वैठकें दिलवाअी थी।

"अेक और सवाल जो सक्षेपमे रखना चाहता हू, वह भारतके आदिवासी या मूल निवासी जातियोसे सम्वन्ध रखता है।

"ओश्वरकी कृपासे हरिजन भाओ तो हमारे साथ कधेसे कधा मिलाकर धारासभाओमे बैठ सकते है। यह देख कर आनद होता है। वे अपने अधिकारोके लिअे लड सकते है, परन्तु आदिवासियोके लिअे तो न अुनके कोओ प्रतिनिधि है और न बैठके है। अुनके श्रेयके लिअे प्रान्तीय सरकारो अथवा केन्द्रीय सरकारने थोडा ही काम किया है। हिन्दू समाज भी अुनके पास नही फटका। अुनकी सख्या अढाओ करोड है। हिन्दू समाजके अिन लोगोके पास खास तौर पर जानेकी जरूरत है।

"यह नम्र प्रार्थना मै आपके सामने पेश कर रहा हू। थाना जिले या नवसारीके जगलोमे वारली, ठाकुर, भील, कातकरी, काठोडिया वगैरा जातिया वसी हुओ है। अुनके लिअे हम क्यो कुछ नही करते? अुन पर किये जानेवाले जुल्म अगर नजदीकमे ही कही देखने हो तो थाना जिलेके जगलोमे जाकर देख लीजिये।

"अेक और बात। आप सबने कहा कि मै सत्तर वर्षका हो गया और अब सौका होअू। परन्तु सौ वर्षकी बात सुनता हू तो काप अुठता हू। ८० या ८५ वर्षके शक्तिमान मनुष्य देखे है। परन्तु यह नही देखा कि सौ वर्षका आदमी खाटमे पडे रहनेके सिवाय चलता फिरता हो। परन्तु अिन सब बातोका आधार तो ओश्वर पर है।

"मेरे लिअे आप सबके किये हुअे श्रम और प्रगट किये हुअे प्रेमके लिअे आपका आभार मानता हू। यह थैलीकी रकम आदिवासियोके लिअे ही है और अुसे मै हरिजन-सेवक-सघको सौप दूगा।"

अिसके बाद अेन० अेम० जोशीने अध्यक्ष महोदयको माला पहनाओ और अध्यक्ष महोदयने आभार मानते हुअे ठक्करबापाको भी श्रद्धाजलि अर्पण की।

अिस प्रकार भारतके लोग आदिवासियो और हरिजनोके सेवक ठक्कर-बापाका सत्कार करके अुसके द्वारा हरिजनो और आदिवासियोकी सेवाके निमित्त बनकर कृतकृत्य हुअे।

२७

हरिजनसेवा -- १९३९ से १९५१

गाधीजीकी तपश्चर्या और ठक्करबापाके राष्ट्रव्यापी प्रवासोंके द्वारा हुअे प्रचार और सगठन कार्यके परिणामस्वरूप हरिजन-सेवाकी दिशामे गत सात वर्षोमे अर्थात् १९३२ से १९३९ तक काफी काम हुआ था और १९३७ मे काग्रेस सरकारके सत्तारूढ होनेके बाद हरिजनोकी आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और शिक्षा सबधी अुन्नति और अस्पृश्यता-निवारणकी प्रवृत्तिको वेग प्राप्त हुआ था। अिन सात वर्षोकी अवधिमे दक्षिण भारतके कुछ प्राचीन और प्रसिद्ध मदिर खोल दिये गये थे और अिस अुदाहरणको ध्यानमे रखकर देशके अन्य भागोमे भी कही कही मदिर खोले गये थे। स्कूल-कालेजोमे तो हरिजन विद्यार्थियोको पहलेकी अपेक्षा बहुत बडी सख्यामे भरती किया गया था और हरिजन-सेवक-सघ और सरकार दोनोके द्वारा हुअे छात्रवृत्तियो और दूसरी सुविधाओके प्रबधके कारण हरिजनोकी शिक्षाको काफी प्रोत्साहन मिलने लगा था। रास्तो, कुओ और तालाबो पर जहा अब तक हरिजनोके लिअे पाबदी थी वहा कुछ स्थानोसे यह पाबन्दी हटा ली गअी या हल्की कर दी गअी थी। राज्योमे पढे-लिखे हरिजनोको अच्छी सख्यामे नोकरिया मिलने लगी थी। अिस प्रकार बापाने हरिजन-सेवक-सघ द्वारा रचनात्मक और प्रचारात्मक दोनो प्रवृत्तिया चलाकर तथा काग्रेस सरकार द्वारा अस्पृश्यता मिटानेके लिअे कुछ योजनाओ पर अमल कराकर और भारतके प्रान्त प्रान्तमे दौरे लगाकर अस्पृश्यता-निवारण और हरिजन-सेवा दोनोकी दिशामे आगे कदम बढाये थे। अितने पर भी अभी बहुत काम करना बाकी था। अिसलिअे १९३९ से १९४९ तकके दूसरे दशकमे भी अुनका यह काम दुगने वेगसे जारी रहा। आज बगालमे तो कल आसाममे, अिस महीने मद्रासमे तो दूसरे महीने राजपूतानेमे और तीसरे महीने रियासतोमे, अिस प्रकार भारत भरमे अस्पृश्यता-निवारणके लिअे अुनके प्रवास और प्रयास दोनो बराबर होते ही रहे।

जहा भी जाते वही वे हरिजनोके विशेष प्रश्नोका अध्ययन करते। अुनके सबधकी बारीकसे बारीक बाते अिकट्ठी करते। अुनकी जनगणना, अुनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति प्रान्तवार, जिलेवार, तालुकेवार और गाववार मालूम करते और यह सवाल अिस ढगसे रखते कि सबधित प्रान्तोके कार्यकर्ताओको भी अुसमे नवीनता और मौलिकता प्रतीत होती।

१९३९ मे अेक बार वे हरिजन-सेवाके सिलसिलेमे बगालके दौरे पर गये थे। वहा बारीसाल जिलेके मुख्य शहर बारीसालमे अुनके लिअे भरपूर कार्यक्रम रखा गया था। ठक्करबापाके हाथसे हरिजनोके लिअे अेक धर्मार्थ औषधालय खुलवाया गया था। परतु बापाको अिसीसे सतोष नही हुआ। अुन्होने तो बारीसालमे म्युनिसिपैलिटीका मानपत्र स्वीकार करते हुअे और सार्वजनिक सभामे जो भाषण दिये अुनमे बगालके हरिजनोके प्रश्नका विशेष अुल्लेख किया और जोर देकर बताया कि, "बगालमे हरिजनोका प्रश्न तत्काल हल चाहता है और अुनके अुद्धारके लिअे सवर्णो, म्युनिसिपैलिटी और सरकार तीनोको तुरत काम हाथमे लेना चाहिये। अुन्होने कहा कि बगालकी अढाअी करोड हिन्दू जातिकी आबादीमे ४२ फी सदी तो केवल हरिजन है। अर्थात् अढाअी करोड हिन्दू बगालियोमे से हरिजनोकी आबादी ही अेक करोड हुअी। भारतके किसी भी भागमे, यहा तक कि मद्रासमे भी, हरिजनोकी आबादी अितनी बडी मात्रामे नही पाअी जाती। मद्रासमे हरिजनोकी आबादी समस्त जनसख्याके पाचवे भागसे ज्यादा नही है। अिसलिअे प्रत्येक बगाली भाअी-बहनको अिस प्रश्नकी विशालताको ध्यानमे रखकर हरिजन-सेवाके काममे लग जाना चाहिये। देशके विशाल हितको लक्ष्यमे रखकर भी यह काम जल्दी होना चाहिये।

"बगालकी धारासभामे ३१ सदस्य परिगणित जातियोके है। साथ ही सरकारमे दो मत्री भी अिन्ही जातियोसे आते है। फिर भी अफसोसकी बात है कि वे अपने कम भाग्यवान भाअी-बहनोके लिअे जो कुछ करना चाहिये सो नही करते। बगाल सरकारने हरिजन विद्यार्थियोकी शिक्षाके लिअे पाच लाख रुपयेकी व्यवस्था की है। परतु वह तो केवल अेक वर्षके लिअे है। वह अैसी सहायता नही है, जो हर साल जारी रहे। और अिन पाच लाखमे से दो लाख रुपये तो हरिजन विद्यार्थियोके लिअे आलीशान छात्रालय बनानेके लिअे अलग रखे गये है। अिस प्रकार पैसेका व्यर्थ अपव्यय करनेकी अपेक्षा हाअीस्कूलो और माध्यमिक पाठशालाओके विद्यार्थियोको छात्रवृत्ति या मासिक सहायता देकर अुसका अधिक अच्छा अुपयोग किया जा सकता था।"

यह बात अुनके दिलमे अितनी ज्यादा लग गअी कि बगालका दौरा खतम करनेके बाद अुडीसा जानेसे पहले युनाअिटेड प्रेसके प्रतिनिधिको मुलाकात देते हुअे भी अुन्होने अिसका अुल्लेख किया था और बताया था कि बगाल सरकारने हरिजनोके लिअे जो पाच लाख रुपये मजूर किये है, अुनका अधिकाश तो जो आगे बढ चुके है अुनके लिअे खर्च किया जाता है। क्योकि अिसमे से बडी रकम कालेजोके हरिजन विद्यार्थियोके लिअे छात्रालय बनवाने

या अुन्हे मदद देनेमे खर्च होगी और डोम, हरि, वागदी, वावरी, चमार, धोवी, माल, मोची, पोड, जाविया, मालो, भूमजी, ओराओन, सथाल, निपेरा वगैरा अछूत और पिछडी हुअी जातियोके वालकोकी माध्यमिक शिक्षा पर खर्च नही की जायगी। अमलमे अिनकी जरूरत पहली है।"

परतु सवसे अधिक दु ख तो ठक्करवापाको वगालके शहरोमे रहनेवाले हरिजनोको और अुनके साथ म्युनिसिपैलिटीके वर्तावको देखकर हुआ। अिस सवधमे युनाअिटेड प्रेसके प्रतिनिधिसे मुलाकात करते हुअे अुन्होने वताया कि "वगालकी नगरपालिकाअे सफाअी कर्मचारियो — मेहतरोके प्रति जो वर्ताव कर रही है, वह वहुत ही दु खदायक है। और आम तौर पर कलकत्ता ओर हवडाके भगियोकी स्थिति वहुत ही शोचनीय हे। म्युनिसिपैलिटी अुनके साथ जो वरताव करती हे, वह सहानुभूति शून्य हे। ये भगी भाअी सार्वजनिक जनसेवाका कल्याण-कार्य कर रहे है। अुनके रहनेके मकानोकी स्थिति अितनी अधिक असतोपजनक और गदगीभरी हे कि अुसका वर्णन करना असभव है। वम्वअी, कराची और मद्रास जैसे शहरोने अपने झाडू-वालोके लिअे काफी सुन्दर मकान वनवा दिये है, जव कि कलकत्ता और हवडाकी म्युनिसिपैलिटियोने अिस मामलेमे कुछ भी नही किया। वगालके और शहरोमे — जैसे वारीसाल, कोमिल्ला या सुरीमे — भगी कर्मचारियोकी स्थिति ओर रहन-सहन कलकत्ते और हवडेसे अच्छी है।

"हरिजनोमे भी कोअी सवसे नीची जाति मानी जाती हो तो वह पूर्व वगालके ऋपि और मुचि लोग है। अुनके अुद्धारके लिअे, अुनकी सेवा करनेके लिअे, कोअी सस्था नही है।"

ठक्करवापाके अिस प्रवासने वगालमे अच्छी जागृति पैदा की थी। दौरेके दिनोमे अुस समयकी काग्रेस कार्यसमितिके सदस्य डॉ० प्रफुल्ल घोप वापाके साथ रहे। अुन्होने प्रत्येक सार्वजनिक सभामे हरिजनोकी स्थिति सुधारने और अुनकी सेवा करने पर जोर दिया था और यह आश्वासन दिया था कि अिस दिशामे वगाल भरसक प्रयत्न करेगा।

वगालके अखवारोने भी ठक्करवापा द्वारा सार्वजनिक सभाओ और वक्तव्यमे स्पर्श किये गये प्रश्नो पर टिप्पणिया लिखी थी और अुनमे कलकत्ता तथा हवडाकी म्युनिसिपैलिटियोके हरिजनोके प्रति अिस प्रकारके भावनाहीन व्यवहारकी आलोचना की थी।

जैसे वगालमे वैसे ही अन्य प्रान्तोमे भी अुनके दौरे वरावर जारी रहे और वे जिस जिस प्रान्तमे जाते अुस अुस प्रान्तके समाचारपत्र ठक्करवापाकी प्रवृत्तियोको वडी मात्रामे प्रकाशन देते थे। वगालमे 'अमृत वाजार पत्रिका',

'लिबर्टी', 'फॉर्वर्ड', दक्षिण भारतके 'हिन्दू', बिहारके 'सर्च लाअिट', पजाबके 'ट्रिब्यून' और बबअीके 'टाअिम्स' जैसे अग्रेजी पत्रो और भारतके तमाम प्रान्तोके प्रान्तीय भाषाओमे प्रकाशित होनेवाले पत्रोकी १९३९ से १९४९ तककी फाअिलो पर नजर डालनेसे अिसकी कुछ झाकी मिलती है कि बापाने हरिजन-सेवाके लिअे कितना जबरदस्त काम किया। मद्रास और बिहार जैसी प्रान्तीय सरकारो द्वारा हरिजन-सेवाके लिअे किये गये कामके लिअे कही बापा बधाअी देते है, तो किसी सरकारको अुसकी लापरवाहीके लिअे अुलहना भी देते है। कही हरिजन पाठशाला या दवाखानेका अुद्‌घाटन करते है, तो कही अुनमे वस्त्र और दवा बाटते दिखाअी देते है। किसी जगह अुनके लिअे घरेलू अुद्योग-धधोकी चिन्ता करते है, तो किसी स्थान पर पढे-लिखे हरिजनोको सरकारी और गैरसरकारी नौकरियोकी सुविधा प्राप्त करा देनेके लिअे प्रयत्न करते है।

१९४१ मे ठक्करबापा हरिजन-कार्यके सिलसिलेमे दक्षिण भारतके चेट्टीनाड, तामिलनाड, मदुरा, तिनेवेली वगैरा जिलोके शहरो और गावोमे घूमे थे। दक्षिणमे हुअे हरिजन-कार्यकी प्रशसा करते हुअे मदुराकी अेक सभामें अुन्होने कहा था कि, "मै जरा भी हिचकिचाये बिना मुक्त कठसे कह सकता हू कि मद्रास प्रान्तमे हरिजन-कार्यकी अच्छी प्रगति हुअी है।" मदिर-प्रवेशका अुल्लेख करते हुअे अुन्होने कहा, "त्रावणकोर, अिन्दौर वगैरा देशी राज्योमें तो राजा-महाराजा साहबोकी कोशिशसे मदिर खुले है, जब कि मदुराका विश्व-विख्यात मदिर तामिलनाड हरिजन-सेवक-सघके अध्यक्ष श्री वैद्यनाथ आयर जैसे छोटे आदमीके प्रयत्नसे खुला है। यह कोअी अैसी वैसी सफलता नही कहलायेगी। अिस समय कदाचित् अिस सिद्धिकी महानताका खयाल कुछ लोगोको नही होगा, मगर यह सचमुच महान सिद्धि है।

"अेक और महत्त्वकी बातकी ओर मै आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हू। वह यह है कि देशके भिन्न भिन्न भागोमे सरकार अथवा जिलोके लोकल बोर्डोके बनवाये हुअे कुओसे हरिजन भाअी-बहनोको पानी नही भरने दिया जाता। अिस सबधकी सरकारी आज्ञाअे अभी तक कागज पर ही लिखी पडी है। अिसके लिअे यदि किसीको अुलहना देना हो, तो वह सरकार और हरिजन कार्यकर्ता दोनोको देना चाहिये, क्योकि दोनो ही अिस शोचनीय परिस्थितिके लिअे समान दोषी है। अुन्हे अिस मुद्दे पर जितना जोर देना चाहिये था अुतना अुन्होने नही दिया। सरकार अपने हुक्मकी तामील अपने छोटे नौकरोसे नही करा सकी। और कार्यकर्ता अिसके लिअे जितना चाहिये अुतना अनुकूल वातावरण पैदा नही कर सके।"

हरिजनोके लिअे अलग कुअे बनवानेसे तो अस्पृश्यता कायम रहेगी, यह आलोचनात्मक प्रश्न अेक भाअीके सभामे पूछने पर ठक्करबापाने जवाब दिया कि

"जब आप जमीनके पेटमे अीश्वरके दिये हुअे पानीका अुपभोग करने देनेसे अिनकार करनेकी क्रूरता दिखाते है, तब अिन बेचारे हरिजनोको पीनेके पानीके लिअे अलग कुअे बनवा देनेके सिवाय दूसरा रास्ता ही क्या है? यह चीज कोअी हमेशा करनेकी नही। परतु जब तक सवर्ण हिन्दुओंका हृदय-परिवर्तन न हो, अुनमे मानवता जाग्रत न हो, तब तक यह काम हरिजन-सेवक-सघ करना चाहता है।

"हरिजनो और सवर्णोके बीच पूर्ण समानता तो तभी होगी, जब सवर्ण हिन्दू तमाम हरिजनोके लिअे सभी मदिर खोल देगे, सब कुओमे अुन्हे पानी भरने देगे और सब सार्वजनिक स्थानोका अुन्हे समान अुपभोग करने देगे।"

मदुरामे अन्य स्थान पर भाषण करते हुअे अुन्होने हरिजनोकी शिक्षा पर जोर दिया था। अुन्होंने कहा था

"हरिजन-सेवक-सघ हरिजनोकी शिक्षा पर जोर देता है, अिसके अुचित कारण है। जिन लोगोका समूह अथवा अेक वर्ग पढा-लिखा होता है, वे अपने प्रश्नोका निपटारा अन्य किसीकी सहायताके बिना स्वय ही बहुत सुन्दर ढगसे आसानीसे करा सकते है। हरिजन-सेवक-सघ अिस महत्त्वकी बात पर बराबर ध्यान देता है और हरिजन बालकोको प्राथमिक, माध्यमिक और औद्योगिक शिक्षा देता है। अिस शहरमे भी अेक ब्राह्मण सन्नारी हरिजन कन्याओका छात्रालय चला रही है। अिससे मुझे आनद होता है। मै अिन बहनको धन्यवाद देता हू।"

१९४०–४१ मे अुन्होने श्री रामेश्वरी नेहरूके साथ राजपूतानेके देशी राज्यो तथा अिन्दौर राज्यका दौरा किया और भिन्न भिन्न देशी राज्योके राजाओ और दीवानोसे मिलकर अुनके राज्यमे अस्पृश्यता-निवारणके लिअे, हरिजनोकी शिक्षाके लिअे और साथ ही अुनकी आर्थिक और सामाजिक अुन्नतिके लिअे छोटी बडी योजनाओ पर अमल कराया। देशी राज्योके बजटमें अिसके लिअे अुन्होने काफी रकम राजाओसे मजूर करवाअी। देशी राज्योमे जहा हरिजन-सेवक-सघकी शाखाअे नही थी वहा शाखाअे स्थापित की और जहा सेवक और कार्यकर्ता नही थे, वहा कार्यकर्ता पैदा करके अुन्हे काममे लगाया।

१९४१ मे हरिजन-सेवक-सघके मत्रीकी हैसियतसे बापाने आसामसे सिन्ध तक और हरिद्वारसे दक्षिण तक देशके अधिकाश प्रान्तोका दौरा किया

और सघकी शाखाओका काम कैसा हो रहा है, अिसकी जाच की। अुन्होने प्रत्येक शाखाके कार्यकर्ताओका काम देखा, अुनकी मुश्किले समझी और अुनमे से किस प्रकार मार्ग निकालकर आगे बढे अिसका पथप्रदर्शन और प्रेरणा दी। अिन वर्षोमे अेक तरफ आदिवासियोका और दूसरी ओर हरिजन-सेवाका काम वे समानान्तर रूपमे कर रहे थे।

१९४२ का वर्ष भारतमे आजादीकी अुग्र लडाअीका वर्ष था। गाधीजीसे लेकर प्रान्तो और शहरोके छोटे नेताओ तक तमाम काग्रेसी नेता जेलमे चले गये थे, कुछ गोलियोके शिकार हो गये थे। अिस वर्षमे ठक्करबापाने जेल गये हुअे सेवकोके परिवारोकी चिन्ता रखने और सरकारी जुल्मोके विरुद्ध निर्भय होकर आवाज अुठानेका काम तो किया ही, परन्तु हरिजन-सेवाका काम भी जारी रखा।

१९४३–४४ मे भारतके ज्यादातर भागोमे सरकारी युद्धनीतिके कारण अकाल पडा और बगाल, अुडीसा, मद्रास, बीजापुर और अन्य हिस्सोमे भयकर भुखमरी फैली। ठक्करबापाने देश भरमे घूम घूम कर रुपया जमा किया और अकालग्रस्त भागोका दौरा लगा कर जगह जगह कष्ट-निवारण केन्द्र शुरू किये। अिसमे भी वे सदा हरिजनो और आदिवासियोकी सेवाको तरजीह देते थे। मारवाडी रिलीफ सोसायटी, अुडीसा व्यापारी कष्ट-निवारण-समिति और अैसी ही दूसरी परोपकारी सस्थाअे अिस समय सेवा करने बाहर आती। परन्तु ठक्करबापाकी विशेषता यह थी कि अकाल-पीडित लोगोमे सबसे लाचार और दीनताके गर्तमे पडे हुअे हरिजनोको बचानेके लिअे वे पहले प्रयत्न करते। अपने शुरू किये हुअे कष्ट-निवारण केन्द्रोमे वे हरिजनो और साधन सम्पत्तिहीन पिछडे हुअे वर्गके लोगोकी पहले मदद करते थे।

१९४६ मे देशके टुकडे हुअे और बगालमे मुसलमानोने अपने हिन्दू भाअियो पर अमानुषिक अत्याचारो और अन्यायोकी वर्षा की, तब वे गाधीजीके साथ नोआखली गये और वहा भी अुन्होने अिस अत्याचारके सबसे ज्यादा शिकार बने हुअे हरिजनोकी सेवा करने और अुन्हे मदद देनेमे अपनी शक्ति खर्च की। नोआखली जिलेमे स्थित चर मडलके हजारो हरिजन बापाके अिस कार्यके लिअे अुन्हे याद करेगे, क्योकि पूर्व बगालमे हुअे अिस साम्प्रदायिक अुत्पातमे हरिजनोने अपने घरबार गवा दिये थे, अुनके पास जो रही सही माल-मिल्कियत थी सो भी खो दी थी। अिन लोगोको आर्थिक और सामाजिक रूपमे खडा करनेमे, अुनके जले हुअे झोपडे फिरसे बनवानेमे, अुन्हे रोटी-

कपडेकी सहायता पहुचानेमे, अुनके हरि मदिरोका पुनर्निर्माण करानेमे बापा और अुनके साथी सेवकोने खासी मेहनत अुठाअी। नोआखली जाना हुआ अुससे पहले ठक्करबापा गाधीजीके साथ दक्षिण भारतके पालनी और मदुराकी यात्रामे शरीक हुअे थे।

१९४७ मे अेक ओर अुनकी आखोमे मोतियाबिन्दुकी तकलीफ थी, दूसरी ओर दमेका जोर बढ गया था। फिर भी वे अपनी प्रिय हरिजन-सेवा और आदिवासी-सेवाका काम नही छोडते थे। अुनकी तदुरुस्तीकी जाच करनेवाले डॉक्टर अेम० डी० टी० गिल्डरने -- जो बम्बअी सरकारके स्वास्थ्य विभागके मत्री थे -- पडित हृदयनाथ कुजरूके नाम अेक पत्र लिखकर बापाकी बिगडती हुअी और बिगडी हुअी तदुरस्तीकी ओर अिशारा करके सावधानीका स्वर निकाला था और ठक्करबापाकी सेवा-प्रवृत्तियोको मर्यादित करनेकी सलाह दी थी। अिस पत्रमे अुन्होने लिखा था कि, "ठक्करबापाको होनेवाले दमे (कार्डियाक अेस्थमा) के ये अुग्र आक्रमण कोअी अचिन्त्य अथवा अकल्पित हुअे है, यह नही कहा जा सकता। ये निश्चित रूपमे यह बताते है कि अुनके हृदय पर बहुत अधिक बोझा पडा है और ठक्करबापा अपने हृदयसे जितना वह दे सकता है अुससे भी ज्यादा काम जबरदस्ती करानेकी कोशिश कर रहे है।

"अिसलिअे दमेके अिस हमलेको कुदरतकी चेतावनी समझना चाहिये। फिर, अिससे पहले प्रकृति और भी कअी बार चेतावनिया दे चुकी है, यह देखते हुअे अब अिस चेतावनी पर गभीरतासे ध्यान देना चाहिये, अिसके अलावा, यह देखते हुअे कि बीमारने अपने हृदयसे अुसकी शक्तिसे बहुत अधिक काम लिया है, अब अुन्हे चेत जाना चाहिये और हलकी चालसे काम करके जीवनशक्ति बचानी चाहिये। अिसीलिअे मै अुन्हे प्रवास बन्द कर देनेकी सलाह देता हू। अेक स्थान पर शातिसे जीवन गुजारनेके अुपायसे हम बापाकी जिन्दगी थोडी अधिक लबी कर सकेगे। जिससे वे कुछ अधिक समय तक अपना काम जारी रख सकेगे।

"कार्डियाक अेस्थमा अैसा गभीर चिन्ह है कि अुसके प्रति लापरवाही नही दिखाअी जा सकती। और अगर दिखाअी गअी तो प्रकृति जिसका भारी जुर्माना वसूल करके रहेगी।"

अिस प्रकारकी डॉक्टरी रायोके बाद भी बापाने कुछ समय तक अपना काम जारी रखा। परतु जैसा डॉक्टर गिल्डरने कहा था, यह कुदरतकी गभीर चेतावनी थी। अिसलिअे अुसकी अुपेक्षा बहुत समय तक नही की जा सकती थी। अत तबीयत बिलकुल कमजोर हो जाने और मित्रोके आग्रहके

कारणसे अन्तमे बापाने सक्रिय दायित्ववाले कार्योंसे मुक्ति प्राप्त कर लेनेका विचार किया। भारी मथनके अतमे १९४७ के दिसम्बर मासकी २२ तारीखको अुन्होने अिस सिलसिलेमे अेक लबा निजी पत्र गाधीजीको लिखा और अुसकी अेक अेक प्रति पडित हृदयनाथ कुजरू, श्री घनश्यामदास बिडला, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, दादा साहब मावलकर और श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तको भेजी।

अिस पत्रमे अुन्होने लिखा था कि, "पिछले अेक महीने या अिससे भी कुछ अधिक समयसे मेरे हृदयमे मथन चल रहा है। मेरा खयाल है कि अपनी वृद्धावस्था और दुर्बलताके कारण ओर खास तौर पर आखके मोतियाबिन्दुके कारण मुझे जितना काम करना चाहिये अुतना मै कर नही सकता। अिसलिअे मै अपने आपसे असन्तुष्ट रहता हू। मेरे अधीन जितने कार्य है अुन सब कार्योके साथ जितना चाहिये अुतना न्याय मै नही कर सकता। मै बिलकुल लिख-पढ नही सकता और प्रत्येक छपा या लिखा हुआ शब्द मुझे दूसरेसे पढवाना पडता है। साथ ही खतका जवाब मुझे दूसरेसे लिखवाना पडता है। अैसी स्थितिमे मै अधे आदमीकी-सी बेबसी महसूस करता हू। मुझे लगता है कि अब मै अधिक समय किसीके लिअे अुपयोगी नही हो सकता। और मेरे आसपास और मेरे साथ जो लोग बधे हुअे है, अुन सबके लिअे मै भारस्वरूप हू। अिसलिअे आपकी सलाह लेकर मै अगले दो तीन मासमें जल्दीसे जल्दी निवृत्त होना चाहता हू और मेरे पास जो जो काम है अुन्हे जिनको सौपना अुचित जान पडे, जिन्हे सौपना तय हो जाय, अुन्हे सौप देना चाहता हू।"

अिसके बाद अपने जिम्मेके कार्य — जैसे कस्तूरबा गाधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट, हरिजन-सेवक-सघ, आदिवासियोकी सेवाका काम करनेवाली सस्थाअे, आदिम जाति-सेवक-मडल, राची तथा भारत-सेवक-समाज — किस किसको सौपे जाय, अिसका अुल्लेख करके अतमे लिखा था कि,

"मैने यह पत्र लबे और गभीर विचारके बाद लिखा है। मैने अिस पर दिनके अवकाशके घटोमे और रात्रिके जाग्रत पलोमे खूब गहरा विचार किया है। मै अब मानता हू कि मेरी अुपयोगिता पूरी हो गअी, मेरी शक्ति पूरी तरह खर्च और खत्म हो गअी है। मैने अपने जीवनके ७८ वर्ष पूरे किये है। मै मानता हू कि मित्र कुछ सप्ताहो अथवा महीनोमें मेरा यह सारा भार अुठाकर मुझे मुक्त कर देगे। अीश्वरकी पैदा की हुअी अिस दुनियामे हमेशा किसीकी कमी नही रहती। कुदरत अुसे अपने आप पूरा कर देती है।

"अितने पर भी मै जल्दबाजी नही करना चाहता। आखिरी कदम अठानेसे पहले मै आपकी रायको कीमती समझ कर अुस पर विचार करूगा

और यदि आप मुझे समय देंगे तो अिस सबधमे रूबरू बात करनेको भी मैं तैयार रहूगा।

आपका
अ० वि० ठक्कर"

अिस प्रकार बापा मित्रोकी सलाह-सूचनाका आदर करके और कुदरतकी चेतावनीको ध्यानमे रखकर सार्वजनिक सेवाके सक्रिय कामोसे निवृत्त होनेकी तैयारी कर रहे थे और निवृत्त होनेके बाद कहा रहे, अिसका विचार कर रहे थे। लेकिन कुदरत अुनके लिअे दूसरे कामोकी रचना कर रही थी। सिन्धमे मुस्लिम लीगने फिर दगे छेड दिये थे और पूर्व बगालकी तरह कराची, हैदराबाद और ग्रामीण अिलाकोसे सवर्ण लोग तत्काल जो हाथ लगा सो लेकर कुटुम्ब-कबीलेके साथ हिजरत करके कच्छ-काठियावाड, राजपूताना वगैरा नजदीकके भारतीय प्रदेशोमे आ रहे थे। अिसमे सबसे विषम स्थिति हरिजनोकी थी। अुनके पास तो जीनेका भी पूरा आधार नही था। सिन्धमे अुन्हे मार मारकर मुसलमान बनाया जा रहा था। अुनके लिअे मुसलमान बन जाना अथवा सिन्ध छोडकर भारतमे चले आना — यही अेक अुपाय था। हजारो निर्वासित स्टीमरके रास्तेसे कच्छके माडवी और सौराष्ट्रके ओखा बदर पर अुतर रहे थे। ठक्करबापा अिन दुखी निर्वासितोको आश्वासन देने, अुन्हे तत्काल अन्न-वस्त्र और आश्रय देनेकी व्यवस्था करने कच्छ दौड गये। कच्छमे रहकर और ओखा बन्दर आकर अुन्होने यह काम किया। अुस समय अुन्हे गाधीजीका सदेश मिला कि आपका स्थान कच्छमे नही, परतु कराचीमे है। वहा जाकर दुखी लोगोके बीचमे रहिये और अुनमे नैतिक साहस पैदा करके हिजरतको रोकिये। अैसा करते हुअे खप जाना पडे तो खप जाअिये। ठक्करबापा सिन्धके हरिजनोको धैर्य, प्रेरणा और सहायता देने कराची जानेका विचार कर रहे थे और अिस सबधमे कार्यक्रम बना रहे थे कि अितनेमे अचानक भारतमे बडा भयकर काड हो गया। अुन्मत्त हिन्दू साम्प्रदायिकतामे रगे हुअे नाथूराम गोडसे नामक अेक व्यक्तिने गाधीजीकी हत्या कर दी। ठक्करबापा अुस समय कच्छमे ओखा आ गये थे। वही अुन्होने ये समाचार सुने। पहले तो वे यह बात मान ही नही सके। परतु जब अुन्हे यकीन हो गया तो वे दुख और आश्चर्यसे स्तब्ध हो गये। सारे दिन वे बेचैन रहे। अिसके बाद दूसरे दिन ओखासे राजकोट आकर गाधीजीके निमित्त निकली हुअी स्मशान-यात्रामे अुन्होने भाग लिया। अुस दिन राजकोटकी स्मशान-भूमिमे अिकट्ठे हुअे नेताओ और लोगोके सामने

भापण देने वे खडे हुअे। परतु थोडेसे वचन वोलते ही अुनका गला भर आया। अुनकी आखोसे आसुओकी धारा वह चली। गाधीजीकी मृत्युका घाव अुनके लिअे असह्य-सा सिद्ध हुआ।

अिसके वाद ठक्करवापा दिल्ली गये। जैसा पहले कहा जा चुका है, अुन्होने सार्वजनिक जीवनसे निवृत्ति लेकर आराम और अीश्वर-भजन करनेका विचार किया था। परतु गाधीजीकी अिस प्रकारकी मृत्युसे अुन्हे वडा जवरदस्त आघात लगा था। पहले आघातकी तीव्रता कम हो जानेके वाद अुनको लगा कि अव तो गाधीजीका अधूरा छोडा हुआ काम पूरा करना ही मेरा कर्तव्य है। अिस सिलसिलेमे अुन्होने भील-सेवा-मडलके पुराने सेवक श्री सुखदेव भाअीको भी वताया कि मेरा विचार दाहोद तालुकेमे अनास नदीके किनारे किसी अेकान्त स्थानमे रहकर शेप जीवन अीश्वर-भक्तिमे पूरा करनेका था। परतु गाधीजीकी मृत्यु हमे अेक नया पाठ सिखाती है और वह यह है कि निष्काम होकर काम करते करते मृत्युका आलिगन करो, जीवनके अतिम क्षण तक कर्तव्य-कर्म करते रहो। अिसलिअे अव मुझसे आराम नही लिया जायगा। और सचमुच ठक्करवापाने निवृत्तिका विचार छोडकर हरिजन-सेवा और आदिवासियोका काम हाथमे लिया। वापूकी मृत्युके वाद भी दाहोद, राजपूताना, विहार वगैरा स्थानो पर वे अपने विविध कार्योके लिअे और खास तौर पर हरिजन-सेवाके कामके लिअे घूमे। जीवनभर पदो, धारा-सभाओ वगैरासे दूर रहनेवाले वापा जरूरत पडने पर हरिजनो और आदि-वासियोकी भलाअीके लिअे सविधान-सभाके सदस्य हुअे। और भारतकी अिन दोनो अभागी जातियोके लिअे अुन्होने खूव मेहनत अुठाकर सविधानमे अस्पृश्यताके नाश और पिछडे हुअे वर्गोके अुत्कर्षके लिअे व्यवस्था कराअी। सविधान-सभामे और वादमे ससदमे अुन्होने जिस लगन और जोशसे काम किया, वह सचमुच प्रशसनीय और दूसरोको प्रेरणा देनेवाला है। लगभग ७८–७९ वर्षकी आयुमे वापा हरिजन-सेवक-सघके अपने निवास स्थानसे दस मील दूर स्थित ससद-भवनमे वस या तागेमे वैठकर जाते। अुनसे मोटर रखनेका आग्रह किया गया तो भी शुरूमे अुन्होने अिनकार कर दिया। अन्तमे विडलाजीने अेक मोटर हरिजन-सेवक-सघको भेट की, तव वे अुस मोटरका अुपयोग करने लगे। ससदमे अुनकी अुपस्थिति नियमित होती थी। अुन्हे कभी देर नही होती थी। ससदके अध्यक्ष श्री मावलकरने देरसे आनेवाले सदस्योको अुलहना देते हुअे ठक्करवापाका अुदाहरण देकर वताया और कहा था कि वे हम सवसे वृद्ध होते हुअे और दूर रहते हुये भी कभी देर नही करते, तव हम देर करे तो काम कैसे चल सकता है?

सविधान-सभामे अस्पृश्याताके सदियो पुराने कलकको जडमे अुखाड फेकनेवाली १७ वी धारा पास हुअी, अुसमे सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रमुख भाग ठक्करबापाने अदा किया था। अिस धारामे स्पष्ट बताया गया है कि

"अिसके द्वारा अस्पृश्यताको पूरी तरह खतम कर दिया जाता है। और अुसके आचरण पर — फिर वह किसी भी रूपमे हो — प्रतिबंध लगाया जाता है। अस्पृश्यतासे पैदा होनेवाली किसी भी प्रकारकी कठिनाअी या रुकावट कानूनकी दृष्टिसे अपराध हो जाती है।"

अिस प्रकारकी साधारण घोषणासे सतुष्ट न होकर कानूनमे नीचे लिखे अनुसार अुसका ब्यौरेवार स्पष्टीकरण करके अस्पृश्यतारूपी राक्षसीके कफनमे बापाने आखिरी कील ठोक दी

"भारतके स्वतत्र हो जानेके बाद समस्त राज्यमे अस्पृश्यताकी अमानुषिक रूढिको रहने नही देना चाहिये। राज्यकी दृष्टिसे अुसके सब प्रजाजन समान है और राज्यकी खुशहालीके साधनोका समान अुपभोग करनेके हकदार है। अिसी आधार पर सविधानके निर्माताओने नीचे लिखी धारा भी दर्ज कराअी है।

"किसी भी नागरिकको धर्म, जाति-पाति, वर्ण या जन्मके कारण किसी भी दुकान, सार्वजनिक भोजनालय, होटल, धर्मशाला या मनोरजनके अन्य स्थानोमे जानेसे रोका नही जा सकेगा, अुसकी गतिविधि पर पाबन्दी नही लगाअी जा सकेगी और न कोअी शर्त लादी जा सकेगी। साथ ही कुओ, तालाबो, नहानेके घाटो, रास्तो और राज्यकी तरफसे या अुसकी आशिक सहायतासे चलनेवाले सार्वजनिक स्थानोमे जानेकी मनाही नही की जा सकेगी। अिसी प्रकार किसी भी नागरिकको राज्यकी ओरसे चलने या अुसकी सहायता पानेवाली पाठशालामे भरती होनेसे नही रोका जा सकेगा।"

सविधान-सभामे जिस दिन ये धाराअे पास हुअी, अुस दिन ससदके तमाम प्रगतिशील सदस्योको खूब आनद हुआ। परतु सबसे अधिक आनद ठक्करबापाको हुआ। अुन्हे यह सतोष अनुभव हुआ कि गाधीजीका सौपा हुआ अेक काम लगभग पूरा हुआ। अिसके बाद वे मुश्किलसे अेक बरस काम कर सके।

हरिजन-सेवक-सघने पिछले बीस वर्षमे हरिजनोके आर्थिक, सामाजिक और शिक्षा-सबधी कल्याण-कार्यमे लगभग अेक करोड रुपये खर्च किये। अलग अलग राज्योमे २५ प्रान्त-व्यापी और ३२५ जिला-व्यापी शाखाअे खोली, अुनके द्वारा सस्कार-केन्द्र, सहकारी समितिया, छात्रालय, पाठशालाअे आदि स्थापित

करके हरिजनोकी सर्वागीण अुन्नति करनेका प्रयत्न किया। ठक्करबापाने हरिजन-सेवक-सघके मत्रीकी हैसियतसे आसाम, विहार, वगाल, अुडीसा, मद्रास, त्रावणकोर, गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, सिन्ध, राजपूताना, मध्यप्रान्त वगैरा तमाम प्रान्तोमे अेकसे अधिक बार दौरे लगाये और अनेक शिक्षित और सस्कारी युवकोको अिस काममे शामिल किया। हरिजन-सेवक-सघकी प्रवृत्तिने प्रान्तीय सरकारो पर भी काफी अच्छा असर डाला हे। वापाने अनेक प्रान्तीय सरकारो, राज्य-सरकारो और देशी राज्योमे जाकर अुनके मत्रियो और दीवानो वगैरासे मिलकर हरिजन अुद्धारके लिअे हर साल अच्छी खासी रकमे खर्च कराअी। हिन्दुस्तानके आजाद होनेके बाद जब काग्रेस सत्तारूढ हुअी, तब ठक्करबापा और सघके अन्य कार्यकर्ताओके तैयार किये हुअे क्षेत्रमे यह कार्य आगे वढानेकी अुन्हे अच्छी अनुकूलता प्राप्त हुअी। बिहार और अुडीसा जैसी कुछ सरकारोने तो ठक्करबापाको अपने राज्यमे आमत्रण देकर हरिजनोके लिअे कल्याण-कार्यकी योजना तैयार कर देनेका अनुरोध किया था और ठक्करबापाने वह अनुरोध स्वीकार करके वैसी योजना तैयार कर दी थी। स्वराज्यके पहले भी केन्द्रीय सरकारको हरिजन-सेवाके लिअे काफी रकम खर्च करनी पडती थी। परतु स्वतत्रताका अुदय होनेके पश्चात् हरिजन-काम वहुत ही विस्तृत और तेज हो गया और पहलेसे वहुत वडी रकमे हरिजन-सेवाके लिअे खर्च की जाने लगी। अुदाहरणके लिअे १९४६ मे केन्द्रीय सरकार मैट्रिकके वाद हरिजन विद्यार्थियोकी अुच्च शिक्षाकी पढाअी जारी रखनेके लिअे ३ लाख रुपये छात्रवृत्तियो पर खर्च करती थी, जिसे वढाकर १९५१ मे अुसने ८,२५,००० रुपये तक मजूर किये। १९४५ मे २९२, १९४६–४७ मे ५२७, १९४७–४८ मे ६५५, १९४८–४९ मे ६४७, १९४९–५० मे ८७९ और १९५०–५१ मे १,३१६ अुच्च शिक्षा सवधी छात्रवृत्तिया भारत-सरकारने मजूर की। मद्रास सरकारने हरिजनोकी शिक्षा पर १९४६ मे ३१ लाख रु० खर्च किये थे, अुसे वढाकर १९५१ मे ५४ लाखकी रकम मजूर की। पहले जहा सैकडो और हजारो विद्यार्थी पाठशालाओका लाभ अुठा सकते थे, वहा अव लाखो हरिजन विद्यार्थी पाठशालाओसे लाभ अुठा रहे है।

मद्रास, वम्बअी, विहार, अुडीसा, अुत्तर-प्रदेश, पजाव, पश्चिम वगाल, आसाम, सौराष्ट्र, हैदरावाद, राजस्थान, पेप्सू, अजमेर, कुर्ग वगैरा राज्योके आकडे देखनेसे पता चलता है कि हरिजन-सेवक-सघ द्वारा वापाका किया हुआ काम राष्ट्रीय सरकारके सहारेसे आज कितना विस्तृत हो गया है और अुनकी डाली हुअी नीव पर अिमारत खडी करनेका काम सरकारके

लिअे कितना सुगम हो गया है। कुछ सरकारोने आज अपने स्वतन्त्र विभाग खोले हैं, जिनमे सारे राज्यमे सरकारी ढग पर काम करनेवाले मुख्य सूत्रधार बापाके हाथो तैयार हुअे सेवक ही हैं और वे बापाकी सिखाअी हुअी पद्धतिके अनुसार सफलता और निश्चिन्ततापूर्वक काम कर रहे हैं। प्रत्येक प्रान्तमे सरकारी शिक्षण-सस्थाओंमें -- प्राथमिक, माध्यमिक और अुच्च शिक्षा देनेवाली सस्थाओमे -- हरिजन विद्यार्थी सरलतासे प्रवेश पा रहे हैं। प्रान्तीय सरकारो और राज्य-सरकारोकी ओरसे प्राथमिक पाठशालाओके हरिजन विद्यार्थियोको स्लेट, पेसिल, कपडे वगैरा सुविधाअें दी जाती हैं। अिसके सिवाय अनेक राज्योके बडे बडे शहरोमे हरिजन विद्यार्थियोके लिअे कुमार और कन्या छात्रालय खोले जाते हैं। और वे पुन अलग न पड जाय, अिसलिअे सवर्ण छात्रोको भी अुन छात्रालयोमें प्रवेश करनेके लिअे प्रोत्साहन और सुविधा दी जाती है।

सघकी स्थापनासे पहले हरिजनोकी और खास तौर पर भगियोके रहनेकी स्थिति अितनी भयकर थी कि गाधीजी, ठक्करबापा, सतीशबाबू, महादेव भाअी वगैराने अुसे 'नरक' की अुपमा दी है। 'हरिजनबधु' के अनेक पन्ने अिन नरकवासोके शब्दचित्रोसे भरे पडे हैं। बापाने पृथ्वी परके अिन जीते जागते नरकोको मिटानेके कामको अपनाकर कलकत्ता, हवडा, अलाहाबाद, दिल्ली ओर अन्य अनेक स्थानो पर म्युनिसिपैलिटी द्वारा हरिजनोको स्वच्छ, सादे और सुघड मकान रहनेको मिले, अैसी स्थिति निर्माण की। अिस दिशामे आज तो सघ और सरकार दोनो बहुत आगे बढ गये हैं और हरिजनोके लिअे घरोकी सुविधा देना हरिजन-कार्यका अेक जरूरी अग बन गया है। और अिस सबधकी योजनाअें व्यवस्थित रूपमें आगे बढ रही हैं।

हरिजनोकी आर्थिक स्थिति सुधारनेके लिअे मद्रास, दिल्ली, बम्बअी और दूसरे राज्योमे हरिजनोकी सहकारी समितिया स्थापित की गअी हैं। कुछ हरिजनोको जमीने देकर अुन्हे खेतीबाडीके कामकी तरफ झुकनेके लिअे प्रोत्साहन दिया जाता है। हरिजनोको शिक्षित बनाने और अुनका आर्थिक अुद्धार करनेमे अब तक तमाम सरकारोने मिलकर लगभग दस करोड रुपये या अिससे भी ज्यादा रकम खर्च की है और हर साल अिसमे वृद्धि होती जा रही है।

मदिर-प्रवेशकी बात ले तो अिस क्षेत्रमे भी खूब प्रगति हुअी है। अेक समय (१९३६-'३७) अैसा था जब ठक्करबापा और श्री रामेश्वरी नेहरू जैसे पवित्र वैष्णव ओर प्रथम श्रेणीके नेताओको सिर्फ अिसीलिअे द्वारकाके मदिर

और कुछ तीर्थस्थानोमे प्रवेश नही मिला था कि वे हरिजनोकी सेवा करते है, और अुन्हे गोमती-स्नान किये विना ही लौट आना पडा था। वही द्वारकाधीशका मदिर आज हरिजनोके लिअे खोल दिया गया है। पिछले बीस वर्षोमे सैकडो मदिर हरिजनोके लिअे खुले है और दूसरे बहुतसे मदिर खुलनेकी तैयारी हो रही है। मोटर बसोमे बैठनेके लिअे जहा हरिजनोको सत्याग्रह करना पडता था, वहा अब वे आजादीसे बैठ सकते है। हरिजन-सेवक-सघके मत्रीपद पर रहकर ठक्करबापाने अेक तरफ सवर्णोका हृदय-परिवर्तन करानेके प्रयास किये और दूसरी ओर हरिजनोको अुनके विविध दुर्गुणोसे बचानेकी योजना बनाअी। अुनके बच्चोको शिक्षा दी। शिक्षितोको सरकारी और गैरसरकारी नौकरिया दिलवाअी। अुनकी आर्थिक स्थिति सुधारी। हरिजनोको खेतीबाडी और अुद्योगोकी तालीम देकर अुन्हे अपने पैरो पर खडा किया। अुनके जीवनमे स्वच्छता और पवित्रताके सस्कार डालकर अुन्हे अूर्ध्वगामी बनाया। अुनमे से बीमारोके लिअे मुफ्त दवा और सेवा-शुश्रूषाकी व्यवस्था करके अनेक स्थानो पर राहत पहुचाअी। व्यसनोमे डूबे हुओको अुनसे मुक्त किया। शराबमे फसे हुओको अिस लतसे छुडाया और लाखो हरिजनोको अुनकी गदी आदतो, पिछडी हुअी हालत और जहालतसे अूपर अुठाकर अुनकी स्थिति सुधारी। और अिन सबमे अद्‌भुत बात तो यह है कि अितना सब काम करते हुअे भी भारत भरमे हरिजन विद्यार्थियो, कार्यकर्ताओ या अन्य लोगोके साथ अुनका व्यक्तिगत सपर्क कायम रहा। जिस जिस प्रान्तमे वे पत्र लिखते वहा अैसे अेक दो हरिजन विद्यार्थियोके समाचार पुछवाते। अुन्हे मैट्रिक, बी० अे०, या अेम० अे० की परीक्षामे कितने नबर मिले है, अिसका समाचार पुछवाते। अुनके लिअे आगे बढनेका बन्दोबस्त कर देते। किसीकी छोटी रकमके अभावमे शिक्षा रुक गअी हो या धधा बन्द हो गया हो तो अुसकी जाच करके अुसे मदद दिलवाते और जिस कामके लिअे हरिजन विद्यार्थियोको मदद दी जाती अुस कामकी प्रगति कितनी हुअी है, अिसकी पूछताछ करते। जो बापाकी सहायतासे आगे बढे है, अैसे सैकडो हरिजन विद्यार्थियोके पास A V Thakkar, अे० वि० ठक्कर या अमृतलाल वि० ठक्करके हस्ताक्षरवाले पत्र मौजूद है और ये पत्र पढकर आज भी बापाको वे कृतज्ञतापूर्वक याद करते है।

अस्पृश्यता-निवारण और हरिजन-अुद्धारका जो काम बीस वर्ष पहले हरिजन-सेवक-सघ द्वारा शुरू हुआ था, वह जब तक बापा जिये तब तक करते ही रहे। अन्तमे जब बीमार होकर और वृद्धावस्थाके कारण अपग बन

कर भावनगरमे रहे, तब भी यथाशक्ति भार खीचते ही रहे और यह प्रतीति होने पर कि अब मै अधिक समय तक भारवहन नही कर सकूगा, अपने तैयार किये हुअे कार्यकर्ताओके कधो पर अुन्होने अपना बोझा रख दिया। अुन्हे विश्वास था कि अुन्होने बीस बीस वर्ष तक साथ रखकर जिन लोगोको तैयार किया है, वे अिस काममे जरा भी पीछे नही रहेगे।

हरिजन-सेवक-सघके और सरकारके प्रयत्नोसे अस्पृश्यता-निवारणके काममे काफी अच्छी प्रगति हुअी, अिस बातका बापाको सतोष और आनद था। अितने पर भी वास्तविक परिस्थितिके विषयमे वे जरा भी लापरवाह नही रहे, न अल्प सफलतासे सतुष्ट हो हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे। अुन्होने अत तक अिसके लिअे काम किया। अशक्तिके कारण जब अुन्हे यह काम छोडना पडा, तब अुनके जीमे अिसका दु ख रह गया।

अगस्त १९५० मे जब हरिजन-सेवक-सघकी केन्द्रीय कार्यकारिणीकी बैठक हुअी, तब अुन्होने भावनगरमे रोगशय्या पर पडे पडे जो सदेश भेजा, अुसमे अुनकी जागरूकता और वास्तविक दृष्टिकी झाकी मिलती है। अुस सन्देशमे अुन्होने लिखा था

"हरिजन-सेवक-सघकी वार्षिक बैठकमे शारीरिक अशक्तिके कारण मुझे पहली ही बार गैरहाजिर रहना पडा है, अिसके लिअे मुझे दु ख हो रहा है।

"हमे यह याद रखना है कि बापूजीने अपनी तथा हिन्दू समाजकी तरफसे अस्पृश्यताका नाश करनेका जो वचन दिया था, वह अभी तक पूरा नही हुआ है। जहा तक हरिजनोकी शिक्षाका सबध है, वहा तक तो यह कहा जा सकता है कि अिस दिशामे सतोषकारक कार्य हुआ है। परतु हरिजन भाअी-बहनोको हिन्दू समाजमे समरस कर देनेमे अभी तक हमे जितनी चाहिये अुतनी सफलता नही मिली। अभी तक जहा भारतके ८० फी सदी लोग रहते है अुन सात लाख गावोमे छुआछूतकी भावना बहुत दृढ है। कानूनकी दृष्टिसे हरिजनोको कुअे, तालाब वगैरा जलाशयोसे पानी भरनेके अधिकार प्राप्त हो गये है, फिर भी रोजमर्राके व्यवहारमे हरिजनोके ये नागरिक अधिकार भोगनेमे विघ्न आते है। अिसलिअे हिन्दू जाति और खास तौर पर हरिजन-सेवक-सघका हरिजनोको अुनके ये अधिकार दिलवाना और अुनके अुपभोगमे आनेवाले विघ्न दूर करना फर्ज हो जाता है। हमे अपना कार्यक्षेत्र शहर छोडकर गावमे ले जाना पडेगा, क्योकि वहा हरिजनोको ज्यादा मुश्किले अुठानी पडती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हरिजन-सेवक-सघ अिस दिशामे कुछ न कुछ व्यावहारिक कदम अुठायेगा।

"नये सविधानके अनुसार ससदमे और प्रान्तीय धारासभाओमे हरिजनोको केवल दस वर्ष तक अर्थात् १९६० तक ही सरक्षण मिला है। अिस बीचमें हमे अैसी स्थिति पैदा करनी चाहिये, जिससे आगे चलकर भविष्यमे अैसे सरक्षणकी अुन्हे जरूरत न रहे और न हरिजनोको अैसी माग ही करनी पडे।"

अिस बैठकके बाद बापा पूरे पाच महीने भी नही जिये। फिर भी अुन्होने हरिजन-सेवक-सघको जो पथप्रदर्शन दिया है, अुसके अनुसार सघ अपनी अनेक शाखा-प्रशाखाओ द्वारा काम कर रहा हे। सरकार भी दिन दिन अिस मामलेमे अधिकाधिक जाग्रत बनती जा रही है और हरिजनोको सवर्णोकी कतारमे लानेके लिअे सब दिशाओमे प्रयास हो रहे है। अिन सबके बाद भी सदियो पुराने रिवाजको पूरी तरह शायद निश्चित अवधिमे न मिटाया जा सके, तो भी १९६० के अन्त तक जिस लक्ष्य पर पहुचनेका सोच रखा है, अुसकी बहुत लम्बी मजिल तय कर ली जायगी, अिसमे अब शका नही रही।

२८

काळे व्याख्यानमालाका व्याख्यान

भारत-सेवक-समाज द्वारा जो अनेक परिपाटिया डाली गअी थी, अुनमे आजीवन सदस्योकी अध्ययनशीलता और अुद्योगपरायणता तथा विशेषत अपने विषयका सागोपाग ज्ञान मुख्य थी। समाजके आद्य सस्थापक गोखलेजी स्वय ही अिसके अेक आदर्श दृष्टान्त थे। जो विषय हाथमे लिया अुसकी गहरीमे गहरी और विस्तृत जानकारी प्राप्त किये बिना अुन्हे चैन नही पडता था। आर्थिक विषय हो, राजनैतिक विषय हो या प्रबध सबधी विषय हो, किसी भी विषयकी पूरी तफसीलें और आकडे जमा करके अुन्ही पर वे अपने वक्तव्यकी रचना करते थे। अिसलिअे जो चीज वे पेश करते, वह बहुत ही असरकारक ढगसे रख सकते थे। अिसमे अुन्हे शायद ही पीछे देखना पडता था। गोखलेजीका ज्ञानोपासनाका, अध्ययनशीलताका यह अुत्तराधिकार समाजके दूसरे सदस्योको भी मिला था। ठक्करबापा भी अिसमे अपवाद नही थे। शिक्षा, अकाल कष्ट-निवारण, खादीकार्य वगैरा जिस काममे वे पडते, अुसका सैद्धान्तिक और व्यावहारिक ज्ञान वे पूरी तरह प्राप्त कर लेते। परन्तु आदिवासियोके जीवन और समाज-व्यवस्था तथा अुनकी व्यक्ति-

गत, कौटुम्बिक और सामाजिक स्थिति, अुनका आर्थिक और राजनैतिक दृष्टिकोण, भारतके समाज-जीवनमे अुनका स्थान और अुनके अन्य विविध प्रश्नोके विषयमे बापाने जितना अध्ययन किया था, अुतना अेक-दो अपवादोको छोडकर शायद ही किसीने किया होगा।

आदिम जाति सेवक सघकी स्थापनाके बाद अब कअी स्नातक और विद्वान अिस सवालका अध्ययन करनेकी ओर झुके है। परन्तु बापाने तो अुसका अध्ययन ठेठ १९२५-२६ मे शुरू कर दिया था। जिस विषयके वे निष्णात थे, बहुश्रुत थे। अिस विषयका वे कितना विशाल और गहरा ज्ञान रखते थे, अिसकी कुछ कल्पना अुस व्याख्यानसे होती है, जो अुन्होने 'काळे व्याख्यानमाला' के अेक भागके रूपमे १९४१ मे पूनामे विद्वानोके सम्मुख दिया था।

अिस व्याख्यानकी तैयारी करनेमे अुन्होने काफी समय और शक्ति खर्च की। और व्याख्यानमे जो भी ब्यौरे दिये, वे कहा कहासे जिकट्ठे किये गये है, यह व्याख्यानकी पुस्तिकाके अतमे दी गअी चुनी हुअी पुस्तकोकी सूचीसे मालूम होता है। अिस सूचीमे अुस समयके ब्रिटिश भारतके भिन्न भिन्न प्रान्तो और देशी राज्योमे रहनेवाले आदिवासियोकी स्थिति सबधी लगभग ५७ पुस्तकोके अुपरात प्रत्येक प्रान्त और राज्यकी जनगणनाके विवरणोका समावेश होता है। अिसमे सन्देह नही कि तीस-चालीस पन्नोका अध्ययनपूर्ण निबध तैयार करनेके लिअे अुन्होने कमसे कम दस बारह हजार पन्नोका साहित्य पढा होगा।

आज अलबत्ता भारतकी राजनैतिक स्थिति बदल गअी है। अग्रेज राज्य छोडकर चले गये है। देशी राज्योकी सरहदे मिट गअी है। जिस प्रकार सारे विषयकी राजनैतिक भूमिका बदल गअी है। फिर भी आदिवासियोके जो थोडेसे मूलभूत प्रश्न मौजूद है और बापाने अपने व्याख्यानमे जिन प्रश्नोकी विस्तारसे चर्चा की है, वे अभी तक बिना हल हुअे या अधूरे ही खडे है। अिसलिअे बापाका वह व्याख्यान आदिवासियोके प्रश्नोके हलके लिअे पूर्व-पीठिकाका काम करेगा। सारा व्याख्यान तो बहुत लबा होनेसे यहा देना असभव है। परतु अुस व्याख्यानमे अुन्होने जो मुख्य मुद्दे पेश किये है, अुनमे से कुछ जरूरी भाग देकर ही हम सतोष मान लेगे।

भारत जैसे विशाल खडके तमाम प्रान्तोमे रहनेवाले आदिवासियो और अुनके प्रश्नोकी विशालताकी — अुनकी बहुत बडी जनसख्याकी, अुनके अज्ञान और दारिद्र्यकी, अुनके शराब और दूसरे व्यसनोकी और साधारण लोगोसे अलग दूर दूरकी पहाडियो पर और जगलोमे अेकान्त जीवन बितानेकी

अुनकी खासियतकी व्यापक कल्पना बहुत कम लोगोको होगी। और अिस कार्यके लिअे समाज-सेवको और कार्यकर्ताओकी कितनी बडी जिम्मेदारी है, अिसकी कल्पना तो अुससे भी कम लोगोको होगी। अिन कार्यकर्ताओने अिस प्रश्नके प्रति जितना चाहिये अुतना ध्यान नही दिया। अिसलिअे यह प्रश्न अभी तक ज्योका त्यो खडा है।

हमारे देशके आदिवासियोकी आबादी कोअी छोटी नही है। कुल मिला कर वह सवा दो करोड होती है और भारतकी समस्त जनसख्याके साढे छ प्रतिशतके बराबर है। यह सख्या देशमे रहनेवाले हरिजनोसे लगभग आधी है। देशभरमे हरिजनोकी कुल आबादी पाच करोड है। अिस चीजको और भी स्पष्ट रूपमे रखे तो अिस प्रकारका चित्र पेश किया जा सकता है। हम घडी भर यह कल्पना करे कि हमारे बम्बअी शहरमे केवल अज्ञान और गरीबीमे फसे हुअे चिथडेहाल भील, गोड और सथाल जैसे आदिवासी ही रहते है। तो सवा दो करोडकी आबादीमे आदि-वासियोसे बसे हुअे अैसे कुल १९ शहर हो जायगे। यदि हम अेक प्रान्तमे से तमाम सुधरे हुअे मनुष्योको निकाल दे और अुस प्रान्तमे केवल आदि-वासियोको बसा दे, तो वे मध्यप्रान्त और बरार तथा बडोदा राज्यका जो प्रदेश है अुस सबको खचाखच भर देगे। आदिवासी आसामकी आबादीसे अथवा बम्बअी प्रान्तके बडोदा राज्यको छोडकर दूसरे तमाम देशी राज्योकी आबादीके दुगुनेसे भी अधिक है। बम्बअी प्रान्तमे देशके दूसरे प्रान्तोसे आदिवासियोकी सख्या तुलनामे अधिक है। अर्थात् कुल आबादीके ७ फी सदीके बराबर है। खानदेश, थाना, कोलाबा, पचमहाल, अुत्तर गुजरात और नासिकमे वे हजारो और लाखोकी सख्यामे बसे हुअे पाये जाते है। १९०० मे छप्पनिया अकालके कारण वे सिन्धके थरपारकर जिले जैसे रेतीले और मरुप्रदेशमे भी बस गये है। अलबत्ता, ये लोग आपको बडे शहरोमे या रेलवेमे दिखाअी नही देगे, परतु आप रेलवे लाअिन तथा डाक-तारसे दूर दूर स्थित छोटे गावोमे, पहाडी अिलाकेमे, पहाडियो पर या जगलोमे जायगे, तो आपको वे हजारोकी तादादमे देखनेको मिलेगे। अुनके शरीर पर चिथडे लिपटे होगे अथवा कुदरतके दिये हुअे वस्त्र होगे और खाने-पीनेमे जगलकी अविकसित खेतीसे अुत्पन्न धान्यकी पतली राब और जगलके कन्दमूल तथा शाकभाजी होगी। अधिकाश आदिवासी अिन्ही चीजो पर गुजर करते है।

ये लोग अिस प्रदेशकी आदि प्रजा थे। अुत्तर पश्चिम तथा अुत्तर पूर्वसे आर्य लोग चढाअी करके आये और अिन भूमिपुत्रोको हराकर अपने

अधीन बनाया, अिससे पहले ये आदिवासी ही भारतमे रहते थे। आर्य लोगोने यहा आकर अुन्हे पराजित किया और मैदानसे निकालकर ठेठ जगलो और पहाडो तक खदेड दिया। वे अिस भूमिकी हिन्दुओंसे भी अधिक पुरानी सन्तान है। तब वे मुसलमानो और अब-गोरोसे तो पुराने होंगे ही, जिस बारेमे लेशमात्र शका नही। परतु ये आदिवासी अज्ञान और गरीबीमे गले तक डूबे हुअे है और अपने अधिकारो ओर विशेष हकोका अुन्हे बिल्कुल भान नही। फिर अपनी सामूहिक राष्ट्रीय जिम्मेदारीका तो खयाल ही कहासे हो? यदि हम अिस विषय पर थोडी गभीरतासे विचार करे, तो आदिवासियोके आर्थिक और सामाजिक तथा नैतिक और भौतिक सुधारका कार्य कितना महान, विशाल और आवश्यक है तथा यह प्रश्न कितना तात्कालिक और जल्दी हल चाहता हे, अिसकी प्रतीति हमे हो जायगी। आदिवासियोकी अितनी बडी जनसख्याको निरक्षर, अज्ञान और गरीबीमे सडती हुअी रखना या साहूकारो और जमीदारोके यहा अुन्हे स्थायी गुलामी करते रहने देना अथवा साधारण जनसमाजमे से अधिक आगे बढे हुअे लोगोके हाथो अिन आदिवासी बधुओको निर्दय ढगसे लुटते और शोषित होते रहने देना अब ज्यादा समय तक हमे पुसायेगा नही।

१९३१ की जनगणनाके अनुसार वे अलग अलग प्रान्तो और राज्योमे अिस प्रकार बटे हुअे थे

	प्रान्त	आबादी
१	आसाम	१६,७८,४१९
२	बगाल	१९,२७,२९९
३	बिहार ओर अुडीसा (१९३५ से पहले)	६६,८१,२२८
४	बम्बअी (सिंध सहित)	२८,४१,०८०
५	मध्यप्रान्त और बरार	४०,६५,२७७
६	मद्रास (गजाम और कोरापुट जिलो सहित। ये जिले अब अुडीसामे है)	१२,६२,३६९
७	अन्य	८,३०,५८२
	प्रान्तोमे रहनेवाले आदिवासियोकी कुल सख्या	१,८८,८६,२५४
	देशी राज्योमे रहनेवाले आदिवासियोकी कुल सख्या	३५,२१,२३८
	कुल	२,२४,०७,४९२

अिसके बाद आसामकी गारो, काचारी, खासी, लुशाजी, मिडिर वगैरा छ जातिया, बगालकी चार जातिया, बिहार और अुडीसाकी आठ जातिया,

मद्रास और मध्यप्रान्तकी चार-पाच जातिया, ववअीकी भील, घोडिया वगैरा छ जातिया, युक्त प्रान्त (वर्तमान अुत्तर प्रदेश) की अेक जाति और राजपूताना तथा मध्यभारतके देशी राज्योकी अेक दो जातिया — अिस प्रकार २९ अलग अलग जातियो, अुनकी आवादी और वे जहा जहा वसी हुअी है अुन जिलो और तालुकोके व्यौरे देकर वापा सीधे अिन लोगोके मुख्य प्रश्नो पर आकर अुनका अिस प्रकार पृथक्करण करते है।

आदिवासियोके मुख्य मुख्य प्रश्न अिस प्रकार है १ गरीवी, २ निरक्षरता, ३ अनारोग्य, ४ आदिवासियोके निवासस्थानोकी दुरुहता, ५ शासन-प्रबध सबधी खामिया और ६ नेतृत्वका अभाव।

अिस प्रकार पहले वे गरीबीके मुद्दे पर आकर कहते है

१ गरीबी

अगर मै यह कहू कि आदिवासी भारतकी आवादीमे सबसे अधिक गरीव वर्ग है, तो अिसमे जरा भी अतिशयोक्ति नही। अिसमे हरिजन भी अपवाद नही। क्योकि ये तथाकथित हरिजन सामाजिक कठिनाअियोके शिकार होते हुअे भी शहरो और गावोमे हमारे ही साथ रहे है। वे हमारे नागरिक और ग्रामजीवनका अेक भाग बन गये है। भले ही हमने अुन्हे अछूत समझकर अुन्हे अपने स्पर्शसे अलग रखा, फिर भी वे हमारी नजरसे कभी अलग नही रहे। हम अुनसे अैसी सेवा लेते है जो अुन्हे पसन्द नही है — हम अुनसे अपना मैला अुठवाते है — और वे हमारे वीचमे रहते है, यह देखते हुअे हम अुन्हे भूल नही सकते। अुन्हे भूल जानेसे हमारा काम नही चल सकता। परतु आदिवासियोकी तो बात ही दूसरी है। हमे अपने आदिवासियोके अस्तित्वका भान शायद ही होता है। वे कभी वडे शहर या नगर नही देखते और गावोमे भी कभी कभी ही आते है। जिन्हे हम तिरस्कारसे कालीपरज अथवा 'काली प्रजा' के नामसे पुकारते है, अुनके ससर्गमे शहरके लोग, बुद्धिशाली वर्ग और धर्माचार्यो जैसे अूचे वर्गके लोग बहुत ही कम आते है। वे बेचारे अपने तग दायरेमे हमसे अलग होकर अेकाकी जीवन विताते है। परतु हम अपने जाति, कुल और जन्मके अभिमानके कारण अुनके जीवनकी तरफ नजर तक डालनेकी परवाह नही करते, फिर अुनके छोटे और तग दायरेमे झाकनेकी तो बात ही क्या की जाय? वहुत लबे समयसे हमारे शासनकर्ता — फिर वे हिन्दू हो, मुसलमान हो या अग्रेज हो — अिन बेचारे आदिवासी बधुओकी अुपेक्षा करते आये है। अिसका परिणाम यह हुआ है कि वे आज भी अुसी प्रारभिक दशामे रहकर वडी मुश्किलसे

जी रहे है और रोगोके विरुद्ध तथा जीवन-संग्रामकी दौडमे समाजके आगे बढे हुअे प्रगतिशील लोगोके शोषणके विरुद्ध विफल लडाअी लड रहे है। क्योकि अपनेमे सब प्रकार बलवान लोगोमे भिडनेमे अुन्हे तो खोना ही पडता है। आर्य लोगोने अुन पर आक्रमण करके अुन्हे गिरि-कन्दराओ और गुफाओमे धकेल दिया, तबसे आज तक वे प्रागैतिहासिक स्थितिमे ही जीवन-यापन कर रहे है।

अिन आदिवासियोमे बहुत बडे भागके लोग खेती करते है, परतु बहुत ही पुरानी और अशास्त्रीय पद्धतिमे। अुनके यहा लकडीका साधारण माना जानेवाला हल भी बहुत ही कम काममे लिया जाता है।

अुसके बाद जगल जला कर खेती करनेकी आदिवासियोकी पद्धतिकी, जिसने कही कही तो लगभग धार्मिक विश्वासका दृढ स्वरूप पकड लिया है, शास्त्रीय चर्चा करके अुस पद्धतिके फदेसे आदिवासियोको धीरे धीरे छुडानेकी हिमायत की गअी है। क्योकि अिस प्रकारकी खेतीमे जगलोको बहुत ही नुकसान होता है। आगे चलकर बापा कहते है कि जिस मामलेमें सबधित प्रान्तीय और राज्य-सरकारे कार्रवाअी करे और अुदारतासे अज्ञान आदिवासियोकी मदद करे, तो थोडे समयमे यह बुराअी जरूर मिटाअी जा सकती है।

आदिवासियोकी गरीबीके अन्य कारणोमे बापाने जमीदारी प्रथा, अुसके अधीन अिनकी अर्धगुलामो जैसी स्थिति, बेगार और शराबके व्यसन वगैरा बताये है। और अुनकी विस्तृत चर्चा करके अिन सब अनिष्टोने आदिवासी प्रजाको गरीबी और दुखके गर्तमे कैसे धकेल दिया है, अिसका वर्णन किया है।

२ निरक्षरता

आदिवासियोका दूसरा शत्रु है निरक्षरता। अिस सबधमे बापाने निम्न शब्द लिखे है

"अक्षरज्ञान जाननेवाले आदिवासियोकी सख्याके आकडे अेक करुण चित्र प्रगट करते है और शिक्षा-विभागके अधिकारियो तथा परोपकारी लोगोके सामने अपनी दयाजनक पुकार पहुचाते है। १९३१ की जनगणनाके विवरणमे ७६,११,८०३ की आबादीमे केवल ४४,३५१ ही अक्षरज्ञान रखते थे। अर्थात् आबादीका ५८ फी सदी भाग या हर १७२ आदमियोमे १ आदमी अक्षरज्ञान रखता था।

१९२१ की जनगणनाके आकडोंने यह बात जाहिर की कि काटकरी लोगोंमें फी हजार केवल ३ और भीलोंमें फी हजार ४ मनुष्य ही पढे-लिखे थे, जब कि भरवाडोंमें फी हजार १०, महारोंमें २३, भंगियोंमें २८ और ढेढोंमें ६५ आदमी अक्षरज्ञानवाले थे। अिस प्रकार अक्षरज्ञानकी कलामें वे भंगियोंसे सात गुने और ढेढोंसे सोलह गुने अधिक पिछडे हुअे थे। दक्षिण मध्यभारतके अेक राज्यमें, जहां सभी आबादी आदिवासी कबीलोंकी है, भीलोंमें अक्षरज्ञानका अनुपात (१९२४ में) हर तेरह हजारमें केवल अेक अर्थात् लगभग शून्य ही था। यह देखकर मेरे आश्चर्य और दुःखकी सीमा नहीं रही। यह निरक्षरता मिटानी हो और अुन्हें सिर्फ अक्षरज्ञान ही देना हो, तो भी बहुत बडी संख्यामें पाठशालाअें खोलनी पडेंगी। प्रान्तीय सरकारों और लोकल बोर्डोंके प्रयत्नोंकी पूर्ति सेवाभावी और परोपकारी संस्थाओंको करनी पडेगी। प्राथमिक शिक्षाके प्रचारके परिणामस्वरूप आदिवासियोंमें आत्म-विश्वास आयेगा और वह अुनके लिअे बहुत हद तक सहायक भी होगा। फिर वे अपनी पिछडी हुअी दशाका कारण जानेंगे और अुसमें सुधार करनेके काममें लगेंगे। आदिवासियोंमें प्राथमिक पाठशालाअें स्थापित करनेका कार्य आर्थिक कठिनाअियोंके अलावा और कअी मुश्किलोंसे भरा हुआ है। अुनका प्रदेश भारतके भीतरी भागोंमें होनेसे वहां आसानीसे जाना कठिन होता है। अिस-लिअे वहां बहुत कम शिक्षक स्वेच्छापूर्वक पढाने जायंगे और जो जायंगे अुनमें बहुत थोडे वहां टिकेंगे। अिसलिअे वहां जानेवाले लोगोंमें सेवाकी भावना और मिशनरी लगन जगानी पडेगी और यह बात अुनके गले अुतारनी होगी कि यह प्रेमका परिश्रम है। साथ ही जहां संभव हो वहां आदिवासी अुम्मी-वारोंको भी अिस कामकी तालीम देनी चाहिये। और अभी कुछ वर्ष तक आदिवासी बालकोंकी पाठशाला चलानेके लिअे जनपदमें लोगोंको तालीम देनेके लिअे लाना पडेगा।

आदिवासी बालकोंको वे जिस प्रदेशमें रहते हों अुसीकी भाषा और लिपि वगैराके द्वारा शिक्षा देनी चाहिये। अधिकतर तो सभी आदिवासी अपनी बोलीके अतिरिक्त वहांकी प्रान्तीय भाषामें भी परिचित होते हैं। केवल बहुत ही छोटे बच्चोंको प्रान्तीय भाषा समझनेमें कठिनाअी होती है। अैसे मामलोंमें अुन्हें अपनी बोली द्वारा प्रान्तीय भाषा सिखानी चाहिये। . . आसामके खासी लोगोंमें किया गया है, वैसे आदिवासियोंकी पाठशालाओंमें रोमन लिपि जारी करनेके तरीकेको प्रोत्साहन न देकर अुसे निरुत्साहित करना चाहिये, क्योंकि अिससे बहुतसी पेचीदगियां पैदा

होती है। अिसमे कअी टेकनिकल हानिया है और वहुसख्यक लोगोके साथ अिसमे दुश्मनी पैदा होती है।

अिसी प्रकार आदिवासियोको औद्योगिक शिक्षा देनेके लिअे अुनके वीच यहा वहा छात्रालयवाली अुद्योगशालाअे खडी करनी चाहिये। आदिवासियोकी निरक्षरताके सिवाय अुनका आलस्य भी कहावत वन गया है। यदि अुन्हे हमे सतत परिश्रमी नागरिक वनाना हो, तो सवमे पहले आदिवासी वालकोको हाथमे लेकर अुन्हे शिक्षित करना चाहिये। अिसीलिअे अुन्हे औद्योगिक शिक्षा देनेके वास्ते छात्रालयवाली पाठशालाओकी जरूरत है। अैसी पाठशालाओमे ही अुन्हे अुपयोगी नागरिक वनाया जा सकता है। अिस प्रकारकी शिक्षा सवको मुफ्त दी जानी चाहिये। नही तो आदिवासी अपने वच्चोको पाठशालाओमे नही भेजेगे। लेखन, वाचन वगैरा सिखानेके सिवाय स्थानीय परिस्थितिके अनुकूल खेती-वाडी, वुनाअी, वढअीगिरी, लुहारी वगैरा दूसरे दस्तकारीके काम भी आदिवासी वालकोको अवश्य सिखाने चाहिये। अिन वालकोको तीन चार वर्ष छात्रालयमे रखनेसे नियमित जीवन वितानेकी अुन्हे आदत पड जायगी। यह आदत आगे चलकर अुन्हे वहुत ही फायदा पहुचायेगी।

अव तक आदिवासी अिलाकोमे शिक्षा सवधी जो आर्थिक सहायता दी जाती है, वह वहुत ही मामूली और नाकाफी है। अुदाहरणके लिअे, अुडीसामे पाठशालाओकी सख्या वढी है, फिर भी पिछले कुछ वर्षो पहले जिलेवार जो सहायता दी जाती थी अुसीको आधार मानकर आज भी सहायता दी जाती है और यह वात ध्यानमे नही रखी जाती कि पाठशालाओ-की सख्यामे वृद्धि हो गअी है। परिणाम यह हुआ है कि वह रकम पाठशाला-ओकी अधिक सख्यामे वाटी जाती है। अिससे प्रत्येक शिक्षकको सालाना ५० रुपये तककी मामूली रकम ही मिलती है। साअिमन-कमीशनने भी अपने विवरणमे अिसका अुल्लेख किया था। मिडिल स्कूल, हाअीस्कूल और कालेजकी शिक्षा आदिवासियोमे शून्यवत् नही तो भी नहीके वरावर ही है। आसामके खासी और छोटानागपुरके मुडा तथा ओरायन लोगोमे कालेजकी शिक्षा पाये हुअे अथवा पानेवाले वहुत ही थोडे लोग है। १९४० के जून मासमे भील-सेवा-मडलके प्रयत्नसे तालीम पाकर अेक भील कन्या मैट्रिककी परीक्षा पास कर सकी है, यह वात जव मैने सुनी तो मै वहुत ही खुश हुआ। अीसाअी मिशनरियोके अलावा किसी और सेवा सस्था द्वारा शिक्षा पाकर कालेजमें भरती होनेवाली वह प्रथम कन्या थी।

अिस समय औसाओ मिशनकी सस्थाअे और गैरओसाओ भारतीय सस्थाअे अधिकतर सरकारी मददसे आदिवासियोके लिअे पाठशालाअे चलाती है। अिनका काम प्रशसनीय होने पर भी सागरमे विन्दुके समान है। आदिवासियोको निराशा और अज्ञानके गर्तसे बाहर निकालनेके लिअे अिस प्रकारकी सस्थाओंको अधिक प्रयत्न करने चाहिये और सत्ताधारियोको अुन्हे अुदार और प्रगतिशील सहायता देनी चाहिये।

३. अनारोग्य

आदिवासियोके प्रदेशोमे मलेरियाका बहुत ही प्रकोप होता है। मलेरियासे बहुत बडी सख्यामे मृत्युअे होती है। अिसके अलावा बहुतसे छूतके रोग भी विद्यमान है। अिनमे से अेक रोग 'कोमा' दक्षिण अुडीसा और मद्रासके आदिवासियोमे प्रचलित है। जो मनुष्य अिस रोगके शिकार होते है, अुनके सारे शरीरमे चकत्ते और घाव पड जाते है। ये दाग शरीरके जीभ और गुदा जैसे मुलायम अगो पर भी निकलते है। यह रोग जवान और बूढे, स्त्री और पुरुष सब पर असर करता है और अुनकी शक्तिको चूस लेता है। अिसके सिवाय विवाह सबधी तथा विचित्र प्रकारके योन सबधोके कारण आदिवासियोमे सिफलिस और गनोरिया जैसे सभोगजन्य रोग भी साधारण बन गये है।

रोग आदिवासियोका जीवन क्रूरतासे छेद डालते है और बहुत बर्बादी मचाते है। अिसका कारण अुनका अज्ञान है। अिसी प्रकार अुन लोगोकी सेवा-शुश्रूपाका भी विचित्र और भद्दा ढग है। राज्यकी तरफसे अुन्हे वैद्यकीय सेवा-शुश्रूषा नही मिलती, यह भी अिसका अेक महत्त्वपूर्ण कारण है। ये लोग रोग मिटानेको जतरमतर, ओझा और जति वगैराका आश्रय लेते है अथवा कुछ अनाडी वैद्योकी सलाहके अनुसार विशेष प्रकारकी वनस्पतियोकी जडे, पौदे या पत्ते घिसकर या पीसकर काममे लेते है।

अिसलिअे आदिवासियोमे दवा-दारूकी मददका अिन्तजाम करना अुनके कल्याणका अेक महत्त्वपूर्ण कार्य है।

४. आदिवासी अिलाकोंकी दुर्गमता

आदिवासियोके प्रदेशोमे यातायातके साधन बहुत ही खराब है। जहा मोटर आ-जा सके अथवा सभी ऋतुओमे सफर किया जा सके, अैसे रास्ते बहुत थोडे है। अुदाहरणके लिअे, आसामकी लुशाओ पहाडियोमे अथवा अुत्तर प्रदेशके गढवाल जिलेमे मोटरके रास्ते नही, परतु पाच फुट चौडी सडके है। अिन प्रदेशोमे अत्यत पहाडी और पथरीले मार्गोंके कारण यातायात खराब

रहता है। परन्तु वहाके रास्ते सुधारनेमे और बहुत रुपया खर्च करके नये रास्ते बनानेमे अुनकी कुछ दुर्गमता तो कम की जा सकती है और अभी जितना आवागमन है अुससे अधिक किया जा सकता है। पहाडियो और पहाडोमे जो असख्य झरने और नदिया बहती है, वे आम तौर पर बैल-गाडियो और अैसी दूसरी सवारियोको बरसातमे रोक देती है। अुन पर छोटे बडे पुल बनाकर यह कठिनाअी मिटाअी जा सकती है।

अच्छे रास्ते देशके अनेक द्वार खोल देगे। अिससे व्यापारको प्रोत्साहन मिलेगा। वे अुद्योगपतियोको अिन प्रदेशोकी ओर आकर्षित करेगे, क्योकि अिन प्रदेशोमे खनिज और अन्य प्राकृतिक द्रव्य पुष्कल मात्रामे है। अिससे आदिवासी दूसरे आगे बढे हुअे लोगोके ससर्गमे अधिक मात्रामे आयेगे। कुछ मानववश-शास्त्री तथा ब्रिटिश शासक अिस प्रकारका ससर्ग आदि-वासियोके लिअे भयजनक मानते है। परन्तु मेरा मत अिससे भिन्न है।

५ शासन-सबधी खामिया

आदिवासी जिन प्रदेशोमे मुख्यत रहते है, अुनके १९३५ के भारत सरकारके कानूनके अनुसार अलग किये हुअे (अेक्सक्लूडेड) और अशत अलग किये हुअे (पार्शियली अेक्सक्लूडेड) अैसे दो विभाग कर दिये गये है। मॉण्टफोर्ड सुधार अिस अिलाकेको पिछडा हुआ प्रदेश मानते थे और अिसलिअे १९१९ का भारत-सरकारका कानून अुस पर लागू नही किया जाता था। मॉण्टफोर्ड सुधारोमे पहले १८७४ के भारतीय कानूनकी १४ वी धाराके अनुसार अिन प्रदेशोको शिड्यूल्ड डिस्ट्रिक्ट्स माना जाता था।

मोजूदा सविधानके अनुसार कुल मिलाकर आठ अलग किये हुअे अिलाके और अट्ठाअिस अशत अलग किये हुअे अिलाके है। जिनकी कुल आबादी डेढ करोड है। अलग किये हुअे अिलाकोका शासन सबधित प्रान्तोके गवर्नरोकी सीधी देखरेख और नियत्रणमे होता है, जब कि अशत अलग किये हुअे अिलाकोका प्रबध ज्यादातर गवर्नरोके हाथमे होता है। अिस मामलेमे अुन्हे विशेष जिम्मेदारिया दी हुअी है। जिन जिलाको पर धारासभाओका कोअी कानून लागू नही हो सकता, जब तक कि गवर्नर स्वय विशेष घोषणा द्वारा अैसा हुक्म न दे।

अलग किये हुअे अिलाकोके लिअे किसी भी प्रकारके कानून बनाने या अुन्हे लागू करनेकी गवर्नरको पूरी सत्ता होती है। अिसी प्रकार कोअी कानून रद्द करने या सुधारनेका भी अुसे पूरा अधिकार होता है। जिन अिलाकोमे जो भी खर्च किया जाता है, वह धारासभाके मतके अधीन नही होता, अुससे परे होता है।

अिन अिलाकोका प्रबंध निरकुश और सर्वसत्तात्मक होता है। थोडेसे अफसरोके हाथमे कुल सत्ता होती है। प्रबंध और न्यायके अधिकार अेक ही अफसरके हाथमे होते है। शिक्षा जैसा विषय भी अुसीको सौपा जाता है। अिसके सिवा ये अफसर यूनियन, तालुका और डिस्ट्रिक्ट बोर्डोके अध्यक्ष होते है। जब अेक ही कर्मचारीके हाथमे अेक साथ अितने सारे काम सौंप दिये जाय, तब शासन-प्रबंध कार्यक्षम और लोकप्रिय कैसे हो सकता है?

स्थानीय स्वराज्य भी जहा है वहा नामका ही होता है। बोर्डोमे सौ फी सदी सरकारके नामजद लोग और सरकारी अध्यक्ष होते है। ये बोर्ड सरकारी तत्रकी अेक दूसरी शाखाके रूपमे ही काम करते है और अुनमें लोगोकी भावना व्यक्त करनेके लिअे नहीके बराबर गुजाअिश होती है।

आदिवासियोके प्रदेशमे न्यायका काम भी अुचित रूपमे खूब ही आलोचनाका विषय बन गया है।

१९३५ के विधानके अनुसार आदिवासियोके लिअे अलग मताधिकार द्वारा जो बैठके सुरक्षित रखी गअी है, वे कुल मिलाकर २४ है और अिस प्रकार अलग अलग प्रान्तोमे बाट दी गअी है —

आसाम ९, बिहार ७, अुडीसा ५ तथा बम्बअी, मद्रास और मध्यप्रान्त प्रत्येकमे १।

मध्यप्रान्तमे जहा आदिवासियोकी आबादी लगभग हरिजनोके बराबर और कुल जनसख्याके पाचवे हिस्सेके बराबर है, वहा आदिवासियोके लिअे केवल अेक ही बैठक सुरक्षित रखी गअी है, जब कि हरिजनोके लिअे २० बैठके है। अुडीसामे ५ सुरक्षित बैठकोमे से ४ नामजद होती है। यह अुडीसाका ही विशेष लक्षण है। क्योकि अन्य सब प्रान्तोमे प्रातीय धारासभाओमे सदस्योको नामजद करनेका रिवाज रद्द कर दिया गया है।

लोकल बोर्डोमे भी अेक बम्बअी सरकारके सिवाय किसी प्रान्तमे आदिवासियोको प्रतिनिधित्व नही मिला है।

६. नेतृत्वका अभाव

आदिवासी जातियोमे नेतृत्वका अभाव अेक बडी रुकावट है। अीसाअी बने हुअे आदिवासियो अर्थात् छोटानागपुरकी तरफके लोगोमे पढे-लिखे आदमी जरूर है, मगर वे आम तौर पर अपने गैरअीसाअी भाअियोकी अपेक्षा अपने अीसाअी बन्धुओमे ही ज्यादा दिलचस्पी लेते मालूम होते है। साथ ही गैरअीसाअियोमे तो अीसाअी आदिवासियोसे भी बहुत कम नेता है। आदिवासियोके हितोकी तरफ सत्ताधारी और सामान्य जनता दोनोका

ध्यान क्यो नही आकर्षित होता, अिसका यह भी अेक कारण है। आदिवासी अपने पैरो पर खडे रह सके और अपने हकोके लिअे लड सके, अैसा समय आने तक गैरआदिवासियो और समाज-सेवकोको अुनका काम सेवाबुद्धि और नि स्वार्थ भावसे हाथमें लेना चाहिये और अुनकी आर्थिक और शिक्षाके क्षेत्रमे भी अुन्नति करनेके प्रयत्न करने चाहिये।

२९

राष्ट्रव्यापी संकट

ठक्करबापाने अपने जीवनकालमे समाजके भिन्न भिन्न क्षेत्रोमे जो दो चार बडे बडे काम किये है, अुनमे अकाल-पीडित प्रदेशोमे घूमकर समय समय पर हाथमे लिये हुअे अुनके मानवसेवाके कार्योका बडा महत्त्वपूर्ण स्थान है। सेवाजीवनके प्रारभसे ही अुन्होने मथुरा, कच्छ और काठियावाडके अकालके समय कष्ट-निवारणके कार्योका सचालन किया था। अुसके बाद पचमहाल, गुजरात, अुडीसा, आसाम वगैरा प्रान्तोमे १९१८ से १९४३ तकके पच्चीस वर्षकी अवधिमे जो भी अकाल पडे और जलसकट आये, अुनमे हर बार कष्ट-निवारण केन्द्र स्थापित करने, अुन्हे चलानेके लिअे चदा जमा करने, अुचित और न्यायपूर्ण ढगसे अुसका वितरण करने, लोगोकी धर्मबुद्धि जाग्रत करने तथा सरकारी नीति गलत हो — और वह ज्यादातर गलत ही होती थी — तो अुसे सुधारनेमे अुन्होने हमेशा प्रमुख भाग लिया। जिन सब अकालोके बारेमे और अिनमे बापा द्वारा लिये गये भागके बारेमे पिछले अध्यायोमे काफी वर्णन आ गया है। अिसलिअे अुन सब बातोका यहा फिरसे पुनरावर्तन करनेकी आवश्यकता नही। परतु १९४३–४८ मे भारतके अलग-अलग हिस्सोमे पडे हुअे महाभयकर अकलमे बापा द्वारा किया हुआ कार्य जिन क्षेत्रोमे प्राप्त सफलताओ पर सुवर्ण कलश चढानेवाला है। अुनके अिन कार्योमे भारतकी आगामी पीढियोको भी प्रेरणा और मार्गदर्शन मिलने लायक बहुत कुछ है। अिसलिअे अिन वर्षोके अकालोका तथा अुनमें बापाके किये हुअे कामका सक्षिप्त विहगावलोकन कर ले।

१९४३ मे भारतके कुछ प्रान्तोमे अकाल पडा। बबअीके बीजापुर जिले, मलाबार और कोचीन-त्रावणकोरके कुछ तालुको तथा अुडीसा और बगालमें तो अुसका बहुत ही व्यापक असर हुआ था। अिन सब प्रान्तोमे सबसे अधिक

अकालकी चपेटमें कोअी अेक प्रान्त आया हो तो वह बंगाल प्रान्त था। अुसे ही सबसे ज्यादा नुकसान सहन करना पड़ा। १९४३ का अकाल बंगालमें 'पचाशेर मन्वंतर' के नामसे मशहूर है, क्योंकि बंगाली वर्षके अनुसार अुस समय १३५० वां वर्ष चल रहा था। अिस महाभयंकर अकालने केवल बंगालमें ही नहीं परन्तु सारे देशमें हाहाकार मचा दिया। अिस अेक ही वर्षमें केवल बंगाल प्रान्तमें अकालके कराल गालमें पिसकर लगभग ३५ लाख मनुष्य मृत्युको प्राप्त हुअे और अुसके तीसरे हिस्सेकी आबादी पर अकाल अपने पीछे भी असर छोड़ गया। परंतु अिस अकालके ब्यौरेमें जानेसे पहले हम बबअी प्रान्तके बीजापुर जिलेकी ओर मुड़ें।

बीजापुर जिलेमें वर्षाकी कमी और दूसरे कारणोंसे पिछले तीन बरस फसलकी दृष्टिसे लगातार कमजोर निकले। अिससे पहलेके दशकमें तंगी और अकाल अपनी झांकी दिखा चुके थे। अिस पर वर्षाकी कमीके कारण खराब साल आ गये। अनाज खास तौर पर पैदा नहीं हुआ। अिसमें महायुद्धजनित महंगाअी और जुड़ गअी। परिणाम यह हुआ कि लोगोंकी क्रयशक्ति घट गअी और बीजापुर जिलेका अधिकांश भाग अकालकी चपेटमें आ गया। ठक्करबापाकी सदा जागृत दृष्टि अिस जिले पर भी बराबर लगी हुअी थी। अिसलिअे अुस प्रदेशकी स्थिति ज्यों ही बिगड़ने लगी त्यों ही अुन्होंने बीजापुर जिलेकी अकालकी स्थितिके बारेमें लोगोंका ध्यान खींचा और अुसमें फंसे हुअे बुभुक्षित मानव-बंधुओंको सहायता करनेके लिअे बबअीमें अेक कष्ट-निवारण-समिति स्थापित की। अुसके अध्यक्षपदसे बम्बअी और गुजरातकी जनतासे चंदा देनेकी अपील की। अिस समितिके वे संचालक ही नहीं थे, परंतु अुसके मित्र, नेता और मार्गदर्शक भी थे। समितिके वे प्राण थे। समितिने बापाके पथप्रदर्शनमें खूब मेहनत करके लगभग आठ लाख रुपये सहायता-कोषके लिअे अिकट्ठे किये थे और बीजापुर जिलेमें जगह जगह जनताकी ओरसे सहायता-केन्द्र स्थापित करके अकाल-पीड़ितोंकी मदद दी थी।

जो लोग सरकारी सहायता केन्द्रोंमें जाकर काम नहीं कर सकते थे, अैसे बुड्ढे और बीमार आदमियों और बालकोंके लिअे अुन्होंने मुफ्त भोजनालय शुरू किये। अुनमें औसतन् ८,००० आदमियोंको रोज खिलाया जाता था, जिनमें ७५ फी सदी तो केवल बच्चे ही थे। मध्यमवर्गके अिज्जतदार लोग अैसे धर्मादेके भोजनालयोंमें आनेमें शर्म और संकोच अनुभव करते थे। अुनको घर पर अनाज पहुंचानेकी व्यवस्था की गअी थी। फिर अिन सब अकाल-पीड़ितोंके शरीर पर पूरे कपड़े नहीं थे। अधिकांश तो

चियडोमे ही थे। बापाने समिति द्वारा लगभग ८४,००० मनुष्योको कपडे पहुचाये। कुल १,११,००० कपडे अिन लोगोमे बाटे गये। जिनके सिवाय मिलोसे सूतके पूडे दानमे लेकर अिस प्रदेशके अकाल-पीडित जुलाहोको काम दिया। अिससे दो मतलब सिद्ध हुअे। कपडेकी जरूरतवालोको कपडा मिल गया और अकाल-पीडितोके अेक वर्गको काम मिल गया। जिनके सिवाय अकाल-पीडितोका सदाका साथी चरखा भी बापाने यहा गुजा दिया और अिस तरह चरखे द्वारा कष्ट-निवारण कार्य शुरू किया।

गरीब किसानोको खेतीमे मदद देनेके लिअे अुन्होने जगह जगह कृषि-केन्द्र खोल दिये। वहासे किसानोको हल ओर खेतीके कुछ औजार वगैरा मुफ्त अथवा कम कीमतमे दिये जाते थे। साथ ही जिन किसानोके पास बीज नही था या बीज खरीदनेको रुपया नही था, अुन्हे मुफ्त बीज दिया जाता था। अिसके सिवाय जिलेके खास खास हिस्सोमे ५१ पशु-सहायता-केन्द्र खोले गये। यहा गरीब काश्तकारोके मवेशी मुफ्त रखे जाते थे। और अकाल मिट गया, तब तक घास अित्यादि खिलाकर अुन्हे जिलाया गया। बबअीके जीवदया मडलसे ठक्करबापा अिस काममे और मानव-सहायताके दूसरे कार्योमे पूरा सहयोग प्राप्त कर सके थे। बापाने किसानोको नकद रकमकी मदद देकर पशुओके लिअे हरी घास अुगानेका प्रोत्साहन दिया था। अिसके सिवाय सरकारके शुरू किये हुअे कुछ राहत कार्योमे काम करने आनेवाले मजदूरो और देहातियोको दवादारू और अैसी ही दूसरी सुविधाओे भी बापा द्वारा सचालित समितिकी तरफसे ही देनेका प्रबध किया गया था। ये और अिसी प्रकारके अन्य अनेक सहायता-कार्य बीजापुर तालुकेमे बहुत ही सुन्दर ढगसे किये गये थे।

अिस प्रदेशमे बाहरसे आये हुअे पत्रकारोने कष्ट-निवारण-समितिका अितना सुन्दर ओर व्यवस्थित कार्य देखकर अुसकी प्रशसा करनेवाले लेख अखबारोमे लिखे थे और अुनमे बापाके कार्यका अजलि दी थी। 'टाअिम्स आफ अिडिया' जैसे सरकारी पत्रने भी बापाकी अध्यक्षतामे काम कर रही बीजापुर कष्ट-निवारण-समितिके कार्यकी तारीफ की थी।

अिस प्रकार सार्वजनिक कष्ट-निवारणका काम करनेके सिवाय बापा सरकारी कष्ट-निवारण कार्यका अच्छी तरह निरीक्षण करते ओर अुसके सूक्ष्मसे सूक्ष्म ब्योरे अिकट्ठे करके जहा जहा त्रुटि होती वहा सरकारी अफसरोका ध्यान आकर्षित करते और अुसे दूर करनेका अनुरोध करते। बीजापुरके कष्ट-निवारण कार्यके अुनके अेक साथी और बम्बअीके वर्तमान मत्रि-मडलके अेक सदस्य श्री दिनकरराव देसाअीके शब्दोमे कहे तो बापा

"सरकारी कष्ट-निवारण केन्द्रोके गैरसरकारी मुख्य निरीक्षक थे।" और बीजापुरके अकालमे कष्ट-निवारण कार्यको काफी मात्रामे विस्तृत करनेके लिअे सरकारको पीछेसे धक्का लगानेवाले ठक्करबापा ही थे।

१८ अप्रैल १९४३ को बापाने बम्बअी राज्यके सार्वजनिक निर्माण-विभागके सचिव और मुख्य अिन्जीनियरको पत्र लिखकर बताया था कि "जहा तक मुझे परिस्थितिका खयाल है, वहा तक मै कह सकता हू कि बीजापुरके अकाल कार्यके साथ सबध रखनेवाले सभी कर्मचारियो ओर खास तौर पर कार्यवाहक अिजीनियरने लोगोके प्रति और शासनके प्रति भी अपना फर्ज अदा नही किया। अकाल दिसम्बर और जनवरी मासमे घोषित किया गया था, परतु मार्चके महीने तक तो अकाल-निवारणके कार्यक्रमके सबधमे किसी बातका पता ही नही था। मजदूरोके लिअे काम करनेके साधन नही थे, किसी प्रकारकी योजना नही थी। अतिरिक्त कर्मचारियोकी भरती नही की गअी थी। सार यह कि ठेठ मार्च तक यही परिस्थिति थी।"

यह पत्र लिखनेके बाद थोडा बहुत कामकाज हुआ। अूपर अूपरसे भूले सुधारनेका प्रयत्न किया गया। परतु जहा सारी नीति ही गलत थी, वहा अिधर अुधर छोटे छोटे सुधारोसे क्या हो सकता था? ठक्करबापाने लम्बे समय तक धीरज रखा। परतु सरकारकी 'होता है, चलता है' की नीतिमे जब अुन्होने खास सुधार होता नही देखा, तब अुनके धीरजकी हद हो गअी। बीजापुरके हजारो अकाल-पीडितोके दु ख अुनसे देखे नही गये। अिसलिअे अुन्होने 'बीजापुरके दु ख' शीर्षकसे अेक कडा बयान प्रकाशित करके अुस समयकी बम्बअी सरकारकी लापरवाहीभरी शिथिल और निष्ठुर नीतिकी कडी आलोचना की। अकाल-राहतके काममे अधिक वेग लाने और अुदारता-पूर्ण परिवर्तन करनेका सरकारसे अनुरोध किया। यह बयान बीजापुरके अकालमे फसे हुअे लोगोकी हालत पर और सरकारी ढग पर होनेवाले कामो और अुनकी नीति पर अच्छा पकाश डालता है। अिसलिअे अुसके महत्त्वपूर्ण भागो पर दृष्टिपात करे।

"बीजापुर जिला बेचारा खास तौर पर बदनसीब जिला है। लगातार तीन बरसके अकालने वहाके लोगोको बिलकुल भिखारी बना दिया है और अिस समय अुनकी दशा अैसी हो गअी है कि वे अपने पैरो पर खडे नही रह सकते।

"मै यहा क्रमानुसार गरीब, बेजबान और दबाये हुअे बीजापुरके लोगोके दु खो और यातनाओका यथार्थ वर्णन करूगा। अब तक अुनके दु खोका चित्र अखबारोमे देनेकी बात मैने जानबूझकर रोक रखी थी और मन पर सयम

रखा था। परतु अब परिस्थिति अिस हद तक विगड गजी है कि मेरे लिअे यह वक्तव्य प्रकाशित करना अनिवार्य हो गया है।

"सरकारने अिस जिलेका अनाजका कोटा आधोआध काट डाला है और कुछ भागोमे लगभग ३७½ फी सैकडा तक अर्थात् पहलेके कोटेका ⅜ भाग काट दिया है। अेक महीने पहले वयस्क लोगोको रोजका ४० तोला अनाज मिलता था। लेकिन आज केवल पावभर ही दिया जाता है। सरकार अिससे ज्यादा अनाज किसीको नही देती।

"यहा अितना ध्यान रखना हे कि अिस प्रदेशमें लोगोको वम्बअीकी तरह मछली, मास, अडे और दूसरे सागभाजी नही मिल सकते। जिन वेचारोको तो वाजरेकी रोटी और अूपरसे थोडीसी चटनी ही खानेको मिलती है।

"यहा जिन वूढे, वीमार और जवान स्त्री-पुरुषोको सरकारी सहायता पर जीना होता हे, अुन्हे सिर्फ ३० तोला और वारह वर्षके छोटे वच्चोको १५ तोला अनाज मिलता है। यह मात्रा तो फैमिन कोट — अकाल-निवारण कानून — मे जो प्रवध है तथा जेलोमे प्रत्येक मनुष्यको जो राशन दिया जाता हे अुससे भी कम है।

"अिण्डी और सिडगी नामके दो तालुकोमे तो यह घटाया हुआ राशन भी अकालके काम करनेवाले मजदूरोके सिवाय दूसरे किसीको सरकार वेचकर नही देती।

"जमीन रखनेवाले किसानो, रोजाना मजदूरी पर काम करनेवाले वढअी और लुहार आदि कारीगरोको नकद दाम देने पर भी अनाज नही मिलता। अिसलिअे अुन्हे पासके निजाम राज्यमे चोरीसे अनाज लाना पडता है।

"अकाल-निवारण कानूनकी रूसे सार्वजनिक निर्माण-विभागको वूढो, अपगो और वालकोको पकाया हुआ अनाज अथवा नकद रकम देनी चाहिये, परन्तु यहा अुसके मुताविक नही होता। वीजापुरके सार्वजनिक निर्माण-विभागने अपने घरका ही कानून ढूढ निकाला हे और वम्वअी सरकारके कानूनको अेक तरफ रख दिया है। वह अपने सकुचित और लोभी ढगसे काम कर रहा हे।

"यहा मजदूरोको वेतन देनेकी पद्धति वडी दोषपूर्ण और गलत है। अथवा यो कहिये कि पद्धति जैसी कोअी चीज है ही नही। अकाल-निवारण कानूनके अनुसार अुन्हे सप्ताहमे दो वार अथवा अेक वार वेतन देना चाहिये। परतु यहा तो वेतन नियत समयके लगभग तीन हफ्ते वाद दिया जाता हे। वहुत ही कम आदमियोको पेशगी रुपया मिलता हे, परतु यह

अपवाद-स्वरूप ही होता है। अिस प्रकार मजदूरोंके वेतनके दाम दो-दो तीन-तीन सप्ताह तक रख लिये जानेसे अुन्हे आधे भूखे रहना पडता है। अुनके बालकों और अपग मा-बापों या सबधियोंको भी, जो अुन पर आधार रखते हैं, वेतनमे देर होनेसे बहुत कष्ट अुठाना पडता है। अिससे ज्यादा निद्य और दोषपूर्ण नीति और क्या हो सकती है?

"यहा काम करनेवाले कारकुनोकी भी बडी तगी है, क्योकि अुन्हे तनखाह थोडी दी जाती है। अकाल-निवारण कानूनके अनुसार कारकुनको २५ से ३५ रुपया वेतन मिलना चाहिये। जब कि यहा जमादारोको १५ और ७ महगाअी मिलाकर २२ तथा प्रथम कारकुनको २० ओर ७ महगाअी मिलाकर २७ रुपये मिलते है। अिस प्रकार कानूनमे बताअी गअी रकमसे कुछ अधिक देनेके बजाय अुन्हे कम रकम दी जाती है। दूसरी तरफ जीवन-मानका खर्च पहलेसे बढकर दुगुना हो गया है।

"सहायता-केन्द्र पर काम करनेवाले मजदूरोंको काफी मात्रामे पानी भी नही मिलता। अिसलिअे अुन्हे पासके गदे खड्डे-खोचरोका पानी पीना पडता है। परिणामस्वरूप अुनका स्वास्थ्य बिगडता है। अिसका नतीजा आगे जाकर क्या होगा, यह नही कहा जा सकता।

"अिस प्रकार लाखो मनुष्योका भाग्य लापरवाह और सहानुभूतिहीन कर्मचारियोके हाथमे खेलता है। यहा अिस सिद्धान्तका अमल बहुत जरूरी हो जाता है कि मनुष्योको अपने कर्तव्य-स्थान पर ही अुपस्थित रहना चाहिये। जाच करनेके लिअे नियुक्त अूपरी अफसर कितने दिन देहातमे घूमकर अिन सब कामोकी देखरेख रखते हैं ओर कितने दिन बीजापुरमे रहते हैं?

"अगर सर्वनाशसे बचना हो तो जल्दीसे जल्दी राहत-काम करनेवाले आदमियोकी सख्या दुगुनी कर देनी चाहिये। अर्थात् कमसे कम डेढ लाख आदमियोको तुरत काम देना चाहिये। नही तो अकालके गालमे फसी हुअी अभागी जनताको बचाया नही जा सकेगा। आधी भुखमरी और अुससे होनेवाली मृत्युओको रोकना हो तो अन्नकी बहुत अधिक मात्रा —— फी आदमी आध सेरसे ज्यादा मिल सके अितनी —— जल्दी से जल्दी बीजापुर भेज देनी चाहिये। जो लोग जिम्मेदारीकी जगह पर बैठे है, क्या वे अिस प्रश्नका समग्र रूपमे निपटारा करके बहुत देर होनेसे पहले बिगडी बाजी सुधार लेगे?"

अिस प्रकार अिस सारे वक्तव्यमे सूक्ष्ममे सूक्ष्म ब्यौरे देकर अुनकी अेक अेक खामी पर सरकारका ध्यान ठक्करबापाने खीचा। अैसे वक्तव्यको कौन चुनौती दे सकता था? २९–६–'४३ को यह बयान बम्बअीके गुजराती और अग्रेजी पत्रोमे प्रकाशित हुआ। ओर सारे बबअी प्रान्तमे खलबली

मच गअी। अुसी दिन और अगले दिन कुछ पत्रोंने अुन पर अग्रलेख लिख कर सरकारको आडे हाथों लिया।

'बॉम्बे क्रॉनिकल' ने अुसी दिनके अपने अंकमें अग्रलेख लिखकर सरकारने अकाल-पीडित लोगोंको देनेके राशनमें जो कमी की थी अुसका अुल्लेख करके कहा कि, "सत्ताधारियोंका यह कदम कितना क्रूर है कि समझमें नहीं आता। अिससे बीजापुरकी ग्रामजनता लम्बे समयसे जो दुःख सहन करती रही है अुसमें वृद्धि होगी। १९ वीं शताब्दीमें अिस प्रदेशमें जो अकाल पडे, अुनमें भुखमरीके कारण मृत्युअें हुअी थीं। परन्तु अुनके बादके अकालोंमें यह स्थिति टाली जा सकी थी। यदि सरकार अिस अिलाकेमें अनाजकी मात्रामें कटौती करने और राशन घटानेकी अपनी नीति जारी रखेगी, तो बीजापुरमें दुबारा भुखमरीके कारण अकाल-पीडित लोगोंकी मृत्यु हो तो आश्चर्य नहीं होगा।

" साथ ही बम्बअीके गवर्नर सर रॉजर लुम्लेकी सरकारने जब अकाल घोषित किया, तब बीजापुरके अफसर अुस परिस्थितिका मुकाबला करनेको काफी तैयार नहीं थे। अिसलिअे अकाल घोषित होनेके बाद राहत-काम शुरू करनेमें कुछ महीने बीत गये। हमारी नौकरशाहीकी कार्यक्षमता पर अिससे ज्यादा दुःखदायक आलोचना और क्या हो सकती है? परन्तु सरकारी गप और झूठ यहीं खतम नहीं होती। जिस असहाय जिलेमें सरकारी कर्मचारियोंका जो तंत्र काम कर रहा है, अुसकी आलोचनाके समर्थनमें श्री ठक्करने अितनी अधिक सामग्री अिकट्ठी कर रखी है कि अुस पर अध्यायके अध्याय लिखे जा सकते हैं।

" बीजापुरमें जो कुछ हुआ है अुससे सरकारकी आंखें खुलनी चाहियें और अुसे अकालका सामना करनेकी नीतिमें बुनियादी परिवर्तन करना चाहिये। परन्तु सत्ताधारियोंका मानस भूतकालकी भूलोंसे सबक लेनेसे अिन्कार करता है। जैसे प्रश्नोंको नअी दृष्टिसे हल करनेके लिअे लोकप्रिय और जिम्मेदार शासन चाहिये।"

'बॉम्बे सेण्टीनल' ने ठक्करबापाके बयानका आधार लेकर 'कैलस अेण्ड अिण्डिफरेण्ट' शीर्षकसे सरकारकी नीतिकी आलोचना करनेवाला बडा अुग्र अग्रलेख लिखा। शुरूमें ही अग्रमें अुसने अिस प्रकार लिखा :

"श्री अे० वी० ठक्करने अपनी कटी भाषामें बीजापुरमें अफसरोंके हाथों हो रहे कष्ट-निवारण कार्यमें कैसी कुव्यवस्था फैली हुअी है, जिसका हूबहू वर्णन किया है। अफसरोंने तो अकाल-निवारण कानूनकी अवहेलना करके अपने ही ढंगसे कारोबार करना शुरू कर दिया है।

"अिस मामलेको शान्ति ओर धीरजसे सह लेना हमारे लिअे कठिन है, क्योकि यह प्रश्न हजारो वालको, पुरुषो और स्त्रियोके जीवनके साथ गुथा हुआ है और ये वेचारे तो मूक ओर अवोध मानव है।" अिसके वाद अुसी लेखमे आगे लिखते हुअे अिस प्रकार आलोचना, की गअी

" सहायता-केन्द्रोमे वडोको ३० तोला और वच्चोको १५ तोला अनाज पर रहना पडता है। अैसा करनेसे पहले वहाके सत्ताधारियोको डॉक्टरोकी तो सलाह लेनी थी कि क्या अितनेसे अनाज पर दिन भर मेहनत करनेवाला आदमी सचमुच गुजर कर सकता है? काम करनेवालोको पद्रह बीस दिन तक वेतन नही मिलता। अैसे लोग अपनी वचीखुची चीजे वेचकर भी कैसे गुजर करते होगे, अिसकी कल्पना ही की जा सकती है।

"श्री ठक्करके वताये अनुसार कुछ स्थानो पर हैजा फैल गया था, परतु वह समय रहते कावूमे आ गया।

"अिस रोगको वहा दुवारा न फैलने देना हो तो अफसरोको वीजापुरके भूखे लोगोके स्वास्थ्यकी अधिक चिन्ता रखनी होगी। दुर्भाग्यसे वे अिस दायित्वपूर्ण कामके लिअे अयोग्य सिद्ध हुअे है और मनुष्यके नाते अपने मानव-वधुओके प्रति कर्तव्यपालन करनेमे असफल रहे है।

"अिस प्रकारके कुशासन और कुप्रवध तथा लापरवाहीने सरकारकी साखको काफी हानि पहुचाअी है, अिसकी शायद सरकारको प्रतीति नही हुअी होगी। परतु जो लोग अिस जिलेका प्रवध कर रहे है, अुन्हे अेक वारगी दूर करनेमे ही अुसका भला है, यह वात अुसे समझ लेनी चाहिये।

"अन्य किसी भी देशमे यह स्थिति अेक क्षणके लिअे भी सहन नही की जा सकती। भारतमे तो दुनियामे सवसे अूचे वेतन लेनेवाले कर्मचारी है। भारतके लोगोसे यह कहा जाता है कि अिन कर्मचारियोको जो अूची तनखाहे दी जाती है, अुनमे यदि अेक पाअीकी भी कटौती की जायगी तो शासनकी कार्यक्षमताको धक्का लगेगा और सारा तत्र ताशके पत्तोकी तरह गिर पडेगा।

"अिस मामलेमे या तो सरकारके पास वीजापुरके अकाल-पीडितोको देने जितना अनाज अुपलब्ध नही अथवा वह लापरवाह है। अिन दोनो सूरतोमे वहाके अुच्चाधिकारी जिम्मेदार है और वे अिस अपराधसे वचकर निकल नही सकते।

"विचित्र वात तो यह है कि अन्य कर्मचारियोका खयाल रखनेवाले भले और दयालु वाअिसरॉयने महगाअीका मुकावला करनेके लिअे गवर्नरोको तो महगाअी भत्ते दिये है, परतु वीजापुरके अकाल-पीडितोके लिअे कोअी वन्दो-वस्त नही किया। अुन वेचारोसे आशा रखी जाती है कि अुन्हे जीवन कायम

रखनेके लिअे भी नाकाफी अनाजसे अपना गुजारा करना चाहिये। गवर्नर या अन्य जो लोग अिस प्रबन्धके लिअे जिम्मेदार है, अुन्हे परिस्थितिको जिस हद तक बिगडने नही देना चाहिये। परतु शायद ठक्कर साहबने 'मन ऑन दि स्पॉट' के जिस सिद्धान्तकी आलोचना की है, अुससे वे सहमत हो गये होंगे।'

बापाके बयानके बाद अखबारोंने अग्रलेखो और टिप्पणियो द्वारा आलोचनाओंकी जो वर्षा की, अुसने बबअी सरकारकी नीद अुडा दी। बम्बअीसे बीजापुर तक नौकरशाहीके चक्र घूमने लगे और सबसे पहले तो जिलेसे विवरण अिकट्ठे करके बापाके बयानसे अुग्र बने हुअे लोकमतको शान्त करनेके लिअे सरकारने अब तक सहायता-कार्यके लिअे क्या क्या किया, अिसका बापाके वक्तव्यसे भी अधिक लबा वक्तव्य तैयार करके सूचना-विभागकी तरफसे प्रकाशित किया गया।

अुसमे बताये अनुसार बम्बअी सरकारने अब तक ८५½ लाख रुपये कष्ट-निवारण कार्यके लिअे खर्च किये थे अथवा मजूर किये थे। जिनमे से ३०,४५,५०० रुपयेकी बडी रकम बीज और घास पर खर्च की गअी थी। १८ लाख रुपये कीमतसे भी सस्ते भाव पर अनाज बेचनेके लिअे खर्च किये गये थे, अित्यादि। अितने पर भी बापाने अनाजके बारेमे और मेडिकल स्टाफके बारेमे जो जो आलोचनाअे की थी, अुनके महत्त्वपूर्ण मुद्दोका कोअी जवाब नही दिया जा सकता था। अिसलिअे कही कही भूले स्वीकार की गअी थी अथवा वह बात ही अुडा दी गअी थी। परतु बापा सारा प्रश्न हाथमे लेनेके बाद अन्त तक जिस तत्परतासे अुसके पीछे पड रहे, अुसका नतीजा यह हुआ कि सरकारको बीजापुर जिलेमे राहत-कार्य पर अधिक ध्यान देना पडा।

अुस समय बम्बअीसे बीजापुर अकाल-निवारण-समितिमे बापाके साथी बबअी राज्यके वर्तमान शिक्षामत्री श्री दिनकरराय देसाअी काम करते थे। बापाके अकाल-कार्यके सिलसिलेमे अुन्होने कुछ सस्मरण लिखे है। वे भी बापाके तत्कालीन कार्य और कार्यपद्धति पर अच्छा प्रकाश डालते है। अिसलिअे अुनका थोडासा भाग हम यहा अुद्धृत करते है —

"ठक्करबापाके साथ बीजापुर अकाल-निवारण समितिके अेक सदस्यके तौर पर बापाके अधीन काम करनेका मुझे सौभाग्य मिला था। अिससे मुझे यह देखनेका मौका मिला कि सहायता-कार्यके सिलसिलेमे वे छोटी छोटी बातोकी भी कितनी चिन्ता रखते थे। अकालके क्षेत्रके बारेमे अुनकी जाच किन्ही अेक दो गावो या केन्द्रो तक ही मर्यादित नही रहती थी, वे अकाल-ग्रस्त विभागके सारे प्रदेशका दौरा लगाते और खुद देख-जाचकर अिसकी सावधानी रखते कि अेक अेक ब्यौरा सही है या नही। अगर यह असभव

होता तो दूसरोसे तथ्य अिकट्ठे करवा कर अिस बातका निश्चय कर लेते कि अुनके पास आअी हुअी जानकारी सही है या नही। वे साधारण बयानोसे कभी सतुष्ट नही होते थे, परतु आकडोसे सुसज्जित और निश्चित ब्यौरे चाहते थे। सच कहू तो वे सूक्ष्मसे सूक्ष्म ब्यौरोके सर्वेसर्वा थे।

"दिल्ली जैसे दूर स्थान पर रहते हुअे भी अकाल-पीडित लोगोके प्रति वे अपना फर्ज कभी भूलते नही थे। कष्ट-निवारण कार्यके प्रत्येक पहलू पर वे कैसी सावधानीपूर्ण टिप्पणी लिखते थे, यह मेरे नाम दिल्लीसे लिखे हुअे अुनके अेक पत्रमे देखनेको मिलता है। अुसमे अुन्होने लिखा था 'मै देखता हू कि नीचेके कामोके लिअे जो वेतन दिया जाता है, वह बहुत ही थोडा है। मोटे तौर पर हिसाब लगाये तो छ दिनके सप्ताहमे फी आदमी अेक रुपया मिलता है। और अेक ही मामलेमे अेक व्यक्तिको कुछ अधिक मिलता है। अिनमे से प्रत्येक मामलेमे मजदूरोको अितना कम वेतन किस लिअे मिला, अिसके कारण होने चाहिये। परतु अिस बारेमे गहरे जाकर प्रत्येक मामलेकी बारीकीसे जाच करनी पडेगी और हरअेकको कम वेतन क्यो दिया जाता है, अिसके कारण ढूढने पडेगे।'

"अेक अन्य पत्रमे अुन्होने अिस प्रकार लिखा था 'मै देख रहा हू कि १७ दलोमे से केवल चारको ही कमसे कम (minimum) वेतनसे कुछ अधिक मिला है और १३ दलोको अुससे भी कम मिला है। यह भी तभी हो सकता है जब वहाके मुख्य अिजीनियर पेअिसलेकी सूचनानुसार बढाअी हुअी दरोके मुताबिक वेतन दिया जाय और तुम्हारे कहे अनुसार ये नअी दरे भी अब अमलमे लायी जाती है। अैसा होनेका कारण तुम्हारे कथनानुसार यह है कि अकाल कानूनके मुताबिक अनुसूची अ, ब और स मे अुल्लिखित कार्य बहुत अूचा है और पेअिसलेने अुसमे २५ प्रतिशत कमी करने और अिस प्रकार वहाके कामको मद्रास अकाल निवारण कानूनकी पक्तिमे लानेकी सिफारिश की है। अिस तरह तुम्हारी बेल्लारी यात्रा बडी अुपयोगी साबित हुअी।' यह पत्र बताता है कि बापाका अकाल निवारण कानूनका ज्ञान कितना विशाल और स्पष्ट था। साथ ही यह अिस बातका नमूना है कि बापा अपने साथियोको कुछ बाते समझानेके लिअे पाठशालाके शिक्षककी भाति कैसा व्यवहार करते थे।

"ठक्करबापा स्वय अिजीनियर थे और अुनका यह अिजीनियरीका ज्ञान अकाल-निवारणके कामोकी जाच करनेमे बडा अुपयोगी और कीमती साबित होता था। कामकी दिन-ब-दिन प्रगति जाननेकी अुनकी अुत्कण्ठा अपार और असीम थी। अुदाहरणके लिअे, जब वे दिल्लीमे होते तब अुनकी

यह हिदायत होती थी कि प्रत्येक मरकारी राहत-केन्द्रमे काम करनेवाले मजदूरोकी निश्चित मस्या हर हफ्ते अुन्हे बताअी जाय। अिस सबबमे अेक पत्रमे अुन्होने लिखा था कि मजदूरोकी अिस सख्याके नक्शे भरकर भेजनेका काम तुम्हे धार्मिक क्रिया-विधिकी तरह ही नियमिततासे करना है। अुनकी सूचना थी कि अिस सबधका तार सप्ताहके अमुक दिन अुन्हें मिलना ही चाहिये। यदि कोअी बार निश्चित किये हुअे दिन अुन्हे तार न मिलता तो अुन्हे चैन न पडता।

"ठक्करबापा कअी बार साथियोकी तुच्छ भूलोके लिअे भी अुन्हे भारी अुलहना देते। फिर भी अिससे किसीको बुरा न लगता और न किसीके मनमे कोअी गलतफहमी पैदा होती। क्योकि वे जानते थे कि अिस अुलहनेके पीछे अेक महान प्रेमपूर्ण आत्मा विद्यमान है। असलमे तो यह गुस्सा या डाट-फटकार बापाकी दु खी, निराधार और पीडित लोगोके प्रति रही भक्ति और सच्चाअीसे पैदा होती थी। अिस भक्ति और सच्चाअीके कारण वे गरीबोके लिअे सतत काम करते थे। मैंने अुन्हे पूरी नीद या आराम लिये बिना अिन अभागे लोगोके लिअे बीस बीस घटे सतत काम करते देखा है। और वह भी ७४ वर्षकी पकी अुम्रमे। जवान भी अुनके सामने शरम महसूस करते थे, क्योकि सतत काम करनेके मामलेमे वे कभी बापाकी बराबरी नही कर सकते थे, बल्कि अुनसे कही पीछे रहते थे।"

१९४३ मे भारतके पश्चिमी सिरेके अिस जिलेमे अकालकी यह स्थिति थी, तो पूर्वी सिरेके बगाल प्रदेशमे तो बीजापुरको भी भुला देनेवाली कही बदतर हालत थी। क्योकि वहा महायुद्धकी अेक ज्वाला ब्रह्मदेशकी ओरसे आकर बगाल और आसामके पूर्वी सिरेको स्पर्श कर चुकी थी। अेशियाके 'अुगते सूर्यके देश' जापानकी बढती हुअी शक्तिको देखकर ब्रिटिश सत्ता घबरा गअी थी। और अिसीलिअे अुसने अगस्त १९४२ के बाद बगाल और अुडीसा दोनोमे निषेधात्मक नीति (डिनायल पॉलिसी) अख्तियार की थी। सरकारकी अिस नीति और अक्तूबर १९४२ मे आये हुअे समुद्री तूफानके परिणामस्वरूप बगालके मिदनापुर जिलेके और अुडीसाके कटक और बालेश्वर जिलोके समुद्र तटके गावोकी दशा अत्यत करुण बन गअी थी। तभीसे बापाका ध्यान अिस अभागे प्रान्त और अुसकी कुदरती आफतो और गलत शासन-नीतिके कारण पैदा हुअे दु खदर्दोके प्रति आकर्षित हुआ था। अुस समय गाधीजी, जवाहरलालजी, सरदार वल्लभभाअी पटेल वगैरा देशनेता जेलमे थे। और गाधीजीने अग्रेजी शासनकर्ताओके खिलाफ 'क्विट अिडिया' का जो आन्दोलन शुरु किया था, अुसे दबा देनेके लिअे सरकारने

मिदनापुर जिलेमे फौज भेजकर आम लोगो पर भी भयकर जुल्म और अत्याचार किये थे। अिस पर अक्तूबरमे समुद्री तूफान आ गया। हजारो आदमी मौतके घाट अुतर गये। जो जिन्दे रहे अुनकी स्थिति बडी विषम हो गअी। अन्न-वस्त्र और पानीकी जगह जगह तगी होने लगी। लोग बिलकुल निराश हो गये। अुस समय ठक्करबापा ही अेक अैसे गैरबगाली व्यक्ति थे, जो नौकरशाहीका डर न रखकर मिदनापुर जिलेके अुन भयग्रस्त और निराधार बने हुअे हजारो नर-नारियोकी मददको दौडे थे। अुन्होने अपने अेक खास साथी श्री अेल० अेन० रावको मिदनापुर जिलेकी परिस्थिति आखो देखने और वहा कष्ट-निवारण कार्यकी कितनी आवश्यकता है, अिसका निश्चित अदाज लगानेको भेजा था। अिस साथीने बापाके आदेशानुसार मिदनापुर जिलेमे और विशेषत तमलुक कोन्टाअी परगनेमे खूब भ्रमण किया। गाव गाव पैदल चलकर वे लोगोसे मिले थे और परिस्थितिको स्वय देखनेके बाद अुसका विवरण तैयार किया था। अिस विवरणमे से जरूरी तथ्य छाटकर वक्तव्यके रूपमे बापाने अखबारोमे भेजे थे। परतु अुस समय ब्रिटिश शासकोके आर्डिनेसोका राज्य था, अिसलिअे सारा हाल अखबार भी खुले रूपमे नही छाप सकते थे। फिर भी दिल्लीके 'हिन्दुस्तान टाअिम्स' ने बापाके साथके सबधके कारण तथा मानवताकी भावनासे प्रेरित होकर सरकारकी काट-छाटसे बचे हुअे अुस लम्बे वक्तव्यका भाग लगभग चार कालममे छापा था और अुसकी भूमिकामे सम्पादक महोदयने अिस प्रकार लिखा था —

"अक्तूबरकी १६ तारीखको बगालमे आये हुअे समुद्री तूफानोके बाद मिदनापुरमे जो स्थिति फैली हुअी है और अिस समय वहा जो कष्ट-निवारण कार्य चल रहा है, अुसका भारत-सेवक-समाजके श्री अेल० अेन० राव द्वारा तैयार किया हुआ विवरण श्री अमृतलाल ठक्करने प्रकाशनके लिअे हमे भेजा है। अुसके साथ जुडे हुअे पत्रमे श्री ठक्कर लिखते है कि

"'मेरे सहायक श्री अेल० अेन० रावको मिदनापुर जिलेमे हो रहे कष्ट-निवारण कार्यको देखनेके लिअे चार सप्ताहके दौरे पर भेजा गया था। यह लेख अुन्हे दौरेमे जो अनुभव हुआ अुसके आधार पर लिखा गया है। मिदनापुर जिलेने अुत्तर भारतके लोगोका ध्यान जितना चाहिये अुतना नही खीचा। अिसलिअे मै यह देखनेको बडा आतुर हू कि यह लेख जैसे भी सभव हो जल्दी प्रकाशित हो। यद्यपि देर बहुत हो गअी है, फिर भी कभी न छपनेसे देरमे छपना भी अच्छा ही है।'"

अिस लेखमे श्री रावने १९४३ के अक्तूबर मासमे विहार और क्वेटाको भुला देनेवाला समुद्री तूफान कैसे आया, अुसमे ४०,००० आदमी और लाखो पशु कैसे डूब गये और मर गये तथा समुद्र-तटकी छ मील चौडी और पचास मील लम्बी पट्टी पर वसे हुअे असख्य गावो और खेतोकी चावलकी खडी फसल कैसे नष्ट हो गअी, अिसका वर्णन करनेके वाद जापानी हमलेके भयके कारण सरकार द्वारा अिस समाचारको तीन सप्ताह तक दवाये रखनेकी कडी आलोचना की और रामकृष्ण मिशन, मारवाडी रिलीफ सोसायटी तथा हिन्दू सभाके कार्यकी प्रशसा करके सरकारकी शिथिल नीति और अुसके द्वारा वताअी गअी लापरवाहीकी निन्दा की और यह वताया कि अुसके शुरू किये हुअे सहायता-कार्य कितने अधूरे है और अितने वडे कामको सभालनेके लिअे क्या क्या करना चाहिये। सारे प्रश्नकी समीक्षा करते हुअे अुन्होने लिखा कि, "मिदनापुरके लोग अिस समय अत्यन्त नाजुक स्थितिमे होकर गुजर रहे है। परतु अुनकी कौन परवाह करता है? अिस महासकटमे फसे हुअे हजारोका क्रन्दन कोअी नही सुनता। दुर्भाग्यसे नेता सव जेलके सीखचोमे वन्द है। अीश्वर अुन्हे अिस दुःखसे अुवरनेमे सहायता दे।"

परन्तु यह तो १९४३ की जनवरीकी वात हुअी। अिसके वाद परिस्थिति अुत्तरोत्तर विगडती गअी।

वगालमे १९४२ मे समुद्री तूफान आया अुसके पहले चावलका वगाली मनका भाव रु० ३–८–० था। वह वढकर रु० ७–८–० हो गया। अुसके वाद जैसे जैसे दिन और महीने वीतने लगे, वैसे वैसे यह भाव वढता गया और दस, पद्रह, वीस, तीस, चालीस, अिस प्रकार आगे वढते वढते रु० ७०–८० मन तक पहुच गया और पूर्वी वगालके कुछ भागोमे तो वह १०० का आकडा भी पार कर गया।

अिस प्रकार चावलका भाव अेकाअेक वढनेका कारण वगाल सरकारकी वडे पैमाने पर खरीद थी। अुस समयकी प्रान्तीय सरकारने २० लाख रुपयेकी रकम चावल खरीदनेको निकाली थी और जिस भाव मिले अुसी भाव चावल जमा करनेको अुसके आदमी गाव-गाव घूमने लगे थे। अुस समयके मन्त्रियोके साथ सम्वध रखनेवाली अिस्पहानी कपनीने अुस वक्त कैसा कुत्सित काम किया था, यह अितिहास प्रसिद्ध वात है।

चावलके भाव अूचे चढनेके कारण गरीव आदमी तो क्या, मध्यमवर्गके ३० रुपयेसे १२५-१५० तक कमानेवाले हजारो मनुष्य भी निराधार

स्थितिमे आ फसे । ८०-१०० रुपये मनके भावके चावल ये लोग भी कैसे खरीद सकते थे ? परिणाम यह हुआ कि खेत अुजड गये। गाव नष्ट होने लगे। लोगोके पास जो कुछ था — गहना-गाठा, वर्तन-भाडे सव वेचकर और चावल खरीदकर वे पेट पालने लगे। परन्तु यह सव कितने दिन चलता ? अन्तमे मिदनापुर ओर चौवीस परगनेके देहातके लोग अपने मिट्टीके झोपडे छोडकर कुटुम्वके कुटुम्व कलकत्तेकी ओर चल पडे। मार्गमे कितने ही मर गये, कितने ही वीमार हो गये । अुन्हे छोडकर दूसरे अकाल-पीडित लोग कलकत्ते चले गये और राजमार्गो पर या पेडोकी छाया तले डेरे-तम्वू लगाकर भीख मागने लगे । जुलाअीके अन्तमें और अगस्तके आरभमे ही अिन कगालोमे से भुखमरीके कारण कितने ही आदमी रास्तेमे मर गये और दिन-दिन मरनेवालोकी सख्या वढने लगी । म्युनिसिपैलिटी भी अिन मुर्दोका निपटारा करनेके काममे सफल नही हुअी । कलकत्तेके अग्रेजी और वगाली पत्र ‘स्टेट्समैन’, ‘अमृतवाजार पत्रिका’ वगैराने अिन कगालोकी तस्वीरे छाप कर सरकारकी लापरवाहीके वारेमे अुग्र आलोचनाअे की । अिन चित्रोने वगालमे ही नही हिन्दुस्तान भरमे खलवली मचा दी ।

अैसे समय ठक्करवापा जैसे मानव-सेवक ओर अकाल-पीडितोके सदाके साथी भला कैसे चुप बैठ सकते थे ? ‘स्टेट्समैन’ पत्रमे अिस विषयके विवरण छपनेसे पहले ही वे कभीके वगाल पहुच गये थे और मिदनापुर जिले और चौवीस परगनेमे तथा अुडीसाके कुछ भागोमे कष्ट-निवारण-ममितिया स्थापित करके अुनके द्वारा अुन्होने काम शुरु कर दिया था । थोडे समय वगालमे तो थोडे समय अुडीसामे, थोडे समय वीजापुरमे तो थोडे समय त्रावण-कोरमे, थोडे समय मलावारके किनारे पर तो थोडे समय मद्रासके दूसरे जिलोमे घूम घूम कर और अकाल-पीडितोके वीचमे रहकर वे परिस्थितिका अध्ययन करते थे और वयान पर वयान प्रकागित करके लोगोके दिलोको जगा रहे थे । भारतके अिन दु खी निराधारोके लिअे रुपया, अनाज और कपडेकी भीख मागते थे और जो कुछ सहायता मिलती अुसमे से अलग अलग प्रान्तोमे सकटके हिसाबसे वटवारा करके रुपया और दूसरी मदद भेजते थे। अिनमे भी वगाल और अुडीसाके दु ख देखकर अुनका हृदय रो अुठता था। वगालमे भुखमरीके कारण मा-वाप अपने वच्चोको दो दो रुपयोमे वेचते थे । मा अपने वेटेको छोड देती थी । पति पत्नीको, पत्नी पतिको, जवान वेटे वापको छोडकर अनाजकी खोजमे निकल पडते थे। और कितनी ही वहनोके पेटकी ज्वाला गान्त करनेके लिअे अपनी लाज वेचनेकी घटनाअे भी सामने आअी थी। ठक्करवापा अप्रैलसे लगाकर ठेठ दिसवर तक और

१९४४ के पहले मात आठ महीनो तक कष्ट-निवारणका काम पूरी शक्ति लगाकर करते रहे।

अेक वार वे श्रीमती रामेश्वरी नेहरूको लेकर वगाल और अुडीसाके अकाल-पीडित प्रदेशोमे घूम आये। अिसके वाद दिल्लीकी सभामे श्रीमती रामेश्वरी नेहरु और वापाने भापण देते हुअे वहाकी करुण परिस्थितिका वयान निम्न शब्दोमे किया था

"वगालकी हालत आखो देखे विना कोअी भी आदमी वहाकी परिस्थितिकी सही कल्पना नही कर सकता। गावके गाव अुजाड और वीरान हो गये है, मनुष्योका तो वहा नाम-निशान भी नही। हजारोकी सख्यामे लोग घरवार छोडकर शहरोमे आ गये है। वालक अपने माता-पितासे जुदा हो गये है और स्त्रिया अपने पतियोसे। सवको अपना अपना पेट भरनेकी फिक्र पडी है और अेक जगहसे दूसरी जगह भटक रहे है। अुनके शरीरोमे केवल हड्डी-पसली वाकी रही है। स्त्रियोके पास अपनी लाज ढकनेको भी पूरा कपडा नही। वच्चे गदी नालियोमे वहनेवाले साग या फलोके छिलको पर झपट कर लडते नजर आते है। सडको और वाजारोमे जगह जगह मुर्दे पडे रहते है। अुन्हे अुठाकर ले जानेवाला कोअी नही है। अिसलिअे कुत्ते और गिद्ध लाशोको खा जाते है। मरते हुअे वालकोको कभी कभी आखिरी सास लेनेसे पहले ही कुत्ते पैर पकडकर घसीट ले जाते है।"

अुडीसा और मलावारके दुखोका वर्णन करते हुअे वापाने कहा कि, "भारतकी गरीवीका नगा चित्र देखना हो तो अुडीसा जाअिये। वहा पिछले वर्षमे ही अकाल पडा हुआ है।"

वापाके अिस पुरुषार्थ और प्रचारके परिणामस्वरूप जगह जगह पर लोकमत जाग्रत हुआ। 'हिन्दुस्तान टाअिम्स' 'जन्मभूमि', 'गुजरात समाचार' और अन्य अखवारोने भूखे वगालकी मददके लिअे कोष खोले और अुनमे लाखोकी रकम भी जमा हुअी। यह सव परिणाम लानेमे वापाका काफी वडा हाथ था।

वगालके अकालकी तीव्रता वढते ही अुन्होने 'भारतव्यापी सकट देशके लिअे आअी हुअी कसोटीकी घडी' शीर्षकसे अेक वक्तव्य सितवर मासके पहले सप्ताहमे प्रकाशित किया था। अुसमे अुन्होने वगालके सिवाय अुडीसा, अुत्तर मद्रास, मलावार, अजमेर, मेवाड वगैरा प्रदेशोकी हालतका अिस प्रकार वर्णन किया था

"वगालके सकट—अथवा कलकत्तेके सकटने आम लोगोका काफी ध्यान आकर्षित किया है। परन्तु अिस वडे शहरकी सीमाके अुस पार

बगालके ग्राम-प्रदेशोमें लाखो मूक मानवप्राणी असह्य और अकथनीय दु ख भोग रहे हैं -- जो अभी तक प्रकाशमे नही आये। बगालके जिलोके देहाती प्रदेशके दु ख कलकत्तेके दु खोसे कअी गुने बढकर है। बगालके मुख्यमत्रीने अपील करते हुअे नीचे लिखे जो शब्द काममे लिये है, अुनकी तहमे खास अर्थ समाया हुआ है। क्योकि सावधानीपूर्वक चुने हुअे अुन शब्दोके पीछे आसुओकी करुण कथा छुपी हुअी है। जैसा मुख्यमत्रीने कहा है, 'अिसके सिवाय दूसरे भी कुछ अिलाके अैसे है, जिन्हे मददकी बहुत बडी आवश्यकता है। परन्तु अुन अिलाकोकी तरफ लोगोका अभी तक खास ध्यान गया नही दिखता। अिस बारेमे अुनकी स्थिति और जरूरते कितनी है, अिसका निर्णय सरकार स्वय ही अुत्तम रूपमे कर सकती है।' मिदनापुरके किनारेकी पट्टी पर भुखमरीके कारण सैकडो मृत्युअे हुअी है। परन्तु अैसा नही जान पडता कि अिस प्रदेशसे बाहरके लोगोको अिसका पता भी लगा हो।

"जब मै जुलाअीके अतिम सप्ताहमे अुडीसा प्रान्तके बालेश्वर जिलेके अुत्तरी विभागमे सफर कर रहा था, तब मौतके किनारे खडे हुअे अकाल-पीडितोके बडे बडे जमघट देखकर मैने अपनी आखे अक्षरश बन्द कर ली थी। यो तो मेरी आखे अकाल-पीडितोको देखनेकी अभ्यस्त हो गअी है, परन्तु वह करुण दृश्य अितना कपा देनेवाला था कि मुझसे देखा नही जा सका। वे अभागे अकाल-पीडित लोग अैसे लगते थे जैसे कोअी चलते-फिरते भूत-प्रेत हो, और देखनेवालोके दिलमे डर पैदा करते थे। भुखमरीके कारण मृत्यु होनेकी बात सबसे पहले स्वीकार करनेवाली अुडीसाकी सरकार थी, अलबत्ता अुसने यह अिकरार काफी देरसे किया था। अुत्तर अुडीसाके अिलाकेसे बाहरके लोग अिन अकाल-पीडित नर-नारियो और बालकोके विषयमे बहुत कम जानते थे। परन्तु अुडीसाके दक्षिण भागमे अकेले गजाम जैसे छोटे जिलेमे ही भुखमरीके कारण २०० मृत्युअे हुअी है, यह बात कोअी नही जानता था। अुस जिलेके कलेक्टरने खुद स्वीकार किया था कि भुखमरीके कारण सौसे भी ज्यादा मौते हुअी है। साथ ही, अगस्तके पहले सप्ताहमे पानीकी जो बाढे आअी, अुनसे लगभग दो जिलोकी अच्छीसे अच्छी धानकी फसल नष्ट हो गअी।

"नीचे मद्रास प्रान्तमे बेलारी, अनन्तपुर और कर्नूल जिलोमे, जहा अकाल समय समय पर पडते ही रहते है, अिस साल भी सख्त अकाल पडा है। अिस पर भी लडाअीके कारण असाधारण महगाअी बढनेसे स्थिति और भी अुग्र बन गअी है। अुधर अिस वर्ष भी चौमासा निष्फल चला जानेसे अुपरोक्त तीन जिलोमे से पहले दो अर्थात् बेलारी और अनन्त-

पुर जिलेको सख्त और भयकर अकालका सामना करना पडेगा। वहा सरकारके खोले हुअे कष्ट-निवारण केन्द्रो पर लगभग अठाअी लाख आदमी काम करते है। वे दिन भर कडी मेहनत करते है, तव कही मुश्किलसे प्राण टिकाये रखने लायक पैसे पाते है।

"मलावार हमारे यहा दिल्लीके लोगोके लिअे वहुत ज्यादा दूरका प्रदेश माना जाता है, अिसलिअे अुमके दु ख प्रकाशमे नही आये। परन्तु अुसका वर्तमान सकट वगालके देहाती अिलाकेके वरावर ही तीव्र है। हैजेमे सैकडो आदमियोकी मोते हुअी है, जिमके परिणामस्वरूप सैकडो वच्चे निराधार हो गये है।

"अजमेर और मेवाड भी भारी कुदरती आफतोके शिकार वने है। लोगो पर ये आफते वहुत कुसमयमे आ पडी है। मुझे वहा जानेका अभी तक अवसर नही मिला है, परन्तु जो विवरण मैंने देखे है अुनसे वहाके लोगोकी जरूरत वहुत वडी मालूम होती है।"

भारतके अिन तमाम अलग अलग प्रान्तोके अकाल-सकटके व्यौरे देकर अन्तमे अुन्होंने भारत भरके लोगोसे अपील करते हुअे कहा कि, "चलिये, हम सव मौकेको पहचान कर अुदात्त भावनासे काममे लगे। चलिये, हमारे अिन भूखो मरते लाखो-करोडो देशवधुओंकी सहायता करनेके लिअे हम दौड जाय।"

अिसीके साथ ठक्करवापाका 'टाअिम्स ऑफ अिडिया' के सम्पादकको लिखा हुआ पत्र, जो 'टाअिम्स' मे ४ मअीको प्रकाशित हुआ था, और 'मॉडर्न रिव्यु' के सम्पादक महोदयने अुसका अुद्धरण देकर अुस पर जो टिप्पणी की थी वह भी देख ले। कारण, वगालके ग्रामीण प्रदेशमे अकालके कारण जो करुण स्थिति फैली हुअी थी, अुसके वारेमे वापा कितनी व्यौरे-वार जानकारी रखते थे, अुसकी कुछ कल्पना अुससे हमे होती है।

'मॉडर्न रिव्यू' के सम्पादक महोदयने अिस प्रकार टिप्पणी लिखी थी "कलकत्तेमे भयकर परिस्थिति तो है ही। परन्तु वगालके जिलोमे अुससे भी ज्यादा खराव हालत है। मिदनापुर जिलेको अभी तक थोडी वहुत मदद मिल रही है, यद्यपि दु खकी वात है कि वह अुसके सकटके हिसावसे वहुत कम है। अितने पर भी वहाके लोगोके दु ख वडे हृदय-विदारक है। यह वात 'टाअिम्स ऑफ अिडिया' मे ४ मअी, १९४३ को प्रकाशित भारत-सेवक-समाजके श्री ठक्करका निम्नलिखित पत्र वता देता है ,

"'मैंने 'अे फूड मेम्वर' शीर्षक आपका पत्र वडी दिलचस्पीके साथ पढा है।

"'मै कल ही कलकत्तेसे मिदनापुर और बालेश्वर जिलोका सफर करके लौटा हू। वहा यह देखने गया था कि कष्ट-निवारण कार्य कितनी प्रगति कर रहे है।

"'देशके अिन पूर्वी भागके अिलाकोमे अकालके कारण कैसी करुण स्थिति फैली हुअी है, वहाके नीचे दर्जेके लोगोमे भुखमरी कितनी व्यापक हो गअी है और अिस कारण वहा मृत्युअे कितनी तेजीसे और बडी मात्रामें हो रही है, अिसकी बम्बअीके लोगोको कल्पना भी नही हो सकती। यहा बम्बअीके लोगोकी छोटी छोटी शिकायते होने पर भी अुन्हे और अुपनगरोमे रहनेवालोको राशनकी सुन्दर व्यवस्था द्वारा अनाज अच्छी तरह मिल जाता है, जब कि कलकत्तेमे अैसा राशनिग नही है जिसे अच्छा कहा जा सके। और हजारो तथा लाखो लोग आसपासके प्रदेशसे आकर कलकत्तेमे जमा हो रहे है और अनाजकी तलाशमे अिधर अुधर भटक रहे है। कलकत्ता कारपोरेशनके सदस्योने खुले रूपमे अैलान किया है कि आसपासके जिलोके गावोसे कलकत्तेमे आये हुअे हजारो अकालग्रस्त लोगोमे से बहुत लोग भुखमरीके कारण कलकत्तेकी गलियोमे मर गये है। चटगाव जिलेमें सरकारने मुफ्त भोजनालय शुरू किये है, जहा अकाल-पीडितोको मुफ्त खिचडी दी जाती है। और कलकत्तेके सार्वजनिक सेवाकी भावनावाले लोग पचास हजार गरीब और मध्यम श्रेणीके लोगोको खिलानेके लिअे मुफ्त राहत-केन्द्र और सस्ते दरोके भोजनालय तुरत शुरू करेगे। परन्तु जिलोके गावोमें लोगोकी हालत अिससे भी कही खराब है, क्योकि वहा रुपयेके सेर डेढ सेर चावल मुश्किलसे मिलते है। गरीब लोगोके लिअे बहुत कम, लगभग नहीके बराबर, भोजन पर गुजर करना असभव हो गया है। मिदनापुर जिलेके कोण्टाअी परगनेकी दशा बहुत ही विषम हो गअी है। १९४२ के अक्तूबरमे वहा समुद्री तूफानने भयकर बरबादी की। अुसके बाद भी अुस पर दु खोकी परम्परा जारी रही। आज सरकार वहा ७०,००० मनुष्योको मुफ्त अन्नदान दे रही है। अुनमे से प्रौढ आयुके आदमियोको रोज केवल २४ तोला अनाज देकर राहत पहुचा रही है। फिर भी कोण्टाअी शहरमे और गावोमे भुखमरीके कारण बहुत-सी मृत्युअे होती है। अुत्तर बालेश्वर जिलेके अदरूनी भागोमे ११० मीलकी नाव और पालकीमे बैठकर की हुअी यात्रामे मैने अस्थि-पजर बने हुअे सैकडो और हजारो नगे भूखे बच्चो और लडकोको देखा। अिन गावोमे भुखमरी और हैजेके कारण होनेवाली मृत्युअे अत्यत साधारण बात हो गअी है।

"'वहाकी अन्न-परिस्थिति तेजीसे बिगडती जा रही है। और यदि अिसके अुपायके लिअे तत्काल कोअी सख्त कार्रवाअी नही की गअी, तो

अिस प्रदेशमें भुखमरीके कारण होनेवाली मृत्युओकी सख्या बहुत बढ जायगी। केवल थोडेसे अुद्योग-प्रधान शहरोकी ही मभाल रखनेसे परिस्थिति नही सुधर सकेगी। केन्द्रीय सरकारने जैसे भारतकी रक्षाकी जिम्मेदारी अपने हाथमे ली है, वैसे ही और अुसी पैमाने पर सारे देशको अन्न मुहैया करनेकी जिम्मेदारी भी अुसे अपने ही हाथमे ले लेनी चाहिये। और अुम पर देशकी रक्षाके अेक अगके रूपमे ही अमल करना चाहिये। अिसके वजाय वह कुछ अधिक अन्नोत्पादक प्रान्तोकी दया पर गुजर करनेका विचार करके और अुन पर आधार रखकर हाथ वाधे वैठी रहेगी, तो अेक महा भयकर आफत देश पर आ पडेगी। वगालके धारासभाके मेवर समस्त वगालको अकाल-ग्रस्त प्रदेश घोषित करनेके लिअे जो माग कर रहे है और अुसके लिअे जो पुकार मचा रहे है, वह विलकुल न्याय्य ओर अुचित है। यदि देशके कुछ भागोमे चावल ८ से १५ रुपये मनके भावसे विकते हो और वगालमे वही चावल ३५ से ४० रुपये मनके हिमावसे विकते हो, तो स्पष्ट है कि देशके यातायात और प्रवधमें कही न कही गभीर भूल हो रही हे।'"

अिस प्रकार जव जव जरूरत पडी तव तव वापाने वक्तव्य प्रकाशित करके, अधिकारियोके साथ पत्रव्यवहार करके, अखवारोमे विशेप लेख लिखकर वगालके सकटको सतत जनताकी नजरोके सामने रखा और सरकारी तथा गैरसरकारी कष्ट-निवारण कार्योको चावुक लगा कर गति दी। वगाल, मलावार, वीजापुर, राजस्थान, त्रिवेन्द्रम्, वगैरा प्रदेशोमे तो अुन्होने क्षुधा-पीडितोके लिअे काम किया ही, लेकिन अिन सवमे अभागे अुडीसा प्रान्तको अकालके पजेसे वचा लेनेके लिअे अुन्होने जो प्रवास किये अुन्हे अुडीसाके लोग कभी नही भूलेगे।

अुडीसाके दौरेमे अुन्होने देखा कि अुडीसाका अकाल वगालका छोटा सस्करण ही है। अुन्होने देखा कि अन्नके भावोके कारण अुडीसाके लोग भी वगालके लोगोकी तरह ही धीरे धीरे मृत्युकी ओर जा रहे है और कुछ तो जा भी चुके है। तव अुनसे रहा नही गया। वम्वअी आकर 'जन्मभूमि' और कुछ अन्य दैनिक पत्रोमें अेक करुणासे भरपूर वक्तव्य जारी किया और अुसमे अुडीसाके लोग अकालके सकटमे कैसे फम गये है, अिसका विस्तृत वर्णन देकर लिखा

"वगालमे अितने वडे विस्तारमे अकालका गहरा असर है कि अुसके सामने अुडीसा प्रान्तके दुख छिप-से गये है। वगालके लोगोके पास 'अमृत-वाजार' और 'स्टेट्समैन' जैसे प्रवल समाचारपत्र है। डॉ० श्यामाप्रसाद मुकर्जी जैसे महान नेता है, जिनके कारण वगालके दुखोकी पुकार दूर दूर

तक सुनाओी दी है। परन्तु वेचारे गरीब अुडीसाका कौन है? वगालकी रणभेरी जहा वज रही हो, वहा अुडीसाकी तूती कौन सुने? फिर भी अुडीसाके अपने दौरेमे खास तौर पर कटक, पुरी और वालेश्वर जिलेमे समुद्र तटके गावोमे मैंने जो कुछ देखा है, अुस परसे कहता हू कि अुडीसाका अकाल-सकट वगाल जैसा ही तीव्र है। वहा भुखमरी भी वगाल जैसी ही भयकर है। यह वात सही है कि वगाल जितने विस्तारमे वह फैला नही है, परन्तु अिससे अुसकी तीव्रता घटती नही। आज वगालकी तरफ धन, जन वगैराकी सहायताका जो प्रवाह वह रहा है, अुसे अिस गरीव, कगाल और मूक प्रान्तकी ओर भी मोडनेकी जरूरत है। और तभी हम भुखमरीमे फसे हुअे हमारे लाखो लोगोको राहत पहुचा सकेगे और मृत्युकी ओर वहते हुअे जनप्रवाहको रोक कर अुसे वचा सकेगे।"

बापाके अिन वयानोका गुजरातमे काफी असर हुआ था। और वम्वअी तथा गुजरातके कअी अखवारो और मजदूर सघ जैसी सस्थाओने हजारो रुपयेके चदे अिकट्ठे करके अुनके द्वारा वगाल और अुडीसा दोनोको मदद पहुचाअी थी।

अिसके अलावा वापाके वयानोने प्रान्तीय सरकार पर भी अच्छा असर किया था। अुस समयके अुडीसाके मुख्यमत्री पार्लकेमेडीके महाराजा अुडीसाकी प्रजाको भूखो मरती छोडकर घुडदौडकी वाजिया लगानेमे समय विता रहे थे। अुन्हे भी लोकमत अुग्र हो जानेसे अुडीसामे वापस जाना पडा और जो पहले मुक्त व्यापारके समर्थन करनेवाले वक्तव्य निकालकर अुडीसाका चावल वाहर निकालनेमे कारण वने हुअे थे, अुन्हीको परिस्थितिका वास्तविक चित्र पेश करनेको मजवूर होना पडा और सार्वजनिक वक्तव्यमे ठक्करवापाके प्रयत्नोको अजलि देकर अुनसे गरीव अुडीसाकी मददको दौडनेके लिअे सार्वजनिक अपील भी करनी पडी थी। परन्तु यह सव होनेसे पहले तो अुडीसामे भुखमरी और अुससे पैदा हुअे रोगोके कारण लगभग २५,००० स्त्री-पुरुष और वच्चे मौतके शिकार हो चुके थे। सरकारके नियुक्त किये हूअे अकाल जाच सम्वधी वुडहेड कमीशनका विवरण भी अिस सचाअीका समर्थन करता है।

अुस समय अुडीसाके समुद्र-तटके गावो और तालुको और जिलोके शहरोकी गलियोमे अकाल-पीडित लोगोकी लाशे पडी मिलती थी। गिद्ध और कुत्ते तथा गीदड अिन मुर्दोको नोचते नजर आते थे। भूख और रोगके कारण कितने ही मनुष्य पागल जैसे वन गये थे और मासपेशियोके अभावमे केवल हाडचामके पुतले वने कअी स्त्री-पुरुष सर्वथा नग्न स्थितिमे

भटकते और दो-चार दिनमे मरते नजर आते थे । देहातकी हालत तो और भी भयानक थी । कअी गावोके वाहर क्षुधा-पीटित लोगोकी हड्डियो और खोपडियोके ढेर भी दिखाअी देते थे।

वापा अिन सव प्रदेशोमे नावमे वैठ कर और पैदल चलकर घूमे थे और अकालके ये करुण और भयानक दृश्य देखकर अुनकी आखोमे आसू आ जाते थे । परन्तु हृदय कठोर करके वे काममे लगे रहते थे । यही ध्यान रखते कि अिन निराधार लोगोकी मदद कैमे की जा सकती है ।

१९४३-४४ की अवधिमे अुडीसामे जिन जिन सार्वजनिक सम्थाओकी तरफमे कष्ट-निवारण कार्य किये गये, अुनमे अुडीसा कष्ट-निवारण समिति सवसे प्रमुख सस्था थी और श्री ठक्करवापा अुमके अध्यक्ष थे । यह अध्यक्षीय कर्तव्य पालन करनेके लिअे अकालके दिनोमे लगभग दो वार वे अुडीसामे लम्वे अर्से तक घूमे थे और राहत-कार्यका मगठन किया था। लोगोसे मिले हुअे रुपयोसे चावल-खिचडी वगैरा अन्न और वस्त्र और कही कही जरूरतके लायक नकद रकम भी अकाल-पीडितो, वीमारो और विधवाओको दी जाती थी । वापा अिसका वरावर ध्यान रखते थे कि यह मदद योग्य मनुष्योको अुचित रूपमे मिल जाती है या नही और अुन प्रदेशोमे स्वय घूम कर सहायता-कार्यका निरीक्षण करते थे । कभी कभी तो खुद भी सहायताका अनाज वाटने लगते थे ।

अिस दौरेके दिनोमे अुन्होने रात-दिन देखे विना काम किया । १९४३ मे अुनके मातहत काम करनेका जिन्हे मौका मिला था, वे कटकके सेठ मुन्दरदासके पुत्र अुस समय वापाके काम पर काफी प्रकाश डालते है। अुन्होने कहा था

"वापा सुवह ही जल्दी अुठ जाते और शौचादिसे निपट कर प्रार्थनाके वाद काममे लग जाते। दिन भर सहायताका धान वाटते, अकाल-पीडितोको व्यवस्थित ढगसे विठाने और अुन्हे अेकके वाद अेक वारी वारीसे सहायताकी चीज वाटी जाय, यह सव देखनेमे सारा समय विताते। खानेमे भी अिस कारण काफी देर हो जाती। अिस समय वापा काममे अितने अधिक डूवे हुअे रहते कि वहुत वार वे नीद और आहार दोनो छोड देते । हम भी अुनके साथ सुवहमे गाम तक काम करके थक कर लोथ-पोथ हो जाते और आखोमे नीद अितनी भर जाती कि अभी विस्तर पर पड कर सो जाय। परन्तु वापा तो अुस समय दिन भरमे वाटे गये अनाज, कपटो वगराकी सूचिया मिलाते, हिसाव जोडते और जोड-वाकी करते थे।

"अेक बार अुडीसाके भीतरी गावोमे अिस प्रकार काम करते करते रातके लगभग ग्यारह बज गये थे। हम खूब थक गये थे, अिसलिअे सोनेकी तैयारी करने लगे। अितनेमे तो बापाने अेक नया ही काम हाथमे ले लिया। बाहरसे अकाल-पीडितोकी मददके लिअे कपडेकी गाठ आअी थी। अुसके थान निकाल कर यह गिनना था कि प्रत्येक थानमे कितने गजक पडा हे। और फिर प्रत्येक अकाल-पीडित अथवा वस्त्रकी आवश्यकता वालेको कितना कपडा दिया जाय, अिसका हिसाब लगाना था। बापाने हमसे कहा, चलो, अितने कपडेको गजसे नाप ले। परन्तु हममे से लगभग सभी खूब थक गये थे और नीदसे भरे थे। अिसलिअे बापाको बहुत अुत्साहपूर्ण अुत्तर नही मिला। बापाकी बातका जवाब दिये बिना अेकके बाद अेक सभी बिस्तर बिछाकर और चादर ओढ कर सो गये। परन्तु बापाको क्रोध नही आया, न किसीको अुन्होने कठोर वचन सुनाया। सबके सोने पर कपडेकी अेक गाठ धीरेसे खोलकर अुसमे से थान निकाल निकालकर स्वय नापने लगे। और बादमे कैचीसे डेढ डेढ गजके टुकडे काटने लगे। हम सब बिस्तर पर पडे पडे आखे बन्द करके और कभी जरा खोलकर यह सब देख रहे थे। बापाको अिस तरह अकेले काम करते देखनेके बाद हमे नीद कैसे आ सकती थी? अन्तमे हम शर्माये और बिस्तरोसे अुठकर बापाके काममे शरीक हुअे। तभी हमारे मनको सात्वना मिली। बापाकी काम लेनेकी यह रीत थी।

"अेक और प्रसग अिस बातका अच्छी तरह खयाल कराता है कि बापाकी नियमितता और समयकी पाबन्दी रखनेकी लगन कैसी थी।

"अेक बार बापाको चिल्का सरोवर पर स्थित कुछ अकालग्रस्त गावोको देखने जाना था। सदाकी भाति दस ग्यारह बजे तक काम करनेके बाद सब सोनेकी तैयारी करने लगे। अुस समय बापाने सब साथियोको सूचित किया कि हमे यहासे ठीक छ बजे सबेरे रवाना होना है। अिसलिअे सबको जल्दी अुठकर प्रातकर्मसे निपटकर ठीक छ बजे किनारे पर पहुच जाना है।

"रातको सब सो गये। परतु दिनभरके परिश्रम और थकानके कारण अुस दिन हम जरा देरसे अुठे। और अुसके बाद जल्दीसे तैयारी करने पर भी पहुच न सके। फिर भी जल्दी जल्दी चिल्का सरोवरके किनारे पहुचे तो वहा अेक नाव खडी थी। दूसरी नाव कहा गअी यह पूछने पर अुत्तर मिला कि वह तो ठीक छ बजे यहासे चल दी। आपका अिन्तजार किया, मगर आप न आये तो बापा कुछ कार्यकर्ताओको लेकर यहासे रवाना हो गये।

"यह सुनकर हमने भी जल्दी की और अुस नाववालेसे जल्दी जल्दी नाव चलाकर बापासे भेट करा देनेको कहा। अुस दिन दिनभर नाव चलाअी, परतु बापासे भेट ठेठ शाम तक नही हुअी। वे तो पहलेसे निश्चित क्रमके अनुसार जो जो गाव आते गये वहा सहायता-केन्द्रोकी जाच करते गये, अकाल-पीडितोमे बाटनेका माल बाटते गये और अिस तरह आगे ही आगे बढते रहे। शामको आखिरी गावमे जहा हमारा पडाव डालकर रात बिताना तय हुआ था, वहा अन्तमे जब हम पहुचे तब बापासे भेट हुअी। अुस समय हम थके हुअे होगे और भूखे भी होगे, यह सोचकर हमारे पहुचनेसे पहले ही बापाने खानेका प्रबध करा रखा था। और हम आये तब अुलहना देनेके बजाय हम भूखे है या नही, अिस बारेमे पहले हमसे पूछताछ की और सबको भोजन करने भेज दिया। बादमे यह पूछा कि हम रास्तेमे क्या क्या काम करते आये। अुन्होने भी अपना काम बताते हुअे कहा कि, 'बेचारे क्षुधा-पीडित लोग घटोमे हमारी बाट देखते बैठे हो, तब हमारे देर करनेसे कैसे काम चले? हमारे अेक आदमीके दोषके कारण सैकडो मनुष्योको घटो तक बैठे रहना पडे। हम तय किये हुअे वक्त पर पहुच जाय तो हरअेकका काफी समय बच जाय और लोगोको निश्चित समय पर सहायताका धान वगैरा मिल जाय।'

"अिन दिनोमे वे धोतीका कच्छ बनाकर घुटनो घुटनो और कभी कभी जाघो तकका पानी काटते और मीलो तक चल लेते। अकाल-पीडितोकी लम्बी कतारे देखकर, हड्डी-पसलीवाले बालको और जवान औरतोको देखकर वे कअी बार रो पड थे। अुनसे अुडीसाके लोगोका दु ख देखा नही जाता था।"

अिस अर्सेमे सेठ सुन्दरदासजीके पुत्रने बापाके मत्रीके तोर पर अितना सुन्दर काम किया था कि वह नोजवान बापाकी आखोमे बस गया। अकाल कार्यके सिलसिलेमे वे अेक बार कटक आये तब सेठ सुन्दरदासजीसे अुन्होने कहा, "सेठ, आपसे मुझे अेक माग करनी है।" सेठके मनमे खयाल हुआ कि कुछ रुपये-पैसे मागेगे, अिसलिअे कहा, "खुशीसे, मेरे पास हो, अैसा बापाको क्या चाहिये?" तब बापाने कहा, "अपना लडका मुझे दे दीजिये। अीश्वरने आपको अितना सब दिया है। अब कमानेकी जरूरत नही। तो फिर आपका लडका देशसेवाके काममे क्यो न लगे?" परतु जैसा सेठ सुन्दर-दासजीने कहा, अुनसे पुत्रस्नेह छूट नही सकता था। अिसलिअे बापासे कहा, "बापा, चाहिये तो अकाल-पीडितोको खिलानेके लिअे कुछ धन ले लीजिये। और भी मेरे लायक हो सो माग लीजिये। मगर पुत्र नही दे सकूगा।"

अुडीसामे १९४३ मे और १९४४ के चौमासे तक कष्ट-निवारण-समितिकी ओरसे कामकाज चला, अिस बीच समिति द्वारा अुन्होने लाखो रुपयेका अनाज तथा कपडा गरीबो और क्षुधा-पीडितोमें बाटा। कितने ही अनाथ बालकोके सरक्षक बने। कितनी ही विधवाओके सहायक हुअे। कितने ही कुटुम्बोको मृत्युके मुखमे जानेसे बचानेकी कोशिश की और गाधीजी तथा अन्य देशनेताओकी अनुपस्थितिमे अिस देशव्यापी सकटका सामना करनेके लिअे वृद्धावस्थामे बम्बअी, दिल्ली, कटक, मलाबार, राजस्थान वगैरा प्रदेशोमे दौड-धूप करके सकटग्रस्त लोगोकी मदद की।

१९०१ मे जब बापा अफ्रीकामे विट्ठलबापाके अकाल-पीडितोके दु खोका और अुनकी सहायताका वर्णन करनेवाले पत्र पढते, तब अुन्होने मनमे यह सकल्प किया था कि भविष्यमे अगर चीन जैसे दूर देशमे भी सेवाके लिअे जानेकी जरूरत पडी तो जाअूगा। अिस तरह बापाको चीन जानेकी जरूरत तो नही पडी, लेकिन भारतमे ही मलाबार, कोचीन, राजस्थान, अुडीसा, बगाल जैसे दूरस्थ प्रदेशोमे अुन्हे मददके लिअे जानेकी जरूरत पैदा हुअी और वे हर जगह गये तथा ४३ वर्ष पूर्व किया हुआ सेवाका सकल्प अनेक बार पूरा किया।

३०

देहाती स्त्री-बच्चोंकी सेवा

१९४३ मे भारतमे हुकूमत करनेवाली ब्रिटिश सल्तनतने फौलादी पजा अच्छी तरह दिखाकर काग्रेसको कुचल डालनेका प्रयत्न किया था। और भीतर ही भीतर जनतामे खूब क्रोध होते हुअे भी बाहरसे काग्रेसके आन्दोलनको दबाकर देशभरमे 'श्मशानकी शान्ति' फैला दी थी। अुस समय ठक्करबापाने 'हरिजन' मे प्रकाशित 'Real War Effects' (सच्चा युद्ध-परिणाम) नामक लेखकी हजारो प्रतिया छापकर भारत भरमे बाटी थी। अैसा करनेमे बापाका हेतु यह देखना था कि गाधीजीका नाम जनताके सामने ताजा बना रहे, अिसके अलावा अिसके पीछे अुनका हेतु लोगोको यह विश्वास कराना था कि ब्रिटिश सरकारके साथ समझौता करनेवाले अगर कोअी अेक व्यक्ति है तो वे महात्मा गाधी ही है, अिसलिअे वे गाधीजीकी गैरहाजिरीमें ब्रिटिश सगीनोसे डरकर अपना कर्तव्य न भूले।

भारतके राजनैतिक जीवनके बाहरी तौर पर पलटते दीखनेवाले प्रवाहके अिस जमानेमे गाधीजीके प्रति लोगोकी श्रद्धा और भक्ति दिखाने और ब्रिटिश सरकारके अधिकारियोको अिसकी प्रतीति करानेके लिअे भारतके कुछ लोग अेक बडा कोष जमा करके गाधीजीको अर्पण करनेका विचार कर रहे थे। अुनमे ठक्करबापाका स्थान प्रमुख था। वे सब अिसकी योजना तैयार कर रहे थे कि अिस विचारको अमलमे कैसे लाया जाय, अितनमे आगाखा महलमे सारे देशको आघात पहुचानेवाली अेक घटना हुअी। जगदम्बा कस्तूरबाका, जिन्हे गाधीजीके साथ आगाखा महलमे नजरबद रखा गया था, थोडे दिनकी बीमारीके बाद २२ फरवरी, १९४४ को देहावसान हो गया। अिस समाचारने करोडो भारतवासियोके हृदयोमे शोककी काली छाया फैला दी। लाखो और करोडो स्त्री-पुरुषोने आसू बहाये। गाधीजीके साथ रहकर कस्तूरबाने देशकी आजादीके लिअे जो अपार सकट सहन किये थे, जो कठोर तप किये थे और अनेक चढाव-अुतार देखे थे, अुन्होने बाको देशमे अेक अद्वितीय स्थान दिला दिया था। अुनके जेलमे हुअे अवसानसे समस्त देशकी आत्मा हिल अुठी। अिससे अुनके प्रति भक्ति और प्रेम प्रदर्शित करने, अुनके प्रति देशका ऋण चुकाने और अुनकी याद कायम रखनेके लिअे 'कस्तूरबा स्मारक कोष' स्थापित करनेका विचार बहुतसे भाअियोके मनमे पैदा हुआ और जिन जिनसे यह बात कही गअी अुन सबने अिसका स्वागत किया।

अिसलिअे यह कोष जमा करनेके लिअे अेक छोटीसी समिति बनाअी गअी। अुसमे श्री ठक्करबापा, श्री नारणदास गाधी, श्री देवदास गाधी, स्वामी आनद, श्री शान्तिकुमार मोरारजी, श्री वैकुण्ठराय महेता और कुछ अन्य लोग लिये गये। अिसके बाद पडित मदनमोहन मालवीयजीके नेतृत्वमे देशभरके कोअी सौ काग्रेसी नेताओ, समाज-सेवको और अन्य कार्यकर्ताओके हस्ताक्षरोसे देशभरमे अेक अपील निकाली गअी और अुसमे बताया गया कि कस्तूरबा गाधी स्मारकके लिअे ७५ लाख रुपयेकी रकम अिकट्ठी की जायगी और गाधीजीको अुनकी ७५ वी जन्मगाठके दिन अर्थात् २ अक्तूबर, १९४४ को अर्पण की जायगी तथा यह रकम भारतवर्षकी स्त्रियोके कल्याण-कार्यमे खर्च की जायगी।

ट्रस्टी (सरक्षक) मडलके नाम तय हुअे और अुनके नामसे यह अपील निकाली गअी। ठक्करबापा अुसके मत्री नियुक्त हुअे। बापाने अुन दिनो जो काम किया, वह अच्छे अच्छोको थका देनेवाला था। अिससे ज्यादा सख्त काम अुन्होने पहले कभी नही किया होगा। रोज घटो दफ्तरमे बैठकर

वे बहुतसे पत्र लिखवाते और कार्यकर्ताओको रुपया जमा करनेके लिअे अुत्साह और प्रेरणा देते। जिस भागमे शिथिलता मालूम होती वहा ज्यादा जोर देते और अुन्हे अधिक लगन और परिश्रम करनेकी ताकीद करते। कस्तूरबा कोषके लिअे कार्यकर्ताओसे अुनकी वसूली 'पठानकी वसूली' होती थी। वडी सुवहसे रातको देर तक पत्र लिखना, सूचनाअे भेजना, परिपत्र तैयार करना और व्यक्तिगत पत्र लिखना जारी ही रहता। अिसके सिवाय मार्चसे सितम्वर तक देशके भिन्न भिन्न भागोमे अुन्होने दोरा किया और कस्तूरबा स्मारक कोष जमा करनेके लिअे हर जगह स्थानीय समितिया मुकर्रर की।

१९४४ मे अुस समय गाधीजी और जवाहरलालजीसे लगाकर देशके तमाम छोटे-वडे नता जेलमे थे। लोगोमे निरुत्साह और निराशा फैलने लगी थी और अितने बडे कोषके लिअे देश-कालकी परिस्थिति प्रतिकूल थी। अेक वडे प्रमुख व्यापारीने तो वापाको यहा तक कहा था कि कस्तूरबा स्मारकके लिअे ७५ लाख रुपया जमा करनेका आपने जो लक्ष्य रखा है, वह बहुत अूचा है। परतु ठक्करवापाके खयालसे वह कोअी अूचा नही था। अिस लक्ष्याक तक पहुचनेके लिअे अुन्होने दिन-रात अेक करके अटूट धीरजसे सतत प्रयत्न किया। बापू और बाके प्रति वापाकी भक्तिके कारण और गाधीजीका १९४४ के मअी मासमे जेलसे छुटकारा हो जानेके कारण यह मुश्किल काम किसी हद तक आसान हो गया। फिर भी अुसे सर्वांशमे सफल बनानेमे बापाने कोअी कसर नही रखी।

१९४४ के जून मासमे अुन्होने अपने अेक प्रिय मित्र और भक्तको यह पत्र लिखा

"मुझे आपके विरुद्ध शिकायत करनी है और वह यह कि आप मुझे कस्तूरबा स्मारक कोष जमा करनेमे मदद नही देते। आपको अितना जान लेना चाहिये कि अब मै तो बूढा हो गया। और मेरी शारीरिक शक्ति और बल जितना तीन-चार वर्ष पहले था अुससे आधा भी अब नही रहा। अितने पर भी अितने बडे भगीरथ कार्यकी जिम्मेदारी सिर्फ अिसीलिअे अुठाअी है कि मै गाधीजीके प्रति अपना ऋण चुका सकू। क्योकि आज मै जो कुछ हू वह अुन्हीके कारण हू। क्या आप मुझे गाधीजीके प्रति यह ऋण चुकानेमे मदद नही देगे?"

अुपरोक्त पत्रमे बापा अपनी वृद्धावस्था और क्षीण हुअी शक्तिका अुल्लेख करते है, परतु अुन्होने कस्तूरबा स्मारक खडा करनेके लिअे कितना ज्यादा परिश्रम किया था, कितने जागरण किये थे, कितनी दौडधूप की

थी, यह तो अुनके साथ रहकर काम करनेवाले सेवक ही जानते है। अुन लोगोके मतानुसार अुन तीन महीनोमे बापाने अितना सतत काम किया था, जितना अपनी जिन्दगीमे कभी नही किया होगा। और अैसा करनेमे अुन्होने थकान, भूख और निद्राकी बिलकुल परवाह नही की थी। अुस समय बापासे अुनके अेक साथीने पूछा, 'बापा, आपमे जिस वृद्धावस्थामे भी काम करनेकी अितनी अधिक शक्ति विद्यमान है, अिसका रहस्य क्या है?' तब अुन्होने जवाब दिया था, 'कामके प्रति भक्ति, आदर्शके प्रति वफादारी और प्रबल अिच्छाशक्ति ही मुझे काममे लगाये रखती है और थकान नही मालूम होने देती।'

यह प्रबल अिच्छाशक्ति और कस्तूरबा स्मारकके प्रति रही भक्ति तथा लगन ही अुनसे सोलह सोलह घटे काम कराती थी, और फिर भी अुन्हे थकान महसूस नही होने देती थी। अिस प्रकारके सतत पुरुषार्थ और परिश्रमके परिणामस्वरूप बापाने जितना सोचा था अुससे अधिक फण्ड अिकट्ठा कर लिया। अुन्होने ७५ लाख रुपयेका जो लक्ष्याक रखा था, वह तो कभीका पूरा हो चुका था और २ अक्तूबर १९४४ के दिन जब गाधीजीको थैली अर्पण करनेका समय आया, तब चदेकी रकम अेक करोडके आकडेको भी पार कर चुकी थी।

अुस पुण्य दिवस पर बापाने गाधीजीको थैली अर्पण करते समय अपने कामका हिसाब देते हुअे यो कहा

"मेरे जीवनके पूरे हो रहे ७५ वे वर्षके समय आपको अर्पण करनेके लिअे ७५ लाख रुपयेकी नही परतु अेक करोडसे भी अधिक रकम अिकट्ठी करनेमे मै साधन बन सका और आपके पूरे हो रहे ७५ वर्षके बाद ७६ वें वर्षके जन्मदिन पर आपके चरणोमे अर्पण कर सका, अिसके लिअे मै परम कृपालु परमात्माका आभार मानता हू। साथ ही, जो शहर भौगोलिक रूपमे ही नही परतु रूपककी दृष्टिसे भी भारतके मध्यभागमे स्थित है अुसमे यह समारभ आयोजित कर सका, अिसके लिअे भी अुस सर्वशक्तिमान परमेश्वरके जितने गुणगान किये जाय अुतने कम है।"

गाधीजीके प्रति अुनकी वफादारी और कस्तूरबा स्मारकके प्रति अुनकी भक्तिके कारण वे किसी आदमीके द्वारा की गअी गाधीजीकी आलोचनाको सह नही सकते थे। वह आलोचना किसी भी कोनेसे क्यो न आवे, बापा अुसका जवाब देनेको तत्पर हो जाते। १९४४ के मअी मासमे 'लडन टािअम्स' के दिल्ली स्थित सम्वाददाताने अपने पत्रमे यह खबर छापी कि गाधीजीने

कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टकी अध्यक्षता स्वीकार करके कांग्रेस दलको, जो मृतप्राय हो गया है, पुनर्जीवित करनेकी दिशामे पहला कदम अुठाया है। यह नअी सस्था और अुसकी देशव्यापी शाखा-प्रशाखाओकी शृखला काग्रेसका प्रचार करनेमे बडा अुपयोगी साधन बनेगी। गाधीजी पर अिस प्रकारका हेतु आरोपित करना और अुनके बारेमे आक्षेपात्मक लिखना बापासे सहन नही हुआ। वे यह समाचार पढकर अुबल अुठे और अिस शरारती समाचारका जोरदार खडन करनेवाला अेक लबा वक्तव्य अुन्होने निकाला। अुस वक्तव्यमे अन्य कुछ मुद्दोकी चर्चा करके अुन्होने कहा कि,

"निम्नलिखित तथ्योके प्रति मै आम जनताका ध्यान आकर्षित करना चाहता हू

"कस्तूरबा स्मारकके बारेमे ८ मार्चको हमारे हस्ताक्षरोसे अेक अपील निकाली गअी थी। अुसी समय हमने अैसी आशा व्यक्त की थी कि गाधीजीकी नजरबदी समाप्त होनेके बाद अिस स्मारक कोषका अध्यक्षपद वे सभाल लेगे। अिसलिअे 'लडन टाअिम्स' के दिल्ली स्थित सम्वाददाताको अितना जानना चाहिये कि गाधीजी स्मारक ट्रस्टकी अध्यक्षता स्वीकार करेगे, यह जो घोषणा ट्रस्टियोकी १० मअीकी सभाके बाद की गअी थी अुसका समावेश तो ट्रस्टियोकी दो मास पहले हुअी बैठकके निश्चयानुसार जो अपील निकाली गअी थी अुसीमे हो जाता था। मै केवल अितना ही और कहूगा कि व्यक्तिगत रूपमे गाधीजी ट्रस्टकी अध्यक्षता सभालनेको राजी नही थे, परतु ट्रस्टियोकी प्रार्थना और अत्यत आग्रहको मान कर ही अुन्होने यह पद सभालनेके लिअे अपनी समति दी थी। अिस कोषको प्रोत्साहन देने या आगे बढानेके लिअे गाधीजीको खास कोशिश करनेकी जरूरत मालूम होनेका भी कोअी विशेष प्रश्न पैदा नही होता। चदा अिकट्ठा करनेका काम तो पूरे जोरसे चल ही रहा है। और अुस प्रेस प्रतिनिधिको अितना जान लेना चाहिये कि देशमे पू० कस्तूरबाकी यादके लिअे लोगोकी भावना अितनी तीव्र है कि २ अक्तूबर आनेसे पहले ७५ लाख रुपये जरूर जमा हो जायगे।

"साथ ही मुझे यह भी कहना चाहिये कि कस्तूरबा कोषका काम करने-वाली अलग अलग कमेटियोका अुपयोग काग्रेसके हितको आगे बढानेमे किया जायगा, यह जो आक्षेप किया गया है वह अुनके जैसे जिम्मेदार पत्रकारको शोभा नही देता। मुझे आशा है कि अुनके अिन आरोपोका देशके भिन्न भिन्न भागोके तमाम स्त्री-पुरुष, फिर वे कोअी भी राजनैतिक दृष्टिकोण रखते हो, कडेसे कडा विरोध करेगे। अिस बारेमे मुझे शका नही है कि पू० कस्तूरबा जैसी आदरणीय महिलाके, जिन्होने सारे देशका आदर और प्रेम प्राप्त

किया है, 'स्मारकके लिअे अेकत्रित अलग अलग राजनैतिक दृष्टिबिंदु रखनेवाले लोग अिन आरोपोंकी कडे शब्दोंमें निन्दा करेंगे।

"गांधीजी अपने राजनैतिक विचारोंका प्रचार करनेके लिअे आडे-टेढे तरीकों और साधनोंका अुपयोग करने जितने नीचे हरगिज नहीं अुतरेंगे। अुनकी सत्यनिष्ठा और आत्मगौरव संसार भरमें प्रसिद्ध हैं। लोगोंने अुनकी सच्चाअी और अीमानदारीको मान लिया है। मैं विश्वास रखता हूं कि 'लंडन टाअिम्स' के प्रतिनिधि अब अपनी की हुअी भूल समझ लेंगे। और अुस पत्रके लाखों पाठकोंमें अुनके विवरणने जो गलत-फहमी पैदा की होगी अुसे दूर करनेके लिअे वे जल्दीसे जल्दी अपनी भूल सुधार लेंगे और समाचारका सच्चा वर्णन करेंगे।"

गांधीजी ठक्करबापाको कस्तूरबा ट्रस्टके पिताके रूपमें ही मानते थे। वे कअी बार कहते थे कि अिस कोषके अुपयोगके संबंधमें मेरी राय ठक्करबापासे भिन्न हो तो ठक्करबापाकी राय ही माननी चाहिये और तदनुसार अुस पर अमल होना चाहिये।

अिस कोषका ट्रस्ट-डीड (ट्रस्टका दस्तावेज) १ अप्रैल १९४५ को अमलमें लाया गया। अुसकी अेक कलम यह थी कि ट्रस्टके पदाधिकारियोंका कार्यकाल अेक वर्षका रखा जाय (सिर्फ गांधीजी जो अिस ट्रस्टके अध्यक्ष थे अिसके अपवाद थे)। अेक साल बाद ट्रस्टी लोग खुद ही पदाधिकारियोंकी नियुक्ति करें और यह भी तय करें कि अुनकी मियाद क्या रखी जाय। ठक्कर-बापा जुलाअी १९४६ में दूसरी बार ट्रस्टके मुख्यमंत्री नियुक्त हुअे तब गांधीजीने सुझाया कि अुन्हें अब आजीवन मंत्रीपद पर स्थापित कर दिया जाय। परंतु बापाने यह बात स्वीकार न करके अधिकसे अधिक तीन वर्ष तक मंत्रीपद संभालनेकी तैयारी बताअी। यह अवधि जून १९४९ में पूरी हो गअी। अिस बीच गांधीजीका देहान्त हो गया और अुनकी जगह सरदार पटेल अध्यक्ष मुकर्रर हुअे। अिसलिअे बापाने अपनी अवधि समाप्त होने पर सरदारको लिखा कि अब आप और किसीको मंत्रीपद दीजिये। यदि मुझे देंगे तो मैं स्वीकार नहीं करूंगा। परंतु ट्रस्टी (संरक्षक) मंडलकी सर्वसम्मत विनती और आग्रहको मानकर बापाको और तीन सालके लिअे यह पद स्वीकार करना पडा। अिस बीच दिसम्बर १९५० में सरदार साहबका देहावसान होने पर ट्रस्टी मंडलने ठक्करबापाको सर्वसम्मतिसे अध्यक्षके तौर पर चुन लिया। मावलंकर दादाका तदनुसार तार भी आया। परंतु अिस समय वे भावनगरमें आराम ले रहे थे। वृद्धावस्थाके लिअे स्वाभाविक कितनी ही तकलीफोंने अुन्हें घेर लिया था। और अुन्हें यह प्रतीति हो

चुकी थी कि अब मै थोडे ही दिनका मेहमान हू। अिसलिअे अुन्होने अध्यक्ष-पद स्वीकार करनेसे अिनकार कर दिया और साथ साथ मावलकर दादासे ही यह पद स्वीकार करनेका अनुरोध किया।

१९४८ के वाद वापा अपनी वृद्धावस्था, खराव स्वास्थ्य और आखोके मोतियाविन्दुके कारण अिसकी ओर वहुत ध्यान नही दे सके। फिर भी अुन्होने अिस कामके सिलसिलेमे जो रूपरेखा वना दी है, वह तथा अुनका नाम और मार्गदर्शन साथी कार्यकर्ताओको खूव प्रेरणा देता रहता है।

गाधीजी ६ मअी, १९४४ को आगाखा महलसे छूटे, तव अुनसे ट्रस्टियोको सलाह-सूचना और मार्गदर्शन देनेके लिअे अिस ट्रस्टका अध्यक्षपद स्वीकार करनेकी प्रार्थना की गअी। अुसी वर्पके जुलाअीकी पहली तारीखको ट्रस्टियोकी वैठक वुलाअी गअी। अुसमे गाधीजीने अिस कोषका क्या अुपयोग करना चाहिये, अिस विषयमे अपने विचार प्रगट करते हुअे कहा कि, "कस्तूरवा अेक सरल और सीधी-सादी स्त्री थी और गावके जीवनको अपना चुकी थी। वह गावमे ही रहती थी और गावोकी ही सेवा करती थी। अिसलिअे अुनके नामसे अिकट्ठे हुअे कोषका अुद्देश्य भी देहातकी स्त्रियो और वच्चोका कल्याण होना चाहिये। अत भारतके असख्य ग्रामोमे रहनेवाली स्त्रियो और वच्चोके कल्याणका क्या अर्थ है, और अिस सवधमे मेरे क्या विचार है, यह वात ट्रस्टियो और दुनियाको मालूम हो जाय तो अच्छी वात है। मेरी कल्पनाके अनुसार तो स्त्रियो और वालकोके कल्याण-कार्यमें देहाती स्त्रियो और वच्चोके समग्र जीवनका समावेश हो जाता है। और अिसीलिअे अिस कल्याण-कार्यमे प्रसूति, आरोग्य, रोगोमे चिकित्सा और देखभाल तथा शिक्षाके प्रश्न आ जाते है।"

अिस प्रकार देहातमे रहनेवाली स्त्रियो और वच्चोके कल्याण-कार्यके लिअे अिस ट्रस्टकी रचना हुअी और अुसका कार्यक्षेत्र भी देहातमे रहा। देहातमे रहनेवाली स्त्रियो और वच्चोके जीवनमे वुनियादी फेरवदल करके अुनके दु ख, दारिद्र्य और रोग तथा अज्ञान मिटे, अुनमे निर्भयता और स्वावलम्वनके गुण विकसित हो, अुनमे आत्मश्रद्धा पैदा हो और वे अपने आपमे अेक नया ही वल अनुभव करे तथा समाजमें अपना अुचित स्थान प्राप्त करे, अिस प्रकारका काम करनेकी जरूरत थी।

स्त्रियो और वच्चोको अिस तरहकी तालीम देनेके लिअे निम्नलिखित रूपरेखा तैयार की गअी है और अुसे सवने सर्वसम्मतिसे स्वीकार किया है —

नअी तालीम् अथवा वुनियादी शिक्षा। जैसा गावीजीने कहा है, अिस शिक्षाका प्रारभ गर्भाधानसे ही हो जाता है और वह माता-पिताके सही

आचार-विचार पर अवलंबित है। अिसलिअे बालकोंकी माताओंको सच्चे, प्रामाणिक, श्रमयुक्त और नीतिमय जीवनकी तालीम दी जाय और बच्चोंको वर्धा योजनाके अनुसार शिक्षा दी जाय। यह कस्तूरबा ट्रस्टके कार्यक्रमका प्रथम भाग है।

दूसरा, स्वास्थ्यकी रक्षा और बीमारीमें सच्ची सेवा-शुश्रूषा। अिसमें आरोग्यके सामान्य नियम, स्वच्छता, सुघडता वगैरा तथा रोगोंको रोकना, दाअीकी तालीम, शास्त्रीय ढंग पर प्रसूति-गृह चलाना और देहातके स्वास्थ्यकी रक्षा करना अित्यादि बातोंका समावेश हो जाता है।

तीसरा, ग्रामोद्योग और गृह-अुद्योग जिनमें खादी, वस्त्र-स्वावलम्बन, कताअी, पिंजाअी, बुनाअी, सिलाअी वगैरा आ जाते हैं।

चौथा, ग्रामसेवा और पांचवां, गोपालन, बागबानी वगैरा।

कस्तूरबा कोषका रुपया स्त्री-कार्यकर्ताओं द्वारा ही खर्च किया जाय, यह गांधीजीकी पहलेसे ही अिच्छा थी। अिसलिअे ट्रस्टकी कार्य-समितिने निश्चय किया है कि कस्तूरबा ट्रस्टके सब केन्द्रोंका संचालन स्त्री-कार्यकर्ताओंके ही हाथोंमें रहे। विशेष परिस्थितियोंमें जब विशेष योग्यता और अूंचे दर्जेकी स्त्रियां कार्यकर्ताके रूपमें न मिलें, तभी विशेष अपवादके तौर पर अिस नियममें फेरबदल करनेका अध्यक्षको अधिकार दिया गया है। अिस कार्यमें प्रान्तीय समितियोंको सबसे बडी मुश्किल यह होती है कि अुन्हें देहातका काम कर सकनेवाली, सही दृष्टि रखनेवाली और देहातके प्रश्नोंको समझनेवाली तालीम पाअी हुअी शिक्षित और योग्य बहनें ही नहीं मिलतीं। शिक्षित और पढी-लिखी बहनोंमें पुस्तकोंका ज्ञान होगा, काम करनेकी शक्ति होगी, परंतु ग्रामीण जीवनमें कैसे कैसे प्रश्न पैदा होते हैं, अुन्हें किस प्रकार हल करना चाहिये, अिस कार्यमें अक्सर जो अकल्पित कठिनाअियां और खतरे खडे हो जाते हैं, अुनका सामना कैसे किया जाय — अिन सब बातोंकी समझ और जानकारी नहीं होती। दूसरी ओर देहातकी स्त्रियां कामकी भूमिकासे परिचित हों और देहातमें किस किस तरहके प्रश्न खडे होते हैं, यह जानती हों तो अुनमें अेक प्रकारकी सामान्य दृष्टि, अुचित पद्धति और अुसके लिअे जितना चाहिये अुतना विशाल ज्ञान नहीं होता। गांवोंकी स्त्रियां ज्यादातर निरक्षर होती हैं। दूसरी तरफ शहरोंमें स्वास्थ्य-विभागमें काम करनेवाली तालीम पाअी हुअी जो बहनें नर्सका काम करती हैं, अुन्हें अिस ढंगसे तालीम दी जाती है कि वे शहरी वाता-वरणमें ही अुपयोगी होती हैं। अिसलिअे गांवोंकी सेवा करनेकी अिच्छा

होते हुअे भी जो जरूरी तालीम और पद्धतिके अभावमे काम न कर सकती हो, अुन्हे तालीम देकर तैयार करना जरूरी जान पडा।

अिसलिअे ट्रस्टके निश्चित किये हुअे वालवाडी, पूर्व-वुनियादी शिक्षा, प्रौढ-शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामसेवाके अन्य कुछ कार्योके लिअे वहनोको जरूरी तालीम देकर तैयार करनेके लिअे तय किया गया कि कस्तूरवा ट्रस्टकी पूजीमे से काफी रकम खर्च की जाय। और अिस निश्चय पर अमल भी किया गया। स्वराज्य आनेके वाद और जनताका शासन स्थापित होनेके पश्चात् अिस चीजका महत्त्व अव ज्यादा वढ गया है। कारण, जनताकी सरकारसे यह आशा रखना अत्यधिक नही माना जायगा कि वह देहातके लोगोकी जरूरतोकी तरफ ज्यादा ध्यान दे। अिस समय सरकारी, गैरसरकारी और लोकल वोर्डोकी सस्थाओकी शिक्षा, स्वास्थ्य और सफाअी सम्वधी योजनाअे अमलमे लानेके लिअे सही दृष्टिवाले, तालीम पाये हुअे मनुष्योकी आवश्यकता वढती ही जा रही है। ट्रस्ट अिस प्रकारके कार्यकर्ताओको तालीम देकर तैयार करे तो कहा जायगा कि अुसने वहुत वडा हेतु सिद्ध कर लिया।

१९४७ के मअी मासमे कार्य-समिति और अेजेण्टोकी वैठकमे सभी कार्यकर्ताओको विशेष विषयोमे तालीम देनेके विचारका खूव स्वागत हुआ और अुसकी अच्छी कद्र हुअी। अिसलिअे अिसके वादकी दिसवर मासमे हुअी वैठकमे यह निश्चय किया गया कि सव वहनोके लिअे अेक वर्षकी प्रारभिक तैयारीकी तालीम लाजिमी रखी जाय और यह तालीम पूरी करनेके वाद ही अुन्हे निम्नलिखित विशेष विषयोकी तालीम लेनेके लिअे भेजा जाय

१ ग्रामसेवा, वालवाडी, वस्त्रविद्या, वाल-कल्याण, गोपालन और सहकारी प्रवृत्ति।

२ वुनियादी शिक्षा।

३ ग्राम-अुद्योग — वुनाअी विद्या, कागज वनानेका काम, गोसेवा और गृह-अुद्योग वगैरा।

४ दाअीका काम और शुश्रूषा (नर्सिंग)।

कस्तूरवा ट्रस्टके सचालकोको देहातसे जिस किस्मकी वहने चाहिये वैसी वहने नही मिल सकी, अिसीलिअे अुनके लिअे अुपरोक्त विशेष विषयोकी तालीम देनेसे पहले अेक वर्षकी तैयारीका पाठ्यक्रम रखनेकी जरूरत पडी। साथ ही अनुभवसे यह मालूम होने पर कि वुनाअी-काम और वस्त्रविद्याका विषय पाठ्यक्रममे नियत किये गये समयमे कोअी भी ग्रामसेविका-विद्यालय पूरा नही कर सकता, अिन विद्याओकी शिक्षा आगेके वर्षोकी खास तालीममे रखना आवश्यक जान पडा।

अिसके अतिरिक्त कस्तूरवा ट्रस्टकी कार्य-समितिने ग्रामसेवा विद्यालयके साथ साथ विधवाओ, परित्यक्ताओ और अिसी प्रकारकी अन्य वहनोके लिअे सेविका आश्रमकी शालाअे जारी करनेका निश्चय किया। जिन आश्रमोमे अुन्हे सिर्फ आश्रय मिले अितना ही नही, परन्तु वे स्वतत्र रूपमे जीवन-निर्वाह कर सके ओर साथ साथ समाज-सेवाके कार्यमे भी अुपयोगी हो सके, अिसके लिअे जरूरी तालीम देनेका भी अितजाम किया गया है।

ग्रामसेविका वहने देहातमे जाकर वालकोको वुनियादी शिक्षा अच्छी तरह दे सके, अिसके लिअे सवसे पहले अुन्हीको तालीम देकर तैयार किया जाता है। अिन वहनोको तालीम देनेका काम हिन्दुस्तानी तालीमी सघने स्वीकार किया है।

अिसी तरह कस्तूरवा ट्रस्टके स्वास्थ्य-सलाहकार-मडलने अलग अलग तरहके पाठचक्रम तैयार किये है, जिनमे से मुख्य अिस प्रकार है

१ प्रारभिक देखभाल और गृह-शुश्रूपा (Home Nursing)। यह तीन महीनेका अभ्यासक्रम है।

२ देहातमे प्रसूतिकार्यमे सहायता देनेके लिअे दाअिया। यह डेढ सालका पाठचक्रम है।

३ ग्रामसेविकाअे (Village Nurses)। यह अढाअी वर्पका पाठचक्रम है।

देहातकी जरूरतोको ध्यानमे रखकर ये पाठचक्रम वनाये गये है। तालीम लेना चाहनेवाली सव वहनोके लिअे प्रारभिक देखभाल और गृह-शुश्रूपाका तीन मासका पाठचक्रम अनिवार्य रखा गया है।

कस्तूरवा ट्रस्टका सचालन करनेके लिअे २६ आदमियोकी अेक सचालन समितिका निर्माण किया गया है। शुरूमे सरदार वल्लभभाअी पटेल अुसके अध्यक्ष ओर ठक्करवापा अुसके मत्री थे। अिसके वाद १९५० मे सरदारके अवसानके वाद वह स्थान स्वीकार करनेको वापासे वहुत अनुरोध ओर आग्रह किया गया। परन्तु वापाने अपनी जीर्ण देहावस्थाके कारण अिनकार करके यह स्थान सभालनेका श्री दादासाहव मावलकरसे आग्रह किया। तदनुसार अिस समय श्री दादासाहव मावलकर ट्रस्टका अध्यक्षपद सभाल रहे है। और वापाके अेक पुराने साथी कार्यकर्ता श्री श्यामलाल्जी तथा श्री सुशीला वहन पै अुसके मत्रियोका काम कर रहे है।

सस्थाकी कार्य-समितिकी देखरेख और मार्गदर्शनमे प्रान्तोमे स्त्री-प्रतिनिधि अिस कार्यका सचालन कर रही है। काम नया होनेसे मुश्किले वहुत

आती है। फिर भी बापाने शुरूके वर्षोंमे रातदिन काम करके जो भूमिका तैयार कर दी है, अुसके आधार पर काम हो रहा है। और जैसा कि ट्रस्टके वर्तमान मत्री कहते है, अब तक अिस सस्था द्वारा जो काम हुआ है, अुसके परिणाम आशाजनक और सतोषकारक मालूम हुअे है।

१९४४ से १९५० तक बापाने अन्य कार्योंके साथ साथ कस्तूरबा ट्रस्टके मत्रीके रूपमे काम किया। अिस सस्थाके विकासके लिअे, अुसकी शाखा-प्रशाखाअे खोलनेके लिअे और अिसके लिअे आवश्यक स्त्री-कार्यकर्ता ढूढ कर अुन्हे काममे लगानेके लिअे बापाने सारे हिन्दुस्तानके बार बार प्रवास किये है। शाखाओका निरीक्षण किया है। बहनोको तैयार किया है। अुनके कामकी प्रशसा करके अुनका अुत्साह बढाया है। अिसकी साक्षी कस्तूरबा ट्रस्टमे काम करनेवाली अनेक शिक्षित बहने दे सकती है। महाराष्ट्रमे काम करनेवाली बहन सत्यभामा कुलकर्णी या मध्यप्रान्तमे काम करनेवाली श्री ताराबहन मश्रूवाला या अुडीसामे काम करनेवाली बहन श्रीमती मालतीदेवी चौधरी वगैरा अनेक बहनोके सपर्कमे रहकर अथवा पत्रव्यवहार द्वारा बापाने अुन्हे सतत प्रोत्साहन दिया है।

महाराष्ट्र प्रान्तमे कस्तूरबा ट्रस्टका काम करनेवाली बहन श्री सत्यभामा कुलकर्णीने १९४९ मे सिद्धेवाडीके पास शराबकी भट्टीमे काम करनेवाले लोगोके निवासस्थान पर निर्भयता पूर्वक जाकर वह काम रोकनेके लिअे जो कोशिश की थी, अुसके लिअे बापाने अुन्हे बधाअी देनेवाला नीचेका पत्र लिखा था। यह अुनकी अिस तरहकी कारगुजारीकी मिसाल हमारे सामने पेश करता है।

"प्रिय बहन सत्यभामा कुलकर्णी,

"पढरपुरके पास सिद्धेवाडीके आपके कामके बारेमे प्रेमाबहन कटकका लिखा हुआ अेक लेख मुझे पढकर सुनाया गया। अुसे सुनकर मुझे बहुत ही आनद हुआ। जहा गैरकानूनी तौर पर लोग शराब बनाते हो, वहा अुनके अधेरे निवासस्थानमे अकेले जाकर आपने सचमुच बडी बहादुरी दिखाअी है। खास तौर पर आपको वहा क्रूर और हिंसक लोगोके विरुद्ध जूझना था। अैसे लोगोकी अेकान्त गुफामे जाकर अिस प्रकारका काम करनेके लिअे आपको बधाअी। दूसरी बधाअी आपके पतिको जिन्होने आपको अैसे छोटेसे गावमे रहकर यह सेवाकार्य करनेकी अिजाजत दी।

". . . आप शराबके पापके विरुद्ध बापूके अहिसक हथियारसे लडी है। मै आशा रखता हू कि आपके अिस दृष्टान्तका अनुकरण देशभरमें,

विशेषत विहार, तामिलनाड, दूरवर्ती आसाम, डरपोक गुजरात और पिछडे हुअे राजस्थानमें भी होगा। आपको और आपके पतिको नमस्कार।

आपका
अ० वि० ठक्कर
मत्री, कस्तूरवा ट्रस्ट"

कस्तूरवा ट्रस्टकी सस्थाको आगे वटानेमे अनेक लोगोने योग दिया है। परन्तु अिसमे वापा और अुनके साथियोने जो काम किया हे, वह लम्बे समय तक भुलाया नही जायगा।

३१

नोआखलीमें ठक्करबापा

वर्षोसे गाधीजीके सपर्कमे रहनेके कारण और खास तौर पर यरवदाके अुपवासके वाद वापाको गाधीजीके प्रति और अुनके मानवसेवाके कामोके प्रति वहुत ही ममता हो गअी थी। वह यहा तक थी कि देशके किसी भी नाजुक अवसर पर, खास तौर पर अगर वह मानवसेवासे सम्वध रखता हो तो वे गाधीजीका साथ कभी न छोडते। कैसी भी असुविधा अुठानी पडे, कितना भी कष्ट सहन करना पडे, खतरा अुठाना पडे और मुसीवतें वर्दाश्त करनी पडे, वे हमेशा गाधीजीके साथ ही रहनेका आग्रह रखते थे, और अुनके दु खमें, कष्टमे हमेशा हिस्सेदार वनते थे।

नोआखलीके हत्याकाड और वहनो पर किये गये अत्याचारो, वलात्कारो, हत्या, लूट और आग लगाने वगैराके अमानुषिक कृत्योने गाधीजीका हृदय जडसे हिला दिया था। परिणामस्वरूप जव अुन्होने 'करेगे या मरेगे' का शान्ति स्थापनाका मत्र लेकर नोआखली जानेका पक्का निश्चय किया तव वापाने भी अुनके साथ जानेकी अिच्छा प्रगट की।

गाधीजीका अिस अुम्रमे प्रवास करने और मुस्लिम लीगके जहरीले साम्प्रदायिक प्रचारसे अुन्मत्त वने हुअे लोगोने जहा जोर-जुल्म, भय, आतक, आग, लूट, हत्या, और वलात्कारका नरकमे भी भयकर वातावरण फैला दिया था, अुस वैराग्निसे धधकते हुअे प्रदेशमे जानेका निश्चय अगर अेक प्रकारका साहस था तो ठक्करवापाके लिअे वह और भी वडा साहस था।

गाधीजीकी अुम्र अुस समय सत्तर वर्षकी थी। बापाकी भी लगभग अुतनी ही थी। आम तौर पर अनेक प्रकारके नियम, सावधानी और सेवा-शुश्रूषाका क्रम बनाये रखकर गाधीजीने अपना स्वास्थ्य अच्छा रखा था। परन्तु वर्षो तक निर्दय होकर शरीरसे काम लेनेके कारण पिछले अेक-दो सालसे बापाका शरीर काफी गडबडा गया था। अिसके सिवाय अुनकी आखोमे मोतियाबिन्दु आने लगा था और रातको किसीकी मददके बिना अकेले चल सकनेकी अुनकी हालत नही थी। फिर वहा कोअी अकालके सीधे राहत-कार्य या अैसे और कार्यके सचालनके लिअे तो जाना नही था, जिससे वहा किसी तरहकी निश्चित व्यवस्था हो। यह अधेरेमे छलाग मारना था। वहा कैसी परिस्थितिका सामना करना पडेगा, अिसका स्वय गाधीजीको भी पूरा खयाल नही था। अितने पर भी बापाका भीतरी अुत्साह अितना असीम था, गाधीजीके प्रति अुनका प्रेम और ममत्व अितने अटूट थे, नोआखलीकी घटनाअे अितनी करुण और भयानक थी, वहाके पीडितो और बहनोकी चीख अितनी तेज और मर्मभेदी थी कि बापा दिल्लीमे पैर सिकोडकर बैठे नही रह सकते थे। गाधीजी जब अपने आपको कसौटी पर रख रहे हो, तब वे दिल्लीमे शान्तिसे कैसे बैठे रहे? अुन्होने अपने दो साथियोको लेकर गाधीजीके साथ नोआखली जानेका निश्चय किया, और अिसके लिअे अुनकी मजूरी मागी।

बापाकी अुम्र और तदुरुस्तीको देखते हुअे दूसरे मौके पर गाधीजी शायद अुन्हे चलनेकी सलाह न देते, परन्तु यह प्रसग अनोखा था। अहिंसाके प्रति रही अपनी श्रद्धाको कसौटी पर रखनेके लिअे वे तन-मन सर्वस्व अर्पण करनेको तैयार हो गये थे। अितना ही नही, अुनके जो प्रियजन थे — वर्षो तक अुनके प्रति श्रद्धा रखकर अुनके कदमो पर चले थे, अुन सब साथियोको भी गाधीजी नोआखलीके 'करेगे या मरेगे' के यज्ञमे होमनेको तैयार हो गये थे। अिसमे अुम्र, जातपात, स्वास्थ्य, किसी भी बातका अुन्होने खयाल नही किया था। अिसीलिअे तो गाधीजीकी अिस यात्रामे पुरुषोके साथ स्त्रिया थी, कुमारिकाअे थी और कच्ची अुम्रकी फूल जैसी बालिकाअे भी थी। बापा भले ही वृद्ध थे, आखोकी रोशनी चली जानेसे थोडे अपग बन गये थे, फिर भी वे सत्यका तेज प्रगट करनेवाले विलक्षण सत्याग्रही पुरुष थे। गाधीजी अैसे ही कुछ बत्तीस लक्षणोवाले पुरुषोको — स्वय अपनेको भी होम कर नोआखलीकी भीषण ज्वाला बुझाना चाहते थे। अिसलिअे अुन्होने बापाके प्रस्तावका स्वागत किया और नोआखलीके यज्ञमे अपने साथीके तौर पर अुन्हे चलनेकी अिजाजत दे दी।

२८ नवम्बर, १९४६ को सवेरे गाधीजी रेलगाडी पर दिल्लीसे रवाना हुअे, तब अुनकी टोलीमे श्री प्यारेलालजी, श्री सुशीला नय्यर, श्री सुशीला पै, श्री आभा गाधी, श्री कनु गाधी वगैरा बहुत लोग थे। बापा भी अपने अेक-दो साथियोको लेकर अुनके साथ गये। गाधीजी कलकत्तेमे अेक सप्ताह रहे। अुस सारी मडलीके साथ ता० ६ को विशेष ट्रेनमे गोआलदो गये। वहासे स्टीम लाचमे चादपुर और वहासे फिर रेलगाडीमे बैठकर नोआखली जिलेके प्रथम केन्द्र चौमुहानीमे पहुचे। अुस समय सतीशबाबूका दल अुनके साथ था। सरकारकी तरफसे मुस्लिम लीगके चार सदस्य भी साथ थे और बापा तथा अुनके साथी भी गाधीजीकी मडलीके साथ ही थे।

चौमुहानीमे नोआखलीके भीषण हत्याकाडके बहुतसे समाचार अुन्हे मिले। वहा अनेक प्रकारके लोग गाधीजीसे मिलने आते और अपने अपने प्रदेशकी, गावकी और कुटुम्बकी बाते कहते थे। श्रीमती सुचेता कृपालानी भी अुनसे अिस गावमे आकर मिली और दत्तापाडा तथा आसपासके अिलाकेके ब्यौरेसे गाधीजीको परिचित किया। १० तारीखको वे गाधीजीको दत्तापाडा ले गअी। वहा वे कअी दिनसे छावनी डालकर बैठी हुअी थी। गाधीजी वहा पाच छ दिन ठहरे और दत्तापाडा, नदीग्राम तथा आसपासके बहुतसे गावोमे घूमे। गावोमे हुअी खानाखराबी, जले हुअे घर, टूटी हुअी सडके और लुटे हुअे मनुष्य प्रत्यक्ष अुन्होने देखे, लोगोके मुखसे अुनकी दुःखभरी कहानिया सुनी और अुन्हे आश्वासन और सहायता देकर निर्भय बननेका सदेश दिया।

अिन सब प्रवासोमे बापा बापूकी छायाकी तरह ही अुनके साथ रहते थे। बापू पैदल जाते तो वे भी पैदल जाते। बापू जब दिनके भागमे अनेक मुलाकातियोको मुलाकाते देनेमे और दूसरे कामोमे लगे रहते, तब बापा भी अपना नियत कार्य करनेमे लग जाते। देहातमे वे नये नये आदमियोसे मिलते, अुनकी बाते सहानुभूति और प्रेमसे सुनते और हत्याकाडके ब्यौरे अिकट्ठे करते। बगाल सरकार, भारत सरकार, हरिजन-सेवक-सघ वगैराके साथ पत्रव्यवहार तो अुनका जारी ही रहता।

बापा जो भी काम अपने हिस्से आता अुसे पूरी कर्तव्य-बुद्धिसे पूरा करते और गाधीजीका बोझा कैसे हल्का हो, यह देखनेकी कोशिश करते। सुबह-शाम प्रार्थना होती अुस समय भी वे गाधीजीके पास ही बैठते। प्रार्थनाके बाद गाधीजीका प्रवचन होता, अुसका अेक अेक शब्द ध्यानसे सुनते और दिलमे अुतारनेका प्रयत्न करते। सध्याका वह दृश्य अनुपम होता था। चारो ओर जहा हिसा, आग, वैरभाव और लूटमारका वातावरण फैल

गया था, वहा ये दो वुजुर्ग अहिंसा, प्रेम, करुणा और निर्भयता द्वारा जले-भुने वातावरणमे शीतलता और शान्ति फैलाते थे।

१५ तारीखको गाधीजी काजिरखिल पहुचे। अेक दिन वहा वगाल सरकारके लीगी मत्री जनाव शम्सुद्दीन, जनाव हसन सुहरावर्दी तथा दूसरे सरकारी अफसर गाधीजीसे मिलने आये। अुनके साथ शान्ति समिति स्थापित्त करनेके मामलेमे चर्चा हुअी, परन्तु अुसका कोअी परिणाम नही निकला। अिसलिअे गाधीजीने अेक नया कदम अुठाया। अुन्होने काजिरखिलकी छावनी तोड डाली और छावनीके सव साथियोको अलग अलग गावमे जाकर अकेले बैठनेकी आज्ञा दी। अपने लिअे भी अुन्होने अेक गाव चुन लिया और वहा अकेले रहनेका निश्चय किया।

अुस समय गाधीजीके साथ श्री कनुगाधी, श्री आभागाधी, श्री प्यारेलाल, डॉ० सुशीला नय्यर, श्रीमती सुशीला पै, श्री प्रभुदास तथा श्री विट्ठलदास रेडियोवाला थे। अिन सवका साथ अुन्होने छोड दिया और अपने साथ केवल परशुराम स्टेनोग्राफर और वगलाका अनुवाद करके लोगोको समझानेके लिअे प्राध्यापक निर्मलकुमार वसुको रखा।

अुस दिन वापाने वापूके साथ वहुत वहस की। खास तौर पर वहनोको अकेली रखनेके विरुद्ध अुन्होने अेतराज अुठाया। आभा गाधीकी युवावस्थाका निर्देश करके कहा कि अैसी वहनोको देहातमे अकेली रखना वडे खतरेका काम होगा। और किसीको नही तो कमसे कम अिन सव वहनोको साथ ले जानेके लिअे गाधीजीको वहुत समझाया परन्तु गाधीजी जरा भी न पिघले। वे अहिसाकी वहुत अूची भूमिकासे सारे प्रश्नको देख रहे थे। अुन्होने वापाको अिस आशयका जवाव दिया

"आपको तो आभाकी चिन्ता हो रही होगी, परन्तु मुझे अिस प्रदेशके अरक्षित गावोमे रहनेवाली सैकडो और हजारो वहनोके सवालकी चिन्ता हो रही है। अुन सवकी रक्षाका क्या होगा? हम जव दूसरी वहनोको निर्भय वननेका अुपदेश देते है और जोर देकर कहते है कि वे निर्भय वनकर अपने आपको अधिक सुरक्षित रख सकेगी, तव हमे भी अुनकी स्थितिमें रह कर अपने आपको कसौटी पर चढाना होगा।"

वापा गाधीजीका दृष्टिकोण समझते थे और अुसकी कद्र भी कर सकते थे, अिसलिअे अुनसे वहस करनेकी तो वात ही नही थी। फिर भी अहिसाकी अितनी अूची भूमिकासे प्रयोग करनेके लिअे वहनोको, और खास तौर पर जवान अुम्रकी स्त्रियोको, अुन दिनोमे और अुस परिस्थितिमे

अकेली रखनेका खतरा अुठाने देनेको वे तैयार नही थे। अुनकी विचार-सरणी कुछ अिस प्रकारकी थी 'बापू तो समर्थ पुरुष ठहरे। वे अूची भूमिकासे विचार कर सकते है और व्यवहार भी कर सकते है। पर हम तो अिस दुनियाके मामूली आदमी है, हम अपनी शक्तिके अनुसार ही कदम अुठायें।' वे सोचते थे, देहातमे जवान अुम्रकी बहनोको अकेली रख दे और समय पाकर गुडे न करनेका काम कर बैठे तो? बहनोको वे मार डाले, अिससे बापा जरा भी नही घबराते थे। परतु गुडो द्वारा अुन पर अत्याचार होने अथवा अुन्हे जबरन् अुठा ले जाकर अुन पर न करने लायक जुल्म गुजारनेका अुन्हें पूरा डर था। अिसलिअे वे गाधीजीकी बातसे पूरे सहमत नही हुअे। और काफी चर्चा और अनुनय-विनयके बाद आभा गाधी और अैसी ही दूसरी बहनोको गाधीजीके पास नही तो अपने पास रखनेमे गाधीजीकी अनुमति प्राप्त कर सके। परिणामस्वरूप बापा श्रीमती मालती चोधरी, आभा गाधी और अन्य बहनोको अपने चुने हुअे केन्द्रमे साथ ले गये।

गाधीजीने काजिरखिलकी छावनी बिखेर कर हरअेकको अपना-अपना कार्यक्षेत्र चुन लेनेकी सूचना दी, तब बापाने नोआखली जिलेका चर प्रदेश पसन्द किया। क्योंकि अिस अिलाकेमे हरिजनोकी सख्या बहुत बडी थी। अथवा यो कह लीजिये कि आबादीका बहुत बडा भाग नामशूद्र हरिजनोका ही था। अिस प्रदेशमे जुल्म भी भयकर किया गया था और अुसके ज्यादा शिकार ये बेचारे हरिजन ही हुअे थे। वह भयकर जुल्म कैसा था, यह घटनाओके तुरत बाद ही सकटग्रस्त प्रदेशमे घूमकर स्वय ही निरीक्षण करके आये हुअे आचार्य कृपालानीके शब्दोमे देखिये

"चरहाम गाव और अुसके आसपासके अिलाकेमे लगभग २०,००० नामशूद्र (हरिजनोकी अेक जातिविशेष) रहते है। अिस सारे गावको नष्ट कर दिया गया था। वहाके अधिकाश घर जला दिये गये थे। लोग जले हुअे घरोके काठ-कबाडे और टूटे-फूटे सामानसे बनाये हुअे मडपो और छप्परोके नीचे रह रहे थे। अुनका माल-असबाब पूरी तरह लूट लिया गया था। हमलावर नकद रुपया, गहने, कपडे, बर्तन-भाडे और ढोर-डगर, जो भी हाथ लगा, सब लूट कर ले गये थे और घरमे कुछ भी बाकी नही छोडा था। घरके पुरुषो और स्त्रियो पर केवल पहने हुअे कपडे ही छोडे थे। अुनके शरीरके कपडोके सिवाय लुटेरोने और कुछ बाकी नही रहने दिया था। अुनके पास खानेको अन्न नही था। अुनकी स्थिति अत्यत दयाजनक थी। यहा हत्याकी घटनाअे भी हुअी थी। परतु हमारे पास जो समय था अुतने थोडे समयमे

हत्याओंका आकडा निश्चित करना सभव नही था। अपहरणकी घटनाअे होनेकी वात हमे कही गअी थी। लूटखसोट करनेके वाद और घरोको आग लगानेके वाद कुटुम्बके तमाम आदमियोको जवरन् मुसलमान वनाया गया था और अुनसे नमाज और कलमा पढवाया गया था। अुनमे से कुछको लुगी और सफेद टोपी (जैसी अुधरके मुसलमान पहनते है) दी गअी थी। अुनके हिन्दू नाम वदलकर मुसलमान नाम रखे गये थे। घरोमे रखी हुअी भगवानकी सव मूर्तिया तोड डाली गअी थी और मदिरोमे लूटपाट मचाकर अुन्हे नष्ट कर दिया गया था। स्त्रियोकी सौभाग्यकी शखचूडिया तोड डाली गअी थी और माथेकी मागका सिंदूर मिटा दिया गया था।"

जहा अैसी भयकर परिस्थिति फैली हुअी थी, अुस चरमडलमे जाने और वहाके निराधार और दुखी वने हुअे नामशूद्रोके वीच वसनेका वापाने निर्णय किया। अुनके अिस चुनावके वारेमे गाधीजी अपनी दूसरी पैदल यात्राके समय जव हेमचर गये तव प्रार्थना-सभामे यो वोले थे

"जिस तरह वृक्ष और लताये स्वाभाविक प्रेरणासे सूर्यकी ओर मुह फेर लेती है अुसी तरह वापाने भी अिस प्रदेशको स्वयस्फूर्तिसे प्रेरित होकर अपने कार्यक्षेत्रके रूपमे पसन्द कर लिया है।"

२० तारीखको ११ वजे वापू नौकामे वैठ गये। सवने अश्रूपूर्ण नेत्रोसे वापूको विदा दी। कितनी ही वहने रो पडी। आभा देवी वगैरा भी खूव रोअी। अुसके वाद दोपहरको अेक वजे वापा भी अपने नियत किये हुअे स्थान पर जानेको निकल पडे। अिस सवयका कार्यक्रम पहलेसे ही तैयार हो चुका था। साथमे अरुणाशु डे, आभा गाधी, मनोज फोटोग्राफर तथा लक्ष्मीपुरके सुधामय घोष थे। रास्तेमे रामपुर होकर देवीपुर गये। वहा रायवहादुर प्यारेलालजी नामक अेक जमीदारने अपनी माताको गुडोके हाथोमे पडनेसे वचानेके लिअे अपने ही हाथो अुन्हे गोली मार कर वादमे खुद भी गोली खाकर किस प्रकार आत्महत्या की, अिसका रोमाचक किस्सा सुना। अिसी प्रकार रायपुरके दारोगाके, जिसे जवरदस्ती मुसलमान वनाया गया था, मुहसे नवद्वीप पडित नामक अेक व्यापारीको रस्सीसे वाधकर औधा लटका कर तथा अुसके हाथ-पैर वगैरा अेक अेक अवयव काटकर अुसे कैसी क्रूरतासे मार डाला गया, यह वात भी सुनी। वहासे वापा और अुनकी मडली दलाल-वाजार पहुची। वहा अेक वडे जमीदारका राजहमल जैसा आलीशान मकान विध्वस्त हालतमे देखकर वापाको गुडोकी विध्वसलीलाकी कल्पना हुअी। अिस प्रकार घूमते-घूमते और अलग अलग गावोमे गुडो द्वारा की हुअी खाना-खराबी देखते देखते वापा अन्तमे अपने चुने हुअे चरमडलमे जा पहुचे।

चरमडल चरप्रदेशका ही अेक गाव है। सारा जिलाका तीस मील लवा ओर छ सात मील चौडा हे। वह मेघना नदीके पूर्वी किनारे पर स्थित लक्ष्मीपुर थानेसे शुरु होकर त्रिपुरा जिलेके चादपुर थाने तक फैला हुआ है। अिस सारे प्रदेशमे सव नामशूद्र ही रहते हैं। अन्य जातियोके लोगोकी सख्या तो नहींके वरावर है। चरमडलमे नभ, पटणी और दास जातिया भी हैं।

वापाने चरमडल जाकर देखा तो अुन्हे विश्वास हो गया कि आचार्य कृपालानीने अिस प्रदेशके वारेमे जो विवरण दिया था वह अक्षरश सच था।

चरमडलमे सभी लोगोको भ्रष्ट कर दिया गया था और सवको मार मारकर वलात् मुसलमान वना लिया गया था। यहा भी स्त्रियोके हाथोकी सौभाग्यकी शखचूडिया तोड डाली गअी थी और मागका सिदूर पैरोके जूतोसे मिटा दिया गया था। स्त्रियो पर अत्याचार भी किया गया था। खुद चरमडलमे दो आदमियोको जानसे मार डाला गया था। अुनके हरि-मदिरोको नष्ट कर दिया गया था। अुनके मकानोको आग लगाकर जला दिया गया था। लोग भयसे अितने डर गये थे कि भजन-कीर्तन करना भी अुन्होने छोड दिया था। पुरुषोको लुगी पहना दी गअी थी और अुनके नाम भी वदल डाले गये थे।

यह सव अवस्था वापाने अपनी आखो देखकर सव व्यौरे अिकट्ठे करके अिस सवधमे दो पत्र अखवारोमे छापनेके लिअे भेजे। वे पत्र लवे होनेसे पूरे तो नही छपे, परतु अुनका थोडा वहुत अश जरूर छपा।

अिन पत्रोमे नोआखली काण्ड शुरु होनेके वाद चरमडलके लोगोकी क्या हालत हुअी, मुसलमानोने कैसा अत्याचार किया, अफसरोने कैसी अुपेक्षा की और ठोस तथ्य तथा व्यौरे पेश करने पर भी कुछ शरारती तत्त्वोके विरुद्ध कैसे जानवूझकर कार्रवाअी नही की, अित्यादि हकीकते प्रगट की गअी थी और सरकारकी नीतिकी आलोचना की गअी थी। चरमडल पहुचते ही वापाने तेजीसे कार्यारभ कर दिया। अुन्होने सवसे पहले तो वहाके घरोको आग और लूटपाटके कारण जो भी नुकसान हुआ था अुसके व्यौरे, तथ्य और आकडे अिकट्ठे करने और मुस्लिम गुडागिरीके शिकार वने हुअे लोगोकी करुण कथाओके वयान लेनेका काम हाथमे लिया। शुरुमे गुडोके डरके मारे कोअी वयान देने नही आया। किसीको अिस सवधमे प्रश्न पूछा जाता तो वह जवाव भी नही देता था। परतु धीरे धीरे वापाने अुन लोगोको हिम्मत वधाअी, विश्वास दिलाया और प्रार्थनाके वादके प्रवचनोमे मनसे डर निकाल डालनेका अुपदेश दिया। अिससे वातावरणमे वडा फर्क पडा और वहुत

लोग बयान लिखवानेको सामने आ गये। लगभग चालीस कैफियते तो लोगोने शुरूके अेक-दो दिनमे ही दे दी।

अिन सब कैफियतोके ब्यौरे सुनकर बापाको बडा आघात लगा। अैसे अमानुषी काम करनेवाले मुसलमान गुडो पर अुनका पुण्यप्रकोप भडक अुठा। शामको रोज प्रार्थनाके बाद गाधीजीकी तरह बापा भी प्रवचन करते, तब अिन निर्दोष लोगो पर असह्य जुल्म गुजारनेके लिअे खुले तौर पर ही वे गुडो पर फटकार बरसाते, और अुसमे न किसीके प्रभावमे बहते और न किसीका डर रखते।

टुकुमिया नामक अिस प्रदेशका अेक नामी गुण्डा था। अुसने हिन्दू जाति पर और खास तौर पर नामशूद्रोकी बिलकुल गरीब और दबी हुअी जाति पर खूब जुल्म और अत्याचार किये थे। अुसके हाथो हत्याअे भी हुअी थी। बापाके पास अुसके बारेमे जो तथ्य आये थे अुन परसे अुन्होने प्रार्थना-प्रवचनमे अुसे खूब आडे हाथो लिया और फटकारा। यह सब बात टुकुमियाके कानो पर पडी। अिसलिअे अुसने अेक दिन सध्याके समय बापाको किसी आदमीके द्वारा कहलवाया कि, 'यह बुड्ढा मेरे जैसेकी आलोचना करता है, परतु मै दो तीन दिनमे ही अुसका सिर धडसे अलग कर दूगा।'

अिस बातकी खबर बापाकी छावनीमे लगी, तो सब चिन्तामे पड गये। क्योकि वे सब टुकुमियाकी अकड, बैरवृत्ति और निर्दयताको अच्छी तरह जानते थे। छावनीके कितने ही भाअी-बहनोको लगा कि किसी समय बापा बेचारे बाहर बासवनमे टट्टी जाय अथवा कदलीवनमे घूमने जाय, तब वह आदमी आकर बापाकी हत्या कर दे तो क्या होगा। परतु बापाको तो अिसका लेशमात्र भी डर नही था। बापाके पास जब यह बात आअी तो अुन्होने अुसी दिन प्रार्थना-सभामे खुले तौर पर टुकुमियासे कहलवाया कि, 'अच्छी बात है, टुकुमियाको मेरा सिर धडसे अलग करना है न? तो भले ही आये। मेरे पास अिन दो खाली हाथोके सिवाय कुछ नही है। खुशीसे आये और साहस दिखाये।' अिस खुली चुनौतीके बाद दो तीन दिन बीत गये, परतु टुकुमिया अुधर फटका तक नही।

अिस टुकुमियाके अत्याचारो और जुल्मो सबधी ढेरो ब्यौरे अिकट्ठे करके बापाने वहाके अधिकारियोको पत्र भेजे और यह राय देकर कि अैसे भयकर मनुष्यको आजाद नही रखना चाहिये अुसे गिरफ्तार करने और अुसके खिलाफ सख्त कार्रवाअी करनेकी सिफारिश की। परतु स्थानीय अधिकारियोने बापाकी अिन तहरीरो पर विशेष ध्यान नही दिया और

अन्त तक टुकुमियाको नही पकडा। क्योकि अधिकाश अधिकारियोके हाथ टुकुमियाने रुपयेसे बाध दिये थे।

चरमडलमे बापा दस दिन रहे। अिस अर्सेमे बापाने सुबह जल्दी अुठकर रातको देर तक जागकर खूब काम किया। अेक ओर बापा लोगोके बयान अिकट्ठे करके और सरकारी अफसरोसे सम्पर्क रखकर अुनसे न्याय प्राप्त करनेकी कोशिश करते थे, दूसरी तरफ महात्माजीको अिस बारेमें रत्ती-रत्ती जानकारी देकर पूरे परिचित रखते थे, तीसरी ओर स्थानीय गावोमें सहायता-कार्य शुरू करते ओर मारवाडी रिलीफ सोसायटी तथा अिसी तरहकी दूसरी परोपकारी सस्थाओसे कपडे, दवाअे, अन्य चीजे वगैरा जुटाकर लुटे हुअे ओर निराधार बने हुअे नामशूद्रोको पहुचाते, चोथी तरफ सहायता-कार्य सबधी व्यवस्था करते, अलग अलग स्वयसेवकोको काम बाटते तथा पुराने, अनुभवी और निडर कार्यकर्ताओको नोआखली सबधी परिस्थिति प्रगट करनेवाले पत्र लिखकर अुन्हे सहायता-कार्यके लिअे बुलाते।

चरमडलमे अुन्होने मारवाडी रिलीफ सोसायटीके लक्ष्मीपुर नामक केन्द्रमे बोरिया, कपडे ओर दूसरी चीजे मगवाकर वहाके सकटग्रस्तोमे बाटी। अिसके अलावा, बनारससे पेटी भरकर पूजाका सामान, कुकुमकी शीशिया वगैरा मगाया। कलकत्ता और दूसरे स्थानोसे बगालकी स्त्रियोके लिअे पहननेकी सौभाग्यकी शखचूडिया मगाअी और यह सब अुन्होने मुसलमानोसे दबकर भयभीत बनी हुअी अुन स्त्रियोको दी, जिन्होने गुडोके डरसे चूडिया पहनना और माथेमे सिदूर लगाना बन्द कर दिया था। बापाने अुन्हे आश्वासन और साहस दिलाकर डर छोड देनेका अनुरोध किया। अिसके सिवाय, नामशूद्रोके जिन जिन हरिमदिरोका नाश कर दिया गया था, अुन्हे रुपया देकर फिरसे बनवाया, अुन्हे झाझ, पखावज और वाद्य तथा पूजाका सामान दिया। अिससे भय तथा आतकसे श्मशानवत् बनी हुअी भूमि फिर अीश्वरके नाम-कीर्तनसे गूज अुठी।

वहा बापा लगभग दस दिन रहे। अिसके बाद वहाँमे ३० तारीखको नावमे बैठकर गय्याचर गये। अुस समय नहरमे पानी भी थोडा था, अिसलिअे नाव खीचकर चलानेमे बडी मुश्किल हुअी। ग्यारह मीलका सफर करके शामको गय्याचर पहुचे। वहा नियमानुसार शामकी प्रार्थना की और प्रार्थनाके बाद प्रवचन किया। गय्याचरमे पद्रह मनुष्योको जानसे मार डाला गया था और अुनके शव अुनके मकानोके सामने ही खड्डे खोदकर गाड दिये गये थे। साथ ही गय्याचर और आसपासके गावोमे भी मुसलमानोने हरिमदिरोको नष्ट किया था। बापाने वहा हरिमदिर पुनर्रचना समिति स्थापित की और

अुसके द्वारा प्रत्येक गावमे आर्थिक सहायता देकर हरिमदिर वनवाये। अिसके सिवाय जिन लोगोको जानसे मार डाला गया था, अुनकी विधवाओको प्रति मास आर्थिक सहायता भिजवानेका प्रवध किया, और अिसके पाच वर्ष तक जारी रहनेकी पक्की व्यवस्था कर दी। गय्याचरमे आकर वापाने अेक और सार्वजनिक वक्तव्य दिया। अुसमे चरमडलमे मुसलमानोके अुत्पातके कारण कितनी हानि हुअी थी, अिसके तथ्य और व्यौरे आकडो-सहित दिये। हेमचरमे काम करते करते अेक-दो वार वापाको हृदयरोगका दौरा भी हुआ था। वीचमे वीमार भी खूव हो गये। तव अुन्हे गाधीजीकी छावनीमे वुलवा लिया गया। जिस दिन वे नावमे वैठकर वापूकी छावनीमे पहुचे, अुसी दिन अुन्हे १०४ से १०५ डिग्री तक तेज वुखार आया। वहा गाधीजीने वडे ध्यानसे अुनकी सेवा-शुश्रूषा करवाअी, और अुन्हे अच्छा कर दिया। वापाका स्वास्थ्य सुधरनेके वाद अुन्हे जरूरी कामसे दिल्ली जाना पडा। वहा तदुरुस्ती भी ठीक हो जायगी और काम भी निपट जायगा, अिस हिसावसे वापाने अेक महीना ठहरनेका निश्चय किया। अिस प्रकार वे दिल्ली पहुचे। अुस समय अुनके दिल्लीके मित्र और साथी कार्यकर्ता वापाका स्वास्थ्य देखकर चौक अुठे थे। वे दुवारा नोआखली न जाकर दिल्लीमे ही आराम करने और स्वास्थ्य अच्छा कर लेनेको अुन्हे समझाते थे। जो कोअी अुन्हे अैसी सलाह देता अुसे वापा सुन लेते और हसकर वात टाल देते। जव दिल्लीका अुनका काम पूरा हो गया, तव वे फिर नोआखली जानेकी तैयारी करने लगे।

यह खवर साथी कार्यकर्ताओको लगी तो सव वडी चिन्तामे पड गये। परतु वापाको कौन समझाये? अुन्हे आग्रह करके कौन रोके? अन्तमे यह वडा काम पडित हृदयनाथ कुजरूने अपने सिर लिया। अुन्होने वापाके साथ अिस विषयकी रूवरू चर्चा करनेके वजाय अेक पत्र लिखकर नोआखली न जानेके लिअे अुनसे भावनापूर्ण अनुरोध किया। अुस पत्रमें अुन्होने लिखा था

"मेरे प्यारे वावाजी,

"जवसे मैंने आपके मुहसे यह वात सुनी कि आप १ फरवरीको नोआखली जानेवाले है, तवसे मेरे दु खका पार नही रहा। ज्यो ज्यो मैं अिस वारेमे विचार करता हू, त्यो त्यो मुझे अधिकाधिक महसूस होता है कि वावाजी, आपके पास जो थोडी-वहुत शक्ति वच रही है, अुसे आप व्यर्थ खर्च करके अनावश्यक जोखिम अुठा रहे हैं।

“आपका स्वास्थ्य अभी पूरी तरह सुधरा नही है और शरीरमे पूरी शक्ति भी नही आओी है। अितमे ज्यादा दुवले और फीके मैंने पहले आपको सिर्फ अेक ही वार देखा है। नोआखलीमे आपके साथी अुत्तम काम कर रहे हैं। साथ ही वहा अैसा कोओी नया प्रश्न खडा नही हुआ, जिसमे आपकी मोजूदगीकी जरूरत हो। अिसके सिवाय अनुसूचित और अर्ध-अनुसूचित जातियोके भविष्य पर विचार करनेके लिअे नियुक्त सलाहकार-समितिकी अुपसमितिकी बैठक फरवरीके तीसरे सप्ताहमे होनेकी सभावना हे। मेरे विचारसे निकट भविष्यमे यह सवसे जरूरी काम हैं, जिसमे आपकी अुपस्थिति अनिवार्य हैं। आपके पास जो थोडीसी शक्ति वची हे, मेरा अनुरोध हे कि अुसे आप अिस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिअे सचित करके रखें। अिसलिअे आपके स्वास्थ्यके कारण ही नहीं, परतु आपके सामने पडे हुअे कामके कारण भी आपका थोडे समय दिल्लीमे रहना जरूरी हो जाता है। अिसलिअे अभी तुरत नोआखली जानेका विचार छोड देनेकी मैं आपसे प्रार्थना करता हू। मुझे विश्वास हे कि आप मेरी वात पर ध्यान देंगे और अधिक नही तो अेक-दो सप्ताह तक दिल्लीमे रहकर आराम करेंगे। आशा है अैसा करके ही आप देशका, हरिजनोका और समाजका कल्याण कर सकेंगे।

आपका सच्चा मित्र
हृदयनाथ कुजरु”

अैसा प्रेम और भावनापूर्ण पत्र ओर वह भी पडित हृदयनाथ कुजरु जैसे महान व्यक्तिसे मिलनेके वाद आम तौर पर अुनके अनुरोधको अस्वीकार करनेका साहस नही होता। परतु वापा नोआखलीकी घटनाओंको साधारण नही मानते थे और अिसीलिअे पडितजीके ममता और भावनापूर्ण अनुरोधको अस्वीकार करके अुन्होने वापस नोआखली जानेका निश्चय किया और पडितजीको अिस प्रकार अुत्तर दिया

“मेरे प्यारे हरिजी,

“नअी दिल्लीसे २९ जनवरी, १९४७ को लिखे हुअे और रामशकर द्वारा भेजे हुअे आपके प्रेमभरे पत्रके लिअे धन्यवाद। मेरी समझमे नही आ रहा है कि आपके अत्यन्त प्रेमपूर्ण पत्रका जवाव कैसे लिखा जाय। शायद रामशकरने आपको वताया होगा कि अपने सदाके हठीले स्वभावके अनुसार मैंने आज रातको ही पूर्वी वगालकी यात्रा पर रवाना होनेका निश्चय किया है।

"अिसके लिअे मेरे पास कारण अेक नही, अनेक है। पहली बात तो यह है कि मैंने वहा अपने सब मित्रोको वचन दिया था कि मै दिल्ली केवल अेक ही महीने (जनवरी) के लिअे जा रहा हू और फरवरीके पहले सप्ताहमे लौटकर काम सभाल लूगा। दूसरे, मै वापस न जाअू तो वहा मे जिन जिन मित्रोके साथ काम करता था और जो मेरी प्रतीक्षा कर रहे होगे, अुनके प्रति बेवफा ठहरूगा। तीसरे, मुझे वहा जाते ही तुरत तमाम रुपया चुका देना है और वहाकी बहुतसी जरूरतोको पूरा कर देना है। चौथे, गाधीजी मेरे कार्यक्षेत्रमे १९ फरवरीको आनेवाले है और वहा रहकर आसपासके अिलाकेमे कोअी आठ दिन तक दौरा करनेवाले है। अुस समय मै गैरहाजिर नही रह सकता।

"अिन कारण मुझे दिल्ली छोडना पडेगा और ७ फरवरीको वहा पहुच ही जाना होगा। सविधान-सभाकी अनुसूचित जातियोकी अुपसमितिकी बैठक कब होगी, यह मुझे मालूम नही। साथ ही अुस समितिके सदस्यके नाते मेरी नियुक्तिका पत्र भी मुझे नही मिला। परतु मान लीजिये कि मेरी नियुक्ति हो गअी तो भी मै अुस बैठकमे अुपस्थित रहनेको लगभग फरवरीके अन्तमे आ पहुचूगा। मै समझता हू कि यह कोअी बहुत देर नही कही जायगी।

"अिन सब बातोको ध्यानमे रखकर मुझे आपको सूचित करना चाहिये कि मुझे वहा जाना ही होगा। मै फरवरीके अन्तमे या अुसके आसपास किसी दिन यहा लौट आअूगा। परतु यह निश्चित है कि मुझे वहा जाना पडेगा। अिसमे अब अधिक देर करना व्यर्थ है। आप समझते है अुससे मेरी तबीयत अब बहुत ज्यादा अच्छी है। और अब तो मेरे साथ हमेशा अेक (और अिस बार दो) आदमी रहता है, अिसलिअे मुझे रास्तेमे किसी प्रकारकी अडचन नही होगी।

"आशा है आपकी सलाह पर ध्यान न देनेके लिअे आप मुझे क्षमा करेगे।

आपका सच्चा मित्र
अमृतलाल वि० ठक्कर"

अिस प्रकार बापा अपने निश्चयानुसार फिर नोआखली गये और वहा जाकर अुन्होने अपना काम शुरू कर दिया। अुनकी अनुपस्थितिमे शचीन्द्रनाथ मित्रने, जिन्हे वे काम सौप गये थे, बहुत ही अच्छे ढगसे काम चलाया था। यह देखकर बापा अुन पर बहुत ही प्रसन्न हुअे और

अुनके बीच पिता-पुत्रका-सा संबंध स्थापित हो गया। बापाके प्रति शचीनबाबूकी भी खूब प्रीति और भक्ति थी। वे कलकत्तामें रहकर यों तो कांग्रेसका काम करते थे, परन्तु बापाने अुन्हें गांवोंमें जानेकी प्रेरणा दी थी और शचीनबाबूने अुनकी सलाहके मुताबिक काम करनेका निश्चय किया था। बापाने शचीनबाबूके साथ मिलकर यह तय किया था कि नोआखलीका काम पूरा होनेके बाद वे अपने प्रिय शिक्षा-क्षेत्रमें काम करें और खास तौर पर ग्राम प्रदेशमें काम करें। अैसा करनेसे पहले अेक वर्ष तक भारतका दौरा करके सारी शिक्षा-संस्थाओंको देख लें। अिसके लिअे बापा अुन्हें थोड़ी आर्थिक सुविधा कर दें। अिसके अनुसार कार्यक्रम भी बन गया था। मगर अुस पर अमल शुरू होनेसे पहले ही कलकत्तामें सितम्बर मासमें हिन्दू-मुस्लिम दंगा हो गया। अुसमें दोनों जातियोंके लोगोंको बचाने और अुपद्रवको शान्त करनेकी कोशिश करते हुअे वे गुंडोंकी छुरियोंके शिकार होकर ३ सितम्बरको शहीद हो गये। वे जीते रहते तो बापाको अेक अुत्तम कोटिके साथी और अुत्तराधिकारी मिले होते। परन्तु वे चले गये और साथमें बापाके मीठे संस्मरण ले गये।

पंद्रह दिन बाद गांधीजी नोआखली आनेवाले थे। अिसलिअे बापाने अुनके स्वागतकी तैयारियां शुरू कर दीं। अिसके अलावा सहायता कार्य तथा निर्वासितोंको आश्वासन और धीरज दिलानेका काम दुगुने जोशसे चालू कर दिया।

बापाने अपने नोआखली जिलेके निवासकालमें अितनी जीर्ण अवस्थामें भी चौदह चौदह घंटे या अुससे भी अधिक समय काम किया था। कामका प्रकार बदलता रहता, परन्तु काम तो दिन भर चालू रहता। अुनके दिन कितने खचाखच कार्यक्रममें भरे रहते थे, अिसका अंदाज अुनके अेक दिनके काम और डायरी पर नजर डालनेसे होता है।

बापा रोज सवेरे पांच बजे अुठते और अीश्वरका नाम लेकर प्रातःकर्मसे निपटकर साढ़े पांच बजे प्रार्थना करते। फिर काममें लग जाते। प्रार्थनाके बाद कामका बंटवारा कर देते, अुसमें गांधीजी अिस जिलेमें आनेवाले थे अिसलिअे अुनके वास्ते रास्ता बनवानेका काम, लकड़ियां लानेका काम, भोजन बनानेका काम, गांवमें झाड़ने-बुहारनेका काम, राशन तथा कपड़ा बांटनेका काम — अिस प्रकार अलग अलग कार्यकर्ताओंको अलग अलग काम सौंप देते थे। प्रत्येक आदमीको कुछ घंटे घर घर घूमकर जुल्मोंकी जांच और आंकड़े जुटानेका काम रहता था। यह काम लगभग दोपहर तक होता रहता। बापा भी किसी न किसी काममें लगे ही रहते। दोपहरको सबके

साथ भोजन करते। वहा निरामिषाहारी और मासाहारी दो भोजनालय थे। बापा खुद पक्के हिन्दू होते हुअे भी बगालियोके लिअे मछलीकी चीजे बनती अुसका विरोध नही करते, बल्कि अुदारतासे बनने देते। दोपहरके बाद हरिजन-सेवक-सघ, कस्तूरबा ट्रस्ट, भील-सेवा-मडल, आदिम जातियोकी अन्य सस्थाओ तथा कार्यकर्ताओके साथ अुनका विस्तृत पत्रव्यवहार होता था। अिसके सिवाय नोआखलीके प्रश्नोके सबधमे भी अुनका गवर्नरसे लगाकर वाअिसरॉय तक और जवाहरलालजी तथा सरदार पटेलके साथ पत्रव्यवहार होता रहता था। जहा जहासे मदद मिलती, वहा वहा वे अमीरो, सेठो और सस्थाओको पत्र लिखते तथा रुपया और कार्यकर्ता जुटानेका प्रयत्न करते। यह काम पूरा होते ही घर घर घूमने और बयान लेने तथा स्त्रियो और निराधार बने हुअे लोगोको आश्वासन देनेका काम भी वे करते थे। शामको प्रार्थनाके समय तक यह काम होता रहता। प्रार्थनाके बाद प्रवचन करते। वे हिन्दीमे बोलते और शचीन्द्रनाथ मित्र नामक अेक बगाली देशभक्त युवक अुसका बगालीमे अनुवाद करते। रातके भोजनके बाद फिर वही पत्रव्यवहार और दूसरा काम जारी हो जाता। अिसके सिवाय स्वयसेवकोकी अलग प्रार्थना होती थी। अुस समय प्रत्येकसे कामका हिसाब लिया जाता था, और जिनका काम ठीक न होता अुन्हे अुलहना या आदेश दिया जाता था।

वहा बापा पर कामका बोझ बहुत रहता था, अिसलिअे वे पाच मिनट भी खराब नही करते थे। यह समझकर कि रोज हजामत बनानेमे कुछ मिनट बेकार जायेगे, अुन्होने नोआखलीमे रहे तब तक दाढी बढा ली थी। नोआखली छोडनेके बाद ही अुन्होने दाढी बनवाअी।

अिस प्रकार नोआखलीमे जब सैकडो कुटुम्ब खतरेमे पडे हुअे थे और नाजुक हालतमे दिन गुजार रहे थे, अुस समय बापा अुनके साथ रहकर अुनके दुःख और जोखिममे भाग लेकर अुनके लिअे खूब सहायक बन गये थे। नोआखलीमे गाधीजीने जो प्रयोग किया था वह क्रातिकारी था, जब कि बापाने जो काम किया वह मानवताकी दृष्टिसे, परोपकारकी दृष्टिसे किया था। परतु अुस कार्यका महत्त्व और अुपयोगिता जरा भी कम नही थी। अुससे सैकडो नही हजारो कुटुम्बोको — खास तौर पर स्त्रियो और बच्चोको राहत मिली। अन्न, वस्त्र और आश्रय मिला और अुनकी अिज्जतकी रक्षा हुअी। नोआखलीका अुनका काम अितिहासमे स्वर्णाक्षरोमे अकित रहेगा।

३२

कुष्ठरोगियोंके सेवकोंकी परिषद्का अुद्घाटन

भील-सेवा और हरिजन-सेवाकी तरह ही वापाके जीवनकी अेक और भी महत्त्वाकाक्षा थी। और वह थी कोढियो और रक्तपित्तवालोकी सेवा करनेकी, अिसके लिअे सस्था स्थापित करनेकी तथा अिस प्रश्नका अध्ययन करके देशके जीवटवाले आदमियोको अुसमे आमत्रित करनेकी। वापा वचपनमें अिजीनियरी विद्या पढकर अिजीनियर वननेके वजाय डॉक्टर वने होते तो कुष्ठ-रोगियोके लिअे अुन्होने कभीका चिकित्सालय खोल दिया होता। परतु अिस विषयमे वे अपनेको अज्ञान मानते थे। अिसलिअे जो कोअी यह काम करता, अुसे वे वडे सम्मानकी दृष्टिमे देखते और अुसे भरसक प्रोत्साहन और सहायता देते। हरिजन-सेवक-सघके मत्रीकी हेसियतसे जव अेक वार अुन्होने अपने लम्वे दौरेमे मिशनरियो द्वारा चलनेवाला अेक कोढियोकी सेवा करनेवाला आश्रम देखा, तभीसे अुनका ध्यान देशके अिस प्रश्नकी तरफ आकर्षित हुआ था। अुसके वाद तो अुन्होने अिस रोग, अुसकी चिकित्सा तथा अिस प्रश्नका समग्र रूपमे अध्ययन किया था। श्री टी० अेन० जगदीशन्को, जो दक्षिण भारतमें यह काम करते थे, अुन्होने अनेक वार सहायता दी थी।

अुनकी अिन सव सेवाओके परिणामस्वरूप और आदिवासियो तथा हरिजनोकी सेवाके द्वारा प्राप्त हुअी राष्ट्रव्यापी ख्यातिके कारण १९४७ में वर्धामे जव कुष्ठरोग निवारण कार्य करनेवालोकी परिषद् हुअी, तव परिषद्का अुद्घाटन अुन्हीके हाथो हुआ। अुस अवसर पर अुन्होने जो भाषण दिया वह वताता है कि अिस प्रश्नके वारेमे अुनकी समझ और अध्ययन कितना गहरा था।

"अिस परिषद्का अुद्घाटन करनेका कार्य, जो मेरे मित्र जाजूजीने मुझे सौपा है, करनेमे मुझे वहुत ही आनद होता है। पहले-पहल जव मुझे श्री जाजूजीकी तरफसे तार मिला, तव मैं मनमे हिचकिचा रहा था। मेरे मनमे खयाल आता था कि कुष्ठ-रोगियोकी सेवा-शुश्रूषा और देखभाल करनेवाला कोअी डॉक्टर ही यह काम करनेके लिअे अधिक योग्य होगा। अितने पर भी मैंने अिस परिषद्का अुद्घाटन करनेका काम जो स्वीकार किया है, वह अिस आशासे कि कुष्ठ-रोगियोकी सेवा-शुश्रूषा द्वारा अुन्हें

राहत पहुचानेका जो अुच्च कार्य है, अुसे मेरे यहा भापण देनेसे नही, परतु यहा पधारे हुअे विशाल जनसमूहसे और सबधित सेवाभावी लोगोसे वेग मिलेगा।

"सेवाके अिस विशेष क्षेत्रमे जिसे मैं अपना गुरु मानता हू, अुस कुष्ठ-रोगियोकी सेवा करनेवाले मिशनका मैं यहा आभार मानता हू। यह मिशन ही दुनियाभरमे पिछले ७२ वर्षसे काम कर रहा है। पिछले २० वर्षसे मैं अुसके वार्षिक विवरण खूब प्रेम और प्रशसाके साथ पढता रहा हू। अुस समयसे मैं अेक ही आशा रखता रहा हू कि हमारे देशके लोग कब यह काम करने लगेगे। वह दिन कब आयगा, अुसकी बाट देखता रहा हू। वह दिन आ पहुचा है, यह कहते आज मुझे हर्ष होता है। और आज मैं अिस मामलेमे पूरा सतोष अनुभव कर रहा हू। भारत अब विदेशी जुअेसे मुक्त हो गया है और भले अथवा बुरेके लिअे खुद ही अपनी मर्जीके मुताबिक अपने प्रश्न हल करनेको वह पूरी तरह स्वतत्र है। आपके जैसे अिस क्षेत्रमे लगे हुअे पुराने अनुभवी कार्यकर्ताओ और नये कार्यकर्ताओकी मददसे यह काम अब अधिक अच्छे ढगसे हो सकेगा। किसी भी प्रकारके विरोधके बिना मैं नि शक होकर यह कह सकता हू कि कुष्ठ-रोगियोकी सेवा करनेके अुद्देश्यसे अेकत्रित यह सबसे पहली लोकप्रिय परिषद् है। यह परिपद् अैसी है, जहा निष्णात और साधारण लोग अिस प्रश्नका सर्वसामान्य हल निकालनेके लिअे अिकट्ठे हुअे है।

"अलबत्ता, यह काम मुख्यत निष्णातोका ही है। फिर भी मेरे जैसे साधारण मनुष्योकी भी अिस काममे अधिक नही तो अुतनी ही जरूरत है। कारण, अिस रोगसे लोग प्लेगकी तरह ही चौकते और अुससे दूर भागते है। कुष्ठ-रोगको वे बडे तिरस्कारकी दृष्टिसे देखते है। बम्बअीके रास्तो और गलियोमे घूमते समय कोढके रोगवाले भिखारी मुझे अक्सर नजर आते, तब मैं अुन पर ध्यान दिये बिना रह नही पाता था और बम्बअीके अुपनगर माटुगामे स्थित अेक्वर्थ लेपर्स होम देखने जाता था।

"मुझे आशा है कि यह परिषद् अिसके बाद होनेवाली अैसी अनेक परिषदोकी पुरोगामी बन जायगी। और जैसा मैंने कहा है, ये परिपदे केवल डॉक्टरोकी नही, समाज-सेवकोकी भी होनी चाहिये। अिस दृष्टिसे अिस समय हो रही यह परिपद् अद्वितीय है। अिन समाज-सेवकोको और कार्यकर्ताओको देशभरमे भ्रमण करके अिसका खूब प्रचार करना चाहिये और लोगोको समझाना चाहिये कि यह रोग असाध्य नही है। दुर्भाग्यसे अिस समय सभी जगह यह सामान्य मान्यता फैली हुअी है कि यह रोग असाध्य है। अिस

खयालको प्रचार द्वारा और समझा-बुझाकर निर्मूल कर डालना चाहिये। साधारण लोग यह नही जानते कि अिस रोगके असरमे आये हुअे केवल २० फीसदी ही छूतके रोगवाले होते है और ८० प्रतिशत अुससे मुक्त होते है।

"अिसलिअे अिस मामलेमे मामूली आदमी भी बहुत कुछ कर सकते हैं और मेरे मित्र जगदीशन्‌की सेवाओने दक्षिणमे अिस दिशामे काफी काम किया है। अिस रोगसे लोग अितने ज्यादा चौकते है और अितने दूर भागते है कि जब कस्तूरबा ट्रस्टका मसौदा तैयार करते समय मैंने कुष्ठ-रोगी स्त्री-पुरुषोकी सेवा करनेकी धारा अुसके कार्यक्रममे सम्मिलित की, तब किसी आदमीने डरके मारे आश्चर्यचकित होकर कहा 'अरे, यह क्या! कस्तूरबा ट्रस्टमे कुष्ठ-रोगियोकी सेवा-शुश्रूषाका समावेश!' मैंने कहा, 'हा। हमारी स्त्रियो और बालकोको लगनेवाली बीमारियोमे यह भी अेक हे। जैसा आपको मालूम है, सौभाग्यसे गाधीजीने अिस रोगकी देखभालके कामको अपने अठारह तरहके रचनात्मक कार्यक्रमका अेक अग माना है। अिसलिअे मिशनकी तरफसे कुष्ठ-रोगियोकी सहायता और राहत पहुचानेके लिअे देशभरमे जो ७० के करीब सेवाकेन्द्र खुले हैं, अुनके अलावा अब छोटे छोटे दवाखाने और आश्रमगृह बडी सख्यामे खोले जायगे।'

"कुष्ठरोगकी देखभालके लिअे दो प्रकारकी विचारधारा फैली हुअी है। अेक विचारधाराके अनुसार कुष्ठ-रोगियोकी सेवा-शुश्रूषाके लिअे अैसे बडे बडे अस्पताल होने चाहिये, जिनमे ५०० से १,००० तक बीमार रखे जा सके। दूसरी विचारधाराके अनुसार अिस रोगके निवारणके लिअे गावोमे फैले हुअे छोटे छोटे दवाखाने होने चाहिये। अिन दवाखानोमे डॉक्टरों द्वारा रोगियोका अिलाज हो। अिसके सिवाय अिन लोगो पर व्यक्तिगत ध्यान भी दिया जाय। अिस मामलेमे तो अिस रोगके निष्णात ही पक्का निर्णय कर सकते हैं। फिर भी यहा मैं जो अेक बात कहना चाहता हू, वह यह है कि कुष्ठरोग क्षय जैसा शहरोका रोग नही, परन्तु गावोका रोग है। वह हमारे देशके अुद्योगके कारखानोमे पैदा नही होता। यह रोग शहरो और नगरोकी अपेक्षा देहातमे ही अधिक पैदा होता हे। अिसलिअे अुसकी देखभालकी व्यवस्था पुरुलिया जैसे शहरो और नगरोमें नही, परन्तु गावोमे ही होनी चाहिये। पुरुलियाका दृष्टान्त मुझे मिशनके मत्री मि० डोनाल्ड मिलर परसे, जो यहा अुपस्थित है, याद आया। पुरुलियामे कुष्ठरोगकी देखभालका बडा केन्द्र है। वहा लगभग १,००० कुष्ठरोगियोकी चिकित्सा और देखभाल होती हे। अिसके सिवाय, वहा

अेक और भी केन्द्र है। वहा अैसे २०० से ३०० बीमारोकी चिकित्सा तथा देखभाल की जाती है। भारतको अिस समय सारे देशमे फैले हुअे छोटे छोटे अस्पतालोकी जरूरत है। आशा है अिस मामलेमे अिस विषयके विशेषज्ञ ये अस्पताल कहा कहा बनाये जाय, अुन पर कितना खर्च किया जाय, अुनके मकान कच्चे बनाये जाय या पक्के, अुनके छप्पर घासके बनाये जाय या कवेलूके, अित्यादि मुद्दो पर हमे अधिक मार्गदर्शन देगे और यह सारा प्रश्न हाथमे ले लेगे।

"अन्तमे मै अितना ही कहूगा कि हमारी चर्चाओके अन्तमे हम कुष्ठ-रोगियोकी चिकित्सा और देखभाल करनेवाला मिशन जैसा या ब्रिटिश अेम्पा-यर लेप्रसी रिलीफ अेसोसियेशन जैसा स्वदेशी मडल खडा कर सके, तो माना जायगा कि हमने अिस दिशामे काफी काम कर लिया। अूपर बताओ हुओ दो सस्थाओके बजाय यह नओ सस्था अधिक स्वदेशी और अधिक स्थानीय होनी चाहिये। फिर भले वह सस्था अूपरकी दो सस्थाओकी मदद और अुनके मार्गदर्शनमे चले। अैसी सस्था किसी प्रकारकी ढिलाओ किये बिना यथासभव जल्दीसे जल्दी स्थापित की जानी चाहिये। हमारी सरकार अिस बारेमे बहुत प्रगतिशील मालूम नही होती। आजसे बहुत समय पहले अुसे अिस दिशामे जो कदम अुठाने चाहिये थे, वे अुसने आज भी नही अुठाये है। मै तो आगे बढकर यहा तक कहूगा कि सरकार अिस बारेमे पिछडी हुओ है। वह पुरुलियाके कुष्ठरोगियोके मिशनको या ब्रिटिश अेम्पायर लेप्रसी रिलीफ अेसोसियेशनको या अैसी दूसरी किसी सस्थाको केवल ग्रान्ट देकर सतोष मान ले यह ठीक नही। अुसे खुद ही यह कार्य अुत्साह और लगनसे समय रहते अपने हाथमे लेना चाहिये। अगर राज्य अितना काम करे तो देशकी सारी जनता भी अिसमे रस लेने लगे और हमारे समाजसे कुष्ठरोगका खात्मा करनेके अिस प्रयत्नमे लग जाय।

"अन्तमे मै अितना कहूगा कि अिस कार्यमे हमे कार्यकर्ताओकी पूरी सेना चाहिये। कुष्ठरोगकी देखभालके छोटे छोटे केन्द्रोमे काम करनेवाले मुख्य आदमी शक्तिशाली कार्यकर्ता नही होगे, तब तक ये ग्रामकेन्द्र अुन्हे सौपे हुअे काम पूरा नही कर सकेगे। अिसीलिअे यह काम करनेवाले डॉक्टरो, वैद्यो और गैरडॉक्टर सेवकोकी बडी जरूरत है। यह काम असलमे मूक सेवकोका है। फिर भी मिशनरी भावनावाले साधारण मनुष्योकी भी हमे खास जरूरत रहेगी। मै आशा रखता हू कि कुछ समय बाद जरूरत पडने पर अैसे सेवक हमे मिल जायेगे।

"कुष्ठ-सेवकोकी यह सस्था गैरसरकारी तत्त्वोसे ही खडी होनी चाहिये। अलबत्ता, सरकार अिस कार्यमे हमे सहायता जरूर देगी, फिर भी हमे तो

कुष्ठरोगी मिशन अथवा ब्रिटिश अेम्पायर लेप्रसी रिलीफ अेसोसियेशनकी तरह अुसे गरसरकारी ढग पर ही चलाना पडेगा। मैं अिस परिषद्को खुली घोषित करता हू। भगवान् करे अिस सस्थाका अैसा विकास हो कि जब तक अिस देशसे अिस रोगका पूरी तरह काला मुह न हो जाय, तब तक अुसके निवारणके लिअे अैसी अनेक परिषदे की जाये।"

३३

दाहोदमें अंतिम आगमन

जब जीवनकी सध्याके अतिम वर्ष बापा दिल्लीमे और हरिजन-सेवा तथा आदिम जातियोकी सेवाके लिअे प्रवासमे बिता रहे थे, तब भी अुनका दिल दाहोदकी तरफ लगा हुआ था। अुन्हे लगता था कि मै लगभग ८० वर्षके किनारे आ पहुचा हू। अिस पके हुअे पत्तेको झडते कोअी देर नही लगेगी। अैसा हो तो कुछ बेजा नही। अिसकी चिन्ता भी नही। अीश्वरको जिलाना होगा तब तक जिलायेगा। अुसका हुक्म होने पर चल पडूगा। परन्तु चलनेसे पहले अेक बार दाहोद-झालोदको आखिरी तौर पर देख लू। अुस सुखी किन्तु स्नेहार्द्र भूमिके अतिम दर्शन कर लू, जिन कार्यकर्ता भाअियोके साथ जीवनके महा मूल्यवान बारह वर्ष बिताये है अुनसे मिल लू, जिसके गावो, खेतो और जगल-पहाडोकी अिन पैरोसे अनेक बार यात्रा की है, अुस पचमहालकी धरतीमाताको आखिरी बार नमस्कार कर लू, जिन हजारो भील भाअियोके साथ हृदयके तार मिला दिये है, अुनके लडके-लडकियोसे अतिम बार भेट कर लू। यह भावना अुनके दिलमे पैदा हुअी और अुससे प्रेरित होकर बापा दिल्लीसे चलकर १९४९ के सितबरकी २३ तारीखकी शामको मेरठ अेक्सप्रेससे दाहोद पहुच गये। स्टेशन पर भील-सेवा-मडलके कार्यकर्ताओ, म्युनिसिपैलिटीके अध्यक्ष श्री पडचाजी और अन्य सदस्यो तथा दाहोदके नगरजनो और विद्यार्थियोने अुनका भावभीना स्वागत किया। स्टेशनसे वे मडलमे पहुचे ओर कन्या आश्रममे ठहरे। वहा आश्रमकी विद्यार्थिनियो और कार्यकर्ताओ वगैराके साथ शामकी प्रार्थना की।

दूसरे दिन सुबह सात बजे बापा झालोद पहुचे। आश्रमकी मुलाकात ली। सारा आश्रम बार बार प्रेमपूर्ण दृष्टिसे देखा। घूमते घूमते वे रामजीके मदिरके पास आ पहुचे। वहा मदिरके पीछेकी अलग अलग पत्थरोकी सीढियो पर पैर रखकर मदिरकी छत पर चढनेका प्रयत्न किया। परन्तु

अिस अुम्रमे वे अैसा नही कर सकते थे। फिर भी अुनकी अिच्छा बडी बलवान थी। अिसलिअे कार्यकर्ताओने सहारा देकर अुन्हे मदिरकी छत पर चढाया। वहा घूमकर अुन्होने छत परसे आश्रमके मकान, खेत, पाठशाला, छात्रालय, गोशाला वगैरा पर ममताभरी टकटकी लगाअी और अुनकी आखोमे आसू अुमड आये।

झालोदमे नगरजनो, ग्रामजनो और विद्यार्थियो तथा कार्यकर्ताओ वगैराकी सम्मिलित सभाको सबोधन करके अुन्होने सक्षिप्त किन्तु बहुत ही मार्मिक और हृदयद्रावक भाषण दिया। अुसमे गाधीजीका अुल्लेख करते हुअे अुनका गला भर आया और बोलते बोलते रो पडे। अुन्होने कहा "गाधी बापू चले गये। मै भी थोडे दिनका मेहमान हू। परन्तु यहा जो काम हो रहा है, वह बापूजीका काम है, यह न भूलना। अब स्वराज्यकी रक्षाका काम हमारा है। देशमे भीलो जैसी और बहुत-सी जातिया है। अुनकी सख्या बहुत बडी है। सथाल, गोड, जवाग हो, मुडा और दूसरी अनेक जातिया आदिवासियोमे है। मै वहा जाता हू। बिहारमे जाता हू। अुडीसामे जाता हू। वहा सबको आपका अुदाहरण देकर कहता हू कि आप पचमहालमें जैसा काम हो रहा है वैसा काम करे।

"गाधी बापू स्वराज्य दिलाकर चले गये। अुस स्वराज्यके बाद देशमे नवजागृति और नवचेतनाकी बाढ आ गअी है। अुसकी परछाअी तमाम आदि-वासी जातियो पर भी पडी है। वे भी जाग्रत हुअी है। अिस समय प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य स्वार्थ-त्याग करना है। देशके लिअे सबको परमार्थका काम करना पडेगा। तभी हम स्वराज्यको कायम रख सकेगे। समय अैसा नाजुक है कि अुत्साह दुगुना करके पेट पर पट्टी बाधकर काम करना पडेगा। गुज-रातमे विलीन हुअे देशी राज्योमे भी बहुत काम करना है। वहा शुरुआत तो हुअी है। परतु अैसे आश्रम बडी सख्यामे हो तभी पिछडी हुअी जातिया आगे आ सकती है। अुनके सुखमे सुखी और दुःखमे दुःखी होनेकी भावना पैदा करनी पडेगी। अुनके सुखका हमे ध्यान रखना पडेगा।"

झालोदके अलावा वे सतरामपुर, बारिया वगैरा स्थानो पर भी गये थे। अुसके बाद २७ तारीखको सवेरे अुनके हाथो दाहोद म्युनिसिपैलिटीके हॉलका शिलान्यास हुआ था। अुस समय भाषण देते हुअे अुन्होने कहा था

"आज मुझे बुलाकर अिस हॉलका मेरे हाथो शिलान्यास करा रहे है, अिसके लिअे आप सबको धन्यवाद। मै तो दाहोदको अपना घर समझता हू, अिसलिअे मुझे निमत्रणकी जरूरत नही हो सकती।

"अिस अवसर पर मुझे दाहोदके पुराने मित्र याद आते है। दाअुदभाओी सेठ, मगनलाल मनसुखलाल वगैरा हमारे बीचसे चले गये है। अिस संसारमें हम सबको भी अुसी रास्ते जाना है, अिसलिअे शोक करना वृथा है। हम तो अुनके गुण ही याद करे और अुनसे सेवाकी प्रेरणा प्राप्त करे। भील-सेवा-मंडलके कामके लिअे जब जब रुपयेकी तंगी होती, तब मै अिन दोनो मित्रोके पास जाता था। और अुन्होने बहुत बार मेरी कठिनाअी दूर की थी।

"दाहोदमे हिन्दू-मुस्लिम प्रेम देखकर मै खुश हुआ हू। पिछले साल जब गोधरामे दंगा भडक अुठा था, तब दाहोदमे पूर्ण शान्ति थी। यहा हिन्दू-मुस्लिम दंगेके छीटे नही अुडे। यहा हिन्दू और मुसलमान भाअियोने शान्ति कायम रखी, अिसके लिअे मै अुन्हे बधाअी देता हू। बहुतसे लोग अिसका श्रेय भील-सेवा-मंडलको देते है और अुसके कार्यकर्ताओंका आभार मानते है। परंतु असलमे तो हम सबको अीश्वरका आभार मानना चाहिये।

"आपके पास आनेसे पहले मै भंगीवासमे गया था। हमारे मंत्री श्री तपासे सालभर पहले यहा आये थे। अुन्होने हरिजनोके रहनेके लिअे मकानोकी योजना बनाअी थी। और अुन्हीके हाथो आपने पिछले वर्ष अुसकी नीव रखवाअी थी। परंतु अभी तक मुहल्लेमे अेक भी मकान खडा नही हुआ। अिसलिअे सब काम छोडकर गरीबोका यह महत्त्वपूर्ण काम पहले करनेका मै म्युनिसिपैलिटीसे आग्रह करता हू।"

भीलोके बारेमे अुल्लेख करके अुन्होने कहा कि, "पच्चीस वर्ष पहले भीलोकी जो स्थिति थी अुसमे बडा परिवर्तन हो गया है। भीलोमे प्रगति हुअी है। अुनमे वृद्धि आअी है। ज्ञानका दीपक जल गया है। अुन्हे अूपर अुठानेके लिअे हम परिश्रम करे। अगले दस वर्ष हमारे लिअे बडे नाजुक है। हमे अपनी शक्ति दिखानी है। अिन दस वर्षोके अर्सेमे भारतके तमाम आदिवासी लोगो और हरिजनो वगैराको देशके अन्य लोगोकी समान पंक्तिमे ला रखना है। अिसके लिअे हम सबको कमर कस लेना चाहिये और हमारे नीचे गिरे हुअे अिन भाअियोको अूपर अुठानेके लिअे भरसक कोशिश करनी चाहिये।"

सबसे अधिक लम्बा भाषण अुन्होने दाहोदकी सार्वजनिक सभामें दिया। अुसमे अुन्होने हरिजन-कार्यके संस्मरण कहे और अन्तमें देशके प्रश्न और अुन्हे हल करनेके लिअे प्रत्येक प्रजाजनको क्या करना चाहिये यह बताया। दाहोदकी सभाको "मेरे प्यारे दाहोदवासियो" संबोधन करके अुन्होने अिस प्रकार व्याख्यान दिया

"आज आपके सामने अितना जल्दी आ सकूगा, यह मै नही समझता था। भाअी हरखचदमे बाते करते हुअे याद आया कि अभी लोकसभाकी छुट्टी है तो चलो दाहोद और भावनगर हो आये। भाअी डाह्याभाअी मुझे याद आये थे। वे मुझे कअी बार लिखते थे कि चौबीस घटेके लिअे आकर चले जाते है, यह अच्छा नही। आप जब भी आते है, जल्दीमे होते है। दाहोदको अपने व्याख्यानका लाभ नही देते। अिसलिअे अिस बार सोचा कि चलो, दाहोदके भाअियोसे शातिसे मिलेगे, अुनके साथ दुख-सुखकी बाते करेगे।

"मै कोअी बडा वक्ता नही हू। अिसलिअे बडे भाषण देनेकी मुझे आदत नही है। दस वर्ष पहले अेक बार मै आपके सामने बोला था। दस वर्ष बाद आज फिर आपके सम्मुख अुपस्थित हुआ हू। मेरे हृदयमें नये पुराने सस्मरण अुमड रहे है। और अुनके सिलसिलेमे जो विचार आ रहे है, वे मै आपसे कहूगा। अपने हृदयके अुद्‌गार मै आपके सामने पेश करूगा।

"मै सतरामपुर, बारिया, दूधिया वगैरा स्थानो पर घूम आया। बारियामे भीलोका बडा मेला भरा था। अुसमे आये हुअे हजारो भीलोको देखकर मेरे आनदका पार नही रहा। जब जब मै भील भाअियोमे मिलता हू, तब तब मुझे अपने कुटुम्बीजनोसे मिलने जैसा आनद होता है।

"कल हमारे सारे बबअी प्रान्तमें हरिजन-दिवस मनाया गया है। हमारे यहा दाहोदमे और गावोमें भी अुसका अुत्सव हुआ। आप लोगोने जिस प्रेमसे हरिजनोको अपनाया, अुसके लिअे आपको धन्यवाद देता हू।

"देवगढ-बारियामे सवर्णोने खास दिलचस्पी नही दिखाअी, अिससे मै दिग्मूढ बन गया हू। वहा २०० सरकारी आदमी और गावके केवल चार ही आदमी जुलूसमें आये थे। तब हरिजनोके लिअे कुअे और मदिर खोलनेकी तो बात ही क्या की जाय? बारियाके वणिक भाअियोने तो हरिजन-दिवस मनानेके प्रति विरोध प्रगट करनेके लिअे हडताल भी रखी। यह सुनकर मुझे बडा दुख हुआ। परतु यह सब हमे बर्दाश्त करना ही होगा।

"दाहोद किसी समय पुरानी प्रथाओका गढ माना जाता था। परतु वह किला अब जमीदोज़ हो गया है। दाहोदकी जनताने जिस भावमे हरिजन-दिवस मनाया और जिस प्रेमसे हरिजनोको मदिरमे ले जाकर अीश्वरके दर्शन कराये, होटलोमे चाय-पानी पीनेका निमत्रण दिया, कुओ पर पानी भरवाया और दाहोदके अितिहासमे चिरस्मरणीय रहनेवाला जुलूस निकाला, अुससे मै खुश हुआ हू। दाहोदको मेरे हजार हजार धन्यवाद! भाअी मणिलाल पानवालेकी हरिजनभक्ति और अुनका काम देखकर मै बहुत ही प्रसन्न हुआ

हू। दाहोद जैसे कट्टर शहरमे यदि यह घटना हो सकी, तो देवगढ-वारियामे भी अैसा ही होगा, अिस वारेमे मुझे शका नही। अिसलिअे हमे सिर्फ धीरज रखना होगा और आवश्यक तपश्चर्या करनी पडेगी।

"१९३३–'३४ के वर्षमे ९ मास अर्थात् २७० दिन वापूजीके साथ सारे भारतमे अस्पृश्यता मिटानेके लिअे काश्मीरसे कन्याकुमारी तक मै घूमा था। अुस समय पूनामे म्युनिसिपैलिटीकी तरफसे मानपत्र दिया जानेवाला था। वहा जाते हुअे आठ वजे मोटर दरवाजेमे से गुजर रही थी, तव अूपरसे वम फेका गया था। परतु अुस दिन प्रभुने वचा लिया। अिसी प्रकार सथाल परगनेके वैजनाथधाममे हम वापूजीके साथ जा रहे थे, तव मोटर पर लाठियोकी झडी लगी थी। अुसके वीचसे हम गुजरे। अुसमे मोटरका पिछला भाग टूट गया। मोटरकी छतको भी कुछ नुकसान हुआ। परतु अिसके सिवाय और कोअी हानि नही हुअी। वहा भी प्रभुने वचा लिया।

"प्रवासमे लाखो आदमी वापूजीके प्रति श्रद्धा प्रगट करके रुपयोकी वर्षा करते थे। आदिवासी, भील, शवर वगैरा भी गाधीजीकी सभाओमे आते और पैसा, आना, आठ आना, रुपया वगैरा देते और वापूजी अुसे आनदसे स्वीकार करते। वापूकी दृष्टिमे तो गरीवोके अेक आनेकी धनिकोके सैकडो रुपयो जितनी ही कीमत थी। अिस प्रकार प्रवासमे अमीर-गरीव, राव ओर रकसे कुल आठ लाख रुपये अिकट्ठे किये थे। अुनसे हरिजनोका काम चला।

"वापूजी तो अपना काम पूरा करके चले गये। परतु हमारा काम अभी अधूरा है। वे सत्य, अहिसा और गरीवो तथा हरिजनोकी सेवाका जो सदेश हमे दे गये है, अुसके अनुसार चलकर अपने कर्तव्यका पूर्ण पालन करनेका दायित्व अव हमारा है।

"भगी भाअी तो माताका पवित्र कार्य कर रहे है। जैसे माता अपने वालकका मैला साफ करती है, वैसे भगी माता समाजरूपी वालकका मैला अुठाकर अुसे साफ रखती है। अिसलिअे अुन्हे माता स्वरूप मानकर हमे अुनका अुपकार मानना चाहिये।

"हमे स्वतत्रता मिले दो वर्ष हो गये। अिस वीच जो करुण घटना हुअी, वह है देशके टुकडे होना। अिसके परिणामस्वरूप पजाव और वगालमें सैकडोकी हत्या हुअी, वडी सख्यामे स्त्रियोकी लाज लुटी, लाखो देश-वान्धव अपना वतन छोडकर पजाव और वगालसे हमारे देशमे चले आये। अिन निराश्रितोको ठिकाने लगानेका काम अभी वाकी है। हमारी सरकार

यह भगीरथ कार्य कर रही है। अिन लोगोको फिरसे बसाने और कामसे लगानेके लिअे सरकारने दिल्लीमे अेक बडा बैंक खोला है। अुसमे मैं भी काम करता हू। साथ ही समय समय पर निराश्रित छावनियोको देखने जाता हू। दिल्लीमे हजारो लोग खुले मैदानमे और चलनेके रास्तो पर ठड, धूप और वर्षामे दिन काटते हैं, जब कि हम अपने सुन्दर घरोमे बसे हुअे हैं और आनदसे खाते-पीते हैं। अुन्हे देखकर हृदय हिल जाता है और आखोमें आसू आ जाते हैं। हमें अपने अिन अभागे भाअी-बहनोका खयाल करना चाहिये। सरकार तो अपने ढगसे अुन्हे बसानेका प्रयत्न कर रही है, परतु हमे भी अिस काममे अपना हिस्सा अदा करना चाहिये।

"दूसरा कठिन प्रश्न अनाजका है। विदेशसे हम हर साल १३५ करोड रुपयेका अनाज मगवाते हैं और जहाजोका भाडा तथा दूसरा घाटा भी सरकार अुठाती है। यह रुपया बचानेका सरकारने निर्णय किया है और अिसके लिअे अधिकाधिक अनाज पैदा करनेकी योजना पर अमल शुरू किया है। हम सबको अुसमे साथ देना चाहिये। अनाजका अेक दाना भी बेकार न जाय, अिस ढगसे अुसका अुपयोग करना चाहिये और अन्नके अुत्पादनमे जितना भी हमसे बन पडे, योग देना चाहिये।

"रुपयेकी कीमत घटनेसे हमे जाहिरा तौर पर नुकसान दिखाअी देता है। परतु अन्तमें तो जो नीति हमारी सरकारने अख्तियार की है, अुससे फायदा ही होगा, यह ध्यानमे रखना चाहिये।

"अगले साल वयस्क मताधिकारके अनुसार बडा चुनाव होगा। ससार भरमे प्रजातत्रका यह अेक बडा प्रयोग होगा। अुसमें आपको ध्यान रखना है। अुसमे स्त्री और पुरुषको समान अधिकार है। अिसके अुपभोगके लिअे शिक्षाकी मात्रा बढानी होगी।

"यहा जैसे भील-सेवा-मडलके द्वारा भीलोकी सेवाका काम हो रहा है, वैसे ही बिहार, अुडीसा वगैरा भारतके दूसरे प्रान्तोमें भी आदिवासियोको अूचा अुठानेका काम हो रहा है। देशभरमे आदिवासियोकी सख्या अढाअी करोड है और हरिजनोकी पाच करोड है। स्वतत्र भारतको अपनी स्वतत्रता और शानकी रक्षा करनी हो, तो अितनी बडी साढे सात करोडकी आबादीकी हम अुपेक्षा नही कर सकते। अुनके अुत्थानके लिअे, अुन्हे अपनी बराबरीमे लानेके लिअे हमे भगीरथ काम करना है।"

व्यापारियोको सबोधन करके अुन्होने कहा कि, "कपडेका अुत्पादन बढनेसे नियत्रण अुठा लिया गया है। फिर भी कालाबाजार अभी तक नही

मिटा है। स्वार्थी मनुष्य कालाबाजार करके येन-केन प्रकारेण धन अिकट्ठा करनेके पीछे पडे हुअे है। परतु अिससे वे जो सुख भोगनेकी अिच्छा रखते है, वह नही भोग सकेगे। अत्यधिक धन-तृष्णा अुन्हे और देशको दु खके गर्तमे डाल देगी। मै आशा रखता हू कि दाहोदके व्यापारी भाअी अिस पाप-पकमे नही फसेगे।

"अन्तमे अीश्वर सबको सद्‌बुद्धि दे। गाधीजीको जो धुन प्रिय थी, अुसकी पक्तिया अुद्धृत करके मै समाप्त करता हू। 'अीश्वर अल्ला तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान्।' अिस प्रकार हे भगवान, सबको अच्छी बुद्धि दे, जिससे सब अच्छे काम करे। राम राम!"

दाहोदकी अुनकी यह अंतिम मुलाकात थी। अिसके बाद वे दुबारा वहा न जा सके।

भील-सेवा-मडलके कामको २५ वर्ष पूरे हो जानेसे दाहोदमें अिस सस्थाने रजत-जयती मनानेका निश्चय किया था। परतु अिसके लिअे अनुकूल समय तय करनेमे काफी समय लग गया। अन्तमे १५ अक्तूबर, १९५० को वह अुत्सव मनाना तय हुआ ओर स्वतत्र भारतीय गणतत्रके प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबू अुसके मुख्य अतिथि ओर अध्यक्ष चुने गये। बापाके प्रति प्रेमके वश होकर और आदिवासियोके कामके प्रति अपनी कोमल भावनाके कारण अुन्होने यह निमत्रण स्वीकार किया। राजेन्द्रबाबूके अतिरिक्त बम्बअीके अुस समयके मुख्यमत्री बालासाहब खेर और अन्य गण्यमान्य महानुभाव भी वहा आये थे। अपनी शुरू की हुअी सस्थाके, जिसके क्रमिक विकासके वे साक्षी ही नही परन्तु कर्ता भी थे, रजत महोत्सवके शुभ प्रसग पर अुपस्थित होकर अपने साथी कार्यकर्ताओको अुत्साह देनेकी अिच्छा बापाको कैसे नही होती?

अिस अवसर पर मौजूद रहना जितना बापा खुद चाहते थे, अुससे भी अधिक तो अुनके साथी कार्यकर्ता चाहते थे। परतु वृद्धावस्थाकी बीमारियोने अुन्हे घेर लिया था और वे भावनगरमे अपने छोटे भाअीके यहा बिस्तरे पर नही तो कमसे कम कमरेमे अपना समय बिता रहे थे। अिसलिअे वे स्वय अुपस्थित नही हो सकते थे। जिस बातका अुन्हे तो कोअी रज नही था। परतु साथी कार्यकर्ताओको अुनकी अनुपस्थिति न खटके और सबको प्रोत्साहन मिले, अिस हेतुसे अुन्होने भावनगरसे भील-सेवा-मडलके रजत-जयतीके अवसर पर निम्नलिखित विशेष सदेश भेजा था

"रविवार, ता० १५–१०–'५० को दाहोद शहरमे आप सब भाअी-बहन भील-सेवा-मडलकी २५ वर्षकी जयती मनाने अिकट्ठे हुअे है।

हमारा महान सौभाग्य है कि अिस शुभ अवसर पर भारतके राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसादने पधारने और अध्यक्षपद ग्रहण करनेका हमारा आमत्रण स्वीकार किया है। परतु डॉ० राजेन्द्रप्रसाद तो हमारे प्रिय राजेन्द्रबाबू है। अुन्होने अखिल भारत आदिम जाति-सेवा-सघकी अध्यक्षता दो वर्ष पूर्व दिल्लीमे स्वीकार करके हमें बहुत ही आभारी किया है। अिसलिअे अिस अवसर पर अुन्होने अुत्सवका अध्यक्षपद स्वीकार किया, सो तो अपने घरके बुजुर्गका ही पद स्वीकार किया है। अिसमे कोअी खास नअी बात नही है।

"अिस मौके पर मैं अपनी बीमारीके कारण आपके पास हाजिर नही रह सका। परतु अिसके लिअे मुझे रज नही हो रहा है। मेरा काम करनेके लिअे अनेक भाअी जगह-जगहसे आकर वहा अुपस्थित हो गये हैं। अुडीसा, मध्यभारत और दिल्ली जैसे दूर स्थानोसे अनेक भाअी आये है। हमारे आजीवन भील सदस्य भाअी रूपाजी जालजी, लालचद अित्यादि अन्य भाअी भी हमारे राजेन्द्रबाबूकी आवभगतमे और अुत्सवमे भाग ले रहे है, अिससे मुझे अपार आनद होता है। मै यह मान लेता हू कि शरीर और आत्मा दोनोसे मैं दाहोदमे अुपस्थित हू।

"गुजरातमे दाहोद-झालोदके साथ हालमे ही देशी राज्योका अेकीकरण हुआ है। देवगढ-बारिया, छोटा अुदयपुर, राजपीपला, बनासकाठा और साबरकाठा वगैराका अेकीकरण हुआ है। अिससे हमारा भील समाज महान — विशाल बन गया है और हमारे कामका क्षेत्र भी बहुत बढ गया है। मैं चाहता हू कि यह बात ध्यानमे रखकर आप सब भिन्न भिन्न प्रदेशोमे फैल जाय, सेवाकार्य करनेके लिअे आश्रम स्थापित करे और ज्ञान तथा अुसके साथ प्रभुभक्तिका अधिक फैलाव करे।

"रविवार, १५ अक्तूबरका दिन आप सब भील भाअी लम्बे समय तक याद रखिये, अिस अुज्ज्वल दिवस पर हर साल अपनी अुन्नतिके कार्य कीजिये और अुनके जरिये सारे भारतकी जनताकी अुन्नति साधिये। यह प्रभु-प्रार्थना करके मैं अपना यह सदेश समाप्त करता हू।"

अिस प्रकार बापा दाहोदके अुत्सवमे प्रत्यक्ष रूपमे हाजिर न रह सके तो भी सजीव अक्षर-देहमे अुपस्थित रहे और अुनके सदेशने अुत्सवमे भाग लेनेवालो तथा कार्यकर्ताओ और सेवक वर्गको खूब अुत्साह प्रदान किया।

अिस अवसर पर सरदार वल्लभभाअी पटेल, श्री मोरारजी देसाअी, श्री जुगतराम दवे, श्री वैकुण्ठभाअी लल्लूभाअी महेता, डॉ० जीवराज महेता,

मध्यप्रदेशके गवर्नर श्री मगलदास पकवासा वगैराने भी सदेश भेजे थे और अुनमे पू० ठक्करबापाको तथा मडलके कार्यको अजलिया दी थी। अिनमे मे सरदार वल्लभभाअी पटेलका सदेश अिस प्रकार था

"दाहोद भील-सेवा-मडलकी रजत-जयतीके शुभ अवसर पर मैं अपनी हार्दिक बधाअी और शुभ कामनाअें भेजता हू। अिसके बारेमें मेरा कुछ भी कहना बेकार है। जो बात स्पष्ट है अुसका वर्णन करनेकी जरूरत नही। भील-सेवा-मडलने आदिवासियोकी जो सेवा की है, अुसके लिअे भारतवासी मडलके ऋणी है। यह दु खकी बात है कि हमारे समाजमे अपने आपको भूलकर अैसे पुण्यकार्यमे लग जानेमे ही अपना जीवन-कल्याण माननेवाले सेवक बहुत थोडे है। अिसमे तो कोअी सन्देह नही कि हमे अैसे आदमियोकी बडी जरूरत है। यह सब देखते हुअे भील-सेवा-मडलने जो रचनात्मक कार्य किया है, अुसका अुल्लेख भारतके अितिहासमे स्वर्णाक्षरोमे किया जायगा। और भारतके जिन नौजवानोमे सेवाकी भावना है, अुनके लिअे यह सारा कार्य मार्गदर्शक बन जायगा। भील-सेवा-मडल निरतर फूले-फले और अिस प्रकार लोगोके दु ख दूर करते करते दूसरोको सीधा रास्ता बताये, यही मेरे हृदयकी प्रार्थना है।

"अिस शुभ अवसर पर हम सबकी दृष्टि अुन ठक्करबापाकी तरफ जाना स्वाभाविक है, जिन्होने अिस कामके लिअे अपना समस्त जीवन अर्पण किया है और जो अिस समय रोगशय्या पर पडे पडे भी सेवाके ही विचार करते है। अुन्होने देशकी जितनी सेवा की है, अुसकी तो बात ही क्या की जाय? यद्यपि वे आज आपसे—हमसे दूर है, फिर भी वे हमारे हृदयोमे विराजमान है और अीश्वरकी ओर दृष्टि करके हमारा अतर आज प्रार्थना कर रहा है कि हे अीश्वर, तू अुन्हे जल्दी अच्छा कर दे।"

अुत्सवके मौके पर अनेक भाषण हुअे। राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू और बालासाहब खेरने मडलके कार्यको अजलि दी। भीलोने अुत्सव मनाया। विद्यार्थियो और विद्यार्थिनियोने और अिकट्ठे हुअे हजारो भीलोने अुत्सवके गीत गाये। यह कौन कह सकेगा कि अिन सबके जीवनमें ठक्करबापाकी आत्मा प्रतिबिम्बित नही हो रही थी?

मानती थी कि अिन बडे कामोका अुन्हे निमित्त बनाया और अुनके हाथो भगीरथ कार्य पूरे कराये। बापाके पुण्यप्रतापसे हरिजनो और आदिम जातियोके झोपडो तक अन्न, वस्त्र और विद्याकी त्रिवेणी बहने लगी और जो लोग सूख गये थे, अस्थिपजर हो गये थे, अुनकी नसोमे नया रक्त, नअी भावना दौडने लगी। अुनके मुख पर नया तेज चमक अुठा। दबे हुअे, दुर्बल और पतित लोगोमे से स्वाश्रयी, स्फूर्तिवाले और स्वाभिमानी लोग तैयार हुअे। और यह सब करनेके लिअे ठक्करबापाने जीवनके ८० वर्ष तक अगणित प्रवास किये। अेक तरफ लोगो और कार्यकर्ताओके साथ सिरपच्ची करके अेकको सुधारके मार्ग पर लगाया और दूसरेसे काम लिया, दूसरी तरफ सरकारो, दरबारो और अधिकारियोसे मिले, अुनके सामने नम्रतासे अिन लोगोकी वकालत करते रहे तथा अुनके कल्याणकी योजनाअे तैयार करके और सरकारी तत्रसे बडी रकमे मजूर करवाकर अिस कामको आगे बढाया। अपने जीवनकार्यका सुफल देखनेका सौभाग्य बहुत थोडे मनुष्योको मिलता है। बापा अिन भाग्यशालियोमे से अेक थे। अैसे नररत्नका अुसके देशबाधव शुभ प्रसग पर सम्मान करे, तो अिसमे क्या आश्चर्य? बापा ८० वर्ष पूरे करके ८१ वे वर्षमे प्रवेश करे, तब अुनका खूब सम्मान करने और अुनकी जन्म-जयती मनानेका देशनेताओने निश्चय किया। अिस शुभ अवसर पर अुनके जीवनकी विविध सेवामय प्रवृत्तियो पर प्रकाश डालनेवाला अेक अभिनदन ग्रथ प्रकाशित करने और अुन्हे अर्पण करनेका भी निर्णय किया गया।

सुवर्ण महोत्सव

अिसके लिअे १५ सितम्बरको राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबू, भारतके प्रधान-मत्री श्री जवाहरलालजी, सरदार वल्लभभाअी पटेल, बालासाहब खेर, मावलकर दादा, काका कालेलकर, श्री देवदास गाधी, श्री गोपीनाथ बारडो-लाअी, श्री मगलदास पकवासा, श्री किशोरलाल मशरूवाला, श्री घनश्यामदास बिडला, श्री रामेश्वरी नेहरू, डॉ० पट्टाभि सीतारामैया, प० हृदयनाथ कुजरू वगैरा भारतके प्रत्येक भाग और प्रत्येक प्रान्तके ३८ नामाकित नेताओ, कार्यकर्ताओ और समाज-सेवकोने अिस ग्रथकी योजनाके बारेमे तथा अुस पर होनेवाले खर्चके अदाजके विषयमे अेक लम्बा वक्तव्य प्रकाशित किया, और देशवासियोसे अिस महान कार्यमे सहायता देनेकी अपील की। अुसमे कहा गया था

"श्री अ० वि० ठक्कर, जो ठक्करबापाके प्यारे नामसे सारे देशमे प्रसिद्ध हैं, २९ नवम्बरको ८० वर्ष पूरे करेगे। सचमुच वे देशके सबसे बडे

बुजुर्ग पुरुष हैं। देशमें और कोअी व्यक्ति बापासे अधिक सम्मानार्ह और पूजार्ह नहीं। वृद्ध होते हुअे भी अभी तक अुनमें जवानों जैसी कार्यशक्ति और वेग है और अनेक कार्योंके प्रति अपनी भक्तिके द्वारा वे युवकोंको प्रेरणा देते हैं। जब कोअी भी आदमी भुलाये और सताये हुअे लोगोंकी सेवाकी अटूट शृंखला जैसे बापाके जीवनके बारेमें विचार करता है, तब यह कुछ कुछ समझमें आता है कि गांधीजीने यह बात किस लिअे कही थी कि 'मेरी महत्त्वाकांक्षा बापाकी निःस्वार्थ सेवाओंकी लम्बी फूलमालाकी होड करनेकी है।'

"श्री श्रीनिवास शास्त्रीने, जिन्होंने अिनके साथ भारतके सेवकके रूपमें वर्षों तक काम किया है, बापाको मानव सहानुभूतिकी सजीव मूर्ति कहा है। अुन्होंने अकाल-निवारण, भील-सेवा, हरिजन-सेवा और कस्तूरबा-स्मारक कोषके द्वारा देशकी बहनों और बच्चोंकी सेवाके जो अगणित काम किये हैं, अुनका यहां अुल्लेख करना गैरजरूरी है। सारा देश अैसे महान और विरले पुरुषका सम्मान करके अपना ही सम्मान करे, यह अिस अवसर पर बहुत समयोचित होगा।

"अिसके लिअे अेक अभिनंदन स्मारक ग्रंथ प्रकाशित करने और दिल्लीके समारोहमें बापाके जन्म-दिन पर अुन्हें अर्पण करनेका निर्णय किया गया है। अुसमें बापाके महान जीवन संबंधी लेखों और चित्रोंका समावेश किया जायगा। अिसके सिवाय, बापाका जिन बहुतसी परोपकारी प्रवृत्तियोंसे गाढ संबंध है, अुन पर तथा राष्ट्रीय महत्त्व रखनेवाले विषयों पर लेख लिखे जायंगे। अितने थोड़े समयमें अिस अवसरको शोभा देनेवाला महान ग्रंथ तैयार करनेके तमाम प्रयत्न किये जायंगे। अिस पर लगभग २५,००० रुपये खर्च होनेका अंदाजा है। हमें विश्वास है कि यह रकम अनेक जाने और अनजाने मित्रोंसे खानगी तौर पर प्राप्त कर ली जायगी।

"अिस ग्रंथकी बिक्रीका रुपया ठक्करबापा सूचित करेंगे अुस कोषमें दे दिया जायगा। हम अिस अवसर पर देशके सभी भागोंके लोगोंसे बापाके ८१ वें जन्म-दिनके अिस सुखद और मंगल प्रसंग पर अुनकी दीर्घायु तथा स्वस्थ जीवनके लिअे प्रार्थना करनेका अनुरोध करते हैं।"

वक्तव्य प्रकाशित करनेके बाद बापाके असंख्य मित्रोंने यह काम अुत्साहसे अपने हाथमें ले लिया। ग्रंथ तैयार करनेके लिअे रुपया भी भेज दिया और ग्रंथके लिअे सामग्री भी भिन्न भिन्न मित्रों, साथियों और प्रशंसकोंसे समय पर मिल गअी।

अिस ग्रथका सपादन मद्रासकी अखिल भारतीय कुष्ठ-समितिवाले श्री टी० अेन० जगदीशन् तथा कस्तूरबा गाधी ट्रस्टके मत्री श्री श्यामलालजीने मिलकर पूरा किया और अिस प्रकार समय पर ग्रथ छपवाकर तैयार कराया कि वह निश्चित दिन पर बापाको अर्पण किया जा सके।

जिन्होने यह महान ग्रथ देखा है, अुसके भीतर भिन्न भिन्न नेताओ, कार्यकर्ताओ और साथियो द्वारा दिये गये सस्मरण तथा श्रद्धाजलियुक्त लेख पढे है और बापाकी डायरीके पन्ने, लेख और अन्य सामग्री देखी है, अुन्हे तो शायद आश्चर्य ही होगा कि अितना बडा भगीरथ काम अितने थोडे समयमे कैसे हुआ? परतु सपादकोकी कार्यदक्षता तथा बापाके प्रति अुनकी भक्ति और सैकडो लोगोकी बापाके प्रति ममताके कारण ही अितना बडा काम सबके सहयोगसे निश्चित अवधिमे पूरा हो सका।

देशनेताओके वक्तव्यमे बापाकी ८१ वी वर्षगाठके समय सुवर्ण महोत्सव मनानेका लोगोसे जो अनुरोध किया गया था, अुसे देशके कोने कोनेसे अच्छा अुत्तर मिला। अुनकी जयती दिल्ली, बम्बअी, अहमदाबाद, पूना, अलाहाबाद, कटक, कलकत्ता, दाहोद, मडला, राजकोट, भावनगर, मोरबी और अन्य अनेक स्थानो पर और खास तौर पर हरिजनो तथा आदिवासियोमे बापाने और अुनके साथियो तथा कार्यकर्ताओने जहा जहा केन्द्र खोले थे, वहा सब जगह मनाअी गअी। जगह जगह सभाअे हुअी। ठक्करबापाके जीवन और कार्यको अजलि देनेवाले प्रवचन हुअे। परतु दिल्लीमे पडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाअी पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, काग्रेस अध्यक्ष डॉक्टर पट्टाभि सीतारामैया वगैराकी मौजूदगीमे कान्स्टिटचूशन हाअुसके मैदानमे और शामको हरिजन अुद्योगशालामे जो समारोह हुअे, अुन्होने तो मानो देशभरके तमाम समारोहो पर सुवर्ण कलश ही चढा दिया। जैसे हाथीके पैरमे सब पैर समा जाते है, वैसे हम यहा दिल्लीके समारोहोका वर्णन करके ही सतोष मान लेगे।

दिल्लीका वह दिन सदाके लिअे स्मरणीय रहेगा। अुस दिन दिल्लीके कान्स्टिटचूशन क्लबमे बापाका सम्मान करनेवाला सादा किन्तु आकर्षक और महान समारोह सरदार वल्लभभाअीकी अध्यक्षतामे किया गया। और अुसमे सरदारश्रीके शुभ हाथो ही भारतके लाखो और करोडो दलितो, पतितो, हरिजनो, आदिवासियो, ग्रामवासियो और नगर-निवासियोकी ओरसे बापाके लम्बे सेवाजीवनके नम्र सम्मानके रूपमे अुन्हे अभिनन्दन ग्रथ भेट किया गया।

अिम मिलसिलेमे मारी व्यवस्था मुन्दर ढगमे की गअी थी। कान्स्टि-ट्यूशन क्लबके मैदानमे हरियाली पर अेक मुन्दर शामियाना खड़ा किया गया था। शामियानेमे मच पर अध्यक्षके पाम श्री ठक्करबापा बैठे थे। अुनके आमपास पडित जवाहरलाल नेहरु, मौलाना अबुल कलाम आजाद श्री जगजीवनराम और अन्य मत्रीगण तथा डॉ० पट्टाभि मीतारामैया, दादासाहब मावलकर और दूसरे देशनेता, ममाज-मेवक और कार्यकर्ता बैठे थे। दिल्लीमे रहनेवाले गुजराती भी जिम शुभ अवमर पर बड़ी मख्यामे अुपस्थित हुअे थे। व्यासपीठके मामने ही अेक बडा चबूतरा खडा किया गया था। अुस पर मुन्दर चित्र और कारीगरी की गअी थी। बीचमे अेक तिपाअी पर जगमग करते हुअे दिये अपना शान्त तेज फैला रहे थे। चबूतरेके अेक तरफ देश-विदेशके दूतावासोके राजपुरुष, लोकमभाके मदस्य और अन्य मुप्रसिद्ध अतिथि बैठे थे। स्त्रियोके लिअे बैठनेकी अलग रखी गअी जगह भी खचाखच भर गअी थी। जैमा कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी अेक कवितामे कहा गया है, अिस मानव समुद्रके सगम तीर पर देश-देशके लोगोका अेक मेला लग गया था। अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष, बूढे-बालक, राजनैतिक और अराजनैतिक, शहरी और ग्रामीण सब दीन-दुखियोके प्रतिनिधि और दरिद्रनारायणके पुजारी मानवसेवक श्री ठक्करबापाको श्रद्धाजलि देने अिकट्ठे हुअे थे। वह दृश्य मचमुच अद्भुत था!

ठीक नौ बजते ही समारोह शुरू हुआ। मबमे पहले अपूर्व शान्तिके बीच गाधीजीका प्रिय भजन

"वैष्णव जन तो तेने कहीअे, जे पीड पराअी जाणे रे,
परदुःख अुपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे"

गाया गया।

अुमके बाद अत्यन्त शान्त वातावरणमे पार्लियामेण्टके अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मावलकरने बापाको प्रथम अजलि देते हुअे अुनको देशका मबमे बडा वयोवृद्ध पुरुप (Grand Old Man) बताकर अुनके द्वारा किये गये मानवसेवाके कार्योका परिचय दिया तथा जिस अेकोपासनाके गुण द्वारा ठक्करबापाने सारी जिन्दगी काम किया अुसकी प्रशसा की। आगे चलकर अुन्होने बताया कि, "बापाने ८० वर्ष पूरे करनेके बाद भी अपने शरीर और मनकी जवानी कायम रखी है। वे बालक जैसे निर्दोष हैं। अुनमे शक्तिका अटूट भडार भरा है। आज यदि वे देशके अेक कोनमे गरीबोका काम करते होगे, तो कल ठेठ दूसरे कोनेमे पडे हुअे दलित वर्गोका काम

करते नजर आयेंगे। सेवाका काम किये विना अुनके प्राणोको चैन नही पडता। अुन्हे कभी थकावट नही आती। सफरसे वे कभी नही अूबते।"

अिसके वाद मावलकर दादाने घोषणा की कि ठक्करबापाको अिस शुभ अवसर पर सरदारश्रीके शुभ हाथो स्मारक ग्रथ अर्पण किया जायगा और अुसके वाद अिस ग्रथकी ७०० प्रतिया आम लोगोको वेचनेके लिअे रखी जायगी। अिसके अलावा, वापाके अपने हस्ताक्षरोवाली सात प्रतिया भी सार्वजनिक रूपमे वेचनेके लिअे रखी जायगी।

मावलकर दादाके प्रवचनके वाद थोडा समय आरामका वीता। अिस वीच सूरदासका अेक भजन गाया गया और गुजराती समाजकी कन्याओने गरवा गाया और गरवेके साथ कलामय नृत्य किया। गरवेमे ठक्करवापाके जीवन और कार्यकी प्रशसा की गअी और अुनका योगीराजके रूपमे वखान किया गया। सारा रास अुस महान प्रसगके अनुरूप था।

यह सव सुनकर ठक्करवापाका हृदय हिल अुठा। अुनकी आखोमे हर्षाश्रु छलछला आये।

मौलाना अवुल कलाम आजादने अिस मौके पर वोलते हुअे कहा कि "अिस शुभ मोके पर हाजिर रहनेमे मुझे वडी खुशी हो रही है। मै ठक्कर-वापाको सच्चे दिलसे मुवारकवाद देता हू। यह मुवारकवादी अिस देशके लिअे भी है, जहा अुन्होने जन्म लिया और जहा अुन्होने सेवाका काम किया। अीश्वर अुन्हे दीर्घायु दे, जिससे भारतकी पददलित और दु खी जनता अिनकी सेवा द्वारा आगे वढे।"

भारतके अुद्योग-मन्त्री श्री जगजीवनरामने, जो स्वय हरिजन है, वापाको वधाअी देते हुअे अुन्हे आधुनिक युगके दधीचि वताया और पुराणोसे अुदाहरण देकर वोले

"अेक वार देवताओ पर सकट आया, तव वे महर्षि दधीचिके पास पहुच गये और हाथ जोडकर अुनसे विनती की 'महाराज, राक्षसोके त्राससे हमे वचाअिये।' तव दधीचि ऋषिने राक्षसोका सहार करनेके लिअे विशेष वाण वनानेके लिअे अपनी हड्डिया निकालकर दे दी और देवताओकी रक्षाके लिअे हसते हसते अपने प्राण निछावर कर दिये। अुन हड्डियोके वाणसे राक्षसोका सहार हुआ और देवताओका सकट टल गया। ठक्करवापाकी वात भी अैसी ही है। अुन्होने पिछडे हुअे वर्गोकी सेवामे अपना समस्त जीवन लगा दिया। जगलोमे रहनेवाले भीलो, पददलित हरिजनो और अैसे ही दूसरे कुचले हुअे दु खी लोगो पर जव आफत आती है, गरीव लोगो पर जव जल-सकट, वाढ, प्रलय या भूकम्प जैसी कुदरती आफते आ

पडती है, तब वे तुरत ठक्करबापाको याद करते है। यह बताता है कि अिस क्षेत्रमे अुन्होने कितनी सेवाअे की है। जिसीलिअे मै बापाको आधुनिक युगके दधीचि कहता हू।"

काग्रेसके अध्यक्ष डॉ० पट्टाभि सीतारामैयाने ठक्करबापाको श्रद्धाजलि अर्पण करते हुअे कहा कि, "ठक्करबापा भारतके सच्चे सेवक है। हिन्दुस्तानमे अलग अलग वर्ग और जातिया जगह जगह बिखरी हुअी है। अुनमे काम करके ठक्करबापाने भारतकी राष्ट्रीयताके मदिरका पुर्ननिर्माण करनेमें बहुत बडा भाग लिया है। आजके धन्य प्रसग पर मै अुनका अभिनदन करता हू।"

अिसके बाद सबके अुत्साह और आनदके बीच भारतवर्षके प्रजासत्ताक राज्यके प्रथम प्रधानमत्री श्री जवाहरलाल नेहरूने अपनी मधुर और सरल हिन्दुस्तानी जबानमे ठक्करबापाको श्रद्धाजलि दी। जवाहरलालजीका वह व्याख्यान नही था, परतु शब्द-देहमे निरी कविता बह रही थी। छोटे छोटे वाक्योमे अुन्होने कितना अधिक कह डाला! वे बोले

"मालूम नही मै आपको आजके दिन क्या बधाअी दू, या हम सब अपने आपको या देशको बधाअी दे। बाज लोग अैसे होते है, जैसे कि आप है। वे सेवाके कामोमे अैसे खो जाते है कि अिन कामोसे अलग करके अुनके बारेमे विचार करना बहुत मुश्किल होता है। अैसे लोग अपने आपमे अेक अिन्स्टिटयूशन (सस्था) बन जाते है। अिसलिअे ठक्करबापा अेक अलग आदमी तो रहे नही। विविध कामोके अेक समूह बन गये।

"जब आपका खयाल आता है तो अेक साथ ही तरह तरहके खयाल दिमागमे आ जाते है। देशके अलग अलग हिस्सोमे, पहाडो और जगलोमे, हरिजनो और अन्य पददलित लोगोमे आप अिस कदर हिलमिल गये कि आपको अुनसे अलग करके सोचना कोअी आसान काम नही है। सैकडो तस्वीरे अेक साथ सामने आ जाती है। वैसे अेक आदमी दुनियामे आता है और जिन्दगी बसर करके चला जाता है। मगर जो काम वह करता है वह कायम रहता है, क्योकि काम हमेशा चलता रहता है, वह कभी समाप्त नही होता। वैसे तो काम हम सब करते है, मगर अुन्होने मानवसेवाके कामोमे सिर्फ दिलचस्पी ही नही ली, बल्कि अुनमे अेक तरहसे खो-से गये।

"अिसलिअे ठक्करबापाको किसी बधाअी या अिनामकी जरूरत नही है। अुन्होने अपनी सेवामे ही पूरा अिनाम पाया। असली मानोमे अुनकी जिन्दगी सफल हुअी। दुनियामे अैसे शख्सको देखकर दिलमे खुशी होती है, अुत्साह बढता है और कुछ हसद भी होता है। अैसे शख्स जीवनके

पेचीदे मसले सेवाके जरिये अपनी जिन्दगीमे ही हल कर लेते है और फिर अुनके सामने चाहे कितने ही बडे मसले आये अुनसे वे घबराते नही।

"ठक्करबापाने अेक रास्ता पकडा, अेक जमानेसे अुस पर चलते गये और हल्के हल्के अुनके कामका दायरा फैलता गया। मगर कामका सिलसिला अेक ही रहा, नियत अेक ही रही और अितमीनानसे वे आगे चलते ही रहे। अिसलिअे अुनको देखकर जोश और गरूर पैदा होना स्वाभाविक है। हसद अिसलिअे होता है कि अिस तरहका माद्दा हमारे अन्दर भी पैदा होता। अिसलिअे ठक्करबापाकी अिस वर्षगाठ पर हम अपने आपको मुबारकबाद देते है कि हमे आज यह दिन देखनेको मिला।"

अिसके बाद समारोहके अध्यक्ष सरदार वल्लभभाअी पटेलने अवसरको शोभा देनेवाला छोटा किन्तु प्रभावशाली व्याख्यान दिया

"आज हमारे सबके ज्येष्ठ बन्धु ठक्करबापाका ८१ वा जन्म-दिवस है, यह आनदकी बात है। अैसा सौभाग्य बहुत थोडे मनुष्योको मिलता है। जबसे बापू भारतमे आये, तबसे हम सब अुनके साथ काम करते रहे। कोअी अेक क्षेत्रमे तो कोअी दूसरे क्षेत्रमे। अितने पर भी हम रातदिन अेक दूसरेका काम देखते रहे। ठक्करबापाको तो दिन-रात, जात-पात और प्रान्त-प्रान्तके बीच कोअी भेद नही था। सारे हिन्दुस्तानमे जहा कही भी दु ख पडा वही वे पहुच गये। जहा कही भी आफत आती — फिर वह कुदरती हो या अन्य प्रकारकी — वहा सब अिन्हीकी तरफ देखने लगते। अिसलिअे अिनका जीवन भारतके नौजवानोके लिअे अेक नमूना है। जो लोग अुनका अनुकरण करना अपना जीवनकर्तव्य मानते है, अुनके लिअे रास्ता खुला हुआ है। अुन्हे सेवाके लिअे धारासभामे जानेकी जरूरत कभी मालूम नही हुअी। फिर भी हम अुन्हे धारासभामे अिसीलिअे खीच ले गये है कि अुन्हे दलित जातियोका अेक खास अनुभव है। आज तो हम थोडासा काम करते ही मोहमे पड जाते है और हमे खयाल होता है कि सेवा करनेके लिअे राजनैतिक सस्थामे ही शरीक होना चाहिये। परतु यह विचार ठीक नही। सेवा यदि करनी ही हो तो अिसके लिअे अनेक क्षेत्र मौजूद है। देश बडा लम्बा-चोडा है। जहा बैठिये वही कामका तो ढेर पडा है। ठक्करबापा जबसे काममे पडे, तबसे न किसी दिन अुन्होने आराम किया, न चैन लिया, न कभी शातिसे बैठे। सफर करते समय भी अुन्होने कभी सुख-सुविधाका विचार नही किया। और वे तो सारी जिन्दगी सफर ही करते रहे।

"भारतमे अैसे ही कार्यकर्ताओकी जरूरत है, जो बात न करे परतु काम करे। मै हिन्दुस्तानके नौजवानोको अितना याद दिलाना चाहता हू कि

ज्यादा बोलने या भाषण झाडनेमें सेवा नहीं होती। बोलनेका काम तो अुन्हींको करना चाहिये जिनकी सेवा अितनी बढ गअी हो कि जिनसे वे देशको कुछ न कुछ अुपदेश दे सके। सेवा सिपाहीसे ही हो सकती है और सिपाही बने बिना नेतागिरी नहीं हो सकती। अितने पर भी जो नेतागिरी करते हैं अुनको गिरनेका खतरा रहता है।

"ठक्करबापाका जीवन सेवामें अितना भरपूर है कि अुसका वर्णन करनेमें कअी दिन लग जाय। आज लबी चौडी बाते करनेका समय नहीं। कहनेमें भी सकोच होता है, अिसलिअे मैं अुन्हे बधाअी देता हू। आप सब भी शामिल होकर अीश्वरसे प्रार्थना कीजिये कि अैसे जन्म-दिन हमे बार बार देखनेको मिले, ताकि हमारी जिन्दगी बढे और अिनकी भी।"

व्याख्यान पूरा करनेके बाद सरदारश्रीने ठक्करबापाको अभिनदन-ग्रथ अर्पण किया और अुनसे प्रेमपूर्वक आलिगन किया।

यह सारा समारोह लोगोकी भावना, नेताओंकी प्रेमपूर्ण अजलियो और अभिनदनोकी वर्षामें तरबतर हो गया। बापा अितने प्रभावित हो गये कि क्षणभर अुनकी आखोमें हर्षाश्रु आ गये, अुनका गला भर आया। गद्‌गद कठसे वे जवाब देने खडे हुअे, परन्तु थोडी देर तक कुछ भी नहीं बोल सके। फिर आखोमें आसू लिये भर्राअी हुअी आवाजसे वे जो थोडेसे शब्द बोल सके, अुनमें अैसा लग रहा था कि शब्दोका स्रोत अुनके मस्तिष्कसे नही, परन्तु सीधा हृदयमें बह रहा है।

अुन्होंने कहा "मेरा हृदय कुठित हो गया है। आप सबका प्रेम देखकर मेरा दिल भर आता है। फिर भी अेक-दो बाते मैं जरूर कहना चाहता हू। अेक तो मेरे जैसे मामूली आदमी अथवा हरिजनके लिअे अितना बडा समारोह, लोगोका यह जमाव और दिखावा वगैरा करनेकी कोअी जरूरत नही थी। यह सारा अपराध पीछे बैठे भाअी देवदासका है। अुनके प्रेमके आगे मैं लाचार हू। आज सवेरे हरिजन और सवर्ण भाअी सभी यहा आये, यह देखकर मुझे बहुत ही आनन्द हुआ है।

"सच पूछा जाय तो मेरा स्थान दिल्ली जैसे आलीशान शहरमें नहीं, परन्तु जगलोमें तथा गरीबोकी झोपडियोमें है। वहीं मेरे लिअे काम पडा है। आपने भजन और गरबेमें वैष्णवजन और योगीराज वगैरा विशेषणोमें मेरी तारीफ की है। परन्तु वास्तवमें देखा जाय तो मैं वैष्णव भी नहीं और योगीराज भी नही हू। अिन वचनोमें बहुत अतिशयोक्ति है। मैं तो अेक पामर प्राणी हू। जिस ससारमें रहकर मुझसे भी अपराध हुअे हैं। जैसा मैं पहले बता चुका हू, मैं जब अिजीनियरके रूपमें नौकरी

कर रहा था अुस समय मैंने दो वार रिश्वत ली थी। और भजनमे कहे अनुसार 'वाच काछ मन निश्चळ राखे', अिस सच्चे वैष्णवके आदर्शके प्रति भी मैं पूरी तरह वफादार नही रह सका। मैंने दो अेक वार अपनी जवानीके जमानेमे व्यभिचारका दोष भी किया है। अिसलिअे मेरे जैसा कुटिल, खल और कामी कौन होगा? अितने पर भी आप मैं जैसा हू अुसीको निभा रहे हैं, मेरा सम्मान कर रहे हैं, यह आप सवकी बडी अुदारता है। परन्तु अव तो काम करना भी मेरे वसकी वात नही रही, अितनी ज्यादा मेरी अुम्र हो गअी हे ओर अव मैं आधा अधा और आधा लगडा भी हो गया हू। पहलेकी तरह सफर भी तीसरे दर्जेमे नही कर सकता। अैसे निर्वल शरीरको लेकर मैं क्या कर सकता हू? अिसके वावजूद भी आप सवने, पडितजीने, सरदार वल्लभभाअी पटेलने और मौलाना साहवने मेरा जो सम्मान किया है, अुसके लिअे मै सवका अत्यत आभारी हू।"

श्रावण महीनेकी वदली वरस जानेके वाद जैसे आकाश स्वच्छ हो जाता है, पहाड और जमीन धुलकर साफ हो जाते हैं, वैसे ही वापाके अिस हृदयके अिकरारने स्वच्छता और पवित्रताका वातावरण पैदा कर दिया। वापाका यह अिकरार वहुतोको खटका। वहुतोको यह अनावश्यक लगा। परन्तु वापाने तो, जैसा अुन्होने वादमे कहा, यह कदम अुठाकर अपने हृदयका भार हलका कर दिया।

अिस प्रकार अुस दिनके प्रातकालीन समारोहमे आनन्द और अुत्साहके साथ गम्भीरताकी भावना लिये सव जुदा हुअे। वहासे लौटते समय श्री देवदास गाधीने अिस समारोहके वारेमे जो कष्ट किया था अुसके लिअे कृतज्ञता प्रकट करने वापा अुनके घर गये। वहा दो मजिलकी सीढिया चढनेमे वे खूव ही थक गये। फिर भी चढकर अूपर गये। अुस वक्त तक श्री देवदास गाधी घर वापस नही आये थे। अिसलिअे वापा वहा ठहर गये और थोडी देर वाद जव वे आ पहुचे, तो अुनसे मिलकर फिर दोपहरको सविधान-सभाकी वैठकमे शरीक होनेके लिअे चल दिये। वहासे दोपहरके वाद अुद्योगशालामे अपने निवासस्थान पर लौटे।

अुस दिन दिनभर वापाको वधाअी देनेवाले तार और डाकसे सन्देश आते रहे। अुनमे अलग अलग प्रान्तके मत्रियो और गवर्नरोसे लगाकर कार्यकर्ताओ, सस्थाओके सचालको, अलग अलग पाठशालाओके विद्यार्थियो, खास तौर पर हरिजनो तथा पिछडे हुअे वर्गोके विद्यार्थियो और वहनो वगैराके सदेश थे। ये तार और डाकके ढेर देखने पर ही कल्पना हो

सकती है कि बापाने अितने वर्षोंके परिश्रम और तपके अनम कैसे भगीरथ काम किये हैं, कितने अधिक मनुष्योंके साथ अपनी आत्माके तार मिलाये हैं, कितने ज्यादा आदमी अुनके किसी न किसी अुपकारके बोझसे दबे हुअे हैं और कितने मनुष्य अुनसे सतत प्रेरणा लेते रहते हैं। बापासे पथ-प्रदर्शन पानेके लिअे अुत्सुक कार्यकर्ता हो, पिछड़े हुअे वर्गोंका विद्यार्थी हो, छात्रवृत्तिके लिअे मेहनत करनेवाली कोअी विद्यार्थिनी या विद्यार्थी हो या सगे-सबंधीके मर जानेके बाद जीवनमें खालीपन लगनेके कारण आश्वासनके लिअे अेकमात्र आश्रय-स्थान खोजनेवाला कोअी दुःखी जन हो — सभीने बापाको ८१ वें वर्षके शुरूमें याद किया, अुन्हें अभिनंदन भेजे और अुनके दीर्घ जीवनके लिअे प्रार्थना की।

अुस दिन दोपहरके बाद ३–३० से ५ बजे तक हरिजन अुद्योगशालाके कार्यकर्ताओं, विद्यार्थियों, बहनों और भाअियोंने सारे अवसर पर सुवर्ण कलश चढ़ानेवाला अेक भव्य और चित्रात्मक समारोह रखा था। अुसका अध्यक्षपद श्री पुरुषोत्तमदास टंडनने ग्रहण किया था। अिस समारोहमें बापाको बधाअी देने और दीर्घायु चाहनेवाले संदेश पढ़े जानेके बाद बापाने काफी लम्बा व्याख्यान दिया था। अुसमें अुन्होंने कहा

"मेरे जीवनमें चार गुरु थे मेरे पिता, पूनाके श्री धोंडो केशव कर्वे, जो आज ९३ वर्षकी अुम्रमें भी क्रियाशील जीवन बिता रहे हैं, स्वर्गीय श्री शिन्दे और श्री जी० के० देवधर। अिन सबमें से अब कर्वेके सिवाय आज कोअी जीवित नहीं है। महात्मा गांधी और श्री गोपालकृष्ण गोखलेको मैं अपने गुरुकी कक्षामें नहीं रखना चाहता, क्योंकि अिन दो महात्मा पुरुषोंका शिष्य कहलाने योग्य मैं अपनेको नहीं मानता। परन्तु अूपर बताये हुअे चार गुरुओंमें से पिताजीके सिवाय बाकी तीन तो मेरे गुरु भी थे और बुजुर्ग साथी भी। अुनके प्रति मेरा जो ऋण है, वह मैं कभी नहीं भूल सकूंगा। खास तौर पर अपने पिताके प्रति मेरा ऋण सदा ही नजरके सामने रहेगा।

"अिसके सिवाय, जिन अन्य तत्त्वोंसे मैंने सार्वजनिक सेवाके पाठ सीखे, अुनमें मैं भारतमें फैले हुअे अीसाअी मिशनोंको रखता हूं। क्योंकि मैं सार्वजनिक सेवाके क्षेत्रमें सक्रिय रूपमें काम करने लगा, तब अिन मिशनोंने मुझे खूब प्रेरणा दी। आप सब जो यहां अुपस्थित हैं, अुनसे मैं विनती करता हूं कि आप अिन मिशनोंको तिरस्कारकी नजरसे न देखिये, अुनका अनादर न कीजिये, परन्तु अुनकी काम करनेकी पद्धतिका अध्ययन कीजिये और अुनसे पदार्थपाठ सीखिये। कोढ़ियोंकी सेवा करनेकी, अुनके कल्याणके

कार्य करनेकी भावनाकी ज्योति अिन अीसाअी मिशनोने ही मुझमे जगाअी थी।"

अन्तमे भाषण पूरा करते हुअे अुन्होने कहा कि, "भारत देशमे आज यदि सबसे बडी जरूरत किसी चीजकी है, तो वह अनुशासनकी और जवान लोगोमे -- स्त्रियो और पुरुषोमे -- सेवाकी भावना पैदा होनेकी है। अिन दो वस्तुओंका देशमे जो अभाव है, अुसे देखकर मुझे अत्यत दुख होता है। परन्तु मेरा यह विश्वास है कि देशके बडे बडे सवालोका हल तभी होगा, जब ये जवान लोग देश और दीन-दुखियोकी सेवामे अपने आपको समर्पण करेगे। अिसीलिअे अुद्योगशालाके बालकोको आज मै आशीर्वाद देता हू कि तुम सब पढ-लिखकर बडे हो जाओ और तुम्हारे लिअे मैने जो अूचीसे अूची और बडी आशाअे रखी है अुन्हे पूरा करनेमे सफल बनो। अीश्वर तुम सबको यह शक्ति दे, यही प्रार्थना है।"

बापाकी अिस सुवर्ण जयतीके समारोहके विशेष अवसर पर अुनके कुछ साथी, सम्बधी और मित्र वगैरा जो आये थे, अुनमे बापाके भतीजे श्री रामू ठक्कर भी थे। गामको अिनसे और अन्य अेक भाअीसे बापाने भजन गवाये। और श्री जगदीशन्से अुनके 'स्मारक-ग्रथ'मे से कुछ लेख पढवाकर सुने। रामूभाअीकी सुन्दर बुलद आवाजसे गाये हुअे भजनोसे वे बडे प्रसन्न हुअे और अिसका अुल्लेख अुन्होने अुस दिन अपनी डायरीमे किया।

परन्तु अिसमे भी लाक्षणिक बात यह थी कि जो बापा डायरीमे किसी दिन अेकसे ज्यादा पन्ने नही भरते थे, अुन्होने अुस दिन पूरा अेक पन्ना और भरा और अुसमे कलापीका "ज्या ज्या नजर मारी ठरे यादी भरी त्या आपनी" यह अपना प्रिय गीत पूरा लिख डाला और दूसरा "अूडी जा तू गाफिल गाभरा तारे अन्तरे शी आटी रही" मानव-जीवनकी क्षणभगुरताका अुपदेश करनेवाला गीत भी लिखा।

कौन कह सकता है कि अिन दोनो गीतोका लेखन अुनके ८० वर्षके जीवनका जोड-बाकी करनेके बाद अुस दिन अुनके अतरमे जो मनोमथन हुआ, अुसका प्रतिबिम्ब नही था?

बाहरके अिन समारोहो, सदेशो और भाषणोकी भरमारके बीच बापाने तो अेक श्रेयार्थीकी तरह अिन सारी बाह्य क्रियाओसे अपनी अिन्द्रियोको समेटकर मानो अीश्वरके साथ अपने हृदयके तार मिला देना चाहते हो, अिस तरह अतरमे अेक डुबकी लगाअी। वहा अुनके मनोमदिरमे तो निरतर अिन भजनोका ही घटारव सुनाअी देता रहा। अिसका परिणाम यह हुआ कि दिनभरकी प्रवृत्तिकी धूमधामके बाद रातको जब

अुन्हे शान्ति और समय मिला, तब अुनके निर्मल अन्तःकरणमें गाये जा रहे अिन दो गीतोंको अुन्होंने कागज पर अुतारकर अक्षर-देह प्रदान किया। और अिस प्रकार दिल्लीमें और देशमें जब अुनके कार्योंकी तारीफ हो रही थी, तब अंतर्दृष्टिसे मनुष्य-देहकी क्षणभंगुरताका खयाल करके अीश्वरका नाम लेकर और सारी चिन्ताओंका भार अुसे सौंपकर वे आरामसे सो गये।

३५

निवृत्तिमें प्रवृत्ति

दुनियामें अपने परिश्रमका फल अपने जीवनमें ही देखनेका सौभाग्य बहुत कम लोगोंको मिलता है। बापा अैसे सौभाग्यशाली सत्पुरुषोंमें से अेक थे। जवानीमें कदम रखनेके बाद लगभग २१ वर्ष जिन्होंने कुटुम्ब-सेवा और समाज-सेवा की और ३७ वर्ष तक निर्मल लोकसेवा और देशसेवा की, अुनका जीवनकार्य अब पूरा हो रहा था। कुदरतकी तरफसे अुन्हें अिसका संकेत मिल गया था। अिसीलिअे तो बापाके हृदयमें निवास करनेवाले आत्मारामको अुड जानेके लिअे कोअी आवाज दे रहा था। परन्तु फिर भी अितना काम अधूरा है, अितना पूरा कर लूं, अिस तरह मानकर बापा 'अुड जानेकी' पूरी तैयारी रखकर भी काम किये जा रहे थे। अुनकी ८१ वीं जन्म-जयंती मनानेके बाद भी तबीयत जरा अच्छी होने पर वे बिहारमें घूम आये। बिहारमें हरिजनोंकी स्थितिकी जांच करनेके लिअे जो जांच-समिति नियुक्त हुअी थी, अुसके अध्यक्षके नाते वे बिहारमें कुछ स्थानों पर घूमे और हरिजनोंके बारेमें जानकारी अिकट्ठी की। खास तौर पर बिहारकी मुशाहर जातिकी स्थिति देखकर अुनका हृदय रो अुठा। अुसकी सेवाके लिअे कोअी स्थायी व्यवस्था होनी चाहिये, यह अुन्होंने मनमें तय कर लिया। साथ ही वे बिहारमें जनवरीमें दुबारा आनेका वादा कर रहे थे। परन्तु अुनके दौरेमें साथ रहे हरखचंदभाअीने बिहारी भाअियोंको समझा दिया था कि अब बापाकी बाट न देखना, सब काम आपको ही निबटाने हैं। अिसी प्रकार वे राजस्थान और पंजाबकी भी अंतिम यात्रा कर आये। पंजाबमें निर्वासितोंकी बडी बस्ती बसी हुअी थी। वहांके कार्यकर्ताओंकी अिच्छा बापाके हाथों अुस बस्तीका अुद्घाटन करानेकी थी। जिसलिअे अुस बहाने वहां भी हो आये और राजपुरमें निर्वासितोंकी बस्तीका

अुद्घाटन कर आये। अिसी प्रकार राजस्थानका भी आखिरी सफर कर आये। अिसके बाद अुनकी तबीयत धीरे धीरे बिगडती गयी। दूसरी तरफ पिछले चार वर्षसे अुनके भाअी डॉ० केशवलाल ठक्कर समय समय पर अुन्हे भावनगर आनेका आग्रह कर रहे थे। नोआखलीमे बीमार पडनेके बाद वे काफी अशक्त हो गये थे, अुस अर्सेमे भी अुन्होने अेक बार बापासे आग्रह किया था। गाधीजीको अिस बारेमे पत्र भी लिखा था और गाधीजीके साथ चर्चा भी की थी। परन्तु बापा जब तक अुनमे शक्ति हो तब तक सेवाका क्षेत्र छोडनेवाले नही थे। अिसलिअे गाधीजी और बिडलाजीके साथ पत्रव्यवहार करने और अुनके साथ अिस प्रश्नकी चर्चा करनेके पश्चात् अुस समय तो अुन्होने भावनगर जाना मुलतवी कर दिया था। अिसके तीन चार वर्षके पश्चात् वही स्थिति और सयोग पैदा होने पर और यह भरोसा हो जाने पर कि अब शरीर काम नही देगा, अुन्होने छोटे भाअीकी माग स्वीकार की और जीवनके अन्तिम दिन अपने वतनमे भाअी, भौजाअी, भतीजो और अन्य कुटुम्बीजनोके सान्निध्यमे बितानेके लिअे सहमत हुअे।

दिल्लीसे भावनगर जाते हुअे वे बीचमे महेसाणा रुके। वहा बापा रविशकर महाराजके अेक मित्र श्री विजयकुमार त्रिवेदीके यहा ठहरे। दोपहरको भोजनके बाद आराम किया। शामको गुजरात हरिजन-सेवक-सघके कार्यकर्ताओके साथ बातचीत की। अुसके बाद महेसाणासे कोअी डेढ मील दूर स्थित हरिजनोका 'रामपीर मदिर' देखा।

रातको महेसाणासे रवाना होकर दूसरे दिन सवेरे सुखपूर्वक भावनगर आ पहुचे।

भावनगरमे भी अेकाध सप्ताह तक सगे-सम्बन्धियो, मित्रो और कार्यकर्ताओ वगैराका मेला लगता रहा। सब अुनसे अेकके बाद अेक मिलने जाते, अुनकी तबीयतके हालचाल पूछते और सुविधानुसार दस बीस मिनट बैठ कर चले जाते। अिस बीच अुन्होने कितनी ही पुरानी जानपहचाने ताजी की, पुराने सम्बध याद किये और सबसे प्रेमके साथ मिले।

बापाकी तबीयत कभी कभी खराब हो जाती थी, अिसीलिअे तो वे जीवनके अतिम दिवस आरामसे बितानेके लिअे भावनगर आये थे। १९४७ मे तो अेक बार अुन्होने निवृत्ति लेनेका निश्चय भी कर डाला था, परन्तु १९४८ मे गाधीजीका जिस ढगसे देहावसान हुआ, अुसे देखकर अुन्होने अपना निर्णय बदल डाला। और जिस प्रकार अुनके जीवनसे प्रेरणा प्राप्त करके अुन्होने अनेक काम किये थे, अुसी प्रकार अुनकी मृत्युसे भी प्रेरणा ली और अपने मनमे निश्चय किया कि जैसे गाधीजी जीवनके

अंतिम क्षण तक काम करते करते, कर्तव्य-कर्म पूरा करते करते ही मृत्युको प्राप्त हुअे, वैसे ही मैं भी जीवनकी अंतिम घड़ी तक कर्तव्य-कर्म करता रहूंगा और अिस प्रकार काम करते करते ही आखिरी सांस छोड़ूंगा। अुनकी यह अभिलाषा और कर्मशील स्वभाव अुन्हें आराममें बैठने नहीं देता था। अिसीलिअे भावनगरमें निवृत्तिमय जीवन बितानेका मित्रों और सगे-सम्बन्धियोंका आग्रह होने पर भी अुनका मन निवृत्तिमें प्रवृत्ति ढूंढ निकालता और अेक काम पूरा न हो पाता कि दूसरे दो काम पैदा कर देता।

२० मार्चको दिल्ली छोड़नेके बाद वे पूरे अेक वर्ष भी नहीं जिये। ठीक दस महीनेमें वे अिस फानी दुनियाको छोड़ कर चले गये। परन्तु दस महीनेके थोड़ेसे अर्सेमें अुन्होंने कितना काम कर डाला!

भावनगर पहुंचनेके बाद अुनकी दिनचर्याका खयाल अुनकी डायरीके नीचे लिखे अंशोंसे होगा —

२२ ता० को सुबह भावनगर पहुंचनेके बाद सगे-सम्बन्धियों और दूसरे मिलनेवालोंका प्रवाह तो शुरू हो ही गया, अुसी दिनसे अुनका डाकके पत्रोंका जवाब लिखनेका काम भी आरंभ हो गया। अुस दिन शामको दोपहरके आरामके बाद पत्रव्यवहारका काम शुरू कर दिया। सेवकरामको रामसा निराश्रित छावनी सम्बन्धी पत्र लिखा। अिसके सिवाय श्री वदपाल त्यागी, मलकानीजी, शिवम् और मनमोहन वगैराको पत्र लिखवाकर तथा टाअिप कराकर भिजवाये।

अुसी दिन अुन्होंने भारत-सरकारके बजटमें जनताकी शिक्षाके प्रति सरकारने सौतेली मां जैसा जो बर्ताव दिखाया, अुसकी कड़ी आलोचना करनेवाला अध्ययनपूर्ण लेख पूरा किया।

अिसके बाद दूसरे ही दिन प्रोफेसर यार्दे, श्री बापट, श्री पाडुरंग वणीकर, श्रीमती सुमित्राबहन गोखले वगैराको पत्र भेजे। अिनके अलावा श्री रूपलाल सोमाणी, श्री मनमोहनसिंह महेता और राजस्थानके अन्य कार्यकर्ताओंको भी पत्र लिखे। चन्दनसिंहको मध्यभारत सेवा-संघ सम्बन्धी पत्र लिखा।

२४ ता० के दिन श्री जे० पाठक, आसामके कार्यकर्ता श्री भंडारी, श्री काशीनाथ, श्री राव वगैराको पत्र लिखे। श्री वैद्यको हैदराबादके हरिजन-कार्य सम्बन्धी और धर्मदेव शास्त्रीको जमीनका फार्म वापस लेनेके बारेमें पत्र लिखे। हरखचंदभाअीसे श्री पुष्पाबहन महेता, श्री बलवन्तराय महेता, श्री नानाभाअी भट्ट, श्री छगनलाल जोशी वगैराको गुजराती पत्र लिखवाये।

फिर दोपहरमे जगदीशन्को धर्मदेव शास्त्रीकी कुष्ठरोगियोकी सेवा-सम्वधी योजनाके वारेमे पत्र लिखा। अेच० आर० गोतमकी हिमाचल प्रदेशमे स्त्रियोको शिक्षा देनेकी योजना पढी ओर अुन्हे पत्र लिखकर अिस सम्वधमे धर्मदेव शास्त्रीसे मिलनेकी सूचना दी।

अुसी दिन श्री भूपेन्द्रसे सोराष्ट्रके अर्थमत्रीका सन् १९५०-५१ के वर्षका वजट सम्वधी १५ पन्नेका भापण पटवाया।

सेवकरामने शिवम्को वेक अेकाअुन्ट कमेटीमे क्यो नही लिया, अिसके लिअे श्रीमती रामेश्वरी नेहरूको तार दिया। और वादमे अेक लम्वा गुस्सेसे भरा हुआ पत्र लिखा। अुसकी नकल सेवकराम और शिवम्को भेज दी। दूसरे पत्रोका भी निवटारा किया।

२६ ता० को पिछले दिनके वचे हुअे पत्रोको निवटाया। शिवम्को रामेश्वरी नेहरूके नाम भेजे हुअे तारके सम्वधमे पत्र लिखा। फिर निर्वासितोको अजमेरसे कडला तकका पास मिलनेका वदोवस्त करानेके लिअे सेवकरामको पत्र लिखा। अिसके अलावा विजापुर जिलेकी देवदासियोके सम्वधमे वैकुण्ठभाअी महेता और वम्वअीकी अदालतके अेक न्यायाधीशको पत्र लिखे। अुसके वाद पुराने अुदयपुर राज्यमे स्थित जयसेमेलके पालवी मेवासके लोगोकी शिकायतवाला पत्र पढा। अुन्होने खुद जगल साफ करके जो जमीन सुधारी थी, अुसमे से अुन्हे निकाल दिया गया था। अिसलिअे राजस्थानमे छ आदमियोको पत्र लिखे। अुन्हे हिन्दीमे टाअिप करने और वहीसे राजस्थानके अुन भाअियोको भेज देनेकी सूचना दी।

त्रिवेणीवहनसे मिला। मैं आराम कर रहा था तव रामचरणने 'टाअिम्स' पढा। सरहदी अिलाकोके वारेमे श्री काटजू साहवका वक्तव्य पढा।

डॉ० काणे तथा श्री छोटालाल त्रिभोवन मिलने आये।

भावनगरकी पोलिटेकनिक अिन्स्टिटयूशनके कार्यकर्ता श्री पी० वी० पोपट मिलने आये। अिस साल सिर्फ छ विद्यार्थी है और मासिक खर्च पाच हजार रुपया है।

छोटाभाअीने अपने सेवाकार्यके वारेमे विस्तारसे वर्णन किया और दूसरोकी नोटिसवोर्ड पर कलअी खोलनेकी धमकीके वारेमे भी वात की। शान्ताको २५ रु० मासिककी मदद हर महीने भेजनेके सम्ववमे शिवम्को पत्र लिखा।

२७ ता० को रामचरणसे पत्र लिखवाकर डाक निवटाअी। मडलाके वनवासी मडलके वजट पर आलोचना लिखवाअी और वजटकी रकम ९४,००० रुपयेसे घटाकर ५९,५०० तक ले जानेकी सूचना दी। आसामके

मंत्रियोंको मीकी लोगोंके कल्याण और अुन्हें डाक्टरी सहायता देनेके बारेमें पत्र लिखे। श्यामलालका पत्र आया। अेक संस्थाके अेक लाख रुपयेके ट्रस्टके रिक्विजीशन फॉर्म पर हस्ताक्षर किये। स्वामी विश्वानन्दके पत्र आये। विट्ठलदास पटेल तथा छोटाभाअी मिले। अुनके साथ अुनकी पुस्तक 'छाल और बास' के बारेमें बातें कीं।

ता० २८ को धारूमलकी डायरीके संबंधमें शिवम्‌को पत्र लिखवाया। अुसमें शिवम्‌को सूचना दी है कि धारूमलके लिअे ५०० अथवा १,००० रुपये लेकर त्यागीको भेज देना। मानशंकर भट्ट आये और अुन्होंने शिशु-विहारके अहातेकी दीवार और नये मकानके बारेमें बात की। वहां बालमंदिर चलाया जायगा और यहां भी अुनके साथी भजनों और गीतोंका जलसा रखेंगे।

नये मंत्री दयाशंकर दवे मिलने आये। अुनके साथ १,८०० सिन्धी भाअियोंके लिअे मकानों और दुकानोंकी व्यवस्था करनेके बारेमें बात की। अुसके बाद बलवन्तराय और चोरवाडके श्री जीवणलाल भी आये।

सवेरे दफ्तरका काम मामूली था, परंतु दोपहरके बाद डाकका काम बढ गया था। वणीकरके छः जनोंके हस्ताक्षरवाले स्मरणपत्रका जवाब लिखा। ता० १९ को दिल्लीमें श्री पंजाबराव देशमुख द्वारा किये गये कार्यकी तफसील पढी। बिहार और अुत्तरप्रदेशके कस्तूरबा कार्य संबंधी सुशीलाके आसनसोलसे लिखे हुअे पत्रका जवाब लिखा। राजस्थान-सेवा-संघके दस महीनेके बजटका विवरण पढा। बजट १,५४,००० रुपयेका था।

८ बजे श्री राजेन्द्रबाबूका रेडियो-प्रवचन सुना। यह प्रवचन कराचीमें लियाकतअलीके दिये हुअे लडाअीकी भावनासे भरे हुअे भाषणसे बिलकुल अुलटा ही था। पार्लियामेन्टकी दूसरी खबरें सुनीं। चितलिया और कपिलभाअी वगैरा आये थे, अुनसे मिला।

३० मार्च — आज आत्मारामका अुपवास शुरू करनेका दिन था। छोटाभाअी और मानशंकर कल रातको अुससे मिलने गये थे, परंतु दोनोंने बताया कि आत्माराम अपनी हठ छोडनेवाला नहीं। आत्माराम और छोटाभाअी फिर ३॥ बजे आये। अुनके साथ दो घंटे चर्चा करनेके बाद वे लगभग आधे पिघले और १५ दिन अुपवास मुलतवी रखनेका मेरा प्रस्ताव माननेको तैयार हो गये। बादमें यादवजी मोदीने आत्माराम और अुनकी पत्नीके साथ चर्चा की और अन्तमें सब कुछ निबट गया। यद्यपि अिस परिणामकी आशा नहीं रखी गअी थी, फिर भी अितने प्रयत्नके बाद जो कुछ हुआ सो अच्छा ही हुआ।

सवेरे खूब डाक आअी, परंतु अुसे निबटा नहीं सका।

१०-३० से १२ तक अखबार पढे। पूर्व बगालकी सनकी लाखो गाठे पश्चिम बगालको बेचनेके बारेमे वार्तालाप पूरा हो गया है और समझौता हो गया है। दोनो सरकारोकी मजूरीकी प्रतीक्षा की जा रही है।

अिन आठ दिनोकी बापाकी डायरीमे लिखे हुअे कामका अुल्लेख यहा अिसीलिअे किया गया है कि पाठकको बापाकी विविध प्रवृत्तियोका खयाल हो जाय। दिल्लीसे भावनगर आये थे आराम लेनेके लिअे, निवृत्तिमय जीवन बितानेके लिअे, परतु भावनगर आकर निवृत्तिमय जीवन व्यतीत करनेके बजाय मामा कोठाकी तीसरी मजिलको अुन्होने हरिजन-सेवक-सघ, भील-सेवा-मडल, कस्तूरबा-ट्रस्ट और कअी दूसरी सस्थाओका केन्द्रीय कार्यालय बना डाला। जीवनभर प्रवास, पुरुषार्थ और सेवाकार्य करके अुन्होने भारतके लगभग सभी प्रान्तोमे जो सेवा-सस्थाअे और अुनकी शाखा-प्रशाखाअे फैलाअी थी, अुन सबको सीधा दिल्लीके साथ सबध रखनेके लिअे तो कभीसे सूचित कर दिया था और अुनकी जिम्मेदारी भी विधिपूर्वक दिल्ली, दाहोद वगैरा केन्द्रोको सौप दी थी। फिर भी बापा पत्रो द्वारा अिस बातकी पूछताछ करते रहते कि प्रत्येक सस्था कैसे चल रही है, अुन्हे क्या कठिनाअिया है, अुनके बजट कैसे तैयार होते है, अमुक प्रान्तमे हरिजनोकी क्या स्थिति है, फला प्रदेशमे अुन्हे जमीन परसे हटा देनेके बाद जमीन फिर मिली या नही, अमुक प्रदेशमे निर्वासितोके लिअे मकान तैयार हुअे या नही। अिस प्रकार आसाम, बिहार, राजस्थान, अुडीसा, मध्यप्रान्त, हैदराबाद, दक्षिणके प्रान्त, अुत्तरप्रदेश आदि सभी प्रदेशोकी सस्थाओके साथ सम्पर्क साधकर अुन्होने अुनके साथ पत्रव्यवहार जारी रखा। अूपर तो सिर्फ आठ दिनके कार्यका नमूना दिया गया है, परतु अुनकी डायरीके पन्नो पर आगे नजर डालते है तो ठेठ आखिरी दिनो तक अुनका पत्रव्यवहार अुसी तरह नियमित रूपसे चलता रहा, जैसे पटरी पर गाडी चलती रहती है। सब सस्थाओकी, सब सेवकोके कार्यकी, सस्थाओके बजटकी और अुनके सामने पैदा होनेवाले विशेष प्रश्नोकी अुन्होने जानकारी रखी और जब जब जरूरत पडी, तब तब अुन्हे पत्रव्यवहार द्वारा और दूसरी तरहसे मदद दी और अुनकी कठिनाअिया दूर की।

बापाको भावनगर आये १५-२० दिन ही हुअे थे। अितनेमे तो वे सौराष्ट्रके काग्रेसी मत्रियो, बहुतसे काग्रेस कार्यकर्ताओ, रचनात्मक क्षेत्रमे काम करनेवाले सेवको और हरिजन-सेवकोसे मिल लिये। अुनके प्रश्न समझे, अुनकी कठिनाअिया जानी और अपनी रुग्णावस्थामे बिस्तर पर बैठे बैठे भी यथाशक्ति अुनकी सहायता करनेकी कोशिश की।

भावनगरमें आनेके बाद बापा सबसे ज्यादा ध्यान पिछड़ी हुअी मानी जानेवाली जातियोंके अुत्कर्ष पर केन्द्रित करने लगे, क्योंकि अुनका यह खयाल था कि जैसे हरिजनोंके प्रश्नोंके सम्बन्धमें गांधीजीने महान आन्दोलन चलाया और अुसके परिणामस्वरूप बहुतसे सवर्णोंने अुस कार्यको अपना जीवनकार्य बनाया, अुसी तरह अिन पिछड़ी हुअी और दबी हुअी जातियोंके अभागे लोगोंको अूंचा अुठानेके लिअे व्यापक आन्दोलन होना चाहिये। अुनकी यह मान्यता होनेके कारण जब सौराष्ट्र हरिजन-सेवक-संघके मंत्री श्री छगनलाल जोशी अुनसे भावनगरमें मिले, तब बापाने अुनसे यह काम हाथमें लेनेका अनुरोध किया और अिसके लिअे सौराष्ट्रमें पिछड़ी हुअी मानी जा सकनेवाली जातियोंकी सूची तैयार करनेकी सूचना की।

अुनके मनमें अिन दबी हुअी, लुटी हुअी और अुपेक्षित पिछड़ी जातियोंके अुत्कर्षके विचार किस प्रकार घुल रहे थे, अिसका कुछ खयाल श्री छगनलाल जोशीकी मुलाकातके बाद अुन्हें लिखे गये बापाके दो पत्रोंसे होता है। पहली बार श्री छगनलाल जोशीके अुनसे भावनगर मिलकर जानेके बाद अुन्होंने तुरत ही अेक पत्र ५ अप्रैलको अंग्रेजीमें लिखा था। वह अिस प्रकार है

"प्रिय छगनभाअी,

(पिछड़ी हुअी जातियोंके सेवाकार्यके विषयमें)

"१ भावनगरसे विदा होनेके पहले तुमने अेक बहुत ही सुन्दर और पवित्र शब्द काममें लिया था। मैंने तुम्हें जो काम सौंपा, अुसे तुमने मिशन बताया। मुझे आशा है कि अेक अच्छे ब्राह्मण मिशनरीकी तरह — अेक संन्यासीकी भांति तुम यह काम करोगे और जिन्हें आज शताब्दियोंसे ज्ञानके प्रकाशसे वंचित रखा गया है, अुन सबके समक्ष ज्ञानकी मशाल ले जाओगे। अब कामके ब्यौरे पर आता हूं —

"(१) पिछड़े हुअे वर्गोंका विवरण सरकारी अलमारीमें धूल चाटता पड़ा होगा। अुसे भले बनकर अच्छी तरह पढ़ लेना।

"(२) अुसमें छोटी बड़ी २९ जातियां बताअी गअी हैं। अुनके सम्बन्धके आंकड़े, ब्योरे और किस किस जगह कौन कौनसी जाति मुख्यतः बसी हुअी है, ये सब बातें मुझे भेजना।

"(३) अिनमें सबसे पहले भरवाड, रबारी, वाघरी या अन्य जो जातियां संख्याकी दृष्टिसे बड़ी हों, अुनके अनुसार काम हाथमें लेना।

"(४) अिस कामके सम्बन्धमें तुम्हारे पास जब तक कोअी संगठन न हो, खास तौर पर जातिवार मंडल या संगठन न हो, तब तक कोअी ठोस काम नहीं हो सकेगा। अुन लोगोंको कुछ अपनापन लगे, कुछ स्वाभिमान

जाग्रत होता मालूम हो, अैसा काम करना चाहिये। अिसमे जो भी खर्च हो अुसका बोझ वे लोग खुद ही अुठाये और सरकार अुसमे मदद करे।

"(५) समय समय पर जातिवार ममेलन किये जाये। अिस पर यह आलोचना भी होगी कि अिसमे साम्प्रदायिकता है, परतु अिसकी परवाह न करना।

"(६) अैसी कोशिश की जाय जिससे अिन लोगोका (क) शिक्षाकी दृष्टिसे, (ख) आर्थिक दृष्टिसे, (ग) सामाजिक दृष्टिसे और (घ) अन्तमे राजनीतिक दृष्टिसे भी अुत्कर्ष हो। पहले दो साल तक राजनीतिक मामलोमे पडनेकी जल्दबाजी न की जाय।

"(७) अिस समय हमारे लिअे सारी परिस्थितिया अनुकूल है। तुम हर जातिका मडल या सगठन बना कर अुसे आगे बढाते रहो। रचनात्मक समिति अिन पिछडे हुअे स्त्री-पुरुषो और बालकोकी सच्ची रचनाका काम हाथमे ले ले।

"(८) अिन लोगोके बीच सुधारका काम करके ये हम सबकी कक्षामे पहुच जाये, अैसी स्थिति लानेके लिअे नये सविधानमे दस वर्षकी अवधि रखी गअी है। मै तो दस वर्ष तक बैठा नही रहूगा, परतु तुम तो रहोगे ही (यह मेरा शुभाशीष है) और १९६० तक अिन लोगोके साथ हाथसे हाथ मिलाकर और कन्धेसे कन्धा लगाकर आगे कूच करते होगे।

"(९) अिन २९ जातियोके लाभार्थ गुजरातीमे कुछ न कुछ छपवाते रहना।

तुम्हारा शुभचिन्तक
अ० वि० ठक्कर"

यह पत्र लिखनेके बाद तुरन्त ही बापा बीमार पड गये और बीचमे तो बीमारीने अैसा स्वरूप ग्रहण कर लिया कि देशभरमे चिन्ताकी लहर फैल गअी। परतु अीश्वरकी कृपासे और देश तथा विशेषत दलित लोगोके सौभाग्यसे बापा थोडे ही समयमे अच्छे हो गये। थोडा काम करने लायक हो गये है, अैसा लगते ही अुन्होने अपना काम सभाल लिया और पहले ही दिन जब सौराष्ट्र रचनात्मक समितिके अध्यक्ष श्री नारणदासगाधी अुनसे मिलने आये, तब अुनके सामने भी अपने हृदयमे घुल रही यह बात अुन्होने रखी। अिस विषयके समाचार और जरूरी सूचना देनेके लिअे श्री छगनलाल जोशीको अुन्होने जो पत्र लिखा था, वह अिस प्रकार है

भावनगर,
१९ अप्रैल, १९५०

"प्रिय श्री छगनभाअी,

(श्री नारणदास गांधी मिलने आये अुस प्रसंगके शुभ समाचार)

"कल शामको श्री नारणदास गांधी मुझसे मिलने आये थे। अभी मैं अच्छा हुआ ही था और पहले पहल कल काम शुरू किया ही था कि श्री नारणदासभाअीसे अिस प्रकार भेंट हो गयी, यह मुझे बहुत अच्छा लगा। सौराष्ट्रकी जिन २९ बिलकुल पिछड़ी हुअी जातियोंके बारेमें मैंने तुम्हें पहले लिखा था, अुस विषयमें मैंने अुनसे बात की। अुन्होंने कहा कि अिस सबंधमें अुन्हें सब मालूम है। अिस कामके महत्त्वके बारेमें मैंने अुनसे खूब जोर देकर कहा और पारस्परिक भावनासे प्रेरित होकर अुन्होंने अिस कामके सबंधमें हार्दिक आश्वासन दिया। मेरे दिलको लगा कि अब वे तुम्हें, सब सेवकोंको, सरकारको और जिन रचनात्मक कार्यकर्ताओंके वे मुखिया हैं, अुन सबको साथ लेकर अिस सबंधमें यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे। मैंने कहा, 'मेरे लिअे अितना काफी है', और अुन्होंने मुझे अुस प्रसिद्ध अंग्रेजी भजनकी पंक्ति याद दिलाअी —— 'मेरे लिअे अेक कदम काफी होगा।'

"अिस प्रकार बीमारीसे अुठनेके बाद तुरन्त ही मेरा बोझ हलका हो गया है। अब तुम अिस पत्रकी नकल मंत्री श्री मनुभाअीको, अुनके सेक्रेटरी श्री वघेकाको और जिस जिसको अिस मामलेमें दिलचस्पी हो अुस अधिकारीको पहुंचा दोगे न?

तुम्हारा शुभचिन्तक
अ० वि० ठक्कर"

अिन पत्रों पर टिप्पणी लिखते हुअे सौराष्ट्र रचनात्मक समितिके मुखपत्र 'स्वराज-धर्म' के सम्पादक मअी, १९५० के अंकमें लिखते हैं

"कितनी अूंची निष्ठा, ध्येयकी कितनी अुत्कट भक्ति, कैसी आदर्श अेक-लक्ष्यता, अेक निशान तय करनेके बाद अुस तक सफलतापूर्वक पहुंचनेके लिअे कैसी सतत जागृति, कैसी अहर्निश रटन और कैसी अखंड अुपासना चाहिये, अिसका बापा सचमुच अनुपम अुदाहरण अुपस्थित करते हैं।

"८१ वर्षकी अुम्रमें बापा जो चिन्ता कर रहे हैं, प्रसन्नतापूर्वक कामका जो बोझ अुठा रहे हैं, जो अुत्साह, लगन और मिशनरीका जोश दिखा रहे हैं, वह सर्वथा सुप्त प्राणोंको भी जाग्रत करनेवाला है।"

जब भावनगरमे 'शिशु-विहार' नामक पिछडी हुअी जातियोंके अुत्कर्षकी सस्था और अुसके कामके बारेमे अुन्होने जाना और अुसके बाद अुस सस्थाको आखो देखा, तब वे खूब खुश हुअे और वहाके कार्यकर्ता श्री मानशकर भट्ट और अुनकी मित्रमडलीको बधाअी दी। परन्तु केवल बधाअीसे अुन्हे सतोष नही हो सकता था। अिसलिअे अेक दिन अुन्होने सुवर्ण महोत्सवके अवसर पर प्रकाशित अपने स्मारक-ग्रथकी बिक्रीसे आअी हुअी रकममे से १,००० रुपये अिस सस्थाको देनेका निर्णय किया।

कुछ दिन बाद दिल्लीसे रु० १,००० का ड्राफ्ट आ गया, तो बापाने श्री मानशकर भट्टको बुलाकर अुन्हे सौप दिया।

अिस अर्सेमे बापाके अेक प्रशसक और भक्त श्री छगनलाल पारेख बापासे मिलने आये, परतु बापाने तो वे आये अुसी दिन अुन्हे आडे हाथो लिया और कहा, "क्यो आये हो? जाओ, तुम्हारा यहा काम नही है।" वे आये थे अिसलिअे दो अेक दिन ठहर गये, परतु बादमे बापाने अुन्हे हिमाचल प्रदेश और कालसी आश्रममे काम करने वापस भेज दिया।

भावनगर जानेके बाद गर्मीका मौसम होनेके कारण सख्त गर्मी पड रही थी, अिससे अुनकी तबीयत अच्छी-बुरी रहा करती थी। अिसलिअे मअी और जून तथा आधी जुलाअी चोरवाडमे बितानेका निश्चय किया। तदनुसार ९ तारीखकी शामको चोरवाडके लिअे रवाना हो गये।

चोरवाडमे भी अुनका पत्रव्यवहार चलता ही रहा। अिसके अलावा वहा दो ढाअी मास रहे, अिस बीच बापाकी तबीयत देखनेके लिअे सौराष्ट्रसे और सौराष्ट्रके बाहरसे भी अुनके मित्र, प्रियजन और साथी कार्यकर्ता आये थे। अुनमे भारत-सेवक-समाजके अध्यक्ष प० हृदयनाथ कुजरू दो-तीन दिन चोरवाडमे बापाके साथ रह गये थे। बापाके साथ अुनकी यह आखिरी मुलाकात थी। अिसके सिवाय भारतीय लोकसभाके अध्यक्ष दादासाहब गणेश वासुदेव मावलकर भी अुनसे मिल गये थे।

चोरवाडमे अुनके साथी, शिष्य या भक्त, जो भी कहिये, श्री हरखचद भाअीका निवासस्थान था। अिसलिअे वहा अुनके कुटुबके साथ अेक कुटुबीजनके रूपमे रहनेमे बापाको बडा आनद आया। हरखचद भाअी और अुनके सारे परिवारने बापाकी देखभाल और सेवा-शुश्रूषा बहुत ही प्रेमसे की। बापा आरामसे रह सके, अिसलिअे अुनके रहनेको जीवणलाल भाअीके निवासस्थानका अूपरका भाग अलहदा रख दिया गया। वहा दिन भर कोअी न कोअी बापाकी सेवामे रहते ही थे। सवेरेसे शाम तक नियमित रूपमें कार्यालयका काम, पत्रव्यवहार, पुस्तक-वाचन और मुलाकाते वगैरा होती

रहती। शामको खानेके बाद सामूहिक प्रार्थना होती और उसमें हरखचन्द भाओी तथा जीवणलाल भाओीके कुटुम्बके लोगोंके अलावा गावके भी कुछ लोग भाग लेते। गीताके श्लोक और भजन वगैरा गाये जाते और बादमे रामधुन होती। बापाको उन दिनो कैसा मानसिक आनन्द आता था, उसका खयाल चोरवाड आनेके थोडे दिन बाद श्री वियोगी हरिको दिल्ली लिखे गये पत्रसे होता है

"भाओीश्री वियोगी हरिजी,

"यह पत्र इसीलिये लिख रहा हू कि मेरे हर्षमे आप तथा प्रार्थनामे इकट्ठे होनेवाले तमाम शिक्षक भाओी, विद्यार्थी और बालक वगैरा शरीक हो।

"यहा हरखचन्द भाओीकी बडी लडकी, जिसका नाम विजया गाधी है और जो श्री नारणदास गाधीकी पुत्रवधू है, रातको रोज बहुत सुन्दर ढगसे प्रार्थना कराती हे और अपनी ११ वर्षकी बच्चीके साथ नये नये भजन बहुत अच्छी तरह गाकर सुनाती है। रोज रातको ८ से ९ तक तीन-चार कुटुबोंके स्त्री-पुरुष और बच्चे जमा होकर कल्लोल करते है। यह क्रम यहा आनेके बाद शुरूके तीन चार दिन छोडकर बराबर चल रहा है। इस समय मुझे तुम्हारे वहाका प्रार्थना-मदिर याद आ रहा है और शास्त्रीजी भी याद आ रहे है। यह पत्र प्रार्थनाके बाद पढकर सबको सुना देना।"

चोरवाडमे बापा कैसा आनन्द अनुभव कर रहे थे, यह ऊपरके पत्रसे प्रगट होता हे। साथ ही उन्होंने जिन कुटुम्बोका चारो ओर विस्तार किया था उनको भी इसमे भागीदार बनानेकी उनकी उत्सुकता दिखाओी देती है। दिल्ली हरिजन-सेवक-सघ और उद्योगशालाके भाओी-बहन उनके हृदयमे कितने गहरे बसे हुओे थे, यह उनके हरिजीके नाम लिखे अेक दूसरे पत्रसे प्रकट होता है

"भाओीश्री वियोगी हरिजी,

"आपकी तरफसे जब बहुत दिन तक पत्र नही आता, तब अैसा महसूस होता हे कि अभी तक अेक मित्रका पत्र आना बाकी रह गया है और मनमें यह भी प्रश्न उठता है कि अभी तक उन्होने पत्र क्यो नही लिखा होगा? कोओी प्रसग न हो तो भी राजी-खुशीका पत्र लिखते रहिये। आपका पत्र आनेसे मुझे अेक प्रकारका मानसिक सन्तोष होता हे।

"आजकल हमारी उद्योगशालामे छुट्टिया होगी और लडके सब घर गये होगे। थोडे बहुत रहे होगे।

"लक्ष्मणके घर पर अुनकी माताजी, शान्ति तथा अुनके चारो बच्चे (या बादमे पाच हो गये हैं?) सब अच्छे होगे। सतोष और शकुन्तला दोनोको याद करता हू। माताजीसे मेरा नमस्कार कहना।

"बिडला परिवारके समाचार भी लिखते रहे। कोअी खास बात हो तो जरूर लिखे। भाअीजी कहा है? दिल्लीमे हो तो अुन्हे मेरा नमस्कार जरूर कहना।

"हमारे आश्रममे सहदेव, विष्णु तथा मेरे पडोसी दामोदर मास्टर, भागवत, मोती वगैराको मेरा आशीष कहना। बच्चोको वॉलीबाल खेलने देना।

"मेरा स्वास्थ्य जैसा दिल्लीमे रहता था, वैसा ही अच्छा-बुरा रहता है। अेक बार भावनगरमे और अेक बार चोरवाडमे स्वास्थ्यको काफी धक्का लगा। अिससे घरमे भी चलना-फिरना मुश्किल हो गया है। अीश्वरको अिस शरीरसे जब तक थोडा बहुत काम लेना होगा लेगा। अभी तो विचार करनेकी शक्ति जैसीकी वैसी बनी हुअी है। फिर भी स्मरण-शक्ति घट गअी है।

'सबका करे कल्याण, दयालु प्रभु सबका करे कल्याण।'

आपका

अ० वि० ठक्कर"

"पुनश्च तीन क्षयरोगियोमे से अेक जोशीजीकी स्त्री तो बेचारी चल बसी। आपके लक्ष्मण और कम्पाअुडर लखीरायकी क्या हालत है, सो कृपा करके लिखिये। यहाका जलवायु बहुत अच्छा और अनुकूल है।"

चोरवाडमे रहे तब तक पत्रव्यवहार और दफ्तरका कामकाज निबटानेके बाद नियमित रूपमे धार्मिक पुस्तकोका पाठ होता। रामचद्रसे वे विवेकानदका जीवन-चरित्र और अुपदेश पढवाते और वेणीशकरभाअी नामक अेक सज्जन दोपहरके बाद आकर रोज महाभारतमे से थोडा हिस्सा पढकर सुनाते। हरखचदभाअी और नलिनसे नानाभाअीके 'रामायणके पात्र' नामक ग्रन्थका पाठ कराते। अिसके अुपरान्त 'बापूके कदमोमे' नामक श्री राजेन्द्रबाबूकी पुस्तकमे से कुछ हिस्सा पढा जाता। अेक बार गढवी मेरुभा वहा आ पहुचे और दो तीन दिन ठहरे। तब लोकगीतो, लोककथाओ आदिका जलसा भी रहा। बापाको ये गीत और कथाअे खूब पसन्द आअी।

चोरवाडमे भी अुनकी तदुरुस्ती बहुत ज्यादा गिर गअी थी। परतु अन्तमे अुस स्थितिमे से भी वे अुठ बैठे और अपने प्रिय हरिजनो तथा पिछडे हुअे वर्गोके कार्यके सचालनमे फिरसे समय देने लगे।

चोरवाडमें दो-तीन बार बारिश हो गयी और गरमी कम हो गयी तो १७ जुलाओको चोरवाडसे रवाना होकर दूसरे दिन बापा भावनगर पहुंचे और वहां हरिजनों, पिछडे हुअे वर्गों वगैराका काम फिर हाथमें ले लिया। अुन्होंने पिछडी हुआी जातियोंके कार्यकर्ता और शिशु-विहारके संचालक श्री मानशंकर भट्ट तथा अन्य कुछ युवकोंको भावनगरके नये कुम्हार मुहल्ले, करचलियापुरे, हरिजनवास, कोलीवास और अैसे ही अन्य पिछडी हुआी जातियोंके मुहल्लोंमें भेजा और अुनकी स्थितिकी जांच करा कर तथ्य और आंकडे अिकट्ठे करवाये। अिस जांचके दौरानमें जब मालूम हुआ कि भावनगरमें कोली जैसी पिछडी हुआी जातिमें अेक कन्या अपने प्रयत्नसे ही आगे बढकर कालेज तक पहुंची है, तब अुन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। पहले तो वे मान ही न सके कि यह बात सच है। परंतु बादमें जब स्वयं जांच करके यकीन कर लिया तब अुन्हें बडा आनंद हुआ। अिसके बाद अुन्होंने भावनगर कालेजके प्रिंसिपाल साहब और प्रोफेसरोंको बुलाकर अिस कोली युवतीकी सिफारिश की। तथा पुस्तकों और अन्य फुटकर खर्चके लिअे अुसका बन्दोबस्त कर दिया।

पिछडी हुआी जातियों, दलितों और हरिजनोंका हित अुनके जीमें कैसा बसा हुआ था, अिसका अुदाहरण बिहारकी मुसाहर जाति (हरिजनोंकी अेक पिछडी हुआी जाति) के बारेमें वे रातदिन जो गहरी चिन्ता करते थे अुससे मिलता है। अुसके लिअे कुछ न कुछ व्यवस्था कर सके तभी अुनके जीको शान्ति मिली। १९४९ के अन्तमें जब बापा बिहार सरकार द्वारा हरिजनों तथा पिछडी हुआी जातियोंके कल्याणके लिअे नियुक्त समितिके अध्यक्षकी हैसियतसे दौरे पर गये, तब अुन्हें बिहारकी अिस मुसाहर जातिके दुःख-दर्दोंके बारेमें, अुसकी पिछडी हुआी स्थितिके विषयमें सच्ची परिस्थिति मालूम हुआी थी। अिसलिअे अुन्होंने अुस समय मनमें निश्चय कर लिया कि अिन लोगोंके अुत्कर्षके लिअे कुछ न कुछ करना ही है। साथ ही यह वचन भी दिया कि अिस कामके लिअे १९५० की जनवरीमें मैं फिर बिहार आअूंगा। परन्तु अुनकी तंदुरुस्ती अुत्तरोत्तर अितनी बिगडती जा रही थी और वृद्धावस्थाने अुन्हें अैसा घेर लिया था कि अुसके बाद वे बिहार नहीं जा सके। परन्तु वहां जाकर यह प्रश्न निबटानेकी बात तो अुनके मनमें रह ही गअी थी।

अिसलिअे दिल्लीसे अंतिम विदा लेकर भावनगर आनेके बाद अुन्होंने अेक ओर सरकार तथा गांधी-स्मारक-निधिके साथ और दूसरी तरफ बिहारके कुछ कार्यकर्ताओंके साथ पत्रव्यवहार शुरू कर दिया और बिहारकी अिस मुसाहर जातिके लिअे कुछ न कुछ करनेकी जरूरत अुन्हें समझानेकी

कोशिश की। भावनगरमे भी वहुतसे कार्यकर्ताओको वे विहार जानेको समझाते थे। असके सिवाय भील-सेवा-मडलके पुराने कार्यकर्ता श्री अवालाल व्याससे भी अुन्होने कह रखा था कि यदि विहारमे मुशाहर जातिमे काम करनेवाला कोअी कार्यकर्ता न मिले तो तुम्हे जाना होगा। अगस्त माससे अुन्होने अिस कामको पूरा करनेके प्रयत्न शुरू किये। अतमे ३ सितवरको अेक ही दिन अुन्हे राचीसे तार द्वारा दो शुभ समाचार मिले। अुनमे से अेक समाचारमे कहा गया था कि श्री वलदेवसिहजी नामक प्राध्यापक श्रेणीके विहारके अेक कार्यकर्ता मुशाहर जातिमे पाच वर्ष काम करनेको तैयार हो गये है। दूसरे समाचारमे था कि गाधी-स्मारक-निधिकी विहार शाखाने तीन वर्षके लिअे यह काम आगे वढानेको २५ हजार रुपयेकी रकम मजूर की हैं। यह समाचार सुन कर वापाके हर्षका पार न रहा। अन्तमे अुनके दिलकी यह वडी मुराद पूरी होनेकी सभावना दिखाअी देने लगी कि मेरी आखे वन्द होनेसे पहले विहारकी अिस अभागी जातिमे जीवनके पाच सात वर्ष खर्च करके सेवा-कार्यकी वुनियाद डाल दू। अिससे अुनकी खुशीका कोअी पार नही रहा। ये तार मिलनेके वाद अुन्होने विहारके दो प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ता — राचीके श्री नारायणजी और श्री वलदेवसिंहको भावनगर वुलाया और भारत-सेवक-समाज तथा भील-सेवा-मडलकी रीतिके अनुसार घीका दीया जलवाकर अपने सामने मुशाहर जातिमे सेवा करनेको तत्पर हुअे श्री वलदेवसिहको पाच वर्षकी प्रतिज्ञा लिवाअी और अुन्हे अिस कार्यमे अुत्साह और प्रेरणा मिले, अैसा अेक छोटासा प्रवचन करके अुन्हे आशीर्वाद दिया।

विहारके कामके वारेमे जव अुन्होने प्रयत्न आरभ किया, अुसी अरसेमे अेक और घटना हुअी जिसने वापाको रोगशय्या पर भी वेचैन कर दिया। वह था आसामका अैतिहासिक भूकप। १५ अगस्तको जव समस्त भारतमे लोग स्वाधीनता-दिवस मना रहे थे, तव आसाम प्रान्त भयकर भूकपसे हिल अुठा। दुनियामे अव तक जितने भूकप हुअे है, अुनमे भयकरताकी दृष्टिसे यह दूसरे नम्वरमे आता है। फिर भी सारा प्रान्त पहाडो, वनो और जगलोसे भरा हुआ होनेके कारण अुसकी वस्ती छिछली है। अिसलिअे घनी आवादीवाले अिलाकोकी अपेक्षा अुसमे जान-मालकी वरवादी वहुत कम हुअी। तथापि हजारो मकान गिर गये। धरती फट गअी और अुसमे वडी वडी दरारे पड गअी। सडके और पुल टूट गये। नदियोके प्रवाह वदल गये। नदियोमे भारी वाढे आ गअी। पहाडोके हिस्से टूट पड़े और नदीमे जहा पानी था वहा ककड दिखाअी देने लगे और

धूल अुडने लगी। दूसरी तरफ जहा सूखी जगह थी वहा पानी अिकट्ठा होने लगा, जिसके परिणाम-स्वरूप आसामकी कुछ नदियोमे वाढ आ गअी। किनारेके वहुतसे गाव अिस वाढमे वरवाद हो गये। धन-जनकी हानि काफी मात्रामे हुअी। भूकप ओर नदियोमे अचानक आअी वाढके कारण हजारो आदमी ओर अिससे भी अधिक पशु मारे गये। अिस भूकपके कारण सवसे ज्यादा नुकसान अुत्तर पूर्वी सीमा पर स्थित अुत्तर लखिमपुर, डिब्रूगढ तथा शिवसागर जिलोके कुछ भागोको हुआ।

भूकम्पके समाचार भावनगरमे वैठे वेठे वापाको जव रेडियो ओर समाचारपत्रो द्वारा मालूम हुअे, तव अुनका दिल भर आया। अुनके हृदयमे भी भूचाल आ गया। वेचारे आसामके लोगोका क्या हाल हुआ होगा? वे हजारोकी सख्यामे मारे गये होगे। अुससे भी ज्यादा निराधार हो गये होगे। अुनके कुटुम्वोका क्या हुआ होगा? अुनके वाल-वच्चोका क्या हुआ होगा? — अैसे अैसे विचार अुनके मनमे अुठने लगे। क्षणभर तो वहा दौड जाने और खुद सारी स्थितिका पता लगानेकी जीमे आअी, परन्तु अुनकी शारीरिक स्थिति आसाम तो क्या भावनगरमे भी दूसरेकी सहायताके विना चलने-फिरने लायक नही थी। अकाल, वाढ, भूकम्प ओर अैसी ही दूसरी कुदरती आफतोके समय देशके किसी भी कोनेमे दौड जाने-वाले वापाको अिस समय अपनी शारीरिक अशक्तिने वेचैन कर दिया। अिस पर भी अुडीसा ओर आसाम तो अुनके विशेष प्रिय प्रान्त थे। वहाके आदिवासी और हरिजन अुनके अपने वच्चे ही थे। वच्चो पर आफत आये ओर पिता खुद मदद न कर सके, तव पिताके हृदयकी जो स्थिति होती है, वही वापाके हृदयकी थी। अुस समय अेक मित्रको लिखे पत्रमे अुन्होने लिखा था, "आजकल मैं भावनगरकी मामाकोठा रोड पर स्थित अेक मकानकी तीसरी मजिल पर हू, परन्तु मेरा हृदय तो आसामके अुन भूकम्प-पीडित सकटग्रस्त लोगोमे दौड गया हे।" वापाका कोमल हृदय अिन अभागे लोगोके दु खसे द्रवित हो रहा था। लेकिन वे तो श्रद्धालु जीव थे। शारीरिक अशक्ति या दूसरी मुश्किलोसे वे हारनेवाले नही थे। भूकम्पके समाचारोका पूरा व्योरा जान लेनेके वाद अुन्होने आसामके गवर्नर श्री जयरामदास दोलतरामको अेक तार किया। अुसमे जरूरत हो तो भारत-सेवक-समाजके चुने हुअे कार्यकर्ताओको आसाममे कष्ट-निवारण कार्य करनेके लिअे भेजनेका प्रस्ताव रखा। दूसरे दिन आसामसे गवर्नरका तारसे अुत्तर आया। अुसमे अुन्होने पूछताछ की कि वे लोग क्या काम कर सकेगे? शहरमे रहकर कार्यालयकी व्यवस्था देखेगे या गावोके भीतरी

भागोमे जाकर कष्ट-निवारणका काम करेंगे? साथ ही अुन्हे तैरना आता है या नही? बापाने तारसे जवाब दिया, "यह तो मैं नहीं जानता कि सब लोगोको तैरना आता है या नहीं, परन्तु जिन लोगोको मैं भेज रहा हू वे सब कसे हुअे सेवक हैं। अुन्हे गावोमे या शहरोमे जहा भेजेगे वही वे जायेगे और मनुष्यसे जो कुछ सभव है वैसी सब प्रकारकी सेवा करेंगे।"

आसामके गवर्नरके साथ तारोका व्यवहार होनेसे पहले ही अुन्होने आसामके भूकम्पके सिलसिलेमे सहायता-कार्य करनेको कौन कौन तयार है, अिस सम्बन्धमे लगातार तीन परिपत्र लिखवाकर भिन्न भिन्न स्थानो पर भेज दिये थे। अिसके अलावा कुछ लोगोको पत्रोसे पुछवाया और जिन जिन लोगोने अपनी रजामन्दी जाहिर की अुनमे से छटनी करके कुछको पसद किया और तत्काल कार्यक्रम बनाकर आसाम जानेको तैयार रहनेके लिअे अुन्हे सूचित कर दिया।

आसामसे गवर्नरका फिर जवाब आया तो अुन्होने भारत-सेवक-समाज और भील-सेवा-मडलके मिलाकर ५ चुनिंदा कार्यकर्ताओको तैयार किया और अुन्हे आसाम जानेकी सूचना दी। आसाम जैसे विविधतावाले प्रदेशमें जानेके लिअे कितने ही लोगोकी अिच्छा होना स्वाभाविक था। आसाम जायेंगे, वहा अेकाध महीना रहकर कष्ट-निवारण कार्य करेंगे, अच्छा मजेका सफर होगा। नया अिलाका देखनेको मिलेगा, नये लोग देखनेको मिलेंगे और सेवाका भी काम होगा। अिस तरहका विचार करके भी कुछ लोग आसाम जानेको तैयार हुअे थे, परन्तु बापा तो अिस प्रकारके राहत-कार्य करते करते बूढे हो गये थे। यह बात अुनके अनुभवसे बाहर नही थी। अिसलिअे आसाम जानेको जो भी सेवक तैयार हो, अुन्हे कमसे कम तीन महीने तो वहा रहकर सेवाकार्य करना ही होगा, यह पहली शर्त अुन्होने रखी थी। अैसे मामलोमे वे जो परिपत्र निकालते थे अुनसे यह पता लगता है कि वे अिन कामोमे कितनी सावधानी रखते थे और सूक्ष्म सूचनाओ तथा जानकारी देकर सेवकोका कैसा मार्गदर्शन करते थे। अैसे अनेक परिपत्रोमे से अेकका थोडा महत्त्वका भाग देखिये।

परिपत्र क्रमांक ५

भारत-सेवक-समाजकी ओरसे आसाममें भूकम्पके सिलसिलेमें सहायता-कार्य करने जानेवाले सेवकोके लिअे।

"यह परिपत्र आपको कुछ सूचनाअे देनेके लिअे भेजा जा रहा है। ये सूचनाअे आप जब आसाम जाये और वहा रहकर सेवाकार्य शुरु करें, तब आपके लिअे अुपयोगी हो अिस खयालसे दी गअी है।

"प० मिश्र शिलोगके लिअे रवाना हो चुके हैं। सब काम अुनके हाथमे रहेगा। अिसलिअे प्रत्येक कार्यकर्ताको जहा रखा जाय, वहासे अपने कार्यका विवरण अुसे प० मिश्रको भेजना होगा और दूसरोको अुसकी नकल भेजनी होगी।

"१,००० रुपयेकी रकम श्री आर० जेस० मिश्रके हाथोमे सौपी गअी है। अिसे वे जहा जरूरी समझे वहा खर्च करेगे। वे अिसका हिसाब रखेगे ओर अगर ज्यादा रकमकी जरूरत पडे तो श्री डी० वी० आवेकर, भारत-सेवक-समाज, पूना–४ से मगवा लेगे।

"मैने आसामके गवर्नरसे प्रार्थना की थी कि शिलोग जानेवाले तमाम सेवकोका अपने निवासस्थानमे शिलोग तकका और शिलोगसे आगे जहा काम सौपा जाय अुस स्थान तकका खर्च अुन्हे अुठाना चाहिये। साथ ही मैने अुनसे यह भी अनुरोध किया था कि कार्यकर्ता आसाममे रहे तब तकका तमाम खर्च — खाने-पीने और रहनेका — अुन्हे भुगतना चाहिये। अिस बातका अुन्होने हा या नामे कोअी जवाब नही दिया है। फिर भी मुझे आशा है कि वे मेरे दोनो प्रस्ताव मान लेगे। परन्तु शायद अुनके कोषसे अुपरोक्त रकम न मिले तो भी अिस बारेमे कोअी सेवक किसी तरहकी कानाफूसी न करे। बल्कि जो कुछ पूछना हो मुझे पूछ लिया जाय।

"जो पाच भाअी शिलोग जा रहे हैं, अुनका परिचय मैने अिसमे पहलेके ता० १–९–'५० को लिखे गये परिपत्र न० ४ मे दिया है। अुसमे बताये गये अिन पाच सेवकोके सिवाय छठे श्री के० अेल० अेन० राव भी शिलोग जा रहे हैं। यह न भूलना चाहिये कि वे अेल० अेन० राव नही, परन्तु के० अेल० अेन० राव हैं। वे मगलोरमे भारत-सेवक-समाजके कार्यकर्ता हैं।

"श्री जनार्दन पाठक, जिन्हे मैने आसाम भेजनेका विचार किया था, अिससे पहले ही कुष्ठरोगियोकी सेवा करनेके लिअे वर्धा चले गये हैं और वे १२ सितबर, १९५० के लगभग शिलोग पहुचेगे।

"आसामके गवर्नर यह देखनेको आतुर हैं कि आसाम जानेवाले हमारे तमाम कार्यकर्ता अच्छे तैराक हो, ताकि देहातके कष्ट-निवारण कार्यमे अुपयोगी सिद्ध हो सके। परन्तु अब मैं देख सका हू कि वहा भेजे जानेवाले छ और तीन ९ कार्यकर्ताओमे से बहुत थोडे भाअियोको तैरना आता है। यह बात शोचनीय है।

"श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहकाकी, जिनका कलकत्ते तथा गौहाटीमे व्यापार चलता है और जो ससदके सदस्य है, श्री वाजपेयीके साथ थोडी बाते हुअी थी। श्री वाजपेयीने अुन्हे कहा था कि, 'मै आसामके गवर्नर और प्रान्तीय काग्रेसके अध्यक्षसे मिला था। दोनोने मुझे बताया कि आसाममे लोकशक्ति तो बहुत है। काम करनेवालोकी भी कमी नही है। परन्तु अिस समय आसामके सकटग्रस्त लोगोकी तात्कालिक जरूरत कपडे और रुपयेकी है। अुन्होने मुझे अिस मुद्दे पर लिखनेका अधिकार दिया है।'

"अूपर यद्यपि यह बताया गया है कि आसामके पास पर्याप्त सेवक है, फिर भी व्यक्तिगत रूपमे मै अिसे सही नही मानता। मै जानता हू कि आसाममे सेवाभावी कार्यकर्ताओकी कमी है। अिसलिअे देशके अलग अलग भागोसे आसाम जानेवाले हमारे भाअियोकी सेवाओकी वहा खूब कद्र होगी, अिसका मुझे पूरा भरोसा है।"

आगे चलकर परिपत्रमे अुन लोगोके नाम और परिचय देकर, जिनकी जरूरत पडने पर आसाममे सलाह और मदद ली जा सकती है, अन्तमे बताया गया है

"प्रत्येक कार्यकर्ताको मेहरबानी करके अितना ध्यानमे रखना है कि अुन्हे आसाममे पूरे ९० दिन सेवाकार्यमे लगाने है। अिसमे अेक दिन भी कम नही हो सकता। अिस मामलेमे मै बहुत सख्त हू। कुछ लोग वहा आनदकी यात्रा करने या कुतूहल शान्त करनेके लिअे जानेकी अिच्छा रखते है। परन्तु मै यह चीज बर्दाश्त नही करूगा। सभव हो तो ९० दिनसे अधिक सेवा करे, परन्तु अेक भी दिन कम किसी सेवकके मामलेमे बर्दाश्त नही किया जायगा।"

अिस प्रकार परिपत्र भेजनेके बाद आसाम जानेवाले सेवकोको जल्दी वहा पहुच जानेके लिअे अुन्होने ताकीद की। आसाममे जिन मिश्रजीके नेतृत्वमे भारत-सेवक-समाजका दल काम करनेवाला था, वे अन्य कार्योके कारण अलाहाबाद रुक जानेसे वहा समय पर नही पहुच सकते थे। अिस-लिअे अुन्होने भील-सेवा-मडलके अेक आजीवन कार्यकर्ता श्री डाह्याभाअी नायकको जल्दी ही आसाम पहुच जानेके लिअे सूचित किया। अुस समय भील-सेवा-मडलका रजत महोत्सव नजदीक आ रहा था और अुसके जलसेके शुभ अवसर पर स्वतत्र भारतके सर्वप्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबू वहा खास तौर पर आनेवाले थे। अपने जीवनके महा मूल्यवान वर्ष जिसने भीलोकी सेवा और भील-सेवा-मडलके कार्यमे बिताये हो, अुसे अिस महान अवसर पर वहा मौजूद रहनेकी अिच्छा होना स्वाभाविक है। फिर

भी डाह्याभाओी तो वापाके शिष्य थे। अुन्होने अुनके अधीन रहकर अपने जीवनके २५ वर्ष सेवामे विताये थे। अिसलिअे अुन्हे कर्तव्य-कर्म पूरा करनेमे ही सतोप था। वापाने अुन्हे अुत्सव और समारोहके तेज प्रकाग और आनन्द-प्रमोदके वीच रहनेके वजाय हजार वारह सौ मील दूर भूकम्प-पीडित आसामकी गरीव पहाडी जातियोकी सेवा करनेको भेज दिया। डाह्याभाओीके लिअे वापाकी अिच्छा ही अुनकी आज्ञा थी। अिसलिअे ओर तो सोचना ही क्या था? अुत्सवमे भाग लेनेको ठहरनेके वजाय वे जल्दीसे जल्दी दाहोदसे दिल्ली और दिल्लीसे कलकत्ता होकर शिलोग पहुच गये। ओर वापाके आदेशके अनुसार गवर्नरसे मिलकर अुन्होने अपना कार्यक्रम वना लिया।

आसामके गवर्नर श्री जयरामदास दौलतरामने तुरत अुनका स्वागत किया और पहली मुलाकातमे ही सारी वातचीत कर लेनेके वाद अुन्हे परिस्थितिकी जाच करनेके लिअे भीतरी भागोमे भेज दिया।

यह काम शुरूमे अुन्हे वडी जिम्मेदारीका लगा, फिर भी श्री डाह्याभाओीने वापाको अेक पत्रमे लिखा, "आपकी कृपासे मैं अिस कामको पूरा कर सकूगा।"

आसाममे सेवक भेजकर ही वापाने सन्तोष नही मान लिया, परन्तु वे सव वहा क्या क्या काम कर रहे है, जिस कामके लिअे गये है वह ठीक हो रहा है या नही ओर जिस महान सस्थाकी तरफसे वे गये है, अुस भारत-सेवक-समाजकी प्रतिष्ठाके अनुरूप व्यवहार करते है या नही, अिसका भी वे ध्यान रखते और अुनके कामकाजकी वारीक तफसीलोसे परिचित रहते। अिसके लिअे वे सारे सेवकोके साथ पत्रव्यवहार करते, अुनके कामोका विवरण मागते, अुन्हे समय समय पर मार्गदर्शन और सूचना देते और भावनगर जैसी दूर जगहमे वैठकर भी अुनके सहायक वननेका प्रयत्न करते।

श्री डाह्याभाओी नायकने आसाम जानेके वाद अपनी कार्यशक्ति, योजनाशक्ति ओर अैसे कामोकी वापासे पाओी हुओी तालीम ओर अनुभव वगैराके कारण वहा पहुचते ही थोडे दिनोमे स्वभावत कष्ट-निवारण कार्यके सचालकोकी अगली कतारमे स्थान प्राप्त कर लिया और गवर्नर तथा दूसरे लोगोका विश्वास और प्रेम सपादन करके गवर्नरने जो केन्द्रीय कष्ट-निवारण-समिति मुकर्रर की थी अुसके मत्रीकी हैसियतसे वजट वगैरा तैयार किया और कार्यकारिणी समिति द्वारा अुसे मजूर करवा कर अुस कार्यका सचालन करने लगे।

अुनके कार्यकी जो रिपोर्ट अखबारोंसे तथा दूसरी तरह बापाको मिलती थी, अुसे बापा ध्यानपूर्वक देख लेते थे। श्री डाह्याभाअीका नाम अिस प्रकार समय समय पर समाचारपत्रोंमे चमकने लगा तो प्रसिद्धिसे सदा ही चौंकने और भागनेवाले बापा तुरत सजग हो गये और अुन्होंने ता० २४–१०–'५० को श्री डाह्याभाअीको चेतावनी देनेवाला अेक पत्र लिखा। अुसमे अुन्होंने बताया

"तुम्हारे और श्री लक्ष्मीदास आसर दोनोके शिलोंगसे ता० १८–१०–'५० को लिखे पत्र साथके कागजो सहित मिले। परन्तु किसी कारणसे वे आज छ दिन देरसे मिले। अुसके बाद श्री लक्ष्मीदास कलकत्ते पहुच गये और वहा छगनभाअीसे मिलकर अुन्होंने क्या क्या काम किये, अिसका ब्यौरा बतानेवाले पत्र मिले। अब लक्ष्मीदास दिल्ली पहुच गये होंगे।

"यह पत्र तुम्हे अेक खास कारणसे लिख रहा हू। ता० १३–१४ की दो सभाओकी अखबारी रिपोर्टोंमे जहा तहा तुम्हारा नाम मंत्रीके रूपमे पढा। बजट भी तुम्हारे बनाये हुअे सब पास हो गये। अिसमे किसीको प्रान्तीयताकी गंध आये बिना न रहेगी, यह आसानीसे समझमे आ सकता है। अिसलिअे तुम्हे खास तौर पर सावधानी रखना है और अिस प्रकार रहना है कि सबके साथ प्रेमभाव बढे। सब पर अैसी छाप डालो कि हम अुन्हीके है। सबकी सेवाका आग्रह रखो। कार्यकारिणी समितिकी मजूरीके बगैर कोअी काम न करो। सहकारी मंत्री श्री बी० पी० चालीहाको भी साथ रखो। गवर्नर तो अपने है ही। परन्तु आसामी भाअियोको खुश रखनेकी खास कोशिश करना। अुनसे मिलते रहना, अुनके साथ भोजन करना और अुनमे घुलना-मिलना, अुनके यहा जाना-आना। अिसके लिअे विशेष प्रयत्न करना।

"मैने तुम्हे १५ सितंबरको दाहोदसे रवाना किया, यह खास तौर पर अच्छी बात हुअी अैसा मेरा खयाल है। रजत जयंतीके अुत्सवमें तुम अुपस्थित न रह सके, अिसके लिअे मुझे जरा कठिनाअी प्रतीत हुअी थी। परन्तु तुम्हारा वहा जाना जरूरी था।

"छगनभाअीने कलकत्ते रहकर माल खरीदने, अिकट्ठा करने और रवाना करनेका काम अपने अूपर लिया है, यह भी ठीक ही है। अुसके लिअे वे योग्य है और अुसे अच्छी तरह पूरा करेंगे। केवल अेक ही बात समझमे नही आती कि कलकत्तेसे बहुतसा माल विमान द्वारा कैसे

भेजेंगे? और अुसका खर्च कितना ज्यादा आयेगा? अिस गुत्थीके बारेमें मैंने अुन्हें कलकत्ते पुछवाया है।

"साथ ही तुम्हें लिखता हूं कि आसामी भाअियोंका प्रेम प्राप्त करनेके लिअे गांधीजीका ढंग अख्तियार करना। If you will love a man he will love you गांधीजी किसी भी प्रान्तमें जाते — फिर तामिलनाड हो या आन्ध्र, बिहार हो या आसाम — तो वहांके लोग कहते कि गांधीजी तो हमारे ही है। अैसा वातावरण हमें पैदा करना चाहिये।"

अिस मुख्य बात पर अच्छी तरह जोर देनेके बाद आसामके काममें लम्बे समय तक लगे रहनेका आदेश देते हुअे अुसी पत्रमें बापाने आगे लिखा

"याद रखना कि लक्ष्मीदास और छगनलाल आते जाते रहेंगे और तुम्हें वहां लगातार रहना है। कमसे कम छ महीने लगेंगे। तब तक और कोअी विचार मत करो। पंचमहालमें क्या हो रहा होगा, अिसका भी विचार मत करना। अीश्वर अुसे संभाल लेगा। मणिको तुम्हारे पास भेजनेका प्रबंध करूंगा। अपना विचार लिखना।

"अमियबाबूको सादियाके पास गवर्नरके साथ बच जानेके लिअे मेरी तरफसे बधाअी देना।"

अिस पत्रके अुत्तरमें डाह्याभाअीने ब्योरेवार पत्र लिखकर बताया कि, "मुझे सहकारी मंत्री नियुक्त किया गया, अिसकी मुझे जरा भी गंध नहीं थी। श्री जयरामदासजीको अपने विश्वासका आदमी चाहिये था। और मैंने दौरा कर आने पर कुछ बातें पेश कीं। अिसलिअे शायद अुन्होंने यह जिम्मेदारी मुझे सौंपी हो। श्री चालीहाको भी सहकारी मंत्रीके तौर पर लिया है, अिसलिअे प्रान्तीयताकी बात नहीं रह जाती। फिर भी मैं अुन्हें हमेशा साथ ही रखता हूं। अलबत्ता, वे यहां नहीं बल्कि गौहाटी रहेंगे। किसीको भी अैसा नहीं लगने दूंगा कि मैं दूसरे प्रान्तका हूं। श्री मेधी और श्री अमियबाबूसे बार-बार मिलता रहता हूं। अिन सबको खुश रखना मेरा काम है। मैं यहां कष्ट-निवारण कार्यके लिअे आया हूं। यह काम सबसे कराना ही मेरा मुख्य कार्य रहेगा। अिसमें अपने व्यक्तित्वको बाधक नहीं होने दूंगा। पूज्य बापूजीने तो सब सेवकोंके सामने महान आदर्श पेश किया है और आपने अुस आदर्शको जीवनमें अुतारा है। आपका और पूज्य बापूजीका आदर्श नजरके सामने रखूंगा और अुसे जीवनमें अुतारनेका प्रयत्न करूंगा।

" मैं फिरसे आपको विश्वास दिलाता हू कि यहा सबके साथ मिलजुल कर रहूगा और सबका प्रेम जीतनेकी कोशिश करता रहूगा।"

और श्री डाह्याभाओी जब तक आसाममे रहे, तब तक सत्ता या प्रसिद्धिकी परवाह किये बिना सबके साथ मिलजुलकर काम करते रहे और सेवा-कार्यमे लगे रहे। आसामके अपने निवासकालमे वे तीन बार भूकम्पसे नष्ट हुअे भीतरी भागोमे घूमकर जाच कर आये। पासीघाट जानेके लिअे जब अेक बार अुन्होने आसामके गवर्नरसे अिजाजत मागी, तब अुन्होने यह खतरनाक सफर न करके केवल तार द्वारा वहाके राजनैतिक अफसरोसे सम्पर्क साध कर परिस्थितिसे परिचित होनेकी सलाह दी थी। परन्तु जो बापाकी पाठशालामे सेवा-धर्मका पाठ सीखे थे, वे क्या अैसे खतरेसे डरनेवाले थे? खतरा अुठाकर भी श्री डाह्याभाओी रगडोओीके पास ब्रह्मपुत्रा नदी पार करके वहा गये और वहासे अुन्होने स्वय जाच करके काफी जानकारी अिकट्ठी की। अिसका थोडासा ब्यौरा अुन्हीके शब्दोमे देखिये

"लगभग नौ हजार वर्गमीलके विस्तारवाले और मुख्यत अेबोर जातिकी आबादीवाले अेबोर हिल्स जिलेके लोगोका सम्पर्क १५ अगस्तसे ६ दिसबर १९५० तक सिर्फ वायरलेसके सिवाय पूरी तरह कट गया था। सरकारी अधिकारियोके सिवाय कोओी अिस वायरलेसका अुपयोग नही कर सकता और यह अुपयोग भी सरकारी कामके लिअे ही हो सकता है। अिस क्षेत्रके लोगोको चावल, नमक, चाय और खुराककी अत्यत आवश्यक वस्तुअे हवाओी जहाज द्वारा पहुचाओी जाती थी अर्थात् ये सब चीजे हवाओी जहाजसे फेकी जाती थी। अिस प्रकार लोगोको चीजे मुहैया करना भी १० नवम्बरसे बन्द कर दिया गया, क्योकि अिसके लिअे जो डाकोटा विमान काममे लाया जाता था, अुसे केन्द्रीय सरकारने वापस मगवा लिया। अिस अिलाकेका अिन्तजाम केन्द्रीय सरकारके हाथमे है और आसामके गवर्नर अिस प्रदेशके लिअे अुनके अेजण्टके रूपमे काम करते है।

"बाकी दुनियासे जिस प्रदेशका सपर्क कट गया हो और व्यवहारके अन्य कोओी भी साधन न हो, अुस प्रदेशके लोगोकी कठिनाअियो और दुर्दशाका वर्णन करनेकी भी जरूरत है? अिसकी हम अच्छी तरह कल्पना कर सकते है।

"पासीघाटके राजनैतिक अफसरको १५ अगस्तको डाली हुओी डाक ६ दिसबरको पहली बार मिली थी। पहाडियोके बीचकी दरारोके कारण (कहा

जाता है कि अुनमें से अेक दरार सात मील लम्बी थी।) पहाडोमें जिन पगडडियो द्वारा अेबोर लोग अपने लिअे जरूरी चीजे पासीघाटसे खरीद लाते थे वे पगडडिया पूरी तरह मिट गअी थी। अिसके फलस्वरूप अिस सारे अिलाकेमें लगभग दो मास तक सारा व्यवहार बन्द हो गया था। कुछ बताये हुअे स्थानोमें विमानसे अनाज डाला जाता था। खास तौर पर आसाम रायफल्सके चौकी-थानोमे, जहासे लोगोको खुराक बाटी जाती थी। पहाडियोमे बसनेवालोने धीरे धीरे मिटी हुअी पगडडियोको सुधार कर अब फिरसे पासीघाटमे सपर्क स्थापित कर लिया है। मरम्मत किये हुअे अिन मार्गो पर भी चलना खतरनाक है और अैसे मार्गोके आदी बने हुअे अेबोर लोगोको भी जहा पगडडी अत्यत तग और चढाववाली होती है, वहा चापाया बनकर अर्थात् बैठ बैठ कर चलना पडता है।

"कष्ट-निवारणकी चीजे डिब्रूगढ और सेखवा घाट पर जमा की जाती है। वहासे ६ दिसम्बरसे पासीघाट ले जाना शुरू किया गया है। अेबोर हिल्स जिले और मादिया सरहदी जिलेके अेबोर लोगोकी तरफसे मिश्मी लोगोको सहायता देनेके लिअे ११ लाख रुपयेकी रकम दी गअी है। अिन लोगोको, जिनका मानवोने ही त्याग नही किया है, बल्कि कुदरत भी जिनके प्रति कठोर बन गअी है, अुचित सहायता मिले यह ध्यान रखना चाहिये। भूमिकी बडी बडी दरारोने अिन लोगोके बहुतसे गावोको हमेशाके लिअे मिटा डाला है और आज अुन गावोका नाम-निशान भी नही रहा। अिन पहाडियोमे भूचालके कारण हुअी मानव-हानि बहुत बडी होनी चाहिये। यह माना जाता है कि दो से तीन हजार तक लोग मृत्युके शिकार हुअे है। अिस सबधमे सही आकडे कभी प्राप्त नही हो सकेगे, क्योकि ये आकडे अिकट्ठे करना असभव है। अविकृत अनुमानके अनुसार लगभग अेक हजार आदमी मौतके शिकार हुअे है। अलबत्ता, यह आकडा पूरा नही अधूरा है। पासीघाट दिहाग नदी पर स्थित है, जहा अिस नदीका पानी सपाट अिलाके पर जोरसे फैल जाता है। भूकम्पके कारण जमीनके धस जानेसे जमीनमे दरारे पड जानेके कारण नदीकी बाढका पानी अिस प्रदेशमे, फैल गया था। अुसने कामचलाअू बाधोको तोडकर पासीघाट प्रदेशके काफी बडे हिस्सेका सफाया कर डाला है।"

कस्तूरबा ट्रस्टकी आसाम प्रान्तकी मुख्य सचालिका बहन श्री अमलप्रभा दास लोगो पर हुअे भूकम्पके भयानक असरका वर्णन करते हुअे लिखती है

"भूकम्प और बाढके कारण जो विनाश हुआ अुसके समाचार धीरे धीरे प्राप्त हुअे, क्योकि भूकम्पके कारण भीतरी भागमे आने-जानेका सब

प्रकारका यातायात छिन्नभिन्न हो गया था। कष्ट-पीडितोको सहायता पहुचानेका तुरत प्रयत्न किया गया, परतु यातायात व्यवस्थाके छिन्नभिन्न हो जानेसे सब जगह अेक ही समय पहुचना मुश्किल था। जिन स्थानोमे सबसे ज्यादा नुकसान हुआ था, अुनमे से कुछ जगहे तो अैसी थी कि जहा कअी दिनो तक नही पहुचा जा सकता था। अैसे स्थानोमे जो कार्यकर्ता पीडितोकी मदद करने सबसे पहले पहुचे, अुन्हे कअी दिनो तक कष्ट और कठिनाअियोका सामना करना पडा। साधारण समयमे भी अुन स्थानोमे जाना कठिन होता है, परतु भूकप और बाढके कारण यह कठिनाअी कअी गुनी बढ गअी। जो लोग बेघरबार हो गये अुन्होने दूसरे गावोमे जाकर आश्रय लिया। अेक अेक कुटुम्बमे दस दस परिवारोको आसरा लेना पडा। अन्य कितने ही परिवार सरकार द्वारा स्थापित छावनियोमे जाकर रहे।"

आसामकी पहाडियोमे छुटपुट बसनेवाले अिन पहाडी लोगोमे से कितने ही भूकम्पके कारण, कितने ही बाढके कारण और कितने ही कअी दिनो तक अन्न और आश्रय न मिलनेके कारण मर गये। बाकी जो बचे अुन्हे मुख्य आवश्यकता अन्न, वस्त्र, आश्रय तथा बर्तनोकी थी। अुन्हे विमान द्वारा अनाज, कपडे वगैराकी सहायता मिली।

अिसके लिअे सारे देशमे आसाम सहायता कोष कायम किया गया था, जिसमे भारतके लोगो, सरकारी कर्मचारियो, धनवानो, गरीबो, सबने खूब रुपया दिया। लगभग २० लाख रुपयेका चदा जमा हुआ था और अुसका अुपयोग अनाज, पानी, कपडे, दवा, मकान, शिक्षा वगैरा देनेमे हुआ। श्री डाह्याभाअीने अिस कमेटीके मत्रीकी हैसियतसे बहुत ही सुन्दर काम किया और अुसके अेक अेक कामसे वाकिफ रखनेकी बापाकी हिदायतके मुताबिक वे नियमित रूपमे बापाको पत्रो द्वारा जानकारी देते रहते थे। बीचमे अेक बार जब वे भीतरी भूकम्प-पीडित प्रदेशके दौरे पर गये थे और अुनकी लिखी हुअी डाक बापाको समय पर नही मिली, तब अुन्होने श्री डाह्याभाअीसे तार द्वारा सारा हाल पुछवाया था। अितना ही नही, अैसा मानकर कि डाह्याभाअीको शायद यह तार न मिले, अुन्होने कलकत्तेमे रहकर काम करनेवाले श्री छगनलाल पारेखसे भी अुनके विषयमे पूछताछ की थी। अिस प्रकार बापा हमेशा दोहरा काम करते थे। जैसे श्री डाह्याभाअी नायकके बारेमे वैसे ही आसामके अन्य कार्यकर्ताओके बारेमे समझिये। श्री भडारी, श्री छगनलाल पारेख, श्री के० अेल० अेन० राव, श्री अमलप्रभा दास, श्री काफडे वगैरा आसामके भीतरी भागोमे रहकर जहा जहा काम करते थे, वहा वहासे बापाने अुनसे विवरण मगवाये। कभी कभी पत्र लिखनेकी

सूचना की। और अुन विवरणो तथा पत्रोके ब्यौरो परसे वहाकी परिस्थितिका अध्ययन करके समय समय पर अुन्होने जो मार्गदर्शन किया, वह कार्यकर्ताओके साथ हुअे विस्तृत पत्रव्यवहारसे मालूम होता है।

अुनके आसाम सहायता कार्यके लिअे भेजे हुअे श्री छगनलाल पारेखको गवर्नरने सपर्क-अधिकारी (Liaison Officer) के रूपमे कलकत्तेमे नियुक्त किया था। अुन्होने थोडे दिनोमे जो काम किया, वह सबकी प्रशसाका पात्र है। जो काम सरकारी तरीकेसे करनेमे दो तीन महीने लग जाते, वह अुन्होने दो सप्ताहमे कर दिया। मकानोके लिअे टीनकी चद्दरे, कपडेकी गाठे, खुराक और बर्तन वगैरा सरकारकी तरफसे बडी मात्रामे खरीद कर अुन्होने लाखो रुपयेकी कीमतका माल आसाममे भेजा। विमानसे भेजनेका विमानमे। बाकीका जहाजो और रेलके जरिये। अुन्होने अिस मामलेमे जितनी मुस्तैदी और कुशलता दिखाअी और कोषके रुपयेमे किफायत करके अुसका अच्छेसे अच्छा और अधिकसे अधिक अुपयोग किया, अुससे अुन्होने बापाको भी खुश कर दिया। अुनके और अुनके साथ सहायता कार्य करनेवाले अन्य कार्यकर्ताओके प्रयत्नोसे कालिगा अेयरवेज कपनीने दो लाख पौण्ड माल कलकत्तेसे गौहाटी तक मुफ्त पहुचानेकी व्यवस्था करना स्वीकार किया। अिसी तरह अेयरवेज कोआपरेटिव लिमिटेडने भी रोज ४००–५०० पौण्ड माल हरअेक चक्करमे ले जाना मजूर किया।

आसाममे सहायता कार्य करनेवाले कार्यकर्ताओकी तरह कुछ स्थानो पर डॉक्टरोकी भी जरूरत पडेगी, यह मानकर बापाने अैसे कुछ डॉक्टरोको भी तैयार कर रखा था और आसाम प्रान्तकी सरकारसे पुछवाया था कि अिन लोगोकी सेवाकी जरूरत है या नही। तब अुत्तरमे अन्नमत्री श्री अमियकुमार दासने लिखा कि, "आपके प्रस्तावके लिअे धन्यवाद। अभी यहा डॉक्टरोकी जरूरत नही, क्योकि हमारे पास काफी डॉक्टर है। जिन डॉक्टरोने यहा सेवाके लिअे आनेकी तत्परता दिखाअी है, अुन्हे हमारी ओरसे धन्यवाद दीजिये।

"आप सहायता कार्यमें जो सतत दिलचस्पी दिखाते रहे है, अुसके लिअे हम सब आपके बडे ऋणी है।"

आसाममे कष्ट-निवारण कार्य हो रहा था, अुन्ही दिनो आसामके ये अन्नमत्री श्री अमियकुमार दास तथा अुनकी मडली ब्रह्मपुत्रा नदी पार करके धेमजी नामक गावको जा रही थी। अुस समय पानीमे अुल्टे भवरके कारण आगबोट डूब गअी और अुसमें के सब लोग पानीमे बह गये। अुसी वक्त सहायक दल भेज कर और आगबोटके साथ लगी हुअी प्राण बचानेवाली

नावो द्वारा बहुतोको बचा लिया गया। परतु छ आदमी डूबकर मर गये। अुन्हे तलाश करने और बचानेके प्रयत्न किये गये, परतु बचाया नही जा सका।

ये समाचार जब बापाको मिले तब अुन्होने श्री डाह्याभाअीको, श्री छगनभाअी पारेखको, श्री अमलप्रभा दासको और अन्य कार्यकर्ताओको अिस सबधमे पत्र लिखे। श्री अमियबाबूको अुनके बच जाने पर खुशी जाहिर करने और अीश्वरका आभार माननेवाला अलग पत्र लिखा। अुसके जवाबमे श्री अमियबाबूने लिखा कि, "आपका २५ तारीखका पत्र मिला। आपके कृपापूर्ण आशीर्वादके लिअे धन्यवाद। जिन छ भाअियोके साथ मै अिस दौरे पर निकला था, अुन्हे खोना पडा, यह बडी करुण घटना हो गअी। अिस तरह मेरी जो रक्षा हुअी वह मेरे लिअे अर्थशून्य बन गअी है।

आपका
अमियकुमार दास"

अिसी प्रकार श्रीमती अमलप्रभा दाससे भूचालकी स्थिति और अुनके कार्यके बारेमे तथा अिस करुण घटनाके सबधमे पूछताछ करने पर अुन्होने भी बापाको नीचे लिखा जवाब दिया

"गौहाटी, ३-११-'५०

"श्री चरणेषु बापा,

"आपका प्रेमपूर्ण पत्र मुझे समय पर मिल गया था। परतु पत्र मिलनेके बाद तुरत ही मुझे अुत्तर लखिमपुर जाना पडा। अिसलिअे मै जवाब तुरत नही दे सकी। यहा जो भूकम्प हुआ अुसका वर्णन करनेवाले और कस्तूरबा ट्रस्टकी शाखाकी बहनो द्वारा किये हुअे सहायता कार्यकी रूपरेखाका बयान करनेवाले विवरणकी नकल साथमे भेज रही हू। मुख्य विवरण मैने श्यामलालजीको अिन्दौर भेज दिया है।

"मै दुबारा बहनोके दलके साथ अुत्तर लखिमपुरके लिअे ६ तारीखको रवाना होअूगी। अिनमे से तीन तो अमरीकन बैप्टिस्ट मिशनकी बहनें हैं। अुन्होने स्वेच्छापूर्वक हमारे अिस सहायता कार्यमे सहयोग देनेकी तैयारी बताअी है। अिस बार हमे सुवसरी नदी पार करके जाना पडेगा और सामनेके किनारेके गावोमे काम करना होगा। वहासे मै हमारे अेक केन्द्र धेमजी जानेकी कोशिश करूगी। क्योकि डिब्रूगढकी तरफसे ब्रह्मपुत्रा पार करनेका काम मुश्किल होनेसे वहा जाना बहुत ही खतरनाक है।

"ब्रह्मपुत्रा नदीमे आगवोट डूवनेकी जो करुण घटना हो गअी, अुसके बारेमे आपने अखवारोमे जरूर पढा होगा। जो आगवोट श्री अमियकुमार दास और अुनकी मडलीको धेमजी ले जा रहा थी वह पूरी डूव गअी। श्री अमियकुमार दास और अन्य कुछ मनुष्योको वचा लिया गया, परतु डिब्रूगढके श्री जीवनराम फूकन (नीलमणि फूकनके भतीजे) और दूसरे छ जनोका पता नही चला। श्री जीवनरामके जानेसे हमने अेक वहुत वडा नेता और कार्यकर्ता खो दिया है।

"हमारी कुछ वहनोको यहा सिविल अस्पतालमे तालीम दी जाती है। अुस सवधमे होनेवाले खर्चका अितजाम कस्तूरवा ट्रस्टकी ओरसे नही होता, परतु मेरी तरफसे होता है। अिस वारेमे आपने पुछवाया है। अुसका जवाव अितना ही है कि मेडिकल अेडवाअिजरी वोर्डने अिस तालीमकी मजूरी नही दी। अिसलिअे मुझे लगा कि दो ग्राम-सेविकाओका खर्च ट्रस्टसे लेना मेरे लिअे अुचित नही होगा। अिसीलिअे मैने यह खर्च अपने पाससे किया। आपको वताते हुअे मुझे हर्ष होता है कि अिन्हे १२५ मरीज अलग अलग वीमारियोके देखनेको मिले और अुनमे से २० को अुन्होने स्वय सभाला। अुसमे अुन्हे अच्छी सफलता मिली।

"आपकी तवीयत अच्छी होगी। पिताजीका स्वास्थ्य अच्छा है। मेरी वहन अपने पति और पुत्री सहित विलायतसे लौट आअी है।

अमलप्रभा दासके
प्रणाम"

आसाममे भारत-सेवक-समाजकी तरफसे जो भाअी सहायता कार्यके लिअे भेजे गये थे, अुनमे श्री के० अेल० अेन० राव भी अेक थे। अुनका सादिया जिलेमे काम करना तय हुआ था। वहा अुन्हे और सव मुश्किलोके साथ खानेकी काफी तकलीफ रहती थी। अुन्हे लवे समय तक रहना था अिसलिअे वे चाहते थे कि भोजनकी कोअी स्वतत्र व्यवस्था हो जाय। अिस वारेमे अुन्होने वापाको अेक पत्र लिख कर अपनी असुविधाअे वताअी, और अुपायके तौर पर यह सुझाव दिया कि अेक स्वतत्र रसोअिया रख लिया जाय, जिसका खर्च आसाम-कोष नही वल्कि भारत-सेवक-समाज भुगते।

वापाको अिस कार्यकर्ताकी कठिनाअी समझ लेने पर भी अैसा नही लगा कि अिस मामलेमें अेकदम हा या ना कहा जा सकता है। अिसलिअे अुन्होने जवावमे लिखा

"तुम्हारा पत्र मिला। तुम गवर्नरके दलमे सादियाके पास नदी पार करते हुअे वच गये, अिसके लिअे अीश्वरको धन्यवाद। परतु तुमने लिखा है कि तुमने अिस घटनाके अवसर पर अपना वटुआ खो दिया। वटुआ खाली था या अुसमे कुछ रुपये-पैसे या नोट थे? और थे तो कितने थे?

"तुमने दूसरा प्रश्न भोजनकी व्यवस्थाके वारेमे पूछा है। . . अिस सवधमे यह कहना है कि भारत-सेवक-समाजने वहा तीन आदमी भेजे है। श्री डाह्याभाअी नायक, श्री के० अेल० अेन० राव तथा डॉ० आयगर। अिसलिअे समाजको तो तीनोके साथ अेकसा वर्ताव रखना चाहिये। यदि तुम्हे पूरे वेतनके साथ रसोअिया रखने तथा नये भोजनालयका खर्च करनेकी भारत-सेवक-समाज सुविधा दे तो वही सुविधा अुसे दूसरे दोनो भाअियोको भी देनी चाहिये, यदि वे भी तुम्हारी तरह अलग अलग केन्द्रोमे रहकर काम करे।

"साथ ही भारत-सेवक-समाजके सेवक जव भी किसी जगह सेवाके लिअे जाते है, तव अुन्हे अुनके मासिक वेतनके सिवाय रसोअिये तथा अलग रसोअीघरके सिलसिलेमे होनेवाले खर्चकी रकम नही दी जाती। अिसके सिवाय जिस परिस्थितिमे सेवकोको आसाम जैसे सुदूर प्रदेशमे सहायता कार्यके लिअे भेजा जाता है, वहा अवश्य ही अन्य कअी अतिरिक्त खर्च होगे, यह मैने पहलेसे ही सोच लिया था। अिसीलिअे मैने समाजके कोषसे १,००० रुपयेकी रकम श्री डाह्याभाअीको भेजी थी, ताकि जव अकल्पित खर्च करने पडे, तव अिस रकममे से खर्च किया जा सके। आम तौर पर जव समाज अैसे कामोमे अपने सदस्यो तथा दूसरे मित्रोकी मुफ्त सेवाअे देता है, तव सहायता-कोष अुनके सफर और सेवाकार्यके समयका भोजन तथा रहन-सहनका खर्च भुगतता है। यह वात मैने किसी भी आदमीको वहा भेजनेसे पहले गवर्नर साहवको लिख दी थी। अितने पर भी मै तुम पर सख्ती नही करना चाहता। मै तो अितना ही कहूगा कि श्री डाह्याभाअी ओर तुम दोनो साथ विचार करके किसी निर्णय पर आ जाओ। और यदि खर्च वहुत ज्यादा नही होता हो तो मै अुस निर्णयको मजूर कर लूगा। तुमसे वहुत दूर होनेके कारण मै अिस वातका न्यायपूर्ण विचार करनेकी स्थितिमे नही हू कि अिस समय तुम कितनी तकलीफ और दिक्कत अुठा रहे हो तथा अुसके कारण कितना अधिक खर्च तुम्हे करना पड रहा है।

"अिसलिअे यह वात यही खत्म कर देता हू और तुम पर छोड देता हू।"

वापा भावनगर जैसे सुदूर स्थानमे बैठे बैठे आसाम कष्ट-निवारण कार्यका सचालन करते हुअे कैसे कैसे प्रश्न हल करते थे, यह पत्र अुसका अेक नमूना है। आसामका भूकम्प, अुस सिलसिलेमे सकटग्रस्त लोगोके प्रश्न, अलग अलग कष्ट-निवारण-समितियोकी तरफसे अुन्हे पहुचाअी जानेवाली सहायताअे, अपने भेजे हुअे कार्यकर्ताओ द्वारा ली हुअी जिम्मेदारिया, अुनका रोजमर्राका कामकाज, अुसमे पैदा होनेवाली गुत्थिया वगैरा बातोसे वे किस किस ढगसे परिचित होते और हरअेक मामलेमे कैसा रवैया अरितयार करते थे, अिसकी कुछ झाकी अुपरोक्त कार्यकर्ताओके साथ हुअे अुनके पत्र-व्यवहारसे होती है। भावनगरमे बैठे बैठे भी वे अितना ज्यादा काम करते, मानो गौहाटीमें ही बैठे हो और अकाल-निवारणका सारा बोझ अपने सिर पर अुठा लिया हो। वापामे अगर थोडी बहुत भी शक्ति होती और वे पहलेकी तरह चल-फिर सकनेकी स्थितिमे होते, तो वे कैसा ही भूकप होने पर भी अवश्य सगटग्रस्त क्षेत्रमे पहुच जाते और अेक अेक अिलाकेमे खुद ही घूमते तब अुन्हे सतोष होता। लेकिन यह सतोष अुन्हे नही मिला, जो अनिवार्य था। अुनकी वृद्धावस्था, शारीरिक अशक्ति अुन्हे अैसा नही करने दे रही थी। परतु अिस असतोषके सिवाय अुनके भेजे हुअे सेवक जिस तत्परता और लगनसे काम कर रहे थे, अुसे देखकर अुनके मनमे हर्ष होता था। अुस कामके लिअे वे गौरव अनुभव करते थे।

भूकम्पके कष्ट-निवारण कार्यकी पहली मजिल पूरी हो गअी, तब आसामके गवर्नरने बापाको श्री डाह्याभाअी नायक तथा अुनके भेजे हुअे अन्य सेवकोकी सेवाओकी कद्र करनेवाला अेक पत्र लिखा था। अुससे तो बापाके हर्ष और गौरवका पार ही नही रहा। साथ ही मनमे अभिमान करनेके बजाय यह समझकर कि अीश्वरने ही सेवको द्वारा यह भगीरथ कार्य कराया, हमेशाकी तरह अिस बार भी वे अधिक नम्र बने।

भूकपके समाचार मिलनेके बाद कष्ट-निवारण कार्य सगठित करनेके लिअे वे प्राथमिक पत्रव्यवहार और तार व्यवहार कर ही रहे थे कि अिस बीच अेक और अकल्पित काम अुन्हे हाथमे लेना पडा। अनुसूचित जातियो और अनुसूचित कबीलोके बारेमे जो व्यवस्थाअे की गअी थी, अुनमे से सविधानकी अेक विशेष धाराकी की गअी व्याख्याके फलस्वरूप अिन जातियो अर्थात् आदिवासियोको मिलनेवाली शिक्षा सबधी सहायता वगैराके लाभसे अुनकी बडी सख्या वचित रह जाती थी। अितना ही नही, परतु अुसके अनुसार आदिवासियोकी जनगणनाको ध्यानमे रखकर अुन्हे ससदमे मिलनेवाली बैठकोकी सख्यामे भी कमी हो जाती थी।

यह बात हरिजनो और आदिवासियोके हितोके सदाके जाग्रत रक्षक बापाके ध्यानसे बाहर कैसे रहती? १९५० मे प्रकाशित सविधानका (अनुसूचित कबीलो सबधी) आदेश ता० ६–९–'५० के दिन भारत-सरकारके गजटमे देखा, तो फौरन अुसके भीतरके "दु खदायक और क्रूर तथ्य" की ओर अुनका ध्यान आकर्षित हुआ।

यह आदेश जिन तथ्योके आधार पर तैयार किया गया था, अुनमे स्टेट मिनिस्ट्रीने २० लाखके आकडे कम दिये थे। अिसका कारण यह था कि मध्यप्रदेशके साथ लगे हुअे छत्तीसगढ और अुडीसाके देशी राज्योके ६० तालुके, जहा गैरआदिवासी प्रदेशमे आदिवासी रहते थे, गिनतीमे नही लिये गये थे। अिस सिलसिलेमे अलग अलग राज्योकी तथा मध्यप्रदेशकी जनगणनाकी रिपोर्टें अिकट्ठी करके बापाने अुनका अच्छी तरह अध्ययन किया और आकडोका नोट तैयार किया था और अुस भूमिका पर वे आदिवासियोका केस लडे थे। अुनके शब्दोमे कहे तो आदिवासियोके साथ होनेवाला यह अन्याय, जो सिर्फ दस ही वर्ष नही बल्कि जब तक सविधान अस्तित्वमे रहता तब तक कायम रहनेवाला था, दूर करानेके लिअे अुन्होने अधिकारियोसे अनुरोध किया था। और अन्तमे बापाको अिसमे सफलता भी मिली थी।

अिसी प्रकार सारे भारतमे पिछली जनगणनाके अनुसार आदिवासियोकी सख्या न्यायपूर्ण ढगसे जितनी गिनी जानी चाहिये थी अुससे बहुत कम गिनी गअी थी। अिसके फलस्वरूप अुन्हे पार्लियामेण्टमे मिलनेवाली बैठके और कुछ शैक्षणिक तथा आर्थिक लाभ खोने पडते थे। बापाने राष्ट्रपति, प्रधानमत्री और गृहमत्री वगैराका ध्यान अिस ओर आकर्षित किया था। अितना ही नही, अिस सबधमे भी अुन्होने अध्ययनपूर्ण टिप्पणियोवाले तथ्य और आकडे जुटाकर आदिवासियोका मामला बहुत ही सबल रूपमे पेश किया था। जनगणना-कमिश्नरने अिस बारेमे सारे भारतकी कुल आदिम जातियोकी आबादीका आकडा १,७८,७३,००० गिना था, जब कि दिल्लीके आदिम जाति कार्यालयसे अुन्हे जो आकडा मिला था वह २,४८,०२,७०० था। अर्थात् दोनो आकडोमे ६९,२९,७०० का फर्क रहता था।

यह फर्क ठक्करबापाके कथनानुसार दो कारणोसे था

१ सरकारी आकडोमे सविधानमे बताये गये 'ग' और 'घ' भागके राज्योकी अनुसूचित जातियोकी आबादीका समावेश नही किया गया था।

२ अिन राज्योमे आदिवासियोके प्रदेशका विस्तार घटा देनेसे गैर-आदिवासियोके अिलाकेमे रहनेवाले आदिवासियोको गिनतीसे अलग रख दिया गया था।

बापा आकडोके कोष्ठक देकर अन्तमे अितना और जोडते है कि, "अिस प्रकार लगभग ६० लाख आदिवासियोको धारासभाओमे मिलनेवाली बैठको और शैक्षणिक तथा आर्थिक लाभोसे वचित रखनेवाला यह अन्याय दूर करना हो तो मध्यप्रदेश, राजस्थान, विहार, आसाम, अुडीसा और हैदरावाद — अिन छ राज्योके आकडोकी दुवारा जाच होनी चाहिये। अिस जाचमे सवधित राज्योके प्रतिनिधि, जनगणनामे सवध रखनेवाले मुख्य अधिकारी, और सविधानकी ३३८ वी धाराके अनुसार नियुक्त किये गये विशेष अधिकारी तथा आदिम जाति सेवक-सघके कार्यकर्ताओको मिलकर काम करना चाहिये।"

यह प्रश्न हाथमे लेनेके वाद अुन्होने भारत-सरकारके साथ, राष्ट्रपतिके साथ और आदिम जाति सेवक-सघके कार्यकर्ताओके साथ विस्तृत पत्रव्यवहार किया और अपनी दलीलोके समर्थनमे सवल प्रमाण पेश करके अन्तमे राष्ट्रपतिके आदेशमे सुधार कराने और अिस प्रकार ६० लाख आदिवासियोके प्रति होनेवाला अन्याय दूर करानेमे वे सफल हुअे। यह सफलता प्राप्त करनेमे अुनके व्यक्तिगत प्रभावने भी कोअी कम भाग अदा नही किया होगा, यह कल्पना आसानीसे की जा सकती है। कारण, सरकारी आज्ञाअे सिर्फ तथ्यो या सवल पैरवी करनेसे ही नहीं वदली जाती, परतु अिसके पीछे निश्चय-वल, तपश्चर्या और लगन चाहिये। वापामे यह सव था, अिसके सिवाय अुनके प्रखर व्यक्तित्व और सचाअीकी सवके दिलो पर गहरी छाप थी। अुनकी सचाअीमे शका करे, अैसा भारत-सरकार या राज्यसरकारोमे कौनसा अधिकारी हो सकता है?

अुपरोक्त आकडे जितनी आसानीसे वताये गये है अुतनी आसानीसे प्राप्त नही हुअे थे। अुनकी खातिर वापाको पुराने जमानेके जनगणनाके कुछ विवरण और अुनके सवधकी भिन्न भिन्न टिप्पणिया वगैरा देखनी पडी थी। परतु अेक काम हाथमे लेनेके वाद अुसे अधूरा छोड दे, तो फिर वापा कैसे? जीवनके अन्तिम दिनोमे अनुसूचित और अनुगणित जातियोके लिअे वे यह वहुत वडा काम कर गये।

अिस प्रकार वुढापेमे वीमारी और कमजोरीकी हालतमे विछौने पर पडे पडे भी वे यथाशक्ति सव प्रकारके काम कर रहे थे। अितनेमे अुन्हे

सरदारकी बीमारीके समाचार मिले। अुसके बाद अुन्होने अखबारोमे पढा कि वे दिल्ली छोडकर बबअी जा रहे हैं। अिससे अुनकी चिन्ता बढ गअी। नजदीकके मित्रोमे पत्रो द्वारा सरदारकी तबीयतके बारेमे पूछताछ की। और हर क्षण अुनके स्वास्थ्यकी चिन्ता करने लगे।

आखिर दिसम्बरकी १५ तारीखको सरदारके देहावसानके समाचार देशभरमे फैल गये। भावनगरमे भी अुसी दिन सुबह खबर मिली। ठक्कर-बापाको बडा आघात लगा। अुनकी अिच्छा तो यह थी कि सरदार अभी अेकाध दशक और जिये और जैसे अुन्होने भारतमे राजनैतिक स्थिरताकी बुनियाद डाली, अुसी तरह भारतके अन्य कुछ मुख्य प्रश्न — जैसे खेती और ग्रामोद्योगोका विकास, गरीबी और बेकारीका नाश वगैरा — निबटाकर देशको सुख, शान्ति और समृद्धिके मार्ग पर अग्रसर कर दे। परतु सरदार चले गये और अुनका काम अधूरा रह गया।

सरदारकी तदुरुस्तीके समाचार और बादमे मृत्युके समाचार बापाने रेडियो द्वारा १५ तारीखको सुबह क्रमश छ और नौ बजे सुने। अुसी दिन सारे देशकी भाति भावनगरमे भी तीन दिनकी हडताल की गअी। अुसके बाद बापाने भावनगरके मुख्य काग्रेस कार्यकर्ता श्री जादवजी मोदी, श्री लल्लुभाअी, श्री गगादासभाअी वगैरासे मिलकर शामको साढे पाच बजे तालाब पर शोक-सभा करनेका निश्चय किया। अुसी दिन श्री बलवन्तराय महेता, श्री नानाभाअी भट्ट वगैरा भी भावनगर आ पहुचे।

अुस दिन जो भी बापासे मिलने आते अुनसे बापा सरदारकी ही बात करते। अुनके गुण-गौरव गाया करते और अुन्हीके सस्मरण ताजा करते। सरदारके जानेमे अुनका हृदय बडा दुखी हो गया था। शाम होने आअी। सभा शुरू होनेमे घटे दो घटेकी देर थी। अितनेमे बापाने कुछ कार्यकर्ताओको बुलाकर अुनके सामने शोक-सभामे अुपस्थित रहनेकी अपनी अिच्छा प्रगट की। कार्यकर्ताओ और साथियोने अुन्हे समझाया, "बापा, आपका स्वास्थ्य अच्छा नही है। आपको तीसरी मजिलसे अुतारा नही जा सकता। अैसा करनेसे हृदयको बडा धक्का लगेगा और तबीयत बिगडनेका डर है। अिसलिअे आप यही रहे।"

परन्तु बापाने कहा, "मुझे कुछ नही होगा। मुझे सभामे जाने दो। सरदार जैसे सरदार चले गये। अुनकी शोक-सभामे मैं मौजूद न रहू, यह कैसे हो सकता है?"

भावनगरके कार्यकर्ताओने अुन्हे बार बार समझाया। आत्माराम समझा आये, जादवजी मोदी समझा आये, परन्तु बापाने तो अेक ही रट पकड

की कि मुझे जाना ही है। अितनेमे श्री मानशकर भट्ट आये। अुनके प्रति वापाको वहुत प्रेम हो गया था। अिसलिअे दूसरे मित्रोने श्री मानशकर भट्टसे कहा, "मानशकरभाअी, आप वापासे कह देखिये। शायद आपकी बात मान ले।"

अिसलिअे मानशकरभाअी वापाको सभामे न जानेको समझाने लगे।

यह सुनकर वापाने कहा, "तुझे यहा किसने भेज दिया? तेरा काम तो सभामे व्यवस्था रखनेका हे। जा, वहा सभामे जा और भजन सुना।"

मानशकरभाअी वोले, "मै अभी जाता हू। परन्तु डॉक्टरके कहे अनुसार आप वहा न जाय तो अच्छा।" अिस पर वापा वोले, "यह किसने कहा? यह प्रसग ही अैसा हे कि मुझसे घर पर नही रहा जा सकता। मुझे खुद चलकर जाना चाहिये।"

सवने देख लिया कि वापाको किसी भी तरह रोका नही जा सकता, तव अुनसे कहा गया कि अच्छा, आप जाना ही चाहते है तो आपको यहामे डोली या कुरसी पर विठा कर नीचे अुतारेगे।

फिर भी वापाने पैदल जानेका ही आग्रह किया ओर कहा, "मै दो जनोके कधो पर हाथ रखकर धीरे धीरे सीढिया अुतरूगा।" दुवारा समझाने पर वापा गुस्सेमे आकर कहने लगे, "जाओ, तुम सव चले जाओ, मै तो आज चलकर ही अुतरूगा।"

यह सुनकर साथियोको भी क्रोध आ गया। हरखचदभाअीने जरा मीठा गुस्सा करके कहा, "तो जाअिये, आपको जहा जाना हो! अुतरिये नीचे! वैसे डॉक्टर अिजाजत नही दे, तव तक हम न तो आपसे कुछ कहेगे और न कुछ करेगे ही।"

परन्तु वापा यो हार माननेवाले नही थे। वे मौन रहे। अुनके मनमे दुःख और रोषकी मिश्रित भावनाका प्रवाह वह रहा था। वे कुछ नाराज भी प्रतीत होते थे, फिर भी कुछ वोले नही। किसीसे कुछ कहा नही। अपने आप अशक्त और जीर्ण हाथोका सहारा लेकर विस्तर पर वैठ गये और पास ही दीवारकी खूटी पर टगी हुअी वडी और टोपी वैठे वैठे अुतार कर पहनी। परन्तु वे कहा जानेवाले थे? कमरेमे जिस खाट पर वैठे थे अुससे अुतर कर कमरेके दूसरे सिरे तक भी किसी दूसरेकी मददके वगैर चल नही सकते थे। अिसलिअे थोडी देर तक यो ही चुपचाप वैठे रहे। वादमे धीरेसे हसकर हरखचदभाअीसे

कहने लगे, "हरखचद, अब तो समय हो गया होगा? चलो, तुम कहो वैसा करूगा। मैं हारा।"

हरखचदभाओीने कहा, "मैं भी हारा। वैसे मुझे आज आपको ले जाना नही था।"

बापाने कहा, "चलो, हम सब हारे। अब तैयारी करो। नही तो हमें सभामे देर हो जायगी।"

अिसके बाद बापाको तीसरी मजिलसे कुरसी पर बिठाकर अुतारा गया। मामाकोठा रोड पर स्थित अिस मकानके दरवाजेके पास ही मोटर खडी की गअी थी। बापाको सहारा देकर मोटरमे बिठाया गया और वहासे सभामे ले गये। वहा डॉक्टर वगैराकी पूरी तैयारी रखी गअी थी। सभामे जानेके बाद अुनकी नाडी, हृदय वगैराकी जाच की गअी तो स्थिति बहुत अच्छी मालूम हुअी। डॉक्टरको भी आश्चर्य हुआ। निश्चयबल, अिच्छाशक्ति और श्रद्धा कितना विलक्षण काम करती हैं, अिसका प्रत्यक्ष अुदाहरण बापाने अुस दिन अुपस्थित किया। सरदारके देहावसानके निमित्त हुअी भावनगरकी अुस शोकसभाके बाबा अध्यक्ष हुअे। सभाकी कार्रवाअी काफी समय तक चली। श्री बलवतराय महेता, श्री नानाभाअी भट्ट, श्री पृथ्वीराज कपूर वगैरा अनेक लोगोने भाषण दिये और सरदारकी विविध शक्तियोका बयान किया। सभा समाप्त होनेके बाद बापा घर आये। सरदारकी शोकसभामे अुपस्थित रहने और कर्तव्यपालन कर सकनेके कारण अुनके आनदका पार नही रहा। घर लौटकर अुन्होने हरखचदभाअीसे कहा, "हरखचद, आज तुमने बडा मजा ला दिया। तुम अपने निश्चय पर दृढ और मैं अपने निश्चय पर दृढ। परन्तु अच्छा हुआ अीश्वरने सारा मामला सुन्दर ढगसे निबटा दिया।" बापाकी तबीयत अुस दिन बहुत अच्छी रही और मन भी खूब प्रसन्न रहा।

बापाके सार्वजनिक जीवनका यह अतिम सार्वजनिक कर्तव्य था। अुसके बाद खास तोर पर वे कोअी सार्वजनिक सेवाका काम सार्वजनिक रूपमे नही कर सके। अितने पर भी अुनकी अेक सेवाका यहा जिक्र कर देना चाहिये। सरदारके देहान्तके लगभग दस बारह दिन बाद श्री नदुभाअी पटेल नामक अेक कार्यकर्ता बापासे मिलने आये। अुन्होने भील-सेवा-मडलके आश्रयमे अहमदाबाद जिलेके पास खेडब्रह्मा नामक गावमें भील-सेवाका काम शुरू किया था ओर अब बाकायदा अुस सस्थामे शरीक होकर बापाके आशीर्वाद मागने आये थे।

श्री नटुभाओी अिस अवसरको याद करके लिखते है कि, "अुस दिन बापाको सरदारका बार बार स्मरण हो आता था और अुनकी आखोसे आसुओकी धार बहती रहती थी। अेक दो बार तो सरदारका जीवन-चरित्र सुनते सुनते वे रो भी पडे थे। अुस दिन वे बहुत ही भावुक बन गये थे। बिस्तरसे अुठकर वे धीरे धीरे कमरेमे चल-फिर सकते थे। मुझे खेड-ब्रह्मासे आया हुआ जानकर मिलनेका समय दिया था। खेडब्रह्माके सस्मरण याद करते हुअे बापाने मुझसे कहा, 'वर्षो पहले मै खेडब्रह्मा गया था। स्टेशनसे अुतरकर पैदल चलकर भीलोके झोपडोमे गया था। बेचारे बिलकुल गरीब थे। शरीर पर कपडा-लत्ता कुछ नही था। लगोटी लगा-कर या कमसे कम कपडा पहनकर जगलमे घूमते रहते थे। शिकार करके खाते थे। बाणका तरकस कधे पर रखते और जानवरोसे बदतर हालतमे जीवन बिताते थे। वहा काम करनेकी जरूरत मालूम हुअी, परन्तु अुन दिनो देशी राज्योकी सहानुभूति बिलकुल दिखाअी नही देती थी। अिस-लिअे अुस दिन तो मै वापस आ गया। परन्तु मनमे खूब मथन चलता रहा। मुझे लगा कि अुन लोगोने क्या पाप किये होगे जो अुनकी यह स्थिति हुअी? क्या अुन्हे मानवकी तरह जीनेका हक नही है? जगलोमे सिंहकी तरह निडर होकर घूमे और यहा सभ्य आबादीमे आये तो बकरीकी तरह कायर बन जाय। अिसका कुछ न कुछ अुपाय करना ही चाहिये। अुसके बाद मैंने दाहोदमे काम शुरू किया था।'

"अिसके बाद घीका दीया जलवाकर मुझसे भील-सेवा सम्बधी प्रतिज्ञा लिवाअी ओर आशीर्वाद देकर कहा, 'जो प्रदेश मैंने २५ वर्ष पहले देखा था, अुसका काम तुम्हारे हिस्से आया है। बहुत कठिन परिस्थितिया है, फिर भी धीरज ओर हिम्मतसे काम करना। घट घटमे राम बैठे हुअे है, अुनके दर्शन करते-करते तुम काम करना। अुन लोगोको स्नेहसे समझा-बुझाकर अिकट्ठा करना और अपने प्रेमकी गरमी देकर अुन्हे शिक्षा देनेका प्रबध करना। वे लोग तुम्हे आशीर्वाद देगे। मुझे आशा है कि वे लोग तुम्हारे परिश्रम, लगन और तपसे सुधरेगे।'

"अिस प्रकार मुझे सेवाकी दीक्षा देनेके बाद बापा भील-सेवा और भील-सेवकोकी बातो और विचारोमे लग गये। सुखदेवभाअीको याद करके अुन्होने कहा, 'सुखदेवभाअी पुराने अनुभवी सेवक है। मैने जब भीलोमे काम शुरू नही किया था, तब सुखदेवभाअीने अपने ढगसे यह काम शुरू कर दिया था। अुन्होने बहुत अुतार-चढाव देखे है। अब तो वे बूढे हो

गये है, परन्तु अुनका मन बूढा नही हुआ है। अेक दिन मैने सुखदेवभाअीको हुक्म दिया कि राजस्थान या किसी और प्रान्तमे जाओ। अुस समय अुनकी तबीयत ठीक नही थी, अिसलिअे अुन्होने कुछ ढिलाअी दिखाकर कहा कि तबीयत खराब है। तब मैने (बापा) कहा, सुखदेव भी बीमार हो सकता है? अन्तमे वे चले गये।' अुसके बाद अुन्होने श्री डाह्याभाअीकी बात चलाकर कहा कि डाह्याभाअी जब भील-सेवा-मडलमे भरती हुअे, तब मुझे रोना आ गया था। क्योकि वे अैसे परिवारमे से आये थे जिसके भरण-पोषणकी सारी जिम्मेदारी अुनके सिर पर थी। अुन सबका क्या होगा, अिसका विचार अेक तरफ रखकर वे साहसपूर्वक भरती हो गये और बहुत बढिया काम किया। अब वे स्वय आसाममे व्यापार करने गये है। देखे क्या कमा कर लाते है। अिन सब सेवकोके जीवनसे बहुत कुछ प्रेरणा लेने लायक है। अुनसे जितनी प्रेरणा ली जा सके लेना और जी तोडकर काम करना।"

दिल्लीसे भावनगर आये बापाको लगभग ८ महीने होने आये। अिन आठ महीनोमे अुन्होने कितना अधिक काम किया! अिन सब कामोके बीच अखबार पढवाने, रेडियो सुनने और कुछ पुस्तके पढवाकर सुननेकी फुरसत भी बापा निकाल लेते थे। आठ महीनेके अर्सेमे अुन्होने अनेक पुस्तके पढवाकर सुनी। सरदार वल्लभभाअी पटेलका जीवन-चरित्र, स्व० झवेरचद मेघाणीका 'सोरठ तारा वहेता पाणी', अुन्हीके दूसरे कहानी सग्रह 'प्रतिमाओ' मे से कुछ कहानिया, श्री रायचुराकी 'सबळ भूमि गुजरात', योगवाशिष्ठ, महाभारतके कुछ खास काड, कलापिके 'केकारव' के कुछ गीत, 'कोअीनो लाडकवायो' (किसीका लाडला) और अन्य गीत — अिस प्रकार विविध प्रकारके धार्मिक, राष्ट्रीय और सामाजिक साहित्यका श्रवण होता रहा। मेघाणीका 'सोरठ तारा वहेता पाणी' और सरदारका जीवन-चरित्र तो अुन्हे खूब ही पसद आया। दूसरी पुस्तकोसे भी वे प्रेरणा प्राप्त करते रहे। अिसके अलावा श्री अनन्त ठक्कर, श्री मोहनभाअी पटेल, श्री विजयाबहन गाधी, और दूसरा जो भी कोअी मिलता अुससे भजन, कविताअे और गीत गवाते। चोरवाडमे गरमीका मौसम बिताया, अुन दिनो श्री गढवी मेरूभा आदि मित्रोने लोकवार्ताओका जलसा किया, तो अुसमे भी बापाको खूब आनन्द आया। श्री मानभाअी और अुनकी भजन-मडलीके भजन तथा 'पीलूवाली', 'लकडीका भारा बेचनेवाली' और दूसरे श्रमजीवियोके जीवनका हूबहू वर्णन करनेवाले गीत भी अुन्हे बहुत पसद आये। वे बार बार कहते थे कि आजकलके साहित्यकारो और कवियोको अैसे वास्तविक जीवनकी झाकी करानेवाले गीत रचने चाहिये।

अिस प्रकार विभिन्न सस्थाओके दफ्तरी काम, पत्रव्यवहार, पुस्तक-वाचन अित्यादिमे अुनके दिन गुजर रहे थे। बीचमे कभी कभी अुनकी तबीयत पल्टा खाती थी। बाकी आम तौर पर आठ महीने अच्छे बीते। अलबत्ता, शरीर धीरे धीरे घिसता जा रहा था और वे अपने अन्तकी ओर धीरे धीरे परन्तु निश्चित रूपमे बढते जा रहे थे। यह बात वे खुद जानते थे और कभी कभी बहुत ही नजदीकके मित्रोके पत्रोमे अिस सम्बधमे कुछ सूचक वाक्य भी आ जाते थे।

अिस प्रकार बापाने १९५० का दिसबर मास पूरा किया और १९५१ के नये वर्षमे पदार्पण किया।

३६

अंतिम यात्रा

दिन-ब-दिन बापाका शरीर अधिकाधिक गिरता जा रहा था। भावनगरके डॉ० श्री विजयशकर वगैराकी चिकित्सासे सूजन तो चली गअी थी, परन्तु कमजोरी बढती जा रही थी। ६ जनवरीको अुन्हे जोरके दस्त लगे और शरीरमे अधिक कमजोरी आ गअी। दस्त बन्द होनेकी दवाअी दी गअी तो दूसरे दिन दस्त नही हुआ। अिन सब बातोका असर नीद पर होता था। नतीजा यह हुआ कि हलका भोजन, दवा, अिजेक्शन वगैराकी मददसे शरीरको जितना टिकाया जा सकता था अुतना टिकाये रखनेका प्रयत्न किया जाता था। दूसरी ओर 'टाअिम्स'मे खबरे सुनना, पुस्तके पढवाना और रेडियो सुनना तो जारी ही था। रोज रोज समाचार पूछने आनेवालोकी और स्थानीय तथा बाहरसे आनेवाले मुलाकातियोकी मुलाकाते भी चालू ही थी।

८ जनवरीको आबलामे स्वामी आनन्द, श्री नरहरिभाअी परीख, श्री जुगतराम दवे तथा श्री छगनलाल जोशी वगैरा बापासे मिलने आये थे। जुगतरामभाअी दसेक बजे आये थे। अेक दो घटे बैठे होगे कि श्री नरहरिभाअी वगैरा आ गये। बापाने अुनके साथ दो अढाअी घटे बिताये। दोपहरको दो बजे वे सब आबला जानेके लिअे रवाना हो गये।

अुसी दिन शामको आअी डाक डॉ० केशवलाल ठक्करने पढकर सुनाअी। अुसमे श्री हरखचदभाअीका पत्र आने पर बापाने अुन्हे अेक

जूनागढके पते और दूसरा बीसावदरके पते पर — अिस प्रकार दो पत्र लिखनेका केशुभाअीको आदेश दिया। तदनुसार अुन्होंने पत्र लिखे। पत्रोंमें स्वास्थ्यके ब्यौरेवार समाचार लिख भेजे और लिखा कि यहां वापस आनेकी जल्दी न करें।

अितने पर भी जल्दी करने जैसी बापाकी तबीयत होती जा रही थी, अिस बारेमें डॉ० केशवलाल ठक्करको कोअी शंका नहीं थी। अिसलिअे अुन्होंने बापाकी सम्मति लेकर ७ जनवरीको डॉ० मोहिलेको अपनी सुविधानुसार अहमदाबादसे अेक बार आकर बापाकी तबीयत देख जानेको पत्र लिखा और दो दिन बाद अिस बारेमें अुनका जवाब भी आ गया कि वे रविवारको आयेंगे।

१० तारीखको सुबह बापाको बेचैनी मालूम होने लगी तो डॉ० विजयशंकरको बुलाया गया। अुन्होंने दवा दी, जिससे कुछ राहत मिली।

दूसरे दिन फिर नींदकी शिकायत पैदा हुअी। अिसलिअे नींदकी दवा दी गअी। फलस्वरूप दो दो घंटेकी तीन बार नींद आयी। मगर चौबीस घंटेमें कोअी छ बार दस्त हुअे, जिससे शरीरमें कमजोरी अधिक मालूम होने लगी।

१२ तारीखको अुन्हें दिल्लीसे श्री मावलकर दादाका यह तार मिला .

"Yourself unanimously elected Chairman Kastoorba Trust Sushila Pai Secretary"

परन्तु बापाके लिअे यह बेकार था। अुन्हें महसूस हो रहा था कि वे कुछ भी काम नहीं कर सकते। अुस दिनकी डायरीमें अुन्होंने अिस सिलसिलेमें यह दर्ज कराया .

"शामको दादा मावलकरका तार आया कि कस्तूरबा ट्रस्टके अध्यक्षके तौर पर मेरा चुनाव अेक मतसे हुआ है। परन्तु वह किस कामका? मैं कहीं जा-आ नहीं सकता। शारीरिक दृष्टिसे मैं सर्वथा अशक्त हो गया हूं। अिसलिअे यह बोझा अब अुन्हींको अुठाना चाहिये।"

दूसरे ही दिन अुन्होंने अिस बारेमें श्री मावलकर दादाको काफी लम्बा अुत्तर लिखवाया। वह पत्र अुनकी शारीरिक और मानसिक दोनों स्थितियोंका सच्चा प्रतिबिम्ब है। अुसमें वे लिखते हैं

"प्रिय दादा,

"कल रातको मुझे आपका तार मिला। अुसमें आपने बताया है कि कस्तूरबा ट्रस्टके अध्यक्षके तौर पर मुझे पसंद किया गया है और सुशीला पै मंत्रीके रूपमें चुनी गअी है।

"अिससे मेरे प्रति आपका प्रेम और ममत्व प्रगट होता है। परन्तु पिछले अेक सप्ताहमे मेरा शारीरिक स्वास्थ्य कितना अधिक विगड गया है, अिसकी आपको कल्पना नही है। मै धीरे धीरे और स्थिरतापूर्वक मृत्युकी ओर जा रहा हू। सव मित्रोको मै यह सही वात वताता नही, परन्तु यह अेक सचाअी है। और मुझसे यह वात अधिक समय तक छुपाअी नही जा सकती। डॉ० केगुभाअी भी जानते है। वे यहाके अन्य विश्वस्त डॉक्टर मित्रोकी सलाह तो लेते ही है, फिर भी अुनकी विनती पर अुनके मित्र डॉ० मोहिले भी कल रविवार ता० १४-१-'५१ को अहमदावादसे यहा मेरे स्वास्थ्यकी परीक्षाके लिअे ही खास तोर पर आनेवाले है।

"परिस्थिति यह है। अिसलिअे मै आपसे ये तथ्य ट्रस्टी मडलके सामने रखने और जरूरत पडे तो अेक परिपत्र द्वारा सूचित करनेका अनुरोध करता हू। आप अुन्हे सच्चा हाल लिखकर वता दीजिये कि शारीरिक दृष्टिसे यह जिम्मेदारी मै अव किसी भी तरह सभाल नही सकता। साथ ही आपके नाम लिखे हुअे पत्रमे मैने वता दिया है कि यह काम और किसीको नही, परन्तु आप ही को सभालना हे। वर्तमान परिस्थितिमे यह कार्य सभालनेके लिअे आप ही अेक सुयोग्य व्यक्ति है। अिसलिअे आपको यह फर्ज अपने सिरसे अुतारकर दूसरेके सिर पर रखनेका विचार तक नही करना चाहिये। देशके और दुनियाके (विदेशोके) काममे आप खूब डूवे हुअे है, यह जानते हुअे भी मैने यह सुझाव दिया है। अिसलिअे यह फर्ज अब आपको अदा करना ही होगा।

"यह सब लिख रहा हू, तव डॉक्टर मित्र दवाओ द्वारा थोडा थोडा सहारा देकर मुझे टिका रहे है। परन्तु अिसकी भी हद होती हे। और थोडे हफ्तोमे ही आपको सवसे खराव समाचार सुननेको तैयार रहना चाहिये। यह कव होगा सो अीश्वर जाने।

"मै मानता हू कि कस्तूरवा ट्रस्टका सर्जन मैने खुद अपने हाथो किया है। जहा तक मुझे याद है, १९४४ मे वम्वअीमे गोला-वारूदका धडाका हुआ था, अुस समय वहा शान्तिभाअीके दफ्तरमे नीचेके मकानमे रोज रोज वैठकर भाअी श्री रतिलाल गाधीकी मददसे ट्रस्टका मसौदा तैयार किया था। मै जानता हू कि मुझे अपनी अिस सृष्टिके प्रति कितनी ममता है। अिसलिअे अिस ट्रस्टका अध्यक्ष वननेसे अिनकार करने पर मुझे अत्यत दुख हो रहा है। परन्तु अीश्वरी आज्ञा मनुष्यकी आज्ञासे अधिक वलवती और कठोर होती है और अुसकी तो क्षण भर भी अुपेक्षा

नही की जा सकती। अिसलिअे मैं फिर यह स्थिति सब ट्रस्टियोके सामने रखने ओर अुन्हे परिपत्र द्वारा वस्तुस्थितिकी जानकारी करानेकी विनती करता हू।

"मेरे प्रति अितना ममत्व और प्रेम बतानेके लिअे मैं सब ट्रस्टियोका आभार मानता हू।

आपका सच्चा मित्र
अमृतलाल ठक्कर"

"पुनश्च कृपा करके श्यामलालको न भूलियेगा।"

अिस प्रकार कस्तूरबा ट्रस्टका अध्यक्षपद अस्वीकार करनेके साथ साथ मावलकर दादासे विदा भी ले ली और जानेसे पहले श्यामलालजीके लिअे आखिरी सिफारिश भी कर दी। श्यामलालजीके लिअे तो ये पाच शब्द अुनके जीवनकी महानसे महान पूजी बनकर रहेगे।

अुस दिनकी डायरीमे बापाने अिस प्रकार लिखवाया

"आज हरखचदका तार आया। वे कल सुबह आयेगे।

"शामको महिला-मडल मिलने आया। कचन, शान्ता वगैरा। अुन सबसे कहा कि मेरे जानेके बाद कोअी रोये नही। खुश होना कि मैं अिस देहसे छूट गया। कचनने भजन गाया। रातको कपिलराय तथा अनत सोने आये थे। अेक ही आदमीको जागरण न करना पडे, अिसलिअे दो दो घटेकी पारी लगायेगे।"

अिसके बादकी चार दिनकी डायरी देखे।

"ता० १४-१-'५१

"प्रात साढे सात बजे अुठा। अहमदाबादसे डॉ० मोहिले आनेवाले थे, अिसलिअे कपिलराय तथा केशुभाअी अुन्हे लेनेके लिअे स्टेशन गये थे। चोरवाडसे हरखचदभाअी आ गये।

"डॉ० मोहिलेने मेरी स्वास्थ्य-परीक्षा १०॥ बजे की और अुचित प्रतीत होनेवाली दवाये लिख दी है। बिलकुल आराम करनेकी सलाह दी है। नमकरहित आहार (Saltless diet) न लिया जा सके तो अभी तरल आहार पर ही रहनेकी अुन्होने सलाह दी है। दूध, कॉफी, काजी और फलोका रस वगैरा। वे शामकी मिक्स्ड ट्रेनसे अहमदाबाद लौट गये। शामको जानेसे पहले दुबारा जाच कर गये।

"अुन्होने रेल किरायेके सिवाय अेक भी पाअी अपनी फीसके रूपमे (आग्रह करने पर भी) लेनेसे साफ अिनकार कर दिया। अुनके लिअे ठहरनेकी व्यवस्था केशुभाअीने राजमहल होटलमे कर रखी थी।

"हरखचदके आ जानेसे मुझे वडी निश्चिन्तता हो गअी है। वे बडे समझदार है। केशुभाअीने मेरी तवीयतके वारेमे कुछ लिखा होगा। अुस पर वे तुरत यहाके लिअे निकल पडे।

"सवाअीलाल पडचा मिले। सीहोरसे भाअी वावू आया था। पालीतानावाले डॉ० प्रागजी भी आये थे। भाअी चितलिया और मानभाअी भी आये थे। कपिलरायकी पत्नी, अनतकी पत्नी तथा शान्ता वगैरा भी आअी थी।

"कल रातको दिये गये अिन्जेक्शनका थोडा असर रहा। अिस अिन्जेक्शनका असर देखनेके लिअे केशुभाअी रातको तीन घटे तक मेरे पास वैठे रहे।"

"ता० १५-१-'५१

"सवेरे ७।। वजे अुठा। नीद अच्छी नही आयी। आज पूनाके लिअे साप्ताहिक पत्र गिरीशसे लिखवाया। तवीयत दिन पर दिन विगडती जानेकी सूचना की है।

"आज केशुभाअीने मेरे स्वास्थ्यके वारेमे व्यौरेवार पत्र डॉ० कुजरूके नाम दिल्ली लिख भेजा है। और डॉ० मोहिलेके आनेके वारेमे सव हाल लिखा है।

"दादा मावलकर यहा आना चाहते है। अुन्हे केशुभाअीने सूचना भेजी है कि जनवरीके अतिम सप्ताहमे अगर असुविधा न हो तो वम्वअीसे सीधे यहा आये।

"चित्रादेवी, सरोज मगनलाल व्यास, गगादास गाधी वगैरा आये थे।

"प्रसन्न महेता पी० टी० आअी० के लिअे स्वास्थ्यके समाचार भेजनेको 'मेडिकल रिपोर्ट' लेने आये थे, परन्तु केशुभाअीने कहा कि अिससे हमारे पास तार और पत्र वहुत आते है और अुनका अुत्तर देनेकी झझट खडी हो जाती है।"

"ता० १६-१-'५१

"सुवह साढे सात वजे अुठा। दातुन करके दूध पिया। रेडियो सुना। मस्सोमे दर्द था अिसलिअे केशुभाअीने मरहम लगाया। वम्वअीसे शान्ति-

कुमार मोरारजी, जहागीर पटेल और डॉ० सुशीला नय्यर अेरोप्लेनसे आये और सीधे मुझे मिलने आये। साथमे लीमडीके कुमार श्री घनश्याम-सिंहजी भी थे। वे लोग ११॥ बजे गये।

"डॉ० सुशीलाने मेरी तबीयतकी जाच की। केशुभाअीके साथ चर्चा की। फिर मटक्यूटियलका अिन्जेक्शन दिया। शामको ग्लूकोज तथा अेमीनी फिलाअीनके अिजेक्शन दिये। अिससे मुझे तुरत ही अच्छी नीद आ गअी।

"चितलिया, रमाबहन महेता, सरोज महेता, गगादास गाधी मिल गये।

"मनु गाधी रातको महुवासे आअी थी। सुशीला अुसे मेरे पास नर्सिंगके लिअे रखनेको कहती थी। परन्तु मैंने अुसे अनुमति नही दी। सुशीला कल जानेवाली थी, परन्तु मालूम होता है चितलियाने अुसे रोक लिया है। शायद मनुने भी रोका हो।"

"ता० १७–१–'५१, बुधवार

"ता० १७ को तबीयत साधारण रही। नानाभाअी भट्ट, जगुभाअी परीख, रतीलाल गाधी, कालुभाअी वळिया और अन्य कअी लोग मिलने आये। जीवणजीभाअी भी मिलने आये थे, जो रातको भोजन करके ओखा अेक्सप्रेससे चोरवाड गये।

"रातको खासी ज्यादा आती थी और बलगममे खून आता था।"

अिसी सिलसिलेमे 'गुजरात समाचार' मे बापाके जीवनके अिन अतिम दिनोका जो चित्र दिया गया है अुसे देखे

"डॉ० सुशीला नय्यरने बुधवारके दिन ठक्करबापाको अिन्जेक्शन दिया, अिसलिअे अच्छी नीद आ गअी। ता० १७ को अुन्होने सुबह रेडियोका कार्यक्रम सुना, अखबार सुने और आये हुअे पत्रोके अुत्तर लिखवाये। सरदार पटेलके जीवन-चरित्रका पाठ सुना। गुरुवारकी रात बेचैनीमे बीती। रातको लगभग साढे बारह बजे जागकर पूछा, आज कौनसी तारीख है? १९ वी। १९ तारीख लगनेको आध घटा हो गया क्या? फिर जागनेवालोसे कहा, तुम सब किस लिअे बैठे हो? सो जाओ। तुरन्त सो जाओ। तुम्हारी गडबडोका मुझे कुछ पता नही चलता।

"अुस समय अुनके आसपास श्री हरखचदभाअी, श्री परीक्षितलाल मजमुदार, श्री सुखदेवभाअी, बापाके अन्य कुटुम्बीजन और सेवक वगैरा मौजूद थे।

"परीक्षितलालभाओी तो वापाकी तवीयतके समाचार मिलते ही तीन चार दिन पहलेसे भावनगर पहुच गये थे। वे जिस दिन भावनगर आये, अुसी दिन वापाने अुन्हे अपने पास प्रेममे वैठाया और अुनसे गुजरातके हरिजन-कार्य, भील-सेवा-मडलकी कार्रवाओी और कस्तूरवा-स्मारक-निधिके कामके वारेमे पूछताछ की और फिर शान्त, निश्चिन्त और गभीर स्वरमे वापाने अुनसे कहा

'अव हम आखिरी वार मिल रहे है। अव दुवारा हमारी मुलाकात नही होगी।'"

गुजरातके ही नही, परन्तु सारे भारतके अुस महान मानव-सेवक और कर्मनिष्ठ पुरुषके वचन सुनकर अुस दिन वापाके पास वैठे हुअे सभीके हृदय भर आये। वे समझ गये कि वापाके लिअे अिस स्थूल जीवनका काम पूरा हो गया है और अव वे किसी अलौकिक पूर्ण विरामके पथ पर अग्रसर हो रहे हैं।

* * *

वापाके सामने डाकके कागजात रखकर अेक भाओीने कहा, वापा, कांग्रेसके अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमदास टडनजी लिखते हैं कि आपसे मिलने आअू ?

वापाने शान्त भावसे कहा, अुन्हे लिख दो कि अव तो जहा है वही ठीक है। अिस अुम्रमे कष्ट अुठाकर ठेठ यहा तक मिलने न आये।

दूसरा पत्र निकाला और वापाको वताया "श्री किशोरलाल मशरूवाला लिखते हैं कि आपकी तवीयत रूवरू देखनेकी अिच्छा है।"

वापाने कहा कि किशोरलालभाओीको लिख दो कि यहा तक आनेका आग्रह अव न रखे।

वापाके सामने अेकके वाद अेक कओी पत्र पढे गये और वापा अुनके अुत्तर देते गये।

महाराष्ट्र हरिजन-सेवक-सघके अध्यक्ष श्री वर्वेने वापाको लिखा था कि, "आपके दर्शनोकी अिच्छा है। सावरमती तक आ गया हू। अिसलिअे आप अिजाजत दे तो अेक दिनके लिअे भावनगर आ जाअू।"

वापाने पत्र सुनकर कहा, "भाओी वर्वेको लिखो कि तुम जहा हो वहा हरिजन-सेवाका काम जारी रखो। मुझसे मिलनेकी अपेक्षा जो काम हाथमे लिया है, अुसे पूरा करना ज्यादा जरूरी है। वह काम ज्यादा महत्त्वका है। अिसलिअे मुझसे मिलने न आये।"

अिस प्रकार बापासे मिलने आना चाहनेवाले अधिकाश भाअी-बहनो, कार्यकर्ताओ, सेवको और सम्बधियोको अुन्होने प्रेमपूर्वक अिनकार कर दिया और अपने अपने काममे लगे रहनेको कहा। बापाकी अिच्छाका आदर करके अिस प्रकार कितने ही भाअी-बहन बापासे प्रत्यक्ष मिलनेका लोभ छोड कर अुनके प्रिय कार्यमे लगे रहे और बापाके मनको अधिक सुख और शान्ति पहुचानेमे सहायक हुअे।

शुक्रवारकी सुबह हुअी। पिछली रात बेचैनीमे गुजरी थी। दवाके जोरसे नीद तो कुछ आअी थी, परन्तु बीच बीचमे जाग जाते थे। सवेरा हुआ। बापा जागे। जागकर अुन्होने फिर तारीख पूछी। अुन्हे तारीख बतलाअी गअी तो बोले "वल्लभभाअी कौनसी तारीखको गुजरे थे? आजकी तारीखको ही न? सरदार शुक्रवारको गये, गाधीजी भी शुक्रवारको गये। अैसा लगता है कि मै भी आज ही विदा लूगा।"

अिसके बाद अुन्होने अुस दिनकी डाक सुनी। बाहरके स्थानोसे आये हुअे तार सुने। जवाब भी लिखवाये। दोपहरको राजकोटसे श्री बजुभाअी शाह तथा श्री कनुगाधी वगैरा आये, अुनसे मिले और बाते की। श्री कनु गाधीने बापाको पता न चल सके, अैसी सिफतसे अलग अलग फोटो लिये।

शाम होते होते तो बापाकी तबीयत अधिकाधिक बिगडने लगी। फिर भी अतिम दिन तक वे होशमे थे। अुनकी सेवामे रहनेवालोने अुन्हे पेशाब करनेके लिअे बिस्तरमे बिठाया और बिस्तरमे ही बेडपैन रखकर कहा, यही पेशाब कर लीजिये। तो कहने लगे, नही, नही, मुझे खडा करो। अिस प्रकार अतिम घडी तक अुनका मनोबल काम करता रहा।

रात हुअी। दीयाबत्ती हो गअी। परन्तु अिस ओर करोडोके जीवनको प्रकाश देनेवाला मानव-सूर्य डूबता जा रहा था! अन्त समय अब निकट आ गया है, अिसका भान होते ही शाम तक पास बैठे हुअे परीक्षितलाल-भाअीसे अुन्होने कहा, "परीक्षितलाल, मुझे अब जमीन पर सुला दो। मुझे अब अधिक समय नही लेना है।"

परीक्षितलालभाअीने शान्त और गभीर भावसे अुत्तर दिया "बापा, आप शान्त रहिये। निश्चिन्त रहिये। हम अभी आपको जमीन पर सुला देगे।"

रातको सवा आठ बजे। भावनगरमे बिजलीकी किफायतके लिअे रोज अिस समय पाव घटेके लिअे बत्ती बन्द होती थी, सो आज भी हुअी। और अुसके साथ ही साथ बापाका जीवन-दीप भी ८ बजकर २० मिनट पर बुझ गया।

अुनके आसपास बैठे हुअे लोगोंका जी भर आया। सबकी आंखोंमें आंसू आ गये। सबको लगा कि पीड़ितोंके तारनहार, हरिजनोंके पालनहार, भीलों और आदिवासियोंके बापाका जीवन-दीप बुझने पर अुनके जीवनका अंधकार और भी गहरा हो गया।

बापाके देहान्तके समाचार भावनगरमें ही नहीं, सौराष्ट्र और भारत-भरमें देखते देखते फैल गये। सैकड़ों और हजारों लोगोंने आंसू बहाये। राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबू और प्रधानमंत्री पं० जवाहरलालजी तथा राजाजीसे लगाकर सौराष्ट्रके मुख्यमंत्री श्री ढेबर तक भारतवर्षके तमाम नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और भिन्न भिन्न क्षेत्रोंमें काम करनेवाले सेवकों तथा साथियोंने अुन्हें श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

अुसी दिन रातको देरसे निश्चित हुअे कार्यक्रमके अनुसार ठक्करबापाके मृतदेहको स्नान वगैरा कराकर और पुष्पोंसे सजाकर टाअुन हॉलमें ले जाया गया और अंतिम दर्शनके लिअे वहां रख दिया गया। दूसरे दिन सुबह ही करोड़ों दलितों और पतितोंके अुद्धारक और सेवकोंमें श्रेष्ठ बापाके अंतिम दर्शन करने और अुन्हें आखिरी प्रणाम करनेके लिअे भावनगर और आसपासके गांवोंसे लोगोंकी भीड़ अुमड़ आअी थी। अुनके शवके सामने बलवंतराय महेता जोरसे गीतापाठ कर रहे थे। श्लोक पूरे होनेके बाद बापाके सेवक-समूहके साथियोंने भजन गाये और अन्तमें रामधुन गवाअी। "रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम" की धुनसे सारा टाअुन हॉल गूंज रहा था। अनेक दर्शनार्थी सजल नेत्रोंसे बापाके शव पर फूल चढ़ाते थे। सारा वातावरण गंभीर और पवित्र बन गया था। ठीक अेक बजे टाअुन हॉलसे स्मशान-यात्रा शुरू हुअी। बापाके पुष्पाच्छादित मृतदेहको धूप, पुष्प और ध्वजाओंसे सजाअी हुअी कांग्रेस समितिकी खुली मोटर गाड़ीमें रखा गया था। आगे आगे गृहरक्षक दलके सैनिक चल रहे थे। सैकड़ों स्वयंसेवक रास्तेके दोनों ओर व्यवस्थित रूपमें चलते हुअे व्यवस्थाका काम कर रहे थे। स्मशान-यात्राकी व्यवस्था श्री मानशंकरभाअी भट्ट और अुनके स्वयंसेवक कर रहे थे।

कांग्रेस नेता, मंत्री, कार्यकर्ता, नागरिक, ग्रामजन, हरिजन और स्त्रियां, वगैरा मिलकर लगभग सात हजार मनुष्य अिस स्मशान-यात्रामें शरीक हुअे थे। भावनगरके अितिहासमें यह दृश्य अभूतपूर्व था। किसी सार्वजनिक नेता या सेवककी स्मशान-यात्रामें बहनें कभी सम्मिलित नहीं हुअी थीं। लेकिन अिस बार वे लगभग १२५ से १५० तककी संख्यामें शरीक हुअी थीं। बापाकी स्मशान-यात्रा ज्यों ज्यों आगे बढ़ती गअी, त्यों त्यों

भावनगरके रास्तोंके दोनों ओर मकानों, छज्जों, झरोखों और अटारियोंमें मे सैकडो स्त्रिया, बालक और पुरुष अुनको अतिम प्रणाम कर रहे थे और फूलोकी अजलि अर्पण कर रहे थे। अिस प्रकार तमाम रास्ते पर फूलोकी मानो वर्षा ही हो रही थी। काग्रेस कार्यकर्ता, हरिजन और अन्य लोगोकी आखोसे आसू बह रहे थे। भजनो ओर रामधुनसे सारा वातावरण गूज रहा था।

सवा दो बजे जुलूस स्मशान-भूमि पर पहुचा। वहा लोगोने भीतर घुसनेके लिअे जोर लगाया। अुन्हे काबूमे रखनेके लिअे गृहरक्षक दलके सदस्यो और स्वयसेवक दलको बहुत दिक्कत अुठानी पडी। अितने पर भी कुछ लोग आसपासके नीमके पेडो पर चढ गये और अेक पेडकी डाली टूट पडी, जिससे कुछ आदमियोको थोडी चोट भी लगी। दो बजकर पैंतीस मिनट पर बापाके छोटे भाअी डॉ० केशवलाल ठक्करने बापाकी मृतदेहका अग्निसस्कार किया। अुस समय श्री नानाभाअी भट्ट, गुजरात हरिजन-सेवक-सघके मत्री श्री परीक्षितलाल मजमुदार, श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त, श्री बलवन्तराय महेता, श्री वजुभाअी शाह, श्री सुखदेवभाअी त्रिवेदी, भारत-सेवक-समाजके प्रमुख कार्यकर्ता श्री वझे, सौराष्ट्र मत्रिमडलके सदस्य श्री अुछरगराय ढेबर, श्री रसिकलाल परीख, श्री दयाशकर दवे, गोहेलवाडके कलेक्टर तथा जिला समितिके मत्री श्री देवेन्द्र देसाअी वगैरा अुपस्थित थे। कुछ देरमे चिता धकधक जलकर शात हो गअी और बापाके पचतत्त्व बृहत् पचतत्त्वोमे मिल गये। डॉ० केशवलाल ठक्कर बडे भाअीकी मृत्यु पर आसू बहा रहे थे, तब अुन्हे आश्वासन देते हुअे भारत-सेवक-समाजके पुराने कार्यकर्ता श्री वझेने अुनसे कहा, "आपने तो बडा भाअी खोया है, परन्तु मैंने तो अपना पिता ही गवा दिया है। (You have lost a brother, but I have lost a father) श्री वझेके ये शब्द भारतके करोडो दलितो, पतितो, आदिवासियो, हरिजनो, और विधवाओके हृदयकी ही प्रतिध्वनि नही थे, यह कौन कह सकता है? बापाके चले जानेसे केवल श्री वझेने ही अपना पिता नही खोया, परन्तु अुपरोक्त करोडो नर-नारियोने अपना पिता खो दिया था।

अतिम विधि पूरी हो जानेके बाद सौराष्ट्रके मुख्यमत्री श्री ढेबरने बापाको भावपूर्ण अजलि अर्पित की थी।

सूची

ठ—२९